हस्त-रेखा विज्ञान

चरण-चिन्ह विचार

गोपेश कुमार ओझा

हस्त-रेखा-विज्ञान

(शरीर-लक्षण सहित)

गोपेश कुमार ओझा
एम० ए०, एल० एल० बी०

मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स
प्राइवेट लिमिटेड • दिल्ली

प्राक्कथन

"एषु सर्वेषु भूतेषु गूढात्मा न प्रकाशते।
दृश्यते त्वग्रया बुद्धया सूक्ष्मया सूक्ष्मदर्शिभि :॥" (१।३।१२)
—कठोपनिषद्

इस अखिल ब्रह्माण्ड के चराचर प्राणियों में, उस सर्वशक्तिमान् परमेश्वर की सत्ता व्यापक है—कोई वस्तु—अणु-के-अणु से लेकर सौरमण्डल के विशिष्ट-से-विशिष्ट तेजपिंड तक—ऐसी नहीं जिसमें भगवत् सत्ता न हो परन्तु महर्षि कठ ने अपने उपयुक्त वचनों में कहा है कि वह गूढ़ात्मा सब में समान रूप से प्रकाशित नहीं होता। उस सच्चिदानन्दघन की सत्ता, चेतना और आनन्द-कला 'अणोरणीयान् महतो महीयान्' सब में व्याप्त है—परन्तु प्रकाशित समान रूप से नहीं है। प्रस्तर में उतनी 'चेतना' नहीं है जितनी वृक्षों में और वृक्षों की अपेक्षा मनुष्य में अधिक चेतना है। चेतना की शास्त्रीय परिभाषा न कर सर्वबुद्धिगम्य यह परिभाषा सुगम होगी कि जितना 'क्रियात्मक' व्यापार—मन या इन्द्रियों का—इस चराचर जगत् में देखा जाता है—वह 'प्राण'-शक्ति पर आधारित होता है और उस प्राण-शक्ति का आधार 'चेतना' है। महर्षि चरक ने कहा है—

'सेन्द्रियं चेतनद्रव्यं निरिन्द्रियमचेतनम्।'

अर्थात् जिन पदार्थों में इन्द्रियाँ कार्य करती हैं वे चेतन हैं जिनमें इन्द्रियाँ कार्य नहीं करतीं वे अचेतन हैं। इस व्यावहारिक परिभाषा के अनुसार प्रस्तरादि निरिन्द्रिय होने से 'अचेतन' हुए। परन्तु वास्तव में गम्भीर दृष्टि से देखा जाय तो जो मनुष्य में जितनी 'क्रिया' है उतनी वृक्षों में नहीं—फिर भी वृक्ष बढ़ते हैं, उनमें कोमल अंकुर पैदा होते हैं, पुष्प खिलते हैं, फल उत्पन्न होते हैं, वृक्ष बड़े होते हैं, पुराने होते हैं और सूखकर मर जाते हैं।

'अंत: संज्ञा भवन्त्येते सुख दु:ख समन्विता:।' (मनुस्मृति)

प्रतिक्षण उनमें कुछ-न-कुछ क्रिया होती रहती है। उसी प्रकार भूगर्भ-विज्ञान वेत्ता हमें बताते हैं कि यह पत्थर दस हज़ार वर्ष पुराना है, यह एक लाख वर्ष पुराना और यह दस लाख वर्ष पुराना। प्रस्तरों में जो क्रिया होती है वह

सुसूक्ष्म दृष्टि से वैज्ञानिक देखते हैं—यही भाव महर्षि कठ ने व्यक्त किया है कि वह 'गूढ़ात्मा' सब में प्रतिष्ठित है।

यच्चापि सर्व भूतानां बीज तदहमर्जुन।
न तदस्ति विनायत्स्यान्मया भूतं चराचरम्॥ (१०।३९ भ० गी०)

परन्तु सर्व भूतों की अपेक्षा मनुष्य में चेतना या क्रिया विशेष है। इसमें दसों इन्द्रियाँ और मन, दसों प्राण, पूर्ण विकसित रूप में हैं।

काल पुरुष की कल्पना द्वादश राशियों द्वारा की जाती है। इसकी व्याख्या करते हुए दशम शताब्दी में ज्योतिष विद्या के धुरन्धर विद्वान् श्री रुद्र ने लिखा है—

"द्रेक्कारण: पादौ होरावक्त्रं, नवभागा: पाणियुगलं, त्रिंशांशक: चक्षुषी, द्वादशांशको नासापुटं क्षेत्रंश्रवणयुगलम्। नवांशका: नव प्राणात्मका:।

"प्राणोपान: समानश्चोदानव्यानौच वायव:।
नाग: कूर्मश्च कृकलो देवदत्तो धनञ्जय:॥"

आगे चलकर कहते हैं कि धनञ्जय के अतिरिक्त नवप्राण, नवांश होते हैं। द्वादशांश—दस इन्द्रिय—मन और बुद्धि इन द्वादश का प्रतीक हैं। इन द्वादश इन्द्रियों और नव प्राणों से 'एक विंशतिविधं सूक्ष्मशरीरमुत्पद्यते। तथा चोक्तं भगवत्पादाचार्येण।

"इह तावदक्षदशकं मनसा सह बुद्धितत्त्वमथवायुगण."
इति लिंगमेतदमुना पुरुष: सह संगतो भवति जीव:॥

अर्थात् इन २१ से सूक्ष्म शरीर बनता है।

कहने की आवश्यकता नहीं कि "यत्पिंडे तद् ब्रह्माण्डे।" अर्थात् जो इस मनुष्य-शरीर में है वही ब्रह्माण्ड (विराट् पुरुष के शरीर) में है। जैसे एक छोटे-से वट के वृक्ष के एक-एक फल में अनेकों बीज होते हैं, और प्रत्येक बीज में एक महान् वट-वृक्ष सूक्ष्म रूप से निहित होता है, उसी प्रकार मायावच्छिन्न नर-शरीर में उस अखिल ब्रह्माण्डनायक का कल्पनातीत सूक्ष्म रूप है और उसी के प्रकाश से चेतना, क्रिया आदि का उद्गम है। इस मनुष्य-शरीर के अधिष्ठाता भी वही देवी, देवता या शक्ति-विशेष हैं जो देवलोक में। कर्मेन्द्रियों में हाथ और पैर ये दो इन्द्रियाँ अन्य कर्मेन्द्रियों की अपेक्षा विशेष प्रधान हैं—इस विषय में दो मत नहीं हो सकते। मनुष्य का आधार पैर हैं। मनुष्य पैर पर स्थित या प्रतिष्ठित होता है। इसी 'प्रतिष्ठा तत्व' के देवता विष्णु हैं। क्रियात्मक इन्द्रियों—किंवा कर्मेन्द्रियों में सर्वप्रधान हाथ या 'कर' हैं इस कारण

इनका अधिष्ठाता 'इन्द्र' देव है। जब बालक घुटने के बल चलता है तो हाथ (इन्द्र) आगे होते हैं और पैर (उप + इन्द्र) पीछे। या यों कहिये कि जब बालक बड़ा हो जाता है और चलता है तब भी हाथ (इन्द्र) ऊपर होते हैं पैर (उप + इन्द्र) नीचे। इसी कारण 'विष्णु' (प्रतिष्ठा तत्व के देवता) को उपेन्द्र कहा है। अन्यथा विष्णु के लिए इन्द्र से द्वितीय पद-वाचक 'उपेन्द्र' शब्द की प्रयोजनता क्या ? (देखिये तैत्तिरीयोपनिषद् शिक्षावल्ली प्रथम अनुवाक)

देवताओं का राजा इन्द्र है, क्योंकि समस्त क्रियात्मक शक्ति में सर्वप्रमुख 'हाथ' हैं। भगवान् ने गीता में कहा है—

"..............देवानामस्मि वासवः"

(भ० गी० १०।२२)

अर्थात् मैं देवताओं में 'इन्द्र' हूँ। ज्योतिष के मतानुसार भी ऊपर बताया गया है कि 'पाणियुगल' काल पुरुष की राशि के नवांश का प्रतीक है। 'नवांश' को 'राशि' के समान ही प्रधानता दी जाती है, यह ज्योतिषियों से छिपा नहीं है। श्री मंत्रेश्वर ने 'फलदीपिका' में कहा है—

"षड्वर्ग संज्ञास्त्वथ राशिभाव तुल्यं नवांशस्य फलं हि केचित्।

(फ० दी० ३।२)

इस दृष्टिकोण से भी नवांश के प्रतीक 'पाणियुगल' का विशेष महत्त्व है।

जैसे केवल नाड़ी को देखने से अनुभवी वैद्य को सम्पूर्ण शरीर के कुपित दोषों का (वात, पित, कफ के विकारों का) ज्ञान हो जाता है; जैसे केवल हथेली की गरमाई या पीलापन ज्वर या पीलिया रोग प्रकट कर देता है, उसी प्रकार हाथ का आकार, उंगलियों के आकार, अँगुष्ठ आदि मनुष्य की चित्तवृत्ति, बौद्धिक शक्ति और प्रवृत्ति का परिचय दे देते हैं। यह तर्कसम्मत सिद्धान्त है, कि प्रत्येक कार्य के मूल में 'कारण' अवश्य होता है। यदि मनुष्यों के हाथों के आकार भिन्न-भिन्न हैं तो क्या 'कारण' में भिन्नता नहीं होगी ? नीचे मनुष्य के 'मस्तिष्क' का एक चित्र दिया गया है।

मस्तिष्क के विभिन्न भाग शरीर के विभिन्न अवयवों का संचालन करते हैं। मस्तिष्क का कौन-सा भाग किस अवयव का संचालक या अधिष्ठाता है या किस अंग से सम्बन्धित है यह निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट होगा—
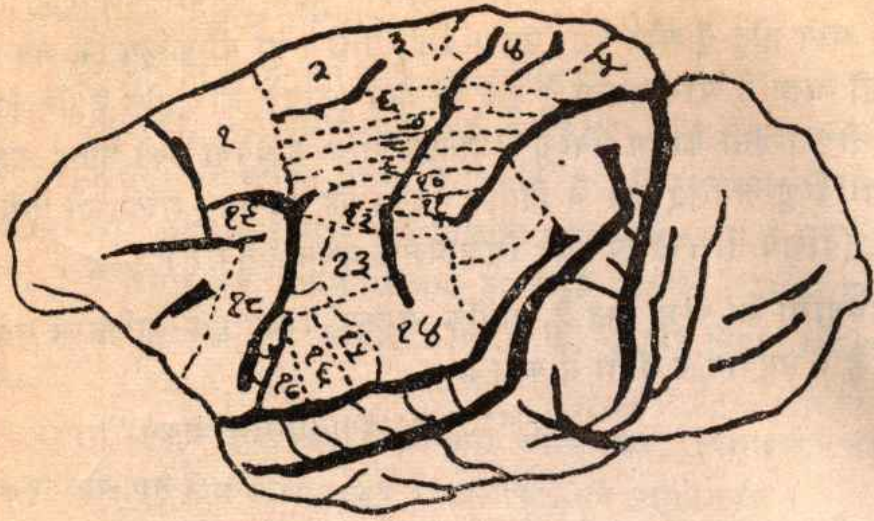
मस्तिष्क का भाग	शरीर का अवयव या क्रिया
१.	सिर को घुमाना
२.	नितम्ब प्रदेश
३.	घुटने और टखने
४.	पैर के अँगूठे
५.	पैर की उंगलियाँ
६.	कंधे
७.	कुहनियाँ
८.	हाथ की कलाइयाँ
९.	हाथ की उंगलियाँ
१०.	तर्जनी
११.	अंगुष्ठ
१२.	पलक
१३.	मुख का भीतरी भाग
१४.	मुख-ओष्ठ से वेष्टित भाग
१५.	चबाना
१६.	नासिका का भीतरी भाग जहाँ कण्ठ के भीतरी भाग से योग होता है।
१७.	कंठ (भीतरी भाग) जहाँ से शब्द उच्चारित किया जाता है।
१८.	नेत्र प्रान्त (नेत्रों को घुमाकर बगल से देखना)
१९.	सिर और आँखों का युगपत् संचालन ।

मस्तिष्क के किस भाग का शरीर के किस अवयव से विशेष सम्बन्ध है यह वैज्ञानिक प्रयोगों से सिद्ध हो चुका है। मस्तिष्क के भाग-विशेष के चोट या अन्य कारण से अस्वस्थ हो जाने से, सम्बन्धित शरीर का अवयव विशेष, काम करना बन्द कर देता है। इन मस्तिष्क के विभिन्न भागों का सम्बन्ध विविध प्रकार की इच्छाओं, आकांक्षाओं, वासनाओं तथा क्रियात्मक प्रवृत्तियों से भी

हैं। इसी कारण शरीर-लक्षण से चेष्टाओं तथा मानसिक क्रियाओं का पता लगता है।

प्रायः जो भी कार्य हाथ करते हैं उनका सर्वप्रथम अंकुर इच्छा-शक्ति या मस्तिष्क में होता है। भगवान् मनु ने कहा है—

'अकामस्य क्रिया काचिद् दृश्यते नेह कर्हिचित्।
यद्यद्धि कुरुते किंचित् तत् तत् कामस्य चेष्टितम्।।

इसलिये भिन्न-भिन्न इच्छा वाले व्यक्ति, **एक-सी परिस्थिति में रहते हुए** भी भिन्न-भिन्न कार्यों की इच्छा करते हैं और उनमें संलग्न होते हैं। संलग्न होने पर, अपनी-अपनी **शक्ति और गुण-दोष** के अनुसार सफल, विफल या आंशिक सफल होते हैं।

हमारे शास्त्रकारों ने हाथ को विविध भागों में विभाजित किया है। देखिये चित्र।

१. ब्रह्मतीर्थ
२. पितृतीर्थ
३. पितृस्थान
४. मातृस्थान
५. भ्रातृस्थान
६. बन्धुस्थान
७. { विद्यास्थान / सुतस्थान
८. करभ
९. करतलमूल
१० करतल-मध्य

अंगुलियों के अग्रभाग को देवतीर्थ कहते हैं। कार्य-विशेष के लिये हाथ का भाग विशेष, निर्दिष्ट है।

इसी कारण शास्त्रों में लिखा है कि भगवान् का पूजन करने के लिये चन्दन घिसकर हाथ से उठाकर चन्दन की कटोरी में रखना हो तो करभस्थान से करना। पितरों को तर्पण करना हो तो पितृतीर्थ से करना। जातकर्म संस्कार के समय अनामिका से घी या शहद चटाना, आदि।

हाथ में देवताओं का वास माना गया है। यह तो प्रसिद्ध ही है :—

कराग्रे वसते लक्ष्मी, करमध्ये सरस्वती।
करमूले तु गोविन्दः प्रभाते कर दर्शनम्।।

केवल यही नहीं करतल तथा उंगलियों से भिन्न-भिन्न प्रकार की 'मुद्रा' बनाकर विविध भावों का उदय करना हमारे यहाँ की बहुत प्राचीन विज्ञानशैली है। अक्षमाला मुद्रा, परशु मुद्रा, गदा मुद्रा, आवाहनी मुद्रा, धेनु मुद्रा, संस्थापिनी

मुद्रा, महामुद्रा आदि अनेकों मुद्राओं के मूल में यही वैज्ञानिक रहस्य है कि भिन्न-भिन्न उंगलियों के भिन्न-भिन्न प्रकार के मोड़ने और संयोग से पृथक्-पृथक् प्रभाव उत्पन्न करना। मस्तिष्क के सहस्रों ज्ञान-तंतुओं द्वारा विचार और शक्ति हमारे हाथों और उंगलियों में आती हैं और हाथों की उंगलियों को विशिष्ट वैज्ञानिक रूप से क्रियान्वित करने से मस्तिष्क पर प्रभाव पड़ता है। इसी कारण सबसे पहले अंगन्यास और करन्यास किया जाता है। मूल मंत्र या उसके विविध अक्षरों से उंगलियों को प्रभावित किया जाता है। देखिये श्रीमद्भागवत स्कन्ध ६, सर्ग ८—"करन्यासं ततः कुर्यात् द्वादशाक्षर विद्यया"। न्यास के बिना मंत्र मूक होता है—"न्यासं विना भवेन्मूक"-मुद्राओं का रहस्य बहुत गम्भीर और इस प्रक्कथन के विषय से बाहर का है परन्तु किस प्रकार मुद्रा बनाई जाती हैं—इस विषय में केवल धेनु-मुद्रा बनाने का विधान बताया जाता है।

वामाङ्गुलीर्दक्षिणनामङ्गुलीनाञ्च सन्धिषु।
प्रवेश्य मध्यमाभ्यां तु तर्जन्यौ द्वौ प्रयोजयेत्।
कनिष्ठे द्वैऽनामिकाभ्यां युज्ज्यात् सा धेनुमुद्रिका॥

इसी को अमृतीकरण मुद्रा भी कहते हैं। शान्ति के अनुष्ठानों में पद्म मुद्रा, वशीकरण में परशु मुद्रा, स्तम्भन के लिये गदा मुद्रा, विद्वेषण में अशनि मुद्रा, और 'मारण' में खड्ग मुद्रा हाथ की उंगलियों से बनानी चाहिए यह शास्त्रों में लिखा है। भिन्न-भिन्न उंगलियों को किस-किस कार्य के लिए महत्त्व दिया है और जहाँ 'अनामिका' का प्रयोग करना चाहिए वहाँ 'तर्जनी' का प्रयोग करने से कितनी भयंकरता उपस्थित हो सकती है इसकी पुष्टि के लिए मंत्र-शास्त्र के ग्रंथ देखने चाहिए—

"तत्राङ्गुलि जपं कुर्वन् सांगुष्ठांगुलिभिर्यजेत्।
अंगुष्ठेन विनाकर्म कृतं तदफलं भवेत्॥
अंगुलीर्नवियुञ्जीत किञ्चिदाकुञ्चिते तले।
अंगुलीनां वियोगे तु छिद्रेषु स्रवते जपः॥"

विषय बहुत गम्भीर होने से यहाँ इसका रहस्य नहीं समझाया जाता है। जिज्ञासु की बिना परीक्षा किये कुछ बताना भी मंत्रशास्त्र के सिद्धान्त के विरुद्ध है। प्रस्तुत विषय यह है कि भिन्न-भिन्न उंगलियों से भिन्न-भिन्न प्रकार की शक्ति प्रादुर्भूत होती है। इस कारण प्रत्येक उंगली और हाथ के प्रत्येक भाग का

अपना विशेष महत्त्व है। कमी है केवल उससे सम्बन्धित विज्ञान को समझने की।

हमारे यहाँ वैदिक मंत्रों का प्रयोग करने के पहले ऋषि, देवता, छन्द आदि उच्चारण करने का जो प्रचार है उससे उस मंत्र-सम्बन्धी वैज्ञानिकता का पता लग जाता है, यह वेदों को पढ़ने वाले जानते हैं। हाथ में जो चार उंगलियाँ और अंगुष्ठ हैं उनका क्रमशः, गायत्री का कनिष्ठिका से, त्रिष्टुप का अनामिका से, मध्यमा का विराट् से, तर्जनी का जगती से तथा अंगुष्ठ का पंक्ति छन्द से सम्बन्ध है।

अनादिकाल से भारत हस्त-रेखा-विज्ञान का उद्गमस्थान रहा है। यूरोप के देशों में तथा मिस्र-चीन आदि प्राचीन सभ्यता वाले देशों में भी भारत का हस्त-रेखा-विषयक चमत्कार हज़ारों वर्ष पहले से फैला है। सुप्रसिद्ध हस्तपरीक्षक 'कीरो' ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि उसे एक हस्त-रेखा-विषयक विचित्र विज्ञान-वैशिष्ट्यथयुक्त पुस्तक आदमी के चमड़े पर लिखी हुई भारतवर्ष में देखने को मिली। उसी के आधार पर उसने बहुत-कुछ लिखा है। परन्तु हमारे यहाँ विदेशियों के आक्रमण से तथा शताब्दियों तक उनकी दासता में रहने के कारण बहुत से ग्रंथ-रत्न नष्ट-भ्रष्ट हो गये और बहुत-से सम्प्रदायों का लोप हो गया। इसी कारण बहुत सी बातें हमारी अपनी होने पर भी आज वे विदेशी पुस्तकों में ही उपलब्ध होती हैं। इस कारण 'पाश्चात्य मत' के अन्तर्गत उनका परिचय कराया है। यदि किसी महानुभाव को इस पुस्तक की उपयोगिता-वृद्धि के लिए कोई नया सुझाव देना हो तो कृपया निम्नलिखित पते से मुझे सूचित करे। यदि कोई विचित्र हाथ देखने में आवे तो उसकी छाप और विवरण प्रेषित करने का अनुग्रह करें। आगामी संस्करण के समय विद्वानों के उचित सुझावों और सहयोग का लाभ उठाया जायगा। जो सज्जन मुझसे मिलना चाहें २२३७२८ इस टेलीफोन द्वारा या पत्र द्वारा समय निश्चित कर मिल सकते हैं। मुझे अन्त में केवल वही कहना है जो अथर्ववेद में कहा गया है—

'अयं ते हस्तो भगवान् अयं ते बलवत्तरः।

यह आपका हाथ ही भगवान् है—यह भगवान् से भी बलवान् है। रशिया और चीन हाथ की क्रियात्मक शक्ति का प्रभाव दिखा रहे हैं। 'सुकर्म' ही ईश्वराराधना का सर्वश्रेष्ठ उपाय है। 'कर्म' ही भाग्य है। कर्म का कारण और फल दोनों ही हाथ में हैं।

अंग्रेज़ी में कहावत भी है कि "ईश्वर उनकी सहायता करता है जो

स्वयं अपनी सहायता करते हैं।"—अर्थात् जो क्रियाशील और कर्मण्य उनके लिए ईश्वर भी वरद है। भगवदनुग्रह से फल-प्राप्ति बिना 'कर्म' के भी हो जाती है—यह तर्क जो उपस्थित करते हैं वे यह भूल जाते हैं कि भगवद्भक्ति स्मरण, कीर्तन, चिन्तन आदि भी तो कर्म हैं—कर्म नहीं विशिष्ट कर्म है।

इसलिए मनुष्य को सत्कर्म में प्रवृत्त होते हुए क्रियाशील होना चाहिए और अपने में दैवी चेतना का प्रादुर्भाव कर भाग्यवान् होना चाहिए।

"या देवी सर्व भूतेषु चेतनेत्यभिधीयते।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः॥" शुभम्॥

विजयादशमी २०१३
९३, दरियागंज,
दिल्ली। } गोपेशकुमार ओझा

द्वितीय संस्करण

हर्ष का विषय है कि इस पुस्तक की माँग दिनों-दिन बढ़ती जा रही है और प्रकाशक इसका द्वितीय संस्करण पाठकों के सम्मुख उपस्थित कर रहे हैं। जिन सज्जनों को हस्तरेखा, जन्म-कुण्डली, वर्षफल आदि के विषय में परामर्श करना हो वे हमसे पत्र-व्यवहार करें।

मकर संक्रान्ति
२०१८

गोपेशकुमार ओझा

विषय-सूची

प्रथम खण्ड

हस्त-परीक्षा विचार

द्वितीय खण्ड

हस्त-रेखा-विचार

तृतीय-खण्ड

अन्य रेखाएँ तथा हाथ पर विविध चिह्न

१७वाँ प्रकरण—मंगल-रेखा आदि

१८वाँ प्रकरण—यात्रा-रेखा आदि शेष पाँच रेखाएँ

चतुर्थ-खण्ड

शरीर-लक्षण

हस्तरेखा तथा शरीर-लक्षण-सम्बन्धी निम्नलिखित संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों से सहायता ली गई हैं—

१. बृहत्सामुद्रिक शास्त्र
२. बृहत्संहिता
३. सामुद्रिक चिन्तामणि
४. हस्त संजीवनी
५. रणवीर ज्योतिर्महानिबन्ध
६. हस्तामलक
७. शैव सामुद्रिक
८. भोजकृत सामुद्रिक
९. विवेक विलास
१०. रेखा विमर्शिनी
११. स्कान्द शारीरक
१२. सामुद्रिक रहस्य
१३. दैवज्ञ कामधेनु
१४. वीर मित्रोदय
१५. भविष्य पुराण
१६. गरुड़ पुराण
१७. अग्नि पुराण
१८. स्कन्द पुराण
१९ बृहन्नारदीय पुराण
२०. विष्णु धर्मोत्तर पुराण
२१. गर्ग संहिता
२२. नारदीय संहिता
२३. प्रयोग पारिजात
२४. महाभारत
२५. वाल्मीकीय रामायण
२६. मनुस्मृति
२७. याज्ञवल्क्य स्मृति
२८. आपस्तम्बधर्मसूत्र
२९. बौधायन धर्मसूत्र
३०. शातातप स्मृति
३१. जातकाभरण
३२. जातक सुधार
३३. जातक पारिजात
३४. सारावली
३५. बृहज्जातक
३६. फलदीपिका
३७. बृहत्पाराशर होराशास्त्र
३८. पाराशर स्मृति
३९. जैनमत पताका (हिन्दी)
४०. करलक्खण (प्राकृत)

1. **Practical Palmistry** by Saint Germain.
2. **Scientific Palmistry** by Neel Jaquin.
3. **How to read Heads and Faces** by James Coates Ph. D. F. A. S.
4. **The Study of Palmistry for Professional Purposes** by Comte C. De. Saint Germain.
5. **Complete book of the Occult and Fortune telling** by M.C. PoinSot.
6. **Laws of Scientific Hand Reading** by W. G. Benham.

7. **How To Choose Vocation From the Hands** by W. Benham.
8. **Cheiro's Language of the Hand.**
9. **Hands What Do They Tell ?** by Alferetta G. Bell.
10. **Comfort's Palmistry Guide.**
11. **Practical Palmistry** by Henry Frith.
12. **The book of the Hand** by Katharine St. Hill.
13. **Hand reading** by M. N. Laffan.
14. **The Hand and the Mind** by M. N. Laffan.
15. **Palmistry** by Elmo Jean La Seer.
16. **How to know your future** by Martini.
17. **Palmistry made plain.** by Ina Oxenford.
18. **Characteristic Hands** by Ina Oxenford.
19. **The mystery of your Palm** by Psychos.
20. **Masters of Destiny** by Josef Ranald.
21. **My mysteries and my story** by Velma.
22. **Hands Up.** by Capini Vequin.
23. **Scientific Palmistry and its use** by Joseph Wood.
24. **New Complete Palmistry** by Prof. and Mme Zancig.
25. **Character reading from the face.** by Grace A. Rees M. B. E.
26. **Faces and How To Read Them** by Irma Blood.
27. **Students Course in Characterology** by L. Hamilton Mc Cormic.
28. **Faces-What They Mean and How to Read Them** by John Spon.
29. **Character Reading at Sight** by David steel.
30. **Clues to Character** by R. Dimsdale Stocker.
31. **Moles and their meaning** by Harry Windt.
32. **The Face is Indicative of Character** by Alfred T Story.
33. **Heads and how to read them** by Stackpool O'Dell.
34. **Reminiscences of Dr. Supurzheim and George Combe.**
35. **Evolution and Phrenology** by Alfred Thomas story.
36. **How to Become Rich. Prof. Wm. Windsor.**

हस्त-रेखा-विज्ञान

प्रथम खण्ड

१ला प्रकरण

हाथ देखने की विधि

सर्वप्रथम हस्तरेखा के मूल सिद्धान्तों को हृदयस्थ कर लेना चाहिये। यह पुस्तक के कई बार पठन और मनन से होगा। जो लोग इस पुस्तक को कहीं से भी खोलकर किसी एक रेखा का फलादेश मिलाने की चेष्टा करेंगे उनका फलादेश बहुत से स्थानों में ग़लत हो जायगा। इसका कारण यह है कि ज्योतिष-शास्त्र की भाँति हस्त-रेखा-विज्ञान में भी गुण-दोष की तुलना करना, किस गुण की ओर सब लक्षण झुकते हैं या दोषों की अधिकता है तो, किस दोष का मार्जन (दूर होना) होता है किसका नहीं, यह परमावश्यक है। ज्योतिष-शास्त्र में किसी एक भाव (जैसे धन-विचार या मातृ-सुख विचार) का विचार करने के लिये जैसे यह देखा जाता है कि इस भाव का स्वामी किस राशि में है, किस नवांश में है, दशवर्गों में—शुभ वर्गों में है या पाप वर्गों में—मित्र-वर्गों में या शत्रु वर्गों में, भाव का स्वामी किन ग्रहों से दृष्ट या युत है, वह देखने वाले ग्रह बलवान हैं—शुभ वर्गों में या अशुभ वर्गों में; किन ग्रहों से स्थान-विनिमय है, अपने अष्टक वर्ग में इस भाव के स्वामी की कितनी शुभ रेखा हैं, सर्वाष्टक वर्ग में इस भाव में कुल कितनी रेखा हैं; भावेश को काल, दिक्, चेष्टाबल कितना प्राप्त

है तथा भाव से नवम-पंचम, द्वितीय-द्वादश या चतुर्थ-अष्टम में कितने और कैसे ग्रह हैं ; भाव का स्थिर-कारक वलवान् है या निर्बल, उसी प्रकार किसी एक रेखा का विचार करते समय निम्नलिखित बातों की ओर सदैव ध्यान रखना चाहिये कि—

(१) दाहिने हाथ में रेखा कैसी है, बायें हाथ में कैसी।

(२) हाथ का आकार कैसा है, उंगलियाँ मोटी हैं या पतली, उंगलियों में गाँठें निकली हैं या नहीं, उंगलियों के अग्रभाग कैसे हैं, चौकोर, नुकीले या आगे की ओर फैले हुए तथा नाखून कैसे हैं।

(३) हाथ चुस्त है या ढीला, माँसल है या सूखा, हथेली का रंग कैसा है, लंवी है या चौड़ी, हथेली का माँस सख़्त है या मुलायम।

(४) हाथों के ग्रह-क्षेत्र उन्नत हैं या अवनत, ग्रह-क्षेत्र अपने-अपने उचित स्थान पर हैं या कुछ सरके हुए हैं।

(५) हाथ में या उंगलियों पर कोई विशेष चिह्न हैं क्या ? यदि हैं तो किस स्थान पर तथा कितने चिह्न हैं।

(६) हाथ में जिस रेखा का विचार कर रहे हैं उस रेखा से मिलते-जुलते हुए हाथ में अन्य लक्षण हैं या उनसे विरुद्ध।

(७) शरीर तथा मुखाकृति से क्या परिणाम निकलता है।

ये सब बातें ध्यान में तभी रह सकती हैं जव वारम्बार इस पुस्तक का अध्ययन किया जावे और अनेक हाथ देखे जावें। जिस प्रकार केवल पाकशास्त्र की पुस्तक पढ़ लेने से कोई भोजन बनाने में चतुर नहीं हो जाता उसी प्रकार केवल हस्त-रेखा की एक या दो पुस्तकें पढ़ लेने से मनुष्य फलादेश करने में पूर्ण समर्थ नहीं होता। इस बात की आवश्यकता है कि अनेक प्रकार के लोगों के हाथ देखे जावें—धनिकों के तथा ग़रीबों के; अकस्मात् धनी होने वालों के और निरंतर जीवन-भर परिश्रम कर धनिक होने वालों के ; विद्वानों के तथा मूर्खों के, जो अनेक वर्ष स्कूल में गँवाकर, पैसा ख़र्च कर मास्टरों के रखने पर भी पढ़ नहीं सके ; कुलीन पतिव्रता स्त्रियों

के तथा अनुचित आचार-विचार वाली स्त्रियों के; स्वस्थ पुरुषों के तथा जीर्ण रोगियों के; जिससे एक ही प्रकार के गुण-दोष, सैकड़ों हाथों में देखते-देखते वे गुण-दोष हृदय में खचित हो जावें।

कहावत है कि 'शतमारी' वैद्य होता है अर्थात् सैकड़ों-हज़ारों व्यक्तियों का इलाज करते-करते जब अपनी ग़लती से (ग़लत निदान और ग़लत औषधि देकर) एक सौ रोगियों को मार चुकता है तब कहीं वैद्य की बुद्धि, ज्ञान और अनुभव परिपक्व होते हैं। उसी प्रकार हज़ार-दो हज़ार, तीन हज़ार हाथ देख लेने के बाद अच्छा अनुभव प्राप्त होता है। यदि किसी हाथ में कोई लक्षण देखने में आवे तो नवीन हस्त-परीक्षकों को चाहिये कि उनके अनुमान से जो फलादेश आता है वह जातक के जीवन में घटित हुआ या नहीं यह पूछें। यदि, फल, जिस अवस्था में होना चाहिये, जातक की वह अवस्था बीत चुकी है तो अनुसंधान करना चाहिये कि किस अन्य लक्षण के कारण वह फल घटित नहीं हुआ।

इसके अतिरिक्त देश, काल, पात्र का जिस प्रकार ज्योतिष-शास्त्र में पूर्ण विचार किया जाता है उस प्रकार हस्तरेखा-विचार में भी रखना चाहिये। जिन देशों में परस्पर स्त्री-पुरुषों के अन्यथा सम्बन्ध-विशेष होते हैं वहाँ हृदय-रेखा, विवाह-रेखा या शुक्र-क्षेत्र (तथा वहाँ से प्रारम्भ होने वाली प्रभाव रेखाओं) का फलादेश भिन्न होता है। इसी प्रकार जहाँ विधवा-विवाह प्रचलित है वहाँ स्त्रियों के भी २-३ विवाह तक बताये जा सकते हैं परन्तु भारतवर्ष में जहाँ सामाजिक वातावरण भिन्न है यदि पाश्चात्य हस्त-परीक्षा सिद्धान्तों को अक्षरशः घटाने का प्रचार किया जाएगा तो परिणाम ठीक नहीं बैठेगा। इस कारण पाश्चात्य हस्त-परीक्षा के केवल मूल सिद्धान्तों को अपनाना चाहिये। जैसे समाज के लोगों की हस्त-परीक्षा करनी है तो उसके अनुसार अपनी बुद्धि से तारतम्य कर फलादेश करना उचित है।

जब हाथ देखते-देखते पर्याप्त अभ्यास हो जाय तब शुद्ध तथा शांत चित्त से ऐसे स्थान में हाथ देखना चाहिये जहाँ अनेक लोगों की भीड़ न हो, कोलाहल न हो। क्या ज्योतिष-शास्त्र, क्या मन्त्र-शास्त्र सभी गम्भीर शास्त्रों का अनुशीलन तथा उपयोग करते समय बुद्धि का एकाग्र होना परमावश्यक है। बुद्धि की एकाग्रता होने से अनेक रेखाओं तथा हाथ के अन्य लक्षणों का स्मरण बराबर बना रहता है। इस कारण एक लक्षण का दूसरे लक्षण से बुद्धि तत्काल समन्वय और सामंजस्य कर लेती है। किन्तु जहाँ हाथ देखा जा रहा हो वहाँ अनेक मनुष्य बैठे हों तो हस्त-परीक्षक का ध्यान बट जाता है। इस कारण चित्त में वह एकाग्रता नहीं आने पाती जो परमावश्यक है। जब एकाग्र चित्त का बुद्धि से संयोग होता है तो हृदय में भीतर से स्फूर्ति होती है। उस स्फूर्ति के अनुसार फलादेश किया जाता है। यदि चित्त की एकाग्रता नहीं होती तो स्फूर्ति भी नहीं होती।

शास्त्र का नियम है कि जहाँ हँसी-दिल्लगी या चुहलबाज़ी हो रही हो, जहाँ हस्तपरीक्षा में विश्वास न करने वाले कुतर्की हों, किसी स्थान पर खड़े-खड़े, रास्ते में, घोर रात्रि में, जहाँ पूर्ण प्रकाश न हो वहाँ हस्तपरीक्षा नहीं करनी चाहिये। जो जातक हस्त-परीक्षक से विवाद या बहस करे, बिना आवश्यकता के बीच-बीच में बात कर विघ्न डालता जावे, अभिमानी हो, हस्त-परीक्षक की अवहेलना करे, उसका हाथ न देखे।

हस्तपरीक्षा कराने वाले को उचित है कि शांत चित्त हो, फल-फूल या द्रव्य भेंट कर हस्त-परीक्षक को नमस्कार कर विनीत भाव से शुभाशुभ पूछे।

शास्त्रों में यह जो लिखा है कि सभा में, विद्वानों के बीच या मूर्खों की मंडली में हाथ न देखे तो इसका कारण यह है कि मूर्खों के बीच में उपहास का भय होता है। अनेक विद्वानों के बीच में

बैठने से उनके मस्तिष्क का प्रभाव हस्त-परीक्षक पर पड़ता है। इस कारण हस्त-परीक्षक के विचार स्वाभाविक रीति से एकाग्र नहीं हो पाते। विचारों की एकाग्रता के बग़ैर बुद्धि से शुद्ध संयोग नहीं होता। जिस समय हस्तपरीक्षा की जावे हस्त-परीक्षक के चित्त में क्रोध, भ्रान्ति, उद्वेग, भय, लज्जा, घृणा, अवहेलना या त्वरा नहीं होनी चाहिये। यदि हाथ देखते-देखते कौटुम्बिक परिस्थितिवश ऐसा हो जावे (बाहर से कोई मेहमान आ जायें, जिनके आतिथ्य की ओर ध्यान आकृष्ट हो गया या किसी की सहसा बीमारी के कारण चिंता का उद्वेग हो जावे) तो हस्तपरीक्षा स्थगित कर किसी दूसरे दिन हस्त-रेखाओं का, शुद्ध तथा अचल चित्त से, विचार करना चाहिए।

हस्त-परीक्षक को उसके तथा अपने स्वरूपानुरूप भेंट देना आवश्यक है, 'रिक्तपाणि' (ख़ाली हाथ) पंडित या ज्योतिषी के पास जाकर फल पूछना शास्त्रीय मर्यादा के विरुद्ध है। इस शास्त्रीय परिपाटी का उल्लंघन करने से फल ठीक नहीं मिलता। इसी कारण लिखा है—

'हस्तं श्रीफल पुष्पाद्यैः प्रपूर्य विनयान्वितः।'

दाहिना हाथ या बायाँ हाथ

भारतीय मत यह है कि पुरुषों का दाहिना हाथ तथा स्त्रियों का बायाँ हाथ प्रधान होता है। पाश्चात्य मत इस सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न हैं। कुछ पाश्चात्य हस्त-परीक्षक स्त्री-पुरुष दोनों के बायें हाथ को ही प्रधानता देते हैं, कुछ दाहिने को। ईसा से ३५० वर्ष पूर्व सिकन्दर महान् के गुरु सुप्रसिद्ध दार्शनिक एरिस्टोटिल हुए। उन्होंने लिखा है कि हृदय के विशेष समीप होने के कारण 'बायें' हाथ का अधिक महत्व है। किन्तु अधिक सम्मत मत यह है कि दाहिने हाथ को प्रधान मानना चाहिये। बायें हाथ मे जन्मजात गुण-अवगुण अविकल रूप से रहते हैं। दाहिने हाथ में जन्म के गुण-अवगुणों में जातक ने अपने आचार-विचार-व्यवहार से क्या

परिवर्तन उपस्थित किया, यह विशेष स्पष्ट होता है। इस कारण हमारा विचार यह है कि दोनों हाथों की रेखाओं को ध्यानपूर्वक देखकर पुरुषों के दाहिने हाथ तथा स्त्रियों के बायें हाथ को विशेष महत्व देना चाहिये।

दोनों हाथों में एक से लक्षण हों तो उस फल की पुष्टि होती है। इस विषय में यह उल्लेख करना भी आवश्यक है कि बहुत से ऐसे मनुष्यों के हाथ देखने का हमें अवसर प्राप्त हुआ जिनका दाहिने की अपेक्षा बायाँ हाथ विशेष क्रियाशील है—अर्थात् यदि उनसे कहा जावे कि आप एक गेंद को पूरी ताकत से दाहिने हाथ से फेंकिये और फिर उनसे ही बायें हाथ से गेंद फिकवाई जाय तो बायें हाथ से फेंकी हुई गेंद अधिक दूर जावेगी। ऐसे व्यक्तियों के बायें हाथ की रेखाओं को विशेष महत्व देने से फलादेश अधिक ठीक बैठा।

समय—हस्तपरीक्षा के लिये प्रातःकाल का समय सबसे उपयुक्त है। हस्त-परीक्षक तथा जातक दोनों का चित्त शांत और स्थिर होता है। शरीर को रात्रि-भर के विश्राम मिल जाने के कारण हाथ का रंग भी विशेष स्वाभाविक रहता है। यदि सवेरे सुविधा न हो तो दोपहर या तीसरे पहर अच्छे प्रकाश में हाथ देखना चाहिए। हाथ को 'आइ ग्लास' से देखने से सूक्ष्म रेखा भी बडी दिखाई देती हैं इसलिये रेखाओं का अच्छी प्रकार अनुसंधान हो सकता है। जहाँ रेखा सूक्ष्म हों हथेली के उस भाग को अच्छी तरह दबाने से उन रेखाओं का स्वरूप अच्छी तरह दिखाई देगा।

वास्तव में हाथ को देखने से जो उसके रंग, रूप, लचक, माँसलता, चमक आदि का अनुमान हो सकता है वह उसके चित्र से नहीं। तथापि जहाँ 'हाथ' देखना संभव नहीं वहाँ हाथ के रंग, रूप आदि का विवरण अलग से मँगाकर, हाथ के चित्र से रेखाओं का विचार किया जा सकता है।

हाथ का चित्र लेने का प्रकार

हाथ का चित्र लेने का सबसे सुन्दर और सरल प्रकार यह है कि एक मोटे काँच पर छापे की स्याही डालकर उसे रबर के 'रोलर' से (जैसा छापाखानों में स्याही लगाने के काम में लिया जाता है) घोटना चाहिये। जब सारे 'रोलर' पर समान रूप से पतली स्याही लग जावे तो जातक के सारे हाथ पर रोलर से ही हल्की-सी स्याही लगा देनी चाहिए। जब स्याही हाथ पर लग जाय तो किसी सफ़ेद कागज़ पर हाथ की छाप ले ली जाय। हाथ का मध्य भाग कुछ गड्ढेयुक्त होता है इसलिये जिस कागज़ पर हाथ की छाप ली जावे उसके नीचे मध्य भाग में थोड़ी सी रुई की पतली-सी गद्दी रख दी जावे तो हाथ के मध्य भाग की छाप भी अच्छी प्रकार आ जावेगी।

हाथ की छाप लेते समय अर्थात् जब कागज़ पर हाथ रखा हो एक काली पेंसिल से उंगली, अँगूठे तथा हथेली के आकार स्पष्ट करने के लिये उनके चारों ओर बिलकुल भिड़ाकर रेखा खींचनी चाहिये। इस प्रकार हाथ तथा उंगलियों का आकार पेंसिल से खींची हुई रेखा से स्पष्ट हो जावेगा और करतल की रेखाओं की छाप ज्यों-की-त्यों कागज़ पर आ जावेगी।

प्रारम्भ में अभ्यास न होने से हाथ की छाप स्पष्ट न आवेगी। किन्तु अभ्यास कर लेने से यह कार्य अत्यन्त सुगम हो जाता है।

हाथ की छाप एक प्रकार से हाथ का स्थायी 'रिकार्ड' या नक्शा हो गया। किन्तु इसे सर्वांग सम्पूर्ण बनाने के लिये हाथ की बनावट, हथेली का रंग, आकार, नखों, अँगुष्ठों तथा उंगलियों की बनावट, लम्बाई, मोटाई, पारस्परिक अन्तर, रेखाओं तथा चिह्नों का विवरण लिख लेने से कोई बात भूलने की गुंजाइश नहीं रहती।

इस पुस्तक में हस्त-रेखा-विज्ञान पर जितने प्रकरण दिये गये हैं उतने ही शीर्षक बनाकर—विवरण लिखना विशेष सुविधाजनक होता है। फिर सब लक्षणों का संतुलन और समन्वय कर देश, काल, पात्र, परिस्थिति का विचार कर फलादेश करना उचित है।

२रा प्रकरण

हाथ का आकार [बनावट]

हस्तपरीक्षा को हम दो भागों में विभक्त कर सकते हैं—(१) हाथ का आकार और (२) रेखाएँ तथा चिह्न। हाथ की बनावट में हथेली, उंगलियों तथा अँगूठे की बनावट, आकार, माँसलता, करपृष्ठ, नाखून आदि आ जाते हैं। हथेली के आकार के साथ-साथ, कौन सा भाग उठा हुआ है, कौन सा दबा हुआ है, यह भी एक प्रकार से हाथ की बनावट में ही आ जाता है। हाथ की रेखाओं और चिह्नों के अन्तर्गत सभी प्रधान और अप्रधान रेखाएँ और चिह्न आ जाते हैं।

हाथ की बनावट—आकार, करपृष्ठ आदि से केवल मनुष्य की प्रवृत्ति, बौद्धिक शक्ति तथा नैतिक चरित्र का पता लगता है। वह क्रियाशील होगा, पुरुषार्थी और परिश्रमी अथवा सुस्त, आरामतलब और निकम्मा, वह विद्या या कला के क्षेत्र में आगे बढ़ेगा या व्यापार में, क्रोधी और विलासी होगा या संयमी वा सुशील; इन सब गुणों और अवगुणों का पता लगता है। नाखूनों तथा हथेली के रंग से उसके स्वास्थ्य के विषय में भी बहुत जानकारी होती है। इन सब गुणों का यद्यपि भाग्योदय, धन-संग्रह आदि से बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध है किन्तु हाथ के केवल आकार से यह पता नहीं चल सकता कि किस वर्ष में भाग्योदय होगा या किस वर्ष में व्यक्ति बीमार होगा। इन बातों का पता रेखाओं से ही चलता है।

इस कारण इस हस्तपरीक्षा-विचार को तीन खंडों में विभक्त किया गया है। प्रथम खण्ड में निम्नलिखित विषयों को समझाया गया है :—

(१) मणिबन्ध (कलाई)
(२) हाथ का आकार या बनावट
(३) करपृष्ठ (हथेली के दूसरी ओर वाला हिस्सा)
(४) नाखून
(५) हाथों की उंगलियाँ
(६) अँगूठा
(७) हथेली के दस भाग—सूर्य क्षेत्र, (२) चन्द्र क्षेत्र, (३) मंगल का प्रथम क्षेत्र, (४) मंगल का द्वितीय क्षेत्र, (५) बुध क्षेत्र, (६) बृहस्पति क्षेत्र, (७) शुक्र क्षेत्र, (८) शनि क्षेत्र, (९) करतल-मध्य प्रथम भाग—जीवन-रेखा, शीर्ष-रेखा एवं स्वास्थ्य-रेखा के बीच का स्थान, (१०) करतल-मध्य द्वितीय भाग—शीर्ष-रेखा तथा हृदय-रेखा के बीच का स्थान। ग्रह-क्षेत्रों पर करतल-मध्य में चिह्नों का फल तृतीय खण्ड में वर्णित किया गया है।

लोगों के हाथ भिन्न-भिन्न प्रकार के होते हैं। कुछ के बड़े कुछ के छोटे। किसी के आगे से नुकीली उंगलियों सहित, किसी के आगे से फैले हुए। जब तक हस्तपरीक्षा-विषय में दिलचस्पी न हो लोग एक-दूसरे के हाथों की ओर ग़ौर से नहीं देखते; परन्तु जब एक बार इस विषय में रुचि हो जाती है तो पहले-पहल दृष्टि हाथ की ओर ही जाती है। यदि आप दूर बैठे हुए भी लोगों के हाथों की ओर देखेंगे तो पता चलेगा कि जिस प्रकार दो आदमियों के चेहरे एक-से नहीं होते उसी प्रकार लोगों के हाथ भी भिन्न-भिन्न बनावट के होते हैं।

यह नियम नहीं है कि लम्बे आदमियों के हाथ लम्बे हों और छोटे आदमियों के छोटे। यदि आप एक ही लम्बाई के ८-१० व्यक्तियों के हाथ नापें तो पता चलेगा कि किन्हीं के हाथ अपेक्षाकृत लम्बे हैं किन्हीं के छोटे। कलाई से मध्यमा (बीच की उंगली)

के अन्त तक, हाथ की लम्बाई होती है। एक ही लम्बाई के हाथों में भी आप भिन्नता पावेंगे—कुछ की हथेली लम्बी, उंगलियाँ छोटी होंगी और दूसरों की हथेली छोटी, उंलियाँ लम्बी। इसी प्रकार कुछ व्यक्तियों के हाथ अधिक चौड़े होते हैं कुछ के सँकड़े। इन्हीं सब भेदों के कारण सैकड़ों प्रकार के हाथ होते हैं। परन्तु जैसे भिन्न-भिन्न वर्ण (रंग) के आदमियों को भी हम चार विभाग (१) अति गौर (२) गौर (३) श्याम (४) अति श्याम में विभक्त कर देते हैं उसी प्रकार हस्त-परीक्षकों ने हाथ को सात वर्गों में विभाजित किया है :—

(१) सबसे निम्न प्रकार का हाथ (अर्थात् ऐसे व्यक्ति का हाथ जिसकी मानसिक उन्नति या मस्तिष्क का विकास बहुत कम हुआ हो)—हाथों की शिराओं (नसों) और हड्डियों का साक्षात् सम्बन्ध मस्तिष्क से है। मानसिक विचारों और क्रियाओं का प्रभाव सीधा हाथ पर पड़ता है। जो बुद्धिमान्, विद्वान्, क्रियाशील, चतुर होते हैं उनके हाथ सुन्दर, विकसित और सुसंस्कृत होते हैं। इसके विपरीत जो कुल परम्परागत मूर्ख, उजड्ड, असंस्कृत, अपरिष्कृत व जंगली होते हैं उनके हाथ निम्न श्रेणी के होते हैं। इनके लक्षण विस्तार से आगे बताये जायेंगे। इनमें तामसिक वृत्ति प्रधान होती है।

(२) वर्गाकार हाथ—उपयोगिता की दृष्टि से इस प्रकार का हाथ सर्वप्रथम कोटि का होता है। ऐसे व्यक्तियों में रजोगुण प्रधान होता है।

(३) आगे से फैला हुआ हाथ—ऐसे व्यक्तियों में क्रियाशीलता अधिक होती है। वे परिश्रमी व कार्य करने वाले होते हैं, साथ ही उनका स्नायु-मंडल भी बहुत 'चल' (अस्थिर-क्रियान्वित) होता है। इसमें रजोगुण प्रधान होता है।

(४) दार्शनिक हाथ—इन हाथों की उंगलियों में गाँठें निकली रहती हैं। ये लोग उच्च कोटि के विचारक होते हैं। इनमें सत्त्वगुण-

प्रधान रजोगुण का मिश्रण होता है ।

(५) आगे से कुछ नुकीले हाथ—ये लोग कलाकार होते हैं या उस ओर उनकी प्रवृत्ति होती है। इन में भी रजोगुण प्रधान होता है ।

(६) शान्तिनिष्ठ हाथ—शान्त प्रकृति के लोगों का हाथ, जो कोई कार्य करना पसन्द नहीं करते। आलसी नहीं होते किन्तु सांसारिक वस्तुओं में उन्हें रुचि नहीं होती। ऐसे व्यक्तियों में सत्त्वगुण प्रधान होता है। न उन्हें काम-क्रोधादि मन के वेगों से विशेष उद्वेग होता है न सांसारिक उन्नति के साधनों में क्रियाशीलता। ऐसे शुद्ध सात्त्विक हाथ प्रायः देखने में नहीं आते ।

(७) मिश्रित हाथ—जिसमें उपर्युक्त छः प्रकार के हाथों के लक्षणों में से कई मिश्रित रहते हैं ।

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट हो गया होगा कि भिन्न-भिन्न प्रकार के हाथों वाले व्यक्तियों की मनोवृत्ति, रुचि योग्यता भिन्न-भिन्न प्रकार की होती है। अभ्यास और परिश्रम से, जिस कार्य के योग्य मनुष्य नहीं होता है, उस कार्य के योग्य भी अपने को बना लेता है परन्तु जिस ओर जन्मजात प्रवृति और विशेष बौद्धिक साधन-सम्पन्नता हो उसमें मनुष्य विशेष सफल होता है यह प्राकृतिक नियम है।

ऊपर आकार या बनावट के दृष्टिकोण से हाथ के सात विभाग बताये गए हैं। अब प्रत्येक प्रकार के हाथ का लक्षण और उसका फल बताया जाता है। उंगलियों के वर्गाकार 'फैली हुई' 'नुकीली' आदि विशेषणों का साधारण उल्लेख इस प्रकरण में कर दिया है। 'वर्गाकार' या 'नुकीली' या 'आगे फैली हुई' कैसी होती हैं तथा एक-दूसरे के लक्षण और फलादेश में क्या अन्तर है, इसकी विस्तृत आलोचना 'उंगलियों', के प्रकरण में पृथक् की गई है। (देखिये प्रकरण ६) ।

सब से निम्न श्रेणी का हाथ

सब से निम्न श्रेणी के हाथ वाले व्यक्ति के मस्तिष्क का विकास बहुत कम होता है। ऐसा हाथ बेढंगा, अपरिष्कृत व गंवारू होता है। हाथ की जिल्द मोटी, खुरदरी होती है। हथेली बहुत मोटी और भारी होती है। उंगलियाँ छोटी होती हैं और नाखून भी छोटे होते हैं। यह साधारण नियम है कि उंगलियाँ यदि लम्बी हों तो विशेष बौद्धिक विकास होता है। हाथ में उंगलियों की अपेक्षा हथेली जितनी अधिक बड़ी और भारी होगी उसी अनुपात से मनुष्य में पशुवृत्ति विशेष होगी। निम्न श्रेणी के हाथ में यही लक्षण विशेष होता है। न केवल उंगलियाँ छोटी होती हैं अपितु वे बेढंगी, अपरिष्कृत, गंवारू मालूम होती हैं। हथेली में रेखायें भी कम होती हैं। ऐसे लोग जानवर की तरह खाते-पीते हैं, परिश्रम करते हैं, सोते हैं, लड़ते हैं, विषय-वासना में प्रवृत्त होते हैं। उनमें कोई नफ़ासत या सौन्दर्यप्रियता नहीं होती। पशुवृत्ति और असंयम इनके कार्य और व्यवहार में प्रधान होता है। ऐसे व्यक्तियों का अंगूठा छोटा और बहुत मोटा होता है। अँगूठे का प्रथम पर्व मोटा, भारी और प्राय: चौकोर होता है। ऐसे लोगों में आत्मबल या साहस नहीं होता। क्रोधी बहुत होंगे, वासनाओं में प्रचण्ड वेग भी होगा परन्तु जैसे गुर्राने वाला मोटा कुत्ता ज़रा डंडा दिखाने से भागता है वैसे ही इन लोगों के मन में कायरता होती है। ऐसे लोगों में चालाकी प्राकृतिक होती है, बुद्धि से उत्पन्न तर्क के कारण चतुरता नहीं होती। क्रोध के आवेश में ये लोग कत्ल भी कर बैठते हैं। इनको एक प्रकार पशु-वृत्ति का असंस्कृत रूप कहना चाहिए। आजकल सभ्यता के युग में शिक्षा के क्रमिक विस्तार के कारण बिलकुल पशुवृत्ति का उपर्युक्त लक्षण-युक्त हाथ कम देखने को मिलता है। फिर भी निम्न श्रेणी के लोगों में काफ़ी लक्षण मिलेंगे। संस्कृत का एक श्लोक है कि आहार, निद्रा, भय, विषय-वासना, मनुष्य में

यदि केवल यही हों (अर्थात् विद्या, विचार-शान्ति, साहित्य, संगीत कला आदि न हो) तो वह पशु के समान है। देखिये चित्र नं० १
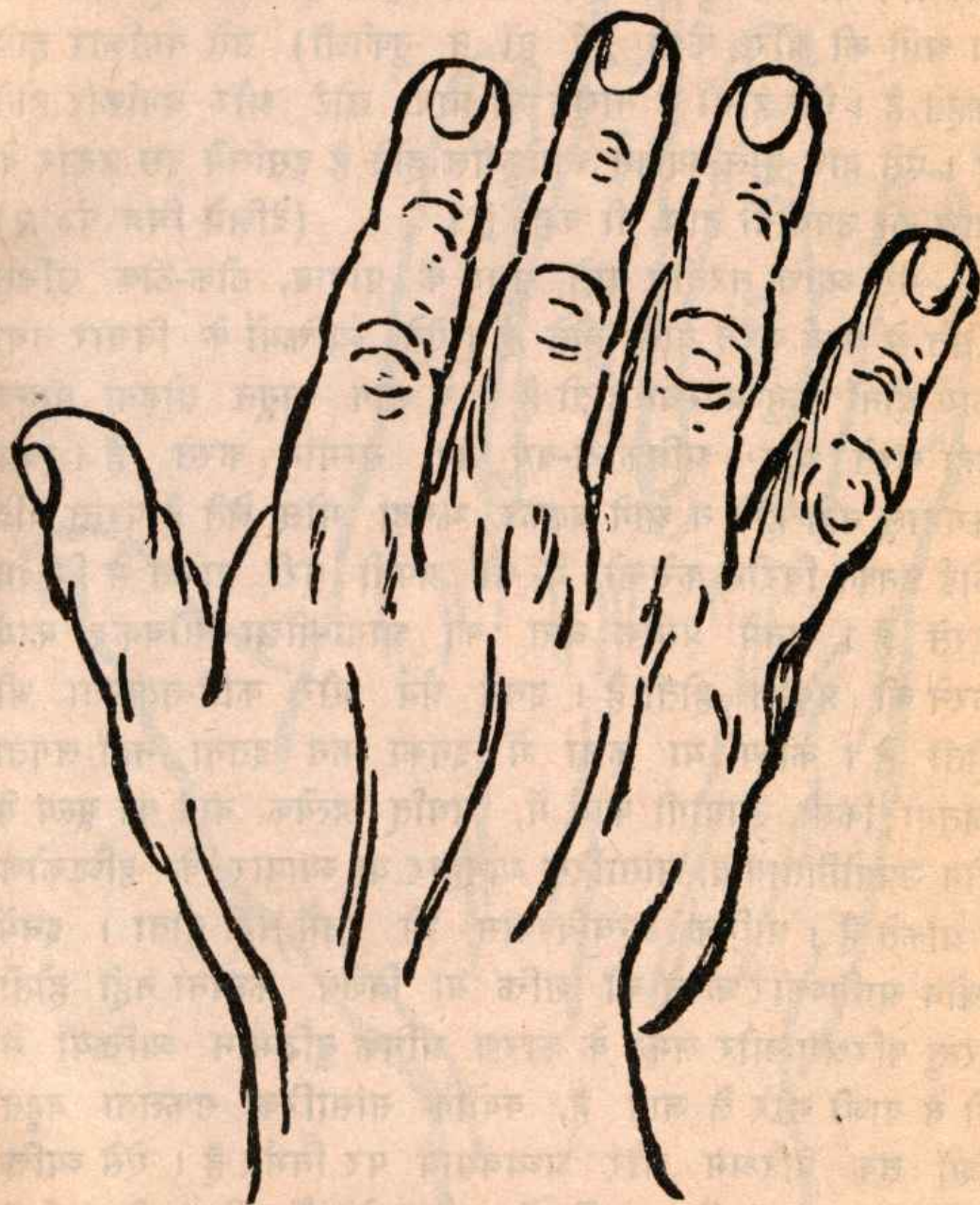
सबसे निम्न श्रेणी का हाथ (चित्र नं० १)

वर्गाकार हाथ

जिस हाथ में हथेली का नीचे का भाग (कलाई के पास) तथा

ऊपर का भाग (उंगलियों के जड़ के पास) वर्गाकार हो, अर्थात् हथेली जितनी लम्बी हो प्रायः उतनी ही चौड़ी और उंगलियों के अग्रभाग भी समचतुष्कोणाकृति या वर्गाकृति हों (अर्थात् उंगलियाँ न आगे की ओर फैली हुई हों न नुकीली) उसे वर्गाकार हाथ कहते हैं। ऐसे हाथों में नाखून भी प्रायः छोटे और वर्गाकार होते हैं। ऐसे हाथ वाले व्यक्ति कार्यकुशल होते हैं इसलिये इस प्रकार के हाथ को उपयोगी हाथ भी कहते हैं। (देखिये चित्र नं० २)

ऐसे व्यक्ति तरतीब वाले, समय के पाबन्द, ठीक-ठीक उचित रीति से कार्य करने वाले होते हैं। ऐसे व्यक्तियों के विचार तथा कार्य दोनों में सुव्यवस्था होती है। ये लोग कानून तोड़ना पसन्द नहीं करते और अधिकारी-वर्ग का सम्मान करते हैं। स्वयं झगड़ालू नहीं होते न आगे बढ़कर झगड़ा मोल लेते हैं परन्तु यदि कोई इनका विरोध करे तो ये भी अपनी पूरी ताकत से विरोध करते हैं। इनमें प्रत्येक बात का आगा-पीछा सोचकर कार्य करने की प्रवृत्ति होती है। इनमें धैर्य और कार्य-तत्परता भी होती है। काव्य या कला में इनका मन इतना नहीं लगता जितना किसी उपयोगी कार्य में, अर्थात् प्रत्येक बात का मूल्य ये लोग उपयोगितावाद, सांसारिक व्यवहार या व्यापार के दृष्टिकोण से आँकते हैं। धार्मिक अन्धविश्वास भी इनमें नहीं होता। इनमें नवीन आविष्कार करने की शक्ति या विशेष कल्पना नहीं होती परन्तु परिश्रम और लगन के कारण अधिक बुद्धिमान व्यक्तियों से भी ये बाजी मार ले जाते हैं, क्योंकि सांसारिक सफलता बहुत अंशों तक परिश्रम और अध्यवसाय पर निर्भर है। ऐसे व्यक्ति कृषि, व्यापार आदि कार्यों में सफल होते हैं। जिस भी कार्य में हिसाब-किताब और नाप-तोल, व्यवस्था, ढंग या व्यावहारिकता की आवश्यकता अधिक होती है उसे ये लोग खूबी से अंजाम देते हैं। ये लोग घर के प्रेम, कौटुम्बिक परिस्थिति को पसन्द करने वाले होते

हैं परन्तु इनके प्रेम में प्रदर्शन या दिखावा नहीं होता । ये लोग सच्चे, मित्रता निभाने वाले व ईमानदार होते हैं । किन्तु एक बड़ा
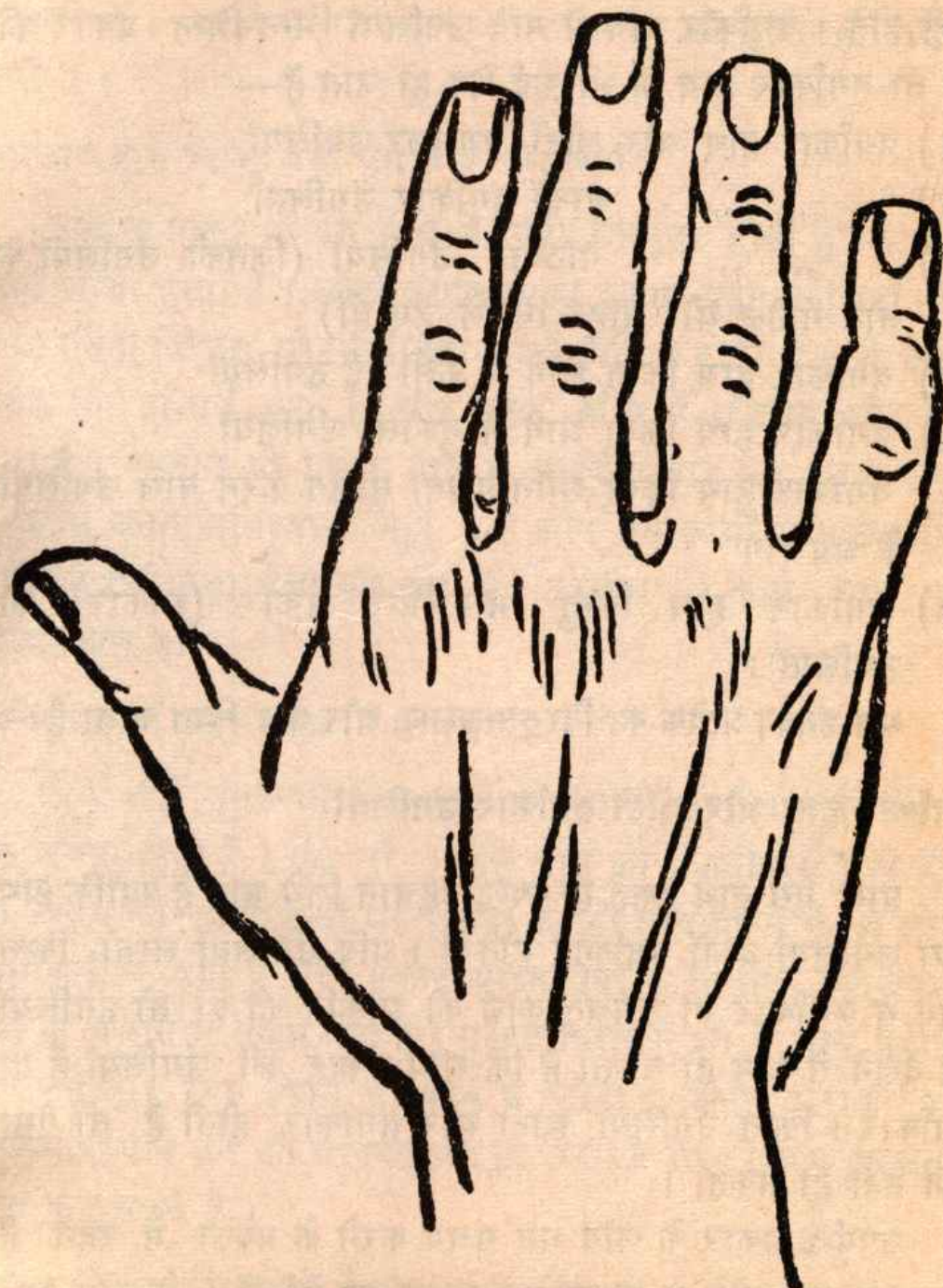
वर्गाकार हाथ (चित्र नं० २)

अवगुण इनमें यह होता है कि हरेक बात की इस क़दर जाँच-

पड़ताल करते हैं कि दूसरा आजिज हो जाता है और जो बात इनके पूरी तौर से समझ में नहीं आ जाती उसे मानने को तैयार नहीं होते। वर्गाकार हाथ में यदि उंगलियाँ भिन्न-भिन्न प्रकार की हों तो वर्गाकार हाथ के भी कई भेद हो जाते हैं—

(१) वर्गाकार हाथ और छोटी वर्गाकार उंगलियाँ
(२) ,, ,, लम्बी वर्गाकार उंगलियाँ
(३) ,, ,, गाँठदार उंगलियाँ (जिनकी उंगलियों के जोड़ गठीले और बाहर निकले हुए हों)
(४) वर्गाकार हाथ किन्तु आगे से फैली हुई उंगलियाँ
(५) वर्गाकार हाथ किन्तु आगे से नुकीली उंगलियाँ
(६) वर्गाकार हाथ किन्तु शांतिप्रियता सूचित करने वाले उंगलियों के अग्रभाग
(७) वर्गाकार हाथ किन्तु भिन्न-भिन्न प्रकार (आकार) की उंगलियाँ।

अब इनका प्रत्येक का विस्तृत लक्षण और फल दिया जाता है—

वर्गाकार हाथ और छोटी वर्गाकार उंगलियाँ

प्रायः ऐसे हाथ देखते ही स्पष्ट पहचान लिये जाते हैं क्योंकि हाथ तथा उंगलियाँ दोनों वर्गाकार होते हैं। यदि उंगलियाँ लम्बी किन्तु आगे से वर्गाकार या समचतुष्कोण की आकृति की हों तो उंगलियों को देखने से भ्रम हो सकता है कि अन्य प्रकार की उंगलियाँ हैं या वर्गाकार। किन्तु उंगलियाँ छोटी और वर्गाकार होती हैं तो ऐसा भ्रम नहीं हो सकता।

उपर्युक्त प्रकार के लोग धन संचय करने के प्रयत्न में रहते हैं और परिश्रमी होने के कारण धन संचय कर लेते हैं। ये लोग चाहे कंजूस न हों परन्तु प्रत्येक बात में उनका व्यावहारिक दृष्टिकोण प्रधान रहता है और व्यापारिक दृष्टि से प्रत्येक बात का मूल्य आँकते हैं।

ये लोग जिस बात की जाँच-पड़ताल स्वयं कर लेते हैं उसे ही ठीक मानते हैं। इनका चित्त उदार नहीं होता और कुछ हठी स्वभाव के भी होते हैं। इनमें सांसारिकता व धन-संचय की वृत्ति ही प्रधान होती है।

वर्गाकार हाथ किन्तु बड़ी वर्गाकार उंगलियाँ

उपर्युक्त प्रकार से इस हाथ में यही भिन्नता होती है कि उंगलियाँ लम्बी होती हैं। छोटी उंगलियों की बजाय बड़ी उंगलियाँ होने से मानसिक विकास और उदारता इनमें अधिक होती है। ये लोग प्रत्येक बात में तर्क करते हैं और इनके काम में तरतीब और ढंग होता है। ये लोग भी प्रत्येक बात में सोच-विचार कर कदम रखते हैं, परन्तु उतने अविश्वासी नहीं होते और ऐसे कार्यों में सफल होते हैं जिनमें तर्क तथा वैज्ञानिक ढंग से, तरतीब से कार्य करने की आवश्यकता हो।

वर्गाकार हाथ और गाँठदार उंगलियाँ

प्रायः बड़ी उंगलियाँ जिन हाथों में होती हैं उन्हीं (उंगलियों) में गाँठें उन्नत होती हैं। ऐसे लोग प्रत्येक बात की तफ़सील में जाते हैं। उस विषय की छोटी-छोटी बारीकियों को भी स्वयं देखते हैं। ये लोग 'निर्माण-प्रिय' होते हैं और मकान या मशीनों के निर्माण, कल-कारखाने के चलाने में सफल होते है। गणित विद्या में भी ये लोग प्रवीण हो सकते हैं। जिस किसी भी काम में छोटी-से-छोटी बारीकी पर व्यक्तिगत ध्यान देने की आवश्यकता हो उसमें ये लोग विशेष सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

वर्गाकार हाथ और आगे से फैली हुई उंगलियाँ

आगे से फैली हुई उंगलियाँ होने से मनुष्य में आविष्कारक बुद्धि होती है। साथ ही वर्गाकार हाथ होने से मनुष्य में व्यावहारिकता

काफ़ी अधिक मात्रा में होती हैं। इस कारण ये लोग अपनी बुद्धि को ऐसे कार्यों में लगाते हैं जिनमें उपयोगिता हो। मशीन, पुर्ज़े, घरेलू कार्यों में आने वाले नये यन्त्र या साधन, या इसी प्रकार अन्य वस्तुएँ निर्माण करते हैं। इंजीनियरिंग या मशीनरी, बिजली आदि के उपयोगी कार्यों में इन्हें विशेष सफलता प्राप्त हो सकती है।

वर्गाकार हाथ और आगे से कुछ नुकीली उंगलियां

यद्यपि वर्गाकार हाथ में 'उपयोगितावाद' ही प्रधान होता है तथापि आगे से कुछ नुकीली उंगलियाँ होने से बाजा बजाने, गायन, साहित्यिक रचना आदि कार्यों में भी ऐसे हाथ वाले सफल होते हैं।

शुद्ध कलाकार का हाथ लम्बोतरा और उंगलियों का अग्रभाग भी कुछ नुकीला होता है इस कारण बहुत से लोगों को यह कुछ आश्चर्य की बात मालूम होगी कि वर्गाकार हाथ वाले व्यक्ति भी संगीत, साहित्य आदि में सफल हो सकते हैं। किन्तु वास्तव में इसका रहस्य यह है कि हाथ भी लम्बोतरा और उंगलियाँ भी नुकीली हों तो शुद्ध कलाकार तो मनुष्य होता है किन्तु सृजनात्मक योग्यता का अभाव होने के कारण अपने कार्य का सम्पादन वह इतने अच्छे रूप में नहीं कर सकता कि उसका संसार में नाम हो या धन प्राप्त हो। इसे, वर्गाकार हाथ और कुछ नुकीली उंगलियाँ, इन दोनों गुणों के सम्मिश्रण से कलात्मक योग्यता और सांसारिक दृष्टि से उसका प्रसार और व्यवहारिक रूप देने में सफलता होती है।

वर्गाकार हाथ और बहुत नुकीली उंगलियां

वर्गाकार हाथ का गुण है—व्यावहारिकता और उपयोगितावाद। अत्यन्त नुकीली उंगलियों का गुण है—आत्म-चिन्तन, निष्क्रियता, मानसिक जगत् में विचरण करना—सांसारिकता से मतलब नहीं।

ये दोनों गुण प्रायः एक हाथ में नहीं मिलते परन्तु यदि हों तो व्यावहारिकता या उपयोगिता का गुण होने से मनुष्य प्रायः कलात्मक या अन्य व्यापार-सम्बन्धी कामों का प्रारम्भ तो खूब ज़ोर-शोर से करता है किन्तु उन्हें आखिर तक पूरा नहीं करता और बहुत से अच्छी प्रकार प्रारम्भ किये कार्य बीच में ही रह जाते हैं।

वर्गाकार हाथ और मिश्रित लक्षणों वाली उंगलियाँ

यदि हाथ वर्गाकार हो और उंगलियाँ भिन्न-भिन्न प्रकार की हों—कोई नुकीली, कोई समचतुष्कोण (वर्गाकृति), कोई आगे से फैली हुई और कोई बहुत नुकीली तो ऐसे हाथ की उंगलियों को मिश्रित लक्षण की उंगलियों वाला कहेंगे। स्त्रियों की अपेक्षा प्रायः पुरुषों में ऐसे हाथ विशेष पाये जाते हैं। ऐसे व्यक्तियों का अँगूठा प्रायः लचकदार होता है और बीच में पीछे की ओर काफ़ी मुड़ता है। तर्जनी प्रायः नुकीली, मध्यमा चतुष्कोण (वर्गाकृति), अनामिका आगे से फैली हुई और कनिष्ठिका भी नुकीली होती है। ऐसे लोग बहु-विषयज्ञ होते हैं। अनेक विषयों में चतुर होने के कारण क्या साहित्य, क्या विज्ञान प्रत्येक विषय में वे अच्छा ज्ञान रखते हैं और अनेक कार्यों का योग्यतापूर्वक सम्पादन कर सकते हैं, किन्तु यह बहु प्रकार की योग्यता उनके लिए हानिप्रद साबित होती है। किसी एक काम में वे जम कर नहीं लगते। इस कारण थोड़ा-थोड़ा अनेक ढंग का काम करने के कारण वे किसी एक में भी चोटी पर नहीं पहुँच पाते और उन्हें सफलता नहीं मिलती।

आगे से फैला हुआ हाथ

फैले हुए हाथ में न केवल उंगलियों के अग्र भाग आगे से फैले होते हैं बल्कि हथेली भी (या तो कलाई के पास वाला भाग, या उंगलियों के मूल के पास का स्थान) फैली हुई होती है। समचतुष्कोण

या वर्गाकृति हाथ में हथेली दोनों ओर करीब-करीब बराबर रहती है किन्तु फैले हुए हाथ में एक ओर फैली हुई, यह दोनों प्रकार
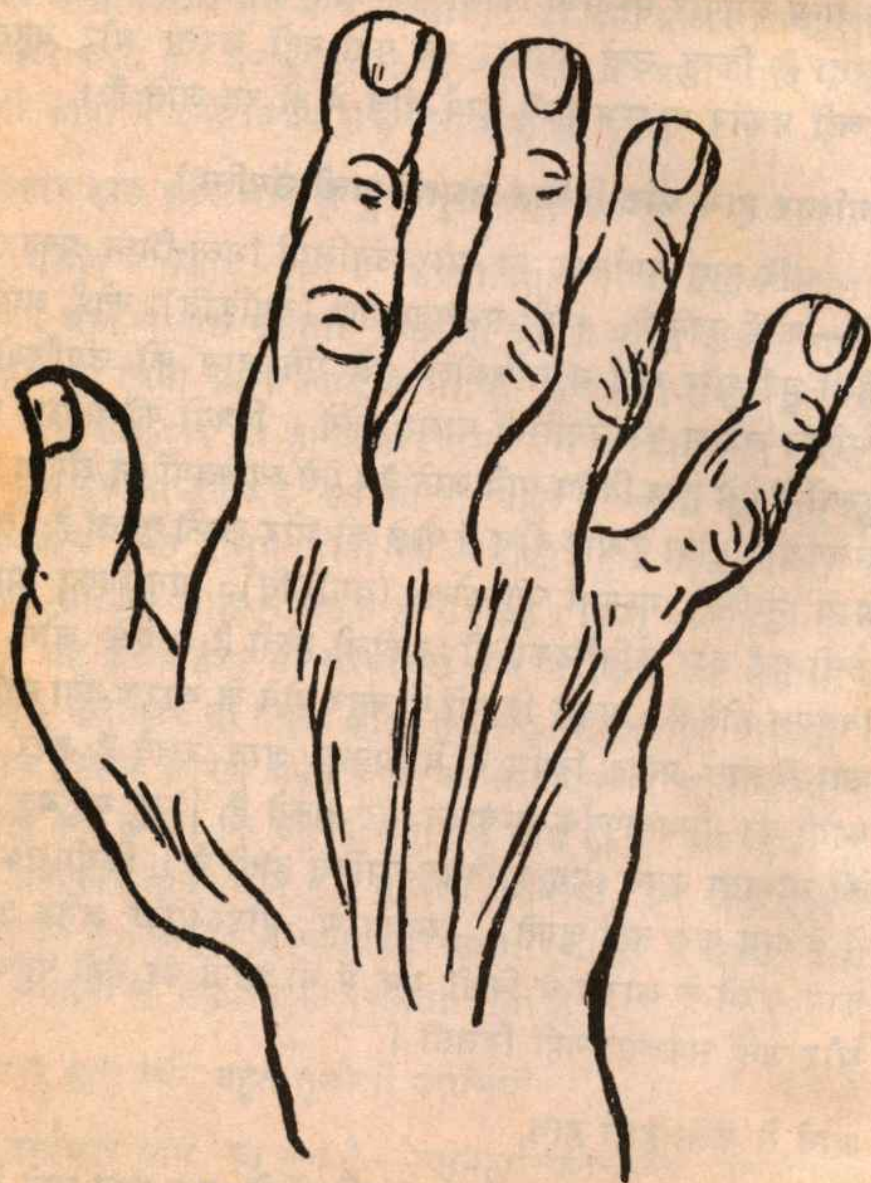
आगे से फैला हुआ हाथ (चित्र नं० ३)

के हाथों में अन्तर है (देखिये चित्र नं० २ और ३)

यदि फैला हुआ हाथ, सख्त और मज़बूत हो तो ऐसे मनुष्य के

मन में स्थिरता नहीं होती, उसमें उत्साह और जोश, कुछ करने की प्रवृत्ति, उत्तेजना अधिक मात्रा में होती है। किन्तु यदि हाथ मुलायम हो और माँस भी ढीला हो तो चित्त में अस्थिरता व चिड़चिड़ापन होता है। ऐसा व्यक्ति कभी-कभी जोश में आकर कार्य आरम्भ करता है किन्तु उसमें लगा नहीं रहता। अध्यवसाय की कमी होती है।

प्रायः 'फैले हुए हाथ' बड़े होते हैं, उंगलियाँ भी पुष्ट और लम्बी होती हैं। इन व्यक्तियों में स्वतन्त्रता, स्वयं काम करने की प्रवृत्ति, क्रियाशक्ति, उत्साह तथा आत्मनिर्भरता विशेष मात्रा में होती है। ये लोग ख़ाली नहीं बैठ सकते। 'कर्मण्यता' इनका गुण है। इस कारण नवीन स्थानों की खोज, समुद्र-यात्रा या कल-कारखानों में नवीन आविष्कार या किसी भी काम में अनोखी सूझ-बूझ में ये लोग लगे रहते हैं और सफल होते हैं।

इनमें कर्मशीलता के साथ-साथ जो दूसरा गुण है, वह है अपना नया स्वतन्त्र रास्ता निकालना। मशीन, कल-पुर्ज़ों या बिजली या अन्य वैज्ञानिक कार्यों में ये नई चीज़ ईजाद करेंगे या पुरानी चीज़ का भी किसी नवीन ढंग से उपयोग करेंगे। जैसे एक भेड़ दूसरी भेड़ के पीछे चलती है वैसे ये नहीं चल सकते। इसलिए चाहे गायन या कला में, सिनेमा या धर्मोपदेश में, राजनीतिक या सामाजिक क्षेत्र में, डाक्टरी या किसी भी विभाग में ऐसे व्यक्ति किसी नये तरीके से चलते हैं। चाहे इनकी नवीन योजना या प्रकार ग़लत साबित हो, या उसकी क़द्र तत्काल न हो, किन्तु आविष्कार या नवीन मार्ग से कार्य करने का इनका स्वभाव होता है।

ऊपर बताया गया है कि फैले हुए हाथ में हथेली (१) या तो उंगलियों के मूल में अधिक फैली हुई होती है या (२) कलाई के पास। यदि उंगलियों की जड़ के पास अधिक फैली हो तो आविष्कारक प्रवृत्ति को व्यावहारिकता या उपयोगिता का रूप देने में ऐसे व्यक्ति विशेष सफल होते हैं। कल-कारखाने-सम्बन्धी आविष्कार करेंगे

तो जनता के उपयोगी रेल, जहाज आदि में काम आने वाले यन्त्र बनावेंगे। किन्तु यदि मणिबन्ध या कलाई के पास वाला भाग विशेष चौड़ा हो तो आविष्कारक बुद्धि का उपयोग 'विचार' या 'मानसिक' क्षेत्र में विशेष होता है। नवीन वैज्ञानिक या साहित्यिक अनुसंधान, विशेष फूल-पौधों की बारीकियों का अन्वेषण आदि चाहे उस नवीन आविष्कार से कोई जनहित कार्य न होता हो। यदि वह नवीन आविष्कार-मात्र है तो उनकी प्रवृत्ति की पूर्ति हो जाती है।

दार्शनिक हाथ

ऐसा हाथ प्रायः लम्बा और नुकीला होता है, उंगलियों में हड्डी का ढाँचा विशेष प्रमुख, उंगलियों की गाँठें भी उन्नत और निकली हुई और नाखून भी लम्बे होते हैं। ऐसे व्यक्ति बहुत 'विचारक' होते हैं। इनकी दृष्टि में बुद्धि और ज्ञान का महत्त्व द्रव्य से अधिक होता है इस कारण द्रव्य की परवाह न कर ये लोग 'विचार'-प्रधान या मानसिक विकास-सम्बन्धी कार्यों में विशेष प्रवृत्त होते हैं। इस कारण साधारण जनसमुदाय से (जो केवल द्रव्य के ही पीछे लगा रहता है) इनका मार्ग भिन्न रहता है। चाहे कठिनाइयाँ सहनी पड़ें, ये अपनी विचार-प्रधान, बौद्धिक गवेषणा में ही लगे रहते हैं। इनके विचार में रहस्यवाद की भी गहरी छाप रहती है। चाहे ग्रन्थ लिखें, या उपदेश दें, या काव्य लिखें सभी पर दार्शनिक दृष्टिकोण या आत्मिक अन्वेषण का रंग चढ़ा रहता है। सुप्रसिद्ध हस्तपरीक्षक 'कैरो' ने लिखा है कि ज्ञान और दर्शन की तपोभूमि भारत में ऐसे विचारवादियों के हाथ, विशेषतः ब्राह्मणों में प्राप्त होते हैं।

ऐसे व्यक्ति गंभीर विचारक होते हैं। कम बोलते हैं और उनकी चित्तवृत्ति अन्तर्मुखी होती है। इनमें गौरव की भावना विशेष होती है और छोटी-सी भी बात विचार कर बोलते हैं। इनमें धैर्य होता है परन्तु यदि धार्मिकता की ओर अन्य लक्षणों से अधिक प्रवृत्ति मालूम

हों तो ऐसे व्यक्तियों में प्रायः धर्मान्धता होती है—अर्थात् अपने धर्म के अतिरिक्त और किसी धर्म को कुछ नहीं समझते।

दार्शनिक हाथ (चित्र नं० ४)

उंगलियों में गाँठें निकला होना 'विचारक' होने की प्रवृत्ति प्रकट करता है। प्रत्येक बात का विश्लेषण करना इनका स्वभाव होता है। उंगलियों के अग्रभाग चतुष्कोणाकृति या कुछ नुकीले होने से इनमें आत्मिक स्फूर्ति होती है। वर्गाकृति उंगलियों के कारण इनमें धैर्य और अध्यवसाय तथा कुछ नुकीली उंगलियों के कारण आत्म-त्याग की भावना रहती है।

कुछ नुकीला हाथ

ऐसा हाथ प्राय: मंझोले (न बहुत बड़ा न छोटा) आकार का होता है। हथेली आगे की ओर कुछ कम चौड़ी होती है। उंगलियाँ जहाँ हथेली से प्रारम्भ होती हैं—पुष्ट होती हैं किन्तु नाखूनों तक पहुँचते-पहुँचते कुछ नुकीली हो जाती हैं। (देखिये चित्र नं० ५)

ऐसे व्यक्तियों में इच्छा-शक्ति और मन की सूझ की प्रधानता होती है। 'इच्छा-शक्ति' से तात्पर्य है कि जब चित्त की जैसी सहसा रुचि हुई काम कर डाला। 'विचार' कर—ऊहापोह कर, गुण-दोष मीमांसा कर कार्य नही करते। चित्त में लहर आई काम कर डाला। इनके मन में सूझ हुई, एक स्फूर्ति हुई कि यह सौदा करने में फ़ायदा होगा, तुरन्त वह सौदा कर डालेगे। वर्गाकृति हाथ वाले व्यक्ति की तरह हिसाब-किताब फैलाकर व्यापारिक दृष्टि से नहीं सोचेंगे।

ऐसे व्यक्तियों में कलात्मक भावना, चित्त का आवेश, इच्छा की प्रधानता होती है। साथ ही ये लोग आरामपसन्द, विलासी और आलसी होते हैं। ये लोग चतुर होते हैं और तुरन्त ही मन में उमंग आते ही कार्य कर डालते हैं और वे कार्य लाभप्रद भी हो सकते हैं। परन्तु ऐसे लोगों में धैर्य और अध्यवसाय की कमी होती है। इसलिए इनके संकल्प (योजना) पूरे नहीं होते।

ऐसे व्यक्ति बातचीत में निपुण होते हैं। पांच-सात आदमियों में बैठे हों तो तुरन्त दूसरे के मन की बात का अन्दाज़ लगा, खूबी से

और फबती हुई बात करेंगे परन्तु इनके ज्ञान में ऊपरी 'कलई' अधिक होती है। ठोस योग्यता नहीं आने पाती। ठोस योग्यता केवल
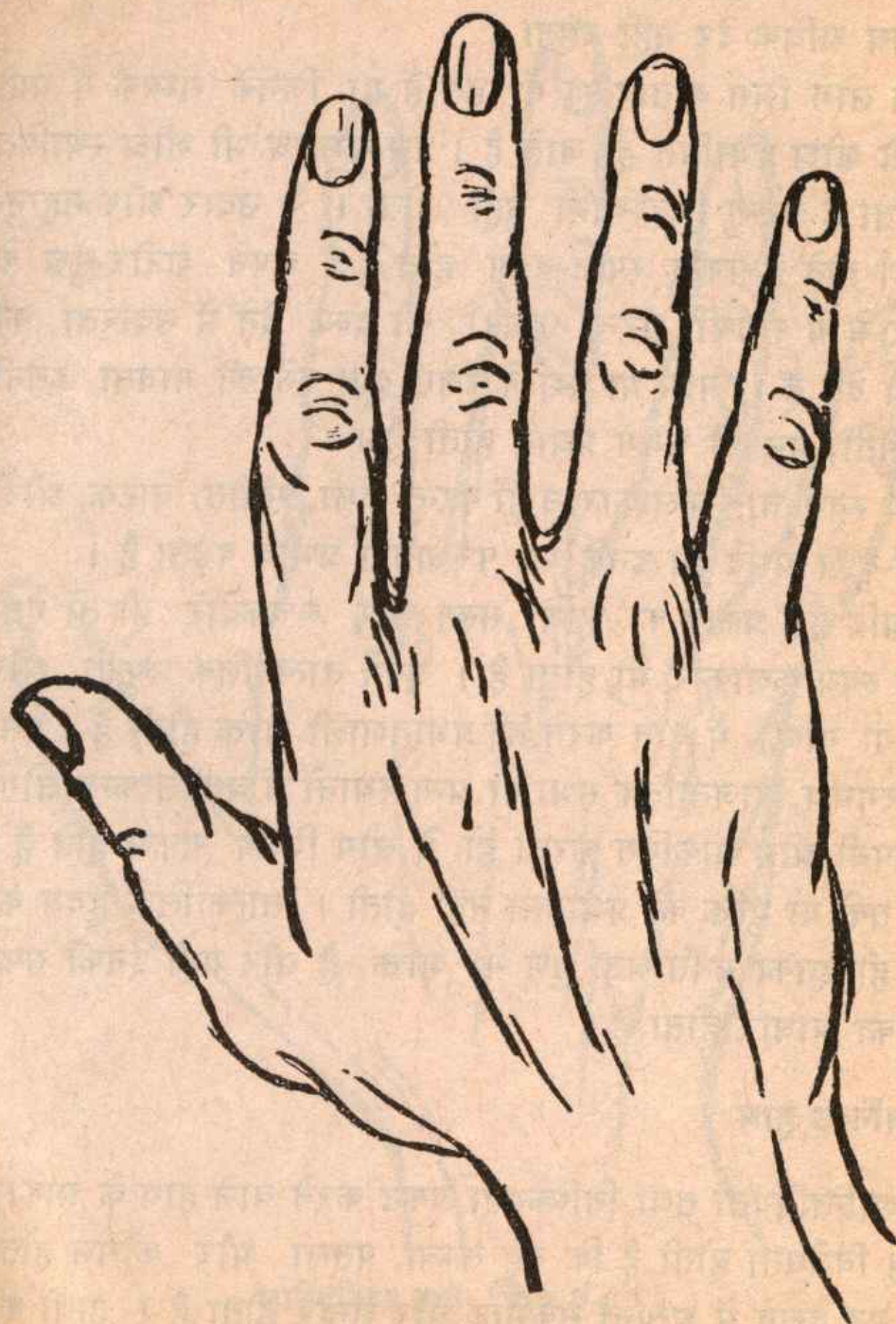
कुछ नुकीला हाथ (चित्र नं० ५)

परिश्रमपूर्ण अध्ययन से आती है और इसकी इनमें बहुत कमी होती

है । धैर्यपूर्वक किसी काम में न लग सकने के कारण इनकी मैत्री या प्रेम भी स्थिर नहीं रहता । जरा सी बात पर नाराज़ हो जाते हैं । पर क्रोध अधिक देर नहीं रहता ।

ये लोग जिस वातावरण में रहते हैं या जिनके सम्पर्क में आते हैं उनसे शीघ्र प्रभावित हो जाते हैं । प्रेम-सम्बन्ध भी शीघ्र स्थापित हो जाता है परन्तु चिरस्थायी नहीं होता । ये उदार और सहानुभूतिपूर्ण होते हैं परन्तु स्पष्ट-वक्ता होते हैं । अपने शरीर-सुख के विचार से ये स्वार्थी परन्तु दूसरों को द्रव्य देने में उदारता का परिचय देते हैं । नाम या यश के लिए दान देने की भावना इतनी नहीं होती, मन की उमंग प्रधान होती है ।

ये स्वयं चाहे कलाकार न हों परन्तु कला, संगीत, नाटक, औरों के हर्ष-दुःख आदि का इनके मन पर गहरा प्रभाव पड़ता है ।

यदि इस प्रकार का हाथ सख्त और लचकदार हो तो ऐसा व्यक्ति स्वयं कलाकार भी होता है । इनमें तात्कालिक स्फूर्ति और सभा या गोष्ठी में बात करने की प्रभावशाली शक्ति होती है । इसलिये रंगमंच, राजनीतिक सभा या अन्य स्थानों में जहाँ तत्काल लोगों को अपनी ओर आकर्षित करना हो ये लोग विशेष सफल होते हैं । इनमें तर्क या युक्ति की प्रधानता नहीं होती । तात्कालिक हृदय का जोश ही इनका सबसे बड़ा गुण या शक्ति है और यही इनकी सफलता का आधार होता है ।

शान्तिनिष्ठ हाथ

शान्तिप्रियता तथा निष्क्रियता प्रकट करने वाले हाथ के आकार में यह विशेषता होती है कि वह लम्बा, पतला और कोमल होता है । यह देखने में अत्यन्त सुकुमार और सुन्दर होता है । हाथों की उंगलियाँ भी लम्बी, पतली, आगे से नुकीली व सुन्दर होती हैं । नाखून भी लम्बे, बादाम की आकार के मनोहर होते हैं । एक प्रकार से यह

कह सकते हैं कि सबसे सुन्दर यही हाथ होता है, परन्तु ऐसे हाथ वाले व्यक्ति 'भाग्यहीन' होते हैं। क्योंकि 'भाग्य' का निर्माण मनुष्य
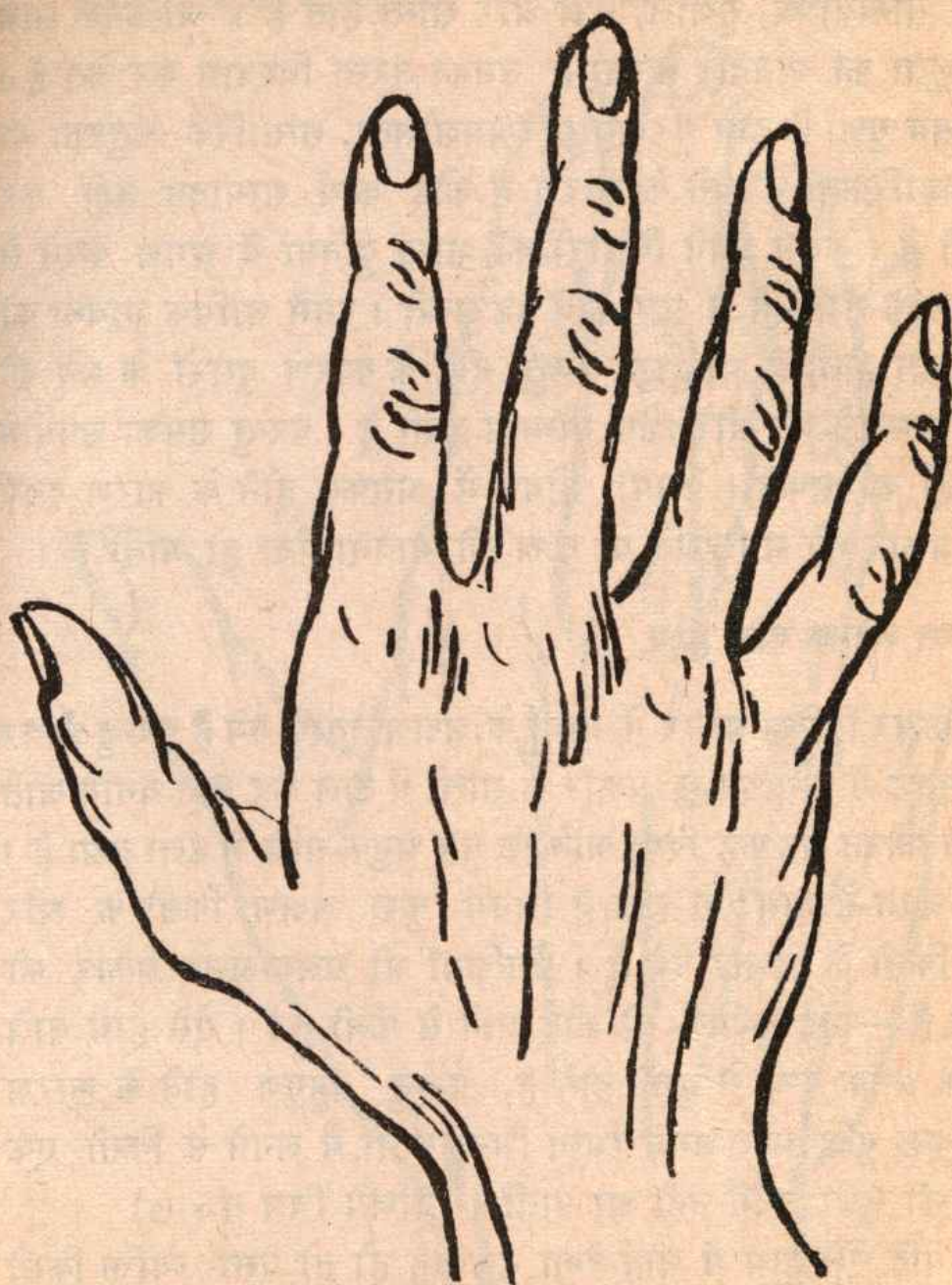
शान्तिनिष्ठ हाथ (चित्र नं० ६)

अपने प्रयत्न और कर्म से करता है और 'कर्मण्यता' के दृष्टिकोण से ये लोग शून्य होते हैं। (देखिये चित्र नं० ६)

इन हाथों की अत्यन्त सुन्दरता और सुकुमारता से ही पता चलता है कि ये लोग परिश्रम करने में बिलकुल अक्षम होते हैं। ये लोग सौन्दर्यप्रिय, सुशील, नम्र और शान्त होते हैं। जो इनके साथ दयालुता का व्यवहार करता है उसका तुरन्त विश्वास कर लेते हैं। इन सब गुणों के होने पर भी परिश्रमशीलता, सांसारिक चतुरता या व्यावहारिकता न होने के कारण ये कोई कार्य सम्पादन नहीं कर सकते हैं। केवल अपने विचारों की शान्त दुनिया में भ्रमण करने से जीवन के संघर्ष में ये आगे नहीं बढ़ सकते। इनमें धार्मिक भावना की प्रधानता होती है और शुद्ध चित्त होने के कारण दूसरों के मन की बात समझने की भी विशेष योग्यता होती है। परन्तु उसका उपयोग ये नहीं कर सकते। प्रायः जीवन में असफल होने के कारण इनमें एक प्रकार की मनोहानि या दुःख की भावना पैदा हो जाती है।

मिश्रित लक्षण वाले हाथ

ऊपर विविध प्रकार के हाथों के लक्षण बताये गये हैं परन्तु ईश्वर की सृष्टि में हाथ इन छः प्रकार के साँचों में ढाल कर नही बनाये जाते हैं कि फौरन यह कह दिया जावे कि वह अमुक साँचे में ढला हुआ है।

बहुत-से हाथ ऐसे होते हैं जिनमें कुछ लक्षण किसी के और कुछ किसी के दिखाई देते हैं। उंगलियाँ भी अलग-अलग प्रकार की होती हैं—कोई नुकीली तो कोई आगे से फैली हुई। ऐसे हाथ वाले व्यक्ति अनेक गुणों से युक्त होते हैं, परन्तु बहुगुण होने के कारण कुछ-कुछ बुद्धि और समय भिन्न-भिन्न बातों में लगने से किसी एक बात की खूबी उनमें नहीं आ पाती। (देखिये चित्र नं० ७)

यदि ऐसे हाथ में शीर्ष-रेखा बलवान् हो तो ऐसा व्यक्ति किसी ऐसे कार्य में अपनी बुद्धि लगाएगा जिसमें उसकी योग्यता विशेष हो और उस कार्य में उसके अन्य गुण सहायक होंगे। जिस किसी भी कार्य में नीति और चतुरता की आवश्यकता हो ये लोग विशेष

सफल होते हैं। ये लोग परिस्थिति के अनुकूल अपने को शीघ्र ही बना लेते हैं। इनमें अस्थिरता, परिवर्तनशीलता बहुत होती है।
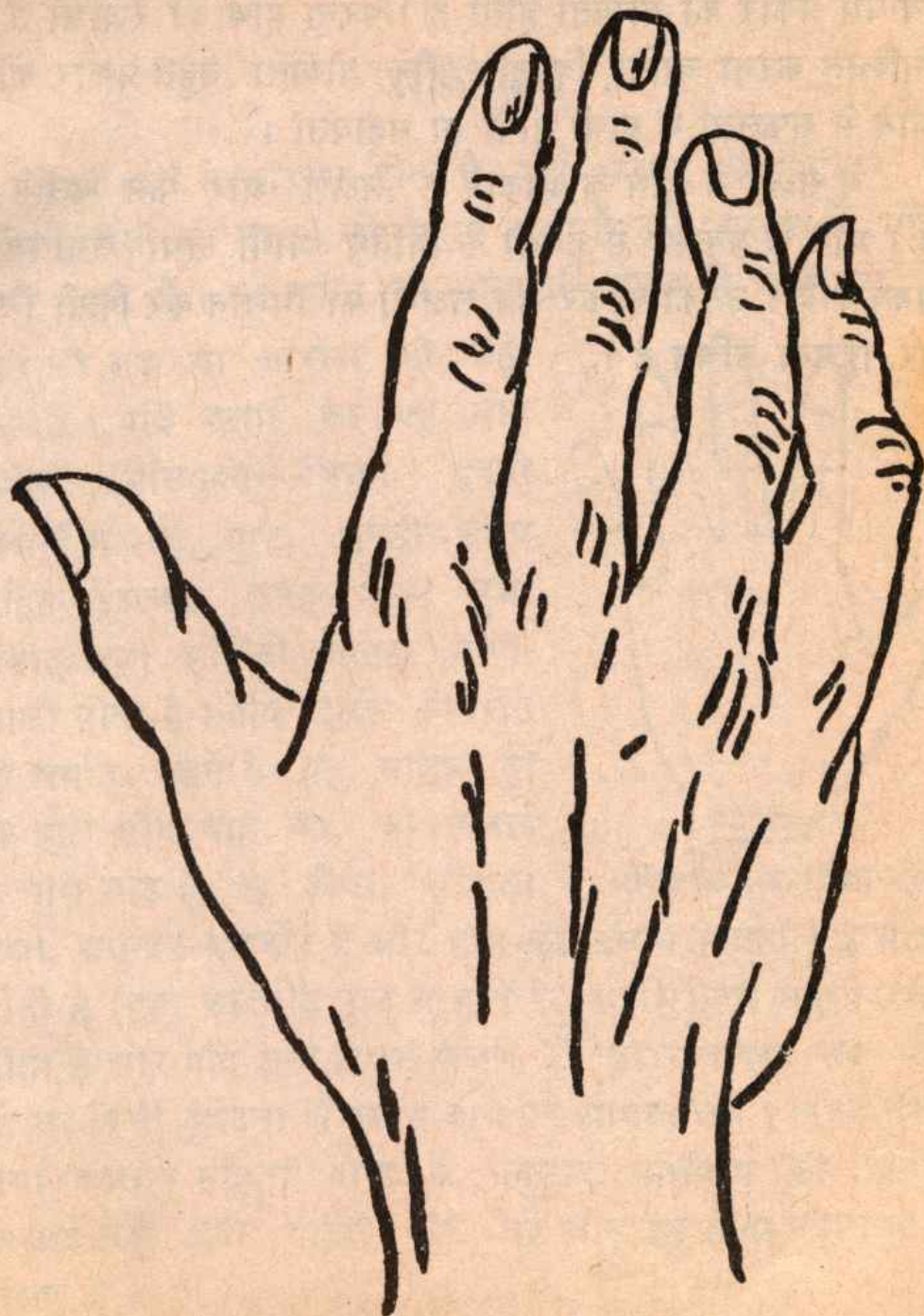
मिश्रित लक्षण वाले हाथ (चित्र नं० ७)

यदि हथेली किसी एक प्रकार की हो और उंगलियाँ भिन्न-भिन्न

प्रकार की हों तो हथेली का गुण प्रधान होता है और उंगलियाँ जिस-जिस ढंग की हों वे गुण मनुष्य में आने के कारण उसमें विविध प्रकार की योग्यता होती है। परन्तु हाथ की रेखाओं से यह निश्चित करना चाहिए कि बुद्धि और योग्यता बहुत प्रकार की हो जाने से सफलता में बाधा होगी या सहायता।

ये संक्षेप में हाथ के आकार के लक्षण और फल बताये गए हैं। आगे के प्रकरण में हथेली के विविध भागों तथा उंगलियों के प्रकरण हैं। उनको पढ़कर सब लक्षणों का मिलान कर किसी निर्णय पर पहुँचना उचित है।

३रा प्रकरण

मणिबन्ध

हाथ जहाँ से आरम्भ होता है वहाँ कलाई पर भीतर की ओर (हथेली की तरफ़) जो रेखाएँ होती हैं उन्हें संस्कृत में मणि-बन्ध कहते हैं। इस स्थान को सामुद्रिक शास्त्र में 'पाणिमूल' या हाथ की जड़ या प्रारम्भ भी कहा गया है। यदि कलाई का यह भाग मांसल (माँसयुक्त—जिसमें हड्डी दिखाई न दे), पुष्ट, अच्छी सन्धि सहित (अच्छी तरह जुड़ा हुआ अर्थात् दृढ़) हो तो जातक भाग्य-शाली होता है। यदि इसके विपरीत हो अर्थात् देखने से यह मालूम हो कि हाथ और बाहू का, जो कलाई के पास जोड़ है वह ढीला, लटकता हुआ, असुन्दर कमज़ोर है और हाथ को हिलाने से वहाँ कुछ आवाज़ होती है (हड्डी का जोड़ पुष्ट न होने के कारण) तो मनुष्य निर्धन होता है और यदि अन्य अशुभ लक्षण हों तो राज-दण्ड का भागी हो या किसी दुर्घटना के कारण हाथ पर आघात लगे। 'गरुड़ पुराण' तथा 'वाराही संहिता' दोनों के अनुसार मणिबन्ध की हड्डियाँ दिखाई नहीं देनी चाहिए और वह जोड़ दृढ़ होना सौभाग्य का लक्षण है।
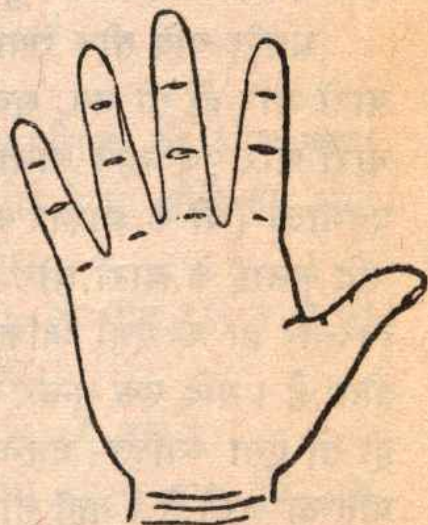
मणिबन्ध हाथ (चित्र नं० ८)

इसी स्थान पर हथेली के प्रारम्भ में ही रेखा होती है। 'सामुद्र-तिलक' में लिखा है—

रेखाभिः पूर्णाभिस्तिसृभिः कर मूलमंकितं यस्य ।
धन काञ्चन रत्नयुतं श्रीपतिमिव भजति लुब्धं च ।।
त्रिपरिक्षेपा व्यक्ता यवमाला भवति यस्य मणिबन्धे ।
नियतं महार्थं सहितः स सार्वभौमो नराधिपतिः ।।
करमूले यवमाला द्विपरिक्षेपा मनोहरा यस्य ।
मनुजः स राजमंत्री विपुल मतिर्जायते स मतिमान् ।।
सुभगैक परिक्षेपा यवमाला यस्य पाणितले स्यात् ।
भवति धनधान्य युतः श्रेष्ठो जनपूजितो मनुजः ।।

अर्थात् यदि तीन रेखा पूर्ण (कहीं से खण्डित न हों) कलाई के चारों ओर हों तो धन, सुवर्ण, रत्न का स्वामी होता है। यदि इन चारों ओर पूर्ण रहने वाली मणिबन्ध की तीनों रेखाओं में निरन्तर यवमाला (जौ के आकार की लड़ियाँ) स्पष्ट हों तो राजा होता है। यदि कलाई के चारों ओर दो रेखा हों और सुन्दर यवमाला उनमें निरन्तर हो तो ऐसा व्यक्ति अत्यन्त बुद्धिमान और राजा का मंत्री होता है। यदि एक सुन्दर यवमाला-युक्त रेखा कलाई के चारो ओर हो तो ऐसा व्यक्ति धन-धान्य पूर्ण होता है और उसकी लोग प्रतिष्ठा करते हैं। यहाँ तीन बातों पर ज़ोर दिया गया है—प्रथम यह कि केवल रेखा होना पर्याप्त नहीं है, उन रेखाओं में यवमाला (एक जौ से दूसरा जौ जुड़ा हुआ) का चिह्न निरन्तर होना चाहिये। दूसरी बात यह कि यह यवमाला सुन्दर होनी चाहिये। अर्थात् जैसे सुन्दर (बराबर एक से) निरन्तर मोती की माला बहुमूल्य होती हैं, किन्तु छोटे-बड़े या कहीं नज़दीक कही दूर ऐसी माला अच्छी नहीं समझी जाती, इसी प्रकार 'यवमाला' सुन्दर हो। तीसरी बात यह कि यवमाला कलाई के **चारों ओर** हो—केवल हथेली की ओर नहीं। यदि हस्तपृष्ठ पर भी कलाई के स्थान पर यवमाला होगी तभी पूर्ण फल होगा। अन्यथा न्यून फल समझिए।

'विवेक विलास' में लिखा है—

मणिबन्धे यवश्रेण्यः तिस्रश्चेत् स नृपो भवेत् ।
यदि ताः पाणिपृष्ठेऽपि ततोऽधिकतरं फलम् ।।

स्त्रियों के मणिबन्ध के विषय में 'भविष्यपुराण' में लिखा है कि मणिबन्ध यदि तीन रेखायुत, सम्पूर्ण (बीच में टूटा नहीं) और सुन्दर हो तो ऐसी स्त्री भाग्यशालिनी होती है, और रत्न तथा सुवर्ण-जटित हाथ के आभूषण पहनने वाली होती है—

मणिबन्धोऽव्यवच्छिन्नो रेखात्रयविभूषितः ।
ददाति न चिरादेव मणिकाञ्चन मण्डनम् ।।

पाश्चात्य मत

मणिबन्ध से रेखाओं का निकलकर उंगलियों की ओर जाना अच्छा माना गया है किन्तु हथेली की कोई रेखा नीचे की ओर मणिबन्ध की ओर आवे तो यह अच्छा नहीं ।

(१) यदि मणिबन्ध पर एक ही रेखा हो और टूटी न हो तो २३-२८ वर्ष तक की आयु जातक की होगी ।

(२) यदि दो रेखा हों तो आयु ४६ से ५६ तक ।

(३) यदि तीन रेखा सम्पूर्ण हों तो ६९ से ८४ वर्ष तक जातक का जीव-योग समझना चाहिये ।

यदि मणिबन्ध की रेखा अच्छी हों किन्तु जीवन-रेखा अच्छी न हो तो भाग्य अच्छा किन्तु स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा ।

यदि स्त्रियों के हाथ में मणिबन्ध की प्रथम रेखा हथेली की ओर बढ़ी हुई हो और उसी ओर गोलाई लिये हुए हो तो प्रसव कठिनता से होता है ।

यदि मणिबन्ध की तीनों रेखायें सुस्पष्ट, सुन्दर और अच्छे वर्ण की हों तो जातक दीर्घायु, स्वस्थ और भाग्यशाली होता है । यदि सुस्पष्ट न हों तो जातक अपव्ययी होने के कारण धन का संग्रह नहीं कर पाता और यदि अन्य लक्षण भी वागे जावें तो विषय-भोग

के कारण स्वास्थ्य-हानि भी करता है।

यदि प्रथम रेखा (हाथ की ओर से गिनना चाहिये) शृंखलाकार हो तो परिश्रम और चिन्तायुक्त जीवन रहता है किन्तु परिणाम में सफलता प्राप्त होती है।

मणिबन्ध से जाने वाली रेखायें

यदि मणिबन्ध से कोई रेखा निकलकर शुक्रक्षेत्र पर होती हुई बृहस्पति के क्षेत्र पर जावे तो किसी लम्बी यात्रा द्वारा सफलता प्राप्त होती है। यदि मणिबन्ध से निकलकर दो रेखा शनिक्षेत्र को जावें और यदि ये दोनों रेखा एक-दूसरे को काटें तो दुर्भाग्य प्रकट करती हैं। संभवत: जातक दूर देश को जाकर वापस न आवे।

यदि मणिबन्ध से निकलकर कोई रेखा सूर्य के क्षेत्र पर जावे तो यात्रा के फलस्वरूप विशिष्ट व्यक्तियों के सम्पर्क में आने से मनुष्य को प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। यदि सूर्यक्षेत्र की बजाय यह रेखा बुधक्षेत्र पर आवे तो अकस्मात् धन-प्राप्ति होती है। ऐसी स्थिति में स्वास्थ्य-रेखा के पास ही यह दिखाई देगी।

मणिबन्ध से निकलकर यदि रेखा चन्द्रक्षेत्र पर आवे तो जल-यात्रा अर्थात् समुद्र-पार देशों को मनुष्य जाता है। जितनी रेखा हों उतनी ही यात्रायें समझनी चाहियें। लम्बी रेखा हो तो लम्बी यात्रा, छोटी हो तो छोटी। किन्तु यदि दो रेखा बिलकुल समानान्तर रूप से चन्द्रक्षेत्र पर आवें तो लाभयुक्त होने के साथ-साथ यात्रा में भय भी रहता है।

यदि मणिबन्ध की तीनों रेखा एक के ऊपर एक—एक ही स्थान पर खंडित हों तो असत्य-भाषण तथा वृथा अभिमान के कारण कष्ट पाता है।

यदि मणिबन्ध से कोई रेखा निकलकर जीवन-रेखा पर आकर समाप्त हो जावे तो यह प्रकट करता है कि किसी यात्रा में ही

जातक की मृत्यु होगी। यदि मणिबन्ध से अस्पष्ट, लहरदार रेखा निकलकर स्वास्थ्य-रेखा को काटे तो जातक आजीवन मन्दभागी रहता है।

मणिबन्ध पर चिह्न

(१) यदि मणिबन्ध की रेखा सुन्दर हों और प्रथम रेखा के मध्य में 'क्रॉस' का चिह्न हो तो जीवन के प्रथम भाग में कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा किन्तु बाद का जीवन सुख और शान्ति से व्यतीत होगा।

(२) यदि मणिबन्ध से प्रारम्भ होकर कोई रेखा बृहस्पति के क्षेत्र पर जावे और मणिबन्ध की प्रथम रेखा पर 'क्रॉस' या कोण का चिह्न हो तो किसी विशेष सफल यात्रा से धन-लाभ प्रकट करता है।

(३) यदि मणिबन्ध की प्रथम रेखा के मध्य में कोण-चिह्न हो तो वृद्धावस्था में किसी की विरासत पाने से भाग्योदय होता है। यह त्रिकोण चिह्न हो और त्रिकोण के अन्दर 'क्रॉस' हो तो उत्तराधिकार द्वारा धन-प्राप्ति होती है।

(४) यदि हाथ में अन्य लक्षण उत्तम हों और प्रथम मणिबन्ध रेखा के मध्य में 'तारे' का चिह्न हो तो विरासत से धन-प्राप्ति। यदि यही चिह्न ऐसे हाथ में हो जिसमें असंयम और दुराचार प्रकट होता हो तो यह व्यभिचारी प्रवृत्ति का द्योतक है।

४था प्रकरण

करपृष्ठ (हाथ का ऊपर का भाग)

अथ शस्तं करपृष्ठं विस्तीर्णं पीनमुन्नतं स्निग्धम् ।
निर्गूढ़शिरं परितः क्षोणिपतेः फणिफणाकारम् ॥

'सामुद्रतिलक' के मतानुसार पृथ्वीपतियों (राजा या उच्चाधिकारियों) के करपृष्ठ (हाथ के एक ओर हथेली होती है, दूसरी ओर के भाग को करपृष्ठ कहते हैं) ऊँचे उठे हुए, चिकने, चारों ओर से सर्प के फन की आकार के फैले हुए होते हैं। उनमें नसें नहीं दिखाई देनी चाहियें। 'विवेक विलास' में भी उपर्युक्त लक्षणों को शुभ माना गया है। इसके विपरीत यदि करपृष्ठ सूखा, माँसरहित नीचा (मणिबन्ध के समतल, अर्थात् ऊँचा उठा हुआ न हो), रोएँ या बाल सहित, खुरदरा और जिसका रंग उड़ा हुआ या सुन्दर वर्ण न हो तो अच्छा नहीं होता—

विवर्णं पुरुषं रूक्षं रोमशं मांसवर्जितम् ।
मणिबन्ध समं निम्नं न श्रेष्ठं करपृष्ठकम् ॥

'सामुद्रतिलक' के मतानुसार यदि करपृष्ठ में रोएँ या बाल हों या नसें दिखाई देती हों तो मनुष्य निर्धन होता है।

स्त्रियों के करपृष्ठ

स्त्रियों के करपृष्ठ के सम्बन्ध में कहा गया है कि जिस स्त्री के करपृष्ठ उन्नत, रोएँ से रहित हों और नसें न दिखाई देती हों तो शुभ लक्षण है किन्तु यदि करपृष्ठ माँसरहित (पुष्ट नहीं) हो, उस पर रोएँ बहुत हों और नसें दिखाई दें तो ऐसी स्त्री विधवा हो जाती है—

विरोमं विशिरं शस्तं पाणिपृष्ठं समुन्नतम् ।
वैधव्य हेतु रोमाढ्यं निर्मांसं स्नायुमत्त्यजेत् ।।
(स्कंदपुराण-काशीखंड)

रोमशिरा परिहीनं घनमांसं पाणिपृष्ठमवहस्तम् ।
स्निग्धं सममबलानां समुन्नतं शस्यते प्रायः ।।
(सामुद्रतिलकम्)

यदि मणिबन्ध के समतल करपृष्ठ हो और अन्य गुण हों तो दोष नहीं है । यदि मणिबन्ध की अपेक्षा कुछ ऊँचा हो तो और भी अच्छा । 'माँसलता' को बहुत अधिक गुण माना है और रोओं या बालों का होना, किंवा नसों का दिखाई देना अवगुण माना गया है । स्त्रियों के लिए सबसे बड़ा दुर्भाग्य विधवा होना या पति-सुख का अभाव माना गया है—आजकल के युग में, जहाँ बहुत अधिक अवस्था तक बहुत सी लड़कियाँ विवाह नहीं करतीं या जिनके विवाह नहीं होते या पारस्परिक कलह के कारण वैवाहिक सुख नहीं होता इस दोष का लक्षण चरितार्थ हो जाता है । किन्तु जहाँ विवाह उचित अवस्था में हो गया हो और पति-सुख भी हो वहाँ वैधव्य होने का लक्षण—कम उम्र में वैधव्य नहीं मानना चाहिये । अन्य लक्षण तथा ग्रहों के प्रभाव से कम उम्र में, मध्य उम्र में या वृद्धावस्था में इसका फल कब होगा यह विचारना चाहिये ।

पाश्चात्य मत

यदि करपृष्ठ पर रोएँ या बाल हों तो उन्हें तीन कक्षाओं में बाँटना चाहिये—

(क) जिनके हाथ पर भूरे या हल्के रंग के सूक्ष्म बाल हों वे मृदु स्वभाव के, सज्जन, शीघ्र दूसरों के प्रभाव में आ जाने वाले होते हैं, किन्तु ये लोग कुछ आलसी स्वभाव के होते हैं और अधिक परिश्रम करना पसन्द नहीं करते ।

(ख) यदि बाल काले हों तो मनुष्य के स्वभाव में उग्रता होती है। इनके प्रेम में वासना तथा ईर्ष्या की मात्रा बहुत होती है। ये लोग कुछ चिड़चिड़े मिज़ाज के होते हैं और सहिष्णुता कम होने के कारण इन्हें शीघ्र क्रोध आ जाता है।

(ग) यदि हाथ के बाल लाल और मोटे हों तो काले बाल होने के, जो गुण या अवगुण ऊपर बताये गये हैं वे सब किन्तु तीव्र मात्रा में, इस प्रकार के व्यक्तियों में पाये जाते हैं। प्रत्येक बात अधिक मात्रा में होने से इनकी प्रकृति क्रूर, क्रोधयुक्त होती है। प्रेम में वासना की मात्रा अधिक होने से ये हर प्रकार से अपनी इच्छापूर्ति करने में तत्पर हो सकते हैं।

करपृष्ठ पर बाल नहीं होना प्रकृति (शरीर और चित्त) की मृदुता का लक्षण है। बाल होना शारीरिक शक्ति का तथा हृदय की कठोरता का सूचक है। बाल जितने पतले और विरल हों उतना ही मृदु प्रकृति का मनुष्य होगा किन्तु यदि घने और अधिक हों तो इससे विपरीत फल होगा।

५वाँ प्रकरण

हाथ के नाखून

पुरुषों के हाथ के नाखून

नखों को बहुत ध्यान से देखना चाहिए। इनसे भाग्य-सम्बन्धी तथा स्वास्थ्य-सम्बन्धी बहुत सी बातों का पता लगता है। भारतीय मत के अनुसार नखों से स्वभाव और सौभाग्य का ही पता लगता है किन्तु पाश्चात्य मतानुसार इनसे स्वास्थ्य के विषय में भी बहुत-सी बातें मालूम हो सकती हैं। पहले भारतीय मत दिया जाता है उसके बाद पाश्चात्य मत दिया जावेगा।

'गरुड़ पुराण' में लिखा है जिनके हाथों के नाखून तुष की तरह होते हैं (अर्थात् पिलाई या पीलापन लिए हुए और जल्दी टूटने वाले) वे व्यक्ति नपुंसक हैं। जिनके नाखून टेढ़े और रेखायुक्त होते हैं वे दरिद्री होते हैं। जिनके नाखूनों पर धब्बे हों और देखने में अच्छे न हों वे दूसरों की सेवा करके अपना उदर-पोषण करते हैं। 'गर्गसहिता' में लिखा है कि जिनके नाखून एक वर्ण के न हों (कहीं ललाई अधिक, कहीं सफ़ेदी अधिक, कहीं नीलापन या पीलापन), छाजले की तरह उंगलियों के अग्रभाग की ओर फैले हुए हों या सीप की आकार के हों या फटे हुए-से दिखाई दे या बहुत छोटे हों, वे दरिद्र होते हैं और इसके विपरीत जिनके नाखून निर्मल एवं ललाई लिए हुए हों वे भाग्यशाली होते हैं। 'सामुद्र तिलक' के अनुसार कछुए की पीठ की तरह कुछ ऊँचाई लिए हुए, मूंगे की तरह लाल, चिकने और चमकदार नाखून होना अच्छा है, उंगलियों का प्रथम पर्व जितना लम्बा हो उसकी आधी लम्बाई नाखूनों की

होना उत्तम है[१]। आगे की ओर कुछ बड़े, पीछे की ओर कुछ छोटे हों किन्तु उतार-चढ़ाव बहुत कम और क्रमशः होना चाहिए। उंगली के माँस से नखों का कुछ आगे निकला रहना अच्छा है। यदि उपर्युक्त गुणयुक्त नाखून हों तो मनुष्य उच्च पद प्राप्त करता है। कनिष्ठिका की अपेक्षा अनामिका का नाखून बड़ा, अनामिका की अपेक्षा मध्यमा का, मध्यमा की अपेक्षा तर्जनी का और तर्जनी की अपेक्षा अँगुष्ठ का नाखून बड़ा होना अच्छा है। यदि नाखून बहुत बड़े हों, टेढ़े या रूखे हों, उंगली की त्वचा में ही धँसे हुए हों और उनमें न तेज हो न कान्ति, तो ऐसे मनुष्य सुखी नहीं होते। जिनके नाखूनों पर सफ़ेद बिन्दुओं के चिह्न हों वे स्वयं दुःशील (सुशील के विपरीत) होते हैं और पराधीन रहकर अपना जीवन व्यतीत करते हैं किन्तु 'सामुद्रतिलक' का उपर्युक्त मत से थोड़ा सा मतभेद है। इनके मत से नाखूनों पर बाद में यदि श्वेत-बिन्दु दिखाई दें तो शुभ लक्षण है। 'विवेक विलास' में लिखा है—

ताम्रस्निग्धोच्छिखोत्तुङ्ग पर्वार्धोत्था नखाः शुभाः।
श्वेतैर्यतित्वमस्थानै र्नखैः पीतैः सरोगता॥
पुष्पितै र्दुष्टशीलत्वं क्रौर्यं व्याघ्रोपमैर्नखैः।
शुक्त्याभैः श्यामलैः स्थूलैः स्फुटिताग्रैश्च नीलकैः॥
अद्योत रूक्षवक्रैश्च नखैः पातकिनोऽधमाः।
तर्जन्यादि नखै भंग्नैजातमात्रस्य तु क्रमात्॥
अर्द्धत्र्यंश चतुर्थांशाष्टांशाः स्युः सहजायुषः।
अंगुष्ठस्य नखे भग्ने धर्मतीर्थरतो नरः॥

अर्थात् यदि नख कुछ चिकनाई और ललाई लिये हुए, उंगली के अग्र भाग से कुछ आगे बढ़े हुए, उंगली के पोरवे की लम्बाई से आधे, कुछ ऊँचे नाखून हों तो शुभ लक्षण है। यदि इनका रंग कुछ पीलेपन पर हो तो रोग सूचित करते हैं। यदि कुछ सफेदी हो तो

१. निज पर्वार्द्ध परिमिता भवन्ति सर्वेऽपि पाणिनखाः।'

वैराग्य प्रकृति के द्योतक हैं । यदि उन पर सफ़ेद बिन्दु हों तो उनसे दुष्टता प्रकट होती है और यदि शेर के नाखून की तरह हों तो क्रूरता । जिनके नाखूनों में चमक न हो और टेढ़े व रूखे हों उन्हें अधम कोटि का और पातकी समझना चाहिए । यदि पैदा होते ही तर्जनी, मध्यमा, अनामिका या कनिष्ठिका का नाखून टूट जाये तो क्रम से जो आयु होती उसका आधा, एक तिहाई, चौथाई और अष्टमांश रह जाता है । यदि अँगूठे का नाखून टूट जाय तो ऐसा जातक धर्माचरण करने वाला होता है ।

'सामुद्रतिलक' के अनुसार नाखूनों का कछुए की पीठ के समान कुछ उन्नत होना शुभ लक्षण है किन्तु यह नियम केवल चारों उंगलियों के लिए ही लागू होता है क्योंकि 'विवेक विलास' का विशेष वचन है कि—

"कूर्मोन्नतेऽङ्गुष्ठनखे नरः स्याद् भाग्यवर्जितः ।"

अर्थात् यदि अँगूठे का नाखून कछुए की पीठ की तरह उन्नत हो—ऊपर उठा हुआ हो, तो मनुष्य भाग्यहीन होता है ।

स्त्रियों के हाथ के नाखून

स्त्रियों के नखों के विषय में 'भविष्यपुराण' में लिखा है—

बन्धु जीवारुणैस्तुङ्गैर्नखैरैश्वर्यं माप्नुयात् ।
खरैर्वक्त्रैर्विवर्णाभैः श्वेत पीतैरनीशताम् ॥

अर्थात् यदि नख बन्धूक पुष्प की तरह लाल, कुछ ऊँचाई लिए हुए हों तो ऐसी स्त्री ऐश्वर्यशालिनी होती है । किन्तु यदि टेढ़े, खुरदरे, कान्तिहीन, सफ़ेद या पीलापन लिये हुए, या चकत्तेदार नाखून हों तो दरिद्रा होती है । 'स्कन्दपुराण काशीखण्ड' में लिखा है कि यदि स्त्रियों के हाथ के नाखून उंगली के अग्रभाग से कुछ आगे निकले हुए, गुलाबी वर्ण के हों तो शुभ होते हैं । पीले, कान्तिहीन, नीचे धँसे हुए या सुन्दर रंग से युक्त न हों तो दरिद्रता के सूचक हैं । नखों पर

सफेद बिन्दु होना व्यभिचार का लक्षण है। पुरुषों के भी यदि नाखूनों पर सफ़ेद बिन्दु दिखाई दें तो उन्हें दुःखभागी समझना चाहिए। किन्तु 'गर्ग संहिता' का मत इसके विपरीत है। उसके मत से नाखूनों पर सफ़ेद बिन्दु होना सुख का लक्षण है—

नखेषु बिन्दवः श्वेताः प्रायः स्युः स्वैरिणी स्त्रियः।
पुरुषा अपि जायन्ते दुःखिनः पुष्पितैर्नखैः॥
(स्कन्दपुराण)

श्लक्ष्णाः सुवर्णाः क्षतजप्रभाश्च
वैडूर्यमुक्ताफल सन्निभाश्च ।
पुष्पान्वितः सौख्यकरा भवन्ति
कुशेशयाभाश्च नखाः करेषु॥ (गर्ग संहिता)

नख : पाश्चात्य-मत

नाखूनों की अच्छी प्रकार परीक्षा कर उनके रंग, आकार बनावट और खुरदरे हैं या चिकने, कोमल हैं या कठोर, दबाव सह सकने वाले है या शीघ्र टूटने वाले इसका निर्णय करना चाहिए। इन सब बातों से जातक के स्वास्थ्य और स्वभाव का बहुत पता लगता है। नाखूनों का जो वर्ण हमें दिखाई देता है वह वास्तव में नाखूनों का वर्ण नहीं है बल्कि नाखूनों के नीचे जो उंगली का भाग है उसका रंग नाखूनों के अन्दर से छनकर आता है। हमारे शरीर में जो स्नायु-जाल व्याप्त है उसका अग्र भाग उंगलियों में व्याप्त है। इस कारण उंगलियों के अग्र भाग का और उस स्थान की दशा बताने वाले नाखूनों का बहुत महत्व है। जब हमारी आन्तरिक शक्तियों में कुछ परिवर्तन होता है तो उनका प्रभाव नाखूनों पर भी पड़ता है। जैसे शरीर की त्वचा (चमड़ा), रंग, रूप, चिकनाई, चमक, कोमलता आदि के विचार से उत्तम, मध्यम और निकृष्ट कोटि की होती है उसी प्रकार नाखून भी रंग, रूप, चिकनाई, आकार,

मृदुलता आदि के विचार से अच्छे और बुरे होते हैं। बहुत बार हाथ तो (कोमलता आदि के विचार से) अच्छे प्रतीत होते है किन्तु नाखूनों में सुन्दरता का अभाव होता है। हो सकता है कि स्वास्थ्य बिगड़ने से नाखूनों का अच्छापन जाता रहा हो।

जब शरीर में स्नायु-जाल निर्बल हो जाता है तो उस कारण नाखूनों पर खड़ी धारियाँ दिखाई देती हैं या कुछ ऊँचा-नीचापन (खुरदरापन) मालूम होता है। नाखूनों का चिकना होना शुभ लक्षण है। स्वस्थ मनुष्यों के नाखून मुलायम और लचकदार होते हैं।

स्वास्थ्य या अस्वास्थ्य का विचार करने के लिए तीन बातें देखनी चाहिए—

(१) यदि नाखूनों पर खड़ी-धारी-सी हों तो स्नायु-मंडल का रोग प्रदर्शन होता है।

(२) यदि शरीर में स्नायु-सम्बन्धी विकार बढ़ गया है तो नाखून भी उतने मुलायम नहीं होंगे, शीघ्र ही तड़कने वाले (जल्दी टूटने वाले)* और कठोर मालूम होंगे।

(३) नाखून अपने नीचे स्थित माँस से भी अच्छी तरह चिपके हुए नहीं होंगे। यह भी रोग का लक्षण है।

---

*नोट—'शीघ्र टूटने वाला' किसे कहते हैं? यह कैसे समझा जाय कि इस व्यक्ति का नख कठोर और शीघ्र टूटने वाला है? एक चतुर नाई से कहिए कि उस व्यक्ति की उंगली का बढ़ा हुआ नाखून इस प्रकार काटे कि धागे की तरह एक ही गोल टुकड़ा नहरनी से निकले। इस गोल तागे की आकार के कटे हुए नाखून को बीच से मोड़ दीजिए। यदि ऐसा करने से शीघ्र टूट जाए तो उसे शीघ्र टूटने वाला कहेंगे। यदि इसके विपरीत बीच में से मोड़ने पर भी न टूटे तो उसे मृदु और लचकदार नाखून समझना चाहिए। इसी को हमारे शास्त्र-कारों ने 'तुष' की उपमा दी है। धान का छिलका जब हरा होता है तब मृदुता के कारण मोड़ने पर भी नहीं टूटता किन्तु वही जब सूख कर तुष हो जाता है तो मोड़ने से तुरन्त टूट जाता है।

तीनों अवगुण जितनी अधिक मात्रा में हों उतना अधिक स्नायु-जाल निर्बल हो चुका है, यह निष्कर्ष निकालना चाहिए।

नाखूनों पर सफ़ेद धब्बे

जब स्नायुओं की शक्ति कम हो जाती है तो उनका एक लक्षण यह भी होता है कि नाखूनों पर सफ़ेद दाग़ दिखाई देने लगते हैं। कभी-कभी नाखूनों पर ऊँची-नीची खड़ी रेखाएँ दिखाई देने लगती हैं। नाखून कठोर और शीघ्र टूटने वाले हो जाते है और नीचे के माँस से अलग भी होने लगते हैं। यदि ये सब लक्षण अधिक मात्रा में हों तो यह सूचित होता है कि स्नायु-जाल बिलकुल जर्जर हो गया है। ऐसे व्यक्तियों को लकवे की बीमारी का भी अन्देशा रहता है। वास्तव में हमारे मस्तिष्क और शरीर में जो कुछ अच्छा या बुरा परिवर्तन स्नायुओं में हो रहा है उसकी झलक नाखूनों में दिखाई देती है। यदि नाखूनों की दशा अधिक खराब दिखाई दे तो स्नायविक शक्ति में भी विशेष ह्रास समझना चाहिए।

नाखूनों पर आड़ी धारी

यदि नाखूनों पर आड़ी रेखा दिखाई दे तो भी शक्ति में ह्रास प्रकट होता है। देखने में ऐसा मालूम होगा कि आधा नाखून एक प्रकार का है और ऊपर का आधा नाखून दूसरे प्रकार का। इससे यह प्रकट होता है कि नाखून की वृद्धि में बीच के समय में कुछ बाधा हो गई। एक नाखून पूरा बढ़ने में प्रायः ६ महीने लगते हैं। (उदाहरण के लिए यदि एक नाखून किसी कारण से कुचल जाय तो उसके स्थान पर पूरा नया नाखून आने में ६ महीने का समय लगेगा।)

अब आप ध्यान से देखिए कि नाखून में जो एक आड़ी रेखा है वह जहाँ नाखून का अन्त है उससे कितनी दूरी पर है। यदि यह

आड़ी रेखा नाखून के बीचों-बीच हो तो समझिए कि करीब तीन महीने पहले यह व्यक्ति किसी गहरे रोग से पीड़ित था। उस समय नाखून बढ़ना बन्द हो गया और जब पूर्ण स्वस्थ हो गया तब फिर नाखून बनना शीघ्रता से प्रारम्भ हुआ। नाखून की सम्पूर्ण लम्बाई छः महीने में पूरी होती है तो इस हिसाब से (बीच वाली रेखा से) यह अनुमान लगाना चाहिए कि बीमारी कितने दिन पहले हुई थी।

नाखून का नया निकला हुआ भाग यदि स्वस्थ है तो जातक पूर्ण स्वस्थ हो चुका है और यदि नवीन भाग में भी रोग-चिह्न हैं तो अभी तक कुछ रोग का शेष है ऐसा समझिए।

यदि पुराना नाखून अच्छा है और नये नाखून (जो निकल रहे हैं) पर खड़ी रेखा हों तो स्नायविक दुर्बलता के कारण रोग हुआ था। नये नाखून यदि पूर्ण स्वस्थ हों तो ये प्रकट करते हैं कि रोगी बिलकुल अच्छा हो गया है किन्तु यदि उन पर कुछ रोग-चिह्न हों तो यह समझना चाहिए कि यद्यपि यह व्यक्ति देखने में स्वस्थ मालूम होता है किन्तु भीतर रोग का कुछ अंश शेष है। नखों से अन्य रोगों के परिज्ञान के विषय में कुछ विशेष बातें आगे बताई जा रही हैं। नाखूनों में यदि ये रोग-चिह्न हों तो किस रोग के कारण जातक बीमार हुआ था यह देखकर निश्चय करना चाहिए। पुराने नाखून में ये चिह्न हों तो यह रोग समाप्त हो चुका और यदि नये निकले हुए नाखून में इसके ये लक्षण हों तो रोग शेष है यह परिणाम निकालना उचित है।

नाखूनों से शारीरिक शक्ति का ज्ञान

सामान्य नियम यह है कि नाखून बड़े, चौड़े और अच्छे रंग के हों तो यह अच्छे स्वास्थ्य का लक्षण है। जिनके नाखून कम चौड़े होते हैं उनकी माँस-पेशियों में कम बल होता है। ऐसे व्यक्ति जब परिश्रम करते हैं, तो माँस-पेशियों की आपेक्षिक निर्बलता के कारण

सारा बोझा स्नायविक शक्ति पर पड़ता है और उनकी शारीरिक प्रकृति उतनी दृढ़ नहीं रह पाती। इसी कारण पतले (कम चौड़े) नाखून वाले शारीरिक दृष्टि से बलवान् नहीं होते। कम चौड़े नाखून भी कई रंग के होते हैं। यदि ये लाल रंग के हों तो स्वास्थ्य अच्छा किन्तु इनका रंग सफ़ेदी, या पीलापन या नीलापन लिये हुए हो या जड़ों पर कुछ नीलापन हो तो यह प्रकट होता है कि शरीर में रक्त का प्रवाह और प्रसार ठीक नहीं है। यदि कम चौड़े नाखूनों पर सीधी रेखाएँ भी हों या शीघ्र टूटने वाले हों तो और भी अधिक अस्वास्थ्य प्रकट होता है।

यदि नाखून चौड़े अधिक हों और लम्बे कम

यदि नाखून अधिक चौड़े हों और लम्बे कम तो आलोचनात्मक प्रकृति होती है। साधारणतः उंगली के प्रथम पर्व से आधी नाखून की लम्बाई होनी चाहिए। इस अनुमान से यह निश्चय करना चाहिए कि नाखून कितने कम लम्बे हैं। यदि लम्बाई सामान्य से कुछ कम हो, तो प्रकृति आलोचनात्मक; विश्लेषणात्मक प्रकृति अवगुण नहीं किन्तु अध्ययनशील व्यक्तियों के लिए गुण है। साहित्य, संगीत, व्यापार, व्याख्यान सभी क्षेत्रों में यह गुण सहायक होता है। किन्तु यदि लम्बाई बहुत कम हो और चौड़ाई बहुत अधिक तथा इसके ऊपर, तीनों ओर से त्वचा बढ़ी हुई हो और नाखून चपटे हों तो ऐसे व्यक्तियों में व्यर्थ में बहस करने का अवगुण होता है। वे जानते हैं कि जो वे कह रहे हैं वह सही नहीं है किन्तु व्यर्थ की बहस करने में उन्हें मजा आता है और वे इस मौके की तलाश में रहते हैं कि किसी की भी बातों में, किसी भी पक्ष का कोई समर्थन करे तो वे उससे विरुद्ध पक्ष का समर्थन करेंगे। उनकी आलोचना में सार नहीं होता। जैसे खिलाड़ियों को खेलने में आनन्द आता है इसी प्रकार व्यर्थ में बहस और झगड़ा करना इनके मनोविनोद का साधन होता

है । ऐसे व्यक्तियों के नाखून बहुत कम लम्बे, व अधिक चौड़े होते हैं और उंगलियों का अग्रभाग गदा की तरह गोल होता है । नाखूनों पर पतली त्वचा तीन ओर बढ़ी हुई होती है । ऐसे व्यक्तियों का स्वास्थ्य तो अच्छा रहता है किन्तु इनकी झगड़ालू और व्यर्थ बहस करने की आदत के कारण लोग इनसे परेशान रहते हैं । यदि ऐसे नाखूनों के साथ हाथ सख्त हो, अँगूठा बड़ा हो, "उंगलियों की गाँठें विशेष निकली हुई हों और मंगल का क्षेत्र अधिक उन्नत हो तो झगड़ालूपने के प्रायः सभी लक्षण एकत्रित समझिए ।

चौड़े और चौकोर नाखून

यदि नाखूनों का रंग ललाई लिए हो और वे चौड़े, चौकोर तथा बगल में गोलाई लिये हुए हों तो व्यक्ति निष्कपट होता है जो इसके दिल में हो वह साफ़-साफ़ कह देता है । यदि नाखूनों का रंग ललाई लिये न हो तो निष्कपटता पूर्णरूप से न होगी ।

छोटे और चौकोर नाखून

यदि नाखून छोटे और ऊपर की ओर चौकोर हों और नीचे की ओर (उंगलियों की जड़ की तरफ़) पतले हो गये हों तो यह हृदय-रोग का लक्षण है । प्रायः बड़े हाथों पर या बड़ी उंगलियों पर ये देखने में अधिक छोटे मालूम होते हैं । यदि इनमें कुछ नीला रंग भी हो और नीचे की ओर चन्द्रमा के आकार का चिह्न हो तो हृदय-रोग के लक्षण की पुष्टि होती है । नाखूनों में नीलापन यह प्रकट करता है कि हृदय रक्त का चारों ओर प्रसार ठीक रूप से नहीं कर रहा है और जब किसी एक ही रोग के दो-तीन लक्षण मिलें तो उस रोग की पुष्टि होती है । नाखूनों का रंग कुछ नीलापन लिये हो तो यह प्रकट करता है कि शरीर में रक्त-प्रवाह और प्रसार ठीक नहीं है ; किन्तु यदि १३ वर्ष से १५ वर्ष तक की लड़कियों के या ४५ वर्ष के आसपास की अवस्था की स्त्रियों के नाखूनों में कुछ नीलापन दिखाई दे तो किसी चिन्ताकारक रोग

का चिह्न नहीं समझना चाहिये क्योंकि मासिकधर्म के प्रारम्भ और अन्त होने के समय बहुत सी स्त्रियों के नाखूनों पर कुछ नीलापन आ जाता है। हाथों में यह ध्यानपूर्वक देखना चाहिए कि कुछ नीलापन सारे नाखूनों पर है या केवल जड़ में। यदि सारे नाखून पर हो तो स्वाभाविक दुर्बलता का लक्षण है किन्तु केवल जड़ों में हो तो हृदय-रोग सूचित करता है।

नाखून से यक्ष्मा या क्षय-रोग का ज्ञान

जिस व्यक्ति में क्षय-रोग बहुत अधिक पुराना और बढ़ा हुआ होता है उसमें तो यक्ष्मा के लक्षण इतने अधिक दिखाई देने लगते हैं कि दूर से ही वह क्षय-रोगी दिखाई देता है, किन्तु प्रारम्भिक अवस्था में इसका ज्ञान कठिनता से होता है कि साधारण कमज़ोरी या कृशता है या क्षय-रोग के कारण स्वास्थ्य गिरता जा रहा है। ऐसी स्थिति में क्षय-रोग का पता लगाने के लिए, क्षय-रोगी के नाखूनों के क्या लक्षण हैं यह नीचे बताया जाता है—

(१) उंगली का अग्रभाग मोटा और गोलाई लिये हुए हो जाता है। इसके ऊपर नाखून भी गोलाई लिये हुए होता है। देखने तथा छूने से मालूम होता है कि उंगलियों के अग्रभाग काँच की गोली की तरह गोल हैं।

(२) नाखूनों का रंग नीला होता है।

(३) इसके अतिरिक्त हाथों के रंग, रोगजन्य माँस-पेशियों की शिथिलता तथा अन्य सामान्य लक्षणों की ओर ध्यान देना चाहिए।

यदि नाखून की ऊपरी सतह गोलाई लिये हो किन्तु उंगली का अग्रभाग (माँस वाला भाग) गोल न हो तो गले या फेफड़े की बीमारी का लक्षण है। ऐसे व्यक्ति क्षय के रोगी नहीं होते किन्तु फेफड़े और गले के कमजोर होने के कारण जल्दी ही उन्हें कफ, खाँसी या गले की बीमारी हो जाती है। यदि इस लक्षण के साथ-साथ स्वास्थ्य-रेखा पर द्वीप-चिह्न हों तो उपर्युक्त लक्षण की पुष्टि होती है।

६ठा प्रकरण

उंगली-लक्षण

पुरुषों के हाथ की उंगलियाँ

हाथ में चार उंगली और एक अँगूठा इस प्रकार कुल पाँच उंगली हुईं। परन्तु अँगूठे का अपना एक विशेष स्थान है। वह अन्य उंगलियों की अपेक्षा मोटा और दृढ़ होता है। चारों उंगलियाँ पास-पास होती हैं किन्तु अँगूठा उनसे कुछ दूर स्वतंत्र होता है। इस कारण अँगूठे का नाम भी उंगलियों से भिन्न 'अँगूठा' रखा गया है। अँग्रेज़ी में भी अँगूठे का नाम उंगलियों से भिन्न है।

अंगूठे का विचार पृथक् किया गया है। इस प्रकरण में केवल उंगलियों का विचार किया जायेगा। 'भविष्य पुराण' के मतानुसार जिनकी उंगलियाँ 'विरल' हों अर्थात् छीदी हों वे दरिद्र होते हैं। तथा जिनकी उंगलियाँ 'सघन' अर्थात् एक-दूसरे से मिली हुई हों वे धनी होते हैं—

> विरलांगुलयो ये तु तान् दरिद्रान् प्रचक्षते।
> धनिनस्तु महाबाहो ये घनांगुलयो नराः॥

यदि 'विरल' होने के साथ-साथ उंगलियाँ रूखी भी हों तो जातक केवल निर्धन ही नहीं किन्तु दुःखी भी रहता है—

> विरलाश्च तथा रूक्षा दृश्यन्तेऽङ्गुलयः करे।
> स भवेत् दुःखितो नित्यं नरो दारिद्र्य भाजनम्॥

'गरुड़ पुराण' के मतानुसार भी यदि उंगलियाँ सीधी हों तो शुभ हैं और आयु को बढ़ाती हैं। अर्थात् जिनकी उंगलियाँ टेढ़ी न हों वे दीर्घायु होते हैं; जिनकी उंगली पतली हों उनकी स्मरण-शक्ति अच्छी

होती है। किन्तु जिनकी उंगली चपटी हों वे दूसरों को नौकरी कर अपना पालन करते हैं। जिनकी उंगली बहुत मोटी हों वे भी निर्धन होते है और यदि पीछे अर्थात् करपृष्ठ की ओर उंगलियाँ झुकी हुई हों तो शस्त्र से मृत्यु होती है—

हस्ताङ्गुलय एव स्युरायुर्दावलिताः शुभाः ।
मेधाविनां च सूक्ष्माः स्युर्भृत्यानां चिपिटाः स्मृताः ॥
स्थूलांगुलीभिर्निस्वाः स्युर्नताभिः शस्त्रमृत्यवः ।

'विवेकविलास' के मतानुसार भी उंगलियों का छीदा, सूखा, अति-स्थूल या टेढ़ा होना निर्धनता का लक्षण है। यदि उंगलियों के पर्व (पोरवे) लम्बे हों और अँगूठे की जड़ पर अर्थात् शुक्रस्थान पर रेखाएँ हों तो ऐसे मनुष्य के अनेक पुत्र होते हैं और वह दीर्घायु तथा धनी भी होता है—

यच्छन्ति विरलाः शुष्काः स्थूला वक्रा दरिद्रताम् ।
शस्त्रघातं बहिर्नम्रा श्चेटत्त्वं चिपिटाश्च ताः ॥
अंगुष्ठ मूलजै पुत्री स्याद्दीर्घांगुलि पर्वकः ।
दीर्घायुः सधनश्चैव निर्धनो विरलांगुलिः ॥

यहाँ केवल उंगलियों के विषय में ही बताया जा रहा है इस। कारण अँगूठे के मूल में सन्तान-प्रदर्शक रेखाओं के विषय में यहाँ विशेष नही लिखा जाता है। दूसरे प्रकरण में इसका विशद विचार किया गया है। यहाँ केवल यह बताना है कि यदि उंगलियाँ छीदी हों तो ऐसे व्यक्ति के पास द्रव्य जमा नहीं होता और यदि जमा होता भी है तो थोड़ा जमा होता है।

साधारणतः उंगलियों को देखने से यह अच्छी तरह मालूम नहीं पड़ता कि उंगलियाँ सटी हुई हैं या छीदी। इसका अच्छी तरह निश्चय करने के लिए जातक को कहना चाहिए कि वह चारों उंग-लियों को एक-दूसरे से भिड़ाकर परीक्षक की आँखों के सामने रखे। यदि हस्त-परीक्षक को उन परस्पर मिली हुई उंगलियों के बीच

छिद्र या दरार दिखाई दें और उनमें होकर बाहर की वस्तु को देख सके तो उंगलियों को विरल या छीदा समझना चाहिए। इसके विपरीत यदि उंगलियों के परस्पर भिड़े रहने के कारण उन उंगलियों के बीच से प्रकाश दिखाई न दे तो उंगलियों को सघन या भिड़ा हुआ समझना उचित है।

उंगलियों की परस्पर लम्बाई

लंका के प्राचीन विद्वान् अवनमदर्शी का मत है कि 'दीर्घाङ्गुलिक: पुरुषो बहुयोषित समागम:' अर्थात् जिसकी उंगलियाँ लम्बी हों उसका बहुत स्त्रियों से समागम होता है। जातक की मध्यम उंगली का मध्य पर्व जितना चौड़ा हो उसे एक अँगुल चौड़ा मानना चाहिए। इस नाप से जातक के हाथ की लम्बाई—मणिबन्ध से प्रारम्भ कर मध्यमा उंगली के अन्त तक, बारह अँगुल होनी चाहिए। इसमें हथेली का भाग सात अँगुल चौड़ा और बीच की उंगली का ५ अँगुल चौड़ा।

सप्त तलं पंच मध्यमांगुलिक:

बीच की उंगली की अपेक्षा तर्जनी आधा पर्व कम होती है। अर्थात् तर्जनी उंगली मध्यमा उंगली के नख वाले पर्व की आधी लम्बाई तक पहुँचनी चाहिए। तर्जनी के बराबर ही अनामिका होती है और इससे एक पर्व हीन कनिष्ठका होती है अर्थात् अनामिका उंगली का नख वाला पर्व जहाँ प्रारम्भ होता है उसी लम्बाई की चिटली उंगली होनी चाहिए—

मध्याऽङ्गुली विहीना प्रदेशिनी भवती पर्वणार्द्धेन।
तत्समाना ऽनामा कनिष्ठिका पर्व परिहीना॥

'सामुद्रतिलक' के मतानुसार यदि चिटली उंगली का नाखून अनामिका के दूसरे पर्व से आगे निकल जाय (अर्थात् चिटली उंगली इतनी लम्बी हो कि अनामिका के तृतीय पर्व तक पहुँचे) तो प्राय:

मनुष्य अधिक धनी होता है। यदि उंगलियाँ लम्बी हों और उनके पोरवे भी लम्बे हों तो ऐसा पुरुष सौभाग्यशाली होता है। उंगलियों के विरल, कुटिल तथा सूखे होने से मनुष्य निर्धन होता है—

नियतं कनिष्ठिकाङ्गुलिरनामिका पर्वं युगलमुल्लंघ्य।
यद्यधिकतरा पुँसाँ धनमधिकं जायते प्रायः॥
दीर्घाभिरङ्गुलीभिः सौभाग्ययुतः सदीर्घ पर्वाभिः।
विरलाभिः कुटिलाभिः शुष्काभिर्भवति धनहीनः॥

प्रायः सभी शास्त्रकारों ने उंगलियों का छीदा होना निर्धनता का लक्षण बताया है। इस कारण यहाँ यह जिज्ञासा होना स्वाभाविक है कि सब उंगलियों के बीच में समान रूप से छिद्र या दरार हों तो उसका क्या फल है और यदि छिद्र केवल (१) कनिष्ठिका-अनामिका के बीच में या (२) अनामिका-मध्यमा के बीच में या (३) मध्यमा-तर्जनी के बीच में हो तो क्या फल? किन्हीं दो उंगलियों के बीच में अधिक चौड़ी दरार हो और अन्य उंगलियों के बीच कम या इससे विपरीत क्रम हो तो क्या फल? इस शंका का समाधान निम्न-लिखित शास्त्रवचनों से होता है—

छिद्रं मिथः कनिष्ठाऽनामा मध्या प्रदेशिनीनां स्यात्।
वृद्धत्वे तारुण्ये बाल्ये क्रमशो नरस्य दुःखम्॥
(सामुद्रतिलक)

तर्जनी मध्यमा रंध्रे मध्यमानामिकान्तरे।
अनामिका कनिष्ठान्तश्छिद्रे सति यथा क्रमम्॥
जन्मतः प्रथमे त्वंशे द्वितीयेऽथ तृतीयके।
भोजनावसरे दुःखं केप्याहुः श्रीमतामपि॥
(विवेक विलास)

यदि तर्जनी और मध्यमा के बीच में छिद्र या दरार हो तो जीवन के प्रथम भाग में धनहीनता; यदि-मध्यमा और अनामिका के बीच में छिद्र या दरार हो तो जीवन के मध्य भाग में धनहीनता और यदि

अनामिका और कनिष्ठिका के बीच छिद्र या दरार हो तो वृद्धावस्था में धन की कमी होती है। जिसकी उंगलियों में किसी दो उंगलियों के बीच में छिद्र या दरार न हो तो ऊपर बताये हुए क्रम से जीवन के उस भाग में धन-कष्ट नहीं होता। यदि सभी उंगलियों के बीच में छिद्र या दरार हों तो जीवन के तीनों ही भाग कष्टमय होंगे। संस्कृत का ही भाव लेकर 'कर-लक्षण' में प्राकृत भाषा में निम्नलिखित गाथा दी गई है—

*"बालत्तणम्मि[१] सुलहं[२] पएसिणी[३]-मज्झ[४] मंतर[५] घणम्मि[६]।
मज्झिम[७]-अणामियाणं[८] तरुणत्तणे[९] सुक्खं[१०]॥

अर्थात् प्रदेशिनी और मध्यमा सघन (मिली हुई) हों तो बचपन में सुख, मध्यमा और अनामिका सघन हों तो युवावस्था में सुख होता है।

पावई[११] पच्छा[१२] सुक्खं[१३] कणिट्ठिअा[१४]णामि[१५] अन्तर[१६] घणम्मि[१७]।
सघंगुलि[१८] घणम्मि[१९] अ होइ[२०] सुही[२१] घण[२२] समिद्धो[२३] अ॥

यदि कनिष्ठिका और अनामिका एक-दूसरे से मिली हुई हों तो उसको बुढ़ापे में धन-सुख होता है। यदि सभी उंगलियां एक-दूसरे से भिड़ी हुई सघन हों तो सदैव धन समृद्ध रहता है।

'विवेक-विलास' नामक ग्रन्थ में यह विशेष रूप से बताया गया है कि अनामिका के नख वाले पर्व पर यदि कनिष्ठिका पहुँच जाय तो ऐसे जातक की धन-वृद्धि होती है और माता का पक्ष (मामा, नाना, मौसा, मौसी आदि) सबल होता है—

अनामिकान्त्यरेखायाः कनिष्ठेह यदाधिका।
धनवृद्धिस्तदा पुंसां मातृपक्षो बहुस्तथा॥

---

*१. बचपन में २. सुलभ, ३ प्रदेशिनी ४. मध्यमा में ५. अन्तर ६. सघन ७. मध्यमा ८. अनामिका ९. जवानी में १०. सुख।

*११. पाता है १२. पीछे १३. सुख १४. कनिष्ठिका १५. अनामिका १६. अन्तर १७. घना १८. सब उंगली १९. सघन २०. होवे २१. सुखी २२. धन २३. समृद्ध।

कनिष्ठिका उंगली की लम्बाई से आयु-विचार

'नारद-संहिता' में लिखा है कि अनामिका का मध्यम पर्व लाँघ-कर कनिष्ठिका आगे बढ़ जाय तो जातक सौ वर्ष तक जीता है। यदि कनिष्ठिका का अग्र भाग अनामिका के मध्यम पर्व तक पहुँचे तो ८० वर्ष। उससे कुछ कम हो तो ७० वर्ष और यदि अनामिका के मध्य पर्व के मध्यम भाग तक पहुँचे तो जातक की आयु केवल ६० वर्ष की होती है—

"अनामिका पर्व यदा विलङ्घ्यते
कनिष्ठिकाग्रेण शतं स जीवति।
समे त्वशीतिं विषमे तु सप्तर्ति
पर्वार्धं हीने खलु षष्टिमादिशेत् ॥

यह उस समय के शास्त्र का वचन है जब साधारणतय: लोगों की ८०-९० वर्ष की आयु होती थी। इसलिए ऊपर जो १००, ८० तथा ६० वर्ष की आयु बताई गई है उसे क्रमश: दीर्घायु, मध्य-आयु तथा अल्प-आयु समझकर आयु-निर्णय करना चाहिए।

'गर्ग-संहिता' का भी इसी आशय का वचन है कि—

अनामिकान्तिमं पर्व समानीता कनिष्ठिका।
आयामशुद्ध पर्वाणि येषां ते चिरजीविनः ॥

यदि कनिष्ठिका के पर्व लम्बे हों और कटे न हों तभी उक्त फल चरितार्थ होगा। किसी एक लक्षण से फल नहीं कहना चाहिए, अन्य लक्षणों से तुलना कर फलादेश करना उचित है।

स्त्रियों के हाथ की उंगलियाँ

स्त्रियों के उंगली के विषय में 'भविष्य-पुराण' में लिखा है कि जिसकी उंगलियाँ गोलाई लिए हुए, बराबर पर्व (पोरवे) वाली, आगे से पतली, कोमल त्वचा वाली तथा गाँठ रहित हों वह स्त्री सुख भोगती है। यहाँ उंगलियों के पाँच गुण बताये गये हैं—(१)

चपटी न हों किन्तु गोल हों अर्थात् उंगली के किसी भाग में छल्ला पहनाया जाये तो छिद्र न रहे। (२) उंगलियों के पर्व या पोरवे बराबर हों अर्थात् तर्जनी के तीनों पर्वों की लम्बाई एक-सी हो; मध्यमा के तीनों पर्वों की लम्बाई एक-सी हों ; अमानिका के तीनों पर्वों की लम्बाई बराबर हो और इसी प्रकार कनिष्ठिका के तीनो पर्वों की लम्बाई बराबर हो। (३) आगे से पतली हों अर्थात् नखवाले पर्व की ओर पतली हों। उंगलियों का अग्र भाग जितना पतला हो उतना ही अच्छा। (४) उंगलियों की त्वचा अत्यन्त कोमल हो। पीछे की ओर रोयें (बाल) या खुरदरापन न हो। (५) उंगलियों में गाँठें न हों और टेढ़ी भी न हों। ये पाँचों गुण होने से स्त्रियों की उंगलियाँ अच्छी मानी जाती है।

इसके विपरीत किन-किन लक्षणों से स्त्री दुःखभागिनी होती है अर्थात् कष्ट पाती है यह 'स्कन्द-पुराण काशीखण्ड' में बताया गया है—यदि (१) उंगलियों में बहुत पर्व हों—किसी उंगली में तीन की जगह चार। (२) कृश हों—अर्थात् सूखी हुई माँसरहित हों। (३) बहुत लाल हों। (४) बहुत छोटी हों। (५) विरल अर्थात् छीदी हों तो शुभ लक्षण नहीं हैं। स्त्रियों की उंगलियों के पिछले भाग में यदि रोम या बाल हों तो यह भी अशुभ लक्षण है। यदि चपटी या रूखी उंगलियाँ हों तो यह भी शुभ लक्षण नहीं है—

चिपिटाः स्थपुटा रूक्षाः पृष्ठरोमयुजोऽशुभाः।
अतिह्रस्वाः कृशा रक्ता विरला रोग हेतुकाः॥
दुःखायाङ्गुलयः स्त्रीणां बहु पर्व समन्विताः।

जिस स्त्री की उंगलियाँ बहुत छोटी हों और दोनों हाथों से अंजली बनाने से उंगलियों के बीच में छिद्र रहे तो वह स्त्री अपने पति के घर को खाली कर देती है—अपने पति का सारा धन खर्च कर देती है, द्रव्य-संग्रह-शील नहीं होती।

हाथों की उंगलियां (पाश्चात्य-मत)

पाश्चात्य मतानुसार भी अँगूठे का उंगलियों की अपेक्षा विशेष महत्व है। इस कारण चारों उंगलियों का एक प्रकरण में विचार किया जाता है। अँगुष्ठ का आगे के प्रकरण में पृथक् विचार किया जायेगा। उंगलियों का विचार करते समय प्रत्येक उंगली का अलग-अलग विचार करना चाहिए। तर्जनी के नीचे बृहस्पति का क्षेत्र होता है इसलिए तर्जनी उंगली पुष्ट, बलिष्ठ और लम्बी हो तो बृहस्पति के गुण जातक में विशेष पाये जायेंगे। इसी प्रकार मध्यमा यदि विशेष पुष्ट और सामान्य से अधिक लम्बी हो तो शनि का प्रभाव जातक पर विशेष होगा। अनामिका के नीचे सूर्य का क्षेत्र होता है इसलिए अनामिका यदि सामान्य से विशेष लम्बी और बलिष्ठ हो तो सूर्य-क्षेत्र के जो विशेष गुण हैं वे जातक में अधिक
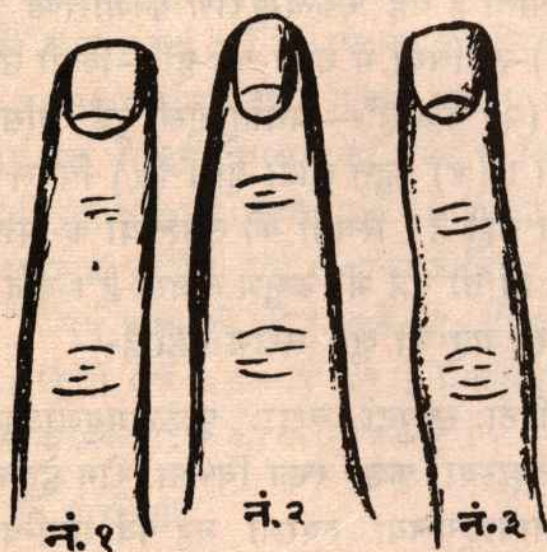
चित्र नं० ६

उंगली नं १. आगे से चतुष्कोणाकृति है। गांठें निकली हुई नहीं हैं।
२. आगे से नुकीली है। गांठें नुकीली नहीं हैं।
३. इसमें ग्रन्थियां उन्नत हैं अर्थात् गांठें निकली हुई हैं।

मात्रा में पाये जायेंगे। सबसे छोटी उंगली के नीचे बुध का क्षेत्र है इसलिए इस उंगली के सामान्य से अधिक लम्बे और पुष्ट होने से बुध-क्षेत्र के गुण जातक में विशेष होंगे। एक प्रकार से जो गुण, बृहस्पति, शनि, सूर्य तथा बुध-क्षेत्रों के उन्नत और विस्तृत होने से मनुष्य में होते हैं वही क्रमशः तर्जनी आदि उंगलियों के पुष्ट, बलिष्ठ और लम्बे होने से समझने चाहिएँ। इन चारों ग्रह-क्षेत्रों में यदि कोई क्षेत्र सुन्दर, विस्तृत या उन्नत न हो (अर्थात् नीचा धँसा हुआ हो) किन्तु उसके ऊपर वाली उंगली लम्बी और प्रमुख हो तो उस क्षेत्र के गुणों की कमी को पूरा करती है। उदाहरण के लिए बृहस्पति का क्षेत्र उन्नत और विस्तृत हो और उसके ऊपर वाली उंगली तर्जनी भी प्रमुख, प्रशस्त हो तो बृहस्पति का विशेष और अच्छा प्रभाव, उत्कृष्ट कोटि का समझना चाहिए। यदि बुध का क्षेत्र नीचा और दबा हुआ हो और उसके ऊपर की उंगली कनिष्ठिका भी छोटी तथा सामान्य से अधिक पतली हो तो बुध का निकृष्ट प्रभाव, जातक पर होगा। सूर्य और शनि इन दोनों क्षेत्रों का भी इसी प्रकार विचार करना चाहिए। यदि सूर्य का क्षेत्र नीचा और असुन्दर हो किन्तु सूर्य की उंगली प्रमुख और पुष्ट हो तो क्षेत्र का निकृष्ट प्रभाव तथा उंगली का उत्कृष्ट प्रभाव—इस प्रकार दोनों का मिलकर, सूर्य-ग्रह का मध्यमफल समझा जायेगा। शुक्र, मंगल तथा चन्द्र क्षेत्रों के ऊपर उंगलियाँ नहीं होतीं इसलिए इन ग्रहों के विषय में केवल उनके क्षेत्रों से ही विचार किया जाता है।

उंगलियों की लम्बाई

इसके अतिरिक्त यह देखना चाहिए कि उंगलियाँ कितनी लम्बी हैं। बीच की उंगली सदैव सब उंगलियों में अधिक लम्बी होती है। इससे छोटी तर्जनी और अनामिका ये दोनों प्रायः एक ही लंबाई की होती हैं। यदि तर्जनी अनामिका से विशेष लम्बी हो तो बृहस्पति

का प्रभाव अधिक और यदि अनामिका तर्जनी से विशेष लम्बी हो तो सूर्य का विशेष प्रभाव समझना चाहिए। छोटी उंगली सबसे छोटी होती है। इसका अग्र भाग अनामिका के प्रथम पर्व के अन्त तक पहुँ-चना चाहिए। यदि कनिष्ठिका इससे छोटी हो तो उसे छोटी और यदि इससे अधिक लम्बी हो तो उसे लम्बी कहेंगे।

उंगलियों के अग्रभाग

उंगलियों के अग्रभाग को चार कक्षाओं में विभाजित किया जाता है—(१) अत्यन्त नुकीले, (२) नुकीले, (३) चतुष्कोण आकार के तथा (४) फैले हुए। उंगलियों के अग्रभाग से जातक की प्रकृति, स्वभाव तथा किस क्षेत्र में वह सफलता प्राप्त करेगा इसका परिचय मिलता है। अतः यह पहचान कर लेना आवश्यक है कि उंगली उपर्युक्त चारों प्रकारों में से किस प्रकार की है—

(१) उंगली की ओर ध्यान से देखिये, यदि जड़ से लेकर (अर्थात् जहाँ से उंगली प्रारम्भ होती है) ऊपर तक (जहाँ अन्त होती है) **क्रमशः** उंगली पतली होती जावे और अग्रभाग अत्यन्त नुकीला हो तो इसे अत्यन्त नुकीली उंगली कहेंगे।

(२) यह उंगली जड़ से लेकर नीचे की गाँठ (हाथ की ओर से प्रारम्भ करने पर उंगली में जो प्रथम गाँठ होती है) तक समान रूप से मोटी हो और उसके **बाद** क्रमशः पतली हो तथा अग्रभाग गोलाई लिये हुए नुकीला हो तो ऐसी उंगली को नुकीली कहेंगे।

(३) यदि नीचे से लेकर ऊपर तक उंगली **समान** रूप से मोटी हो और अग्रभाग चतुष्कोण आकार का या आगे से कुछ गोलाई लिये हो तो ऐसी उंगलियों को चतुष्कोण आकार की उंगली कहेंगे। (देखिये चित्र नं० ६)

(४) यदि उंगली नीचे से द्वितीय ग्रंथि (जहाँ नखवाला पर्व अन्त होता है) तक समान रूप से चौड़ी हो और ऊपर की ग्रन्थि

के बाद अधिक चौड़ी हो जावे तथा नाखून तक पहुँचते-पहुँचते बिलकुल चौड़ी मालूम पड़े तो इसे फैली हुई कहेंगे।

इन चारों प्रकार के अग्रभागों में अत्यन्त नुकीले अग्रभाग वाले बहुत विचारशील होते हैं ; इनमें क्रियाकुशलता (सांसारिक, व्यापारिक या व्यावहारिक कार्यों में चतुरता) कम होती है। इसके बाद क्रमशः जो अग्रभागों के लक्षण दिये गये हैं उनमें विचारशीलता क्रमशः कम तथा क्रिया-कुशलता अर्थात् कार्य-सम्पादन की योग्यता अधिक होती है। यह निम्नलिखित विवरण से स्पष्ट किया जाता है—

उंगलियों के अग्रभाग के अनुसार

	दार्शनिक, कलात्मक या विचारात्मक प्रवृत्ति	सांसारिक चतुरता या कार्यसम्पादन योग्यता
(१) अत्यन्त नुकीला अग्रभाग	८०%	२०%
(२) नुकीला अग्रभाग	७०%	३ %
(३) चतुष्कोण अग्रभाग	५०%	५०%
(४) आगे से फैला हुआ अग्रभाग	२०%	८०%

उंगलियों की लचक

प्रत्येक उंगली की अलग-अलग परीक्षा करनी चाहिए कि उसमें कितनी लचक है। लचक से तात्पर्य है कि वह पीछे की ओर कितनी मुड़ सकती है। यदि किसी उंगली में अधिक लचक है तो उस उंगली के नीचे वाले ग्रह-क्षेत्र के प्रभाव की विशेष पुष्टि होती है। उदाहरण के लिए यदि अनामिका में विशेष लचक हो तो सूर्य-सम्बन्धी प्रभाव का जातक पर अधिक प्रभाव होगा। यहाँ यह स्पष्ट कर देना उचित है कि केवल एक गुण लचक, लम्बाई इत्यादि से सहसा किसी नतीजे पर नहीं पहुँचना चाहिए। सब लक्षणों का विचार कर उनका सन्तुलन और सामञ्जस्य करने के बाद ही अन्तिम नतीजे पर पहुँचा जा सकता है।

उंगलियों का फैलाव

यदि कोई उंगली बायीं तथा दायीं दोनों ग्रोर दूर तक फैल सकती है तो यह भी ग्रपने-ग्रपने सम्बन्धित ग्रह-क्षेत्र के ग्रच्छे-ग्रच्छे प्रभाव को बढ़ाती है। उंगलियों के फैलाव की परीक्षा करने का प्रकार यह है कि जातक से कहिए कि ग्रपने हाथ को मेज़ पर इस प्रकार रखे कि हथेली ग्रौर उंगलियों के नीचे का भाग मेज़ को स्पर्श करे। ग्रब जातक से कहिए कि तीनों उंगलियों को, हथेली को तथा ग्रँगूठे को न उठाये ग्रौर चौथी उंगली को उठाकर दाहिने या बायीं ग्रोर ले जावे। जो उंगली दाहिनी ग्रौर बायीं ग्रोर ग्रधिक जा सके तो उसे ग्रधिक चुस्त समझना उचित है ग्रौर उस उंगली से सम्बन्धित ग्रह (बृहस्पति, शनि, सूर्य, बुध) के कार्यों में वह विशेष चतुर होगा।

उंगलियों का एक-दूसरे की ग्रोर झुका होना

जातक से कहिए कि ग्रपना हाथ ग्रापके सामने इस प्रकार ऊँचा करे कि हाथ फैला हुग्रा हो, हथेली ग्रापकी ग्रोर हो ग्रौर उंगलियों के ग्रग्रभाग ऊपर की ग्रोर हों। जातक के ऐसा करने पर देखिए कि कौनसी उंगली ग्रपने स्थान पर बिल्कुल सीधी है ग्रौर कौनसी किसी दूसरी उंगली की तरफ़ मुख़ातिब (ग्राकृष्ट) मालूम होती है। जो उंगली ग्रपने स्थान पर सीधी हो उसे प्रधान ग्रौर ग्रन्य जो उसकी ग्रोर मुख़ातिब हों उन्हें ग्रप्रधान समझिए। ग्रप्रधान उंगलियाँ ग्रपने गुण ग्रौर शक्ति का थोड़ा ग्रंश प्रधान उंगली को देती हैं। उदाहरण के लिए यदि तीनों उंगलियाँ तर्जनी की ग्रोर झुकी हों तो तर्जनी को बल प्राप्त हो रहा है ग्रौर इस कारण बृहस्पति क्षेत्र-सम्बन्धी प्रभाव को बढ़ावेगा। यदि छोटी उंगली की तरफ़ सब उंगलियाँ झुकी हुई हैं तो बुध के प्रभाव में वृद्धि समझनी चाहिए।

यहाँ यह बताना आवश्यक है कि यदि अप्रधान उंगलियाँ सीधी होकर दूसरे की ओर आकृष्ट हों किन्तु यदि अप्रधान उंगली टेढ़ी हो तो वह प्रधान उंगली के गुण और शक्ति को नहीं बढ़ाती किन्तु अपने ही नीचे स्थित ग्रह के प्रभाव को बढ़ाती है।

उंगलियों के प्रारम्भ होने का स्थान

उंगलियों के प्रारम्भ होने का स्थान करीब-करीब एक ही ऊँचाई पर होना चाहिए। यदि कोई उंगली अन्य उंगलियों की अपेक्षा नीचे से प्रारम्भ होती है, तो इससे उस उंगली की शक्ति की कमी प्रकट होती है और यदि कोई उंगली अधिक ऊँचे स्थान से प्रारम्भ होती है तो उस उंगली की विशेष शक्ति प्रदर्शित होती है।

उगलियों के फैलने पर उनमें परस्पर अन्तर

जातक से कहिये कि अपने हाथ को इस प्रकार आपके सम्मुख खड़ा करे कि उंगलियों के अग्रभाग ऊपर की ओर हों। उंगलियाँ न परस्पर भिड़ी हों न उद्योग कर फैलाई जाएँ। हाथ की खुली हुई स्थिति होनी चाहिए। अब ध्यान से देखिए कि किन-किन उंगलियों के बीच विशेष अन्तर है—

(१) यदि अँगुष्ठ तथा तर्जनी में समान से अधिक अन्तर हो तो जातक उदार तथा स्वतंत्रता-प्रिय होगा और कड़े अनुशासन में रहना पसन्द नहीं करेगा।

(२) यदि तर्जनी और मध्यमा में विशेष अन्तर हो तो जातक स्वतन्त्र विचार का होता है और किसी भी विषय पर अपनी स्वतंत्र राय कायम करता है। अन्य व्यक्तियों की राय से पाबंद नहीं होता।

(३) यदि मध्यमा और अनामिका में सामान्य से अधिक अन्तर हो तो जातक भविष्य के विषय में चिन्ता नहीं करता। मिलनसार और ऊँच-नीच का विचार किए बिना सब में घुल-मिल जाता है।

(४) यदि अनामिका और कनिष्ठिका में विशेष अन्तर हो तो जातक मनमानी करता है ।

यदि किन्हीं दो उंगलियों के बीच में सामान्य से कम अन्तर हो तो अन्तर अधिक होने का जो फल दिया गया है उसके विपरीत समझना चाहिए । यदि सभी उंगलियाँ बहुत पास-पास रहें तो जातक में कृपणता होती है तथा मिलनसारी कुछ कम होती है ।

उंगलियों के पर्व

साधारणत: प्रत्येक उंगली में तीन-तीन पर्व होते हैं तथा अँगुष्ठ में दो । यदि किसी की उंगली १० सेंटीमीटर लम्बी हो तो साधारणत: प्रथम पर्व २ सें० मी० ; द्वितीय पर्व ३½ सें० मी० तथा तृतीय पर्व ४½ सें० मी० लम्बा होना चाहिए । अर्थात् उंगली जितनी लम्बी हो उसका पंचमांश प्रथम पर्व, ३½/१० द्वितीय पर्व तथा ४½/१० तृतीय पर्व लम्बाई में होना चाहिए । इस अनुपात से कोई पर्व बड़ा हो तो लम्बा और छोटा हो तो छोटा समझना चाहिए । यदि किसी उंगली का पहला पर्व (जिस पर्व में नख होता है) लम्बा और बड़ा हो तो उस उंगली के नीचे वाले ग्रह का मस्तिष्क-सम्बन्धी कार्यों पर (अध्ययन, पुस्तक-लेखन, दार्शनिक विचार, हुकूमत करने की भावना) विशेष प्रभाव होगा । यदि मध्यम पर्व सबसे अधिक लम्बा और बड़ा
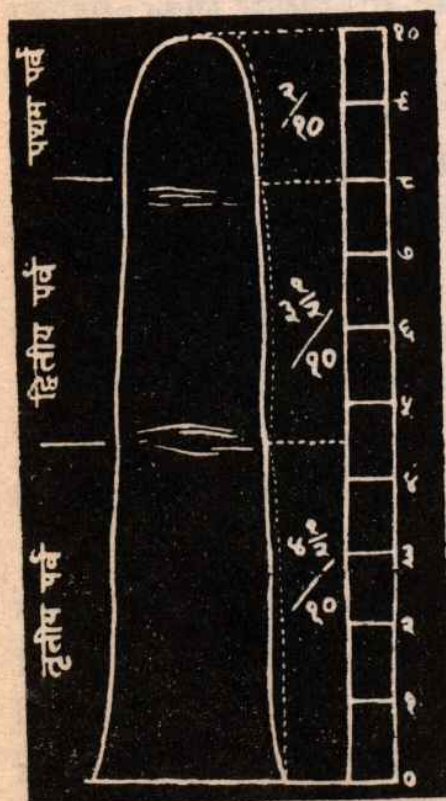
उंगलियों के पर्व (चित्र नं० १०)

हो तो उस उंगली से सम्बन्धित ग्रह का प्रभाव व्यापारिक क्षेत्र में अधिक होगा और यदि तृतीय पर्व सबसे अधिक बलवान हो तो शारीरिक सुख-भोग, विलास की प्रवृत्ति अधिक होगी। यदि तृतीय पर्व बहुत मोटा और फैला हुआ हो तो ऐसा जातक खाने-पीने का बहुत शौकीन होता है। यदि सब उंगलियों के तृतीय पर्व लम्बे, फैले और उठे हुए हों तो खूब खाने-पीने की इच्छा अधिक मात्रा में होगी। इस फलादेश को मनुष्य के स्वरूप तथा हाथ के अन्य लक्षणों का सामञ्जस्य कर कहना उचित है। उदाहरण के लिए यदि किसी जातक की उंगलियों के तृतीय पर्व उन्नत, विस्तृत तथा फूले हुए हों और अन्य लक्षणों से बृहस्पति या मंगल का प्रभाव उस पर अधिक दिखाई देता हो तो खाने-पीने का बहुत ही अधिक शौकीन होगा। किन्तु यदि उस पर बृहस्पति या मंगल के बजाय शनि का प्रभाव विशेष हो तो खाने-पीने की उतनी अधिक प्रवृत्ति नहीं होगी।

यदि उंगलियों के तृतीय पर्व सिकुड़े और जड़ों के पास इतने भीतर धँसे हुए हों कि उंगलियों के भिड़ाने पर भी तृतीय पर्वों के बीच दुर्बल होने के कारण छिद्र दिखाई दें तो ऐसा मनुष्य चिन्तनशील होता है।

हाथ की बनावट तथा पर्वों की लम्बाई का सम्मिलित प्रभाव

ऊपर बताया जा चुका है कि उंगली के प्रथम पर्व का सम्बन्ध मस्तिष्क के कार्यों तथा मानसिक जगत् से है। यदि हाथ नुकीला या अत्यन्त नुकीला हो तो उपर्युक्त दोनों गुण—हाथ की बनावट तथा पर्व का—एक ही गुण की पुष्टि करने के कारण विशेष बलवान हो जायँगे। इसी प्रकार यदि हाथ 'चतुष्कोण' हो और द्वितीय पर्व लम्बे और पुष्ट हों तो दोनों गुण व्यापारिक या व्यावसायिक क्षेत्र में लाभप्रद होने के कारण, इस क्षेत्र में जातक विशेष

सफल होगा। किन्तु यदि हाथ की बनावट तो हो नुकीली तथा दार्शनिक ढंग की और मध्यम पर्व अर्थात् व्यापारिक भावना का पर्व लम्बा हो तो विरुद्ध गुणों के मिलने से न जातक दार्शनिक ही हो सकेगा और न सफल व्यापारी ही।

उंगलियों की लम्बाई

(१) यदि उंगलियाँ बहुत लम्बी हों तो दूसरों के कार्यों में हस्तक्षेप करने की प्रवृत्ति होती है। ऐसे लोग दूसरों के कार्यों में छिद्रान्वेषण करते रहते हैं और इनकी प्रकृति में क्रूरता होती है।

(२) यदि उंगलियाँ अति लम्बी तो नहीं किन्तु लम्बी हों तो विश्लेषणात्मक योग्यता अधिक होती है। ऐसे आदमी हर एक काम को तरतीब से करते हैं और छोटी-छोटी बारीकियों पर जाते हैं। उदाहरण के लिए यदि इनके हाथ में कोई प्रबन्ध सौंपा जाय तो प्रबन्ध-सम्बन्धी छोटी-से-छोटी बात पर भी ये स्वयं ध्यान देंगे।

(३) यदि उंगलियाँ लम्बी और पतली हों और हाथ में अन्य लक्षण अच्छे हों तो जातक नीतिज्ञ तथा चतुर होता है। यदि अन्य लक्षण अच्छे न हों तो ताश खेलने में बेईमानी करना, किसी का जेब काट लेना या अन्य ऐसी ही बातों में चतुरता काम में आती है।

(४) यदि उंगलियाँ साधारण लम्बाई की हों अर्थात् न उन्हें लम्बी कह सकें और न छोटी, तो ऐसे मनुष्य में कोई बात विशेष मात्रा में नहीं होती।

(५) यदि उंगलियाँ छोटी हों तो, मनुष्य को यदि कोई बात समझाई जाय तो वह तुरन्त समझ जाता है। ऐसे लोग अनेक विचार-धाराओं का संतुलन और समन्वय करके परिणाम निकालने में सफल होते हैं। अर्थात् इनमें संश्लेषणात्मक योग्यता विशेष होती है। यदि साथ ही उंगलियों की गांठें निकली हुई न हों ता

ऐसे लोग बिना किसी हेतु के भी यह समझ जाते हैं कि दूसरों के हृदय का भाव या इरादा क्या है। इनमें Intuition की मात्रा अधिक होती है।

(६) यदि उगलियाँ बहुत छोटी हों तो ऐसे जातक प्राय. सुस्त और स्वार्थी होते हैं। अपना समय आमोद-प्रमोद में लगाते हैं। ऐसे लोग कुछ क्रूर प्रकृति के होते हैं और अपना कर्त्तव्य पालन नहीं करते हैं।

उंगलियों की लम्बाई की विचार से ये सामान्य नियम बताये गए हैं कि लम्बी उंगलियों या छोटी उंगलियों के होने से मनुष्य की प्रकृति और स्वभाव में क्या अन्तर होता है। किन्तु हाथ में सब उंगलियों की अनुपात से एक-सी लम्बाई न होकर कोई बहुत बड़ी या कोई बहुत छोटी हो इसका क्या फल होगा यह विस्तारपूर्वक बताया जाता है—

तर्जनी

(१) यदि तर्जनी साधारणत: लम्बी हो तो ऐसा जातक हुकूमत करना चाहता है। यदि बहुत लम्बी हो तो उसकी प्रकृति में क्रूरता आ जाती है। यदि बहुत छोटी हो तो जातक अपने ऊपर उत्तरदायित्व लेना नहीं चाहता। यदि टेढ़ी हो तो उसको सम्मान प्राप्त नहीं होता।

मध्यमा

(२) यदि मध्यमा साधारण लम्बी हो तो मनुष्य में दूरदर्शिता होती है। यदि अत्यधिक लम्बी हो तो ऐसा मनुष्य ग़मगीन (दु:खी) रहता है। यदि चपटी भी हो तो ऐसा स्वभाव अवश्य होता है। यदि बहुत छोटी हो तो गम्भीरता की कमी अर्थात् छिछोरपन। यदि टेढ़ी हो तो या तो जातक को हिस्टीरिया रोग होता है या हिंसात्मक प्रवृत्ति प्रकट होती है।

अनामिका

(३) यदि अनामिका साधारणतः लम्बी हो तो सौन्दर्य-प्रियता; यदि अधिक लम्बी हो तो सट्टा या जुआ खेलने की इच्छा; यदि बहुत छोटी हो तो कलात्मक प्रकृति नहीं होती, केवल रुपये कमाने की तरफ़ ध्यान होता है, यदि टेढ़ी हो तो कला के विषय में ठीक आदर्श नहीं होता परन्तु उसका उपयोग ग़लत बातों के लिए किया जाता है।

कनिष्ठिका

(४) यदि कनिष्ठिका लम्बी हो तो ऐसा जातक अनेक विषयों में चतुर होता है। यदि बहुत अधिक लम्बी हो तो प्रकृति में क्रूरता। यदि बहुत छोटी हो तो ऐसे आदमी बहुत जल्दबाज़ी से किसी निश्चय या परिणाम पर पहुँच जाते हैं। (अत्यधिक जल्दबाज़ी को अवगुण समझना चाहिए) यदि यह उंगली टेढ़ी हो तो बेईमानी की प्रकृति होती है।

लम्बाई की दृष्टि से उंगलियों की तुलना

(१) यदि तर्जनी मध्यमा के बराबर हो तो ऐसे व्यक्ति की हुकूमत करने की बहुत प्रबल इच्छा रहती है। नेपोलियन की तर्जनी मध्यमा के बराबर थी। यदि तर्जनी मध्यमा से भी बढ़ जावे तो प्रकृति में अत्यन्त तानाशाही या नादिरशाही हुक्म की उग्र प्रवृत्ति होती है।

यदि तर्जनी अपनी स्वाभाविक लम्बाई से कम हो तो भीरुता की द्योतक है। ऐसा व्यक्ति आगे बढ़ने से झिझकता है।

यदि तर्जनी अनामिका से बहुत बड़ी हो तो महत्वाकांक्षा अति मात्रा में बढ़ी हुई होती है। यदि अनामिका के बराबर हो तो यश तथा धन की बहुत लिप्सा होती है। यदि अनामिका की अपेक्षा छोटी हो तो महत्वाकांक्षा नहीं होती। जातक के जीवन का जैसा ढर्रा चल रहा है उसी से संतुष्ट रहता है।

(२) यदि मध्यमा तर्जनी की अपेक्षा बहुत बड़ी हो तो जातक दुःखी रहता है। यदि अन्य बुद्धिमत्ता के लक्षण हाथ में न हों तो ग़मगीन (दुःखी) अन्तःकरण के प्रभाव से जातक मूर्खता भी कर बैठता है यथा घर-बार छोड़ देना या हताश होकर किये-कराये पर पानी फेर देना।

यदि मध्यमा तर्जनी के बरावर हो तो जैसा ऊपर बताया जा चुका है, उच्चपद तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करने की तीव्र अभिलाषा जातक के हृदय में रहती है।

यदि मध्यमा तर्जनी की अपेक्षा भी छोटी हो तो पागलपन का लक्षण है। ऐसा व्यक्ति बिना योग्यता या क्षमता हुए, बड़े पद प्राप्त करने के ख़याली पुलाव पकाया करता है।

यदि मध्यमा अनामिका की अपेक्षा बहुत बड़ी हो तो उसके हृदय की ग़मगीन वृत्ति (अन्तःकरण दुःखी तथा निराश रहने) के कारण जातक कला, साहित्य, विद्या या धर्म-उपार्जन में सफल नहीं होता

यदि मध्यमा अनामिका के बराबर हो तो जुआ या सट्टा करने की इच्छा। यदि अनामिका से छोटी हो तो जातक ऐसे कारोबार करता है जिसमें लाभ की कोई आशा नहीं किन्तु मूर्खतावश वह समझता है कि इसमें लाभ होगा और अपनी मूर्खता से ऐसे धंधों में घाटा उठाता है।

(३) यदि अनामिका तर्जनी से बड़ी हो तो कला तथा साहित्य से प्रेम होता है। महत्वाकांक्षा की कमी के कारण कोई सफल परिणाम नहीं निकलता। यदि तर्जनी के बराबर हो तो यश तथा धन-लिप्सा। यदि तर्जनी से छोटी हो तो महत्वाकांक्षा के आधिक्य के कारण अपनी योग्यता को बहुत बढ़ी हुई समझता है।

यदि अनामिका मध्यमा से बहुत बढ़ी हुई हो तो ऐसा व्यक्ति ऐसा कारोबार करता है जिसमें अत्यधिक लाभ हो या फिर अत्यधिक घाटा लग जावे। यदि मध्यमा के बराबर हो तो जुआ तथा सट्टा

द्वारा द्रव्य-उपार्जन की विशेष अभिलाषा रहती है । यदि मध्यमा की अपेक्षा बहुत **छोटी हो तो** दुःखी स्वभाव के कारण कोई उन्नति नहीं कर सकता।

यदि अनामिका कनिष्ठिका की बजाय बहुत अधिक लम्बी हो तो कला, साहित्य, संगीत आदि के क्षेत्र में ही महत्वाकांक्षा होगी और जातक को उसमें सफलता मिलेगी।

यदि अनामिका कनिष्ठिका के बराबर हो तो जातक अनेक विषयों में चतुर होता है और दूसरों को समझाकर अपना दृष्टिकोण उनके हृदय में खचित कर सकता है।

(४) यदि कनिष्ठिका तर्जनी के बराबर हो तो जातक कुशल राजनीतिज्ञ होता है। छल तथा प्रपंच से भी अपना पक्ष प्रबल करने में उसे कोई हिचिकचाहट नहीं होती।

यदि कनिष्ठिका मध्यमा के बराबर हो तो विज्ञान-सम्बन्धी बहुत विशिष्ट योग्यता होती है।

यदि कनिष्ठिका अनामिका के बराबर हो तो वहु-विषयज्ञता तथा वाक्-चातुर्य का लक्षण है। ऐसा आदमी दूसरों को प्रभावित कर अपना कार्य करा सकता है। किन्तु यदि हाथ में अन्य चालाकी या बेईमानी के लक्षण हों तो धोखेबाजी का भी लक्षण है।

ऊपर तर्जनी तथा मध्यमा बराबर हों तो इसका फल तर्जनी के प्रसंग में भी दिया गया है और फिर मध्यमा के प्रसंग में भी। इसका कारण यह है कि (१) मध्यमा स्वाभाविक लम्बाई की हो और तर्जनी उसके बराबर हो तो पृथक् फल होगा तथा (२) तर्जनी स्वाभाविक लम्बाई की हो और मध्यमा उसके बराबर तो पृथक् फल। इसके अतिरिक्त जिस उंगली का जिस प्रसंग में प्रधानतया वर्णन किया जा रहा है, वह यदि लम्बी होने के साथ-साथ अन्यगुण तथा शुभ लक्षणों से युक्त है, उसके नीचे का ग्रह-क्षेत्र विस्तृत और उन्नत है तो शुभ लक्षण पूर्ण मात्रा में घटित होंगे और यदि अन्य

अशुभ लक्षण विशेष हैं (यथा निम्न ग्रह क्षेत्र आदि) तो अशुभ लक्षण पूर्ण घटित होंगे ।

इस प्रकार सब लक्षणों का तारतम्य कर अन्तिम परिणाम पर पहुँचना चाहिये।

उंगलियों में गाँठें

चारों उंगलियों में दो-दो गाँठें होती हैं। यदि ये ग्रंथियाँ न हों तो हम लोगों की उंगलियाँ सीधी रहें, मुड़ न सकें। इसलिए सभी हाथों की उंगलियों में ग्रंथियाँ होती हैं। परन्तु जिन मनुष्यों की उंगलियों में ये गाँठें बड़ी नहीं होतीं तथा हाथ माँसल होने के कारण दिखाई नहीं देतीं उनकी उंगलियाँ सीधी और चिकनी मालूम होती हैं, जैसे उनके हाथों में गाँठें हों ही नहीं। इसके विपरीत कुछ लोगों के हाथों में गाँठें इतनी बड़ी तथा निकली हुई होती हैं कि दूर से ही दिखाई देती हैं। नाखूनों की ओर से प्रारम्भ करने पर जो पहली गाँठ होती है उसे ऊपर की गाँठ तथा जो दूसरी होती है उसे नीचे की गाँठ कहते हैं।

(१) यदि उंगलियाँ बिल्कुल चिकनी हों अर्थात् दोनों गाँठों में से एक भी दिखाई न दे और उंगलियों के अग्रभाग अत्यन्त नुकीले हों तो ऐसा जातक साहित्य और कला का प्रेमी तथा धार्मिक विचारों का होता है। वह कल्पना के मनोराज्य में विचरण करता है किन्तु कार्यक्षम बिल्कुल नहीं होता। उसके विचारों में कार्यक्रम या तरतीब नहीं होती। ऐसे आदमी सांसारिक दृष्टि से निकम्मे तथा अत्यन्त सुस्त होते हैं परन्तु इनमें दूसरों के मनोभावों को जानने की विशेष शक्ति होती है।

यदि ऐसे हाथों में ऊपर की ग्रन्थि दिखाई दे तो कुछ-कुछ कार्यक्षमता होती है। परन्तु काव्य या कला में उतनी विशिष्टता नहीं होती जितनी कि ऊपर बताई गई है।

यदि उंगलियों की दूसरी ग्रन्थि उन्नत हो तो उंगलियों के

नुकीले होने के कारण साहित्य और कला की ओर झुकाव तो होता है किन्तु साथ ही द्रव्य कमाने की ओर खयाल भी होता है और इस विषय में कुछ चतुरता आ जाने से सांसारिक दृष्टि से जातक सफल रहता है।

यदि उंगलियाँ तो अत्यन्त नुकीली हों किन्तु दोनों गाँठें मोटी और निकली हुई हों तो दो प्रकार के विरुद्ध गुणों का एकत्र समन्वय होने से जातक विशेष उन्नति नहीं कर सकता।

(२) यदि उंगलियाँ साधारणतः नुकीली और चिकनी हों तो जातक के विचार और व्यवहार स्वतन्त्रता लिए होते हैं। वह अपना आदर्श स्वयं कायम करता है और सांसारिक बन्धनों की परवाह नहीं करता। उसकी मानसिक वृत्ति भी सौन्दर्य की ओर नहीं किन्तु वासनामय होती है।

यदि ऐसे हाथों में पहली (ऊपर की) गाँठ बड़ी हो और दिखलाई दे तो संगीत, साहित्य किंवा अन्य कलाओं में निपुणता के साथ-साथ जातक में सांसारिक सफलता की भावना भी दृढ़ होती है। प्रायः सफल गायक, कलाकार एवं रंगमंच पर अभिनय करने वाले लोगों की उंगलियाँ इस तरह की होती हैं।

यदि ऊपर की गाँठ उन्नत न हो और केवल नीचे की गाँठ ही उन्नत हो तो जातक व्यावहारिक दृष्टि से अपनी कला का मूल्य आँकता है कि उसे आर्थिक लाभ कितना होगा।

यदि दोनों गाँठें उन्नत हों तो साहित्य, संगीत तथा कला से मनुष्य अच्छा द्रव्य उत्पन्न करता है।

यह स्मरण रखना चाहिए कि उंगलियों का नुकीलापन या अत्यन्त नुकीलापन साहित्यिक, कलात्मक किंवा दार्शनिक प्रवृत्ति का द्योतक है और उंगलियों की गाँठें सांसारिक कार्यक्षमता और व्यावहारिक कुशलता की द्योतक हैं। इस कारण विरुद्ध गुणों का सम्मिश्रण कम दिखाई देता है। नुकीले या अत्यन्त नुकीले हाथों में

गाँठें होंगी तो बहुत हल्की या कम निकली हुई दिखाई देंगी।

(३) यदि उंगलियों का अग्र-भाग चतुष्कोणाकार का हो तो जातक काव्य, साहित्य, दर्शन आदि में रुचि रखता हुआ भी व्यावहारिकता और सांसारिक सफलता को हमेशा विचार में रखता है। व्यापारिक क्षेत्र में भी ऐसे जातक की बुद्धि अच्छी चलती है। ऐसे लोग प्रायः सफल होते हैं।

ऐसे जातक की उंगलियाँ चाहे चिकनी हों या गठीली, वह कुछ हद तक स्वतन्त्र प्रकृति का होता है और सच्चा भी होता है।

यदि ऐसी उंगलियों में केवल ऊपर की गाँठ उन्नत हों तो तर्क-शक्ति अच्छी होती है और इस कारण यह गुण सफलता में सहायक होता है। किन्तु यदि ऊपर की गाँठ उन्नत न हो और केवल नीचे की गाँठ उन्नत हो तो व्यावहारिक अनुशासन, कर्त्तव्यपालन आदि की ओर विशेष झुकाव रहता है। यदि दोनों गाँठें उन्नत हों तो विज्ञान, कानून, बैंकिंग आदि व्यावहारिक शास्त्रों के क्षेत्रों में विशेष सफलता प्राप्त होती है। काव्य या कला को जातक उतना महत्व नहीं देता। उंगलियों के अग्र-भाग जब चतुष्कोणाकार के होते हैं तो नीचे की गाँठें प्रायः उन्नत होती हैं।

(४) यदि उंगलियों के अग्र-भाग फैले हुए हों तो जातक खेल-कूद तथा अन्य ऐसे कार्यों का शौकीन होता है जिनमें बहुत से मनुष्यों के कार्य की जाँच, देख-भाल या अन्य प्रबन्ध का कार्य हो।

यदि ऐसी उंगलियों में ऊपर की ग्रन्थि विशेष उन्नत हो तो जातक आदर्शवादी नहीं होता। वह क्रियावादी होता है। वह प्रत्येक नवीन अनुसंधान या आविष्कार का मूल्य उपयोगिता की दृष्टि से आँकता है।

यदि केवल नीचे की गाँठें उन्नत हों तो उपर्युक्त गुण ही विशेष मात्रा में समझने चाहिए। यदि दोनों गाँठें उन्नत हों तो ऐसा आदमी बहुत अधिक क्रियाशील होता है और जब तक काम करते-करते थक न जाये तब तक इसे सन्तोष नहीं होता।

७वाँ प्रकरण

हाथ का अँगूठा

अँगूठे का शुभ लक्षण

यद्यपि अँगूठा पाँच उंगलियों में से एक है किन्तु उसका महत्व इतना अधिक है कि अनादिकाल से इसकी मुख्यता मानते चले आ रहे हैं। चारों उंगलियों को बड़ी-छोटी होने पर भी उंगलियाँ ही कहा जाता है किन्तु अँगूठे का नाम पाँचवीं उंगली न रखकर अलग नाम इसलिये रखा गया है कि यह इतना अधिक प्रधान है कि चारों उंगलियाँ एक तरफ़ और अँगूठा एक तरफ रखा जाय तो भी अँगूठा विशेष महत्त्वशाली समझा जावेगा। 'सामुद्रतिलक' में लिखा है कि अँगूठा सीधा, चिकना, ऊँचा, गोल, दाहिनी तरफ घूमा हुआ हो, इसके पर्व सघन (अर्थात् एक-दूसरे से अच्छी तरह मिले और माँसल हों) और बराबर हों तो जातक धनवान होता है। जिसके अँगूठे के पर्वों में 'यव' के चिह्न स्पष्ट हों वह भाग्यवान होता है, जिसके अँगूठे की जड़ पर 'यव' हो वह विद्वान् और पुत्रवान् होता है। जिसके अँगूठे के बीच में 'यव' चिह्न हो वह धन, सुवर्ण, रत्न आदि प्राप्त करता है और भोगी होता है। यदि अँगुष्ठ के मूल में चारो ओर घूमने वाली तीन 'यवों' की माला हों तो ऐसा व्यक्ति राजा या राजा का मन्त्री होता है। अनेक हाथी उसके पास रहते हैं। यदि तीन की अपेक्षा दो 'यव माला' हों तो भी व्यक्ति राजपूजित होता है अर्थात् उच्च पदवी प्राप्त करता है। 'प्रयोग-पारिजात' के मतानुसार यदि अँगुष्ठ-मूल में एक भी यवमाला हो तो भी मनुष्य धनाढ्य होता है। यदि अँगूठे के नीचे काक-पद हो तो वृद्धावस्था में कष्ट पाता है। 'यव' का चिह्न दो रेखाओं से बनता है,

एक रेखा ऊपर कुछ गोलाई लिये हुए, एक रेखा नीचे कुछ गोलाई लिये हुए। इन दोनों रेखाओं के बीच में जो भाग होता है वह एक 'जौ के दाने' की तरह लम्बा, दोनों सिरों पर पतला और बीच में मोटा होता है। 'यव' चिह्न को भारतीय शास्त्र में बहुत अधिक शुभ माना गया है—

"अमत्स्यस्य कुतो विद्या अयवस्य कुतो धनम्।"

(नारदीय संहिता)

अर्थात् जिसके हाथ में मत्स्य-चिह्न नहीं होगा वह पूर्ण विद्वान् कैसे हो सकता है। यदि 'यव' चिह्न न हो तो धन कैसे होगा।

'विवेक विलास' के अनुसार अँगुष्ठ के मूल में जितने यव-चिह्न हों उतने ही पुत्र होते हैं। अँगुष्ठ के बीच में 'यव' चिह्न हो तो विद्या, ख्याति और विभूति (ऐश्वर्य) प्राप्त होती है। यदि शुक्ल पक्ष में जन्म हो तो दाहिने हाथ के अँगूठे से विचार करना चाहिये। यदि कृष्ण पक्ष में जन्म हो तो बायें हाथ के अँगूठे से विचार करना उचित है। यदि एक भी 'यव' हो तो मनुष्य श्रीमान होता है।

स्त्रियों के अँगूठे

यदि स्त्रियों के हाथ में गोल, सीधा, गोल नाखून वाला मुलायम अँगूठा हो तो शुभ होता है। जिन स्त्रियों के अँगुष्ठ तथा उंगलियों में यव-चिह्न हो और यव की ऊपर तथा नीचे की रेखा बराबर हो तो ऐसी स्त्रियाँ बहुत धन-धान्य की स्वामिनी होती हैं और सुख भोगती हैं।

पाश्चात्य मत

अंगूठे का मस्तिष्क-शिरा-तंतुओं से सम्बन्ध

'जिप्सी' जाति में हाथ देखने की कुल-क्रमागत विद्या है। ये लोग भी हाथ देखने में अँगूठे को बहुत अधिक महत्व देते हैं। क्या चीनी, क्या अँग्रेज सभी ने अँगूठे को बहुत अधिक महत्व दिया है।

अँगूठे के अन्दर कुछ शिराओं के अग्रभाग ऐसे हैं जिनका मस्तिष्क से विशेष सम्बन्ध है । लकवा—वायुजनित स्नायुरोग है । जिन लोगों को लकवे की बीमारी होती है उनके शरीर के एक भाग का स्नायुजाल हरकत करना बन्द कर देता है । कुछ प्रसिद्ध वैज्ञानिकों का आविष्कार है कि जिस व्यक्ति को लकवा होने वाला होता है बरसों पहले उसके हाथ के अँगूठे की परीक्षा करके वे बता देते हैं कि इस व्यक्ति को लकवा होगा । बरसों बाद होने वाले लकवे रोग के चिह्न या लक्षण शरीर के किसी भाग में नहीं मिलते किन्तु अँगूठे में मिल जाते हैं । बरसों पहले अँगूठे से केवल रोग मालूम ही नहीं हो जाता है बल्कि आशंकित रोग रोका भी जा सकता है । अँगूठे का ऑपरेशन कर वहाँ की शिराओं को ठीक कर देने से फिर लकवा होने की आशंका नहीं रहती । इस उदाहरण से अच्छी तरह समझा जा सकता है कि अँगूठे का कितना अधिक महत्व है ।

अँगूठे का महत्व

अँगूठे से आत्मबल और साहस भी प्रकट होता है । बच्चे अपराध व भय की अवस्था में प्रायः अँगूठों को मुट्ठी में छिपा लेते हैं । जिनके अँगूठे मुट्ठी के अन्दर रहें उनमें आत्मबल और आत्मविश्वास की कमी समझनी चाहिए । पैदा होने के बाद जो बच्चे अँगूठे को उंगलियों के नीचे दबाये रहते हैं वे प्रायः कमज़ोर होते हैं । यदि कोई पागलखाने का निरीक्षण करे तो उसकी दृष्टि फ़ौरन इस ओर जाएगी कि जो लोग जन्म से ही पागल, अर्ध-विक्षिप्त या भोले होते हैं उनके अँगूठे बहुत छोटे और कमज़ोर होते हैं । अँगूठा चैतन्य-शक्ति का एक प्रधान केन्द्र है । यदि कोई अधिक बीमार हो और अँगूठा ढीला होकर हथेली पर गिर पड़े तो समझना चाहिये कि अन्तिम समय आ पहुँचा । यदि अँगूठे में कुछ जान हो तो कुछ बचने की आशा रहती है ।

मनुष्य के अँगूठे का महत्व इसलिये अधिक है कि वह सब

प्राणियों में विशेष उन्नत और बुद्धिमान है। इस कारण मनुष्य का अँगूठा लम्बा होता है। अँगूठा जितना ऊँचा और पुष्ट हो उतना ही अच्छा। चिम्पांजी का शरीर बहुत-कुछ मनुष्य के शरीर से मिलता है किन्तु उसका अँगूठा तर्जनी उंगली की जड़ तक भी नहीं पहुँचता। इससे यह नतीजा निकलता है कि जितनी ही ऊँचीं अँगूठे की जड़ होगी और अँगूठा जितना बड़ा होगा उतनी ही बुद्धि और शक्ति की प्रबलता होगी। इसके विपरीत यदि अँगूठा छोटा हो या हथेली में बहुत नीचा हो तो मनुष्य में आत्मशक्ति और बुद्धि दोनों कम मात्रा में पाई जाएँगी। जिस व्यक्तियों के अँगूठे लम्बे और सुन्दर हों वे बुद्धिमान तथा सभ्य व्यवहार वाले होंगे। ऐसे अँगूठे परिष्कृत मस्तिष्क वालों के होते हैं, किन्तु यदि अँगूठा आगे से मोटा, बेडोल, छोटा और हाथ के अधिक नीचे हो तो मनुष्य जानवर की तरह उद्दंड, असभ्य और मूर्ख होता है।

किसी मनुष्य के हाथ को अपने हाथ में लेकर अँगूठे के आकार स्वरूप, नख आदि से जो नतीजे निकाले जा सकते हैं उनका वर्णन आगे किया जावेगा। किन्तु किसी मनुष्य की हस्तपरीक्षा करने का अवसर प्राप्त न हो और किसी बड़े आदमी से, अपने कार्य के लिये मिलने जाना हो तो उसके हाथ के अँगूठे को दूर से ही देखकर उस मनुष्य की प्रकृति और स्वभाव का आप कुछ-कुछ पता लगा सकते हैं। जिससे हमें कुछ कार्य लेना है, उसकी प्रकृति का कुछ पता लगा लेने से उसकी रुचि के अनुकूल बातचीत करके उससे आसानी से अपना कार्य निकाला जा सकता है–

१. यदि किसी मनुष्य के अँगूठे का नखवाला पर्व बहुत लम्बा हो तो समझिये कि वह मनुष्य तानाशाही प्रकृति का है, वह सब पर अपना रोब और प्रभाव जमाना चाहता है। यदि ऐसे मनुष्य की खुशामद की जावे तो तुरन्त प्रसन्न हो जाता है और प्रार्थी के मनोनुकूल कार्य कर देता है।

२. (क) यदि नखवाला पर्व बहुत छोटा हो तो ऐसे व्यक्ति के विचार में दृढ़ता नहीं होती। ऐसे व्यक्ति पर ज़ोर डाल कर काम कराया जा सकता है।

(ख) किन्तु यदि नखवाला पर्व छोटे होने के साथ-साथ चौड़ा भी हो तो ऐसा व्यक्ति ज़िद्दी होगा, उस पर अधिक ज़ोर नहीं डालना चाहिए वरना वह चिढ़ जायेगा।

३. यदि नखवाला पर्व बहुत चौड़ा हो और आगे से गोल हो तो आदमी बहुत ज़िद्दी तथा गुस्सा करने वाला होता है। यदि अशिष्ट हो तो झगड़ा हो जाने पर मार-पीट करने के लिए भी तैयार हो जाता है।

४. यदि अँगूठा पीछे की ओर झुका है तो मनुष्य उदार होगा। यदि पीछे की ओर बहुत झुका हो तो बहुत अधिक उदार होगा।

अँगूठे के पर्व

अँगूठे में दो ही पर्व होते हैं। प्रथम पर्व वह है जिसमें नाखून होता है। द्वितीय पर्व इसके नीचे वाला। तृतीय पर्व नहीं होता। उंगलियों की अपेक्षा इसमें यह भिन्नता है।

अँगूठे के प्रथम पर्व से आत्मबल, आत्म-शक्ति, इच्छा की दृढ़ता आदि का विचार किया जाता है। दूसरे पर्व से तर्क-शक्ति, विचार-शक्ति, ऊहा-पोह करना आदि।

अँगूठे की जड़ से अन्त तक अँगूठे की लम्बाई को नापना चाहिए। यदि इसे पाँच भागों में विभाजित करें तो दो हिस्सा लम्बा प्रथम पर्व और तीन हिस्सा लम्बा द्वितीय पर्व होना चाहिए। यदि दोनों पर्वों की लम्बाई इस अनुपात से भिन्न हो तो कौनसा पर्व अपनी स्वाभाविक लम्बाई से बड़ा है कौनसा छोटा, यह निश्चय करना चाहिए।

प्रथम पर्व—यदि प्रथम पर्व विशेष दृढ़ और सामान्य से अधिक लम्बा हो तो ऐसा मनुष्य तर्क या विचार को काम में नहीं लेता, केवल

अपनी इच्छा या प्रवृत्ति के अनुसार काम करता है। यदि द्वितीय पर्व बहुत बड़ा हो और प्रथम पर्व बहुत छोटा हो तो ऐसा मनुष्य किसी बात पर विचार तो बहुत बारीकी और बुद्धिमत्ता से करेगा किन्तु आत्म-शक्ति या दृढ़ता न होने के कारण अपने विचारों को कार्यान्वित नहीं कर सकेगा। इस कारण सफलता के लिए दोनों पर्व अच्छी लम्बाई के और पुष्ट होने चाहिए।

अँगूठे का प्रथम पर्व यदि बहुत छोटा और कमज़ोर हो तथा शुक्र-क्षेत्र बहुत उन्नत हो तो मनुष्य कामवासना के वशीभूत हो जाता है, उसके मन में संयम कम होता है। यदि स्त्री का हाथ इस प्रकार का हो तो वह शीघ्र ही परपुरुष के बहकाने में आ सकती है। जिस के अँगूठे का प्रथम पर्व बलिष्ठ होता है उसमें विचार की दृढ़ता होती है, इस कारण कोई शीघ्र बहका नहीं सकता।

यदि पहला पर्व मोटा और भारी हो और नाखून चपटा हो तो ऐसे व्यक्ति को बहुत तेज़ गुस्सा आता है। वह गुस्से में आपे से बाहर हो जाता है। अँगूठे का आगे का हिस्सा बिलकुल 'गदा' की भाँति हो तो जातक गुस्सा आने पर उचित-अनुचित का विचार कुछ नहीं करता। (देखिये चित्र नं० ११) अँगुष्ठ की प्रथम और द्वितीय पर्व के बीच की सन्धि (गाँठ) यदि सख्त हो तो और भी क्रोध का लक्षण है। ऐसे व्यक्ति के लिए मारपीट तो मामूली बात है। क्रोध के आवेश में खून भी कर सकता है। यदि प्रथम पर्व चपटा हो तो मनुष्य शान्त प्रकृति का होता है।

द्वितीय पर्व—अँगूठे के द्वितीय पर्व भी भिन्न-भिन्न प्रकार के पाये जाते हैं। कुछ बीच में पतले होते हैं। ऐसे व्यक्ति नीति-कुशल होते हैं। उनके व्यवहार में चतुरता विशेष होती है। यदि बीच में वह अत्यन्त पतला हो तो स्नायु-शक्ति कमज़ोर हो जाती है और जातक विचार करते-करते घबरा जाता है।

यदि द्वितीय पर्व बहुत लम्बा हो तो ऐसा व्यक्ति प्रत्येक विषय

पर लम्बी बात करता है, परन्तु किसी का विश्वास नहीं करता। यदि साधारण लम्बा हो तो ऐसे व्यक्ति में तर्क-शक्ति अच्छी होती है, वह प्रत्येक बात के हरेक पहलू पर विचार करता है। यदि छोटा हो तो तर्क-शक्ति निर्बल होती है, यदि बहुत छोटा हो बुद्धि की
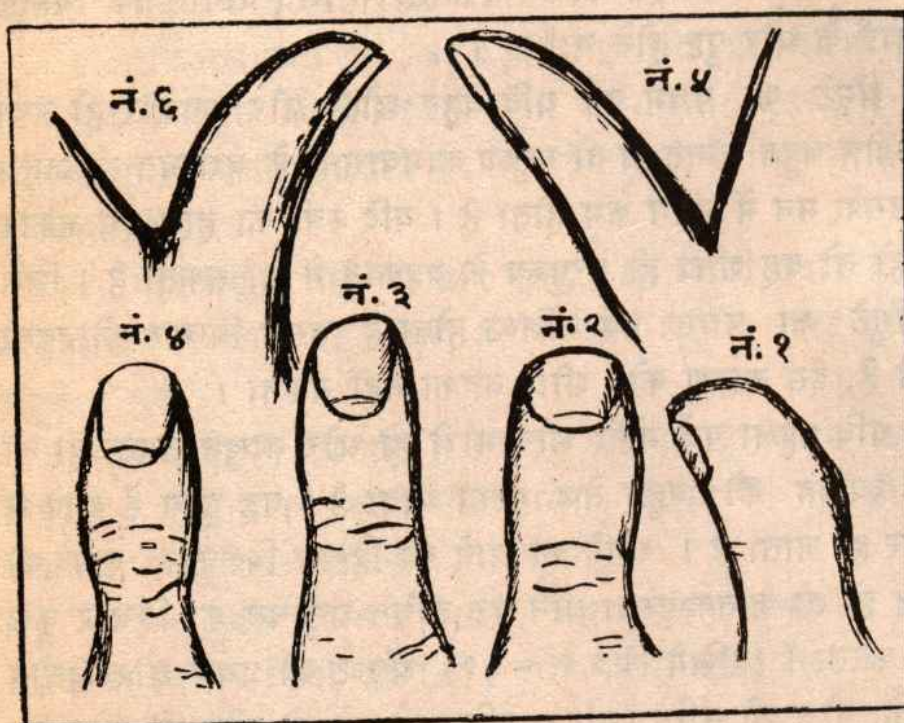
चित्र नं० ११

अंगूठा नं० १—गदा की आकार का अँगूठा।
२—द्वितीय पर्व बीच से मोटा है। अँगूठा भी छोटा है।
३—द्वितीय पर्व न मोटा न पतला।
४—द्वितीय पर्व बीच से पतला है।
५—पीछे अधिक नहीं मुड़ने वाला अँगूठा।
६—पीछे अधिक मुड़ने वाला, लचकदार अँगूठा।

कमी प्रकट होती है। ऐसा आदमी किसी कार्य करने के पहले उस पर विचार करना भी नहीं चाहता।

अँगूठे और हथेली का जोड़

अँगूठा हथेली से किस प्रकार संयुक्त है यह भी देखना आवश्यक है। यदि अँगूठे और हथेली के बीच में बहुत अन्तर हो अर्थात् अँगूठा हथेली से दूर करने पर यदि समकोण बने तो भी अच्छा लक्षण नहीं और अँगूठे और हथेली के बीच में केवल ३०°-३५° को कोण बने तो वह भी उत्तम नहीं। अँगूठे की परीक्षा करते समय जातक से कहिये कि वह अँगूठे को उंगलियों से दूर ले जावे और देखिए कि कितने डिगरी का कोण बनता है। यदि अँगूठे और हथेली के बीच में समकोण या अधिक कोण बने तो ऐसा व्यक्ति अत्यन्त स्वतन्त्र स्वभाव का होगा और हर एक कार्य अपनी इच्छा के अनुकूल करेगा। ऐसे व्यक्ति मध्यम मार्ग का अनुसरण नहीं करते, अपनी मनमानी करते हैं। इन लोगों को दबाकर रखना कठिन है।

यदि अँगूठे की वनावट तो अच्छी हो किन्तु वह बिलकुल उंगलियों के पास ही रहता हो (अर्थात् अँगूठे और हथेलियों के बीच में कोई बहुत छोटा कोण बने तो ऐसे व्यक्तियों में स्वतन्त्रता की बिलकुल कमी होती है। ये लोग सदैव दूसरे पर अवलम्बित रहने की चेष्टा करते हैं। उनके चित्त में घबराहट तथा शंका बनी रहती है। सदैव सावधान रहते हैं। इतनी हिम्मत नहीं होती कि किसी निर्णय पर स्वयं पहुँच सकें या अपने विचारों को कार्यान्वित करें। ऐसे लोगों के मन में क्या है यह जानना बहुत कठिन होता है। वे खुले दिल से अपने विचार प्रकट नहीं करते।

लम्बा या छोटा अँगूठा

यदि हाथ के अन्य लक्षण तथा अँगूठे से यह प्रकट हो कि जातक में क्रोध की मात्रा काफ़ी है और उसमें अपने शत्रु से बदला लेने की भावना के साथ-साथ बुद्धि और साहस भी है तो यह देखना चाहिए कि उसका अँगूठा लम्बा है या छोटा। यदि अँगूठा लम्बा होगा तो जातक अपने बुद्धि-बल से अपने शत्रु को हरावेगा। किन्तु यदि

अँगूठा छोटा और मोटा हो तो वह चुपचाप ताक में रहेगा और मौका पाते ही छुरा भोंक देना, गोली मार देना, धक्का दे देना आदि हिंसक कार्य करेगा, इस कारण अँगूठे के विषय में लम्बाई और बनावट के दृष्टिकोण से निम्नलिखित तीन बातें ध्यान में रखनी चाहिए—

(१) यदि अँगूठा लम्बा और सुन्दर बना हो तो बुद्धि और साहस (इच्छा-शक्ति) दोनों गुण होते हैं।

(२) यदि अँगूठा छोटा और मोटा हो तो पाशविक प्रवृत्ति और हठ होता है।

(३) यदि अँगूठा छोटा और कमज़ोर हो तो न इच्छा-शक्ति दृढ़ होती है न साहस।

अँगूठे की बनावट के साथ-साथ यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि हाथ सख्त है या मुलायम। यदि अँगूठे से दृढ़ता और शक्ति मालूम होती हो और हाथ सख्त हो तो इन गुणों की पुष्टि होगी। ऐसा व्यक्ति अपने विचार में दृढ़ होगा और अपनी योजनाओं को कार्यान्वित करेगा। किन्तु यदि अँगूठे में तो उपर्युक्त गुण हों परन्तु हथेली मुलायम हो तो ऐसा व्यक्ति कभी तो अपनी योजनाओं को कार्यान्वित करने में तेज़ी से कदम उठायेगा और कभी एकदम शिथिल पड़ जाएगा। इच्छा-शक्ति की प्रबलता होने पर भी (अँगूठे का लक्षण) हाथ की हथेली मुलायम होने के कारण स्वाभाविक आलस्य और शिथिलता उन्नति में बाधक होती है।

अँगूठे की लचक

अँगूठे की लचक और मनुष्य के स्वभाव में बहुत अधिक सम्बन्ध है। जिनका अँगूठा लचकदार होता है और पीछे की ओर काफ़ी मुड़ जाता है उनमें अन्य स्त्री या पुरुष से शीघ्र मैत्री स्थापित करने की क्षमता होती है। किन्तु जिनका अँगूठा पीछे की ओर न

मुड़े बल्कि सीधा और सख़्त हो, वे इस विषय में विशेष आदर्शवादी होते हैं और सहसा अन्य लोगों से सम्पर्क स्थापित करने की इच्छा उनकी नहीं होती। (देखिये चित्र नं० ११, अँगूठा नं० ५ व ६)।

जिनके अँगूठों में लचक अधिक होती है उनके अँगूठे पीछे की ओर अधिक मोड़े जा सकते हैं। ऐसे व्यक्ति बहुत उदार और फ़िजूल ख़र्च करने वाले होते हैं। जिस प्रकार द्रव्य के विषय में वे लापरवाह होते हैं उसी प्रकार अपने समय की भी उन्हें परवाह नहीं रहती। उनके विचार में भी बहुत भावुकता होती है। जैसी परिस्थिति में या जैसे लोगों के बीच ये रहते हैं उसी के अनुकूल अपने को बना लेते हैं। इनमें मिलनसारी विशेष होती है। जीवनधारा में ये लोग बहते हैं। धारा के विरुद्ध कुशल नाविक की तरह परिश्रम कर अपने ध्येय की ओर ये लोग नहीं जा सकते। (देखिए चित्र नं० ११)

इसके विपरीत जिनके अँगूठों में लचक नहीं होती अर्थात् दोनों पर्वों के बीच की संधि जिनकी दृढ़ और सख़्त होती है वे लोग धन-संचय करने की चेष्टा करते हैं। समय को व्यर्थ नहीं गँवाते। व्यर्थ के विचारों में नहीं उलझते। व्यवहार-कुशलता के साथ जिस बात को पकड़ते हैं उसको पूर्ण करने की चेष्टा करते हैं और कुशल होते हैं।

संक्षेप में यह समझना चाहिये कि लचक और पीछे की ओर झुकाव होने से कल्पना, भावुकता, उदारता आदि गुण तथा फ़िजूल-खर्ची, विचारों की अधिकता के कारण उन्हें कार्यान्वित न कर सकना आदि अवगुण होते हैं। यदि लचक न हो और जोड़ दृढ़ हों तो सांसारिक कार्यक्षमता, परिश्रम, मितव्ययता आदि गुण होते हैं परन्तु कला और सौन्दर्य का आकर्षण, विचारों का विस्तार, प्रेम-प्रदर्शन आदि गुण नहीं होते।

इन सब गुण और अवगुणों का हाथ के अन्य लक्षणों से सामञ्जस्य कर अन्तिम निर्णय पर पहुँचना चाहिये।

८वाँ प्रकरण

ग्रह-क्षेत्र

हाथ के मोटे तौर पर दो हिस्से होते हैं—एक हथेली और दूसरा अँगूठा और उंगलियाँ। हथेली के अध्ययन की सहूलियत के लिये दस भाग किये जाते हैं। तर्जनी उंगली के नीचे के स्थान को बृहस्पति का क्षेत्र कहते हैं। मध्यमा उंगली के नीचे के, हथेली के भाग को शनि-क्षेत्र कहते हैं। अनामिका उंगली के नीचे जो हथेली का हिस्सा है उसे सूर्य-क्षेत्र कहते हैं और कनिष्ठिका उंगली के नीचे के भाग को बुध-क्षेत्र। ये चारों क्षेत्र चारों उंगलियों के नीचे (अर्थात् उंगली जहाँ से प्रारम्भ होती है) हथेली के ऊपर होते हैं। इसी प्रकार अँगूठे के नीचे, हथेली पर चारों ओर जीवन-रेखा से घिरा हुआ जो भाग है उसे शुक्र-क्षेत्र कहते हैं। यदि आप अपने दाहिने हाथ को देखें तो एक ओर अँगूठे के नीचे उठा हुआ हिस्सा शुक्र-क्षेत्र होगा यह तो दाहिने हाथ के दाहिने ओर हुआ। बायीं ओर जो हथेली का ऊँचा उठा हुआ काफ़ी लम्बा हिस्सा है इसे चन्द्र-क्षेत्र कहते हैं। (देखिए चित्र नं० १२) चन्द्र-क्षेत्र काफी दूर तक फैला हुआ है। मणिबन्ध की रेखा से प्रारम्भ होकर शीर्ष-रेखा तक यह (दाहिने हाथ का हथेली का वायाँ भाग और बायें हाथ का हथेली का दाहिना भाग) जाता है। इस पर ऊपर या नीचे या मध्य में चिह्न विशेष होने से उनका फलादेश अलग-अलग होता है। इस कारण चित्र में इसे तीन हिस्सों में—(१) ऊपर का भाग (२) मध्य भाग (३) नीचे का भाग—इस प्रकार बाँट कर दिखाया गया है। वास्तव में यह सारा चन्द्र-क्षेत्र ही है।

हृदय-रेखा के नीचे और शीर्ष-रेखा के ऊपर हथेली के किनारे का

जो ऊँचा उठा हुआ भाग है इसे मंगल का प्रथम क्षेत्र कहते हैं। इसी प्रकार शुक्र-क्षेत्र के ऊपर, जहाँ से जीवन-रेखा प्रारम्भ होती है और बृहस्पति-क्षेत्र के नीचे के भाग को मंगल का द्वितीय क्षेत्र कहते हैं।

इस प्रकार सूर्य, चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि इन छः ग्रहों के छः ग्रह-क्षेत्र और मंगल के दो क्षेत्र—इस प्रकार आठ क्षेत्रों में हथेली के चारों ओर का भाग बाँटा गया है। इन ग्रह-क्षेत्रों के अतिरिक्त जो हथेली का मध्य भाग कुछ नीचा धँसा हुआ होता है उसे करतल-मध्य कहते हैं। उसको भी अध्ययन की सुविधा के लिए दो भागों में बाँट दिया गया है—एक शीर्ष-रेखा के ऊपर करतल-मध्य भाग, दूसरा शीर्ष-रेखा के नीचे। इस प्रकार हथेली के दस भाग हुए।

इस प्रकरण में केवल आठों ग्रह-क्षेत्रों का वर्णन किया जावेगा। यदि आप ध्यान से दस-बीस हाथ देखेंगे तो शीघ्र ही पता चल जाएगा कि हथेली के मध्य भाग की अपेक्षा ये हिस्से कुछ ऊँचे उठे हुए रहते हैं। चारों उंगलियों के नीचे जो ग्रह-क्षेत्र हैं उनको ध्यान से देखने पर आप की दृष्टि में यह बात आएगी कि प्रत्येक ग्रह-क्षेत्र के ऊपर एक उठान है। इस उठे हुए स्थान के सर्वोच्च शिखर के चारों ओर ढलाव है। यह शिखर मानो पर्वत की चोटी है जिसके चारों ओर क्रमशः नीचे उतरता हुआ मैदान है। इस उठान और 'शिखर' के कारण बहुत से हस्त-परीक्षकों ने इस स्थान को बृहस्पति पर्वत, शनि पर्वत, सूर्य पर्वत, बुध पर्वत, शुक्र पर्वत, मंगल-पर्वत, चन्द्र पर्वत भी लिखा है। अंग्रेज़ी में इन स्थानों को 'माउण्ट' कहते हैं।

अपने स्थान से सरके हुए ग्रह-क्षेत्र के शिखर

कभी-कभी ग्रह-क्षेत्र की चोटी ठीक मध्य भाग में नहीं होती, बल्कि कुछ दाहिने या बायें सरककर होती है। उदाहरण के लिये गुरु-

क्षेत्र की चोटी या शिखर कुछ सरका हुआ, शनि-क्षेत्र की ओर हो सकता है। इसी प्रकार शनि-क्षेत्र का उच्च-शिखर या तो अपने स्वाभाविक स्थान—क्षेत्र के मध्य में हो या गुरु-क्षेत्र की ओर सरका हुआ या सूर्य-क्षेत्र की ओर सरका हुआ हो सकता है। इसी प्रकार सूर्य-क्षेत्र का शिखर (१) क्षेत्र-मध्य में (२) शनि-क्षेत्र की ओर सरका हुआ या (३) बुध-क्षेत्र की ओर सरका हुआ हो सकता है।

वास्तव में कभी-कभी ग्रह-क्षेत्र का शिखर इतना दाहिनी या बायीं ओर सरका होता है कि यह समझ में नहीं आता कि यह किस ग्रह-क्षेत्र का शिखर है। उदाहरण के लिये कितने ही हाथों में उंगलियों के ठीक नीचे—ग्रह-क्षेत्र पर उठा हुआ 'शिखर' या 'गुम्बद'—ऊँचा भाग नहीं होता परन्तु दो उंगलियों के बीच के भाग के नीचे होता है। यदि अनामिका और कनिष्ठिका के बीच के भाग के नीचे हुआ तो यह समझने में कठिनता होती है कि यह सूर्य-क्षेत्र की सरकी हुई चोटी है या बुध-क्षेत्र की।

ऐसी स्थिति में निश्चय करने का तरीका यह है कि Magnifying Glass से यह देखना चाहिए कि प्रत्येक ग्रह-क्षेत्र की 'चोटी' या 'शिखर' कहाँ है। हथेली के चमड़े में जो बाल से पतली सूक्ष्म धारियाँ होती हैं वे प्रत्येक ग्रह-क्षेत्र के शिखर पर आकर मिलती हैं (देखिये चित्र नं० १२)। बस यह स्थान आपके ग्रह-क्षेत्र या ग्रह-स्थान या ग्रह-पर्वत का शिखर है। चाहे आप दसों हज़ार हाथों की परीक्षा कर लें, चारों उंगलियों के नीचे का जो हथेली का भाग है उस पर ऐसे चार 'स्थान' ही आपको मिलेंगे जहाँ ग्रह-क्षेत्रों पर फैली हुई सूक्ष्म धारियाँ मिलती हों। जब आप शीशे की सहायता से या ध्यान से देखने पर चारों 'शिखरों' का पता लगायेंगे तो यह निश्चय करना कठिन न होगा कि प्रथम बृहस्पति-

चित्र नं० १२
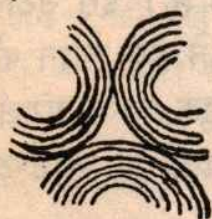
क्षेत्र का शिखर है; द्वितीय शनि-क्षेत्र का; तृतीय सूर्य-क्षेत्र का;चतुर्थ बुध-क्षेत्र का।

बहुत-से हाथों में ग्रह-क्षेत्र ऊँचे उठे हुए नहीं होते। सारा ग्रह-क्षेत्र का भाग चपटा समतल होता है। ऐसी स्थिति में जब उठान—कोई ऊँचा भाग नज़र ही नहीं आता तो ग्रह-क्षेत्र की 'चोटी' किसे मुकर्रिर की जावे यह सवाल पैदा होता है। वास्तव में ऊपर जो चमड़े की सूक्ष्म धारियों के सम्मिलन का स्थान है वही ग्रह-क्षेत्र का शिखर है। चाहे यह भाग ऊँचा हो या नीचा, वही स्थान 'शिखर' कहलावेगा। प्राय: ग्रह-क्षेत्रों का यह मध्य भाग ऊँचा होता है इसी कारण इसे शिखर, सर्वोच्च शिखर, 'चोटी' कहते हैं। किसी भी ग्रह-क्षेत्र का उच्च होना यह प्रकट करता है कि उस ग्रह का प्रभाव उस मनुष्य पर अधिक है और अकसर एक या दो या अधिक ग्रह-क्षेत्र उठे हुए भी पाये जाते हैं। बहुत से हाथों में तो इतने उठे हुए होते हैं कि आप देखते ही कह देंगे कि इस ग्रह-क्षेत्र का शिखर यह बिन्दु है। किन्तु जहाँ स्पष्ट दिखाई न दें वहाँ काली स्याही से छाप लेकर या शीशे की सहायता से यह निश्चय करना चाहिये कि कौनसे ग्रह-क्षेत्र का शिखर अपने स्वाभाविक स्थान पर है और कौनसा सरका हुआ। जब कोई ग्रह-क्षेत्र सरका हुआ होता है तब जिस ओर के ग्रह-क्षेत्र की ओर सरका होता है उसका भी कुछ प्रभाव उसमें आ जाता है। यथा—यदि सूर्य-क्षेत्र का 'शिखर' अपने ग्रह-क्षेत्र के ठीक मध्य में न हो और बुध-क्षेत्र की ओर कुछ सरका हो तो बुध का भी कुछ-कुछ प्रभाव सूर्य में आ जावेगा।

ऊपर बताया जा चुका है कि किन्हीं हाथों में ग्रह-क्षेत्र उठे हुए होते हैं किन्हीं में नहीं, किन्तु यह नहीं समझना चाहिये कि परिश्रम करने से, कसरत या हाथों से काम करने से ग्रह-क्षेत्र दब गये। हाथों को अधिक काम में लेने से वे मुलायम नहीं रहते। माँस-पेशियाँ सख्त हो जाती हैं, जिल्द या चमड़ा सख्त या खुरदरा हो जाता है

परन्तु ग्रह-क्षेत्रों के उठान या ऊँचाई में कोई अन्तर नहीं आता।

हस्त-परीक्षा में ग्रह-क्षेत्रों का जो इतना महत्व है इसका कारण यह है कि जो ग्रह-क्षेत्र अधिक उठा हुआ या शुभ रेखा या चिह्नयुक्त हो उस ग्रह का प्रभाव उस मनुष्य पर विशेष होगा और एक बार यह निश्चय हो जाने पर कि इस मनुष्य पर इस ग्रह का प्रभाव अधिक है अन्य लक्षणों से यह तारतम्य करना सरल हो जाता है कि परिणाम में फल क्या होगा। उदाहरण के लिए शनि का विशेष स्वभाव है परिश्रम करना, चिंतन करना, अविश्वास करना, दूरदर्शी होना, आध्यात्मिकता या वैराग्य की ओर प्रवृत्ति, दुःख या ग्लानि का भाव, अन्तर्मुखी मनोवृत्ति आदि।

यदि किसी मनुष्य के ग्रह-क्षेत्रों को देखने से यह मालूम पड़े कि शनि का प्रभाव उस पर विशेष है और शीर्ष-रेखा भी चन्द्र-क्षेत्र के नीचे के भाग तक लम्बी और ढलावदार गई हो तथा अन्य लक्षण भी आत्महत्या की ओर प्रवृत्ति करने वाले हों तो ऐसा मनुष्य शीघ्र ही आत्महत्या की ओर प्रवृत्त हो जावेगा, किन्तु यदि मनुष्य का शुक्र-क्षेत्र, गुरु-क्षेत्र आदि उन्नत हों और बृहस्पति या शुक्र का प्रभाव मनुष्य पर विशेष हो तो जीवन में मामूली कठिनताएँ या मुसीबतें भी मनुष्य को ग़मगीन या दुःखी नहीं बनावेगी। चन्द्र-क्षेत्र के निचले भाग की ओर जाने वाली लम्बी ढलावदार शीर्ष-रेखा कल्पना को अत्यधिक बढ़ावेगी पर दुःख की ओर मनुष्य को नहीं ले जावेगी।

इसी प्रकार आगे चलकर जीवन-रेखा के सिलसिले में बताया गया है कि जिन पर बृहस्पति का प्रभाव अधिक होता है वे खान-पान में असंयमी होते है; खासकर यदि उंगलियों के तृतीय पर्व बहुत फूले हुए हों तो वे बहुत खाते-पीते हैं। इस कारण उनको Apoplexy आदि रोग अधिक होने की संभावना होती है। शनि का प्रभाव विशेष

हो तो वातरोग, गठिया, पैरों की या कान की बीमारी, बहरापन आदि अधिक होता है।

इस कारण भाग्य-विचार तथा रोग-विचार अच्छी प्रकार करने के लिए किस ग्रह का मनुष्य पर विशेष प्रभाव है उसकी प्रकृति—शारीरिक और मानसिक—कैसी है यह परिज्ञान परमावश्यक है। यदि किसी हाथ को देखने से यह मालूम पड़े कि अमुक ग्रह-क्षेत्र सबकी अपेक्षा अधिक उन्नत है और उस ग्रह-क्षेत्र पर एक खड़ी रेखा भी हो तो आप निश्चय कह सकते हैं कि उस ग्रह का मनुष्य पर अधिक प्रभाव है। किन्तु किसी ग्रह-क्षेत्र को बलवान् कहने के पूर्व यह भी देख लेना चाहिए कि उसका रंग विवर्ण तो नहीं है। इसी प्रकार यदि वहाँ का 'माँस' बिलकुल ढीला-पोला हो तो उस ग्रह-क्षेत्र को बलवान् नहीं कहना चाहिए। ग्रह-क्षेत्र पूर्ण बलवान् तभी होता है जब वह उन्नत, विस्तृत और सुन्दर हो और उसमें उपर्युक्त अवगुण न हों। साथ ही जिन ग्रह-क्षेत्रों के ऊपर उंगलियाँ हैं, उन ग्रह-क्षेत्रों का विचार करते समय यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि उस ग्रह-क्षेत्र के ऊपर वाली उंगली कैसी है। उदाहरण के लिए यदि बृहस्पति-क्षेत्र के ऊपर वाली उंगली लम्बी, (अपनी स्वाभाविक लम्बाई की—जैसा उंगलियों के प्रकरण में बतलाया गया है।) पुष्ट और अपने उचित स्थान से प्रारम्भ हो तो बृहस्पति-क्षेत्र को पूर्ण सुन्दर कहेंगे। अन्यथा यदि बृहस्पति-क्षेत्र सुन्दर, उन्नत, विस्तृत होते हुए भी तर्जनी उंगली जैसी चाहिए बलिष्ठ न हो तो बृहस्पति-क्षेत्र अपना पूर्ण शुभ फल नहीं करेगा। ऐसा ही अन्य ग्रह-क्षेत्रों (बुध, सूर्य, शनि, शुक्र) के सम्बन्ध में समझना चाहिए। मंगल या चन्द्र-क्षेत्र के ऊपर तो उंगली होती ही नहीं।

गुरु या बृहस्पति-क्षेत्र—बृहस्पति-को ही गुरु कहते हैं। जिस व्यक्ति के हाथ में बृहस्पति-क्षेत्र उच्च हो उसमें महत्वाकांक्षा, अभिमान, उत्साह और हुकूमत करने की इच्छा अधिक मात्रा में होती

है। यदि किसी व्यक्ति के हाथ में गुरु-क्षेत्र बहुत चपटा हो तो उसमें धार्मिक विश्वास, माता-पिता या गुरु-जनों में श्रद्धा नहीं होती। उचित मात्रा में उन्नत होने से धार्मिक विश्वास, प्रकृति-प्रेम, कुछ खुशामदप्रियता, बाहरी तड़क-भड़क या दिखावे की भावना होती है। यदि यह क्षेत्र अधिक उन्नत हो तो हृदय में अहंकार बहुत अधिक होता है। ऐसा व्यक्ति झूठी शान दिखाने के लिए अपव्यय भी बहुत करता है। दूसरो को दबाने में क्रूरता का उपयोग या अहं-भाव के कारण ईर्ष्या-द्वेष, स्वार्थपरता आदि अवगुण भी होते हैं। यदि गुरु-क्षेत्र अति उन्नत हो और उंगलियों के अग्रभाग (१) नुकीले हों तो अन्धविश्वास विशेष होता है, (२) चतुष्कोणाकृति हों तो क्रूरता विशेष होती है। यदि उंगलियाँ लम्बी हों और जोड़ (उंगलियों की गाँठें) निकली हुई न हों और गुरु-क्षेत्र अति उन्नत हो तो ऐसे व्यक्ति बहुत आरामपसन्द, विलासी और खर्चीले होते हैं।

यदि मनुष्य पर बृहस्पति का प्रभाव अधिक हो (जो ग्रह-क्षेत्र की उन्नति और तर्जनी की बलिष्ठता से साबित होगा) तो यह देखना चाहिए कि तर्जनी उंगली का कौनसा पर्व लम्बा है। यदि प्रथम पर्व बड़ा हो तो ऐसा व्यक्ति राजनीतिक, धार्मिक या बौद्धिक (पठन-पाठन, ग्रन्थ-लेखन) क्षेत्र में सफल होगा। यदि द्वितीय पर्व बड़ा और लम्बा हो तो व्यापारिक क्षेत्र में सफलता होगी। खूब धन कमावेगा। यदि तृतीय पर्व बड़ा और पुष्ट हो तो खाने-पीने का शौकीन व विलासी होगा। ऐसे व्यक्ति को अधिक खाने से Apoplexy आदि रोग भी विशेष होते हैं।

शनि-क्षेत्र—यह मध्यमा उंगली के नीचे होता है। इसके स्वाभाविक गुण हैं एकान्तप्रियता, शांति, बुद्धिमत्ता, दूरदर्शिता, परिश्रमशीलता किसी वस्तु का गंभीरतापूर्वक अध्ययन। धार्मिक संगीत या दुःखान्त, गंभीर स्वर वाले संगीत की इच्छा आदि।

यदि किसी हाथ में शनि-क्षेत्र बिलकुल गुणरहित हो (अर्थात्

न ग्रह-क्षेत्र गुणयुक्त हो, न उस पर कोई रेखा हो और न मध्यमा उंगली ही अच्छी, बलिष्ठ और सुन्दर हो) तो उस मनुष्य के जीवन में कोई भी महत्वयुक्त बात नहीं होती। यदि साधारण उन्नत हो तो मनुष्य विचारशील होता है। किसी खतरे के काम में नहीं जाता। ऐसे लोग प्रायः ऐसा काम करते हैं जिसमें परिश्रम अधिक हो पर निश्चित कमाई हो, रुपये में घाटा न लगे। प्रायः ऐसे व्यक्तियों की लम्बी उंगलियाँ हों तो प्रथम तथा द्वितीय पर्व के बीच की गाँठ निकली हुई, गठीली होती है। यदि शनि-क्षेत्र बहुत अधिक उन्नत हो तो मनुष्य पर शनि का प्रभाव अधिक होने से दुःखी, विशेष चिन्तायुक्त, सदैव मृत्यु की बाबत सोचता रहता है। उसमें अविश्वास की मात्रा अधिक होती है। अन्य अशुभ लक्षण होने से आत्महत्या की प्रवृत्ति अधिक होती है।

प्रायः हाथों में शनि-क्षेत्र अति उन्नत दिखाई नहीं देता। किन्तु यदि मध्यमा उंगली बहुत अधिक बड़ी हो (साधारणतः तर्जनी या अनामिका से आधा पर्व लम्बी होती है, यदि इससे भी अधिक लम्बी हो) तो शनि के गुण उस मनुष्य में विशेष होते हैं। यदि मध्यमा विशेष बड़ी और बलिष्ठ हो और अन्य उंगलियाँ मध्यमा उंगली की ओर झुकी हों तो भी शनि-क्षेत्र को बलवान् समझना चाहिए।

सभी ग्रहों के प्रभाव के सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि थोड़ी मात्रा में जो गुण होते हैं वही अधिक मात्रा में अवगुण हो जाते हैं। शनि-क्षेत्र थोड़ा उन्नत हो तो विचारशीलता, मितव्ययता, दूरदर्शिता आदि गुण होते हैं। अधिक मात्रा में उन्नत होने से मनुष्य कंजूस और लोभी हो जाता है। दूसरों के साथ रहना पसन्द नहीं करता, विवाह में रुचि नहीं होती, किसी नये कार्य में उत्साह नहीं होता। यदि हाथ में अन्य अशुभ लक्षण हों तो ऐसे व्यक्ति पाप या जुर्म करने वाले या अन्य दोषयुक्त होते हैं। यदि उंगलियों के प्रथम पर्व लम्बे हों तो ऐसे व्यक्ति गंभीर शास्त्र-अध्ययन करने वाले, गुप्त

विद्याओं के प्रेमी होते हैं। द्वितीय पर्व लम्बा हो तो ज़मीन, रसायन, लोहा या खनिज पदार्थों का व्यापार करते हैं। तृतीय पर्व लम्बा हो तो दुनिया की चालाकी या नीच वृत्ति अधिक होगी।

शनि-क्षेत्र यदि बिगड़ा हो तो स्वास्थ्य की दृष्टि से दाँत या कान की बीमारी, वातरोग, गठिया, नसों का फूल जाना या सख्त हो जाना, हड्डी टूटना, दुर्घटना, दम घुटना या लम्बे समय तक जारी रहने वाली बीमारी होती है।

सूर्य-क्षेत्र—यह अनामिका उंगली के नीचे होता है। यह उन्नत होने से मनुष्य में उत्साह और सौदर्यप्रियता होती है। चाहे मनुष्य कलाकार या संगीतज्ञ न हो किन्तु काव्य-कला और संगीत में उसकी रुचि अवश्य रहती है। ये इस ग्रह-क्षेत्र के साधारण गुण हैं। अब निम्न, साधारण, उच्च या अति उच्च इन तीनों लक्षणों के अलग-अलग फल बताये जाते हैं—

यदि यह क्षेत्र बिलकुल धँसा हुआ हो तो उत्साह-शक्ति कम होती है। कला, काव्य आदि की ओर मन बिलकुल नहीं जाता। न अध्ययन की ओर रुचि होती है। तमाशा देखना, खाना-पीना—बस यही जीवन का ध्येय होता है। बुद्धि प्रखर नहीं होती।

यदि साधारण उच्च हो तो जो गुण प्रारम्भ में बताये गये हैं वही होते हैं। कला, काव्य, सौन्दर्यप्रियता आदि की ओर प्रवृत्ति रहते हुए भी सृजन-शक्ति नहीं होती।

यदि अच्छी प्रकार उच्च हो तो यश, मान, प्रतिष्ठा, धन-संग्रह आदि में सफलता होती है। सौन्दर्यप्रियता विशेष होती है, विवाह की ओर रुचि होते हुए भी या विवाह कर लेने पर भी इन्हें पूर्ण वैवाहिक सुख प्राप्त नहीं होता, क्योंकि इनका आदर्श बहुत ऊँचा होता है। ये लोग आभूषण-प्रेमी होते हैं। धार्मिकता की ओर भी इनकी रुचि होती है। यदि उंगलियों का प्रथम पर्व लम्बा हो तो काव्य या साहित्यकर्ता या कलाकार होते हैं।

यदि बहुत अधिक उच्च हो तो 'अति' मात्रा में गुण भी अवगुण हो जाते हैं। 'अहं' भाव या अभिमान बहुत बढ़ जाता है। इनमें ईर्ष्या, खुशामदप्रियता आदि दुर्गुण होते है। यदि साथ ही अँगूठे का प्रथम पर्व अधिक लम्बा और द्वितीय पर्व छोटा हो, उंगलियाँ टेढ़ी हों तो ये दुर्गुण विशेष मात्रा में होते हैं।

स्वास्थ्य की दृष्टि से नेत्र-विकार, कम दिखाई देना, हृदय-रोग आदि का सूर्य-क्षेत्र से विशेष सम्बन्ध है। यदि शीर्ष-रेखा पर सूर्य-क्षेत्र के नीचे बिन्दु-चिह्न हो तो अन्धापन, यदि हृदय-रेखा द्वीपयुक्त या अन्य दोषयुक्त हो तो हृदय-रोग होता है। यह सब आगे विस्तार-पूर्वक बताया गया है—

बुध-क्षेत्र—यह कनिष्ठिका उंगली के नीचे होता है। इसमें बुद्ध-ग्रह के सब गुण होते हैं यथा, किसी एक स्थान या कार्य से मन उकता जाना और दूसरे नवीन स्थानों पर जाना, यात्रा, या नये लोगों से सम्पर्क स्थापित करना, शीघ्र विचार कर लेने की या बोलने की शक्ति, हाज़िर-जवाबी, मजाक आदि। यदि हाथ में अन्य शुभ लक्षण हों तो ये सब गुण शुभ फल देने वाले होते हैं। यदि अन्य अशुभ लक्षण हों और बुध-क्षेत्र दोषयुक्त हो तो चालाकी, धोखा देना, जालसाज़ी आदि द्वारा मनुष्य अपनी बुद्धि का दुरुप-योग करता है।

यदि बुध क्षेत्र नीचा हो तो हिसाब-किताब, वैज्ञानिक कार्य या किसी ऐसे व्यापारिक कार्य में भी मनुष्य की तबियत नहीं लगती जिसमें हिसाब-किताब की विशेष आवश्यकता हो।

यदि साधारण उच्च हो तो ऐसा मनुष्य सुन्दर वक्ता, व्यापारिक चतुरतायुक्त, बुद्धिमान, शीघ्र कार्य करने वाला, यात्रा-प्रेमी होता है। उसमें नवीन आविष्कारक बुद्धि भी विशेष होती है। यदि उंगलियों के अग्रभाग (१) नुकीले हों तो बहुत सुन्दर वक्तृत्व-शक्ति होती है, (२) चतुष्कोणाकृति हों तो तर्क-शक्ति बलवान् होती है।

(३) यदि आगे से फैली हुई हों तो उसकी जिरह या दलील बहुत प्रभावयुक्त होती है।

जिनका बुध-क्षेत्र उच्च होता है वे हास्यप्रिय, गोष्ठी पसन्द करने वाले होते हैं। यदि बुध-क्षेत्र चिकना और रेखा-रहित हो तो ऐसे व्यक्ति जिस काम को प्रारम्भ करते हैं उसे अन्त तक पूरा करते हैं। यदि बुध-क्षेत्र अति उच्च हो तो मनुष्य को जितना ज्ञान होता है उससे कहीं अधिक विद्वान् होने का ढोंग करता है। ऐसे लोगों में धोखा देना या फ़रेब की प्रवृत्ति भी होती है। कनिष्ठिका उंगली टेढ़ी होने से बेईमानी की पुष्टि होती है।

यदि बुध क्षेत्र पर तीन खड़ी रेखा हों और क्षेत्र साधारण उन्नत हो तो मनुष्य कुशल डॉक्टर या वैद्य हो सकता है। यदि कनिष्ठिका उंगली का प्रथम पर्व लम्बा और नाखून छोटे हों तो ऐसा व्यक्ति सफल वकील हो सकता है। यदि यह उंगली नुकीली भी हो तो ऐसा व्यक्ति सुन्दर वक्ता होता है। यदि द्वितीय पर्व लम्बा हो तो कुशल वैज्ञानिक या डॉक्टर हो सकता है। यदि तृतीय पर्व लम्बा हो तो व्यापार द्वारा विशेष धन कमा सकता है।

बुध-क्षेत्र का स्नायु-विकार, पित्तज रोग, उदर-विकार, यकृत रोग, मन्दाग्नि आदि से विशेष सम्बन्ध है।

मंगल-क्षेत्र—मंगल के दो क्षेत्र होते हैं। एक चन्द्र-क्षेत्र और बुध-क्षेत्र के बीच में और दूसरा बृहस्पति-क्षेत्र के नीचे जहाँ से जीवन-रेखा प्रारम्भ होती है। यह दूसरा क्षेत्र जीवन-रेखा के अन्दर शुक्र-क्षेत्र की समाप्ति पर होता है।

मंगल का साधारण गुण है साहस, बल, लड़ाई की शक्ति, प्रवृत्ति आदि। ये सब गुण मंगल के प्रथम क्षेत्र से विचार करने चाहिये। जिनका यह क्षेत्र उच्च हो वे साहसी होंगे, लड़ाई करेंगे और दबेंगे नही। यह प्रायः अनुभव-सिद्ध है कि बल-प्रयोग व साहस आदि का संसार में सदुपयोग भी होता है, दुरुपयोग भी। यदि हाथ

ग्रह-क्षेत्र

चित्र नं० १२
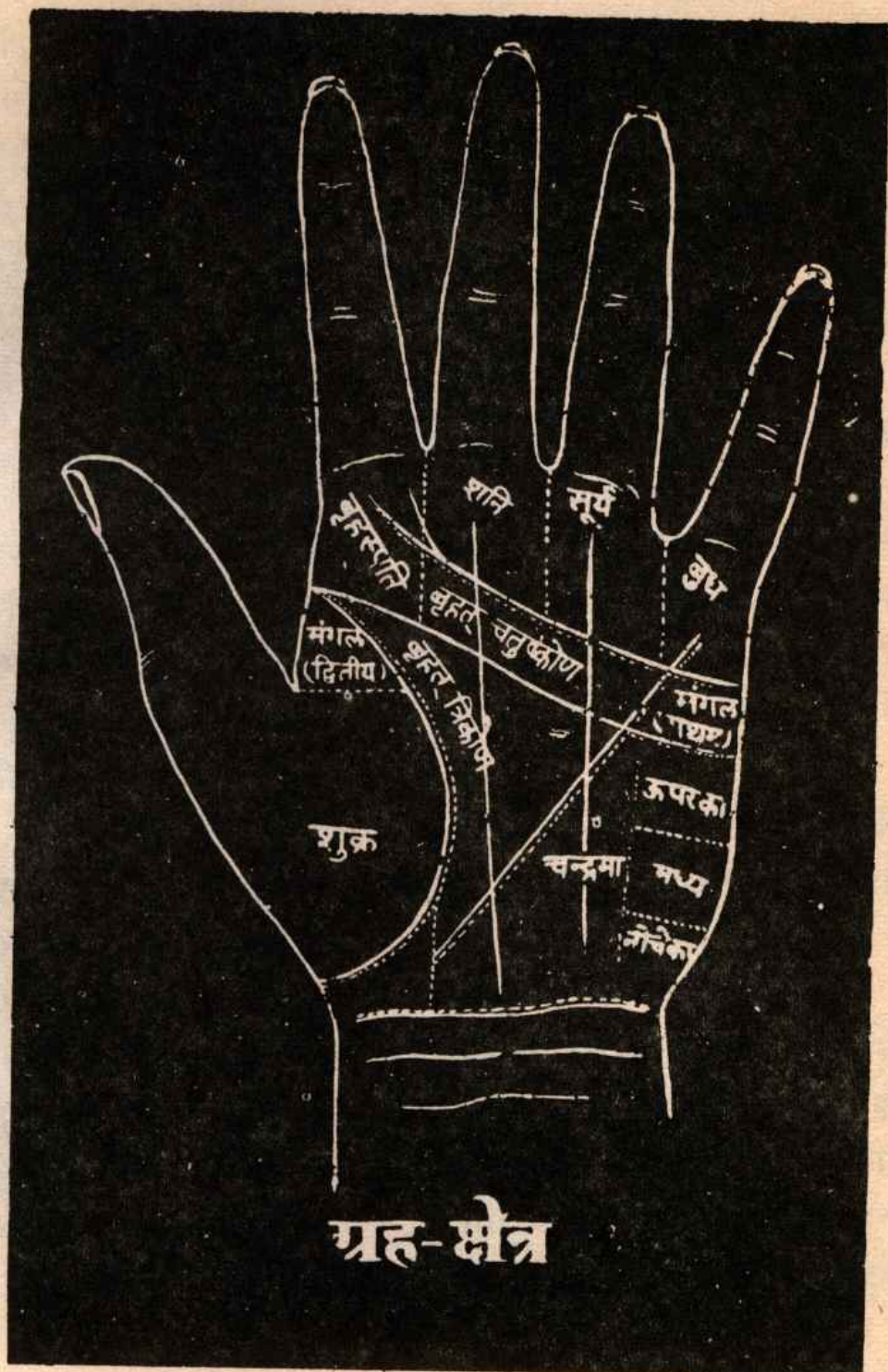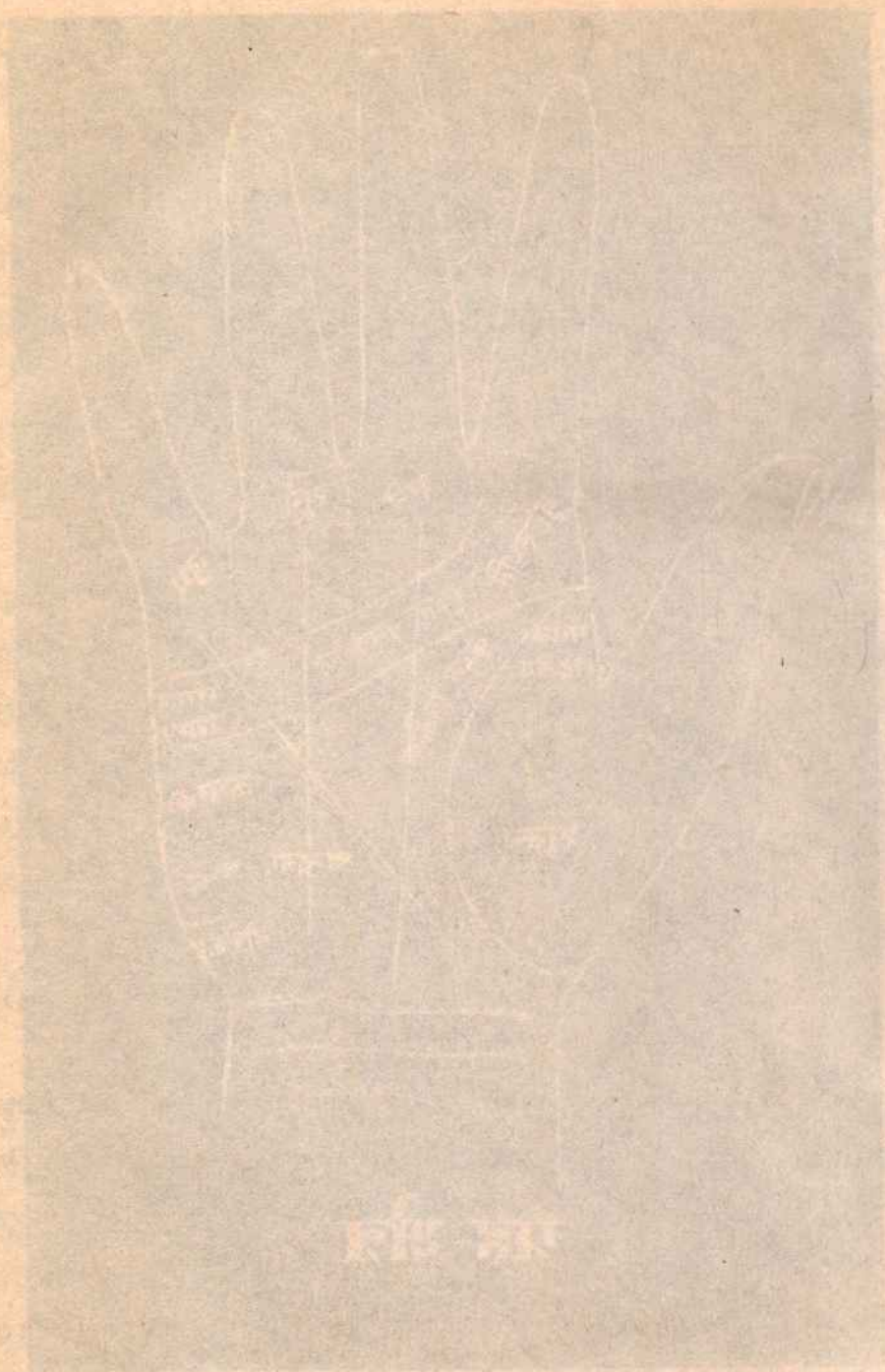
में अन्य लक्षण अच्छे हों तो ऐसा व्यक्ति फ़ौज में या जहाँ साहस की आवश्यकता हो ऐसे उच्च पद में सफल हो सकता है। इसके विपरीत यदि अन्य अशुभ लक्षण हों तो ऐसा व्यक्ति डाकू, लूट-मार करने वाला भी हो सकता है। यदि यह दबा हुआ हो तो मनुष्य कायर होता है। बहुत दबा हुआ होना जिस प्रकार दुर्गुण है उस प्रकार अत्यन्त ऊँचा होना भी दोषयुक्त है। वैसा होने से दुस्साहस, अत्याचार करने की प्रवृत्ति, क्रूरता आदि होती है।

'साहस' का यदि विश्लेषण किया जावे तो दो प्रकार का होता है—(१) जिसके होने से मनुष्य दूसरे पर आक्रमण करता है, (२) जिसके कारण यदि कोई दूसरा आक्रमण करे तो मनुष्य बलपूर्वक अपनी रक्षा करता है। प्रथम प्रकार का साहस मंगल के प्रथम क्षेत्र से देखना चाहिए। दूसरे प्रकार का साहस अर्थात् अपनी रक्षा करने की क्षमता, धैर्य, आत्म-संयम आदि गुण मंगल के द्वितीय क्षेत्र से देखने चाहियें।

मंगल-क्षेत्र उच्च होने से खून में जोश जल्दी आता है। यदि अन्य रोग-चिह्न हों तो रक्तचाप-वृद्धि (blood pressure), मूर्च्छा (apoplexy) चर्म-विकार, रक्त-विकार आदि रोग होते हैं। पेट में शोथ भी होता है।

चन्द्र-क्षेत्र—दाहिने हाथ में (नीचे की ओर) हथेली का बायाँ किनारा चन्द्र-क्षेत्र होता है। बायें हाथ में यह भाग हथेली की दाहिनी ओर वाला नीचे का भाग होता है। चन्द्र-क्षेत्र का कल्पना, सौन्दर्यप्रियता, आदर्शवाद, काव्य, साहित्य आदि से विशेष सम्बन्ध है। यह समझ लेना चाहिये कि 'कल्पना' किसे कहते हैं। बुद्धि अत्यन्त सूक्ष्म और उच्च कोटि की होने पर भी मनुष्य कल्पना के बिना कवि नहीं हो सकता। कल्पना है 'ख़याली दुनिया' जिसमें हमारा दिमाग़ उड़ता रहता है। कल्पना के आधार पर ही कुशल चित्रकार अपनी सूझ से ऐसा दृश्य बनाता है जैसा कि न कहीं उसने

देखा हो न सुना। कल्पना के आधार पर ही हज़ारों वर्ष पहले हुई घटना के मामूली से ढाँचे पर लेखक हज़ारों पृष्ठ का सुन्दर और रोचक उपन्यास लिख देते हैं। कल्पना के आधार पर ही 'सट्टा' करते हैं।

जिनके हाथ में चन्द्र-क्षेत्र दबा हुआ हो उनमें कल्पना, मन की विशेष स्फूर्ति, नये आविष्कार या सूझ के विचार नहीं होते। जिनके हाथ में यह उच्च हो वे काव्य, कला, कल्पना, संगीत, साहित्य आदि में सफल होते हैं। शरीर से आलसी अर्थात् एक ही जगह पड़े रहेंगे, पर उनका मन सारे संसार में घूम आवेगा और हज़ारों ख़याली दृश्य बना लेगा।

अन्य गुणों के साथ कल्पना का होना सहायक होता है किन्तु यदि अन्य गुण न हों, केवल बुद्धिहीनता हो तो कल्पना होने से मनुष्य शेखचिल्ली की तरह ख़याली मनसूबे बाँधता रहता है।

यदि यह भाग साधारण उच्च हो और मध्य का तृतीयांश विशेष फूला हुआ हो तो अन्तड़ियों की बीमारी व पाचन-शक्ति की कमी होती है। यदि ऊपर का तिहाई हिस्सा अधिक ऊँचा हो तो गठिया, पित्त, कफ़ आदि के रोग होते हैं।

सारा भाग अत्युच्च हो और स्वास्थ्य के अन्य लक्षण अच्छे न हों तो चिड़चिड़ापन, दुःखी मनोवृत्ति, पागलपन, सिर-दर्द आदि के रोग होते हैं।

यदि यह क्षेत्र ऊँचा न हो बल्कि लम्बा और सकड़ा हो तो शान्तिप्रियता, एकांतवास, ध्यान में मन लगाना, नवीन कार्य में उत्साह न होना आदि होते हैं।

शुक्र-क्षेत्र—अँगूठे के नीचे जीवन-रेखा का भीतरी भाग शुक्र-क्षेत्र होता है। शुक्र-क्षेत्र का साधारण उच्च होना गुण है। शुक्र-क्षेत्र से स्वास्थ्य, सौन्दर्यप्रियता, कामवासना, सन्तानोत्पादन-शक्ति, संगीतप्रियता, दया, सहानुभूति आदि का विचार किया जाता है।

यदि किसी हाथ में यह भाग उठा हुआ न हो तो ऐसे व्यक्ति में उपर्युक्त गुण कम मात्रा में होते हैं। साधारण उठा हुआ हो तो उपर्युक्त सब गुण होते है। अति उच्च होने से मनुष्य कामी, व्यभिचारी तथा अत्यन्त विलासी हो जाता है।

उपर्युक्त गुण सीमा के अन्दर रहेंगे या सीमा को अतिक्रान्त कर अवगुण हो जावेंगे यह निश्चय करने के लिये हाथ के अन्य लक्षणों को भी देखना चाहिए। उदाहरण के लिए 'कामुकता' (कामवासना) अधिक होने पर भी यदि अँगूठे का प्रथम पर्व बलिष्ठ है और शीर्ष-रेखा लम्बी और सुन्दर है तो मनुष्य आत्मसंयमी होगा, व्यभिचार के रास्ते नहीं जावेगा। किन्तु यदि किसी स्त्री के हाथ में शुक्र-क्षेत्र बहुत ऊँचा हो, बृहस्पति तथा सूर्य का क्षेत्र दबा हो, हृदय-रेखा में बहुत से द्वीप-चिह्न हों, शीर्ष-रेखा छोटी और कमज़ोर हो, अँगुष्ठ का प्रथम पर्व छोटा, पतला और कमज़ोर हो तो वह शीघ्र पथभ्रष्ट हो जावेगी।

यदि शुक्र-क्षेत्र बड़ा और ऊँचा हो तो सन्तानोत्पादन-शक्ति अच्छी होती है। यदि बहुत धँसा हुआ या सकड़ा हो तो यह शक्ति कम होती है। यह स्थान दोषयुक्त हो और अन्य रोग-लक्षण हों तो जननेन्द्रिय-सम्बन्धी रोग होते हैं।

ऊपर संक्षेप में भिन्न-भिन्न ग्रह-क्षेत्रों के लक्षण और फल बताये गये हैं। किसी हाथ में एक, किसी में दो, किसी में तीन ग्रह-क्षेत्र उच्च रहते हैं। इसलिये अलग-अलग फलों का मिलान कर, परिणाम में जो फल आवे वह कहना चाहिये।

९वाँ प्रकरण

करतल (हथेली)-लक्षण

जिसका करतल (हथेली) नीचा हो (अर्थात् हथेली की चारों ओर की सीमाओं का भाग ऊँचा हो, इस कारण बीच का भाग नीचा होगा) तो उसको अपने पिता का रुपया मिलता है। पिता के सौभाग्यशाली होने से ही पिता का द्रव्य मिल सकता है। इसलिये निम्न (नीचा) करतल होने से धनिक घर में जन्म प्रकट होता है। यदि बीच का भाग उठा हुआ हो तो मनुष्य दाता (दूसरों को धन देने में उदार) होता है। यदि करतल का मध्य भाग ऊँचा-नीचा हो तो मनुष्य क्रूर और दरिद्र होता है। यदि हथेली का रंग लाख की तरह ललाई लिये हुए हो तो यह ऐश्वर्य का लक्षण समझना चाहिए। करतल का चिकना और चमकदार होना धनवान होने का लक्षण है और रूखा तथा आभा से रहित होना दरिद्रता का लक्षण है। जिनकी हथेली का रंग नीला या काला, धब्बेदार हो वे मदिरापान करने वाले या पीलापन लिये हो तो व्यभिचारी होते हैं—

"करतलैर्देवशार्दूल लाक्षाभैरीश्वराः स्मृताः।
अगम्यागामिनः पीतै रूक्षैर्निर्धनता स्मृता॥
अपेयपानं कुर्वन्ति नीलकृष्णैस्तथैव च॥"

'सामुद्रतिलक' में लिखा है कि यदि मनुष्य का हाथ रेखा-हीन हो (अर्थात् ऊर्ध्व रेखा आदि न हों) या बहुत-सी पतली-पतली रेखाओं से भरा हो तो मनुष्य निर्धन और दुःखी होता है। 'विवेक-विलास' के अनुसार भी हथेली का मध्यभाग नीचा होने से धनी और ऊँचा-नीचा होने से निर्धन होता है।

हाथ की लम्बाई

हथेली सात अँगुल लम्बी होनी चाहिए। मणिबन्ध की प्रथम रेखा से हथेली का प्रारम्भ होता है और मध्यमा उंगली की जड़ पर इसका अन्त। यह हिस्सा सात अँगुल का उसी आदमी की उंगली से होना चाहिए। चारों उंगलियाँ बराबर चौड़ी नहीं होतीं इस कारण मध्यमा उंगली का मध्य पर्व जितना चौड़ा हो उसे एक अँगुल मानना उचित है। उंगलियों की लम्बाई मध्यमा उंगली की जड़ से मध्यमा उंगली के अन्त तक होती है। यह लम्बाई पाँच अँगुल होना श्रेष्ठ है। इस प्रकार मणिबन्ध से मध्यमा उंगली के अन्त तक १२ अँगुल होनी चाहिये। कोहनी से ऊपर बाहू का भाग जितना हो उसका दो-तिहाई मणिबन्ध से बीच की उंगली के अन्त तक होना श्रेष्ठ है। और कोहनी से मणिबन्ध तक जितनी लम्बाई हो उसकी तीन-चौथाई लम्बाई उंगलियों सहित हथेली की होना उत्तम है। उदाहरण के लिए बाहुमूल अर्थात् कन्धे से बीच की उंगली के अंत तक यदि ४६ अँगुल लम्बाई हो तो १८ अँगुल भुजा ऊपर भाग, १६ अँगुल कोहनी से पहुँचे तक, ७ अंगुल हथेली का और ५ अँगुल लम्बी बीच की उंगली होनी चाहिए।

पाश्चात्य हस्तरेखा-विचार में हथेली को ग्रह-क्षेत्रों तथा करतल-मध्य इन भागों में बाँट कर पृथक्-पृथक् विचार किया गया है। ग्रह-क्षेत्रों का विचार पिछले प्रकरण में किया गया है। अब करतल-मध्य का विचार किया जावेगा।

करतल-मध्य

हाथ के मोटे तौर पर दो विभाग होते हैं—एक हथेली और दूसरा उंगलियाँ और अँगूठा। हथेली के दस भाग हैं—६ तो सूर्य, चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शुक्र-शनि के क्षेत्र, २ क्षेत्र मंगल के और करतल-मध्य अर्थात् हथेली का मध्य भाग जो गड्ढेदार (अर्थात् चारों ओर के

क्षेत्रों से) नीचा होता है। इस करतल मध्य-भाग को भी अध्ययन की दृष्टि से दो भागों में विभक्त किया गया है—

प्रथम भाग—(१) जीवन-रेखा, शीर्ष-रेखा तथा स्वास्थ्य-रेखा के बीच का भाग। जिन हाथों में स्वास्थ्य-रेखा न हो उनमें कल्पित सीमा उस स्थान तक मान ली जाती है जहाँ पर स्वास्थ्य-रेखा का स्थान होता है।

द्वितीय भाग—(२) शीर्ष-रेखा और हृदय-रेखा के बीच का स्थान, दोनों ही करतल-मध्य भाग हैं। परन्तु बहुत-सी हस्तरेखा की पुस्तकों में प्रथम—करतल-मध्य भाग को बृहत् त्रिकोण (तीन रेखा तीन ओर होने से त्रिकोण के आकार का यह भाग बन जाता है) और द्वितीय—करतलमध्य भाग को बृहत् चतुष्कोण (शीर्ष-रेखा और हृदय-रेखा के बीच का भाग बड़ा चतुष्कोण के आकार का बन जाता है) कहते हैं।

बृहत् त्रिकोण में यदि स्वास्थ्य-रेखा हुई तो तीन रेखाओं से वेष्टित यह भाग होगा अन्यथा बृहत् त्रिकोण की जीवन-रेखा और शीर्ष-रेखा ये दो भुजा होंगी। तीसरी, स्वास्थ्य-रेखा स्थानीय कल्पित रेखा होगी।

बृहत् चतुष्कोण में शीर्ष-रेखा और हृदय-रेखा की दो आमने-सामने की रेखा होती हैं। यदि स्वास्थ्य-रेखा हो तो वह तीसरी भुजा समझी जावेगी अन्यथा स्वास्थ्य-रेखा वहाँ कल्पित-रेखा समझनी चाहिये। चौथी ओर कोई रेखा नहीं होती—बृहस्पति का क्षेत्र जहाँ प्रारम्भ हो वहीं तक इसकी सीमा समझी जाती है। हस्तपरीक्षा करते समय करतल-मध्य को अँगूठे से दबाकर देखना चाहिए कि यह भाग मोटा या पतला, मुलायम या सख्त है। यहाँ मुख्य ध्येय ऊपरी चमड़े की चिकनाई देखना नहीं है, परीक्षा करनी है माँसलता और कठोरता की।

(१) यदि यह भाग माँसल और बहुत कठोर (सख्त) हो तो मनुष्य बहुत क्रूर प्रकृति का होगा।

(२) यदि माँसल और साधारण सख्त हो तो प्रकृति में कुछ कठोरता अवश्य होगी किन्तु ईमानदारी आदि गुण भी होंगे।

(३) यदि माँसल और कम कठोर हो तो ऐसा व्यक्ति परिश्रमी होता है। उसमें प्रेम की भावना होती है किन्तु बहुत विलासी प्रकृति नहीं होती।

(४) माँसल और साधारण मुलायम हो तो सुख-भोग, विलासिता की प्रवृत्ति होती है, किन्तु सीमा के भीतर।

(५) माँसल और कुछ अधिक मुलायम हो तो ऐसा व्यक्ति सुस्त और अत्यन्त विलासी प्रकृति का होता है। बुद्धि और कल्पना अच्छी होती है। कुशल चित्रकार, कलाकार या गायक के लिए ऐसा होना अच्छा है परन्तु साधारणतः कामवासना अधिक होने से दोष भी आ जाते हैं। आलस्य बहुत होता है।

(६) माँसल और अत्यधिक मुलायम हो तो मनुष्य बिलकुल परिश्रमी नहीं होता। अत्यन्त आलसी, विलासी प्रकृति का, शिथिल अपनी वासनाओं के सम्बन्ध में विचार करते रहना, यही उसका कार्य होता है।

(७) यदि यह भाग पतला, माँसहीन (बहुत कम माँस वाला) और बहुत सख्त हो तो प्रेम का अभाव, क्रूरता, इरादे का पक्का होना; अन्य लक्षण अच्छे न हों तो जुर्म करने वाला होता है।

(८) यदि यह भाग माँसहीन (पतला) और सख्त हो तो स्वार्थी, लोभी और क्षुद्र प्रकृति का होता है।

(९) यदि माँसहीन (पतला), सकड़ा और विशेष विस्तृत न हो तो ऐसा व्यक्ति कमज़ोर चित्त का, शीघ्र किसी निर्णय पर न पहुँचने वाला, होता है।

(१०) माँसहीन (पतला) और मुलायम हो तो शरीर दृढ़ नहीं

होता, चरित्र में चंचलता होती है। वासना-पूर्ति के लिए आदर्श रक्षा का विचार नहीं होता।

(११) यदि माँसहीन (पतला) और बहुत मुलायम हो तो चरित्र अच्छा नहीं होता या दुःखी प्रकृति का होता है। यदि हाथ में अन्य लक्षण उत्तम हों तो अवगुणकारक नहीं है। ऐसे व्यक्तियों में स्फूर्ति और दूसरों के मन की बात समझ जाने की विशेष बुद्धि होती है।

(१२) यदि भाग ऐसा पारदर्शी हो कि हाथ के भीतर के भाग की भी कुछ कुछ झलक दिखाई दे तो अच्छे लक्षणयुक्त हाथों में धार्मिकता आदि गुण किन्तु निकृष्ट कोटि के हाथों में कल्पना का मूर्खता की ओर झुकाव समझना चाहिए।

ऊपर माँसलता तथा माँसहीनता एवं कठोरता या मृदुता के अनुसार फल बताये गये है। अब यह भाग चपटा है या गड्ढेदार (नीचे धँसा हुआ), इन लक्षणों के अनुसार फल बताये जाते हैं—

(१) यदि करतल-मध्य चपटा किन्तु ऊँचा हो (अर्थात् सूर्य और शनि के क्षेत्र जितने ऊँचे हों उतना ही ऊँचा हो) तो ऐसा व्यक्ति बहुत अभिमानी होता है, उसमें घमंड की मात्रा अधिक होने से वह किसी से दबता नहीं। प्रकृति में क्रूरता भी होती है।

(२) यदि करतल-मध्य चपटा और नीचा हो तो डरपोक स्वभाव, भीरुता, निरुद्देश्य जीवन का लक्षण है। कोई महत्वाकांक्षा, उच्च अभिलाषा या उसकी प्राप्ति के लिए तत्परता नहीं होती।

(३) साधारण नीचा (गड्ढेदार) हो तो यह स्वाभाविक स्थिति है।

(४) यदि बहुत गड्ढेदार हो (खासकर जीवन-रेखा की ओर अधिक गहरा हो) तो पारिवारिक जीवन कष्टमय होता है। घरेलू झगड़े बहुत रहते हैं। यदि शीर्ष-रेखा की ओर विशेष गढ्ढेदार या नीचा हो तो मस्तिष्क-संबंधी बीमारी, मूर्च्छा रोग आदि। यदि

हृदय-रेखा की ओर विशेष नीचा या दबा हुआ हो तो 'हृदय' की दुर्बलता या प्रेम में निराशा का लक्षण है। यदि चन्द्र-क्षेत्र की ओर विशेष नीचा या दबा हुआ हो तो पेट की बीमारी (स्त्रियों के हाथ में गर्भाशय-सम्बन्धी रोग भी), स्नायुओं की दुर्बलता का लक्षण है।

(५) अधिक नीचा या गड्ढेदार होना जीवन में असफलता, भाग्यहानि प्रकट करता है। ऐसा व्यक्ति उद्योगी नहीं होता या उसके उद्योग सफल नहीं होते।

करतल-मध्य गढ्ढेदार अधिक है या कम यह निर्णय करते समय यह ध्यान अवश्य रखना चाहिए कि ग्रह-क्षेत्रों के अत्यधिक उन्नत होने से स्वाभाविक करतल-मध्य भी गड्ढेदार तो प्रतीत नहीं हो रहा है ? यदि ग्रह-क्षेत्र उन्नत हों तो उनका फल उत्तम होगा और करतल-मध्य वास्तव में नीचा न हो, केवल अत्यधिक उन्नत ग्रह-क्षेत्रों के कारण नीचा मालूम होता हो तो उसे भ्रम से गड्ढेदार समझकर अनिष्ट लक्षण नहीं समझना चाहिए।

बृहत् त्रिकोण

करतल-मध्य के साधारण लक्षण दिये जा चुके हैं। ये बृहत् त्रिकोण तथा बृहत् चतुष्कोण दोनों भागों में लागू होते हैं। अब बृहत् त्रिकोण के सम्बन्ध में कुछ बातें विस्तार से बताई जाती हैं—

(१) यदि यह दोनों हाथों में उन्नत हो या ऊपर की ओर कुछ उठा हुआ हो तो ऐसा व्यक्ति खर्चीला, बहुत व्यय करने वाला होता है। यदि केवल एक ही हाथ में उपर्युक्त लक्षण हो तो वीरता, उदारता आदि गुण होते हैं।

चित्र नं० १४

(२) यदि शीर्ष-रेखा और जीवन-रेखा की भाँति स्वास्थ्य-रेखा

भी सुन्दर और पूरी हो और बृहत् त्रिकोण की तीनों भुजाएँ सुस्पष्ट दिखाई दें तो ऐसे व्यक्ति सुस्थिर और दयालु प्रकृति के होते हैं। यदि यह तीन ओर से घिरा हुआ स्थान काफी बड़ा हो तो जातक में साहस होता है; वह दीर्घायु और भाग्यवान भी होता है। हाथों में अधिक उष्णता या अत्यधिक ललाई अच्छे स्वास्थ्य का चिह्न नहीं समझना चाहिए। इस बृहत् त्रिकोण की तीनों भुजाओं (शीर्ष-रेखा, जीवन-रेखा और स्वास्थ्य-रेखा) का सुस्पष्ट होना बुद्धिमत्ता का लक्षण है।

(३) यदि यह त्रिकोण स्थान बहुत विस्तृत हो और मंगल का प्रथम क्षेत्र भी बहुत उन्नत हो तो दुस्साहस और मुँहजोरी होती है।

(४) यदि उपर्युक्त (३) में जो लक्षण बताये गये हैं उससे विपरीत लक्षण हों अर्थात् यह स्थान बहुत छोटा हो और मंगल-क्षेत्र भी दबा हुआ हो तो जातक में साहस की कमी होती है। प्रकृति में क्षुद्रता भी होती है।

(५) यदि यह बिलकुल चपटा हो और शनि-क्षेत्र भी दबा हुआ हो और उस पर (शनि-क्षेत्र पर) कोई रेखा या शुभ-चिह्न न हो तो जातक का जीवन प्रभावयुक्त नहीं होता। साधारण नगण्य जीवन रहता है।

(६) यदि बहुत अधिक दबा हो तो प्रकृति में अनुदारता, कंजूसी, क्षुद्रता आदि अवगुण होते हैं। ऐसे व्यक्ति को अन्य लोग पसन्द नहीं करते।

(७) यदि उपर्युक्त (६) के लक्षण हों और चन्द्र-क्षेत्र अधिक उन्नत हो तथा मणिबन्ध में एक ही रेखा हो तो स्नायु-दुर्बलता के कारण मूर्च्छा रोग होने का भय रहता है।

(८) यदि दोनों हाथों में यह भाग बहुत नीचा हो और हृदय-रेखा छोटी और चौड़ी हो तो मनुष्य आलसी होता है।

(९) यदि शीर्ष-रेखा भद्दी और कमज़ोर हो और नीचे की ओर इस प्रकार जावे कि त्रिकोण का स्थान बहुत छोटा हो जावे, स्वास्थ्य-रेखा भी अच्छी न हो तो व्यापार में असफलता होती है। (देखिये चित्र नं० १५)

(१०) यदि यह स्थान मुलायम, भारी और पीलापन लिये हो, उंगलियाँ छोटी और मोटी हों, उंगलियों के तृतीय पर्व फूले हुए हों; अँगुष्ठ बहुत छोटा हो तो सांसारिक सुख-भोग ही जीवन का उद्देश्य होता है।

(११) यदि शीर्ष तथा स्वास्थ्य-रेखा गोलाईदार हों जिस कारण यह स्थान छोटा हो तो कायरता, क्षुद्रता, कंजूसी का लक्षण है।

चित्र नं० १५

(१२) यदि हथेली की जिल्द सख्त और खुरदरी हो तो ऐसा व्यक्ति परिश्रमी होता है।

(१३) यदि त्रिकोण बड़ा और उन्नत न हो और हृदय-रेखा मंगल के प्रथम क्षेत्र के ऊपर से जाती हुई हथेली के बाहर तक चली जावे तो मनुष्य बहुत कंजूस होता है।

(१४) यदि इस स्थान पर बहुत सी बारीक-बारीक रेखा हों, और मंगल का प्रथम क्षेत्र तथा बुध का क्षेत्र भी उन्नत हो तो तबीयत में बेसब्री, जल्दबाज़ी, चिंता करने की आदत होती है। ऐसे व्यक्ति को क्रोध भी जल्दी आ जाता है। यदि बृहस्पति-क्षेत्र अधिक उन्नत हो तो घमंड की मात्रा अधिक होती है। मनुष्य बिना कारण भी समझ लेता है कि उसका अपमान किया गया है।

(१५) यदि त्रिकोण सुन्दर और विस्तीर्ण हो और हृदय-रेखा अंत में द्विशाखायुक्त हो तो उदारता का लक्षण है।

यह सदैव स्मरण रखना चाहिए कि हृदय-रेखा खंडित या

शाखाहीन हो तो मनुष्य कठोर प्रकृति का होता है।

ऊपर वृहत् त्रिकोण के सामान्य लक्षण बताये गये हैं। यह बताया जा चुका है कि इसकी तीन भुजाएँ—शीर्ष-रेखा, जीवन-रेखा और स्वास्थ्य-रेखाएँ हैं। इन्ही तीन से तीन कोण भी बनते हैं।

अब शीर्ष-रेखा और जीवन-रेखा के मिलने से जो कोण बनता है उसका विचार किया जाता है। इसे प्रथम कोण समझना चाहिए—

प्रथम कोण

(१) यदि यह न्यून कोण केवल २० या २५ डिग्री का ही बनता हो और सुन्दर रीति से बना हो (अर्थात् जीवन-रेखा और शीर्ष-रेखा मिली हों) तो बुद्धिमत्ता और दूरदर्शिता का लक्षण है।

चित्र नं० १६

(२) यदि यह कोण केवल १०-१५ डिग्री का ही बने तो मनुष्य बहुत बुद्धिमान किन्तु ईर्ष्या करने वाला क्रूर प्रकृति का होता है। यदि जीवन-रेखा और शीर्ष-रेखा प्रारम्भ में दूर तक जुड़ी हुई हों तो साहस की कमी होती है।

(३) यदि कोण चौड़ा, करीब ६०-६५ डिग्री का हो और शीर्ष-रेखा छोटी हो तथा स्वास्थ्य-रेखा तक न जावे तो बुद्धि की कमी और गँवारपन होता है। यदि शीर्ष-रेखा लम्बी हो तो ऐसा व्यक्ति दूसरो की परवाह नहीं करता, सदैव कंजूसी करता है। उसे सदैव यह चिन्ता रहती है कि भविष्य में पैसे की दिक्कत न हो।

(४) यदि शीर्ष-रेखा जीवन-रेखा से मिली न हो तो मनुष्य भविष्य का विचार न कर जिस ओर प्रवृत्ति हुई, काम में लग जाता है। यदि शीर्ष-रेखा और जीवन-रेखा के बीच में अधिक अन्तर हो तो दुस्साहस या अदूरदर्शिता अधिक होती है।

द्वितीय कोण

(१) दूसरा कोण शीर्ष-रेखा और स्वास्थ्य-रेखा के योग से बनता है। यदि दोनों रेखा सुन्दर हों और कोण भी अच्छी प्रकार बने तो दीर्घायु का लक्षण है।

चित्र नं० १७

(२) यदि यह कोण करीब ८५-९० डिग्री का हो और हृदय-रेखा अच्छी न हो तथा हृदय-रेखा और शीर्ष-रेखा के बीच का स्थान चौड़ा न हो तो स्वभाव में उदारता नहीं होती।
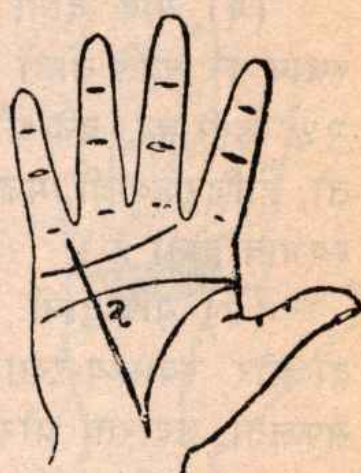
(३) यदि यह कोण केवल ४०-४५ डिग्री का हो तो अस्वास्थ्य तथा चिड़चिड़ापन होता है।

(४) यदि यह कोण ९०° से अधिक हो तो स्नायु-शक्ति निर्बल होने से चित्त में बेचैनी रहती है।

(५) यदि स्वास्थ्य-रेखा और शीर्ष-रेखा का योग चन्द्र-क्षेत्र पर होता हो तो मिर्गी या कफ़ के रोग होते हैं। यदि शीर्ष-रेखा बलिष्ठ न हो और चन्द्र-क्षेत्र बहु-रेखायुक्त हो तो लकवे का अंदेशा; यदि हृदय-रेखा कमज़ोर हो तथा शनि-क्षेत्र पर तारे का चिह्न हो तो मूर्च्छा रोग।

यदि किसी बच्चे के हाथ में यह कोण अच्छा न हो तो उसकी पढ़ाई पर विशेष ज़ोर नहीं देना चाहिये, स्वास्थ्य की ओर विशेष ध्यान की आवश्यकता है।

तृतीय कोण

(१) प्रायः स्वास्थ्य-रेखा जीवन-रेखा का स्पर्श नहीं करती इस कारण यह कोण पूरी तौर से नहीं बन पाता है। यदि दोनों रेखाओं के बीच कुछ स्थान खुला रहे तो अच्छा ही है। स्वास्थ्य का लक्षण है।

चित्र नं० १८

(२) यदि दोनों रेखाओं में मिलने के स्थान पर बहुत थोड़ा अन्तर हो, कोण २०-२५ डिग्री का बने और बुध-क्षेत्र उन्नत हो तो, हाज़िरजवाबी, मज़ाकिया बात करने का स्वभाव होता है।

(३) यदि दोनों रेखाओं के मिलने के स्थान पर काफ़ी अन्तर हो और स्वास्थ्य-रेखा बुध-क्षेत्र के ऊपर जावे तो व्यापार में सफलता, उदारता और दीर्घायु का लक्षण है।

(४) यदि उपर्युक्त (३) के लक्षण हों किन्तु स्वास्थ्य-रेखा बुध-क्षेत्र पर न जावे, अँगुष्ठ का प्रथम पर्व कमज़ोर हो, शुक्र-क्षेत्र बहुत उन्नत हो तो प्रायः चरित्रहीनता का लक्षण है।

(५) स्वास्थ्य तथा जीवन-रेखाएँ छोटी-छोटी रेखाओं से आड़ी, कटी और कमज़ोर हों तो सिर-दर्द या स्नायु-पीड़ा होती है।

(६) यदि जीवन-रेखा और स्वास्थ्य-रेखा खंडित हों तो मनुष्य सुस्त और निकम्मा होता है और उसकी प्रकृति में भी दुष्टता होती है।

बृहत् त्रिकोण का वर्णन समाप्त हुआ। इस पर विविध चिह्नों का फल तृतीय भाग में दिया गया है।

बृहत् चतुष्कोण या शीर्ष-रेखा और हृदय-रेखा के बीच का भाग

वास्तव में यह भी करतल-मध्य भाग ही है। अध्ययन की सुविधा

के विचार से करतल-मध्य को दो भागों में विभक्त कर दिया गया है—एक त्रिकोण और एक चतुष्कोण। दोनों का सम्मिलित वर्णन पहले दिया जा चुका है। बृहत् त्रिकोण वाले भाग का वर्णन भी ऊपर दिया गया है अब चतुष्कोण—अर्थात् शीर्ष-रेखा और हृदय-रेखा के बीच के भाग—का वर्णन किया जाता है।

इस स्थान के ऊपर और नीचे तो उपर्युक्त दो रेखा होती ही हैं। तीसरी ओर बृहस्पति-क्षेत्र तक इसकी सीमा होती है; और चौथी ओर मंगल के प्रथम क्षेत्र तक। इन दोनों क्षेत्रों का जहाँ ज़रा-सा भी प्रारम्भ हो वहीं तक इस बृहत् चतुष्कोण की सीमा समझनी चाहिए। (देखिए चित्र नं० १६)

चित्र नं० १६

(१) यदि यह भाग सुन्दर, चिकना, छोटी-छोटी बारीक रेखाओं से रहित हो तो ऐसे व्यक्ति की शान्त, स्थिर प्रकृति होती है। वह प्राय: अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करता है।
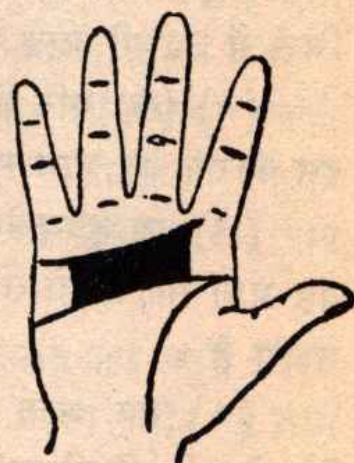
(२) यदि यह भाग मंगल-क्षेत्र की ओर विशेष चौड़ा हो तो निष्कपट व्यवहार का लक्षण है।

(३) यदि यह सम्पूर्ण लम्बा भाग बहुत चौड़ा हो तो मनुष्य अत्यन्त स्वतन्त्र प्रकृति का होता है । किसी की बात नहीं मानता, अपनी मनमानी करने में मूर्खता भी कर बैठता है। इस लक्षण को काफ़ी प्रधानता देनी चाहिये क्योंकि अन्य बिपरीत लक्षणों से इस की प्रकृति में विशेष अन्तर नहीं पड़ता।

प्राय: जिन हाथों में यह भाग बहुत चौड़ा होता है, हृदय-रेखा बहुत ऊँची होती है (जिस कारण कामुकता और ईर्ष्या की प्रकृति बढ़ जाती है) और शीर्ष-रेखा बहुत नीची होती है, इस कारण मस्तिष्क-शक्ति में तर्क की योग्यता विशेष अच्छी नहीं होती।

(४) यदि यह भाग सूर्य-क्षेत्र के नीचे की बजाय शनि-क्षेत्र के

नीचे अधिक चौड़ा हो तो ऐसे व्यक्ति को अपनी बदनामी का डर नहीं होता।

(५) यदि सूर्य-क्षेत्र के नीचे बहुत अधिक चौड़ा हो तो साधारण से अधिक इस बात की फिक्र रहती है कि "लोगों की मेरी बाबत क्या राय है" और ज़रा सुनने में आया कि फ़लाँ आदमी बुराई कर रहा था तो तबीयत भड़क जाती है।

(६) यदि यह भाग शनि-क्षेत्र के नीचे अधिक सकड़ा हो तो चित्त में उदासी छाई रहती है।

(७) (क) यदि शीर्ष-रेखा हृदय-रेखा की ओर झुकी हुई हो और इस कारण यह भाग सकड़ा हो तो मस्तिष्क में उदारता नहीं होती।

(ख) या हृदय-रेखा शीर्ष-रेखा की ओर झुकी हो, इस कारण यह भाग सकड़ा हो तो क्षुद्रता, तबीयत में कमीनापन, कंजूसी का लक्षण है।

(८) यह भाग सुन्दर न हो (रेखाओं के छोटी या भद्दी होने से) तो बुद्धि में तीक्ष्णता नहीं होती, मनुष्य सहृदय या कृपालु नहीं होता।

(९) यह भाग ऊपर उठा हुआ और सुन्दर हो तो सन्तानोत्पादन-शक्ति अच्छी होती है। मनुष्य बहुत द्रव्य कमाना और ख़र्च करना चाहता है।

(१०) यदि यह भाग चपटा हो (जितने ऊँचे ग्रह-क्षेत्र हों उतना ही ऊँचा हो) तो मितव्ययता का लक्षण है।

(११) बहुत गड्ढेदार हो तो व्यक्ति कंजूस होता है।

(१२) सख्त हो तो पाशविक प्रवृत्ति (काम-क्रोध) विशेष होती है।

(१३) बहुत मुलायम हो तो मनुष्य आलसी होता है।

ये साधारण लक्षण बताये गये हैं। अब अन्य लक्षणों के संयोग से क्या फल होता है यह बताया जाता है—

(१) यदि यह भाग चौड़ा हो, शीर्ष-रेखा अच्छी हो और अँगूठे का दूसरा पर्व लम्बा और अच्छा हो तो मस्तिष्क की उदारता का लक्षण है ।

(२) यह स्थान सकड़ा हो और स्वास्थ्य-रेखा अच्छी न हो तो दमा, Hay fever आदि रोग होते हैं ।

(३) यह स्थान सकड़ा हो और उंगलियाँ भीतर की ओर (हथेली की ओर) कुछ मुड़ी हों तो प्रकृति में क्षुद्रता होती है । ऐसा व्यक्ति लोगों से खुले दिल से नहीं मिलता । कंजूस भी होता है ।

(४) यदि यह भाग बीच में सकड़ा हो और कनिष्ठिका उंगली का तृतीय पर्व अपेक्षाकृत लम्बा हो तो दूसरे को धोखा देने की प्रवृत्ति होती है । ऐसा व्यक्ति जल्दी ही दूसरों की बाबत खराब राय भी कायम कर लेता है ।

(५) यदि यह भाग सकड़ा हो और बृहस्पति-क्षेत्र बहुत उन्नत हो तो धार्मिक विचार उच्चकोटि के होते हैं । त्याग और संन्यास की ओर प्रवृत्ति होती है ।

(६) यदि दोनों हाथों में यह भाग सकड़ा हो और बुध-क्षेत्र पर बहुत सी छोटी-छोटी रेखाएँ हों तो झूठ बोलने का स्वभाव होता है ।

(७) यदि मंगल और बुध के क्षेत्र अति उन्नत हों और बृहत् चतुष्कोण बहुत सकड़ा हो तो बेईमानी का लक्षण है ।

(८) यदि यह भाग सकड़ा हो, हृदय-रेखा छोटी हो, शीर्ष और हृदय-रेखाएँ लाल हों, मंगल का क्षेत्र बहुत उन्नत हो तो मनुष्य क्रूर प्रकृति का होता है ।

द्वितीय खण्ड

१०वाँ प्रकरण

हस्त-रेखा-विचार

सात मुख्य रेखाएँ

प्रथम खण्ड में हाथ के आकार, उंगलियों, अँगूठों तथा ग्रह-क्षेत्रों का विस्तृत विचार किया जा चुका है। उसको न केवल ध्यानपूर्वक बारम्बार पढ़ना चाहिए बल्कि मनन करना चाहिए—क्योंकि उस खंड में जो शुभाशुभ लक्षण बताये गये हैं उनका भाग्योदय, स्त्रीसुख, धन-लाभ, यश-प्राप्ति आदि से साक्षात् और घनिष्ठ सम्बन्ध है। बहुत से लोग गलती से यह समझते हैं कि हाथ की बनावट किंवा उंगलियों या अँगूठे की विशेषताओं से केवल व्यक्ति का चरित्र, प्रवृत्ति, स्वभाव, गुण-अवगुण आदि जाने जा सकते हैं। उनको जानने से कोई विशेष लाभ नहीं, इसलिये एकदम रेखाओं का मिलान करने लगते हैं किन्तु यह पद्धति ग़लत है। मनुष्य के स्वभाव और विद्याप्राप्ति किंवा धन-प्राप्ति में कितना अधिक सम्बन्ध है यह निम्नलिखित सिद्धान्तों से स्पष्ट होगा—

१. क्रोधश्रियं सर्वमेवाभिमानम्—क्रोध लक्ष्मी को नाश कर देता है और अभिमान सब कुछ नष्ट कर देता है।

२. सुखार्थी वा त्यजेत् विद्यां, विद्यार्थी वा सुखं त्यजेत्—आराम-तलबी से जीवन व्यतीत करने वालों को विद्या नहीं आती। विद्या की इच्छा है तो आराम करना छोड़ दो।

३. नालसाः प्राप्नुवन्त्यर्थान्—आलसी व्यक्ति धन नहीं कमा सकते।

सात मुख्य रेखाएँ

चित्र नं० २०
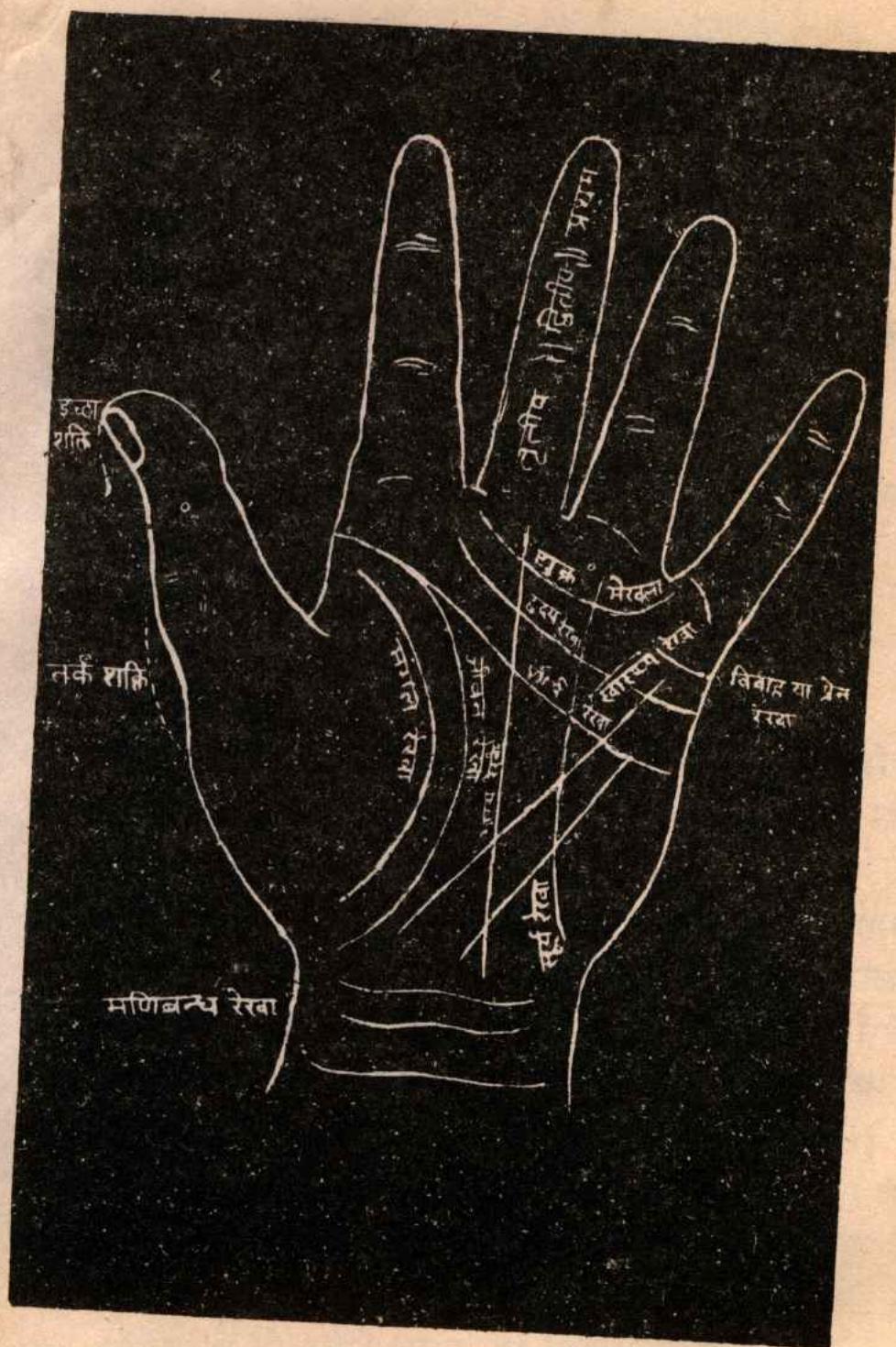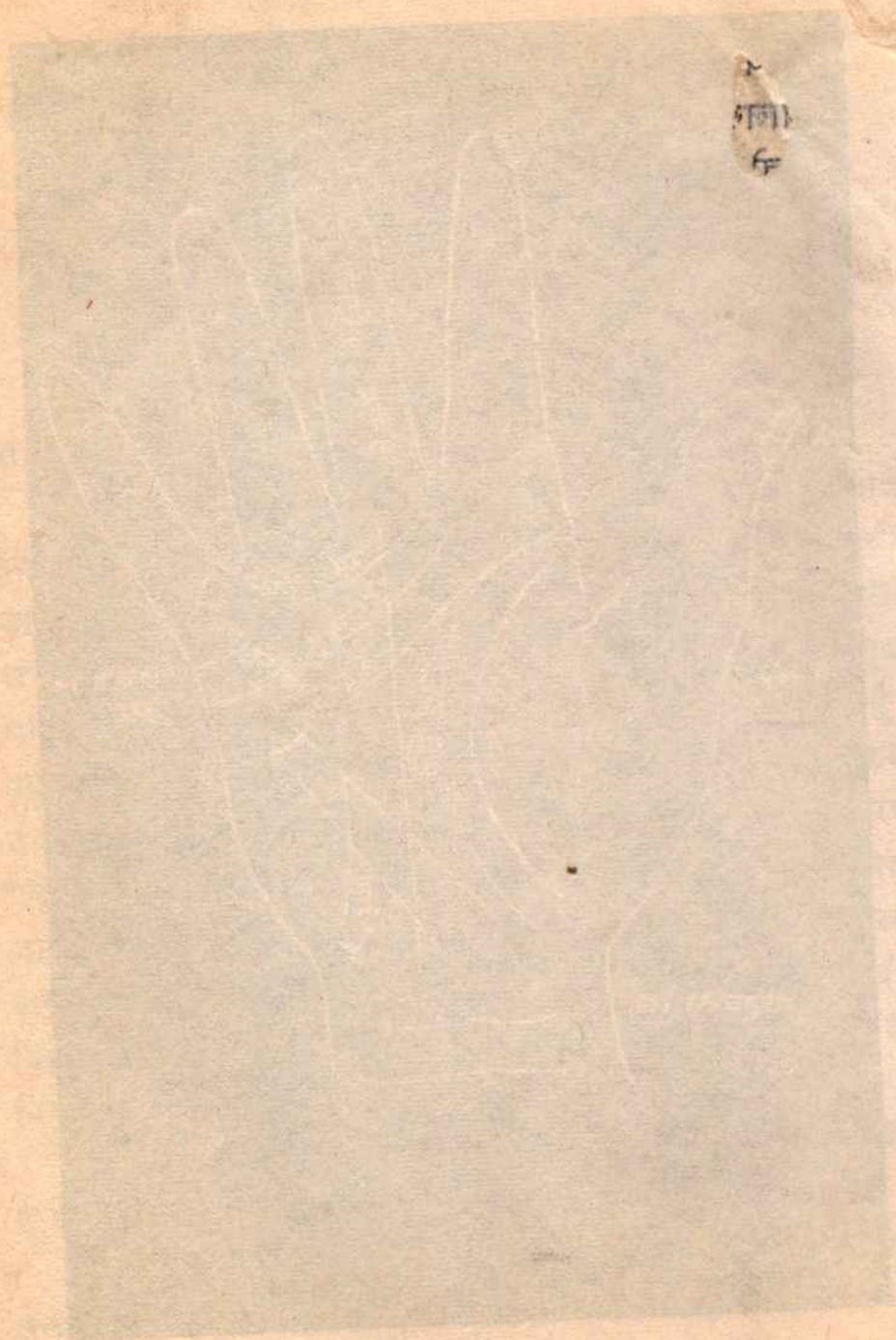
४. क्रोधो मूलमनर्थानाम्—क्रोध सारे अनर्थों का मूल है ।

५. आलस्यं, स्त्रीसेवा सरोगता जन्मभूमिवात्सल्यम् ।
संतोषो भीरुत्वं व्याघाता षट् महत्वस्य ॥

(आलस्य, स्त्रीसेवा, रोगी शरीर, जन्मभूमि से इतना प्रेम होना कि उसे छोड़ बाहर न जाना, संतोष (महत्वाकांक्षा का अभाव), कायरता (डरना) ये छः महादोष हैं, जिनके होने से मनुष्य उन्नति नहीं करता ।)

६. उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः ।
(कार्य उद्योग करने से सिद्ध होते हैं केवल इच्छा करने से नहीं ।

७. न कस्यचित् कश्चिदिह स्वभावात् ।
भवत्युदारोभिमतः खलो वा ॥
लोके गुरुत्वं विपरीततां वा ।
स्वचेष्टितान्येव परं नयन्ति ॥

(किसी का भी कोई बिना बात का मित्र या शत्रु नहीं होता । मनुष्य अपनी चेष्टाओं से ही दूसरों को अपना उपकारी या अपकारी बनाकर श्रेष्ठता या कष्ट प्राप्त करता है ।)

८. शाठ्येन धर्मं कपटेन मित्रं परोपतापेन समृद्धि भावम् ।
सुखेन विद्यां परुषेण नारीं वाञ्छन्ति ये व्यक्तिमपंडितास्ते ॥

(शठता से धर्म उपार्जन, कपट से मित्र-प्राप्ति, दूसरों को पीड़ा पहुँचाकर स्थायी धन-संग्रह, आरामतलबी करके विद्या तथा क्रूर व्यवहार से जो स्त्री को वश में करना चाहते हैं, वे मूर्ख हैं ।)

यह हमारे भारतीय प्राचीन सिद्धान्तों का कथन है । प्रायः धैर्य, उदारता, शान्ति, बुद्धि, शूरता, पराक्रम, शठता, क्रोध, मात्सर्य, ईर्ष्या, आलस्य, उत्साह, परिश्रमशीलता, अध्यवसाय आदि गुणों तथा अवगुणों से ही हमारे भाग्य का निर्माण होता है । इस कारण उंगलियों, अँगूठे, हथेली के ग्रह-क्षेत्रों से गुण, अवगुण, प्रवृत्ति आदि का पूर्ण परिचय प्राप्त करने के बाद रेखाओं को सुस्थिरता से देखना

और अनुसंधान करना चाहिए कि परिणम क्या होगा। द्वितीय-
तृतीय खंडों में रेखाओं और चिह्नों का विस्तृत विचार किया गया है।
पहले रेखाओं का स्वरूप, उनके गुण-दोष तथा उनसे सम्बन्धित
पारिभाषिक शब्द समझाए गये हैं। इसके बाद द्वितीय खण्ड में
निम्नलिखित रेखाओं का वर्णन किया गया है—

(१) जीवन-रेखा (२) शीर्ष-रेखा (३) हृदय-रेखा
(४) भाग्य-रेखा (५) सूर्य-रेखा (६) स्वास्थ्य-रेखा
(७) विवाह-रेखा।

ये सात प्रायः प्रधान रेखा मानी जाती हैं। इस कारण इन
सातों का वर्णन इस द्वितीय खण्ड में एक साथ किया गया है। अन्य
रेखाओं तथा चिह्नों का वर्णन तृतीय खण्ड में किया गया है। बहुत
से विषयों का विचार पूर्ण तभी होगा जब तृतीय भाग में वर्णित
रेखाओं के फल का भी समन्वय किया जावे। उदाहरण के लिये—

(१) आयु-विचार या स्वास्थ्य का विचार करने के लिये जीवन-
रेखा, मंगल-रेखा, मणिबन्ध-रेखा, स्वास्थ्य-रेखा, शीर्ष-रेखा, हृदय-
रेखा तथा नखों का विशेष विचार करना चाहिये।

(२) धनविचार या भाग्योदय के लिये ग्रहक्षेत्र, उंगलियों की
बनावट, भाग्य-रेखा, जीवन-रेखा, शीर्ष-रेखा तथा सूर्य-रेखा का विशेष
विचार करना उचित है।

(३) वैवाहिक सुख या प्रेम के विषय में फलादेश करना हो तो
शुक्र-क्षेत्र, हृदय-रेखा, विवाह-रेखा, शुक्रमेखला और शुक्र-क्षेत्र से
आने वाली प्रभाव रेखाओं की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए।

इस प्रकार, किसी एक बात का विचार करने के लिये अनेक
प्रकरणों और अनेक रेखाओं के सम्बन्ध में बताये हुए सिद्धान्तों का
विचार कर किसी नतीजे पर पहुँचा जा सकता है।

अब आगे के प्रकरणों में रेखा-स्वरूप, गुणदोष तथा सात मुख्य
रेखाओं का क्रमशः विचार किया जावेगा।

११वां प्रकरण

जीवन-रेखा

अंगूठे और तर्जनी के बीच से प्रारम्भ हो जो रेखा गोलाई लिये शुक्र-क्षेत्र को घेरती हुई मणिबन्ध या उसके समीप तक आती है उसे 'गरुड़ पुराण' के अनुसार कुल-रेखा कहते हैं—

'कुल रेखा तु प्रथमा अंगुष्ठादनुवर्तते ।'
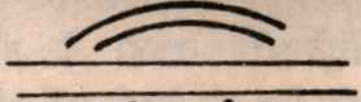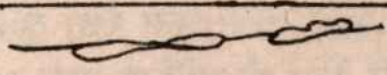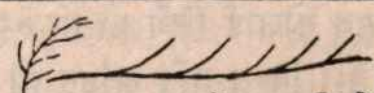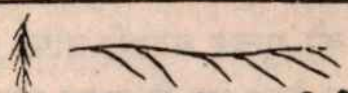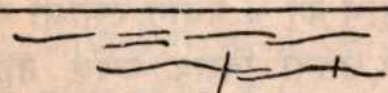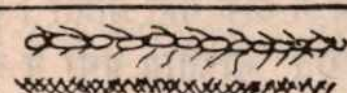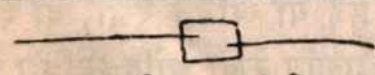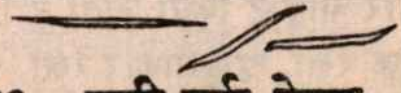
इसी रेखा को ज्योतिष तथा लक्षण के अन्य ग्रन्थों में पितृ-रेखा, गोत्र रेखा, प्रगूढ़-रेखा आदि भिन्न-भिन्न नाम दिये गए हैं।

'सामुद्रिक जातक सुधाकर' के मतानुसार यदि यह पुष्ट, सुन्दर और खूब गोलाई लिये हो तो ऐसा मनुष्य, स्वस्थ, दीर्घायु, ऐश्वर्ययुक्त होता है। किन्तु यदि खंडित हो तो उसे जीवन में असफलता तथा अपमान प्राप्त होता है। यदि यह रेखा सम्पूर्ण न हो तो ऐसा मनुष्य सदा दुःखी रहता है। यदि इस रेखा पर तिल का-चिह्न हो तो मनुष्य को सुन्दर सवारी प्राप्त होती है।

इस रेखा पर से शुक्ल पक्ष में जन्म है या कृष्ण पक्ष में इसका भी विचार कुछ लोगों ने दिया है परन्तु वह विचार सब आदमियों के हाथ में ठीक नहीं बैठता। यह हाथ की ४ प्रधान रेखाओं में एक है। परन्तु भारतीय ग्रंथों में इसका उतना विशद वर्णन नहीं है जितना पाश्चात्य ग्रंथों में। अब पाश्चात्य मत दिया जाता है—

पाश्चात्य मत देने से पहले पाठकों का ध्यान साथ के चित्र की ओर आकृष्ट किया जाता है। टूटी हुई या खंडित रेखा, दो शाखा-युक्त रेखा, शृङ्खलाकार रेखा, गोपुच्छाकृति रेखा आदि विविध प्रकार की रेखाएं जो इस पुस्तक में बताई गई हैं वे इस चित्र को देखने से सुस्पष्ट समझ में आ जायेंगी। इसके गुण-दोष प्रसंगानुसार आगे बताये गये हैं।

विविध प्रकार की रेखाएँ
१. दो शाखा युक्त रेखा
२. सहायिका रेखा
३. रेखा पर बिन्दु चिह्न
४. द्वीप युक्त रेखा
५. गो पुच्छ की आकृति की रेखा
६. ऊपर आने वाली रेखा
७. लहर दार रेखा
८. नीचे आने वाली रेखा
९ खण्डित रेखा
१०. शृंखला कार रेखा
११. टूट के चारों ओर वर्ग चिह्न
१२. फटी हुई रेखा

चित्र नं० २१

जीवन-रेखा : पाश्चात्य मत

पाश्चात्य मत से इसका नाम आयु-रेखा या जीवन-रेखा है। यह रेखा करतल के दाहिनी ओर से निकलकर गुरुक्षेत्र के नीचे गोलाई लिये हुए नीचे मणिबन्ध की ओर चली जाती है। इस प्रकार मंगल का द्वितीय क्षेत्र और शुक्र का क्षेत्र इससे घिरे हुए रहते हैं। बहुत बार यह रेखा मणिबन्ध की ओर न जाकर शुक्र-क्षेत्र के ही नीचे की ओर घूम जाती है। जीवन-रेखा से मनुष्य के स्वास्थ्य तथा शक्ति का पता लगता है कि उसकी प्राण-शक्ति कैसी रहेगी ; कब उसकी शक्तियाँ वृद्धि को प्राप्त होंगी और वह जीवन में सफलता प्राप्त कर सकेगा और कब प्राण-शक्ति के ह्रास (कमी) के कारण उसे असफलता मिलेगी।

जीवन-रेखा की क्षीणता या अभाव

प्राय: सभी हाथों में यह पाई जाती है। जिन व्यक्तियों के हाथ में यह साधारणतया दिखाई न दे वहाँ भी ध्यान से देखने पर यह क्षीण रूप में दिखाई देगी लेकिन ऐसे व्यक्तियों में प्राण-शक्ति का अभाव होगा अर्थात् उनका स्वास्थ्य यदि अच्छा भी दिखाई दे तो भी वे दीर्घायु होंगे यह निश्चय-पूर्वक नहीं कहा जा सकता। हाँ, यह अवश्य है कि जिनका अँगूठा बड़ा होता है और शीर्ष-रेखा अच्छी होती है वे जीवनरेखा के क्षीण होने पर भी दीर्घायु भी हो सकते हैं।

कई हाथों में ऐसा होता है कि जीवनरेखा तो आधी ही दूर तक जाती है और भाग्य-रेखा पहुँचे के पास से निकलकर गोलाई लिये हुए आगे जाकर शीर्ष-रेखा में मिल जाती है। ऐसी स्थिति में ध्यानपूर्वक निश्चय करना चाहिए कि जीवन-रेखा कौन सी है। कई बार जीवन-रेखा की सहायक रेखा को लोग जीवन-रेखा समझ लेते हैं। ऐसा भ्रम उन हाथों में होता है जहाँ जीवन-रेखा छोटी और क्षीण होती है और सहायक रेखा बड़ी और गहरी होती है। ऐसे हाथों में पहचान का सहज उपाय यह है कि सहायक रेखा शुक्र-

क्षेत्र के ऊपर होती है और जीवनरेखा शुक्रक्षेत्र को घेरती हुई।

जीवन-रेखा का प्रारम्भ (क)

प्राय: करतल के बग़ल से ही जीवन-रेखा प्रारम्भ होती है। यह इसकी स्वाभाविक स्थिति है परन्तु यदि यह बृहस्पति के क्षेत्र से प्रारम्भ हो तो यह समझना चाहिए कि वह व्यक्ति बहुत धनाकांक्षी है और यश तथा मान की इच्छा रखता है। शनि, गुरु, सूर्य, बुध, शुक्र, चन्द्र आदि—जिनके भी क्षेत्र ऐसे व्यक्ति के हाथ पर विशेष उन्नत होंगे उसी के अनुसार उसकी महत्वाकांक्षा होगी। यदि बुध का प्रभाव उस पर विशेष है तो वक्ता, विज्ञान या व्यापार में वह प्रसिद्धि चाहेगा। यदि सूर्य का स्थान और अनामिका प्रमुख हैं तो धन और कला-सम्बन्धी उसकी आकाँक्षायें होंगी, ऐसा ही सर्वत्र समझना चाहिए अर्थात् गुरु का प्रभाव अधिक हो तो पद, मान की लिप्सा आदि। जीवन-रेखा के प्रारम्भ होने के उपर्युक्त दो ही स्थान हैं।

जीवन-रेखा शुक्रक्षेत्र को 'चाप' की तरह घेरे रहती है, किन्तु बहुत हाथों में तो घेरा बड़ा होता है अर्थात् शुक्रक्षेत्र बड़ा और विस्तृत होता है, किन्तु कुछ हाथों में जीवनरेखा की गोलाई कम रहती है इस कारण शुक्रक्षेत्र छोटा, सीमित और संकुचित हो जाता है। जितनी गोलाई अधिक होगी उतना ही शुक्रक्षेत्र का विस्तार अधिक होगा। जितनी गोलाई कम होगी उतना ही शुक्रक्षेत्र छोटा हो जायगा। (देखिए चित्र नं० २२)

चित्र नं० २२

शुक्रक्षेत्र से आकर्षण, अनुराग, स्त्री-पुरुष का पारस्परिक प्रेम, इच्छा, कामुकता आदि का विचार किया जाता है। इस कारण जिनका शुक्रक्षेत्र सीमित और संकुचित होगा उनके हृदय में प्रेम, आकर्षण, स्त्री का पुरुष के प्रति और पुरुष का स्त्री

के प्रति झुकाव कम होगा। ऐसे व्यक्तियों में जब अनुराग की भावना में ही कमी है तो सन्तान उत्पादन-शक्ति भी कम ही होगी और इस कारण विवाह होने पर भी उतनी अधिक संख्या में संतान नहीं होती जितनी उन लोगों की जिनका शुक्रक्षेत्र पुष्ट और विस्तृत है। इस कारण जीवन-रेखा कितना भाग घेरती है यह संतति के दृष्टिकोण से भी महत्व का है। सामान्य नियम यह है कि जीवन-रेखा जितनी ही बड़ी होगी उतनी ही मनुष्य की आयु अधिक होगी।

चित्र नं० २३

बहुत बार तो यह देखा कि मृत व्यक्तियों की जीवनरेखा से जितनी आयु प्रतीत होती थी उतनी आयु पूर्ण होने पर उनका शरीरान्त हुआ। किन्तु कई वार यह भी देखा कि जिस अवस्था में उस व्यक्ति की मृत्यु हुई उसके बहुत बाद तक की अवस्था जीवन-रेखा से प्रकट होती थी अर्थात् जीवन-रेखा सुस्पष्ट और लम्बी थी। ऐसी स्थिति में यह शंका उठती है कि जब जीवन-रेखाओं से उन व्यक्तियों की मृत्यु नहीं प्रकट होती थी तो उनकी मृत्यु पहले ही कैसे हो गई। इसका उत्तर यही है कि जीवन-रेखा से ही आयु के अन्तिम निर्णय पर नहीं पहुँचना चाहिए। जीवन-रेखा स्वाभाविक प्राण-शक्ति प्रकट करती है। हृदय-रेखा, शीर्ष-रेखा, स्वास्थ्य-रेखा तथा अन्य रेखाओं व चिह्नों से भी यह देखना चाहिए कि सांघातिक बीमारी या मृत्यु के चिह्न हैं क्या ? इसी कारण हस्तपरीक्षकों को सावधान किया जाता है कि किसी एक रेखा या चिह्न से ही शीघ्रता में परिणाम निकालने की चेष्टा न करें।

यदि ये रेखा दाहिने और बायें हाथ में भिन्न-भिन्न प्रकार की हों अर्थात् एक में बड़ी और एक में छोटी हो तो निम्नलिखित

निष्कर्ष निकालना चाहिए—

(१) यदि दाहिने हाथ में रेखा बड़ी हो तो समझिये कि पैदा होने के समय यह व्यक्ति उतनी प्राणशक्ति लेकर उत्पन्न नहीं हुआ था किन्तु बाद में आहार, बिहार, विचार और संयम द्वारा इसकी प्राणशक्ति बढ़ी है और इस कारण इसकी आयु लम्बी हो गई।

(२) यदि बायें हाथ में रेखा बड़ी हो तो यह समझना चाहिए कि माता के गर्भ से तो यह पर्याप्त प्राणशक्ति लेकर आया था किन्तु बाद में उपर्युक्त विविध कारणों से यह शक्ति कम हो गई।

(३) जहाँ भी जीवन-रेखा सुस्पष्ट, गम्भीर और दीर्घ हो यह समझना चाहिए कि जीवन और स्वास्थ्य को कायम रखने के लिए काफी प्राणशक्ति है और इसके विपरीत जहाँ जीवन-रेखा छोटी हो समझना चाहिए कि उतनी आयु पूर्ण होने पर जीवन को भय है।

रेखा का रूप और लक्षण (ख)

यदि यह रेखा गहरी और सुस्पष्ट हो तो समझिए कि प्राण-शक्ति का प्रवाह उत्तम है। ऐसा व्यक्ति बलशाली और स्वस्थ होगा और बीमारी का डर कम है। प्रायः पुष्ट व्यक्तियों के हाथ में रेखा स्पष्ट और गहरी होती है। ऐसे व्यक्ति चिन्ता कम करते हैं और उनका स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

यदि जीवनरेखा गहरी न हो और आवश्यकता से अधिक चौड़ी हो, या श्रृखलाकार हो तो माँसल और लचकदार करतल होने पर भी ऐसे व्यक्तियों में उतनी शक्ति नहीं होगी जितनी गम्भीर रेखा वालों में। बहुत हाथों में देखने में आया है कि प्रारम्भ में तो रेखा सुन्दर है (अर्थात् गहरी और सुस्पष्ट है) किन्तु बाद में पतली होती गई है। इसका अर्थ है कि जीवन के पूर्वभाग में तो उनमें काफ़ी प्राणशक्ति संचित थी किन्तु जीवन के उत्तर भाग में (जहाँ से जीवन-रेखा सूक्ष्म होती गई) इस प्राणशक्ति का ह्रास होता गया।

गहरी जीवन-रेखा का प्रभाव

ऊपर बताया जा चुका है कि स्पष्ट, पुष्ट, गम्भीर और दीर्घ जीवन-रेखा बल, शक्ति और स्वास्थ्य प्रदर्शित करती है। किन्तु हाथ के और भागों से जो गुण या अवगुण प्रकट होते हैं उनके संयोग से क्या दुष्परिणाम पैदा होते हैं उनका विचार करना भी आवश्यक है—

(१) जिस मनुष्य पर बृहस्पति का प्रभाव अधिक है अर्थात् गुरु का क्षेत्र उन्नत और विस्तृत हो और तर्जनी अधिक लम्बी हो तथा उसकी उंगलियों के तृतीय पर्व यदि अन्य पर्वों की अपेक्षा पुष्ट और फूले हुए हों तो ऐसा व्यक्ति जीवन-रेखा की प्रदान की हुई बल और शक्ति का दुरुपयोग करता है और अत्यधिक भोजन (जिन परिवारों में मदिरापान प्रचलित है वहाँ मदिरापान) द्वारा सदैव अपनी तृप्ति करता रहता है। यदि ऐसे हाथ व हथेली में अधिक लाल वर्ण भी दिखाई दे तो समझिए कि अति भोजन और अति मदिरापान अपना काफ़ी प्रभाव जमा चुके हैं।

ऐसे हाथों में जीवन-रेखा के पुष्ट, गम्भीर और दीर्घ रहने पर भी यह भय बना रहता है कि यद्यपि शरीर और शक्ति में क्रमिक ह्रास नहीं है किन्तु अधिक भोजन और मदिरापान के असंयम के फलस्वरूप सदैव स्वस्थ रहने वाला भी व्यक्ति रक्तचाप, मूर्च्छा आदि का सहसा शिकार हो जाता है। इन रोगों के कारण सहसा चक्कर आ जाना, बेहोशी, पक्षाघात आदि सांघातिक रोग हो जाते हैं।

(२) उन्नत सूर्यक्षेत्र, सूर्य-रेखा एवं लम्बी अनामिका वाले व्यक्ति प्राणशक्ति का सदुपयोग करते हैं और दीर्घायु होते हैं।

(३) जिन पर मंगल का प्रभाव अधिक हो अर्थात् मंगल के क्षेत्र उन्नत और विस्तृत हों उनकी भी वही प्रवृत्ति होती है जैसी गुरु के प्रभाव वाले व्यक्तियों की, ऊपर वर्णित की जा चुकी है।

(४) शुक्रक्षेत्र जिनका उच्च और विस्तृत है और जिनके अन्य लक्षण भी शुक्र का विशेष प्रभाव प्रकट करते हैं ऐसे व्यक्ति भी अधिक भोग-विलास द्वारा प्राणशक्ति का दुरुपयोग करते हैं और परिणाम ह्रास ही होता है।

(५) चन्द्र, बुध या शनि का प्रभाव जिन पर विशेष होता है उनकी वृत्तियाँ अपेक्षाकृत संयमित होती हैं।

पतली और कम गहरी रेखा

यदि जीवन-रेखा बहुत पतली और कम गहरी हो तो समझना चाहिए कि प्राणशक्ति सामान्य से कम है। ऐसे व्यक्ति थोड़ा भी कारण उपस्थित होने पर बीमार हो जाते हैं। ज़्यादा शारीरिक कष्ट या परिश्रम भी सहन नहीं कर सकते। जीवन-रेखा किस हद तक पतली और उथली है यह निश्चय करने के लिए हाथ की और रेखाएँ भी देखनी चाहिएँ और फिर तुलनात्मक दृष्टि से निर्णय करना उचित है। यदि अन्य रेखाओं की अपेक्षा जीवन-रेखा गहरी है तो ऐसा व्यक्ति चिन्ता कम करेगा। किन्तु यदि और रेखाओं की अपेक्षा जीवन-रेखा पतली है तो ऐसा व्यक्ति सदैव यह अनुभव करेगा कि वह बहुत परिश्रम कर रहा है और उस पर बड़ा ज़ोर पड़ रहा है। उसके स्वास्थ्य बिगड़ने का डर रहता है। रेखा पर जहाँ भी कोई गड्ढा, टूट या अन्य बीमारी का चिह्न हो तो अवश्य बीमारी होती है। बहुत पतली या उथली रेखा वाले व्यक्ति सदैव चिन्तित-से रहते हैं। उन्हें भविष्य चिन्ता और विपत्तियों से ग्रस्त प्रतीत होता है। इसलिए जहाँ कष्ट, परिश्रम, आशंका या साहस का कार्य हो वहाँ ऐसे व्यक्तियों को
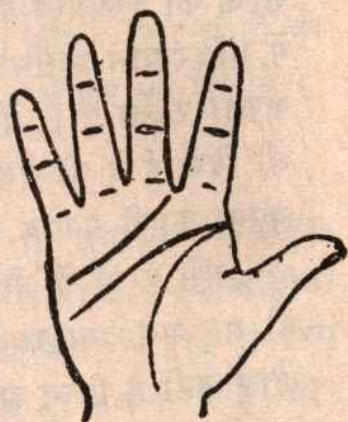
चित्र नं० २४

कदापि नहीं चुनना चाहिए क्योंकि वे सदैव काल्पनिक आशंकाओं से ही भयभीत रहते हैं।

जहाँ पतली रेखा के अवगुण हैं वहाँ इसका गुण भी यह है कि यदि बृहस्पति या मंगल का जिन पर विशेष प्रभाव है ऐसे व्यक्तियों के हाथ में पतली रेखा हो तो वे अत्यधिक भोजन नहीं करेंगे और इस कारण बीमार नहीं होंगे। परन्तु क्षीण रेखा वाले व्यक्तियों का स्नायु-मडल प्राय: कमजोर रहता है और ये लोग सुस्त रहते हैं।

चौड़ी और उथली रेखा

रेखा का चौड़ा होना गुण नहीं है। सकड़ी जगह में मात्रा उतनी ही होने से प्रवाह तीव्र होता है। किन्तु प्राणशक्ति जब चौड़ी रेखाओं में होकर प्रवाहित होती है तो उसकी गति मन्द हो जाती है। इसलिए यदि आप देखें कि जीवन-रेखा गहरी नहीं है और चौड़ो है तो समझिए कि प्राण-शक्ति की कमी है। शरीर भी बलवान नहीं होता। ऐसे व्यक्ति तुरन्त रोग के शिकार हो जाते हैं। ऐसे व्यक्ति यदि देखने में मोटे भी हों तो समझिए कि उनमें बल अधिक नहीं है। रोग के कीटाणु ऐसे शरीर में शीघ्र ही अपना घर बना लेते हैं। ऐसे व्यक्तियों में आत्मविश्वास की भी कमी रहती है और वे सदैव किसी-न-किसी रोग की शिकायत करते रहते हैं। उन्हें प्राय: अपने मित्रों और सम्बन्धियों पर निर्भर रहने का अभ्यास हो जाता है और स्वयं जीवन में विशेष सफलता प्राप्त नहीं कर सकते। ऐसे व्यक्ति केवल ऐसा काम कर सकते हैं जो एक ही क्रम का हो और जिसमें नवीन स्फूर्ति, साहस या उत्तरदायित्व न हो। यदि ऐसे व्यक्तियों को किसी साहस और उत्तरदायित्व के काम में लगा दिया जाय तो ऐसे

चित्र नं० २५

काम में वे अधिक दिन तक नहीं लगे रह सकते। यदि ऐसी रेखा निश्शक्त से, ढीले हाथ में हो तो ऐसा व्यक्ति बहुत ही आलसी होता है।

जिनकी उंगली के अग्रभाग चौड़े (आगे से फैले) होते हैं उनके हाथ में भी चौड़ी और उथली रेखा हो तो उनको भी यह निष्क्रिय बना देती है और उनकी कार्य-शक्ति या क्रिया बहुत अल्प-मात्रा में रहती है। बृहस्पति, मंगल या शुक्र किसी भी ग्रह का प्रभाव इन मनुष्यों के ऊपर हो तो इनकी इच्छाएँ चित्त तक ही सीमित रहती हैं। कार्यान्वित करने की क्षमता उनमें नहीं होती। ऐसे व्यक्तियों की सन्तान भी कम ही होती हैं। चौड़ी और उथली रेखा सब व्यक्तियों के हाथों में एक-सी नहीं होती। जितनी ही अधिक मात्रा में ये अवगुण हों उनके अनुरूप ही फलादेश करना चाहिए। यदि बायें हाथ की अपेक्षा दायें हाथ में रेखा अच्छी हो तो समझना चाहिए कि अब दशा सुधर रही है। किन्तु यदि दाहिने हाथ में रेखा अधिक ख़राब हों तो समझिए कि दशा और भी बिगड़ रही है।

यदि हाथ की अन्य रेखाएँ उत्तम हों और केवल जीवन-रेखा में ही ये अवगुण हों तो समझना चाहिए कि असफलता का कारण ऐसे व्यक्ति की अस्वस्थता और निर्वलता है। शनि के क्षेत्र को भी ध्यान से देखना चाहिए : यदि यह क्षेत्र भी विस्तृत हो या शनि का प्रभाव विशेष हो तो ऐसे व्यक्ति प्रायः दुःखी, ग़मगीन और कष्ट पाने वाले होते हैं और आत्म-हत्या तक करने की इच्छा हो जाती है।

यदि स्त्रियों के हाथ में उपर्युक्त सब बातें हों और चन्द्रमा के क्षेत्र के नीचे के तृतीय भाग से स्त्री-रोग भी प्रकट होते हों तो उनमें उपर्युक्त निराशावाद और ऐहिक लीला समाप्त करने की भावना और भी अधिक होती है। ऐसे हाथों में यह भी ढूंढना चाहिए कि किस बीमारी के चिह्न या लक्षण हैं। माता-पिता को उचित है कि ऐसे लोगों का विवाह न करें।

यदि जीवन-रेखा नसेनी के छोटे-छोटे डंडों की भाँति छोटे-छोटे आड़े रेखा-खण्डों से बनी हो तो ऐसी रेखा में भी वही अवगुण समझने चाहिए जो चौड़ी और उथली रेखा के सम्बन्ध में पहले कहे जा चुके हैं। ऐसे व्यक्ति का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता और वह बारम्बार बीमार होता है। यदि जीवन-रेखा छोटी-छोटी सूक्ष्म रेखाओं से बनी हो तो ऐसे व्यक्ति का स्नायु-मण्डल क्षीण होता है और वह मनुष्य निर्बल होता है। हाथ में ग्रहों के विविध क्षेत्रों के देखने से पता लगेगा कि शरीर में कौन सा रोग है। इसी प्रकार यदि जीवन-रेखा शृङ्खला की भाँति हो तो उनमें भी उपर्युक्त दोष होते हैं।
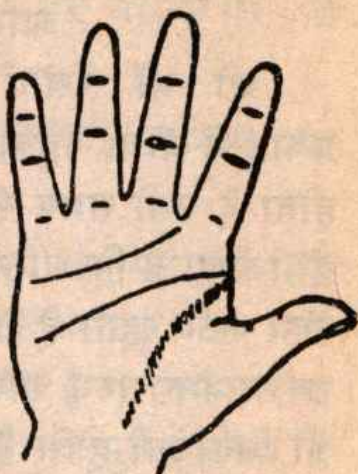
चित्र नं० २६

जीवन-रेखा के जिस भाग में नसेनी की तरह या शृङ्खलाकार या अन्य दोषयुक्त बनावट हो उसी के अनुसार वयः में रोग, स्वास्थ्य हानि, निर्बलता आदि कहना चाहिए। जीवन के आरम्भ (बचपन) में बच्चे अधिकतर बीमार पड़ते हैं। इसलिए जीवन-रेखा का प्रारम्भिक भाग ही छिन्न-भिन्न या शृङ्खलाकार रहता है। यदि प्रारम्भ में तो जीवन-रेखा बहुत सुन्दर हो और बाद में कटी-फटी, उथली, चौड़ी आदि अवगुणों से युक्त हो तो वर्तमान से जो अवस्था आवे उतनी उम्र में बीमारी या अस्वास्थ्य कहना चाहिए। परन्तु जिनकी सम्पूर्ण जीवन-रेखा ही दोषयुक्त हो वे कभी भी पूर्ण स्वस्थ नहीं रह सकेंगे।

ग्रहों के क्षेत्रों में रेखा, जाल, क्रॉस या अन्य चिह्नों से रोग-विशेष का पता लगेगा। नाखूनों की बनावट, रंग, हथेली का वर्ण, स्वास्थ्य रेखादि से भी रोग का पता लगेगा और जहाँ-जहाँ जीवन-रेखा टूटी हो या फटी हो या कटी हो या बिन्दु अथवा द्वीप-चिह्न

से युक्त हो उस अवस्था में बीमारी कहनी चाहिए ।

जीवन-रेखा से रोग-विशेष का परिज्ञान और इसको आड़ी काटने वाली रेखायें (ग)

जो भी रेखाएँ जीवन-रेखा को काटती हैं वे प्राणशक्ति के प्रवाह में बाधा पहुँचाती हैं और जिस वयः में यह अवरोध प्रकट होता है उसी समय स्वास्थ्य में गड़बड़ होती है। बहुत से हाथों में ऐसा देखा है कि अति सूक्ष्म—अत्यन्त छोटी-छोटी रेखाओं से जीवन-रेखा कटी रहती है लेकिन जीवन-रेखा में कोई टूट नहीं होती। इन अत्यन्त सूक्ष्म काटने वाली रेखाओं का प्रभाव मानसिक स्वास्थ्य को बिगाड़ना होता है अर्थात् कोई भयानक शारीरिक बीमारी तो नहीं होती किन्तु अनेक चिन्ताओं के कारण मन उद्विग्न रहता है इस कारण मनुष्य अपने को पूर्ण स्वस्थ अनुभव नहीं करता। जितनी छोटी, सूक्ष्म रेखा आयु-रेखा को काटें उतना ही मानसिक उद्वेग या शारीरिक रोग के अवसर समझने चाहिए। परन्तु यदि ये काटने वाली रेखाएँ गहरी हों तो उत्कट बीमारी की द्योतक हैं। यदि इन काटने वाली रेखाओं का रंग लाल हो तो ज्वर द्वारा रुग्णता होगी। जितनी गहरी काटने वाली रेखा हो उतनी ही कष्टदायक रुग्णता का फलादेश करना उचित है।

ये काटने वाली रेखाएँ किसी-न-किसी ग्रहक्षेत्र पर जाकर रुकती हैं और उनसे रोग-विशेष का परिज्ञान होगा।

(१) यदि कोई आड़ी रेखा जीवन-रेखा को काटे और शनि-क्षेत्र पर जहाँ वह जाकर रुके रेखाजाल हो तो शनि के वर्ग का रोग होगा—कौनसा रोग होगा यह नाखूनों और वर्ण से ज्ञात हो सकेगा।

(२) यदि जीवन-रेखा को काटने वाली रेखा सूर्यक्षेत्र के नीचे हृदय-रेखा पर जाकर रुके और वहाँ हृदय-रेखा पर बिन्दु या द्वीप हो या स्वयं हृदय-रेखा ही कटी हुई हो तो हृद्रोग समझना

चाहिए। यदि जीवन-रेखा इस कटे हुए स्थान के आगे दोनों हाथों में टूटी हुई हो तो जीवन का ही अन्त हो जावेगा। हृद्रोग जहाँ सूचित होता हो वहाँ नाखूनों आदि अन्य बताये हुए लक्षणों पर भी ध्यान देना चाहिए।

(३) यदि काटने वाली तीव्र रेखा जाकर लहरदार स्वास्थ्य-रेखा से मिलती हो तो पीलिया या पित्तज्वर होगा।

(४) यदि काटने वाली रेखा मंगल के प्रथम क्षेत्र पर पर्यवसित हो और वहाँ रेखाजाल हो तो रक्तविकार, रक्त-प्रसार, या गले (खाँसी, निमोनिया आदि) की बीमारी का द्योतक है। स्वास्थ्य-रेखा पर द्वीप-चिह्न हैं या नाखूनों से यदि इन रोगों की पुष्टि होती है क्या यह भी देखना चाहिये।

(५) यदि काटने वाली रेखा चन्द्रक्षेत्र के ऊपरी भाग पर जाकर समाप्त हो और वहाँ पर रेखाजाल हो तो संग्रहणी, अंतड़ियों के रोग, उदरशोथ आदि रोग होंगे।

(६) यदि काटने वाली रेखा का चन्द्रक्षेत्र के मध्य भाग में अंत हो तो वायुजनित, गठिया आदि रोग होते हैं। यदि रेखा के अन्त पर चन्द्रक्षेत्र के मध्य में अशुभ जाल-चिन्ह हो तो इस रोग की पुष्टि होती है। अथवा यदि जीवन-रेखा को काटने वाली किसी दूसरी रेखा में द्वीप-चिह्न हो और वह शनिक्षेत्र को जावे तो भी इसकी पुष्टि होती है।

(७) यदि जीवन-रेखा को काटने वाली रेखा चन्द्रक्षेत्र के नीचे के भाग में समाप्त हो और वहाँ जाल, चिह्न या क्रॉस या इस रेखा को काटने वाली दूसरी छोटी रेखा हो तो मूत्राशय या स्त्री-सम्बन्धी रोग होते हैं। यदि हाथ फूले हुए, मुलायम और सफ़ेद रंग के हों और चिकने नज़र आयें तो उपर्युक्त रोगों की पुष्टि होती है। यदि स्वास्थ्य रेखा पर तारे का चिह्न हो विशेष-

कर उस स्थान पर जहाँ स्वास्थ्य-रेखा शीर्षरेखा को काटती हो तो भी उपर्युक्त रोगों की पुष्टि होती है।

(८) यदि जीवन-रेखा अच्छी हो और यह प्रदर्शित करती हो कि स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तो इन रोगों से थोड़े ही दिनों के लिए बीमारी होगी और फिर जातक शीघ्र ही अच्छा हो जायगा। यदि जीवन-रेखा अत्यन्त पतली या अत्यन्त चौड़ी, उथली या शृङ्खलाकार हो तो उसका स्वास्थ्य जल्दी-जल्दी बिगड़ेगा और इस कारण जीवन-रेखा को काटने वाली रेखाएँ भी अधिक संख्या में दिखाई देंगी।

किसी भी आड़ी काटने वाली रेखा से जब रोग की सम्भावना प्रतीत हो तब यह देखना चाहिए कि जिस स्थान पर जीवन-रेखा कटी है उसके आगे के भाग में जीवन-रेखा की कैसी दशा है। यदि काटने वाली रेखा का अन्त द्वीप, क्रॉस या बिन्दु पर होता है, या यह शीर्ष-रेखा को काटती है और जिस स्थान पर जीवन-रेखा कटी है उसके आगे का भाग चौड़ा और उथला है तथा वहाँ जीवन-रेखा पर द्वीप-चिह्न है तो समझना चाहिए कि इस बीमारी से उसका शारीरिक स्वास्थ्य और दिमागी ताकत दोनों को गहरा आघात पहुँचेगा और बीमारी के बाद उसकी दशा अच्छी नहीं रहेगी।

(९) कभी-कभी जीवन-रेखा को काटने वाली रेखाएँ शुक्रक्षेत्र पर प्रभाव-रेखाओं से प्रारम्भ होती हैं। ऐसी स्थिति से समझना चाहिए कि किसी चिन्ता विशेष (प्रभाव-रेखा सम्बन्धी) के कारण रोग होगा। यदि प्रभाव-रेखा गहरी और दृढ़ हो तो उपर्युक्त निष्कर्ष की पुष्टि होती है।

(१०) यदि आड़ी काटने वाली रेखा हृदय-रेखा और शीर्ष-रेखा के मध्य में समाप्त हो और शीर्ष और हृदय-रेखाओं के बीच का यह मध्य भाग बहुत चौड़ा न हो तो दमे का रोग होगा। यहाँ यह स्मरण रखना चाहिए कि यह मध्यभाग जब सकड़ा होता है तो दम घुटने की बीमारी होती है। इसी कारण दमे की बीमारी का

निर्देश किया गया है। यदि यह स्थान सकडा न हो तो दमा न होगा।

(११) यदि आड़ी काटने वाली रेखा जाकर स्वास्थ्य-रेखा पर समाप्त हो और स्वास्थ्य-रेखा नसेनी की भाँति हो तो उदर-रोग होगा।

(१२) यदि आड़ी काटने वाली रेखा जाकर स्वास्थ्य-रेखा पर ऐसी जगह समाप्त हो जहाँ स्वास्थ्य-रेखा पर द्वीप-चिह्न हो तो गले और फेफड़े का रोग कहना चाहिए।

चित्र नं० २७

जीवन-रेखा-चिन्हों से रोग-परिज्ञान

द्वीप—यदि जीवन-रेखा पर द्वीप-चिह्न हो तो समझना चाहिए कि प्राणशक्ति दो धाराओं में फूटकर वह रही है। इस कारण उसकी गति और शक्ति में कमी हो गई। स्वास्थ्य की वृद्धि के लिये यह समय अच्छा नहीं होता और जितना जीवन-रेखा का भाग द्वीप-युक्त होगा उतने ही जीवन के काल तक अस्वस्थता रहेगी। यदि द्वीप समाप्त होने के बाद जीवन-रेखा सुन्दर और पुष्ट हो तो इस अस्वास्थ्य के बाद जातक पूर्ण स्वस्थ हो जायगा, किन्तु यदि बाद की जीवन-रेखा पतली या दोष-युक्त है तो पुनः पूर्ण स्वस्थ नहीं होगा। यदि यह द्वीप-चिह्न बहुत छोटा है तो एक ही बार बीमार करेगा। अन्य रेखाओं तथा ग्रह-नक्षत्रों से यह देखना चाहिए कि किस पकार के रोग की सम्भावना है।

चित्र नं० २८

यदि जीवन-रेखा में निरन्तर एक के बाद दूसरा—इस प्रकार कई द्वीप-चिह्न हों

तो एक प्रकार से शृङ्खलाकार रेखा का-सा स्वरूप दिखाई देगा। ऐसी दशा में निरन्तर स्वास्थ्य खराब रहेगा, यह फलादेश करना उचित है। यदि प्रथम द्वीप-चिह्न बड़ा हो और बाद के छोटे हों तो यह समझिए कि पहली बीमारी बहुत सख्त और गहरी होगी और बाद की हल्की। किन्तु यदि इससे उल्टा क्रम हो अर्थात् पहला द्वीप छोटा और बाद के बड़े होते जाएँ तो उत्तरोत्तर रोगों में वृद्धि होगी।

यदि जीवन-रेखा पर द्वीप-चिह्न हो तो हाथ के अन्य भाग के चिह्नों से किस प्रकार रोग का अनुमान करना चाहिए यह स्पष्ट किया जाता है। यदि जीवन-रेखा पर द्वीप-चिह्न हो और—

(१) सारे हाथ पर बहुत सी पतली आड़ी रेखाएँ हों तो इससे स्नायु-दुर्बलता और मानसिक अशान्ति के कारण स्वास्थ्य हानि होगी।

(२) यदि शीर्ष-रेखा छोटी-छोटी सूक्ष्म आड़ी रेखाओं से कटी हो तो सिर-दर्द, दिमाग़ की कमज़ोरी, नज़ला बिगड़ना इस प्रकार के रोग होते हैं। किन्तु यदि शीर्ष-रेखा को काटने वाली छोटी रेखाएँ गहरी हों तो शिरोवेदना या मस्तिष्क-सम्बन्धी गहरा रोग।

(३) यदि शीर्ष-रेखा पर भी द्वीप हो तो दिमाग की कमज़ोरी और मस्तक के अन्दर स्नायु को आघात पहुँचाने वाले रोग।

(४) यदि शीर्ष-रेखा पर बिन्दु (पिन की नोक के बराबर गड्ढे) हों तो शिरो-रोग। यदि ये बिन्दु ललाई लिये हों तो रोग में भी तीव्रता हो।

(५) यदि हृदय-रेखा पर बिन्दु हो तो हृदय रोग। यदि हृदय-रेखा पर बहुत से बिन्दु हों तो बारम्बार हृदय-रोग का आक्रमण होगा और इस कारण स्वास्थ्य गिरा हुआ रहेगा। इसकी पुष्टि के लिए हथेली के वर्ण और नाखूनों को भी देखना चाहिए।

(६) यदि हृदय-रेखा पर भी द्वीप हों तो हृदय की कमज़ोरी

के कारण स्वास्थ्य गिरा हुआ रहे।

नोट :—उपर्युक्त नम्बर ५ और ६ में बताए हुए लक्षणों में अन्तर यह है कि यदि हृदय-रेखा पर पिन की नोक के बराबर छोटे-छोटे गड्ढे हों तो हृदयरोग के तीव्र आक्रमण (दिल की बीमारी के दौरे) होते हैं। किन्तु यदि हृदय-रेखा पर केवल द्वीप हो तो हृदय की साधारण कमज़ोरी की वजह से स्वास्थ्य गिरा हुआ होगा।

(७) यदि स्वास्थ्य-रेखा लहरदार हो तो पित्त-रोग, यकृत-सम्बन्धी खराबी। (देखिये चित्र नं० २९)

(८) यदि स्वास्थ्य-रेखा नसेनी की भाँति हो तो अपच, मन्दाग्नि तथा अन्य उदर रोग।

(९) ग्रहक्षेत्रों पर जाल-चिह्न, क्रॉस, छोटी काटने वाली रेखा ध्यान से देखनी चाहिए। जिस ग्रहक्षेत्र पर ऐसे चिह्न हों उसी ग्रह-सम्बन्धी रोग होगा।

चित्र नं० २९

नोट :—यदि जीवन-रेखा पर कोई बिन्दु-चिह्न हो और उसके बाद हो जीवन-रेखा पर द्वीप बना हो तो यह निष्कर्ष निकालना चाहिए कि तीव्र रोग का आक्रमण होगा और इसके बाद स्वास्थ्य गिरा रहेगा।

यदि जीवन-रेखा पर कई द्वीप-चिह्न हों और हाथ में उपर्युक्त अनेक रोगों के लक्षण हों तो कब कौन-सी बीमारी होगी ?

यदि जीवन-रेखा पर एक से अधिक द्वीप हों और हाथ में एक से अधिक रोग के लक्षण हों तो यह नतीजा निकालना चाहिए कि ये द्वीप-चिह्न पृथक्-पृथक् रोगों के कारण बीमार या कमज़ोर रखेंगे। यथा—

(१) यदि जीवन-रेखा के प्रारम्भिक भाग में एक द्वीप हो

और दूसरा बहुत आगे जाकर और शीर्ष-रेखा के प्रारम्भिक भाग में रोग के लक्षण हों तथा हृदय-रेखा के बाद के भाग में द्वीप हो तो समझना चाहिए कि जीवन-रेखा के दो द्वीप, जो दो रोगकाल बताते हैं उनमें प्रथम रोग का परिचय शीर्ष-रेखा से मिलेगा क्योंकि जीवन-रेखा का प्रथम द्वीप जीवन-रेखा के प्रारम्भिक भाग में है और शीर्ष-रेखा का द्वीप भी शीर्ष-रेखा के प्रारम्भिक भाग में ही है। जीवन-रेखा में जो अद्वितीय द्वीप है वह आगे चलकर है अर्थात् अधिक आयु में है और इसके मुकाबिले का रोग-लक्षण, हृदय-रेखा में भी आगे जाकर है अर्थात् अधिक उम्र में है। इस कारण द्वितीय बार जब तक यह जातक विशेष बीमार होगा तब हृदयरोग के कारण, यह निष्कर्ष निकालना उचित है।

(२) जीवन-रेखा पर यदि द्वीप-चिह्न हो और उस द्वीप से प्रारम्भ होकर काटने वाली रेखा (जीवन-रेखा को) यदि किसी ग्रह-क्षेत्र को जाती हो तो उस ग्रह-वर्ग-सम्बन्धी रोग का अनुमान करना चाहिए। जिस द्वीप का जिस ग्रह-क्षेत्र से (काटने वाली रेखा द्वारा) सम्बन्ध हो उस द्वीप से निर्धारित जीवन-काल में, उसी ग्रह-क्षेत्र-सम्बन्धी रोग होगा। किस ग्रह-क्षेत्र से क्या बीमारी होती है इसका विवरण नीचे दिया जाता है—

(१) यदि जीवन-रेखा पर द्वीप से कोई रेखा निकलकर शनि-क्षेत्र को जाती हो और इस काटने वाली रेखा पर भी द्वीप-चिह्न हों तो गठिया या वायु-सम्बन्धी विकार होगा। यदि जीवन-रेखा के द्वीप से दूसरी रेखा चन्द्रक्षेत्र के मध्यभाग पर जाती हो तो इस रोग की पुष्टि होती है।

(२) यदि जीवन-रेखा पर द्वीप में से कोई रेखा शनिक्षेत्र को जाती हो और वहाँ जाल-चिह्न हो ; शीर्ष-रेखा के उस भाग पर जो शनिक्षेत्र के नीचे है बिन्दु या द्वीप हों ; तथा नाखून रेखायुक्त और जल्दी टूटने वाले हों तो लकवे की बीमारी होगी ?

(३) जीवन-रेखा पर द्वीप-चिह्न हो और उससे निकलकर कोई रेखा गुरु-क्षेत्र को जाती हो (और वहाँ लाल बिन्दु हो), हाथ का वर्ण और रेखाओं का वर्ण लाल हो तो मूर्च्छा (अधिक भोजन, मदिरा-पान आदि के कारण—रक्तचाप अधिक होने के कारण रोग); यदि मंगल के प्रथम क्षेत्र पर क्रॉस या जाल-चिह्न हो तो इसकी पुष्टि होती है।

(४) जीवन-रेखा पर द्वीप हो, शनिक्षेत्र पर जाल-चिह्न हो और इन दोनों को कोई रेखा जोड़ती हो, स्वास्थ्य-रेखा लहरदार हो तो पित्त रोग, पाचन-शक्ति की कमी, यकृत रोग आदि। (देखिए चित्र नं० ३०)
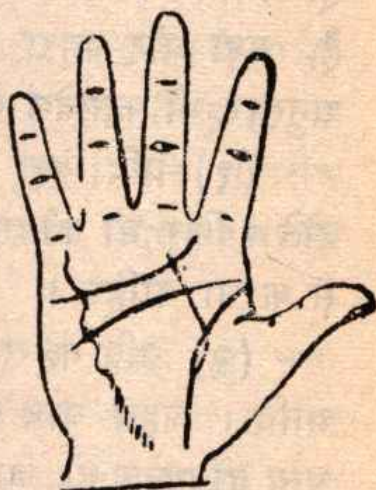
चित्र नं० ३०

यदि हाथ का रंग पीला हो तो इसकी पुष्टि होती है और यदि शीर्ष-रेखा पर छोटे-छोटे द्वीप हों या शीर्ष-रेखा को छोटी-छोटी कई रेखाएँ काटती हों तो पित्त के कारण सिर-दर्द।

अस्वास्थ्य या बीमारी देखनी हो तो तो जीवन-रेखा पर विशेष दृष्टि देनी चाहिए। स्त्रियों में प्रायः ४२ से ४६ वर्ष की अवस्था में जीवन-रेखा पर द्वीप-चिह्न होता है।

यदि इस द्वीप के बाद जीवन-रेखा गहरी हो तो बाद में स्वास्थ्य ठीक रहेगा किन्तु यदि बाद का भाग अधिक पतला या चौड़ा हो या उथला या शृंखलाकार हो तो ऐसी स्त्रियों में पहले जैसी शक्ति और स्वास्थ्य का अभाव रहता है। यदि साथ-ही-साथ चन्द्र-क्षेत्र के नीचे के भाग में जाल चिह्न हों तो स्त्री-रोग अवश्य होते हैं। यदि जीवन-रेखा के द्वीप से चन्द्रक्षेत्र जाल तक कोई रेखा जाती हो तो इस रोग की पुष्टि होती है। जहाँ स्वास्थ्य-रेखा और शीर्ष

रेखा मिलती है वहाँ यदि तारे का चिह्न हो तो भी इस रोग की पुष्टि होती है।

जीवन-रेखा पर बिन्दु-चिह्न

जीवन-रेखा पर जहाँ बिन्दु-चिह्न हो (यानी पिन के ऊपरी भाग के बराबर गड्ढे का चिह्न हो) उन्हें रोग का लक्षण समझना चाहिए। कई बार ये गड्ढे बहुत बड़े भी होते हैं; ये जितने बड़े होंगे उतने ही भयानक सिद्ध होंगे अर्थात् छोटा बिन्दु हल्की बीमारी का द्योतक है, बड़ा और गहरा बिन्दु बड़ी और गहरी बीमारी का। रंग के अनुसार भी फलादेश में तारतम्य होता है। जैसे—

(१) यदि बिन्दु सफ़ेद हों तो इतने अधिक रोगकारक नहीं होते। फिर भी कौनसा रोग होगा इसका निर्णय हाथ के अन्य भागों से करना चाहिए।

(२) यदि गहरा लाल चिह्न हो तो तीव्र ज्वर, मोतीझरा आदि। बहुत बार इन गड्ढों के बाद जीवन-रेखा शृंखलाकार या अन्य दोषयुक्त हो जाती है। इससे यह परिणाम निकालना चाहिए कि ज्वर-रोग के बाद जातक पूर्ण स्वास्थ्य-लाभ नहीं कर सका।

(३) यदि जीवन-रेखा में जिस स्थान पर बिन्दु हो उसके आगे के भाग को काटती हुई कोई रेखा शीर्ष-रेखा पर जाए और वहाँ (शीर्ष-रेखा पर) कोई बिन्दु, द्वीप, क्रॉस या छोटी काटने वाली रेखा हो तो तीव्र ज्वर के कारण मस्तिष्क की दुर्बलता।

(४) यदि जीवन-रेखा पर बिन्दु हो और वहाँ से कोई रेखा मंगल-क्षेत्र पर जाये और स्वास्थ्य-रेखा पर द्वीप-चिह्न हों तो गले और छाती की बीमारी।

(५) यदि जीवन-रेखा पर स्थित बिन्दु से कोई रेखा चन्द्र-क्षेत्र पर जावे और उस पर जाल-चिह्न हो और दूसरी रेखा जीवन-रेखा के बिन्दु से गुरु-क्षेत्र पर जाये तो अंतड़ियों में सूजन तथा उदर-विकार कहना चाहिए।

(६) जीवन-रेखा पर बिन्दु हो और वहाँ से कोई रेखा निकल कर सूर्यक्षेत्र पर जावे तथा इस दूसरी रेखा पर द्वीप, बिन्दु या क्रॉस का चिह्न हो तो हृदय रोग।

(७) जीवन-रेखा पर बिन्दु हो और इसको काटती हुई कोई रेखा ऐसी स्वास्थ्य-रेखा से मिले जो लहरदार हो तथा जिस पर बिन्दु या क्रॉस-चिह्न हो या किसी अन्य छोटी रेखा से कटी हो तो पित्त रोग, यकृत रोग आदि।

(८) जीवन-रेखा पर बिन्दु-चिह्न हो और चन्द्रक्षेत्र के मध्य-भाग पर जाल-चिह्न, क्रॉस या अस्पष्ट तारे का चिह्न हो या छोटी-छोटी आड़ी रेखाएँ हों तो गठिया रोग। यदि शनिक्षेत्र पर बिन्दु-चिह्न हो और वहाँ से कोई रेखा चलकर जीवन-रेखा को काटती हो तो इस रोग की पुष्टि होती है।

(९) जीवन-रेखा पर बिन्दु हो और वहाँ से कोई रेखा चल-कर चन्द्र-क्षेत्र के नीचे भाग पर आये और वहाँ तारे का अस्पष्ट चिह्न, जाल, क्रॉस या छोटी-छोटी आड़ी रेखाएँ हों तो गुर्दे तथा मूत्राशय-सम्बन्धी रोग होते हैं।

(१०) यदि जीवन-रेखा पर ऐसा बिन्दु हो, जो पीला हो, तो पित्त-ज्वर, यकृत-रोग आदि प्रकट करता है।

(११) यदि जीवन-रेखा पर बिन्दु हो और उसकी काटती हुई कोई रेखा, शनिक्षेत्र पर आवे और वहाँ क्रॉस-चिह्न हो तो ऊँचे से गिरना, किसी मोटर या सवारी से टकरा जाना या ऐसा ही कोई अकल्पित आघात या दुर्घटना का भय होता है।

यदि जीवन-रेखा टूटी हुई हो (घ)

यदि जीवन-रेखा टूटी हुई हो तो समझना चाहिए कि प्राण-शक्ति के एकरस प्रवाह में बाधा पड़ गई। यदि जीवन-रेखा पुष्ट और गम्भीर है तो जीवन-रेखा खंडित होने का अधिक दुष्परिणाम नही होता। किन्तु यदि जीवन-रेखा चौड़ी, उथली तथा शृंखलाकार

हो तो प्राणशक्ति पहले ही कम है यह प्रकट होता है। इस कारण जीवन-रेखा खंडित होने से स्वास्थ्य को विशेष धक्का पहुँचता है। जीवन-रेखा खंडित होने का अर्थ है तीव्र रोग या दुर्घटना। यदि जीवन-रेखा टूटी हुई हो और फिर प्रारम्भ हो गई हो अर्थात् दोनों खंडों में विशेष अन्तर न हो तो उतना भयानक नहीं है। यदि इस टूटे हुए स्थान के चारों ओर कोई चतुष्कोण हो तो आपत्ति से रक्षा होना प्रकट करता है। इस प्रकार की हल्की टूट, साधारण दुर्घटना या बीमारी प्रकट करती है और जिस प्रकार बिन्दु या द्वीप-चिह्न अशुभ लक्षण हैं उसी प्रकार इसे भी समझना चाहिए उससे अधिक भयकर नहीं।
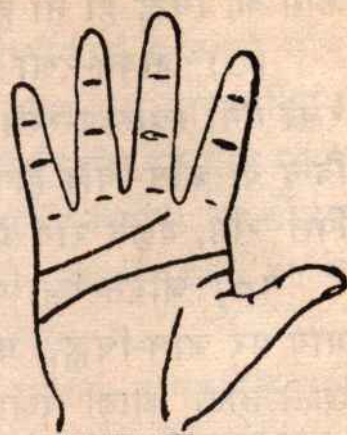
चित्र नं० ३१

किन्तु यदि जीवन-रेखा अधिक टूटी हुई हो अर्थात् जीवन-रेखा के दोनों टुकड़ों के मध्य भाग में अधिक अन्तर हो तो जीवन को भय प्रकट करता है। यदि टूट के स्थान पर जीवन-रेखा के टुकड़े पीछे की ओर शुक्रक्षेत्र पर कुछ घूमे हुए दिखाई दें तो और भी भयंकर है। जीवन-रेखा के दोनों खंडों में जितना अधिक अन्तर हो और जितना अधिक, टूट की जगह, इन टुकड़ों का शुक्र-क्षेत्र पर घुमाव हो उतनी ही अधिक मृत्यु की सम्भावना समझिए।

जहाँ जीवन-रेखा लम्बी हो और अचानक टूट गई हो वहाँ उपर्युक्त निष्कर्ष निकालना उचित है। पुष्टि के लिए दोनों हाथों को देखकर परिणाम निकालिए। यदि बायें हाथ में जीवन-रेखा खंडित है और दाहिने में ठीक है तो उतना भय नहीं।

किन्तु यदि सारी जीवन-रेखा ही छोटे-छोटे टुकड़ों से बनी हो तो उसका वही भाव होगा जो शृंखलाकार रेखा का। ऐसे व्यक्ति की प्राणशक्ति निर्बल होने के कारण उसका स्वास्थ्य अच्छा नहीं

होगा। यदि प्रत्येक टूट के बाद रेख पतली होती जाती है तो ऐसा जातक भी उत्तरोत्तर निर्बल होता जायगा। जिस भाग में जीवन-रेखा है उस भाग से स्वास्थ्य की दशा और जहाँ पर टूट है वहाँ से रोग की दशा का अनुमान करिये। किस प्रकार के रोग-विशेष होंगे यह हाथ के अन्य भागों से मालूम होगा।

किन्तु यदि जीवन-रेखा के छोटे-छोटे टुकड़ों में प्रारम्भिक क्षीणता हो और बाद वाले सवल तथा पुष्ट प्रतीत हों तो समझिए कि उत्तरोत्तर स्वास्थ्य अच्छा होता जायगा। जीवन-रेखा जहाँ ज़रा-सी खंडित हुई हो उसके आगे ही उस पर द्वीप-चिह्न हो या जीवन-रेखा शृङ्खलाकार हो गई हो तो गहरी बीमारी के बाद भी काफ़ी समय तक कुछ-न-कुछ बीमारी चलती रहेगी।

यदि वृद्धावस्था में जीवन-रेखा खंडित हो और उसके बाद का रेखा-खण्ड क्रमशः क्षीण होता चला गया हो तो समझिए कि वृद्धावस्था की किसी भयानक बीमारी के बाद स्वास्थ्य गिरता ही गया है। यदि बाद में अधिक खंडित दिखाई दे तो उस स्थान पर मृत्यु की शंका होगी।

टूटी हुई जीवन-रेखा की क्षति-पूर्ति

अब यह विचार किया जाता है कि यदि जीवन-रेखा टूटी हुई हो तो इसकी क्षति-पूर्ति किसी प्रकार सम्भव है—

(१) यदि खंडित होने के स्थान पर दोनो खण्ड एक-दूसरे के ऊपर आ जावें (और कोई खण्ड भीतर की ओर आँकड़ेदार न हो अर्थात् घूमा हुआ न हो) तो इसका अर्थ है कि रेखा का खंडित होना दोषपूर्ण नहीं रहा।

चित्र नं० ३२

(२) यदि खण्डित भाग के पीछे

जीवन-रेखा के सदृश गोलाई लिए हुए जीवन-रेखा की सहगामिनी कोई रेखा हो तो यह खंडित होने के दोष को उसी तरह दूर करती है जैसे फटे हुए कपड़े पर नये कपड़े की पत्ती लगा दी जाय।

(३) यदि जीवन-रेखा जहाँ खंडित हुई है उस स्थान को चारों ओर से घेरे हुए एक चतुष्कोण हो तो भी खंडित होने का दोष बहुत कुछ दूर हो गया यह समझिए।

शाखायुक्त जीवन-रेखा

यदि नीचे की ओर (मणिबन्ध की ओर) जाती हुई जीवन-रेखा की दो शाखाएँ हो जायँ और वे पास-पास काफ़ी दूर तक चलती रहें तो समझना चाहिए कि जो प्राणशक्ति एक धारा में जा रही थी वह दो धाराओं में विभाजित हो गई। इस कारण उसका प्रवाह कम हो गया। आयु के जितने भाग तक इस प्रकार दो शाखायुक्त रेखा चले जीवन के उस भाग में शक्ति में कुछ कमी प्रतीत होगी। यहाँ इस ओर ध्यान दिलाना आवश्यक है कि जीवन-रेखा के दाहिनो ओर शुक्रक्षेत्र पर ही जीवन-रेखा के आकार की ही और भी कई रेखाएँ होती हैं जिन्हें मंगल-रेखा और प्रभाव-रेखा कहते हैं। इसलिए यह निश्चय कर लेना चाहिए कि जीवन-रेखा ही दो शाखाओं में विभाजित हो मणिबन्ध की ओर गई है। मगल-रेखा या प्रभाव-रेखा को गलती से जीवन-रेखा की शाखा न समझें।

किन्तु यदि जीवन-रेखा दो शाखाओं में विभाजित न हो और उसमें से बाल की तरह बारीक-बारीक छोटी-छोटी रेखाएँ कुछ-कुछ दूर पर फूटकर निकलती हुई दिखाई दें और जीवन-रेखा पुष्ट और गहरी हो तो इससे प्राणशक्ति की कमी प्रकट नहीं होती बल्कि प्राणशक्ति का विशेष प्रवाह कुछ-कुछ फूट निकला है और इस कारण जीवन-रेखा पूर्ण पुष्ट है यह परिणाम निकालना चाहिए।

जीवन-रेखा से निकलकर ऊपर जाने वाली रेखाएँ (ङ)

यदि जीवन-रेखा में से रेखाएँ निकल-निकलकर हाथ में ऊपर की ओर (अर्थात् उंगलियों की ओर) जावें तो यह शुभ लक्षण है। पहले यह बताया जा चुका है कि यदि जीवन-रेखा पतली, शृंखलाकार, द्वीपयुक्त या बिन्दु-सहित हो और उन रोग के परिचायक स्थानों से निकलकर कोई रेखा किसी ग्रहक्षेत्र पर जाकर ऐसे चिह्न से मिल जावे जो स्वयं रोग का लक्षण हो (जैसे—जाल-चिह्न) तो इससे रोग-विशेष का पता लगेगा। अब उन रेखाओं का वर्णन किया जाता है जो सुन्दर, स्पष्ट, गहरी, निर्दोष और पुष्ट जीवन-रेखा से निकलकर अच्छे, उन्नत और विस्तृत ग्रहक्षेत्रों की ओर जाती हैं अर्थात् ये रेखाएँ शुभप्रद और उन्नति की सूचक हैं। जीवन-रेखा प्राणशक्ति की शक्ति की सूचक है। यदि ऐसे स्थान से कोई रेखा निकलती है तो वह प्राण-शक्ति के उत्कर्ष या वृद्धि की सूचक है और जिस उम्र में जातक अपने बल और परिस्थिति के अनुसार उन्नति करेगा।

चित्र नं० ३३

प्राय: बाल्यावस्था के बाद और वृद्धा-वस्था के पहले जब प्राणशक्ति विशेष बलवती होती है तभी ऊपर जाने वाली इन रेखाओं का प्रादुर्भाव होता है। जीवन-रेखा पर जहाँ इन रेखाओं का निकलना बन्द हो जावे तब समझिए उस उम्र में प्राणशक्ति ऊर्ध्वगामी (ऊपर को जाने वाली, उन्नति करने वाली) नहीं रही और इसमें कमी आने लग गई है। जीवन-रेखा के इस

चित्र नं० ३४

स्थान के आगे से रेखाएँ निकलकर यदि नीचे की ओर अर्थात् मणिबन्ध की ओर जाने लगें तो इन्हें गिरावट पैदा करने वाली, अवनति-सूचक रेखाएँ समझना चाहिए। जीवन-रेखा से जो रेखा उंगलियों की ओर जाए वह उन्नतिसूचक तथा जो मणिबन्ध की ओर जावे वह अवनति-सूचक। यदि जीवन-रेखा पर कोई द्वीप हो और उसके तत्काल बाद ही नीचे की ओर जाने वाली रेखाएँ जीवन-रेखा से निकलें तो समझिए, कि इस जातक को कोई गहरी बीमारी हुई और उसके बाद प्राणशक्ति गिरती गई किन्तु यदि पचास या आगे की उम्र के स्थान से नीचे जाने वाली रेखाएँ निकलना प्रारम्भ हों तो यह अनुमान करना उचित है कि वृद्धावस्था की स्वाभाविक क्षीणता के कारण प्राणशक्ति निर्बल हो गई है।

पहले बताया जा चुका है कि बृहस्पति का क्षेत्र यदि उन्नत हो और बृहस्हति के क्षेत्र के ऊपर वाली उंगली (तर्जनी) भी अच्छी हो तो ऐसे जातक पर वृहस्पति का विशेष प्रभाव होगा। किन्तु यदि ऐसे जातक की उंगलियों के प्रथम पर्व लम्बे और अच्छे हैं तो वह साहित्यिक, राजनीतिक अथवा धार्मिक क्षेत्र में उच्च महत्वाकाँक्षा रखेगा। यदि उंगलियों के द्वितीय पर्व अधिक लम्बे और सुन्दर हैं तो वह आर्थिक और व्यावसायिक-क्षेत्र में ख्याति प्राप्त करने का इच्छुक होगा। यदि तृतीय पर्व फूले हुए और पुष्ट हैं तो खाना-पीना और आराम करना, यही उसका ध्येय होगा। इस प्रकार एक बृहस्पति के क्षेत्र से ही उंगलियों के पोरवों की लम्बाई के अनुसार अलग-अलग फल होते हैं। इसका निश्चय हाथ के अन्य भागों को देख कर, विशेषकर उंगलियों के पोरवों से करना चाहिए कि इस व्यक्ति की महत्वाकांक्षाएँ प्रभुता या ख्याति प्राप्त करने की हैं या धन-संग्रह या उससे भी नीचे दर्जे की। किन्तु यदि सुन्दर और पुष्ट जीवन-रेखा से निकलकर कोई रेखा बृहस्पति के क्षेत्र पर आवे तो यह फलादेश करना चाहिए कि जिस वर्ष में यह रेखा जीवन-रेखा से निकली है

उस वर्ष बृहस्पति-वर्ग-सम्बन्धी कोई उन्नति अवश्य होगी। बाल्यावस्था तथा युवावस्था का प्रारम्भिक काल विद्याध्ययन का होता है इस कारण यदि उस समय ऐसी रेखाएँ जीवन-रेखा से निकल कर बृहस्पति-क्षेत्र पर जाएँ तो विद्या-उापर्जन में अर्थात् परीक्षा में सफलता कहना चाहिए। यदि बाद की अवस्था में (जीवन-रेखा के जिस स्थान से रेखा निकले उस स्थान से उम्र का अन्दाज़ करना चाहिए) ऐसी रेखा बृहस्पति के क्षेत्र पर जावे तो पदोन्नति, ख्याति, धनलाभ आदि कहना चाहिए।

यदि ऐसी रेखा बृहस्पति के क्षेत्र पर न जाकर शनि के क्षेत्र पर जावे तो शनि के वर्ग-सम्बन्धी लाभ होगा। यदि सूर्य या बुध के क्षेत्रों पर जाकर समाप्त हो तो सूर्य-वर्ग या बुध-वर्ग-सम्बन्धी लाभ कहना चाहिए। चित्र में स्वास्थ्य-रेखा दिखाई गई है। (देखिये चित्र नं० २०) उस स्वास्थ्य-रेखा में और जीवन-रेखा से निकलकर उन्नति-सूचक जो रेखा बुधक्षेत्र को जाती है उसमें अन्तर है।

इसी प्रकार यदि जीवन-रेखा से निकलकर रेखा मंगल या चन्द्रक्षेत्र को जावे तो उसे ग्रह-वर्ग-सम्बन्धी लाभ या उन्नति होगी।

एक बात की ओर ध्यान दिलाना परमावश्यक है। ये जितनी ऊर्ध्वगामो उन्नतिसूचक रेखाएँ बताई गई हैं वे सब जीवन-रेखा से ही निकलतो हैं। जोवन-रेखा के पीछे से उसको काटती हुई नहीं आतीं। जीवन-रेखा से ही निकलने वाली रेखाएँ शुभ हैं, जीवन-रेखा को काटने वाली रेखाएँ अशुभ हैं इस बात को सदैव ध्यान में रखना चाहिए। दोनों भिन्न-भिन्न प्रकार की रेखाएँ हैं। इनको सही पहचानने का अभ्यास कर फलादेश करना उचित है।

जोवन-रेखा का अन्त (च)

यह बताया जा चुका है कि जीवन-रेखा पर यदि द्वीप-चिह्न हों या कटी हुई हो या अन्य लक्षण हों तो उनका क्या फल होता है। परिणाम क्या होगा या कब तक जीवन चलेगा यह बहुत-कुछ इस

बात पर निर्भर है कि जीवन-रेखा का अन्त कैसे और कहाँ होत. है।

यदि जीवन-रेखा गहरी और बलिष्ठ है और जहाँ तक जाकर रुक जाती है वहाँ तक सुन्दर, गहरी, पूर्ण प्राणशक्ति लिए हुए प्रतीत होती है तो ऐसा जातक आख़ीर तक पूर्ण स्वस्थ और बलवान रहेगा। जीवन-रेखा के अन्त में कोई विशेष चिह्न न होना यह बताता है कि मृत्यु के पहले कोई लम्बी बीमारी नहीं होगी। इस लक्षण की पुष्टि के लिए हृदय-रेखा और शीर्ष-रेखा भी ध्यान से देखनी चाहिएँ कि कोई स्नायविक या हृद्रोग या दिमाग की कमज़ोरी तो जीवन के अन्तकाल में प्रकट नहीं होती। यदि हाथ को देखने से बृहस्पति या मंगल का प्रभाव अधिक हो तो मृत्यु तक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा इस लक्षण की पुष्टि होती है।

यदि जीवन-रेखा बीच में ही समाप्त हो जाय तो यह जीवन के अन्त का लक्षण है। ऐसी स्थिति में यदि जीवन-रेखा की समाप्ति पर कोई बीमारी प्रकट करने वाला चिह्न न हो और शीर्ष-रेखा पर (करीब-करीब उसी अवस्था पर जिस पर जीवन-रेखा समाप्त होती है) बिन्दु, क्रॉस, या अन्य चिह्न हो तो यह अन्तिम बीमारी का द्योतक है। इससे यह अनुमान लगाना चाहिए कि शिर-सम्बन्धी किसी रोग से मृत्यु होगी। यदि ऐसा ही कोई रोग-लक्षण हृदय-रेखा पर हो तो हृद्रोग का अनुमान करना उचित है।

चित्र नं० ३५

जब जीवन-रेखा का गहरी और बलिष्ठ दशा में ही सहसा अन्त हो जावे तो मृत्यु के पूर्व लम्बी बीमारी नहीं होती, बल्कि सहसा बीमार होकर दस-पाँच दिन में ही मनुष्य समाप्त हो जाता है। यदि इस मृत्यु-समय को प्रकट करने वाले जीवन-रेखा के अन्त पर कोई क्रॉस, बिन्दु या अन्य चिह्न हों तो वह

बीमारी का कारण प्रकट करेगा। जीवन-रेखा के अतिरिक्त अन्य किसी रेखा में निरन्तर अस्वास्थ्य के चिह्न हों और जीवन-रेखा सहसा बलिष्ठ रूप में ही समाप्त हो जावे तो यह परिणाम निकालना चाहिए कि साधारण अस्वास्थ्य रहता था परन्तु मृत्यु सहसा तीव्र आक्रमण के कारण हुई। उदाहरण के लिए यदि स्वास्थ्य-रेखा पित्तज या यकृत रोग प्रकट करती हो तथा उस पर क्रॉस, बिन्दु आदि का चिह्न हो और सहसा जीवन-रेखा का अन्त हो जाये तो पित्तज रोग से मृत्यु होगी यह अनुमान करना चाहिए।

जीवन-रेखा का जहाँ अन्त होता है वहाँ से कोई रेखा निकलकर किसी ग्रहक्षेत्र पर जाती हो या किसी अन्य रेखा से मिलती हो और कोई रोग-चिह्न हो तो उस चिह्न-प्रदर्शक रोग के कारण मृत्यु होगी यह परिणाम निकालना उचित होगा। उदाहरण के लिए यदि जीवन-रेखा का सहसा अन्त होता हो और वहाँ से एक रेखा चलकर बृहस्पति के क्षेत्र पर आवे जहाँ पर अशुभ बिन्दु-चिह्न हो तो रक्तचाप-जनित मूर्च्छा से मृत्यु होगी। यदि बृहस्पति की बजाय शनि-क्षेत्र पर रेखा आवे—जहाँ अशुभ बिन्दु-चिह्न हो—तो लकवा या शनि-वर्ग की अन्य बीमारी होगी। यदि इसके अतिरिक्त शनि-क्षेत्र के नीचे शीर्ष-रेखा पर अशुभ बिन्दु, क्रॉस या तारे का चिह्न हो तो लकवे आदि रोगों की पुष्टि होती है। इसी प्रकार यदि अन्य किसी ग्रहक्षेत्र पर जीवन-रेखा के अन्त से रेखा जावे और उस पर अशुभ चिह्न हो तो ग्रह-क्षेत्र के अनुसार अंतिम रोग का निर्देश करना चाहिए। जब जीवन-रेखा सहसा अन्त प्रकट करती हो तो किसी भी ग्रह-सम्बन्धी रोग हो वह भी जीवन का अन्त करने वाला होगा यह ध्यान रखना उचित है।

यदि जीवन-रेखा गहरी और बलिष्ठ दशा में ही अन्त हो जाती है तो यह भी सम्भव है कि बाद में वह बढ़ जावे और मृत्यु न हो। कई बार सहसा अन्त होने के पहले जीवन-रेखा कुछ कमजोर भी

हो जाती है किन्तु ऐसी दशा में भी यह सम्भव है कि जीवन उस अवस्था को प्राप्त होने पर प्राणशक्ति बलवान् हो जाय और जीवन-रेखा में प्रणशक्ति का प्रवाह आगे बढ़ निकले।

किन्तु यदि जीवन-रेखा के अन्त पर क्रॉस, बिन्दु या तारे का चिह्न हो या स्वयं जीवन-रेखा का अन्त गोपुच्छाकृति हो जावे तो जीवन का अन्त ही समझना चाहिए। अब तक ऐसी जीवन-रेखाओं के विषय में बताया गया है जिनका गहरी और बलिष्ठ दशा में ही अन्त हो जाता है। अब ऐसी जीवन-रेखाओं के विषय में विचार किया जायेगा जो क्रमिक ह्रास प्रकट करती हैं।

यदि जीवन-रेखा अन्त होने के पहले क्रमशः कमजोर होती जावे अर्थात् पतली, अस्पष्ट और उथली हो जाये या अन्त में गोपुच्छाकृति हो जाये तो ऐसे व्यक्ति वर्षों तक क्रमशः कमज़ोर होते जाते हैं और लम्बी बीमारी के बाद उनका अन्त होता है। किस प्रकार की लम्बी बीमारी होगी इसका अनुमान जीवन-रेखा और के अन्त से जाने वाली रेखाओं से, हृदय, शीर्ष तथा स्वास्थ्य रेखाओं से और ग्रहक्षेत्रों के चिह्नों से करना चाहिए।
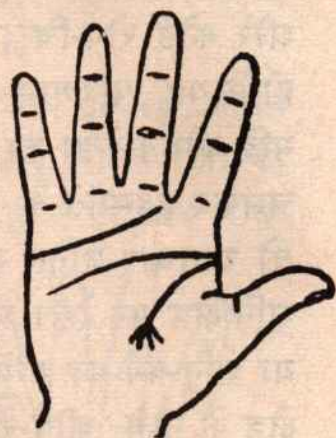
चित्र नं० ३६

यदि जीवन-रेखा अन्त भाग में शाखायुक्त हो जाये तो यह परिणाम निकालना चाहिए कि प्राणशक्ति का प्रवाह दो धाराओं में बँट जाने के कारण मन्द हो गया। इस कारण दीर्घ आयु की सम्भावना कम हो गई। यदि दोनों शाखाएँ बहुत ही क्षीण, पतली, अस्पष्ट और उथली हों तो आगे के काल में जीवित रहने की सम्भावना भी कम है। किन्तु विभाजित हो जाने पर भी यदि दोनों शाखाएँ गहरी, स्पष्ट और बलिष्ठ हैं तो इस काल के बाद भी जीवित रहने की सम्भावना है। जहाँ भी जीवन-रेखा की क्षीणता

प्रकट हो, यदि आयु के उसी भाग में शीर्ष-रेखा और हृदय-रेखा निर्दोष और पुष्ट हों तो जीवित रहने की सम्भावना अधिक हो जाती है।

जीवन-रेखा अन्तिम स्थिति में यदि दो शाखायुक्त हो जाये तो यह देखना चाहिए कि दोनों शाखाएँ पास-पास हैं या एक-दूसरे से बहुत दूर। यदि पास-पास हों तो आगे जीवित रहने की सम्भावना अधिक किन्तु यदि दूर-दूर हों तो कम सम्भावना समझनी चाहिए। यदि जीवन-रेखा छोटी है तो दीर्घ आयु की सम्भावना भी स्वभावतः कम होगी।

यदि अंतिम स्थिति में जीवन-रेखा तीन शाखाओं में विभाजित हो जाये तो और भी अधिक प्राणशक्ति का ह्रास प्रकट होता है। यदि तीनों ही शाखाएँ निर्बल और एक-दूसरे से दूर-दूर हों तो आगे जीने की सम्भावना भी बहुत कम होगी। किन्तु यदि बीच की शाखा गम्भीर और पुष्ट हो तो जातक इस समय के बाद भी जी सकता है।

यदि जीवन-रेखा अन्त में गोपुच्छाकृति हो जाये तो जीवन के अन्त में प्राणशक्ति का अत्यन्त ह्रास और व्यय प्रकट होता है। प्रायः ६०-६५ वर्ष की अवस्था के स्थान पर ऐसी रेखा दिखाई देती है जब वृद्धावस्था के कारण मनुष्य शक्तिहीन हो जाता है। किन्तु यदि इसके पहले की अवस्था में जीवन-रेखा का अन्त होता हो और वहीं गोपुच्छाकृति हो तो जातक उसी अवस्था पर पहुँच-कर निर्बल और शक्तिहीन हो जायगा। कुछ पाश्चात्य विद्वानों का मत है कि यह चिह्न (गोपुच्छाकृति) प्राणशक्ति का ह्रास नहीं किन्तु धन-शक्ति का ह्रास बताता है। (देखिये चित्र नं० ३६ पृष्ठ १५८)

यदि जीवन-रेखा का अन्तिम भाग मुड़कर किसी ग्रहक्षेत्र पर चला जाय

यदि जीवन-रेखा का अन्तिम भाग मुड़कर किसी ग्रहक्षेत्र पर

चला जाय और उस ग्रहक्षेत्र पर अशुभ चिह्न न हो तो समझना चाहिए कि जीवन के उस भाग में उस ग्रह-सम्बन्धी प्रभाव अधिक होगा। किन्तु यदि वहाँ (ग्रहक्षेत्र पर) कोई जाल, क्रॉस, बिन्दु या अशुभ चिह्न हो और जीवन-रेखा उनसे योग करे तो उस ग्रह-सम्बन्धी रोग होगा। उदाहरण के लिए यदि ४० वर्ष की अवस्था में जीवन-रेखा मुड़कर चन्द्रक्षेत्र के मध्य भाग पर चली जाती है और वहाँ अशुभ जाल चिह्न से योग करती है तो गठिया या अन्य वातज रोग होगा। यदि स्त्रियों के हाथ में जीवन-रेखा चन्द्रक्षेत्र के नीचे के तृतीयांश में जावे तो मासिकधर्म-सम्बन्धी रोग समझना चाहिए।

यदि जीवन-रेखा चलती-चलती कहीं अचानक रुक जावे और वहाँ क्रॉस-चिह्न हो तो अचानक बीमारी के कारण मृत्यु होगी। कोई लम्बा रोग न होगा। जितना ही 'क्रॉस' स्पष्ट हो उतनी ही अधिक अचानक बीमारी द्वारा मृत्यु की सम्भावना होगी।

इसी प्रकार यदि जीवन-रेखा कहीं बीच में ही समाप्त हो जावे और उसे अर्गला* की भाँति कोई छोटा रेखा-खण्ड आड़ा रोके तो भी अचानक मृत्यु का लक्षण है।

जब कभी भी अचानक मृत्यु का उपर्युक्त कोई लक्षण दिखाई दे तो दोनों हाथों को सावधानी से देखना चाहिए। यदि बायें हाथ में जीवन-रेखा पूर्ण हो और केवल दाहिने हाथ में पूर्णायु से पूर्व सहसा मृत्यु का लक्षण हो तो समझिये कि जन्मजात किसी अवयव (शरीर-भाग) की कमज़ोरी के कारण जातक की बीच में ही मृत्यु नहीं होगी, किन्तु उसने किसी दुर्व्यसन के कारण अपने शरीर में दुर्बलता या रोग उत्पन्न कर लिया है। हृदय-रेखा या स्वास्थ्य-रेखा या किसी ग्रहक्षेत्र पर रोग-विशेष दिखाई दे तो

---

*अर्गला—लकड़ी का टुकड़ा जो दरवाजा बन्द करने के लिए भीतर से आड़ा लगा दिया जाता है।

जातक को सावधान कर देना चाहिये जिससे वह रोग के कारण को दूर करने की चेष्टा करे और अकाल-मृत्यु का शिकार न हो।

बायाँ हाथ जन्म की स्थिति का द्योतक है। दाहिना हाथ जन्मोत्तर (जन्म के बाद की) परिस्थिति का।

यदि अधूरी जीवन-रेखा के अन्त पर बिन्दु-चिह्न हो तो भी सहसा बीमारी से मृत्यु होगी। किस रोग से होगी इसका परिज्ञान हाथ के अन्य भाग से होगा। इसी प्रकार अधूरी जीवन-रेखा के अंत पर तारे का चिह्न हो तो आकस्मिक रोग से मृत्यु का लक्षण है।

चित्र नं० ३७

किन्तु यदि जीवन-रेखा अधूरी न हो, पूरी हो और उस पर क्रॉस-चिह्न हों तो जीवन का अंत नहीं होगा। कोई रोग या दुर्घटना-मात्र होगी। 'क्रॉस' प्राणशक्ति के अवरोध (रुकावट) प्रकट करते हैं और यदि जिस अवस्था पर जीवन-रेखा पर क्रॉस-चिह्न है उसी अवस्था पर भाग्य-रेखा या सूर्य-रेखा पर अशुभ चिह्न हो तो रोग के कारण भाग्य में हानि प्रकट होती है।
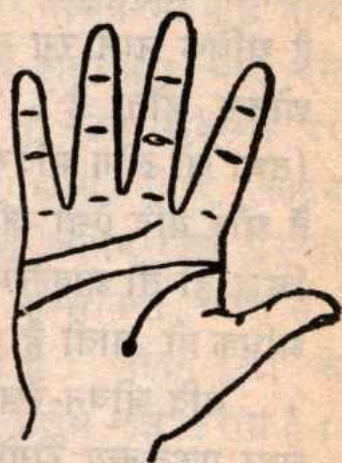
यदि जीवन-रेखा पर तारे का चिह्न हो तो यह भी अकाल-मृत्यु का द्योतक है। यदि जीवन-रेखा के बिलकुल पास, नीचे की ओर तारे का चिह्न हो और जीवन-रेखा से कोई छोटी रेखा निकलकर इस तारे के चिह्न से योग करे तो यह भी किसी दुर्घटना या सांघातिक* रोग का द्योतक है। यदि दोनों हाथों में एक ही अवस्था पर अशुभ चिह्न हों तो परिणाम बहुत भयंकर है। केवल बायें हाथ पर उतना अशुभ नहीं है।

---

* जिसके कारण संभवतः मृत्यु हो जावे।

जीवन-रेखा का रंग

जीवन-रेखा के रंग से भी बहुत-कुछ स्वास्थ्य का अनुमान लगाया जा सकता है। जीवन-रेखा चाहे अच्छी भी हो किन्तु यदि उस का रंग सफ़ेदी लिये हो तो बहुत सुन्दर स्वास्थ्य नहीं रहेगा। यदि जीवन-रेखा स्पष्ट और गहरी हो और उसका रंग भी कुछ लालिमा लिये हो तो यह अच्छे स्वास्थ्य का लक्षण है। यह स्मरण रखना चाहिए कि अधिक लाल रंग होना अच्छा नहीं है बल्कि दोष है अधिक लाल रंग बहुत बार ज्वर तथा अधिक रक्तचाप* का द्योतक होता है। ऐसे व्यक्ति आवश्यकता से अधिक भोजन (तथा जो लोग मदिरा पीते हों वह मदिरा पीने) के शौकीन होते हैं और यदि ऐसी जीवन-रेखा पर क्रॉस, तारे या अन्य अशुभ चिह्न हों तो आकस्मिक जीवन का अवसान होने की संभावना बहुत अधिक हो जाती है।

यदि जीवन-रेखा का रंग कुछ पीलापन लिये हो तो पित्तज तथा यकृतजन्य रोगों का द्योतक है। ऐसे व्यक्तियों के शनि तथा बुध के क्षेत्र और स्वास्थ्य-रेखा सावधानी से देखनी चाहिये। यदि स्वास्थ्य-रेखा लहरदार हो या नसेनी की तरह हो, या उस पर बिन्दु, क्रॉस, अर्गला-रेखा या द्वीप-चिह्न हों तो तीव्र यकृत रोग, पीलिया आदि के द्योतक हैं। यदि स्वास्थ्य-रेखा के द्वीपों के साथ-साथ जीवन-रेखा भी पीलापन लिये हो तो ऐसा जातक सदैव चिड़-चिड़ा मिज़ाज होगा, बारम्बार पित्त रोगों से उसकी स्नायविक-शक्ति दुर्बल हो जावेगी और यदि हाथ के अन्य लक्षण चोरी, धोखेबाज़ी या अन्य दुर्व्यसन प्रकट करते हों तो ऐसा व्यक्ति निकृष्ट कोटि का— विश्वास के योग्य नहीं होगा। यदि शनिक्षेत्र से अपराध करने की प्रवृत्ति और बुध-क्षेत्र से चालाकी प्रकट हो और जीवन-रेखा

*Blood Pressure.

पीलापन लिये हो तो ऐसे व्यक्ति धोखेबाज़ होते हैं। यदि साथ ही मंगल का क्षेत्र अति उन्नत, शीर्ष-रेखा सीधी और मंगल का प्रथम क्षेत्र पार कर हाथ के बगल तक जा रही हो और अँगुष्ठ का प्रथम पर्व गदाकार हो तो ऐसा जातक 'खून' तक करने में नहीं हिचकता।

यदि जीवन-रेखा का रंग कुछ नीलापन लिये हो तो यह प्रकट होता है कि शरीर में रक्त का प्रसार ठीक नहीं है। यदि हृदय-रेखा भी अच्छी न हो और नीलापन लिये हो, तथा नाखून भी कुछ नीले हों तो हृदय-रोग काफ़ी अधिक है, यह सूचित होता है। यदि ऐसे हाथ में जीवन-रेखा पर तारे का चिह्न हो तो उस अवस्था पर हृद्रोग से सहसा मृत्यु होना विशेष सम्भव है। क्रॉस, बिन्दु, काटने वाली अर्गला-रेखा आदि कोई भी अशुभ चिह्न जीवन-रेखा पर हों तो ऐसे हाथ पर आकस्मिक मृत्यु की विशेष सम्भावना करते हैं। किन्तु तारे का चिह्न सबसे अधिक अशुभ है। जीवन-रेखा के बिलकुल पास भी तारे का चिह्न हो, तो भी अशुभ फल करता है।

उपर्युक्त जो दोष बतलाये गये हैं वे पतली या मोटी दोनों प्रकार की जीवन-रेखा को दोषयुक्त करते हैं। यदि रेखा पतली हो और हाथ बहुत लाल हों तो यह प्रकट होता है कि प्राण-शक्ति का वेग बहुत है और जीवन-रेखा पतली होने से उसमें समा नहीं पाती। वह भी स्वास्थ्य के लिए अशुभ चिह्न है। जिन की जीवन-रेखा पतली तथा पीलापन लिये हुए होती है वे प्रायः क्षुद्र प्रकृति के होते हैं। उनमें उदारता तथा हृदय की विशालता नहीं होती। यदि शृङ्खलाकार या चौड़ी और उथली जीवन-रेखा हो तो शारीरिक शक्ति की निर्बलता प्रकट होती है। जिनके हाथ में जीवन-रेखा बहुत पतली हो वे प्रायः स्वास्थ्य-सम्बन्धी कुछ-न-कुछ शिकायत करते रहते हैं। उनमें स्थिरता या आमोद-प्रमोद के लिए जोश नहीं होता। ऐसा व्यक्ति शीघ्र निराश हो जाता है किन्तु
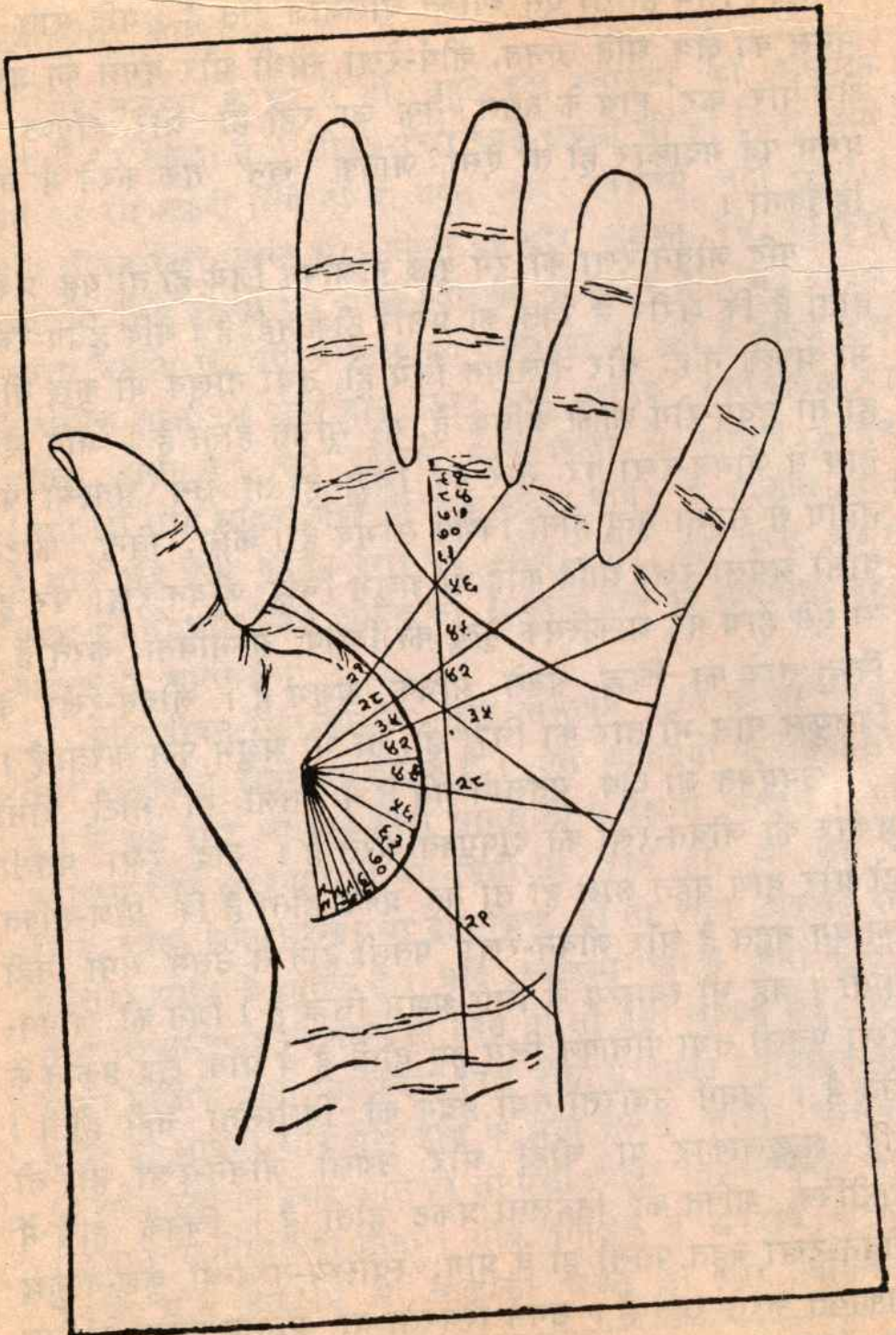
चित्र नं० ३८

जिसकी रेखा ललाई लिये हो वह उत्साहशील होता है। उथली और चौड़ी, शृंखलाकार या पतली रेखा हो और गुलाबी रंग हो तो रेखा-सम्बन्धी निर्बलता की काफ़ी क्षतिपूर्ति हो जाती है।

इन सब बातों का अच्छी तरह विचार कर मनुष्य के शरीर-लक्षणों से तथा हाथ के अन्य लक्षणों से समन्वय और सामञ्जस्य कर फलादेश करना चाहिये।

(परिचय—चित्र नं० ३८)

जीवन-रेखा में किस स्थान से क्या उम्र समझना यह सुप्रसिद्ध हस्त-परीक्षक 'कीरो' ने साथ का चित्र देकर समझाया है। इसी प्रकार भाग्य-रेखा पर किस स्थान से क्या उम्र समझना यह भी दिखाया गया है।

सबके हाथों की बनावट तथा रेखा समान रूप से गोलाई लिये हुए नहीं होती इस कारण कोई एक 'नाप' सबके लिए उपयुक्त नहीं होता। किन्तु अभ्यास करते-करते उम्र का अन्दाज़ ठीक बैठने लगता है।

११वाँ प्रकरण

शीर्ष-रेखा

जिस रेखा का इस पुस्तक में शीर्ष-रेखा के नाम से वर्णन किया गया है उसे भारतीय मतानुसार धन-रेखा, विभव-रेखा आदि कहते हैं—

"आ पाणि मूलकरभान्निसृत्यांगुष्ठतर्जनी मध्ये।
नूनं भवन्ति तिस्रो गोत्र द्रव्यायुषो रेखा॥"

(स्कन्द पुराण)

अर्थात् हाथ के मूल तथा हथेली के बग़ल के भाग से निकलकर अँगूठे और तर्जनी के बीच वाले भाग तक तीन रेखा जाती हैं उन्हें क्रमशः गोत्र-रेखा, द्रव्य-रेखा तथा आयु-रेखा कहते हैं। गोत्र-रेखा का ही नाम 'जीवन-रेखा' है और उसका विस्तृत परिचय १०वें प्रकरण में दिया जा चुका है। जिसे भारतीय मतानुसार 'आयु-रेखा' कहते हैं उसे पाश्चात्य मत से हृदय-रेखा कहते हैं। उसका विस्तृत परिचय अग्रिम (१२वें) प्रकरण में दिया जायगा। बीच की रेखा को अंग्रेज़ी में मस्तिष्क-रेखा (मस्तक-रेखा) या शीर्ष-रेखा कहते हैं। भारतीय मतानुसार यह धन-रेखा या विभव-रेखा कहलाती है। इसका संभवतः कारण यह है कि धन कमाना या संग्रह करना बहुत कुछ मस्तिष्क और स्वभाव पर निर्भर होता है। इस रेखा को लक्षणों के अनुसार इसे 'व्याघ्रविलास लीला', 'मृगीगति', 'वराटिका' आदि अनेक नाम दिये गये हैं। इसका फल कि यदि यह सुन्दर, बलिष्ठ और लम्बी हो तो मनुष्य धनी, बुद्धिमान व विद्वान् होता है। अब पाश्चात्य मतानुसार इसका विस्तृत वर्णन किया जाता है।

पाश्चात्य मत से भी हाथ में जो तीन प्रधान रेखा हैं उनमें से यह एक है। इससे मनुष्य के मस्तिष्क और बुद्धि का पता लगता है कि वह बुद्धिमान है या मूर्ख; उसकी मानसिक विचारधारा किस ओर जाती है और उसकी बुद्धि का उसके जीवन में क्या उपयोग होगा।

शीर्ष-रेखा का प्रारम्भ

बृहस्पति-क्षेत्र के नीचे तथा जीवन-रेखा के प्रारम्भ के ऊपरी भाग से प्रारम्भ होकर मंगल के प्रथम क्षेत्र या चन्द्र-क्षेत्र की ओर यह जाती है। बहुत से हाथों में यह बृहस्पति-क्षेत्र के अन्दर से प्रारम्भ होती है या कभी-कभी जीवन-रेखा के भीतर मंगल के द्वितीय क्षेत्र से ही प्रारम्भ हो जाती है। (देखिये चित्र नं० ३९)
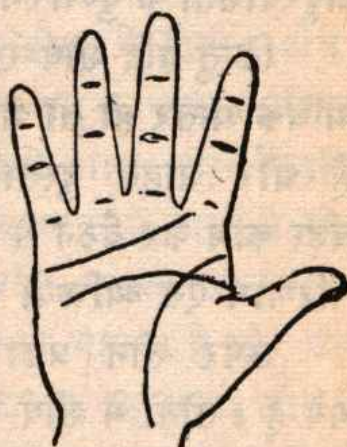
चित्र नं० ३९

यदि बृहस्पति-क्षेत्र से प्रारम्भ हो और शीर्ष-रेखा तथा जीवन-रेखा प्रारम्भ में एक-दूसरे से स्पर्श करती हों तो इसका प्रारम्भ शुभ समझना चाहिये। यह योग रेखा को बल प्रदान करता है और यदि रेखा लम्बी भी हो तो बलिष्ठ रेखा समझनी चाहिए। ऐसा व्यक्ति शासन में निपुण होता है और उसमें अधिकार तथा महत्वाकांक्षा की भावना प्रबल होती है। बृहस्पति-क्षेत्र से संयोग होने के कारण शीर्ष-रेखा में उदात्त भावना और महत्वाकांक्षा के साथ-साथ न्यायप्रियता, दयालुता और समझदारी भी होती है, इस कारण वह अधिकार-प्रयोग में उद्दण्डता या कठोरता का व्यवहार नहीं करता। जीवन-रेखा से योग होने के कारण उसमें बौद्धिक शक्ति का प्राणशक्ति से समन्वय होता है। वह साहसपूर्वक कार्य को आगे बढ़ाता है किन्तु विचार, सावधानी और सतर्कता भी उसमें पर्याप्त मात्रा में होती है।

यदि बृहस्पति के क्षेत्र से तो शीर्ष-रेखा प्रारम्भ हो किन्तु जीवन-रेखा से इसका योग न हो; दोनों में थोड़ा अन्तर हो तो ऐसे जातक में उपर्युक्त गुण तो विद्यामान होंगे किन्तु सतर्कता और सावधानी कम होगी। साहस अधिक होने से बिना गुण-दोष का विचार किये वह काम को जल्दी से कर डालेगा। 'नीति' की अपेक्षा उसमें साहस विशेष होगा। इसलिए जिन कार्यों में सहसा साहस-पूर्वक कार्य निपटा लेना चाहिए उनमें उसे सफलता मिलेगी किन्तु अदूरदर्शिता के दुष्परिणाम से भी ऐसे लोग नहीं बच सकते।

किन्तु यदि शीर्ष-रेखा और जीवन-रेखा के प्रारम्भिक भागों में अधिक अन्तर हो तो अदूरदर्शिता की मात्रा बहुत अधिक हो जाती है और साहस दुस्साहस हो जाता है। इस कारण जल्दबाज़ी में बड़ा काम कर बैठने से जो हानि या घाटा उठाना पड़ता है वही परिणाम ऐसे व्यक्तियों को भोगना पड़ता है।

ऊपर तीन प्रकार की शीर्ष-रेखा के प्रारम्भिक स्थान बताये गये हैं। तीनों में शीर्ष-रेखा (१) जीवन-रेखा से मिली हुई, (२) दोनों के प्रारम्भिक भागों में कुछ अन्तर तथा (३) विशेष अन्तर हो तो क्या परिणाम होता है यह बताया गया है, किन्तु उपर्युक्त तीनों ही दशा में शीर्ष-रेखा का प्रारम्भ बृहस्पति-क्षेत्र के अन्दर से बताया गया है। यदि बृहस्पति-क्षेत्र से शीर्ष-रेखा का योग न हो, अर्थात् वहाँ से प्रारम्भ न होकर उस क्षेत्र के नीचे से प्रारम्भ हो और शीर्ष-रेखा का प्रारम्भिक भाग जीवन-रेखा से मिला हो तो जातक में साहस की बहुत कमी होती है। वह किसी काम को करने में इतना सोच-विचार करता है कि वह तो सोच-विचार में ही पड़ा रहता है और अन्य साहसी लोग बाज़ी मार ले जाते हैं। सतर्कता और सावधानी यदि ज़रूरत से ज्यादा हो और प्रत्येक कदम आदमी सोच-सोचकर रखे तो बड़ा काम नहीं कर सकता। ऐसे लोग किसी भी नये काम करने में झिझकते हैं। नौकरी करते रहेंगे।

यदि व्यापार का अच्छा मौका मिलेगा या नई—पहले से बहुत अच्छी नौकरी भी मिले, तो भी न जाने क्या परिणाम हो इस आशंका से कोई नया कदम नहीं उठाते। ऐसे व्यक्ति जल्दी में घबरा जाने वाले होते हैं। चिन्ता करते रहना उनका स्वभाव ही हो जाता है। किन्तु यदि अँगुष्ठ का प्रथम पर्व बलिष्ठ हो और बृहस्पति का क्षेत्र उच्च हो तो यह दोष कम हो जाता है। जातक में उत्साह, आत्मशक्ति तथा साहसपूर्वक अपने निर्णय को कार्यान्वित करने का बल होता है।

यदि जीवन-रेखा के भीतर से अर्थात् मंगल के द्वितीय क्षेत्र से शीर्ष-रेखा प्रारम्भ हो तो मस्तिष्क पर मंगल-ग्रह का अशुभ परिणाम होने के कारण ऐसा व्यक्ति सदैव झुंझलाने वाला तथा चिड़चिड़े मिज़ाज का होगा। पड़ोसियों से या साथ काम करने वालों से हमेशा झगड़ा करता रहेगा। उसके मातहत सदैव उसकी झल्लाहट से परेशान रहेंगे। वह जल्दी ही चिन्तायुक्त हो जायगा है और उसके विचारों में शान्ति या स्थिरता न होने के कारण वह किसी काम को शुरू से लेकर आख़ीर तक मुस्तकिल मिज़ाजी के साथ अञ्जाम नहीं दे सकता। स्वभावतः ये अवगुण सफलता में बाधक होते हैं।

इस प्रकार (१) जीवन-रेखा से मिली हुई, (२) प्रारम्भिक अवस्था में कुछ दूर तथा (३) बहुत दूर—इन तीनों लक्षणों का सामान्य फल बतलाने के बाद, अन्य लक्षणों के साथ इनका क्या परिणाम होता है यह संक्षेप में बतलाया जाता है—

(१) (क) यदि शीर्ष-रेखा तथा जीवन-रेखा दोनों उद्गम-स्थान पर एक-दूसरे से भिड़ी न हों और, यदि हाथ मुलायम न हों तथा उंगलियों के प्रथम पर्व चतुष्कोणाकार हों तो आत्म-विश्वास और शक्ति होती है।

(ख) यदि बृहस्पति तथा मंगल के क्षेत्र अति विस्तृत तथा अति उन्नत हों तो अत्यधिक साहस और आत्म-विश्वास होता है।

(ग) यदि बृहत् चतुष्कोण पर क्रॉस-चिह्न हो तो अत्यधिक उत्साह होता है।

(घ) यदि शीर्ष-रेखा बृहस्पति-क्षेत्र के ऊपरी भाग (तर्जनी के नीचे) से प्रारम्भ होकर बृहस्पति-क्षेत्र के नीचे गोलाई लिये आवे और फिर सीधी हथेली के दूसरी ओर तक चली जावे तो वृथाभिमान अधिक मात्रा में होता है।

चित्र नं० ४०

(ङ) और यदि शीर्ष-रेखा चन्द्रक्षेत्र की ओर झुकती हुई जावे; हृदय-रेखा अच्छी न हो तथा अँगुष्ठों का प्रथम पर्व छोटा और चौड़ा हो तो जातक ज़िद्दी तथा झगड़ालू होता है।

(च) यदि शीर्ष-रेखा जीवन-रेखा से दूर, शनि के क्षेत्र के नीचे प्रारम्भ हो (हथेली में अपने स्वाभाविक स्थान पर, न नीची न ऊँची) तो युवावस्था में नेत्र-विकार होता है।

(२) यदि (अ) शीर्ष-रेखा के प्रारम्भ में दो शाखा हों—एक शाखा जीवन-रेखा से मिली हो और दूसरी शाखा हृदय-रेखा का स्पर्श करे किन्तु उसे काटे नहीं, (आ) तथा हृदय-रेखा भी प्रारम्भ में दो शाखायुक्त हो तो भाग्योदय का उत्तम लक्षण है।

चित्र नं० ४१

(३) यदि शीर्ष-रेखा और जीवन-रेखा के प्रारम्भ में काफ़ी अन्तर हो और मंगल तथा बृहस्पति के क्षेत्र अति विस्तीर्ण तथा अति उन्नत हों और बुध का क्षेत्र नीचा हो, तो वृथाभिमान, दुस्साहस तथा स्वभाव में अदूरदर्शिता होती है। यदि शीर्ष-रेखा छोटी हो तो बुद्धि की कमी भी समझना चाहिये।

यदि उंगलियों की गाँठें छोटी और बाहर निकली हुई न होने के कारण उंगलियाँ चिकनी प्रतीत हों तो ऐसे व्यक्ति में व्यावहारिक चतुरता नहीं होती।

शीर्ष-रेखा की दिशा तथा रूप, गुण, अवगुण आदि

यदि शीर्ष-रेखा अपने स्वाभाविक स्थान की अपेक्षा नीची हो, (अर्थात् उंगलियों की जड़ से जितनी दूर होना चाहिये उसकी अपेक्षा अधिक दूर हो) तो आत्मविश्वास की कमी होती है और थोड़ी सी बात या कष्ट से ऐसे व्यक्ति नाराज़ तथा दुःखी हो जाते हैं।

यदि शीर्ष-रेखा अपने स्वाभाविक स्थान पर हो और सीधी, स्पष्ट तथा समान रूप से गहरी हो तो मनुष्य में व्यावहारिक बुद्धि अच्छी होती है और उसकी पुस्तक पढ़ने, दर्शन, काव्य या कलात्मक अनुसंधान की बजाय धन-दौलत की ओर विशेष प्रवृत्ति रहती है किन्तु यदि प्रारम्भिक आधे भाग में सीधी हो और उसके बाद नीचे की ओर कुछ झुकी हुई हो तो दोनों ओर (धन-दौलत तथा विद्या-सम्बन्धी) समान रूप से प्रवृत्ति रहती है। ऐसे व्यक्ति मस्तिष्क-सम्बन्धी, कल्पना-प्रधान या दार्शनिक ग्रंथियों को सुलझाते हुए भी सांसारिक व्यावहारिकता का ध्यान रखते हैं। किन्तु यदि शीर्ष-रेखा प्रारम्भ से ही गोलाई लिये चन्द्र-क्षेत्र की ओर जाती हो तो काव्य, दर्शन कला आदि की ओर विशेष झुकाव होता है। काव्य, दर्शन, नव आविष्कार किंवा मशीन आदि की भी नई योजना बनाने की ओर इनका मानसिक झुकाव विशेष होता है। यदि हाथ चतुष्कोणाकार हो तो सांसारिक उन्नति के साधन में (यथा नई प्रकार की योजना या क्षेत्र-निर्माण में) इनका दिमाग़ लगता है; यदि हाथ लम्बा और नुकीला हो तो काव्य या दर्शन-शास्त्र में मन लगता है।

यदि यह रेखा बहुत अधिक झुकी हुई हो तो कल्पना-शक्ति बहुत अधिक बढ़ी हुई होती है। ऐसा जातक कल्पना-जगत् में

अधिक रहता है तथा वास्तविक जगत् में कम। यदि 'प्रेम' हो गया तो उसे 'स्वर्ग' समझ बैठता है यदि 'निराशा' हुई तो जीवन को बिल्कुल निस्सार समझने लगेगा। प्रेम के पीछे लोक-व्यवहार की उपेक्षा कर बैठेगा। यदि झुकाव अधिक होते हुए चन्द्र-क्षेत्र पर शीर्ष-रेखा चली जावे और दो शाखायुक्त (एक प्रधान रेखा, एक शाखा) हो जावे ऐसे जातक की साहित्य तथा काव्य की ओर विशेष रुचि तथा इन विषयों में विशेष योग्यता भी होती है।

यदि शीर्ष-रेखा बिलकुल सीधी और बहुत लम्बी हो और सारी हथेली पार कर मंगल के प्रथम क्षेत्र पर होती हुई हथेली के बाहर तक चली जावे तो यह प्रकट होता है कि जातक बहुत अधिक बुद्धिमान है किंतु उसकी बुद्धि स्वार्थ में अधिक लगेगी, परमार्थ में कम। यदि मंगल-क्षेत्र साथ-ही-साथ उन्नत हो और अँगूठे का प्रथम पर्व बलिष्ठ हो तो जातक की किसी से शत्रुता हो जाने पर वह उससे बदला अवश्य लेगा और यदि अँगुष्ठ का द्वितीय पर्व भी लम्बा हो तो नीतिज्ञ होने से शत्रु पर विजयी भी होगा।

यदि शीर्ष-रेखा मंगल के प्रथम क्षेत्र तक तो सीधी जावे और उस क्षेत्र पर जाकर कुछ ऊपर को मुड़ जावे तो जातक को व्यापार में अत्यधिक सफलता मिलती है और शीघ्र धन-संग्रह करने में सफल होता है।

यदि शीर्ष-रेखा छोटी हो (अर्थात् हाथ के मध्य भाग तक ही हो) तो सांसारिक बातों में तो जातक चतुर होता कि किन्तु विद्या, कल्पना, दर्शन, साहित्य आदि में बुद्धि विशेष नहीं चलती।

यदि शीर्ष-रेखा अत्यन्त छोटी हो और अन्य लक्षण भी यदि अल्पायु होना प्रकट करते हों तो जातक अल्पायु होता है और शिरो-रोग के कारण मृत्यु होती है।

शीर्ष-रेखा तथा हृदय-रेखा में अन्तर

(१) यदि बीच में कुछ हृदय-रेखा की ओर झुककर शीर्ष-रेखा इस प्रकार सीधी जावे कि हृदय-रेखा से क्रमशः दूर होती जावे और हथेली के उस पार तक लम्बी हो तो बुद्धि और आत्मिक शक्ति दोनों सबल होती हैं।

(२) यदि शीर्ष-रेखा हृदय-रेखा के बहुत पास-पास जावे अर्थात् दोनों में कम अन्तर हो तो दमा या hay fever होता है। दोनों के बीच का स्थान संकीर्ण होने से जातक रोगी तथा हृदय का क्षुद्र होता है।

(३) यदि शीर्ष-रेखा हृदय-रेखा की ओर झुकती चली जावे और जीवन-रेखा से निकलकर स्वास्थ्य-रेखा इनको काटे तो मूर्च्छा रोग हो। पाचन-शक्ति बिगड़ने पर प्रायः यह रोग होता है और मूर्च्छा का भय रहता है।

(४) यदि शीर्ष-रेखा करीब-करीब शनि-क्षेत्र की सीध तक हृदय-रेखा की ओर झुकती चली आवे और फिर मुड़कर नीचे की ओर (चन्द्र-क्षेत्र की ओर) चली जावे तो जिनको जातक स्नेह करता है उनके कारण घोर मानसिक कष्ट प्रकट होता है।

(५) यदि शीर्ष-रेखा इतनी ऊँची हो कि उसके और हृदय-रेखा के बीच बहुत कम अन्तर रहे तो (१) यदि शीर्ष-रेखा दृढ़ और पुष्ट हो तो दिमाग़ दिल को काबू में रखेगा तथा (२) यदि हृदय-रेखा दृढ़ और पुष्ट हो तो दिल दिमाग़ पर काबू पा लेगा।

शीर्ष-रेखा का रंग, उसकी गहराई और चौड़ाई

(१) यदि शीर्ष-रेखा चौड़ी और पीली हो, हाथ सख्त हों तथा सूर्य-क्षेत्र नीचा हो तो जातक मन्दबुद्धि होता है। शीर्ष-रेखा का सूक्ष्म होना गुण है तथा चौड़ा होना अवगुण। पीला रंग यह

प्रकट करता है कि पित्त कुपित्त होने के कारण बुद्धि में कुशाग्रता नहीं है।

(२) शीर्ष-रेखा न अत्यन्त गहरी होनी चाहिये न इतनी उथली कि अस्पष्ट हो। यदि यह रेखा लम्बी किन्तु अस्पष्ट हो और बुध-क्षेत्र अत्यधिक विस्तीर्ण तथा उन्नत हो तो जातक धोखेबाज होता है। यदि रेखा तो उपर्युक्त प्रकार की हो किन्तु बुध उन्नत न हो तो जातक धोखेबाज़ न होगा। किन्तु मानसिक एकाग्रता का अभाव होगा। स्पष्ट रेखा छोटी या लम्बी रेखा अस्पष्ट हो तो दोनों ही मानसिक शक्ति की कमी प्रकट करती हैं।

(३) शीर्ष-रेखा यदि बहुत गहरी हो तो स्नायविक-शक्ति पर अधिक ज़ोर पड़ रहा है, यह प्रकट होता है। जिन कारणों से ऐसा हो रहा हो उन्हें रोकना चाहिए, नहीं तो स्वास्थ्य पर अहितकर प्रभाव पड़ सकता है।

(४) यदि बीच में बहुत पतली हो गई हो तो अनुमान से जिस अवस्था में यह लक्षण हो, उस अवस्था में जातक को दिमाग़ी कमज़ोरी या स्नायविक दुर्बलता होगी।

(५) यदि अत्यन्त पतली तथा अस्पष्ट हो तो ऐसा जातक दिमाग़ी गम्भीर कार्य करने में क्षम नहीं होता।

(६) यदि रेखा अस्पष्ट हो, बहुत पतली या छोटी हो, और स्वास्थ्य-रेखा लहरदार हो तो पित्तज, शिरोरोग, अपच, मन्दाग्नि आदि का लक्षण है।

हस्त-परीक्षकों का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया जाता है कि शीर्ष-रेखा का बहुत चौड़ा होना गुण नहीं है, अवगुण है किन्तु साथ ही यह भी ध्यान में रखना चाहिये कि शीर्ष-रेखा जब बहुत कम गहरी और बहुत सूक्ष्म होती है तो अस्पष्ट या अत्यन्त क्षीण होना भी अवगुण है।

यदि शीर्ष-रेखा शृङ्खलाकार, टूटी या अन्य दोषों से युक्त हो

यदि शीर्ष-रेखा एकरूप न हो, (किन्तु कहीं चौड़ी कहीं सकड़ी, कहीं गहरी कहीं उथली, कहीं ललाई लिये कहीं पीलापन लिये, या सीधी न होकर लहरदार हो) तो इन **सब को अवगुण समझना चाहिए। बहुत गहरी हो तो** यह प्रकट होता है कि स्नायविक शक्ति पर बहुत ज़ोर पड़ रहा है

(१) यदि शीर्ष-रेखा लहरदार हो और हाथ में ऊँची लहरदार होते हुए सूर्य-क्षेत्र या बुध-क्षेत्र के नीचे बिलकुल हृदय-रेखा के समीप तक पहुँच जावे तो पागलपन का लक्षण है। इसकी पुष्टि अन्य लक्षणों से भी करनी चाहिये; विशेषतः चन्द्र-क्षेत्र के अशुभ चिह्नों से इस रोग की पुष्टि होती है।

(२) यदि शीर्ष-रेखा लहरदार हो, हृदय-रेखा तथा उसके बीच अन्तर कम हो, बुद्ध-क्षेत्र उन्नत हो तो जातक बेईमान होता है।

(३) यदि समस्त शीर्ष-रेखा पर छोटे-छोटे द्वीप-चिह्न हों और नाखून ऊपर उठे हुए हों तथा उन पर खड़ी रेखा हों तो यक्ष्मा; यदि बायें हाथ में ये लक्षण हों और दाहिने में न हों तो समझना चाहिये कि मातृ या पितृ-कुल में यह रोग था, उसके कुछ संस्कार जातक में थे किन्तु अब जातक उन लक्षणों से मुक्त हो रहा है।

(४) यदि शीर्ष-रेखा बहुत छोटी हो और अँगूठे भी बहुत छोटे हों तो मूर्खता का लक्षण है—जिसे लोग सीधा या भोला कहते हैं।

(५) शीर्ष-रेखा लहरदार हो, रंग एकरूप न हो (कहीं कैसा कहीं कैसा) तो स्नायविक कमज़ोरी तथा यकृत-विकार का लक्षण है। स्वभाव में कंजूसी तथा चित्त में उत्साह नहीं होता।

(६) यदि शृंखलाकार हो तो या तो सिरदर्द, शिरोरोग या विचारों में स्थिरता नहीं होती।

(७) यदि शीर्ष-रेखा शनि-क्षेत्र के नीचे टूटी हुई हो तो समय

से पूर्व आकस्मिक मृत्यु का लक्षण है।

(८) यदि छोटे-छोटे द्वीपों के मिलने से रेखा बनी हुई हो या छोटी-छोटी बाल बराबर पतली रेखाओं से बनी हुई प्रतीत हो तो तीव्र सिर-दर्द की बीमारी या मस्तिष्क-विकार होगा।

(९) यदि शीर्ष-रेखा अच्छी न हो (छोटी, अस्पष्ट, शृंखलाकार या द्वीपयुक्त हो) हृदय-रेखा न हो और स्वास्थ्य-रेखा लहरदार हो तो 'हृदय' कमजोर होता है। हृदय में प्रेम की भावना या 'मोह' की अधिकता तथा दिमाग़ की कमजोरी से जातक ऐसे काम कर बैठता है जिनसे हानि उठाता है।

अन्य लक्षणों के योग से शीर्ष-रेखा के शुभ, अशुभ लक्षण

अब शीर्ष-रेखा के उन गुणों की ओर ध्यान आकृष्ट किया जाता है जो हाथ में अन्य शुभ लक्षणों के विद्यमान होने से फल-दायक होते हैं—

(१) यदि शीर्ष-रेखा लम्बी और सुन्दर हो और शुक्र-क्षेत्र अति उच्च न हो तो जातक का प्रेम अपनी पत्नी (या पति) तक ही सीमित रहता है। अपने दाम्पत्य कर्त्तव्य-पालन की ओर ध्यान, आत्मसंयम तथा विशेष कामुकता न होने से सतीत्व या एकपत्नीत्व गुण होता है।

(२) यदि शीर्ष-रेखा लम्बी और सुन्दर हो और मंगल, बुध तथा बृहस्पति के क्षेत्र उन्नत तथा विस्तीर्ण हों तो एकाग्रचित्तता (अध्ययन-विचार, किंवा आध्यात्मिक उन्नति के लिये) का गुण होता है। ऐसा जातक किसी विषय पर अपने चित्त को एकाग्र कर सकता है।

(३) यदि दोनों हाथों में शीर्ष-रेखा लम्बी तथा चन्द्र-क्षेत्र की ओर घुमावदार हो, चन्द्र-क्षेत्र बलवान हो और अनामिका तथा मध्यमा बराबर लम्बी हों तो जातक ऐसा व्यापारिक कार्य करता

है जिसमें एकदम बहुत लाभ हो या चाहे घाटा ही हो जावे (यथा शेयर, चाँदी, रुई आदि का सट्टा)।

(४) शीर्ष-रेखा लम्बी और चन्द्र-क्षेत्र की ओर घूमी हुई हो, बृहस्पति-क्षेत्र अति उच्च हो और उस पर जाल-चिह्न हो तो प्रसिद्ध राजनीतिक वक्ता होता है। उसका भाषण बहुत ओजस्वी और प्रभावपूर्ण होता है। जाल-चिह्न जहाँ होता है उस स्थान के गुण को बढ़ा देता है, किन्तु उस गुण का जातक सदुपयोग न कर दुरुपयोग करता है (यथा—राजनीति में प्रायः ओजस्विता पार्टीबाजी के ही उपयोग में आती है)।

(५) यदि शीर्ष-रेखा लम्बी और सीधी हो, हाथ लम्बे हों और हाथों की उंगलियाँ भी लम्बी हों तो ऐसा जातक प्रत्येक बात के विवरण की जाँच-पड़ताल करता है (उदाहरण के लिये यदि वह दावत देगा तो क्या-क्या भोजन बनेगा, क्या चीज क्या भाव आई, कौन मेहमान कहाँ बैठेगा आदि छोटी-से-छोटी बात के विश्लेषण और प्रबन्ध की ओर ध्यान देगा)।

(६) यदि शीर्ष-रेखा लम्बी और सीधी हो किन्तु उंगलियों में गाँठें बहुत निकली हों और चिटली उंगली बहुत छोटी हो तो जातक में व्यावहारिक कुशलता या नीतिज्ञता नहीं होती।

(७) शीर्ष-रेखा सारी हथेली पर फैली हुई हो और यकृत-रेखा साफ़ तथा सीधी हो और अधिक चौड़ी न हो तो स्मरण-शक्ति अच्छी होती है।

(८) (क) यदि, सारी हथेली पर पेंसिल की भाँति बिलकुल सीधी रेखा हों और जीवन-रेखा, शीर्ष-रेखा तथा भाग्य-रेखा से सुन्दर त्रिकोण न बनता हो तो लोभ की प्रवृत्ति अधिक होती है। यदि शीर्ष-रेखा के मध्य भाग में बिलकुल झुकाव या गोलाई न हो तो उदारता या उपकार-बुद्धि या दूसरे की बात मान जाना यह गुण नहीं होता।

(ख) यदि सूर्य तथा बृहस्पति के क्षेत्र उन्नत और विस्तीर्ण

हों या अन्य शुभ लक्षणों से युक्त हों, तर्जनी का अग्रभाग नुकीला हो तथा शीर्ष-रेखा लम्बी, सीधी और स्पष्ट हो तो जातक पढ़ने का शौकीन होता है।

(९) यदि शीर्ष-रेखा लम्बी तथा सुन्दर हो तथा शीर्ष एवं हृदय-रेखा के बीच का भाग चौड़ा हो, तर्जनी का अग्रभाग नुकीला व अन्य उंगलियों का अग्रभाग चतुष्कोणाकार हो तो जातक में न्याय-प्रियता होती है। वह सबके साथ इन्साफ़ चाहता है और किसी का हक नहीं छीनना चाहता।

चित्र नं० ४२

(१०) यदि यह रेखा तथा हृदय-रेखा भी—दोनों लम्बी और सुन्दर हों और जीवन-रेखा के अन्तिम भाग पर त्रिकोण चिह्न हो तो जातक में नीतिज्ञता, बुद्धिपूर्वक कार्य-साधन की योग्यता होती है।
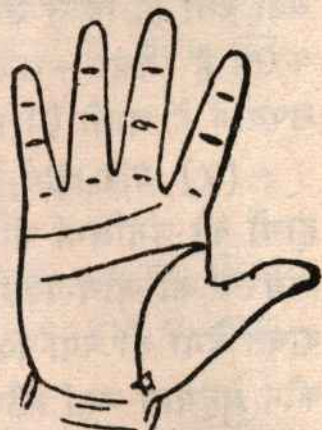
(११) यदि शीर्ष तथा हृदय-रेखाएँ लम्बी और अच्छी हों और तर्जनी विशेष लम्बी हो तो ऐसा जातक अपने दोस्तों की खातिरदारी, दावत आदि तो खूब करता है किन्तु उसकी दोस्ती इतने तक ही सीमित रहती है।

(१२) यदि शीर्ष-रेखा बिलकुल सीधी (डंडे की तरह) हो और हृदय-रेखा अच्छी न हो तो जातक स्वयं अपने भोगविलास पर व्यय करेगा, अन्य लोगों के लिए नहीं।

(१३) यदि सूर्य-रेखा लम्बी हो, मध्यमा-अनामिका बराबर हों और शीर्ष-रेखा लम्बी व चन्द्र-क्षेत्र की ओर झुकी हुई हो तो जातक ऐसी यात्रायें करता है जो भय से खाली न हों (यथा जंगलों में, तूफ़ानी समुद्रों में, वायुयानों के उड़ान-प्रदर्शन में)।

(१४) यदि शीर्ष-रेखा छोटी हो, साथ ही हृदय-रेखा भी अच्छी न हो और जीवन-रेखा के अन्त भाग पर त्रिकोण-चिह्न हो

तो ऐसा आदमी बहुत बोलता है, जिसका उसके लिये शुभ परिणाम न होकर अशुभ परिणाम ही होता है। बुद्धि की कमी तथा क्रूर प्रकृति होने से मनुष्य उचित-अनुचित अवसर का विचार न कर पर-निन्दक होता है।

(१५) यदि बृहस्पति-क्षेत्र तो अवनत (नीचा) हो और शुक्र तथा चन्द्रमा के क्षेत्र उन्नत हों, और शीर्ष-रेखा छोटी हो तो जातक आरामपसन्द तथा सुस्त होता है। बृहस्पति का क्षेत्र नीचा रहने से महत्वाकांक्षा नहीं होती।

(१६) यदि शीर्ष-रेखा छोटी हो, शुक्र-क्षेत्र नीचा हो, शीर्ष-रेखा तथा हृदय-रेखा का मध्यभाग सकड़ा हो तो मानसिक (हृदय की) क्षुद्रता तथा अनुदारता का लक्षण है।

यदि चन्द्र-क्षेत्र नीचा हो तो दूसरों के साथ सहानुभूति नहीं होती

शीर्ष-रेखा का अन्त

जहाँ शीर्ष-रेखा समाप्त हो वहाँ या उससे कुछ पहले किसी भी ग्रह-क्षेत्र की ओर उसका झुकाव हो या शीर्ष-रेखा से निकलकर कोई शाखा किसी ग्रह-क्षेत्र पर जावे तो उस ग्रह-क्षेत्र का प्रभाव शीर्ष-रेखा में आ जाता है।

(१) यदि चन्द्र-क्षेत्र की ओर झुकी हो या उस क्षेत्र पर शाखा-रेखा जावे तो कल्पना, गुप्तविद्या, प्रेम आदि की ओर मस्तिष्क का झुकाव होता है।

(२) बुध-क्षेत्र पर या उस ओर झुकी हो—विज्ञान या व्यापार में कुशलता।

(३) सूर्य-क्षेत्र पर या उस ओर जावे—यशलिप्सा।

(४) शनि-क्षेत्र पर या उस ओर जावे—विचार-गाम्भीर्य संगीत तथा धार्मिकता।

(५) बृहस्पति-क्षेत्र—यदि शाखा बृहस्पति-क्षेत्र पर जावे तो हुकूमत की इच्छा तथा अभिमान।

(६) यदि शीर्ष-रेखा से निकलकर कोई रेखा जाकर हृदय-रेखा में मिल जावे तो समझना चाहिये कि जातक का किसी से अत्यन्त प्रेम और गाढ़ा अनुराग होने का लक्षण है। इस प्रकार का यह प्रेम इतना आत्यन्तिक तथा तीव्र होगा कि मनुष्य किसी लाभ, हानि, अशंका या मर्यादा की परवाह न कर उसके वशीभूत हो जायगा।

(७) यदि शीर्ष-रेखा शनि-क्षेत्र के ही नीचे समाप्त हो जावे तो समय से पहले आकस्मिक मृत्यु हो या उस अवस्था पर दिमाग़ पूरा काम करना बन्द कर दे व नया दिमाग़ी काम न कर सके।

(८) यदि हाथ के मध्य में समाप्त हो जावे और (क) सूर्य तथा बृहस्पति के क्षेत्र उन्नत न हों तो बुद्धि की कमी (ख) मंगल-क्षेत्र नीचा हो तो साहस तथा उत्साह की कमी।

(९) यदि भाग्य-रेखा से योग करने के पहले ही शीर्ष-रेखा का अन्त हो जावे तो दुःखी-जीवन तथा अकाल-मृत्यु हो।

(१०) यदि शीर्ष-रेखा मंगल के प्रथम क्षेत्र तक लम्बी जावे और वहाँ अंकुश की तरह नीचे की ओर मुड़ जावे तो अत्यधिक आत्म-विश्वास एवं अभिमान के कारण जातक कष्ट उठाता है। (देखिए चित्र नं० ४२)

चित्र नं० ४२

(११) (क) यदि शीर्ष-रेखा शनि-क्षेत्र के नीचे तक तो सीधी जावे और फिर मुड़कर हृदय-रेखा को काटती हुई शनि-क्षेत्र के ऊपर जाकर समाप्त हो जावे तो सिर में चोट लगने से मृत्यु होती है। ऐसे व्यक्ति में धर्मान्धता भी होती है।

(ख) यदि उपर्युक्त प्रकार की शीर्ष-रेखा हो किन्तु हृदय-रेखा काटने के पहले ही समाप्त हो जावे तो सिर में चोट तो लगेगी

किन्तु प्राण-रक्षा हो जावेगी। धर्मान्धता भी अधिक नहीं होगी।

(१२) (क) यदि शीर्ष-रेखा सूर्य-क्षेत्र के नीचे तक सीधी आवे फिर एकदम हृदय-रेखा को काटती हुई सूर्य-क्षेत्र की ओर मुड़ जावे तो जातक को साहित्य या कला का अत्यधिक व्यसन होगा।

(ख) यदि उपर्युक्त प्रकार की शीर्ष-रेखा हो किन्तु हृदय-रेखा को न काटे तो साहित्य या कला में सफलता प्राप्त होने का लक्षण है।

(ग) यदि हाथ के अन्य लक्षण (यथा उंगलियों की बनावट, ग्रहों के क्षेत्र, भाग्य-रेखा आदि) उपर्युक्त सफलता के प्रतिकूल हों तो केवल ऐसी रेखा का परिणाम यह होता है कि जातक बिना अधिक परिश्रम किये धनी होने की इच्छा रखता है।

(१३) यदि ऊपर (ख) भाग में जैसा आकार बताया गया है वैसा आकार हो किन्तु सूर्य-क्षेत्र की बजाय सूर्य-क्षेत्र तथा बुध-क्षेत्र के बीच के भाग की ओर मुड़कर जावे और हृदय-रेखा को न काटे तो ऐसा जातक कला को व्यापारिक रूप देकर, या व्यापारिक वस्तु को कला से विशेष उत्कृष्ट बना, सफलता प्राप्त करता है।

(१४) यदि शीर्ष-रेखा मंगल के प्रथम-क्षेत्र तक आवे और फिर मुड़कर बुध-क्षेत्र वाले हृदय-रेखा के भाग से स्पर्श कर (क) समाप्त हो जावे या (ख) हृदय-रेखा का बिना स्पर्श किये समाप्त हो जावे या (ग) हृदय-रेखा को काटकर बुध-क्षेत्र पर पहुँच जाय तो फलादेश निम्नलिखित होगा।

(क) मस्तिष्क में चक्कर आने का रोग।

(ख) लोगों की नकल बनाने का हुनर (जैसे नाटक इत्यादि में मनोरंजन के लिये किया जाता है)।

(ग) प्रबन्ध-कुशलता, चतुरता, नीतिज्ञता। यदि हाथ में अन्य लक्षण अच्छे न हों तो ऐसा व्यक्ति धोखेबाज़ होता है।

(१५) यदि शीर्ष-रेखा मंगल-क्षेत्र को पार कर हथेली के बाहर तक जावे और स्वास्थ्य-रेखा अच्छी हो तो स्मरण-शक्ति

अच्छी होती है।

(१६) यदि उपर्युक्त प्रकार की सीधी शीर्ष-रेखा हो, अँगूठा भीतर की ओर झुका हो, बृहस्पति तथा शुक्र के पर्वत उन्नत न हों, तथा उंगलियाँ परस्पर भिड़ी हों तो जातक स्वार्थी, अनुदार और कंजूस होता है।

(१७) यदि शीर्ष-रेखा के अन्त में दो शाखा हो जावें (एक प्रधान रेखा तथा एक छोटी-सी शाखा) तो कल्पना पर व्यावहारिक बुद्धि का संयम रहता है।

साधारणतः इस प्रकार की शीर्ष-रेखा की समाप्ति अच्छी समझी जाती है। किन्तु यदि हथेली मोटी और मुलायम हो, अँगूठा छोटा हो और उंगलियों के तृतीय पर्व फूले हुए और उपर्युक्त प्रकार की शीर्ष-रेखा हो तो जातक विश्वास के योग्य नहीं होता। ऐसे व्यक्ति में कामुकता तथा सुस्ती होती है।

(१८) यदि शीर्ष-रेखा लम्बी और सुन्दर हो व मंगल-क्षेत्र पर जाकर समाप्त होवे किन्तु एक बहुत बड़ी शाखा शीर्ष-रेखा से निकलकर चन्द्र-क्षेत्र पर नीचे तक जावे तो जातक धोखा नहीं देता।

(१९) यदि शीर्ष-रेखा अन्त में दो शाखायुक्त हो जावे—एक शाखा हृदय-रेखा को काटती हुई बुध-क्षेत्र पर जावे दूसरी नीचे की ओर चन्द्र-क्षेत्र पर तो जातक चालाक, व्यापार में (ईमानदारी या बेईमानी से भी) धन कमाने वाला तथा दूसरों पर प्रभाव जमा सकता है।

(२०) यदि शीर्ष-रेखा की एक शाखा चन्द्र-क्षेत्र पर जावे तथा दूसरी शाखा जाकर हृदय-रेखा से स्पर्श करे तो जातक प्रेम के पीछे सर्वस्व बलिदान करने के लिये सन्नद्ध रहेगा।

यदि उपर्युक्त लक्षण के साथ-साथ भाग्य-रेखा का भी हृदय-रेखा तक जाकर अन्त हो जावे तो 'प्रेम' के कारण जातक का आर्थिक सर्वनाश समझना चाहिये।

(२१) यदि शीर्ष-रेखा अन्त में दो शाखाओं में विभक्त हो जावे और दोनों शाखाएँ चन्द्र-क्षेत्र पर जावें तो दिमाग़ खराब हो जाता है (कल्पना का आधिक्य ही पागलपन है)।

शीर्ष-रेखा की शाखाएँ

यदि छोटी-छोटी सीधी रेखाएँ शीर्ष-रेखा को काटें तो सिर-दर्द या चिन्ता का लक्षण है।

यदि शीर्ष-रेखा से कोई शाखा या रेखा निकलकर बृहस्पति के क्षेत्र तक अन्दर तक जाये और उस शाखा के अन्त पर तारे का चिह्न हो तो सफलता का लक्षण है।

यदि शीर्ष-रेखा से कोई शाखा या रेखा निकलकर तर्जनी उंगली के मूल तक पहुँचे तो महत्वाकांक्षा प्रकट होती है।

यदि शीर्ष-रेखा से निकलकर बृहस्पति के क्षेत्र पर जाने वाली रेखा के अन्त पर क्रॉस का चिह्न हो या कोई आड़ी रेखा हो तो जातक को सफलता प्राप्त नहीं होती बल्कि यह प्रकट होता है कि उसकी आकांक्षाएँ पूरी नहीं होंगी। किन्तु यदि इस लक्षण के साथ-साथ मणिबंध पर भी क्रॉस का चिह्न हो तो धन आगमन सूचित होता है।

यदि शीर्ष-रेखा से निकलकर तीन या अधिक रेखाएँ बृहस्पति के क्षेत्र पर जावें तो धन, महत्वाकांक्षा और पूर्ण सफलता का लक्षण है।

यदि शीर्ष-रेखा से कोई रेखा निकलकर बृहस्पति के क्षेत्र पर आवे और वहाँ सहसा घूमकर शनि-क्षेत्र पर चली जावे तो ऐसे जातक में धर्मान्धता तथा अत्यन्त अभिमान होता है।

यदि शीर्ष-रेखा से कोई शाखा निकलकर सूर्य-क्षेत्र पर जावे और भाग्य-रेखा भी अच्छी हो तो अच्छा धन-लाभ होता है। यदि हाथ के अन्य लक्षणों से साहित्य, संगीत या कला में प्रवीणता प्रकट

होती हो तो उसी प्रकार की सफलता मिलेगी।

यदि शीर्ष-रेखा से कोई शाखा निकलकर अनामिका और कनिष्ठिका उंगली के बीच के भाग तक जावे तो कलात्मक हाथ हो तो कला में अन्यथा नये आविष्कार द्वारा धनागमन होता है।

यदि शीर्ष-रेखा से कई रेखाएँ निकलकर बुध-क्षेत्र पर जावें तो व्यापारिक सफलता और धन-लाभ का लक्षण है।

यदि शीर्ष-रेखा टूटी हो

यदि शीर्ष-रेखा खंडित हो तो सिर में चोट लगती है या अन्य कोई सिर की बीमारी होती है। यदि यह रेखा कई स्थानों में टूटी हो तो सिर-दर्द का लक्षण है। यदि यह रेखा इस प्रकार खंडित हो कि खंडित हुए सिरे एक-दूसरे के ऊपर आ जावें तो प्रकट होता है कि जातक को मस्तिष्क-सम्बन्धी गहरी बीमारी होगी किन्तु अच्छा हो जावेगा।

यदि शीर्ष-रेखा शनि-क्षेत्र के नीचे टूटी हो और एक भाग चन्द्रक्षेत्र के ऊपर तक गया हो तो पागल हो जाने का लक्षण है। यदि खंडित हुए दोनों भाग एक-दूसरे के ऊपर हों तो जातक अच्छा हो जावेगा। किन्तु यदि रेखा इस प्रकार खंडित हो कि बीच में बिलकुल लुप्त हो तो पुनः स्वास्थ्य-लाभ करना कठिन है।

यदि दोनों हाथों में इसी प्रकार शीर्ष-रेखा खंडित हो तो जातक की मृत्यु का भय है। शीर्ष-रेखा के खंडित हुए एक भाग के चन्द्र-क्षेत्र पर जाने के कारण पागलपन का रोग बताया गया है किन्तु यदि रेखा उपर्युक्त प्रकार से खंडित हो और कोई खंडित भाग चन्द्र-क्षेत्र पर न जावे तो पागलपन न होकर सिर की चोट या मस्तिष्क की बीमारी से मृत्यु होती है। जहाँ दोनों हाथों में एक ही स्थान पर शीर्ष-रेखा खंडित हो वहाँ जातक को काफ़ी सावधान कर देना चाहिए क्योंकि खंडित सिरों के एक-दूसरे के ऊपर होने से

तो जीवन की कुछ आशा हो जाती है अन्यथा नहीं।

यदि उपर्युक्त प्रकार से रेखा खंडित हो तथा उतने ही काल तक जीवन-रेखा भी चलती हो—उसके बाद जीवन-रेखा का मार्ग किसी आड़ी रेखा द्वारा बन्द कर दिया गया हो और जीवन-रेखा, स्वास्थ्य-रेखा तथा शीर्ष-रेखा के बीच में क्रॉस-चिह्न हो तो ऐसे जातक की फाँसी के द्वारा मृत्यु होती है। यदि दोनों हाथों में यही अशुभ लक्षण हों तो निश्चय ही ऐसा होता है।

यदि शीर्ष-रेखा सूर्य-क्षेत्र के नीचे टूटी हो तो नेत्र-रोग, लू लगना तथा पागल कुत्ते, शृङ्गाल आदि के काटने से बीमारी होने का लक्षण है।

यदि शीर्ष-रेखा खंडित हो और हृदय-रेखा से निकलकर कोई रेखा नीचे की ओर जाकर भाग्य-रेखा को काटे तो जातक को किसी प्रियजन की मृत्यु के कारण दुःख उठाना पड़ता है। यदि स्त्री के हाथ में यह लक्षण हो तो विधवा होने का लक्षण है।

यदि शीर्ष-रेखा कई जगह टूटी हो तो जातक को सिर-दर्द का रोग होता है या उसकी स्मरण-शक्ति अच्छी नहीं रहती। यदि इन अशुभ लक्षणों के साथ-साथ शीर्ष-रेखा, जीवन-रेखा और स्वास्थ्य-रेखा के बीच में क्रॉस-चिह्न हो और उंगलियों के नाखून छोटे हों तो मिरगी का रोग होता है।

शीर्ष-रेखा का अन्य रेखाओं से योग

शीर्ष-रेखा का जीवन-रेखा से योग हो तो क्या फल होता है यह बताया जा चुका है किन्तु जीवन-रेखा से योग होने पर, शीर्ष-रेखा का आगे जाकर अलग-अलग ओर झुकाव या अन्य रेखाओं से योग होने से फल में क्या विभिन्नता होती है यह बताया जाता है।

(१) जीवन-रेखा से योग करती हुई शीर्ष-रेखा प्रारम्भ हो तथा

हृदय-रेखा की ओर कुछ झुकती हुई आगे आवे, फिर बीच में पहुँच कर हृदय-रेखा की ओर झुकाव बंद हो जावे और ऊपर की बजाय नीचे की ओर अपनी स्वाभाविक दिशा में जाने लगे, तो ऐसे जातक का किसी से आत्यन्तिक प्रेम हो जाता है और बहुत बरसों तक हृदय की ऐसी ही स्थिति रहती है। परिणाम में सफलता प्राप्त नहीं होती। ऐसे व्यक्ति में शुद्ध उदात्त प्रेम की अपेक्षा वासना-पूर्ति की आकांक्षा विशेष होती है। हृदय तथा शीर्ष-रेखा में अन्तर कम होने से अनुदार वृत्ति (कंजूसी तथा अन्य बातों में भी) होती है।

चित्र नं० ४४

(२) याद शीर्ष-रेखा अपने प्रारम्भिक स्थान पर जीवन-रेखा व हृदय-रेखा दोनों से संयुक्त हो तो जातक की अचानक मृत्यु होती है।

(३) (क) यदि जीवन-रेखा से तो प्रारम्भ हो—किन्तु जीवन-रेखा के उस भाग से प्रारम्भ हो जो शनि-क्षेत्र के नीचे है—तो जीवन के प्रारम्भिक काल में शिक्षा का अभाव होने के कारण मस्तिष्क का विकास तथा दिमाग़ी उन्नति देर से प्रारम्भ हुई यह प्रकट होता है।

(ख) किन्तु यदि उपर्युक्त प्रकार की शीर्ष-रेखा हो और जीवन-रेखा तथा हृदय-रेखा भी छोटी हों तो जातक की सहसा मृत्यु हो जाती है।

(४) (क) यदि शीर्ष-रेखा प्रारम्भ में जीवन-रेखा से मिली हुई हो और आगे ऊँची होती-होती हृदय-रेखा से मिलकर उसमें विलीन हो जावे और हृदय-रेखा, सुन्दर, बृहस्पति के क्षेत्र से निकलकर आई हो तो ऐसा जातक किसी एक व्यक्ति को ही जी-

जान से प्रेम करता है और उसमें उसको हद से ज्यादा खुशी हासिल होती है। जातक एक प्रकार से अपने को प्रेमी या प्रेमिका पर न्योछावर कर देता है। संभव है ऐसी परिस्थिति में दुनियावी कामों में सफलता न मिले किन्तु प्रेम के क्षेत्र में पूर्ण सुख प्राप्त होता है।

(ख) यदि उपर्युक्त प्रकार की रेखा हो किन्तु हृदय-रेखा बृहस्पति के क्षेत्र से न निकली हो और शीर्ष-रेखा, हृदय-रेखा से जहाँ मिले वह भाग शनि-क्षेत्र के नीचे हो तो प्रेम के पीछे दीवाना हो जाने से जातक आत्महत्या या अन्य सांघातिक कार्य कर सकता है (हाथ के अन्य लक्षणों से क्या विदित होता है यह भी अच्छी तरह विचारना चाहिये)।

(५) यदि बृहस्पति-क्षेत्र अति उच्च हो, जीवन-रेखा छोटी-छोटी रेखाओं से कटी हो, भाग्य-रेखा कमज़ोर हो और शीर्ष-रेखा स्वास्थ्य-रेखा से मिली हो (उसमें विलीन हो जावे) तो जातक की आत्म-हत्या की ओर प्रवृत्ति होती है।

(६) यदि जीवन-रेखा प्रारम्भ में दो शाखायुक्त हो (एक प्रधान रेखा, एक शाखा) और शीर्ष-रेखा स्वास्थ्य-रेखा में जाकर विलीन हो जाय तो मस्तिष्क रोग, सदैव दुःखी और ग़मगीन रहना।

(७) यदि शीर्ष-रेखा चन्द्रक्षेत्र के ऊपर स्वास्थ्य-रेखा को काट कर आगे बढ़ जाय तो कल्पना इतनी बढ़ जाती है कि उसे एक प्रकार से 'पागलपन' का रोग कहना चाहिये।

(८) यदि शीर्ष-रेखा जीवन-रेखा से प्रारम्भिक स्थान पर न मिली हो किन्तु पतली-पतली छोटी-छोटी रेखाएँ जीवन-रेखा से निकलकर शीर्ष-रेखा से योग करती हों तो जातक बदमिज़ाज होता है, किन्तु यदि हाथ में अन्य लक्षण
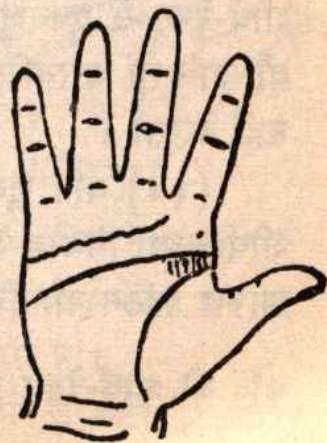
चित्र नं० ४५

अच्छे हों तो जल्दबाज़ी, तथा शिष्टता का अभाव समझना चाहिये। (देखिये चित्र नं० ४५)।

(६) यदि शीर्ष-रेखा तथा जीवन-रेखा प्रारम्भिक स्थान पर मिली न हों किन्तु उस स्थान पर दोनों के बीच क्रॉस-चिह्न हो और उसके द्वारा दोनों रेखाओं में योग होता हो तो जातक के बचपन में ही कोई पारिवारिक मुकदमेबाज़ी होती है जिसके कारण जातक को नुकसान उठाना पड़ता है।

(१०) यदि शुक्रक्षेत्र के मूल से रेखाएँ निकलकर जीवन-रेखा तथा शीर्ष-रेखा दोनों को काटें तो कौटुम्बिक परिस्थिति के कारण आर्थिक कठिनता का लक्षण है।

(११) शीर्ष-रेखा कहीं भी हृदय-रेखा से आकर मिल जावे—उसमें विलीन हो जावे, तो जातक प्रेम के पीछे मतवाला हो जाता है। यदि शीर्ष-रेखा लहरदार या अन्य दोषयुक्त हो तो इस प्रेम में और भी अधिक दीवानापन होता है।

(१२) छोटी-छोटी रेखाएँ शीर्ष-रेखा से निकलकर हृदय-रेखा में आकर विलीन हो जावें—उसे काटें नहीं—तो मित्रों का जातक पर बहुत प्रभाव रहता है।

(१३) जहाँ शीर्ष-रेखा का अन्त होता है—उसके कुछ पहले शीर्ष-रेखा से एक शुद्ध गम्भीर रेखा निकलकर हृदय-रेखा में विलीन हो जावे तो आत्यन्तिक प्रेम के कारण जातक किसी बात की परवाह नहीं करता।

(१४) यदि शुक्र-क्षेत्र से कोई आड़ी रेखा निकलकर जीवन, शीर्ष तथा विवाह-रेखा तीनों को काटे तो विवाह या गुप्तप्रेम के कारण कठिन आपत्ति या विपत्ति सहनी पड़ेगी।

यदि दो शीर्ष-रेखा हों

यदि दो शीर्ष-रेखा सुन्दर और लम्बी हों तो जातक को

विरासत में धन प्राप्त होता है। किन्तु हस्त-परीक्षक को ध्यानपूर्वक इसका निश्चय करना चाहिए कि वास्तव में दो शीर्ष-रेखाएँ हैं। कई बार एक ही शीर्ष-रेखा चौड़ी और फटी हुई होने के कारण दो-सी दिखाई देती हैं। इस प्रकार की रेखा अच्छी नहीं होती क्योंकि रेखा के फटे होने से दिमाग़ की कमज़ोरी होकर मनुष्य पागल हो जाता है।

चित्र नं० ४६

शीर्ष-रेखा पर सफ़ेद चिह्न

यदि शीर्ष-रेखा छोटी-छोटी खड़ी रेखाओं से कटी हो तो सिर-दर्द का लक्षण है। यदि इसको काटने वाली छोटी रेखाएँ गोल या लहरदार हों और शीर्ष-रेखा स्वयं नीचे चन्द्रक्षेत्र के अन्त तक जाती हों तो जातक के पागल होने का डर होगा।

चित्र में जिस प्रकार की रेखा है यदि इस प्रकार की रेखा हो तो जातक दूसरे की हत्या करता है। यदि इस रेखा का रंग पीला हो तो समझिए कर चुका, यदि लाल हो तो करेगा।

यदि शीर्ष-रेखा पर चोट के से चिह्न हों* तो उग्र सिर-दर्द का लक्षण है। यदि सफ़ेद चिह्न हो या सफ़ेद दाग़-से हों तो जातक नवीन आविष्कार करता है। यदि

चित्र नं० ४७

ये सफ़ेद चिह्न शनिक्षेत्र के नीचे वाले भाग पर शीर्ष-रेखा पर हों तो जातक को अपने कार-बार में सफलता मिलती है।

यदि हृदय-रेखा छोटी-छोटी आड़ी रेखाओं से कटी हो और

---

* दांतेवार।

सूर्य-क्षेत्र के नीचे—शीर्ष-रेखा पर सफेद बिन्दु हों तो साहित्यिक सफलता मिलती है। यदि सफेद चिह्न शीर्ष-रेखा के उस स्थान पर हों जो बुध के क्षेत्र से समीप है तो वैज्ञानिक आविष्कारों में सफलता प्राप्त होती है।

शीर्ष-रेखा पर नीले या काले धब्बे

यदि जीवन-रेखा तथा स्वास्थ्य-रेखा बहुत गहरे रंग की हों और शीर्ष-रेखा पर काले दाग़ हों तो मलेरिया, मोतीझरा या अन्य उग्र ज्वर का लक्षण है।

यदि जीवन-रेखा प्रारम्भ में दो शाखायुक्त (एक मुख्य रेखा, एक शाखा) हो और शीर्ष-रेखा पीली और चौड़ी हो तथा उस पर काले दाग़ हों तो बहुत तीव्र दिमागी बीमारी होती है।

यदि मंगल के दोनों क्षेत्र बहुत उन्नत हों और शीर्ष-रेखा पर—जहाँ वह स्वास्थ्य-रेखा से योग करती है उसके पहले ही नीला दाग़ हो तो जातक किसी की हत्या करने का विचार करता है। यदि उपर्युक्त नीला दाग़ शीर्ष-रेखा पर बृहस्पति-क्षेत्र के नीचे हो तो यह फल नहीं होता।

यदि शीर्ष-रेखा लहरदार या विवर्ण हो और स्वास्थ्य-रेखा लहरदार हो तथा उस पर नीला दाग़ हो तो मलेरिया के कारण स्वास्थ्य बिगड़ा रहता है।

यदि शीर्ष-रेखा पर काला या नीला दाग़ हो तो लम्बे अरसे तक चलने वाले शिर-रोग या मोतीझरा का लक्षण है।

शीर्ष-रेखा पर काला दाग

(१) यदि शीर्ष-रेखा पर काला दाग़ हो और (२) शुक्र-क्षेत्र के नीचे के भाग से अथवा जीवन-रेखा से प्रारम्भ होकर कोई रेखा चन्द्र-क्षेत्र पर तारे के चिह्न पर जाकर समाप्त हो तो सन्निपात,

बदहोशी आदि मस्तिष्क विकार हो।

यदि शनि-क्षेत्र उच्च हो और शीर्ष-रेखा पर काले दाग हों तो जातक को दाँतों के दर्द का रोग होता है।

यदि सूर्य-क्षेत्र उच्च हो और शीर्ष-रेखा पर काला दाग़ हो तो नेत्र-रोग। यदि सूर्य-क्षेत्र या उसके नीचे क्रॉस-चिह्न हो तो इस रोग की पुष्टि होती है।

यदि शुक्र-क्षेत्र उच्च हो और शीर्ष-रेखा पर काला दाग़ हो तो वृद्धावस्था में बहरापन हो जाता है।

यदि शुक्र-क्षेत्र पर तारे का चिह्न हो और उस चिह्न से प्रारम्भ होकर कोई रेखा शीर्ष-रेखा के उस स्थान पर योग करे जहाँ काला दाग़ भी हो तो किसी प्रेमी की मृत्यु के कारण गहरे सदमे का लक्षण है।

शीर्ष-रेखा पर क्रॉस-चिह्न

यदि शीर्ष-रेखा लहरदार हो और उस पर 'क्रॉस' का चिह्न हो तो सिर को सांघातिक चोट लगती है। यदि क्रॉस की बजाय छोटी गहरी आड़ी रेखा से शीर्ष-रेखा कटी हो तो भी सिर पर चोट लगती है।

(क) यदि शीर्ष-रेखा प्रारम्भ में जीवन-रेखा से मिली हो तथा कुछ आगे चलकर शीर्ष-रेखा से निकलकर कोई छोटी रेखा बृहस्हति के क्षेत्र पर जाकर क्रॉस के चिह्न से योग करे तो जातक की महत्त्वाकांक्षा दबी रह जाती है, सफल नहीं होती।

(ख) यदि बृहस्पति-क्षेत्र पर जाने वाली उपर्युक्त छोटी रेखा बिलकुल सीधी हो अर्थात् शीर्ष-रेखा से ८०-१०० का कोण बनावे और हाथ में अन्य शुभ लक्षण न हों तो विपत्ति का चिह्न है।

यदि शीर्ष-रेखा भाग्य-रेखा पर जाकर रुक जाय और समाप्त होने के पहले शीर्ष-रेखा पर क्रॉस का चिह्न हो और हृदय-रेखा

भी भाग्य-रेखा तक जाकर रुक जाय तो जातक की अकाल-मृत्यु होती है।

शीर्ष-रेखा पर कहीं भी तारे का चिह्न हो तो सिर में चोट लगना प्रकट करता है। यदि दोनों हाथ में एक-सा ही लक्षण हो तो ऐसी चोट के कारण मृत्यु भी हो सकती है।

यदि शीर्ष-रेखा नीचे की ओर घूमकर चन्द्रमा के क्षेत्र पर नीचे के पिछले भाग तक जाये और वहाँ पर तारे के चिह्न से योग करे तो आत्म-हत्या या बिना उसके पानी में डूबने पर मृत्यु होती है। किन्तु यदि शीर्ष-रेखा मणिबन्ध तक जावे और वहाँ क्रॉस या तारे का चिह्न हो तो प्रबल भाग्योदय का लक्षण है। यदि किसी स्त्री के हाथ में शीर्ष-रेखा स्वास्थ्य-रेखा को काट कर आगे जाय और दोनों के योग के स्थान पर तारे का चिह्न हो तो ऐसी स्त्री वन्ध्या होती है या प्रसव के समय जीवन को मृत्यु-भय होता है।

यदि शीर्ष-रेखा बहुत छोटी हो और उसके प्रारम्भिक स्थान में ही एक शाखा निकलकर बृहस्पति के क्षेत्र पर जाकर तारे के चिह्न से योग करे तो जातक अत्यन्त अभिमान के कारण बहुत नुकसान उठाता है। किन्तु शीर्ष-रेखा, लम्बी हो और उससे निकलकर शाखा बिलकुल तर्जनी उंगली के नीचे तक पहुँच जाय और वहाँ तारे का चिह्न हो तो जातक की महत्वाकांक्षायें सफल होती हैं।

यदि शीर्ष-रेखा पर वृत्त चिह्न हो और स्वास्थ्य-रेखा पर क्रॉस का चिह्न हो तो जातक वृद्धावस्था में अन्धा हो जाता है।

यदि शीर्ष-रेखा लम्बी हो और जिस स्थान पर यह बुध-क्षेत्र के नीचे हो वहाँ इस पर त्रिकोण चिह्न हो तो वैज्ञानिक आविष्कार द्वारा सफलता प्राप्त होती है।

शीर्ष-रेखा पर द्वीप-चिह्न

यदि शीर्ष-रेखा के प्रारम्भ में ही द्वीप-चिह्न हों तो जातक में

जन्म से ही पैतृक-मातृक दोष के कारण मस्तिष्क या फेफड़े-सम्बन्धी रोग होता है। यदि बीच में कहीं द्वीप-चिह्न हो तो सिर-दर्द या स्नायु की दुर्बलता व शरीर के अन्य भाग में दर्द। यदि शीर्ष-रेखा में द्वीप-लक्षण के साथ-साथ स्वास्थ्य-रेखा, उस स्थान पर लाल दिखाई दे जहाँ उसका शीर्ष-रेखा से योग होता है, तो पित्त के कारण शिरो-रोग होता है।

यदि शीर्ष-रेखा में बहुत से छोटे-छोटे द्वीप हों तो विशेष मानसिक परिश्रम के कारण दिमाग़ी बीमारी। यदि उपर्युक्त लक्षण के साथ-साथ जातक के हाथ में लम्बे, ऊपर उठे हुए, ऊपर गोलाई लिये हुए, शीघ्र टूटने वाले, खड़ी रेखायुक्त नाखून भी हों तो यक्ष्मा का चिह्न है।

यदि शीर्ष-रेखा के अन्त में बहुत बड़ा द्वीप-चिह्न हो तो अंतड़ियों का रोग सूचित होता है।

यदि शीर्ष-रेखा के उस भाग पर जो शनि-क्षेत्र के नीचे है, द्वीप-चिह्न हो तो जातक के बहरे हो जाने का लक्षण है। बहुत से हाथों में पहले केवल दाग़-सा दिखाई देता है फिर बाद में द्वीप का आकार धारण कर लेता है।

शीर्ष-रेखा पर चतुष्कोण चिह्न

यदि शीर्ष-रेखा पर यह चिह्न हो तो यह प्रकट होता है कि जातक अपनी बुद्धिमत्ता से किसी दुर्घटना या विपत्ति से अपनी रक्षा कर लेगा।

१२वां प्रकरण

आयु-रेखा अथवा हृदय-रेखा

इस चित्र में कनिष्ठिका (छोटी) उंगली जहाँ से प्रारम्भ होती है, उसके नीचे के स्थान से निकलकर तर्जनी की ओर जाने वाली जो रेखा दिखाई गई है उसे हमारे आर्य भारतीय मतानुसार 'आयु-रेखा' कहते हैं। संस्कृत साहित्य में उपलब्ध 'गरुड़ पुराण', 'भविष्य-पुराण', 'स्कान्द शारीरिक', 'विवेक-विलास' आदि ग्रंथों में तथा समुद्र ऋषि, वराह मिहिर आदि सामुद्रिक के आचार्यों की कृतियों में इस रेखा को आयु-निर्णय करने में (अर्थात् यह व्यक्ति कितना जियेगा) बहुत महत्व दिया गया है इस कारण इसका नाम 'आयु-रेखा' रखा गया।

चित्र नं० ४८

अन्य शरीर-लक्षणों से भी—दीर्घायु, मध्यायु, अल्पायु—कितनी आयु होगी ये निष्कर्ष निकाले जाते हैं। ललाट की रेखा, कान, उंगलियों की लम्बाई आदि के जो लक्षण आयु-निर्णय करने में सहायक होते हैं वे, उन-उन प्रकरणों में दिये गये हैं। इसलिये 'आयु-रेखा' से जो निष्कर्ष निकले उसका अन्य शरीर-लक्षणों से समन्वय कर अन्तिम परिणाम पर पहुँचना चाहिये। इस बात पर यहाँ ज़ोर इसीलिये दिया जा रहा है कि केवल आयु-रेखा की लम्बाई देखते ही 'यह इतने वर्ष जियेगा' यह नतीजा हड़बड़ी में निकालना उचित नहीं है।

'गरुड़-पुराण' का वचन है कि आयु-रेखा यदि कनिष्ठिका

प्रान्त (बुध-क्षेत्र) से प्रारम्भ हो तथा तर्जनी प्रान्त (गुरु-क्षेत्र) तक जावे तो १०० वर्ष की आयु (अर्थात् पूर्ण आयु) समझना चाहिये।

किन्तु यदि यह रेखा छिन्न हो तो वहाँ जीवन का भय होता है अर्थात् मृत्यु की आशंका होती है। जिस स्थान पर छिन्न हो उसके अनुसार वय (उम्र) में मृत्यु की शंका (मृत्यु या मृत्यु-तुल्य कष्ट) कहना चाहिये। कितनी लम्बाई पर छिन्न होने से किस उम्र में मृत्यु की सम्भावना होगी यह आगे बतलाया जावेगा। 'स्कान्द-शारीरिक काशीखण्ड' में भी लिखा है—

अच्छिन्ना तर्ज्जनीं व्याप्य तथा रेखास्य दृश्यते।
कनिष्ठा पृष्ठनिर्याता दीर्घायुष्यं यथाऽऽप्नुयात्॥

इस मत से आयु-रेखा तर्जनी उंगली तक जानी चाहिये—अर्थात् गुरु-क्षेत्र तक जाने से काम नहीं चलेगा—तर्जनी उंगली के तृतीय पर्व को छूना चाहिये। समुद्र ऋषि इस सम्बन्ध में कहते हैं कि कनिष्ठिका से तर्जनी तक रेखा 'अक्षता' होनी चाहिये। यदि ऐसा हो तो मनुष्य १२० वर्ष जीता है। यहाँ दो शंका होना स्वाभाविक है। एक तो यह कि जिस प्रकार की रेखा का वर्णन समुद्र ऋषि ने किया वैसी रेखा तो लोगों के हाथ में मिलती हैं किन्तु १२० वर्ष तो वे नहीं जीते। दूसरी बात यह कि 'अक्षता' से क्या तात्पर्य है।

प्रथम शंका के सम्बन्ध में यह विचार करना चाहिये कि जिस समय ये आर्ष ग्रन्थ लिखे गये उस समय यम, नियम, प्राणायाम, आहार, विहार, संयम के कारण तथा संक्रामक रोगों के अत्यल्प होने से बहुत लोग १२० वर्ष जीते थे। आजकल की परिस्थिति में यदि परमायु १०० वर्ष मान लें या इससे भी कुछ कम तो इसी तारतम्य से आगे जहाँ ८० वर्ष या ६० वर्ष कहे गये हैं उन वर्ष-प्रमाणों को अनुपात से कम करके कहना चाहिये। इसके अतिरिक्त अन्य शरीर-लक्षणों की ओर भी ध्यान देना उचित है।

'अक्षता' से तात्पर्य है कि टूटी-फूटी, कटी-फटी न हो और सुन्दर, स्वस्थ एकरूप हो। कोई दाग या विवर्णता भी नहीं होनी चाहिये। 'प्रयोग पारिजात' में समुद्र ऋषि ने लिखा है कि कनिष्ठिका उंगली के नीचे से रेखा निकलकर जो मध्यमा (बीच की) उंगली तक जावे (अर्थात् बीच की उंगली के तृतीय-पर्व मूल तक) और 'अविच्छिन्न' (टूटी-फूटी या कटी न हो) तो मनुष्य ८० वर्ष जीता है—

> कनिष्ठांगुलि देशात्तु रेखा गच्छति मध्यमाम्।
> अविच्छिन्ना तु रेखा स्यात् अशीत्यायुर्विनिर्दिशेत्॥

'अशीति' का अर्थ है ८० वर्ष।

यदि मध्यमा उंगली तक आयु-रेखा न पहुँचे, अर्थात् अनामिका प्रान्त (सूर्य-क्षेत्र) के अन्त पर ही अन्त हो जावे तो ६० वर्ष की आयु कहना। 'गरुड़ प्रान्त' में 'मध्यमायां ह्यनागता षष्टि वर्षायुषम्' यह स्पष्ट निर्देश किया गया है।

वराह मिहिराचार्य का इस विषय में मन्तव्य है कि यदि प्रदेशिनी (तर्जनी) उंगली तक आयु-रेखा जावे तो यह व्यक्ति १०० वर्ष जियेगा यह समझना चाहिये। यदि यह रेखा छिन्न (टूटी या कटी) हो तो पेड़ से गिरने का भय होता है। तात्पर्य यह है कि पूर्ण परिपक्व अवस्था को प्राप्त कर, शरीर के क्रमशः जीर्ण होने के कारण स्वाभाविक मृत्यु नहीं होती किन्तु अकस्मात् बाह्य कारण से (जैसे पेड़ से गिरना) अपमृत्यु होती है। पुराने समय में पेड़ से गिरने, से पानी में डूबने से, शेर, चीता या सींगवाले पशुओं के आघात से, सर्पदंश आदि से कुछ लोगों की अपमृत्यु होती थी; इस कारण द्रुम-पतन इस एक बाह्य कारण से अन्य आकस्मिक अप-मृत्युओं का संकेत कर दिया है। आजकल की परिस्थिति में, मोटर या रेल के नीचे आ जाना, बिजली (A. C. करेन्ट) से, संक्रामक रोगों से या अत्यधिक मदिरापान, सिगरेट-बीड़ी आदि से जो फेफड़े

या हृदय की बीमारियाँ होती हैं वे सब अपमृत्यु हैं। इसका विचार हस्तपरीक्षकों को सदैव रखना चाहिये और देश, काल, पात्र, परिस्थिति आदि के विचार से फलादेश में तारतम्य हो जाता है।

यदि रेखा तर्जनी प्रान्त तक गई हो तो १०० वर्ष। इससे न्यून (छोटी) हो तो न्यून (अपेक्षाकृत थोड़ी) आयु कहना। कुछ कम हो तो ६० वर्ष, उससे भी कुछ कम हो तो ८० वर्ष। यदि मध्यमा (बीच की उंगली के प्रान्त तक अर्थात् प्रान्त के अन्त तक) तो ७५ वर्ष कहना चाहिये। उससे भी कुछ कम हो तो ७० वर्ष ऐसी कल्पना करना।

'विवेक विलास' में लिखा है कि प्रत्येक उंगली के नीचे के भाग को (बुध, सूर्य, शनि तथा गुरु-क्षेत्रों का) मान २५-२५ वर्ष मानना चाहिये, जितने भी क्षेत्रों पर आयु-रेखा विद्यमान हो २५ वर्ष प्रति-क्षेत्र के अनुपात से आयु कहना।

दुर्लभराज ने भी अपने 'सामुद्रतिलक' में भी यही मत दिया है—

पुंसामायुर्भागं प्रत्येकं पञ्चविंशतिः शरदाम्।
कल्प्या कनिष्ठिकाङ्गुलि मूलादिह तर्जनी परतः॥

स्त्री-लक्षणों का वर्णन करते हुए समुद्र ऋषि भी कहते हैं कि कनिष्ठिका से आयु-रेखा निकलकर यदि मध्यमा (बीच की उंगली) को पार कर तर्जनी तक जावे तो वह कन्या दीर्घायु होती है; 'सामुद्रतिलक' में आयु-रेखा के सम्बन्ध में लिखा है कि जितनी जगह टूटी या फटी या कटी हो उतने ही अवसरों पर 'अपमृत्यु' का भय रहता है।

यदि यह रेखा 'पल्लविता' हो (अर्थात् यदि इस पर पत्ते के निशान हों जिसे आजकल अंग्रेज़ी भाषानुसार 'द्वीप'-चिह्न कहा गया है) तो क्लेश होता है। यदि छिन्न हो, यदि कटी हो तो जीवन में ही संदेह होता है (अर्थात् जिस अवस्था पर कटी हो उस उम्र में

सम्भवतः मृत्यु हो जावे या मृत्यु के मुख से निकल भी आवे)। यदि 'विषम' अर्थात् टेढ़ी हो तो धन-नाश होता है, यदि खुरदरी हो तो शरीर-कष्ट होता है—

यावन्मात्राश्छेदा जीवित रेखा स्थिता भवन्ति नृणाम्।
अपमृत्यवोऽपि तावन्मात्रा नियतं परिज्ञेयाः ॥
पल्लवितायां क्लेशः छिन्नायां जीवितस्य संदेहः।
विषमायां धननाशः परुषायां कर्शनं तस्याम् ॥

यदि किसी स्थान पर 'पल्लवित' हो, या कहीं 'छिन्न' हो या 'विषम' हो या 'परुष' हो तो किस उम्र में इसका दोषप्रयुक्त फल होगा यह ज्ञात करने के लिये निम्नलिखित उपाय है—

आयु-रेखा की लम्बाई के अनुसार पहले 'आयु' का निर्णय करे अर्थात् यह व्यक्ति इतने वर्ष जियेगा, यह निर्णय करना चाहिये। फिर आयु-रेखा को दस खण्डों में विभाजित करे। जिस खण्ड में पल्लवित, छिन्न आदि हो आयु के उसी खण्ड में कष्ट कहना।

उदाहरण के लिये आयु-रेखा की लम्बाई के अनुसार किसी की आयु ६५ वर्ष की होगी यह विचार में आया तो ६५ को दस से भाग देने से ६$\frac{१}{२}$ वर्ष आये, तो प्रत्येक खण्ड ६$\frac{१}{२}$ वर्ष का हुआ। अब आयु-रेखा के दस भाग किये। यदि चतुर्थ भाग में छिन्न है अर्थात् टूटी हुई है तो १९$\frac{१}{२}$ वर्ष के बाद २६ वर्ष के बीच के काल में सांघातक रोग होगा। अर्थात् १९$\frac{१}{२}$ वर्ष के अनन्तर और २६ वर्ष के पहले। इस ६$\frac{१}{२}$ वर्ष के काल में भी २०, २१, २२— ये सब वर्ष, 'छिन्नता' पहले है या बाद में इस तारतम्य से निर्णय कर कहना उचित है।

शरीर-लक्षण में इस सम्बन्ध के जो नियम बताये गए हैं उनका भी समन्वय कर लेना उचित है। दोनों प्रमाणों से जब एक परिणाम निकले तो मिथ्या नहीं होता।

पाश्चात्य मत

पाश्चात्य मतानुसार इस रेखा को हृदय-रेखा कहते हैं। कीरो, सेण्ट जर्मेन, बैनहम ग्रादि सभी विद्वानों ने इसे 'हृदय-रेखा यही नाम दिया है। हृदय के दो कार्य हैं। एक तो शारीरिक ग्रर्थात् जो भी रक्त 'हृदय' में पहुँचता है उसे वह समस्त शरीर में वितरित कर देता है; ग्रौर दूसरा मानसिक ग्रर्थात् हमारे मनोभावों में प्रेम, घृणा, क्रोध, ग्रासक्ति, ग्रहंकार, लोभ, मोह ग्रादि उत्पन्न करना। वास्तव में देखा जावे तो पाश्चात्य मतानुसार हमारी छाती में बाईं ग्रोर जो 'दिल' या 'हृदय' है, जो निरन्तर ग्रावाज़ करता है ग्रौर रक्त को सारे शरीर में फैलाता है, वह शरीर का एक पुर्ज़ा-मात्र है ग्रौर प्रेम, ग्रासक्ति, कठोरता ग्रादि भावों का संचालन ज्ञान-कोष करते हैं जिनका स्थान मस्तिष्क में है, हृदय में नहीं। परन्तु हृदय का कार्य तथा मस्तिष्क दोनों इस प्रकार से सम्बद्ध हैं कि एक का दूसरे पर प्रभाव पड़ता है। इसी कारण हमारे हृदय के सब भावों का, विशेषतः प्रेम करने की इच्छाग्रों का सम्बन्ध, हृदय-रेखा से माना गया है। नीचे हृदय-रेखा सम्बन्धी विविध मत दिये जाते हैं। परन्तु किसी भी एक मत से सहसा निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिये। प्रेम या ग्रनुराग (विशेषकर पुरुष का स्त्री की ग्रोर या स्त्री का पुरुष की ग्रोर) का विचार केवल हृदय-रेखा पर निर्भर नहीं है। पहले बताया जा चुका है कि हाथों की बनावट हथेली, उंगलियों ग्रादि के तारतम्य तथा शुक्र-क्षेत्र ग्रादि से मनुष्य की इच्छाग्रों तथा प्रवृत्तियों का विशेष सम्बन्ध है। इस कारण यदि एक-सी ही हृदय-रेखा दो विभिन्न पुरुषों के हाथ में हो (एक का हाथ कवि या कलाकार की ग्राकृति का ग्रौर दूसरे का चौकोर) तो दोनों का फल ग्रलग-ग्रलग प्रकार का होगा।

उसी प्रकार यदि हृदय-रेखा दो हाथों में एक-सी ही हो किन्तु एक व्यक्ति का शुक्र-क्षेत्र बहुत विशद, उन्नत ग्रौर ललाई लिये हो

ग्रौर दूसरे व्यक्ति का पीला, निस्तेज ग्रौर छोटा तथा दबा हुग्रा हो तो भी फलादेश पृथक्-पृथक् होगा।

इसकी स्थिति ग्रौर दिशा

यदि हृदय-रेखा बृहस्पति या शनि-क्षेत्र के नीचे से प्रारम्भ हो, सीधी या कुछ गोलाई लिये हो ग्रौर हथेली के ग्रन्त तक जावे तो यह स्वाभाविक स्थिति समझनी चाहिये। यदि बृहस्पति-क्षेत्र के ग्रन्दर से प्रारम्भ हो तो भी सामान्यतः ग्रच्छी है। परन्तु यदि इसकी स्थिति ग्रपने सामान्य स्थान से नीची* हो तो ऐसा व्यक्ति बहुत प्रेम करने वाला नहीं होता; उसके हृदय में संयम तथा कठोरता होती है ग्रौर स्वार्थपरता भी। यदि मनुष्य का हाथ ग्रच्छा है (ग्रर्थात् हाथ की माँसलता, वर्ण, ग्राकार, उंगलियों का गठन ग्रादि) तो इस प्रकार की हृदय-रेखा वाले मनुष्यों के हृदय में प्रेम तो होगा परन्तु ग्रपने संयम के कारण वे इसका प्रदर्शन नहीं करेंगे। इसके विपरीत यदि एक निकृष्ट कोटि के हाथ में (जिसकी हथेली, उंगलियों तथा ग्रन्य चिह्नों से गुण की ग्रपेक्षा ग्रवगुण ग्रधिक प्रतीत होते हैं) हृदय-रेखा ग्रपने सामान्य स्थान से ग्रधिक नीची हो तो ऐसा व्यक्ति कठोर प्रकृति का, लालची तथा धोखा देने की प्रवृत्ति वाला होगा।

चित्र नं० ४९

यदि हृदय-रेखा बहुत ऊँची हो (देखिये चित्र नं० ५०) ग्रर्थात् उंगलियाँ जहाँ हथेली से प्रारम्भ होती हैं उस स्थान के बहुत समीप हो तो ऐसे व्यक्ति बहुत उग्र रूप से प्रेम करने वाले होते हैं।

*'नीची' से तात्पर्य है उंगलियों की जड़ से ग्रधिक दूर।

चित्र नं० ५०

उनके प्रेम में तीव्रता विशेष होने के कारण उनमें डाह या ईर्ष्या की मात्रा भी साधारण से अधिक होती है। ऐसी हृदय-रेखा करीब-करीब वही प्रभाव उत्पन्न करती है जो शुक्र-मेखला में होते हैं (देखिये प्रकरण १७)।
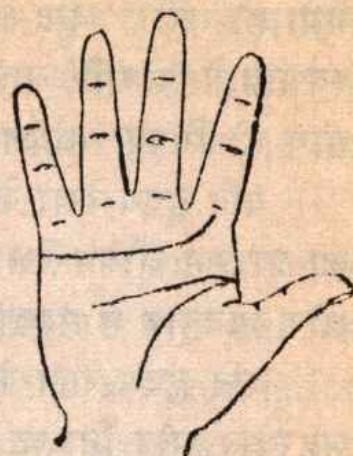
यदि हृदय-रेखा कुछ गोलाई लिये एक ओर से दूसरी ओर पूरी हथेली पर हो तो ऐसा व्यक्ति अत्यधिक प्रेम करने वाला होता है और अपने इस स्वभाव के कारण कष्ट भी उठाता है। यदि ऐसी हृदय-रेखा के साथ-साथ चन्द्र-क्षेत्र भी उच्च हो तो कल्पना का आधिक्य होने से स्वभाव में अत्यधिक ईर्ष्या आ जाती है।

किन्तु हथेली पर आर-पार, पूरी चौड़ाई पर होती हुई भी, यदि हृदय-रेखा कुछ भी गोलाई लिये हुए न हो और बिलकुल सीधी हो और हाथ में मृदुता या माँसलता न हो तो ऐसा व्यक्ति कठोर प्रकृति का होता है अर्थात् उसका स्वभाव स्नेहशील नहीं होता।

यदि हृदय-रेखा शीर्ष-रेखा की ओर सहसा झुकी हुई हो और शनि-क्षेत्र या सूर्य-क्षेत्र के नीचे अधिक झुकाव हो जिस कारण हृदय-रेखा तथा शीर्ष-रेखा से सीमित क्षेत्र बहुत संकुचित हो गया हो तो प्रकृति में क्षुद्रता होगी। यदि उंगलियों की संधि (गाँठें) पुष्ट न हों और उनका अग्र भाग भी चतुष्कोण हो तो स्वभाव में और भी क्षुद्रता होगी। ऐसे व्यक्तियों की दृष्टि में 'आदर्श' का कोई मूल्य नहीं, स्वार्थपरता ही सब कुछ है और इसी भावना से वे कार्य करते हैं।

परन्तु यदि हृदय-रेखा का झुकाव किसी एक स्थान पर विशेष न हो प्रत्युत् क्रमशः हृदय-रेखा शीर्ष-रेखा की ओर झुकती जा रही हो और इस कारण दोनों रेखाओं से सीमित स्थान संकुचित हो

गया हो और चन्द्र-क्षेत्र भी विस्तृत और उच्च हो तो उसके स्वभाव में 'दोरंगी' बात होगी अर्थात् मन में कुछ और बाहर और। साथ ही मिथ्या भाषण विशेष मात्रा में पाया जावेगा।

यदि हृदय-रेखा के उपर्युक्त झुकाव के साथ-साथ शीर्ष-रेखा का प्रारम्भ जीवन-रेखा से होता हो तो ऐसे व्यक्ति के स्वभाव में और व्यवहार में मृदुता का अभाव और ऊपरीपन होता है।

यदि हृदय-रेखा के उपर्युक्त झुकाव के साथ-साथ, यकृत-रेखा लहरदार और निकृष्ट कोटि की हो तो दमा आदि रोग होंगे।

हृदय-रेखा के गुण, दोष, रूप, गठन आदि

(१) यदि हाथ में हृदय-रेखा न हो तो समझना चाहिए कि ऐसे व्यक्ति में भावुकता तथा अनुराग या प्रेम करने की प्रवृत्ति बहुत कम है। ऐसे व्यक्ति प्रायः लोभी तथा स्वार्थी होते हैं और यदि उनके हाथ में मंगल का प्रथम क्षेत्र भी उन्नत और विस्तृत हो तो 'क्रूरता' भी समझनी चाहिये। यदि हाथ लाल हों तो रुधिरस्राव का रोग होगा।

(२) यदि देखने से ऐसा मालूम पड़े कि पहले तो हृदय-रेखा थी किन्तु बाद में मिट गई है* या बायें हाथ में क्षीण रूप में हो और दाहिने में न हो तो यह प्रकट होता है कि किसी प्रेमी ने इसे इतना निराश किया है कि उस आघात के कारण हृदय-रेखा लुप्त होती जा रही है।

(३) हृदय-रेखा जितनी लम्बी हो और बृहस्पति के क्षेत्र में जितने भीतर से प्रारम्भ हो उतना ही अधिक प्रेम करने वाला व्यक्ति होगा। बृहस्पति के क्षेत्र के अन्दर से हृदय-रेखा प्रारम्भ होने के कारण ऐसे व्यक्तियों के प्रेम में आदर्श-रक्षा का भाव भी होता है।

---

*किसी का हाथ पहले देखकर नोट किया हो कि हृदय-रेखा थी और अब दिखाई न दे।

(४) हृदय-रेखा सुस्पष्ट, लम्बी और सुन्दर होनी चाहिये (अर्थात् यव या द्वीप-चिह्न न हों, टूटी-फूटी, कटी-फटी न हो, न अधिक पतली हो) ऐसी रेखा वाले व्यक्ति आजीवन दृढ़ प्रेम-निर्वाह करने वाले होते हैं।

(५) यदि यह रेखा बहुत लाल हो तो ऐसे व्यक्ति में प्रेम की तीव्रता के कारण हिंसात्मक वृत्ति[1] होती है। यह हिंसात्मक वृत्ति कहाँ तक उग्र रूप धारण करेगी यह मंगल के क्षेत्र, अंगुष्ठ के प्रथम तथा द्वितीय पर्व, शीर्ष-रेखा तथा हाथ की बनावट से अनुमान करना चाहिए।

(६) यदि यह रेखा हल्के नीले या साँवले-से रंग की हो, रंग उड़ा-उड़ा प्रतीत हो या पीलापन हो तो यकृत-विकार, पित्तजनित दोष होते हैं। शरीर की एक रेखा भी यदि उपर्युक्त रंग की होगी तो अन्य रेखाएँ भी पीली या नीली, धब्बेदार दिखाई देंगी क्योंकि यकृत-विकार समस्त हाथ में ही व्याप्त हो जाता है।

(७) यदि यह रेखा अत्यधिक गहरी हो तो Apoplexy (सहसा मूर्च्छा आ जाना, पक्षाघात, रक्तचाप अधिक होने से सिर में रक्त चढ़ जाना आदि रोग) का भय होता है। जब कोई रेखा अत्यधिक गहरी हो तो समझिये कि उस पर बहुत ज़ोर पड़ रहा है और यह भय का संकेत-चिह्न है।

(८) यदि हृदय-रेखा बहुत चौड़ी और पीली हो तो हृद्रोग। प्रायः आहार-विहार में संयम न रखने से जब हृदय सारे शरीर में जल्दी-जल्दी रक्त नहीं पहुँचा सकता है तो हृदय शिथिल हो जाने के कारण हृदय-रेखा चौड़ी और पीली हो जाती है।

---

१. हिंसात्मक वृत्ति के उदाहरण—(क) पति पत्नी को अत्यधिक प्रेम करता है और उसको ससुराल से अपने घर ले जाना चाहता है। पत्नी इनकार करती है तो उसको मारता है; (ख) पति पत्नी को किसी से हंसी-मजाक करते हुए देखता है तो क्रोध में उस दूसरे व्यक्ति पर वार करता है या अपनी पत्नी की ही नाक काट देता है।

(९) यदि यह रेखा पतली और लम्बी हो तो हृदय की क्रूरता व हिंसात्मक प्रवृत्ति प्रकट होती है ।

शीर्ष-रेखा के प्रसंग में हम कह आये हैं कि रेखा का पतला और लम्बा होना गुण है किन्तु हृदय-रेखा का पतला होना गुण नहीं है ।

(१०) यदि हृदय-रेखा क्षीण और असुन्दर हो (अर्थात् छोटी, बहुत पतली तथा अस्पष्ट हो) और अन्त तक (जहाँ बुध-क्षेत्र की बायीं ओर यह समाप्त होती है) इसमें से कोई शखाएँ न निकलें तो ऐसे व्यक्तियों की सन्तानोत्पादन-शक्ति कम होती है ।

(इस सम्बन्ध में शुक्र-क्षेत्र तथा संतान-रेखाओं का भी विचार कर लेना चाहिये ।)

हृदय-रेखा की बनावट

(११) यदि हृदय-रेखा शृंखलाकार हो तो समझिये हृदय अपना कार्य अच्छी तरह नहीं कर रहा है । अनुचित प्रेम-सम्बन्ध की प्रवृत्ति रहती है ।

(१२) यदि यह रेखा पीली, चौड़ी तथा शृंखलाकार हो तो ऐसा व्यक्ति दुष्टतापूर्वक भी अपनी अभिलाषा-पूर्ति में नहीं हिचकता । सुन्दर हृदय-रेखा पारस्परिक आकर्षण द्वारा प्रेम उत्पन्न करती है । परन्तु इस प्रकार की दोषयुक्त हृदय-रेखा नीच वृत्ति प्रकट करती है ।

चित्र नं० ५१

(१३) यदि हृदय-रेखा शृंखलाकार हो और बीच में शनि-क्षेत्र की ओर झुकी हुई हो तो ऐसे पुरुषों को स्त्रियों की, तथा स्त्रियों को पुरुषों की कोई परवाह नहीं रहती । यदि हाथ के अन्य लक्षण अच्छे हों तो यह प्रकट करते हैं कि एकान्तवास की भावना प्रबल होने के कारण ऐसे व्यक्ति सामाजिक सुख की ओर प्रवृत्त नहीं होते । किन्तु हाथ के अन्य लक्षण अच्छे न हों तो इस प्रकार की रेखा वाले अप्रा-

कृतिक अवगुणों की ओर झुकते हैं यह संकेत समझना चाहिये।

(१४) यदि यह रेखा सुन्दर, लम्बी और अपने उचित स्थान पर हो और अँगूठे का पहला पर्व मज़बूत हो तो अपनी ही पत्नी, या अपने ही पति तक प्रेम* सीमित रहता है। किन्तु यदि अँगूठों का प्रथम पर्व मज़बूत न हो तो ऐसा नहीं होता। अपने हृदय पर संयम नहीं रहता।

(१५) यदि हृदय-रेखा और शीर्ष-रेखा दोनों अच्छी हों और जीवन-रेखा जहाँ समाप्त होती है उस पर त्रिकोण चिह्न हो तो ऐसा जातक चतुर तथा व्यवहार-कुशल होता है।

(१६) किन्तु ऊपर निर्दिष्ट स्थान पर त्रिकोण तो हो किन्तु हृदय-रेखा तथा शीर्ष-रेखा खराब हों (लहरदार—कहीं गहरी, कहीं हल्की अदि दोषयुक्त) तो ऐसे व्यक्तियों की वाणी में कटुता और दूसरों की निन्दा करने की प्रवृत्ति होती है।

(१७) यदि हृदय-रेखा अच्छी और बलिष्ठ हो और चन्द्र तथा शुक्र के क्षेत्र विशेष रूप से विस्तृत और उन्नत हों तो नवीन-नवीन स्नेह-सम्बन्ध स्थापित करने की आकांक्षा और प्रेमालुता।

(१८) यदि हृदय-रेखा बहुत बड़ी हो, शुक्र-मेखला का चिह्न स्पष्ट हो और चन्द्र-क्षेत्र उच्च हो या उस पर बहुत सी बारीक-बारीक रेखा हों तो जातक में अत्यधिक ईर्ष्यालुता होती है।

(१९) यदि हृदय-रेखा तथा शीर्ष-रेखा अच्छी न हों और उनके बीच का स्थान सकड़ा हो, उंगलियाँ चिकनी हों (अर्थात् गाँठें उन्नत न हों) और अँगुष्ठ का प्रथम पर्व छोटा हो तो ऐसे व्यक्ति के चित्त में मुस्तकिल-मिजाजी (एक विचार पर दृढ़ रहना) नहीं होती है और वह संकल्प-विकल्प किया करता है।

(२०) यदि हृदय-रेखा खराब हो और शीर्ष-रेखा जीवन-रेखा के प्रारम्भ के भाग से न निकलकर ऊपर बृहस्पति के क्षेत्र से

* स्त्री-पुरुष प्रेम।

प्रारम्भ हुई हो तो अपनी अपेक्षा अत्यधिक उच्चकुल में विवाह की महत्वाकांक्षा रखने के कारण जातक को दुःख और निराशा प्राप्त होती है ।

हृदय-रेखा की गहराई और रंग

यदि हृदय-रेखा एक डंडे की भाँति सारी हथेली पर आर-पार हो व शीर्ष-रेखा भी ऐसी ही हो; तथा दोनों रेखा गहरी और लाल हों एवं मंगल-क्षेत्र बहुत उन्नत हो तो ऐसा व्यक्ति हिंसक होता है और दूसरे के प्राण भी ले सकता है ।

यदि हृदय-रेखा पीलापन लिए हुए और चौड़ी हो, और प्रभाव-रेखा शुक्र-क्षेत्र से आकर बुध-क्षेत्र या मंगल के प्रथम क्षेत्र पर रुके तो विषय-वासना अधिक होती है । यदि शुक्र-मेखला की दो रेखा हों, या टूटी हो तो अत्यधिक ईर्ष्या के कारण ऐसे व्यक्ति में हिंसात्मक प्रवृत्ति भी हो सकती है ।

यदि हृदय-रेखा अत्यधिक गहरी हो, शुक्र-मेखला बहुत स्पष्ट हो और चन्द्र-क्षेत्र विस्तृत और उन्नत हो या उस पर बारीक-बारीक बहुत-सी रेखा हों तो अत्यन्त ईर्ष्या के कारण ऐसे जातक की विचार-शक्ति कुंठित हो जाती है और वह ऐसे काम कर बैठता है जिनसे विपत्ति में फँसता है ।

यदि हृदय-रेखा दुर्बल और अस्पष्ट हो और शीर्ष-रेखा भी दुर्बल तथा क्षीण हो तो ऐसा जातक विश्वास करने योग्य नहीं । वैवाहिक जीवन में भी उचित रास्ते से डिग जाता है ।

यदि हृदय-रेखा श्रृंखलाकार हो या अस्पष्ट हो और शीर्ष-रेखा भी ऐसे ही हो, शुक्र-क्षेत्र उन्नत और विस्तृत हो या उस पर आड़ी काटने वाली बहुत-सी रेखा हों तो ऐसे पुरुष सदैव अन्य स्त्रियों से सम्बन्ध करने के इच्छुक रहते हैं या उनके अनेकों सम्बन्ध हो चुके होते हैं । स्त्रियों के सम्बन्ध में भी यही समझना चाहिये ।

भाग्य-रेखा हृदय-रेखा को जहाँ काटे, हृदय-रेखा का वह भाग यदि शृंखलाकार हो तो समझना चाहिए कि हृद्रोग अथवा दुःखान्त प्रेमाधिक्य के कारण जातक के भाग्योदय तथा वृत्ति में विघ्न पड़ गया।

हृदय-रेखा के उद्गम-स्थान तथा प्रारम्भ में निकली हुई शाखा

भारतीय मतानुसार तो यह रेखा कनिष्ठिका के मूल से (छोटी उंगली के नीचे बुध-क्षेत्र के बायीं बगल से) निकलकर तर्जनी-मूल (गुरु-क्षेत्र) की ओर जाती है। किन्तु पाश्चात्य मतानुसार बिलकुल उलटा, कनिष्ठिका मूल में इसका अन्त और दाहिनी ओर (गुरु-क्षेत्र किंवा शनि-क्षेत्र पर) इसका प्रारम्भ माना जाता है।

(१) पाश्चात्य मतानुसार यदि तर्जनी के तृतीय पर्व से (पोरवे के अन्दर से) यह प्रारम्भ हो तो जीवन में सफलता नहीं मिलती।

जब हथेली की रेखायें उंगली के अन्दर से प्रारम्भ हों या उंगली के अन्दर पहुँच जावें तो गुण नहीं प्रत्युत् अवगुण समझना चाहिए। इसका कारण यह है कि जिस ग्रह-क्षेत्र के ऊपर उंगली है उस ग्रह का प्रभाव, रेखा पर इतना अधिक हो जाता है कि वह 'अति' मात्रा अवगुण हो जाती है। 'अति सर्वत्र वर्जयेत्' सीमा से बाहर कोई वस्तु अच्छी नहीं होती। यदि उंगलियाँ अति लम्बी हों तो भी अच्छा नहीं; ग्रह-क्षेत्र अति उन्नत हों तो उनका अनिष्ट प्रभाव होता है। अति सौन्दर्य-प्रिय में अति कामुकता आ जाती है। अति धार्मिक सांसारिक जीविका-उपार्जन के साधनों में चतुर नहीं होते। इसी प्रकार सर्वत्र समझना चाहिए।

(२) यदि बृहस्पति के क्षेत्र के अन्दर—ऊपर की ओर से—हृदय-रेखा प्रारम्भ हो और प्रारम्भ में कोई शाखा न हो तो ऐसे व्यक्ति आदर्श-प्रेमी होते हैं। उनमें कामुकताजन्य वासना की प्रधानता नहीं होती। (यह लक्षण है, अन्य लक्षणों से यह देख

लेना चाहिए कि सम्पूर्ण प्रकृति किस प्रकार की होगी।) इस प्रकार की हृदय-रेखा वालों के प्रेम में आदर्शवादिता अधिक होती है।

(३) किन्तु यदि यही रेखा बृहस्पति-क्षेत्र के मध्य से प्रारम्भ हो और आरम्भ में एक ही शाखा हो तो भी गंभीर और दृढ़ प्रेम-प्रकृति का जातक होता है। ऐसे व्यक्ति में प्रेमाधिक्य और आदर्शवाद दोनों समान रूप से रहते हैं।
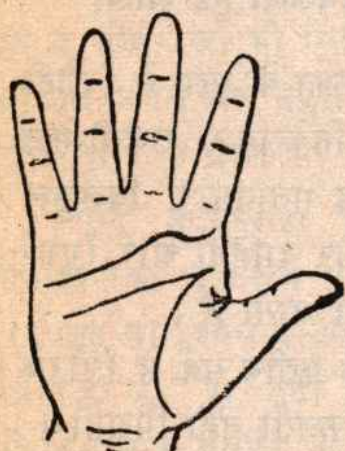
चित्र नं० ५२

(४) यदि हृदय-रेखा बृहस्पति के क्षेत्र को अर्धवृत्त की तरह आधी ओर से घेर ले तो ऐसे व्यक्ति में प्रेमाधिक्य के कारण ईर्ष्या की मात्रा तीव्र होगी। बहुत से पाश्चात्य विद्वानों का मत है कि ऐसी हृदय-रेखा यह प्रकट करती है कि जातक दार्शनिक और गुप्त विद्याओं का विशेष प्रेमी है। (देखिये चित्र नं० ५२)

(५) यदि हृदय-रेखा गुरु-क्षेत्र और शनि-क्षेत्र के बीच के भाग से प्रारम्भ हो तो यह भी स्थिर प्रेम प्रकट करती है। ऐसे व्यक्ति न तो प्रेम के तूफ़ान में बहते हैं न किसी किनारे ही बैठे रहते हैं। उनके प्रेम में विशेष उल्लास और तन्मयता नहीं होती, न निराशा और विरह उन्हें अधिक पीड़ित करते हैं।

(देखिये चित्र नं० ५३)

(६) यदि यही रेखा तर्जनी और मध्यमा के **बीच** के भाग से प्रारम्भ हो तो ऐसा जातक आजीवन कठिन परिश्रम करने वाला होता है। कठिनाइयों का सामना करने में ही उसका जीवन जाता है। प्रेम की भावना हृदय में दबी रहती है।

चित्र नं० ५३

(७) यदि हृदय-रेखा शनि-क्षेत्र के **नीचे** से प्रारम्भ हो और

आरम्भ में कोई शाखा न हो तो ऐसे व्यक्ति में प्रेम की अपेक्षा कामुकता अधिक होगी।

(८) (क) यदि- हृदय-रेखा बृहस्पति-क्षेत्र के किनारे से प्रारम्भ हो और तीन शाखाएँ (एक प्रधान रेखा का सिरा और दो शाखा) आरम्भ से ही निकलकर बृहस्पति-क्षेत्र के अन्दर तक पहुँच जावे तो जातक सौभाग्यशाली होता है।

(ख) यदि उपर्युक्त स्थान से तो रेखा प्रारम्भ हो किन्तु केवल एक शाखा निकलकर बृहस्पति के क्षेत्र पर जावे (अर्थात् प्रधान रेखा तो ऊपर ही रहे) तो ऐसे व्यक्ति को प्रेम में सफलता और खुशी हासिल होती है। यदि साथ-ही-साथ शुक्र-क्षेत्र पर 'क्रॉस'-चिह्न भी हो तो ऐसा व्यक्ति जीवन में एक से ही प्रेम करता है और उस का प्रेम सफल तथा हर्षमय होता है।

(६) यदि प्रारम्भ में शाखायुक्त हो और शाखा बृहस्पति-क्षेत्र पर जावे और दूसरी शीर्ष-रेखा की ओर जावे किन्तु शीर्ष-रेखा का स्पर्श न करे तो ऐसा व्यक्ति स्वयं अपने को धोखे में डाले रहता है (समझता है कि वह प्रेम करता है किन्तु करता नहीं)।

(१०) प्रारम्भ में शाखायुक्त हो—एक शाखा बृहस्पति के क्षेत्र के ऊपर जावे और दूसरी तर्जनी तथा मध्यमा उंगलियों के मध्य भाग में जावे—तो ऐसे व्यक्ति घर के प्रेमी होते हैं और उन्हें बदले में वैसा ही प्रेम और हर्ष-सुख प्राप्त होता है। यह हृदय-रेखा का एक उत्कृष्ट रूप है।

(११) यदि हृदय-रेखा प्रारम्भ में दो शाखायुक्त—एक स्वयं एक अन्य शाखा—हो अर्थात् एक शाखा तर्जनी और मध्यमा उंगलियों के मध्य भाग में जावे और दूसरी शाखा बृहस्पति-क्षेत्र को स्पर्श-मात्र करे (अर्थात् उसके अन्दर न जावे) और चन्द्र-क्षेत्र उन्नत न हो तो जीवन शान्त-प्रेममय रहता है। न विशेष उल्लासमय आकांक्षा, न अतृप्ति।

(१२) यदि आरम्भ से ही दो शाखा हों—एक बृहस्पति के क्षेत्र पर जावे दूसरी शनि-क्षेत्र पर—तो ऐसे व्यक्तियों के प्रेम में झक्कीपन होता है। वे जिस स्थान पर प्रेम प्राप्त कर अपने जीवन को सुखी बनाने का प्रयत्न करते हैं, वहाँ उन्हें प्रेम प्राप्त नहीं होता। फिर भी वे प्रेमाधिक्य के कारण अपना उद्योग नहीं छोड़ते, केवल निराशा ही उन्हें प्राप्त होती है। उनके लिए प्रेम (परिणाम में असफलता के कारण) दुःख का ही कारण होता है।

(१३) यदि हृदय-देखा छोटी हो और शनि-क्षेत्र के नीचे से प्रारम्भ हो और कोई शाखा न हो तो ऐसे व्यक्ति पूरी उम्र पाकर नहीं, किन्तु पहले ही मुत्यु को प्राप्त होते हैं। यदि शीर्ष-रेखा भी छोटी हो और उसके मध्य भाग में 'क्रॉस' का चिह्न हो तो उपर्युक्त फलादेश की पुष्टि होती है।

(१४) यदि हृदय-रेखा के आरम्भ में शाखा हो और शीर्ष-रेखा से भी एक शाखा निकलकर मंगल के द्वितीय क्षेत्र पर जावे तो प्रारम्भिक बाधाओं के बाद परिणाम में विवाह हो जाता है (उदाहरण के लिये दो व्यक्ति एक-दूसरे से विवाह करने की तीव्र अभिलाषा रखते हैं किन्तु परिस्थितिवश, या उनके अभिभावकों के दबाव के कारण विवाह नहीं हो पाता, किन्तु संघर्ष और कुछ समय बीतने के बाद उनको विजय होती है और विवाह हो जाता है)।

हृदय-रेखा का अन्त

यदि हृदय-रेखा बुध-क्षेत्र के नीचे से भी आगे तक (हथेली के बगल में) जावे और शीर्ष-रेखा लम्बी और साफ़ हो तथा मंगल का क्षेत्र प्रमुख (उन्नत) हो तो जातक अत्यन्त साहसी होता है। भगवान् ने गीता में कहा है—"क्षुद्रं हृदय दौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप"– अर्थात् हृदय-दौर्बल्य की परिचायक खराब हृदय-रेखा होती है। यदि रेखा लम्बी और अच्छी है तो साहस होगा, यह सिद्धान्त

है। लम्बी और सुन्दर शीर्ष-रेखा होने से साहस के साथ-साथ दिमाग़ भी अच्छा और ठंडा होगा। बिना इस गुण के साहस मूर्खता-मात्र है।

यदि हृदय-रेखा बुध-क्षेत्र को नीचे की ओर से अर्धवृत्त की तरह घेर ले तो मनुष्य गुप्त विद्याओं (ज्योतिष, दर्शन, मंत्र-तंत्र रहस्यवाद, योग आदि) में विशेष रुचि रखने वाला होता है। यदि बुध-क्षेत्र के नीचे आने पर हृदय-रेखा में से एक शाखा निकलकर बुध-क्षेत्र के अन्दर चली जावे और भाग्य-रेखा पर द्वीप-चिह्न हो तो जातक के स्वयं व्यभिचार-दोष के कारण पति-पत्नी में खटपट या विवाह-विच्छेद तक हो सकता है।

यदि हृदय-रेखा बहुत लम्बी हो और बुध-क्षेत्र के नीचे आने पर अनेक लघु-शाखा युक्त हो या उसमें से गो-पुच्छ के अन्त की तरह बहुत-सी रेखाऐं निकलें तो प्रत्येक लघु-शाखा या सूक्ष्म रेखा किसी प्रेम-सम्बन्ध की द्योतक है। कई बार कोई विशेष सम्बन्ध नहीं होता किन्तु यह प्रेमी प्रकृति का परिचायक है।

यदि-हृदय-रेखा के अन्त में कोई शाखा न निकले तो सन्तानोत्पदक-शक्ति की अल्पता समझनी चाहिये (अन्य लक्षणों से इसकी पुष्टि करना उचित है)।

चित्र नं० ५४

हृदय-रेखा की शाखायें

(१) यदि हृदय-रेखा से कोई शाखा निकलकर ऊपर की ओर न जावे तो हृदय की शुष्कता और नीरसता प्रकट होती है। यदि साथ-ही साथ शीर्ष-रेखा भी शाखाविहीन हो और हृदय-रेखा (विशेषकर इसका मध्य भाग) शीर्ष-रेखा से काफ़ी दूर हो तो ऐसे व्यक्ति के जीवन में प्रेमजनित सरसता नहीं आती।

(२) यदि हृदय-रेखा से शाखायें निकलकर नीचे की ओर (शीर्ष-रेखा की ओर) जावें तो यह प्रकट करती हैं कि जातक जिनको प्रेम करता है वे बदले में इसको प्रेम नहीं करते। इस कारण इसके हृदय में दुःख और निराशा उत्पन्न हुई या होगी।

(३) यदि हृदय-रेखा पर कई बिलकुल सीधी (लम्ब) रेखा नीचे की ओर होवें तो (क) यदि सूर्य-क्षेत्र के नीचे हों ऐसा जातक अनेक विद्याओं में प्रवीण होता है किन्तु इसकी विद्वत्ता के अनुरूप इसे लाभ नहीं होता।

(ख) यदि अन्य क्षेत्रों के नीचे हृदय-रेखा पर शीर्ष-रेखा की ओर जाने वाली, लम्बी रेखायें हों तो मित्रों द्वारा कष्ट, विपत्ति समझनी चाहिये।

उपर्युक्त नं० (२) और नं० (३) में अन्तर यह है कि हृदय-रेखा से जो शाखाएँ निकलती हैं वे हृदय-रेखा में से निकलती हैं और हृदय-रेखा के साथ ३०-३५ डिग्री का कोण बनाती हैं। किन्तु लम्ब-रेखा ९० डिग्री का कोण बनाती है, और हृदय-रेखा को स्पर्श-मात्र करती है उसमें से निकलती नहीं।

यदि हृदय-रेखा से कोई रेखा निकलकर कनिष्ठिका पर जावे और वहाँ समाप्ति पर 'हुक' का आकार हो जावे तो किसी दुर्घटना से गहरी चोट लगती है।

यदि कोई लहरदार रेखा चन्द्र-क्षेत्र से चलकर हृदय-रेखा पर आ मिले तो ऐसा व्यक्ति हिंसात्मक प्रवृत्ति का होता है। किन्तु यदि चन्द्र-क्षेत्र से दो सीधी समानान्तर रेखायें हृदय-रेखाओं पर आएँ तो Apoplexy[1] से मृत्यु होती है।

यदि हृदय-रेखा से निकलकर कोई शाखा शनि-क्षेत्र पर जावे और एकदम मुड़कर 'हुक' का आकार बनाती हुई समाप्त हो जावे

---

१. रक्तचाप-जनित मूर्च्छा।

तो समझना कि जातक ने किसी को प्रेम किया किन्तु प्रेम के बदले प्रेम न प्राप्त होने के कारण उसे भारी धक्का लगा।

यदि हृदय-रेखा टूटी हो

यदि हृदय-रेखा कई स्थानों पर टूटी हो तो या तो ऐसे व्यक्ति प्रेमी होते नहीं या लगन के साथ किसी एक व्यक्ति को प्रेम[2] नहीं करते, उनके प्रेम के थोड़े-थोड़े बहुत हक़दार होते हैं।

यदि हृदय-रेखा **दोनों हाथों** में शनि-क्षेत्र के नीचे टूटी हुई हो तो रक्त-प्रवाह के दोष के कारण सांघातिक बीमारी होती है। हृदय को रक्त पहुँचाने वाली कोई नली बहुत चौड़ी हो जाती है और जातक अल्पायु होता है। किन्तु यदि दोनों खंड-एक-दूसरे के ऊपर हों तो बीमारी के बाद जातक बच जाता है।

यदि शनि-क्षेत्र के नीचे हृदय-रेखा टूटी हो तो प्रेम-सम्बन्ध (जातक की इच्छा के विरुद्ध) टूट जाता है। परिणाम में दुःख पहुँचाने वाले प्रेम का, यह लक्षण है। यदि मंगल-क्षेत्र-स्थित चिह्नों से इसकी पुष्टि हो तो निश्चय ही परिणाम में घोर संताप होता है।

यदि सूर्य-क्षेत्र के नीचे हृदय-रेखा टूटी हो तो झक्कीपन में आकर, आवेश में किसी बात पर चिढ़कर, जातक प्रेम-सम्बन्ध विच्छेद कर देता है। जातक के प्रेम में अभिमान या अहंकार को मात्रा विशेष होती है। यही चिह्न हृदय-रोग का लक्षण भी है। यदि दोनों हाथों में इस स्थान पर हृदय-रेखा टूटी हो तो हृद्रोग के कारण मृत्यु होगी। यह समझना चाहिए।

यदि बुध-क्षेत्र के नीचे हृदय-रेखा टूटी हो तो जातक के लोभ के कारण प्रेम-सम्बन्ध विच्छेद होता है। प्रेम की भावना से अधिक, द्रव्य की भावना, प्रबल होती है। स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से—यकृत-

---

२. प्रेम—स्त्री-पुरुष प्रेम।

दोष के कारण—हृदय अपना कार्य ठीक नहीं करेगा। पित्तज हृद्रोग या उसी वर्ग के रोग का भय।

ऊपर जहाँ-जहाँ हृदय-रेखा टूटने का दोष और उसका फल बताया गया है वहाँ यदि एक ही हाथ में हृदय-रेखा खंडित तो हो और दोनों खंड एक-दूसरे के ऊपर भी आ जावें तो दोष की अल्पता समझनी चाहिए। प्रेम-सम्बन्ध विच्छेद हो जावेगा किन्तु पुनर्मिलन भी हो जावेगा। यदि दोनों हाथ में टूटने का अशुभ लक्षण हो तो दोष की मात्रा अधिक समझनी चाहिये।

हृदय-रेखा की अन्य प्रधान रेखाओं से युति या सम्बन्ध

यदि दोनों हाथों में हृदय-रेखा, शीर्ष-रेखा और जीवन-रेखा प्रारम्भिक स्थान में मिली हुई हों और शीर्ष-रेखा के मध्य में 'क्रॉस'-चिह्न हो तो सहसा मृत्यु हो जायेगी। यदि दोनों हाथों में एक-से लक्षण हों तो आशंका और भी अधिक समझनी चाहिये। किस अवस्था में मृत्यु होगी यह जीवन-रेखा से देखना चाहिये।

यदि हृदय, शीर्ष तथा जीवन-रेखा तीनों प्रारम्भिक स्थान में मिली हों और बृहस्पति के क्षेत्र पर किसी अल्प टेढ़ी रेखा को कोई दूसरी क्षुद्र-रेखा काटकर 'क्रॉस'-चिह्न बनाती हो तो ऐसे जातक के जीवन में कोई ऐसा प्रेम-सम्बन्ध होगा जिसके कारण इसे घोर कष्ट, निराशा और संताप होगा—प्राणान्त कष्ट तक हो सकता है। इस 'क्रॉस' में चारों 'कॉस'-खंड बराबर नहीं होते किन्तु एक खंड तलवार की तरह लम्बा होता है।

चित्र नं० ५५

यदि हृदय-रेखा गहरी और लम्बी हो किन्तु प्रारम्भिक स्थान में जीवन-रेखा तथा शीर्ष-रेखा से जुड़ी हुई हो, शीर्ष-रेखा के अंत से एक शाखा निकलकर चन्द्र-क्षेत्र पर जावे और शीर्ष-रेखा स्वयं

का अन्त यथास्थान हो या हृदय-रेखा से मिल जावे तो यह अत्यन्त उग्र प्रेम का द्योतक है। ऐसे मनुष्य प्रेम में अन्धे हो जाते है। उनकी बुद्धि सारा संयम छोड़ देती है। परिणाम—जो प्रेमान्धता का होता है वही।

हृदय-रेखा का गहरा और लम्बा होना प्रेमातिशय प्रकट करता है। प्रारम्भिक युति प्रकट करती है कि भावना का कितना अधिक ज़ोर है। शीर्ष-रेखा का हृदय-रेखा पर अन्त होना यह प्रकट करता है कि दिल ने दिमाग़ पर काबू पा लिया। शीर्ष-रेखा से जो चन्द्र-क्षेत्र पर शाखा जाती है वह 'कल्पना' का आधिक्य सूचित करती है। इन्हीं सब के कारण से प्रेमान्धता होती है। परिणाम अच्छा नहीं।

यदि हृदय-रेखा शनि-क्षेत्र के नीचे से प्रारम्भ हो और वहाँ शीर्ष-रेखा से मिली हुई हो तो प्रेमान्धता के कारण दुष्परिणाम होता है। यदि यह लक्षण दोनों हाथों में हो तो इसी कारण आकस्मिक मृत्यु का द्योतक है।

यदि उपर्युक्त प्रकार की हृदय-रेखा शनि-क्षेत्र के नीचे किसी क्षुद्र-रेखा से कटी हो तो वैवाहिक जीवन दुःखमय बीतता है। दुःस्थानों में (अनुपयुक्त व्यक्ति के साथ) विवाह या प्रेम-सम्बन्ध के कारण घोर निराशा होती है।

यदि स्वयं हृदय-रेखा बुध-क्षेत्र के नीचे तक ठीक हो फिर लहरदार आकृति धारण कर शीर्ष में जा मिले तो कम अवस्था में मृत्यु होती है अर्थात् जातक पूर्णायु नहीं भोगता।

यदि बृहस्पति के क्षेत्र से हृदय-रेखा प्रारम्भ हो, और चन्द्र-क्षेत्र से निकली हुई भाग्य-रेखा आकर हृदय-रेखा में बिलीन हो जावे तो ऐसे जातक को ऐसी प्रेमिका प्राप्त होती है जिसके अत्यन्त प्रेम के कारण जातक का जीवन बहुत हर्षमय रहता है। यदि स्त्री के हाथ में यह लक्षण हो तो उसे बहुत अधिक प्रेम करने वाला पति मिलेगा। किन्तु उत्कट प्रेम की प्रतिक्रिया भी होती है।

यदि हृदय-रेखा से कोई रेखा चलकर भाग्य-रेखा को काटे और भाग्य-रेखा खंडित हो तो पति-पत्नी या अन्य प्रेमी व्यक्ति की मृत्यु की सूचक है भाग्य-रेखा जहाँ खंडित हो उससे यह अनुमान लगाना चाहिये कि किस अवस्था में शोक-घटना होगी। भाग्य-रेखा मनुष्य के कार-बार, धन-समृद्धि, कार्योत्पादन-शक्ति और उसमें संलग्नता की द्योतक है। यदि भाग्य-रेखा खंडित हो तो इन सब में बाधा सूचित होती है इसलिए केवल ऐसे प्रियजनों में से किसी की मृत्यु होती है जिसके कारण भाग्योदय में बाधा पड़ गई हो।
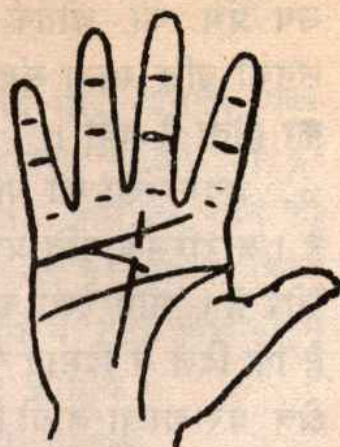
चित्र नं० ५६

यदि भाग्य-रेखा से रेखाएँ निकलकर हृदय-रेखा की ओर जावें किन्तु उसको स्पर्श न करें तो ऐसे प्रेम-सम्बन्ध द्योतित होते हैं जो विवाह में परिणत नहीं होते। यदि भाग्य-रेखा से निकलने वाली उपर्युक्त रेखा हृदय-रेखा का स्पर्श करे तो प्रेम का परिणाम विवाह होता है; यदि यही रेखा हृदय-रेखा को काट दे तो विवाह तो होगा किन्तु ऐसे विवाह का परिणाम दुःखद होता है।

यदि जीवन-रेखा से कोई रेखा या रेखायें निकलकर हृदय-रेखा पर आवें तो हृद्रोग[1] के कारण या प्रेम के परिणामस्वरूप निराशा के कारण रोग की द्योतक हैं।

यदि शीर्ष-रेखा से कोई रेखा निकल कर हृदय-रेखा का स्पर्श करे तो किसी आत्यन्तिक (बहुत अधिक) प्रेम के कारण ऐसे जातक

---

१. बहुत से मनुष्यों का 'हृदय' ठीक काम नहीं करता है इस कारण शरीर में रक्त-प्रसार ठीक प्रकार नहीं हो पाता और जातक बीमार हो जाता है। चाहे डाक्टर 'हृद्रोग' न कहें किन्तु मूल कारण 'हृदय' होता है।

के जीवन में उथल-पुथल होगी। किन्तु यदि हाथ के अन्य भागों से बहुत प्रेम करने के लक्षण जातक में न हों और बुध-क्षेत्र उच्च हो तो **ऐसे जातक का, प्रेम या विवाह** में व्यापारिक दृष्टिकोण होता है कि मुझे आर्थिक लाभ कितना होगा? बुध धनोपार्जन-बुद्धि और व्यापारिक भावना का प्रतीक है; शुक्र कामुक-वासना और सौंदर्यप्रियता का प्रतीक है, मंगल उग्रता और साहस का; बृहस्पति उदात्त भावना, कर्त्तव्य-परायणता तथा संयम का; चन्द्र कल्पना, मनोराज्य और चित्त की सरलता का; सूर्य गुणग्राहिणी शक्ति और आज्ञा-प्रियता का तथा शनि अन्तर्मुखी वृत्ति और गम्भीरता का। इस कारण अन्य ग्रह-क्षेत्रों के उच्च न होने और केवल बुध-क्षेत्र के उच्च होने से प्रत्येक कार्य में आर्थिक या व्यापारिक बुद्धि प्रबल हो जाती है।

यदि हृदय-रेखा से अनेक छोटी-छोटी समानांतर रेखाएँ नीचे की ओर शीर्ष-रेखा के पास तक जावें—किन्तु उसे काटें नहीं—तो ऐसे पुरुष पर स्त्रियों का विशेष प्रभाव रहेगा। यदि स्त्री के हाथ में हो तो उस पर पति का विशेष प्रभाव समझना चाहिए। इसका वास्तविक अर्थ है कि हृदय मस्तिष्क पर प्रभाव डाल रहा है। किन्तु यदि यही रेखायें हृदय-रेखा के उस भाग से निकलें जो सूर्य-क्षेत्र के नीचे है तो ऐसे व्यक्ति अनेक विद्या में पारंगत होते हैं किन्तु उससे कोई विशेष फलोत्पत्ति नहीं होती।

हृदय-रेखा पर चिह्न

(१) यदि हृदय-रेखा को छोटी-छोटी आरी के नोकों की तरह रेखायें आड़ी काटें तो या तो बारम्बार प्रेम में निराशा-जनित दुःख होता है या हृद्रोग किंवा यकृत-रोग का लक्षण है यकृत ठीक काम नहीं करने से स्नायविक-विकार हो जाते हैं जिनका हृदय पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ता।

(२) यदि हृदय-रेखा पर बिन्दु-चिह्न हो तो या तो प्रेम में निराशा का द्योतक है या हृदय की तेज़ धड़कन (एक प्रकार का हृद्रोग) का।

(३) किन्तु यदि हृदय-रेखा पर एक ही सफ़ेद बिन्दु-चिह्न हो तो प्रेम में सफलता प्रदर्शित करता है। जिस प्रकार शीर्ष-रेखा पर सफ़ेद बिन्दु-चिह्न बौद्धिक गवेषणा और सफलता का प्रतीक है उसी प्रकार हृदय-रेखा पर स्थित सफ़ेद बिन्दु-चिह्न प्रेम-मार्ग में अध्यवसाय और अन्त में सफलता प्रकट करता है। जहाँ हृदय-रेखा प्रारम्भ होती है यदि करीब-करीब उसी स्थान पर यह सफ़ेद चिह्न हो तो जातक ऐसी स्त्री से प्रेम करेगा जो विलासप्रिय, उज्ज्वल गौरवर्ण की होगी। बहुत ऊँची नहीं—जिसके ठोड़ी या गाल पर गड्ढे होंगे। किन्तु यदि यह चिह्न गुरु-क्षेत्र के नीचे जो हृदय-रेखा का भाग है उस पर हों तो कुछ पीलापन लिये गौरवर्ण, गंभीर, भाग्यशालिनी, शान्त प्रकृति की प्रेम करने वाली स्त्री से जातक प्रेम करेगा। यदि शनि-क्षेत्र के नीचे सफ़ेद चिह्न हों तो कृपण, कुछ लम्बी, श्यामवर्ण की स्त्री से प्रेम होगा। यदि सूर्य-क्षेत्र के नीचे हृदय-रेखा पर ऐसा चिन्ह हो तो, कला में विशेष रुचि रखने वाली उच्च कुल की कन्या से प्रेम कर विवाह में सफलता होगी। यदि बुध-क्षेत्र के नीचे यह चिह्न हो तो दुबली-पतली, बहुत बातूनी चंचल किन्तु बुद्धिमती कन्या से विवाह या प्रेम होगा।

यदि बिन्दु-चिह्न सफ़ेद हो तभी इसे शुभ लक्षण समझना चाहिए।

(४) किन्तु यदि यह बिन्दु-चिह्न काले रंग का या मटमैला हो तो शुभ लक्षण नहीं है प्रत्युत् अशुभ लक्षण है। यदि यह अशुभ-चिह्न सूर्यक्षेत्र के नीचे हृदय-रेखा पर हो तो जिस व्यक्ति को जातक प्रेम करता है, उसे अन्य कोई कलाकार या प्रसिद्ध पुरुष अपना लेगा (अपनी बना लेगा), इस कारण जातक को विषाद

और निराशा होगी। यदि बुध-क्षेत्र के नीचे हृदय-रेखा पर यह चिह्न हो तो जातक की प्रेमिका को कोई डाक्टर या व्यापारी अपनी बना लेगा और इस कारण दुःख और निराशा होगी। यदि स्त्री के हाथ में यह हो तो उसके पति या प्रेमी का संयोग उपर्युक्त प्रकार की अन्य स्त्री से होगा यह कहना उचित है।

किन्तु यदि स्वास्थ्य-रेखा भी क्षीण, अस्पष्ट और लहरदार हो तो प्रेम में निराशा की जगह इसे अस्वास्थ्य का चिह्न समझना चाहिये। यकृत के ठीक काम न करने से हृदय की धड़कन का रोग होगा।

(५) यदि हृदय-रेखा पर लम्बा लाल दाग़ हो तो रक्तचाप-जनित मूर्च्छा की आशंका होगी।

(६) यदि काले या नीले चिह्न हों तो तीव्र मलेरिया ज्वर या वात विकार (गठिया आदि रोग) हो।

(७) यदि बुध-क्षेत्र पर 'क्रॉस-चिह्न' हो और क्रॉस' बनने वाली दोनों छोटी रेखाओं में एक हृदय-रेखा को काटती हो तो व्यापार में गहरी हानि होगी। (कब होगी ? यह भाग्य-रेखा से विचार करना चाहिये।)

(८) जहाँ भाग्य-रेखा हृदय-रेखा को काटती हो वहाँ यदि कई 'क्रॉस'-चिह्न हों तो प्रेम में पड़ जाने के कारण आर्थिक कठिनाइयाँ होंगी, यह प्रकट होता है।

(९) यदि हृदय-रेखा से कोई शाखा निकलकर चन्द्र-क्षेत्र पर आवे और उसका योग किसी तारे के चिह्न से हो तो अतृप्त काम-वासना के कारण दिमाग खराब होने की आशंका होगी (बहुत सी कन्याओं और युवकों में इस रोग का मूल जन्म से ही रहता है और इस प्रकार के रोग में पैतृक या मातृक रक्त का प्रभाव होता है। इन्हें शीघ्र ही हिस्टीरिया या अन्य इसी प्रकार के रोग हो जाते हैं।

(१०) यदि हृदय-रेखा पर छोटा-सा वृत चिह्न हो तो 'हृदय' की स्वास्थ्य-सम्बन्धी कमज़ोरी का द्योतक है। यदि सूर्य-क्षेत्र के नीचे यह हो तो आँखों की दृष्टि कम हो जावेगी।

(११) यदि हृदय-रेखा पर या भिड़ा हुआ चतुष्कोण चिह्न हो तो रोग किंवा प्रेमजनित निराशा से रक्षा करता है।

(१२) यदि हृदय-रेखा पर द्वीप-चिह्न हों तो अनुचित प्रेम-सम्बन्ध प्रकट करते हैं। जितने द्वीप हों उतने ही अनुचित सम्बन्ध। किन्तु यदि हाथ के अन्य लक्षण वासना-प्रधान न हों तो यह हृदय ठीक काम नहीं करता, यह अस्वास्थ्य घोषित करता है।
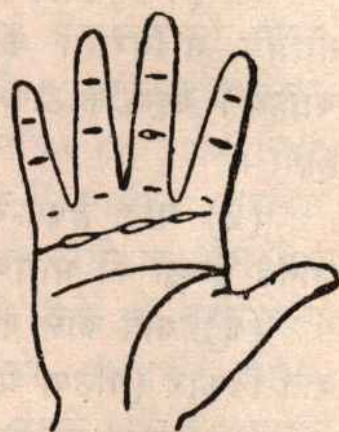
चित्र नं० ५७

(१३) यदि शनि-क्षेत्र के नीचे हृदय-रेखा पर उपर्युक्त द्वीप-चिह्न हो तो समझना चाहिये कि अनुचित प्रेम-सम्बन्ध के कारण भाग्य में काफ़ी बाधा पहुँची है। किन्तु जैसा ऊपर बताया गया है यदि हाथ के अन्य लक्षण वासना की प्रबलता न प्रकट करते हों तो हृदय की स्नायविक अस्वस्थता का द्योतक है।

(१४) यदि हृदय-रेखा पर द्वीप-चिह्न हो और भाग्य-रेखा पर भी हो तो ऐसा व्यक्ति अनुचित प्रेम-सम्बन्ध करने में किसी बात का विचार न करेगा।

(१५) यदि द्वीप-चिह्न सूर्य-क्षेत्र के नीचे वाले हृदय-रेखा के भाग पर हो तो नेत्र-ज्योति को गहरा आघात (वृद्धावस्था में अन्धे होने का भय) प्रकट करता है।

यदि दो हृदय-रेखा हों

चित्र नं० ५८

दो हृदय-रेखा होना आत्यन्तिक (अत्यन्त घना) प्रेम की भावना प्रकट करता है । बहुत प्रेम करना एक प्रकार से कष्ट भी पहुँचाता है, क्योंकि जितना अधिक प्रेम हो उतनी ही अधिक निराशा की प्रतिक्रिया भी होती है । यदि मनुष्यों के हाथ में ऐसी दो हृदय-रेखा हों तो उनमें आवश्यकता से अधिक जोश होता है । यदि स्त्रियों के हाथ में हो तो उनका स्वास्थ्य अच्छा रहता है । किन्तु दो हृदय-रेखा तभी समझनी चाहियें जब दोनों रेखा समानान्तर और लम्बी हों ।
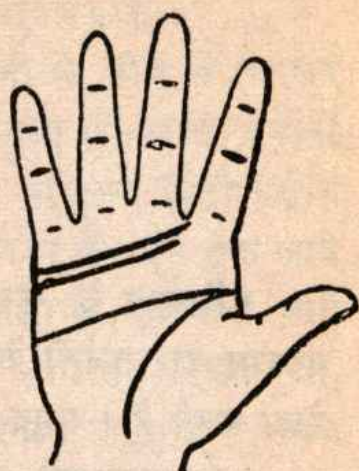
१३वाँ प्रकरण

भाग्य-रेखा

मणिबन्ध के कुछ ऊपर से प्रारम्भ होकर यह रेखा सीधी मध्यमा या तर्जनी के मूल तक जाती है। इसे संस्कृत में ऊर्ध्व-रेखा कहते हैं। समुद्र ऋषि के अनुसार—

"त्यक्त्वाऽधो मणिबन्धं या रेखा स्यात्करगामिनी।
सुवर्ण रत्नराज्यश्री दायिका सा न संशयः॥"

अर्थात् यह रेखा सुवर्ण, रत्न, राज्यश्री देने वाली है इसमें संशय नहीं। 'स्कन्द शारीरिक' ग्रंथ के अनुसार यदि रेखा प्रारम्भ में जीवन-रेखा से मिली हो और इस रेखा के प्रारम्भ में 'शंख' का चिह्न हो तो उस मनुष्य की विभूति या आर्थिक समृद्धि इतनी अधिक होती है कि लोगों के चित्त को मोहित कर लेती है। 'शंख' की बजाय यदि 'मत्स्य' चिह्न हो तब भी यही फल होता है। ऐसी रेखा को 'धात्री' कहते हैं। यदि मध्यमा उंगली के नीचे जाकर यह समाप्त न हो किन्तु अनामिका के मूल में जाकर समाप्त हो तो भी भाग्योदय कारक बहुत विशिष्ट फल होता है। ऐसी ऊर्ध्व-रेखा या भाग्य-रेखा को 'गोपी' कहते हैं,

(देखिये 'स्कान्द शारीरक' पृ० ४३-४४)

समुद्र ऋषि का मत है कि—

"अंगुष्ठस्यापि मध्येऽपि ब्रूतेनृपतिमुत्तमम्।
सैव तर्जनिकां प्राप्य दत्ते साम्राज्य मग्रिमम्॥
सेनापतिर्धनेशो वा मध्यमागतरेखया।
अनामिका पुनः श्रेष्ठ धनवान् सर्वदा नरः॥

सुखिनं सुभगं वापि सम्प्राप्ता सा कनिष्ठिकाम् ।
करोति सत्यमेवैषा यद्यच्छिना सुवर्णभाक् ।''

अर्थात् यदि यह रेखा अँगूठे और तर्जनी के बीच में जाकर समाप्त हो और अखंडित, वलवान् हो तो मनुष्य को राजा बनाती है। यदि तर्जनी के मूल में समाप्त हो और अच्छिन्न (टूटी हुई न हो) हो तो राज्याधिकार देती है। यदि मध्यमा के मूल तक जावे तो ऐसा व्यक्ति बहुत धनी होता है। अनामिका के भूल तक जावे तो भी यही फल। कनिष्ठिका के मूल तक जावे तो मनुष्य सुखी, सोभाग्यवान होता है और उसके पास बहुत सोना रहता है। सर्वत्र यह फल ऐसी रेखा का होता है जो कटी-फटी या दोषयुक्त न हो। इसी रेखा को ऊर्ध्व-रेखा भी कहते हैं। अब पाश्चात्य मतानुसार इसका विस्तृत परिचय दिया जाता है।

पाश्चात्य मत

करतल के नीचे से—कभी मणिबन्ध से, कभी चन्द्र-क्षेत्र के निम्न भाग से या कभी जीवन-रेखा से भिड़ी हुई जो रेखा ऊपर को ओर शनि-क्षेत्र की ओर जाती है—उसे भाग्य-रेखा कहते हैं। कभी-कभी उपर्युक्त किसी भी स्थान से न निकलकर हाथ के बीच से ही यह निकलती है। कुछ हाथों में यह शनि-क्षेत्र की ओर न जाकर सूर्य-क्षेत्र की ओर चली जाती है। जिस प्रकार इसके निकलने के स्थान अलग-अलग हैं उसी प्रकार इसका अन्त भी शनि-क्षेत्र पर न होकर या तो पास के किसी दूसरे ग्रह-क्षेत्र पर हो जाता है या यह मध्यमा उंगली के तृतीय पर्व तक पहुँच जाती है।

यदि अन्य किसी क्षेत्र पर यह जाकर रुके तो इसकी असाधारण स्थिति समझनी चाहिये। किन्तु सामन्यतः शनि-क्षेत्र पर इसका अन्त होता है इस कारण बहुत से पाश्चात्य हस्तपरीक्षक इसे शनि-रेखा कहते हैं। किन्तु शनि-रेखा की अपेक्षा इसको भाग्य-रेखा

कहना ही विशेष उपयुक्त होगा क्योंकि इससे भाग्योदय का विचार किया जाता है। यदि शनि-क्षेत्र पर यह रेखा पहुँचे और वहाँ गहरी हो तो शनि-ग्रह के अच्छे गुण यथा गम्भीरता, दूरदर्शिता किसी बात का पूर्ण विचार कर कार्य करना उस जातक में पाये जायेंगे और इन्हीं गुणों के कारण वृद्धावस्था में ऐसे व्यक्ति पूर्ण भाग्योदय का अनुभव करते हैं। शनि का स्वभाव है परिश्रमशील होना, चिन्तन-शीलता और अध्यवसायपूर्वक किसी काम में लग जाना, ये सब गुण उस व्यक्ति में होते हैं जिसके हाथ में शनि-रेखा सुन्दर और गहरी शनि-क्षेत्र तक पहुँचती है। (देखिये चित्र नं० ५८)

चित्र नं० ५६

बहुत से हाथों में शनि-रेखा नहीं पाई जाती। इससे यह नहीं समझना चाहिए कि ऐसे व्यक्ति का भाग्योदय होगा ही नहीं, क्योंकि बहुत से व्यक्ति ऐसे हैं जो आर्थिक दृष्टि से पूर्ण भाग्यवान कहलाने के अधिकारी हैं किन्तु उनके हाथ में शनि-रेखा का सर्वथा अभाव है। शनि-रेखा का न होना केवल यह सूचित करता है कि ऐसे जातक साधारण स्थिति में पैदा हुए। बचपन में न उन्हें कोई विशेष सहायता मिली न इतना धन था कि वे कोई व्यापार आदि द्वारा अपना भाग्योदय कर सकते किन्तु केवल अपने बाहुबल और परिश्रम से धीरे-धीरे अपनी स्वयं की उन्नति कर ये लोग उन्नति प्राप्त करते हैं। उनके जीवन में बाहरी कोई साधन ऐसा नहीं था जिसे 'भाग्य' कहा जा सके। ये लोग अपने भाग्य के स्वयं निर्माता होते हैं। जो धनिक कुल में उत्पन्न होता है वह पैतृक धन से उच्च शिक्षा प्राप्त कर उन्नत पद पर पहुँचे तो यह उसका 'भाग्य' है कि वह धनी कुल में उत्पन्न हुआ। इसी प्रकार यदि कोई उच्च पदाधिकारी के घर

जन्म ले और इस कारण बड़े होने पर उसे कोई ऊँची जगह मिल जाय तो यह भी उसका 'भाग्य' है। किन्तु यदि वह सब परिस्थिति किसी के जन्म के समय अथवा बाल्यावस्था में न हो तो वह 'भाग्य' लेकर पैदा नहीं होता किन्तु अपना भाग्य स्वयं बनाता है।

भाग्य-रेखा के प्रारम्भिक स्थान

भाग्य-रेखा या तो (१) मणिबन्ध से प्रारम्भ होती है, (२) या उससे कुछ हटकर हथेली के आरम्भ से, (३) या कुछ टेढ़ी चन्द्र-क्षेत्र के नीचे के भाग से, (४) या शुक्रक्षेत्र से प्रारम्भ होकर टेढ़ी हाथ के मध्य भाग में आती है और फिर ऊपर की ओर (उंगलियों की ओर) जाती है, (५) या जीवन-रेखा के नीचे के भाग से भिड़ी हुई प्रारम्भ होकर शनि-क्षेत्र को जाती है। (६) या हथेली के मध्य से, (७) या केवल शनि-क्षेत्र पर होती है।

(१) यदि मणिबन्ध की तृतीय रेखा से प्रारम्भ हो तो जातक को कोई भारी शोक होगा। किन्तु यदि मणिबन्ध की प्रथम रेखा से प्रारम्भ हो तो बचपन से ही उसके कन्धों पर अपना या अन्य कुटम्बी जनों का भी बोझा पड़ जायगा। यदि मणिबन्ध की प्रथम रेखा से प्रारम्भ होकर हृदय-रेखा तक आवे तो ऐसे जातक को जीवन में या तो प्रेम-सम्बन्ध के कारण जीवन-भर कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है या अन्य रोग-चिह्न हों तो हृदय-रोग होता है। यदि मणिबन्ध से निकलकर यह सीधी मध्यमा उगली के तृतीय पर्व तक (पर्व के ऊपर) चली जाय तो ऐसे मनुष्य के भाग्य में गहरा उलट-फेर होता है। यदि हाथ के अन्य लक्षण शुभ हों तो भाग्योदय, यदि अन्य लक्षण अशुभ हों तो इसके विपरीत समझना चाहिए।

(२) यदि करतल के नीचे से प्रारम्भ हो तो जातक को स्वयं अपने उद्योग और परिश्रम से आर्थिक सफलता प्राप्त होगी।

(३) यदि चन्द्र-क्षेत्र से यह रेखा प्रारम्भ होकर शनि-क्षेत्र तक

जावे तो ऐसे पुरुष का किसी स्त्री की सहायता या सहयोग से भाग्योदय होता है । बहुत बार यह भी देखा है कि ऐसे पुरुष अपनी ही पत्नी की उचित और नेक सलाह मानते हैं और उनको सफलता प्राप्त होती है । यदि किसी स्त्री के हाथ में ऐसी रेखा हो तो अच्छे कुल में विवाह के कारण उसका भाग्योदय होगा । यदि वह स्त्री स्वयं नौकरी या अन्य कार्य करती है तो किसी पुरुष की सहायता से उसकी पदोन्नति होगी ।

चित्र नं० ६०

(४) यदि शुक्र-क्षेत्र से भाग्य-रेखा प्रारम्भ हो तो यह प्रकट करती है कि जातक का भाग्योदय होगा और उसे आर्थिक सफलता मिलेगी । इसमें उसके सगे-सम्बन्धी सहायक होंगे ।

(५) यदि जीवन-रेखा से भिड़कर प्रारम्भ हो तो जातक को अपने उद्योग से सफलता मिलती है परन्तु कुटुम्बी लोग उसे इतना योग्य बना देते हैं कि वह अपने पैरों पर खड़ा हो सके । किन्तु यदि जीवन-रेखा के पास-पास कुछ दूर तक भाग्य-रेखा रहे और उससे भिड़ी हुई न हो तो जीवन के प्रारम्भिक भाग में घर के लोगों का जातक पर विशेष प्रभाव रहेगा यह सूचित होता है ।

(६) यदि भाग्य-रेखा हथेली के मध्य से प्रारम्भ हो तो समझना चाहिए कि जातक के जीवन का प्रारम्भिक भाग अच्छी स्थिति में नहीं बीता । यदि जीवन-रेखा का प्रारम्भिक भाग अस्वास्थ्य प्रकट करता हो और जिस अवस्था से भाग्य-रेखा प्रारम्भ हो रही हो उस अवस्था से जीवन-रेखा भी स्वास्थ्य प्रदर्शन कर रही हो तो समझना चाहिए कि स्वास्थ्य अच्छा न होने के कारण जीवन के शुरू में भाग्योदय नहीं हो सका । इसी प्रकार यदि जीवन-रेखा तो प्रारम्भ से ही अच्छी हो किन्तु शीर्ष-रेखा अच्छी न हो तो दिमाग़ी कमज़ोरी

या पढ़ाई में असफलता के कारण प्रारम्भिक काल में भाग्य में रुकावट हुई। यदि जीवन-रेखा, शीर्ष-रेखा तथा हृदय-रेखा भी कोई खराबी प्रकट न करें तो हाथ के अन्य भागों को देखकर यह निश्चय करना उचित है कि किस कारण प्रारम्भिक अवस्था में अच्छा समय नहीं बीता। उदाहरण के लिए यदि बायें हाथ में तो काफी नीचे से भाग्य-रेखा प्रारम्भ हुई हो किन्तु दाहिने हाथ में हथेली के मध्य भाग से प्रारम्भ हुई हो तो यह अनुमान लगाना चाहिए कि जब जातक पैदा हुआ (इसका प्रदर्शक बायाँ हाथ है) तब स्थिति ठीक थी किन्तु बाद में (इसका प्रदर्शक दाहिना हाथ है) स्थिति बिगड़ गई। यह स्थिति क्यों बिगड़ी इसका कारण ढूँढना चाहिए। जीवन के प्रारम्भिक भाग में जातक का अपना उतना दोष नहीं होता है जितना परिस्थिति का प्रभाव। उदाहरण के लिए यदि शुक्र-क्षेत्र पर जीवन-रेखा के समानान्तर मंगल के द्वितीय-क्षेत्र से कोई प्रभाव-रेखा आए और कुछ दूर चलने पर उसके अन्त में तारे का चिह्न हो तो यह माता या पिता, किसी के प्रभाव का अन्त हो गया अर्थात् उसकी मृत्यु हो गई, यह प्रकट करता है। ऐसे हाथ में यदि भाग्य-रेखा हथेली के मध्य से प्रारम्भ हो तो यह परिणाम निकालना चाहिए कि पिता की मृत्यु के कारण आर्थिक परिस्थिति कमज़ोर हो जाने से, जीवन के प्रारम्भिक भाग में रुकावट रही।

(७) यदि केवल शनि-क्षेत्र पर ही भाग्य-रेखा हो तो समझना चाहिए कि जीवन का मध्य भाग बहुत कठिनता से बीता और भाग्योदय पचास वर्ष की अवस्था के बाद हुआ।

रेखा का रूप, लक्षण, गुण और अवगुण

यदि रेखा गहरी हो तो अच्छा है किन्तु यदि और रेखाओं की अपेक्षा यह रेखा पतली और हल्की हो तो समझना चाहिए कि भाग्य-वृद्धि में उतनी सहायक नहीं होगी।

यदि भाग्य-रेखा नीचे से प्रारम्भ होकर शनि-क्षेत्र के ऊपर तक जावे तो आजीवन भाग्योदय रहेगा। किन्तु यदि थोड़ी ही दूर तक हो तो उतनी ही अवस्था तक भाग्योदय समझना चाहिए। यदि रेखा कहीं पतली और क्षीण तथा कहीं गहरी और पुष्ट हो तो जिस हिस्से में कमज़ोर हो जीवन के उस भाग में भाग्योदय कम होगा और जिस भाग में बलिष्ठ हो जीवन के उस काल में भाग्योदय भी पूर्ण होगा। भाग्य-रेखा यदि प्रारम्भ में अच्छी और गहरी हो तो ऐसे व्यक्ति बिना विशेष मेहनत और परिश्रम के ही आगे बढ़ जाते हैं। किन्तु यदि प्रारम्भिक काल में पतली और उथली रेखा हो या बिलकुल न हो तो बहुत परिश्रमपूर्वक सफलता प्राप्त होती है।

यदि भाग्य-रेखा बहुत चौड़ी और उथली हो तो इसका फल बहुत कम होता है अर्थात् बिलकुल नहीं होने से तो अच्छा है किन्तु यह विशेष प्रभाव उत्पादक नहीं है। ऐसे व्यक्ति का लगातार एक के बाद एक कठिनाइयों को सामना करना पड़ता है।

चित्र नं० ६१

यदि रेखा शृंखलाकार हो और प्रारम्भ से लेकर अन्त तक ऐसी ही दशा हो तो इसका परिणाम भी करीब-करीब वही समझिए जो ऊपर बताया जा चुका है। यदि भाग्य-रेखा का थोड़ा-सा भाग शृंखलाकार हो और बाकी भाग गहरा और पुष्ट हो तो जितना भाग शृंखलाकार है, जीवन का उतना भाग कठिनाइयों में व्यतीत होगा।

जिस प्रकार जीवन-रेखा, हृदय-रेखा या अन्य रेखाओं में रंग का महत्व है उस प्रकार भाग्य-रेखा का रंग से कोई सम्बन्ध नहीं है; क्योंकि रंग स्वास्थ्य का लक्षण है और भाग्य-रेखा से स्वास्थ्य

के विषय में कोई परिणाम नहीं निकाला जाता।

भाग्य-रेखा में दोष-चिह्न

भाग्य-रेखा में क्या-क्या दोष हैं और कहाँ-कहाँ हैं यह ध्यान से देखना चाहिए, क्योंकि ये सब भाग्य में रुकावट डालते हैं। और यदि इनका कारण हाथ के अन्य लक्षणों से मालूम हो सके तो मनुष्य सम्भवत: उनमें सुधार भी कर सकता है।

प्रारम्भिक अवस्था में जो दोष-चिह्न होते हैं वे या तो अस्वास्थ्य के कारण या आर्थिक परिस्थिति या अन्य किसी ऐसे कारण से होते हैं कि व्यक्ति का अपना दोष नहीं कहा जा सकता किन्तु भाग्य-रेखा प्रारम्भिक स्थिति में दोषयुक्त होने पर भी यदि बाद में अच्छी हो जाय तो समझना चाहिए कि प्रारम्भिक कठिनाइयों को पार कर ऐसा व्यक्ति अपना भाग्योदय करने में समर्थ हुआ। उदाहरण के लिए यदि शुक्र-क्षेत्र पर प्रभाव-रेखा तारे के चिह्न से योग करती हो और तारे के चिह्न से चिन्ता-रेखा निकलकर जीवन-रेखा से निकली हुई ऊर्ध्वगामी शाखा को काटती हुई शीर्ष-रेखा में ऐसी जगह आ मिले जहाँ द्वीप-चिह्न हो और जिस अवस्था में ये सब अशुभ चिह्न हों उस अवस्था में भाग्य-रेखा भी अशुभ लक्षणों से युक्त हो तो पिता की मृत्यु के कारण चिन्ता से इसकी भाग्य-वृद्धि में रुकावट हुई यह समझना चाहिए।

चित्र नं० ६२

यदि भाग्य-रेखा पर द्वीप-चिह्न हों तो यह भाग्य-वृद्धि में रुकावट का लक्षण है। बहुत से पाश्चात्य विद्वान् इन द्वीपों से यह अनुमान लगाते हैं कि चरित्र-दोष के कारण भाग्य में बाधा उपस्थित होगी। किन्तु इस दोष को चरित्र-दोष तक सीमित करना उचित नहीं।

यह चरित्र-दोष के कारण या किसी भी अन्य दोष के कारण आर्थिक क्षति प्रकट करता है—गहरा नुकसान हो या तीव्र आर्थिक कठिनता हो। यदि द्वीप-चिह्न भाग्य-रेखा के प्रारम्भ में हो तो माता-पिता की आर्थिक क्षति या कठिनाइयाँ प्रकट करता है। माता-पिता की परिस्थिति खराब होने पर जीवन के प्रारम्भिक काल में जातक का भाग्य रुका रहा इस परिणाम की पुष्टि के लिए चिन्ता-रेखाओं पर ध्यान देना चाहिए। यदि शुक्रक्षेत्र पर स्थित प्रभाव-रेखाओं से प्रारम्भ होकर चिन्ता-रेखाएँ भाग्य-रेखा के ऊपर द्वीप से योग करें तो उपर्युक्त निष्कर्ष अवश्य सत्य होता है। (देखिये चित्र नं० ६३ और ६४)

इसी प्रकार जिस अवस्था पर भाग्य-रेखा में द्वीप-चिह्न हैं उसी अवस्था पर जीवन-रेखा भी दोषयुक्त हो तो स्वास्थ्य के कारण भाग्य में रुकावट हुई। यदि शीर्ष-रेखा पर अशुभ चिह्न हों तो मस्तिष्क की कमजोरी या बीमारी के कारण विद्या में बाधा हुई। सिद्धान्त यह है कि जिस अवस्था में भाग्य-रेखा पर द्वीप-चिह्न है उसी अवस्था पर अन्य क्या अशुभ चिह्न हैं, वे जहाँ या जिस रेखा पर होंगे उन्हीं कारणों से भाग्योदय में बाधा समझना उचित है। यदि शुक्र-स्थान पर अधूरी प्रभाव-रेखा तारे के चिह्न से योग करती हो और उस तारे के चिह्न से प्रारम्भ हुई चिन्ता-रेखाएँ भाग्य-रेखा के ऊपर द्वीप-चिह्न से योग करें तो पिता या अभिभावक की मृत्यु के कारण भाग्य में बाधा समझनी चाहिए।

चित्र नं० ६३

यदि शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ होकर चिन्ता-रेखाएँ जीवन-रेखा को काटती हुई भाग्य-रेखा पर द्वीप-चिह्न से योग करें तो यह समझना चाहिये कि इस जातक के जीवन का वह भाग ऐसे चिड़चिड़ेपन,

चिन्ता, और कष्ट की परिस्थिति में बीता कि उसकी विकास-शक्तियाँ रुकी रहीं और इस कारण भाग्योदय भी रुका रहा।

भाग्य-रेखा को काटने वाली छोटी-छोटी अर्गला-रेखाएँ

यदि भाग्य-रेखा छोटी-छोटी अर्गला-रेखाओं से कटी हो तो यह भाग्य में रुकावट का लक्षण है। जितनी अधिक भाग्य-रेखा को काटने वाली ऐसी रेखा होंगी उतनी ही अधिक भाग्य में रुकावट पड़ेगी। जिस अवस्था पर छोटी अर्गला-रेखा भाग्य-रेखा को काटे उसी अवस्था पर भाग्य में रुकावट या हानि हुई होगी। काटने वाली रेखा जितनी अधिक गहरी हो उतना ही अधिक नुकसान करेगी। यदि यह बहुत ही छोटी और हल्की है और भाग्य-रेखा के ऊपर से चली जावे तो साधारण हानि समझनी चाहिए। किन्तु यदि काटने वाली रेखा गहरी हो और भाग्य-रेखा को बिलकुल खण्डित कर दे तो समझिए कि काफ़ी गहरा नुकसान लगेगा। यदि खण्डित होने के बाद भाग्य-रेखा फिर चालू हो जाए तो घाटे और नुकसान या नौकरी छूटने के बाद फिर हालत सुधर जायेगी। किन्तु यदि टूटने के बाद भाग्य-रेखा अपनी दिशा परिवर्तन कर लेती है तो समझिए कि जातक अपने काम के सिलसिले में कुछ तरमीम या कुछ परिवर्तन कर लेता है। यदि टूटने के पहले भाग्य-रेखा गहरी हो और बाद में पतली हो तो समझिए कि पहली-सी स्थिति तो नहीं हुई किन्तु हाँ काम चल निकला।
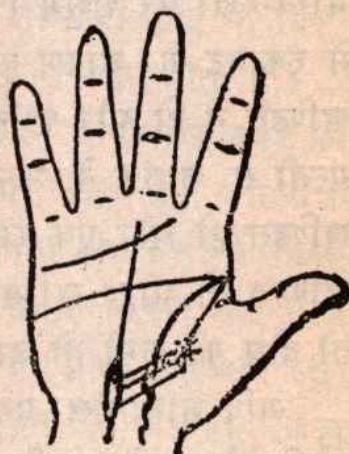
चित्र नं० ६४

यदि भाग्य-रेखा बारम्बार कटी या खण्डित दिखाई दे तो समझिए कि बारम्बार कठिनाइयाँ उपस्थित होंगी और मुसीबतों का सामना करना होगा। जितनी बार और जिस अवस्था पर रेखा खण्डित हो उतनी बार भाग्य में हानि, व्यापार में घाटा, नौकरी

छूटना या अन्य ऐसी ही आपत्तियाँ होंगी। यदि खण्डित होने के बाद फिर रेखा तुरन्त ही प्रारम्भ हो जाय तो कष्ट की स्थिति थोड़े दिन रहेगी। किन्तु यदि बीच में भाग्य-रेखा का बिलकुल अभाव हो और कुछ दूर आगे चलकर पुनः भाग्य-रेखा प्रारम्भ हो तो उतना समय कठिनता से बीतेगा। यदि दोनों हाथों में उसी स्थान पर, भाग्य-रेखा पर अशुभ चिह्न हो तो जन्म-जात संस्कार ही इस भाग में रुकावट के कारण होंगे। किन्तु यदि बायें हाथ में तो रेखा खण्डित न हो और दाहिने में हो तो अपने दोष, आदत, बीमारी या गल्ती से जातक ने उल्टी परिस्थिति उत्पन्न की है। जहाँ रेखा खण्डित हो और एक खण्ड के ऊपर दूसरा खण्ड आ जाय या रेखा खण्डित हो और खण्डित भाग के चारों ओर छोटा चतुष्कोण हो तो दोष की कमी हो जाती है।

यदि भाग्य-रेखा एक-सी गहरी न हो—कहीं अधिक गहरी और चौड़ी और कहीं उथली और पतली हो—तो जिस स्थान में गहरी हो उसके अनुरूप अवस्था में धन की अच्छी आमदनी और जिस स्थान पर क्षीण रेखा हो जीवन के उस काल में धन की कमी होगी। यह आमदनी में वृद्धि और ह्रास प्रकट करती है।

यदि भाग्य-रेखा लहरदार हो तो यह प्रकट होता है कि जातक अपना व्यवसाय या नौकरी बदलता रहेगा और आर्थिक स्थिति बदलती रहेगी—कठिनाइयाँ आवेंगी—जहाँ रेखा गहरी हो वह काल अच्छा है बाकी का समय धनोपार्जन के लिए अच्छा न होगा।

चित्र नं० ६५

यदि प्रारम्भ से भाग्य-रेखा अच्छी हो अर्थात् सुस्पष्ट, गहरी और सीधी हो किन्तु शीर्ष-रेखा तक जाकर रुक जाय तो समझना चाहिए कि ३५ वर्ष की अवस्था तक भाग्य-

स्थिति अच्छी रहेगी और ३५-३६ वर्ष की अवस्था में जातक अपने व्यवसाय या कार्य के सम्बन्ध में ऐसा निर्णय करेगा जो उलटा परिणाम दिखायेगा अर्थात् जिस नये तरीके से वह धनोपार्जन करना चाहता है वह सफल नहीं होगा। जिस काल में (जीवन के जिस भाग में) भाग्य-रेखा अच्छी होती है उस काल में थोड़े परिश्रम से अधिक धन की आमदनी होती है और जब भाग्य-रेखा क्षीण हो जाय या बिलकुल न हो तो अधिक परिश्रम से थोड़ा धन उपार्जन होता है।

यदि भाग्य-रेखा से नन्ही-नन्ही सूक्ष्म रेखाएँ निकलकर ऊपर की ओर (उंगलियों की ओर) जावें दो यह शुभ लक्षण है। जातक में आशा और आकांक्षा होगी और उसे सफलता प्राप्त होगी किन्तु यदि यही नन्ही-नन्ही सूक्ष्म रेखाएँ भाग्य-रेखा से निकल कर नीचे की ओर जावें तो कठिनता और निराशा प्रकट होती है। यदि इसी अवस्था को प्रकट करने वाले स्थान में—जीवन-रेखा पर द्वीप-चिह्न हो तो स्वास्थ्य-हानि के कारण भाग्य में रुकावट होगी। किन्तु यदि शीर्ष-रेखा या हृदय-रेखा पर इस अवस्था में अशुभ चिह्न हो तो दिमाग या दिल (कमज़ोरी आदि से) भाग्य-वृद्धि में रुकावट होगी। यदि शनि-क्षेत्र या चन्द्र-क्षेत्र के मध्य भाग में रोग-लक्षण हो तो वातजनक (गठिया, बाय आदि) रोग समझने चाहिए।

भाग्य-रेखा को काटने वाली रेखा—ऊपर बताया जा चुका है कि भाग्य-रेखा से निकल कर नन्ही-नन्ही सूक्ष्म रेखाएँ उंगलियों की ओर जावें तो शुभ लक्षण है—किन्तु यदि ये रेखाएँ शुक्र-क्षेत्र से चली हुई प्रभाव या (चिन्ता) रेखाओं से कटी हों तो भाग्य-वृद्धि में रुकावट होती है। सम्पूर्ण शुभता या वृद्धि नष्ट न हो लेकिन उनमें कमी ज़रूर हो जाती है। इसी प्रकार यदि चन्द्र-क्षेत्र से या कहीं से भी निकलकर आड़ी रेखाएँ भाग्य-रेखा को काटें तो वे भाग्य में रुकावट करती हैं। भाग्य में रुकावट किसी बीमारी से हो या घटना से किसी व्यक्ति-विशेष के कारण—परन्तु सभी काटने वाली

रेखाओं से भाग्य में बाधा प्रकट होती है। भाग्य-रेखा जिस स्थान पर काटी जाती हो वह जीवन का कौन सा वर्ष होगा यह अनुमान कर, किस वर्ष भाग्य में रुकावट होगी, यह निश्चय करना चाहिए।

चित्र नं० ६६

यदि बृहस्पति के क्षेत्र पर तारे का चिह्न हो और वहाँ से प्रारम्भ होकर कोई रेखा भाग्य-रेखा को काटे तो समझना चाहिए कि अत्यन्त महत्वाकांक्षा होने के कारण ऐसे जातक की भाग्य-वृद्धि में बाधा होगी। ऐसा व्यक्ति यही मन्सूबे बाँधता रहेगा कि किस प्रकार बड़े-बड़े आदमियों के सम्पर्क में आवे और इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए बेतुकी बातें करेगा जिनसे प्रयोजन सिद्धि न होगी बल्कि उल्टा परिणाम होगा। यदि बृहस्पति-क्षेत्र से आई हुई उपर्युक्त काटने वाली रेखा जहाँ भाग्य-रेखा को काटे वहाँ द्वीप-चिह्न भी हो तो अति उच्च मान और पद की अभिलाषा से जातक बहुत फिजूलखर्ची करेगा। इस कारण अपव्यय से और भाग्य में बाधा होगी। (देखिये चित्र नं० ६६)

ऊपर यह बताया गया है कि काटने वाली रेखा जिस स्थान से प्रारम्भ हो उसके अनुसार कारण का अनुमान करना चाहिए। बृहस्पति-क्षेत्र से प्रारम्भ होकर काटने वाली रेखा के विषय में एक उदाहरण दिया गया। अब बुध-क्षेत्र से काटने वाली रेखा प्रारम्भ हो तो उससे क्या नतीजा निकालना चाहिए यह प्रकट किया जाता है।

यदि सारे हाथ का आकार यह प्रकट करे कि जातक पर बुध का अनिष्ट प्रभाव है—बुध का क्षेत्र जाल-युक्त हो, कनिष्ठिका उंगली टेढ़ी हो, बुधाँगली का तृतीय पर्व बहुत बड़ा हो और बुध-क्षेत्र से प्रारम्भ होकर कोई रेखा भाग्य-रेखा को काटे तो जातक

की बेईमानी के कारण भाग्य-वृद्धि में बाधा होगी यह अनुमान निकालना चाहिए।

इन काटने वाली रेखाओं से बाधा पहुँचेगी यह मालूम होने पर यह निश्चय करना चाहिए कि इस बाधाकारक रेखा का परिणाम साधारण होगा या बहुत भयंकर। यदि कटने के स्थान के बाद भी भाग्य-रेखा उसी प्रकार गहरी और अच्छी दिखाई दे तो विशेष बाधा नहीं प्रकट होती। किन्तु यदि भाग्य-रेखा पतली या अस्पष्ट हो जाय या बिलकुल खण्डित हो जाय तो समझना चाहिए कि भाग्य को काफ़ी ठेस पहुँची है।

यदि शुक्र-स्थान पर कोई प्रभाव-रेखा हो और इस प्रभाव-रेखा की गहराई तथा लम्बाई से यह परिणाम निकलता हो कि यह पति या पत्नी का प्रभाव प्रकट करने वाली रेखा है और इस रेखा से निकलकर काटने वाली रेखा भाग्य-रेखा को काटे और आगे भाग्य-रेखा न चले तो समझना चाहिए कि पति या पत्नी के कारण भाग्योन्नति में बाधा हुई है। यदि उपर्युक्त प्रभाव-रेखा से निकलकर कोई अन्य रेखा बृहस्पति के क्षेत्र पर जाती हो तो समझना चाहिए कि जातक की पत्नी में अत्यधिक महत्वाकांक्षा है। इस कारण जातक ने उस लक्ष्य की पूर्ति के लिए धन का अपव्यय किया जिस कारण भाग्य में बाधा हुई। यदि इसके बाद भाग्य-रेखा बिलकुल न चले तो उपर्युक्त अपव्यय के कारण सदैव के लिए भाग्य-वृद्धि समाप्त हो गई यह समझना चाहिए।

यदि जीवन-रेखा अच्छी न हो और उससे प्रारम्भ होकर चिन्ता-रेखाएँ भाग्य-रेखा को काटें तो अस्वास्थ्य के कारण भाग्य में बाधा समझनी चाहिए—

(१) इस प्रकार काटने वाली रेखा जिस उद्गम स्थान से शुरू हो (२) उस उद्गम स्थान पर जो चिह्न हो और (३) उस उद्गम स्थान से निकलकर अन्य कोई रेखा कही जावे—इन सब

बातों से भाग्य-बाधा का कारण निर्णय करना चाहिए। यदि काटने वाली रेखा शीर्ष-रेखा से निकले तो अपने गलत निर्णय के कारण भाग्य-हानि होगी। यदि हृदय-रेखा से निकले तो प्रेम के कारण या मोह के कारण जातक ने अपनी नौकरी या व्यवसाय को धक्का पहुँचाया। यदि शुक्र-क्षेत्र पर प्रभाव-रेखा के अन्त में तारे का चिह्न हो और प्रभाव-रेखा से प्रारम्भ हो चिन्ता-रेखा भाग्य-रेखा को काटे तो किसी आत्मीय जन की मृत्यु के कारण भाग्यहानि हुई यह नतीजा निकालना चाहिए। किस-वर्ष में यह घटना हुई, यह भाग्य-रेखा जहाँ काटी जाती है, उस स्थान से अनुमान करना चाहिए।

यदि यह काटने वाली रेखा भाग्य-रेखा को न काटे किन्तु उस तक पहुँचने के कुछ पूर्व ही रुक जाय तो समझना चाहिए कि भाग्य-बाधा का कारण तो उपस्थित हुआ था किन्तु फलोत्पत्ति के पूर्व ही निवृत्ति हो गई इस कारण फल नहीं हुआ। यदि किसी हाथ में आगे के जीवन-काल में (उदाहरण के लिए जब जातक का हाथ देखा तब उसका ३५वाँ वर्ष है और ४५वें वर्ष के आसपास भाग्य-रेखा को काटने वाली रेखा भाग्य-रेखा के पास तक आई है किन्तु उसका स्पर्श न कर कुछ दूर पहले ही रुक गई) इस प्रकार की रेखा दिखाई दे तो जातक को बता देना चाहिए कि इस समय तो काटने वाली रेखा आपकी भाग्य-रेखा को नहीं काट रही है परन्तु आप अमुक कारण से सावधान रहिए। हो सकता है यह रेखा बढ़कर भविष्य में आपकी भाग्य-रेखा को काट दे और भाग्य में बाधा पहुँचे। रेखाएँ बदलती रहती हैं।

भाग्य-रेखा की सहायक रेखाएँ

ऊपर काटने वाली रेखाओं का वर्णन किया गया है। किन्तु जो रेखाएँ भाग्य-रेखा के बराबर-बराबर ऊपर की ओर चलें या भाग्य-रेखा में मिल जाएँ वे पुष्टिनी (पुष्ट करने वाली) तथा

सहायक रेखा होती हैं। यदि सहायक-रेखा भाग्य-रेखा में आकर मिल जाएँ तो यह प्रकट होता है कि कोई घटना या व्यक्ति भाग्य-वृद्धि में सहायक हुआ है।

यदि भाग्य-रेखा पतली या दोष-युक्त हो और इसमें मिलने वाली या गहरी-रेखा गहरी और पुष्ट हों तो भाग्य-रेखा के दोष को दूर कर भाग्य-वृद्धि में सहायक होती हैं। यदि भाग्य-रेखा प्रारम्भ में शृंखलाकार या अन्य दोष से युक्त हो और किसी सम्मिलित होने वाली रेखा के बाद गहरी और पुष्ट हो जावे तो समझना चाहिए कि किसी नवीन घटना या व्यक्ति की सहायता से भाग्य में शुभ परिवर्तन उपस्थित हुआ। यदि स्त्रियों के हाथ में ऐसा हो तो जिस उम्र में उनका विवाह अनुमान किया जाय प्रायः उसी अवस्था पर कोई बलिष्ठ-रेखा भाग्य-रेखा से योग कर, उसे भविष्य में अच्छी और गहरी बनाती हो तो यह नतीजा निकलाना चाहिए कि किसी धनाढ्य कुल में विवाह द्वारा भाग्य में शुभ परिवर्तन हुआ। यदि यह सम्मिलित होने वाली या पुष्टिनी रेखा चन्द्र-क्षेत्र से आकर भाग्य-रेखा से सम्मिलित हुई तो कहीं बाहर से शुभ प्रभाव का उदय हुआ है (जैसे—विवाह से)। यदि यह रेखा चन्द्र-क्षेत्र की बजाय शुक्र-क्षेत्र से आई हो तो अपने ही किसी सम्बन्धी का शुभ-प्रभाव, सहयोग या सहायता समझनी चाहिए।

चित्र नं० ६७

जिस स्थान पर इस रेखा का भाग्य-रेखा से योग हो उस स्थान के पहले भाग्य-रेखा बहुत क्षीण हो और बाद में साधारण अच्छी हो तो साधारण भाग्योदय किन्तु यदि बाद में बहुत पुष्ट हो तो विशिष्ट भाग्योदय। इसके विपरीत यदि बाद में भी भाग्य-रेखा

पहले की-सी ही हालत में दिखाई दे तो समझना चाहिए कि भाग्य में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ।

पुष्टिनी रेखा यदि भाग्य-रेखा के पास तक आवे किन्तु उस से योग (स्पर्श) न करे तो समझना चाहिए कि कोई भाग्य में सहायक बात होने वाली थी किन्तु हुई नहीं।

पुष्टिनी रेखाओं के प्रारम्भिक स्थान

इस बात का निश्चय करने के लिए कि भाग्य में वृद्धि किस कारण से हुई पुष्टिनी-रेखा के मूल पर ध्यान दीजिए कि वह कहाँ से प्रारम्भ हुई है। उदाहरण के लिए भाग्य-रेखा टूटी हो और पुष्टिनी-रेखा शीर्ष-रेखा से निकलकर समानान्तर रेखा का रूप धारण करे तो समझिए कि जातक ने अपने सुविचार और अच्छे निर्णय द्वारा जो हानि होने वाली थी उसको रोक सका। यदि उन्नत, विस्तृत, प्रथम मंगल-क्षेत्र से पुष्टिनी रेखा प्रारम्भ होती हो तो यह नतीजा निकलना चाहिए कि अपने साहस और बल के कारण जातक ने अपनी भाग्य-हानि न होने दी।

भाग्य-रेखा पर अन्य चिह्न

यदि भाग्य-रेखा प्रारम्भ में अच्छी न हो तो परिस्थिति का दोष समझना चाहिए। किन्तु यदि बाद में जाकर भाग्य-रेखा टूटी या अन्य दोषयुक्त हो तो जातक के अपने दोष से ऐसा होता है। भाग्य-रेखा जिस स्थान पर टूटी या लहरदार हो उसी स्थान पर वर्ग-चिह्न हो और वर्ग की एक भुजा भाग्य-रेखा के रूप में आगे बढ़ी हो तो भाग्य में जो बड़ी हानि होने वाली थी उससे रक्षा प्रकट होती है। यदि भाग्य-रेखा छोटी-छोटी आड़ी रेखाओं से

चित्र नं० ६८

कटी हो तो यह कठिनाइयों का लक्षण है। यह ध्यान देने से देखना चाहिए कि भाग्य-रेखा इन छोटी लाइनों को काटती है या स्वयं उनसे काटी जाती है। यदि भाग्य-रेखा गहरी है और काटने वाली छोटी आड़ी रेखाओं को काटती है तो जातक कठिनाइयों को पार कर जावेगा। किन्तु यदि स्वयं काटी जाती है तो स्वयं कठिनाइयों से कुचला जावेगा।

भाग्य-रेखा का अन्त

या तो भाग्य-रेखा हाथ के बीच में ही समाप्त हो जाती है या फिर शनि-क्षेत्र तक जाती है। शनि-क्षेत्र तक जाने के कारण इसे बहुत से लोग शनि-रेखा भी कहते हैं किन्तु बहुत से हाथों में यह शनि-क्षेत्र को जाकर बृहस्पति के क्षेत्र को चली जाती है।

यदि भाग्य-रेखा हथेली के मध्य तक आकर बृहस्पति के क्षेत्र पर चली जाए तो जातक के हृदय में बहुत उच्च महत्वाकांक्षा तथा उसकी सफलता प्रकट करती है। (देखिए चित्र नं० ६९)

चित्र नं० ६९

यदि भाग्य-रेखा जीवन-रेखा के अन्दर से प्रारम्भ हो और गहरे तथा पुष्ट रूप में बृहस्पति-क्षेत्र तक जावे तो किसी सम्बन्धी की सहायता से जातक की महत्वाकांक्षा सफल होगी। किन्तु यदि जीवन-रेखा के अन्दर से प्रारम्भ होकर थोड़ी दूर तक तो सुन्दर और गहरी हो किन्तु बाद में कमज़ोर हो जाए तो समझना चाहिए कि जीवन के प्रारम्भिक काल में सम्बन्धियों ने सहायता दी किन्तु बाद में हाथ खींच लिया। जिस अवस्था पर ऐसा हो उस अवस्था पर हाथ में स्वास्थ्य-सम्बन्धी या अन्य कोई अशुभ लक्षण हैं क्या, यह ध्यान से देखना उचित है। यदि कोई चिन्ता-रेखा जीवन-रेखा में से निकली हुई ऊर्ध्वगामी (ऊपर को जाती हुई) रेखा को

काटती हुई विवाह-रेखा को भी काटे और विवाह-रेखा द्विशाखायुक्त हो तो समझना चाहिए कि जातक के अनुपयुक्त विवाह के कारण भाग्य-हानि हुई।

यदि भाग्य-रेखा चन्द्र-क्षेत्र से प्रारम्भ हो और सुन्दर तथा गहरी होकर बृहस्पति के क्षेत्र पर जावे तो किसी की सहायता से या किसी स्त्री द्वारा सहायता एवं महत्वाकांक्षा के कारण सफलता प्रकट होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ में ऐसी रेखा हो तो स्त्री की बजाय पति या अन्य पुरुष (भाई, ससुर आदि पति के मित्र) की सहायता से भाग्योदय समझना चाहिए ; किन्तु यह ध्यान में रखना आवश्यक है कि भाग्य-रेखा सुन्दर, गहरी तथा लम्बी होगी तभी सफलता होगी। यदि टूटी-फूटी छोटी या दोष-युक्त हो तो यह प्रकट करती है कि सहायता के बावजूद भी सफलता नहीं प्राप्त होगी।

यदि भाग्य-रेखा अपने स्वाभाविक स्थान से प्रारम्भ होकर कुछ दूर तो सीधी जावे और फिर घूमकर मंगल के प्रथम क्षेत्र पर चली जावे तो यह प्रकट होता है कि जातक अपने नेतृत्व और साहस के कारण सफलता प्राप्त करेगा। रेखा जितनी अच्छी हो और मंगल-क्षेत्र जितना उन्नत और सुन्दर हो उतना ही अधिक शुभ फल होगा।

यदि भाग्य-रेखा में से एक शाखा निकलकर बृहस्पति के क्षेत्र पर चली जावे तो महत्वाकांक्षा तथा अन्य व्यक्तियों पर सफलता-पूर्वक शासन करने के कारण अधिकार-वृद्धि का लक्षण है। प्राय: राजनीतिक क्षेत्र में विशिष्ट व्यक्तियों के हाथ में भाग्य-रेखा का गुरु-क्षेत्र से संयोग मिलेगा।

यदि भाग्य-रेखा से एक शाखा निकलकर सूर्य-क्षेत्र पर चली जावे तो जातक कला, व्यापार आदि में सफल होगा। यदि अनामिका का प्रथम पर्व लम्बा हो तो कला, यदि द्वितीय पर्व लम्बा हो तो व्यापार, यह तारतम्य करना चाहिए।

यदि भाग्य-रेखा से कोई शाखा निकलकर बुध के क्षेत्र पर जावे तो व्यापारिक सफलता प्रकट होती है। ऐसे जातक में व्यापारिक बुद्धि तथा वाक्-चातुर्य भी होगा।

यदि भाग्य-रेखा से कोईशाखा निकलकर शीर्ष-रेखा का स्पर्श करे तो अपनी बुद्धि के कारण जातक को सफलता होगी।

चित्र नं० ७०

यदि भाग्य-रेखा शनि-क्षेत्र या गुरु-क्षेत्र के ऊपर भी सुस्पष्ट हो तो जातक बुढ़ापे में भी धनोपार्जन करता रहेगा। किन्तु यदि वहाँ तक भाग्य-रेखा न पहुँचे तो जवानी में कमाया हुआ ही खावेगा। यदि शनि-क्षेत्र पर पहुँचकर भाग्य-रेखा, में बिन्दु, क्रॉस या अन्य अशुभ लक्षण हों तो समझना चाहिए कि बुढ़ापे में काफी आर्थिक कठिनताएँ होंगी। इस प्रकार जीवन-रेखा, शीर्ष-रेखा, हृदय-रेखा, प्रभाव-रेखा और चिन्ता-रेखा किस अवस्था में भाग्य-रेखा को किस प्रकार प्रभावित कर रही हैं तथा भाग्य-रेखा कितनी दूर तक किन-किन गुणों या दोषों से युक्त है इसका विचार कर—हाथ तथा उंगलियाँ लम्बी और नुकीली हैं या चतुष्कोण, उंगलियों के कौन से पर्व लम्बे हैं—इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए, जातक स्त्री है या पुरुष, तथा देश, काल और पात्र का विचार कर फलादेश करना उचित है।

१४वाँ प्रकरण

सूर्य-रेखा

जिस प्रकार भाग्य-रेखा मणिबन्ध या चन्द्र-क्षेत्र या हथेली के मध्य से, या जीवन-रेखा से निकल कर शनि-क्षेत्र किंवा गुरु-क्षेत्र को जाती है उसी प्रकार सूर्य-रेखा मणिबन्ध या जीवन-रेखा से या चन्द्र किंवा भौम-क्षेत्र से या अनामिका उंगली और मणिबन्ध के बीच के किसी स्थान से निकलकर सूर्य-क्षेत्र को जाती है। इसे सूर्य-रेखा कहते हैं।

चित्र नं० ७१

सूर्य-रेखा और भाग्य-रेखा के फलों में समानता

बहुत से हाथों में यह होती ही नहीं; बहुत से हाथों में होती है किन्तु अस्पष्ट और छोटी। एक प्रकार से यह भाग्य-रेखा की सहायिका है। यदि भाग्य-रेखा टूटी हो और सूर्य-रेखा पुष्ट हो तो भाग्य-रेखा के दोष को कम करती है। जिस अवस्था में भाग्य-रेखा टूटी हो—उसी अवस्था में सूर्य-रेखा पुष्ट और सुन्दर हो तो निश्चयपूर्वक यह कहा जा सकता है कि जातक का वह जीवन-काल—भाग्य-रेखा के टूटे रहने पर भी यश और मान से पूर्ण होगा। भाग्य-रेखा के खण्डित होने पर, उसके पास कोई सहायिका समानान्तर-रेखा थोड़ी दूर तक चलकर भाग्य-रेखा के खण्डित होने के दोष को जो दूर करती है, उसकी अपेक्षा स्वतन्त्र सूर्य-रेखा का कहीं अधिक महत्व है।

उदाहरण के लिए एक जातक के हाथ में ४० से ४३ वर्ष तक

की अवस्था में भाग्य-रेखा टूटी है और उसके बिलकुल पास एक छोटी-सी समानान्तर रेखा इसी टूटे हुए भाग के पास है तो टूटी हुई भाग्य-रेखा की त्रुटि-पूर्तिकारक यह छोटी रेखा है। यदि यह छोटी रेखा न हो किन्तु ४० से ५० वर्ष तक की अवस्था में सूर्य-रेखा सुस्पष्ट और पुष्ट हो तो भाग्य-रेखा के खण्डित होने के दोष की ही निवृत्ति नहीं होती किन्तु निश्चयपूर्वक इस काल में यश, मान, प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी यह कहा जा सकता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में भाग्य-रेखा तथा सूर्य-रेखा दोनों लम्बी और सुन्दर हों उसके विषय में तो कहना ही क्या है—निश्चय ही वह समाज में अग्रगण्य होगा। किन्तु यदि एक भी रेखा पूर्ण और सुन्दर हो तो वह अन्य साधारण व्यक्तियों की अपेक्षा विशेष महत्वशाली जीवन व्यतीत करेगा। भाग्य-रेखा तथा सूर्य-रेखा दोनों जीवन में महत्व और उत्कर्ष, भाग्य-वृद्धि और प्रतिष्ठा प्रकट करती हैं किन्तु दोनों में अन्तर यह है कि—

(१) **भाग्य-रेखा**—आर्थिक उन्नति, धन-वृद्धि, ज़मीन-जायदाद आदि का उपार्जन तथा जीवन में किसी वस्तु की कमी न हो, सुख से जीवन व्यतीत हो इसको विशेष रूप से प्रकट करती है।

(२) **सूर्य-रेखा**—यह बताती है कि चाहे आर्थिक दृष्टि से जातक धनी न समझा जावे किन्तु मान तथा प्रतिष्ठा में कमी न रहेगी। यदि जातक का हाथ कला, साहित्य, संगीत आदि की ओर झुकाव प्रकट करता है तो उसे इन क्षेत्रों में सफलता या मान-प्राप्ति होगी। यदि इस ओर झुकाव नहीं है तो उच्च पद तथा ख्याति और व्यापार आदि में जातक सफल होगा। सूर्य-रेखा से महत्व, मान, प्रतिष्ठा, यश आदि विशेष प्रकट होता है। धन-संचय की विशेष परिचायिका यह रेखा नहीं है। चाहे कहीं से भी प्रारम्भ हो। इस रेखा का अन्त सूर्य-क्षेत्र पर होना चाहिए। तभी इसका नाम सूर्य-रेखा सार्थक होगा। यदि अनामिका उंगली के बिलकुल

सीध में मणिबन्ध से—या इस बीच में कहीं से प्रारम्भ हो और सूर्य-क्षेत्र तक न पहुँचे, बीच में कहीं रुक जावे तो भी सूर्य-क्षेत्र के बिलकुल नीचे खड़ी रेखा होने से यह कहलावेगी तो सूर्य-रेखा ही किन्तु सूर्य-क्षेत्र पर न पहुँच पाने के कारण सूर्य-क्षेत्र के सब गुण पूर्ण मात्रा में ऐसी रेखा में नहीं मिलेंगे। भारतीय मतानुसार इसे धर्म-रेखा कहते हैं। 'विवेक विलास' में लिखा है—

"अनामिकान्त्य पर्वस्था प्रति रेखा प्रभुत्वकृत।
ऊर्ध्वा पुनस्तले तस्या धर्मरेखेयमुच्यते।"

अर्थात् अनामिका के अन्तिम पर्व (पाश्चात्य मतानुसार प्रथम पर्व) में छोटी पतली ऊर्ध्व-रेखा 'प्रभुत्व' प्रदान करती है और अनामिका उंगली के नीचे करतल में जो रेखा होती है उसे 'धर्म-रेखा' कहते हैं। इसका फल श्रेष्ठ है। इस रेखा से मनुष्य विद्वान्, यशस्वी, पुण्यशील होता है।

सूर्य-रेखा के गुण (पाश्चात्य मत)

सूर्य-रेखा का प्रधान गुण है जिस किसी भी सामाजिक स्थिति में जातक हो उसमें विशेष योग्यता देना। यदि हाथ की बनावट, उंगलियों के अग्रभाग तथा पोरवों से जातक का कलाकार होना प्रकट नहीं हो तो जातक के हाथ में सूर्य-रेखा होने पर भी उसे साहित्य, संगीत कला आदि में विशिष्टता प्राप्त होगी। ऐसी गलत भविष्यवाणी नहीं करनी चाहिए। बहुत से हस्तपरीक्षक इस बात का विचार नहीं करते कि हाथ की बनावट दार्शनिक किंवा कलाकार की है या शुद्ध दुनियावी सफलता की द्योतक। सर्वप्रथम हाथ को देखकर यह निश्चय करना है कि किस प्रकार का हाथ है।

यदि हाथ की बनावट दार्शनिकता, कला-पटुता या काव्य-साहित्य-प्रेम प्रकट करती है तो ऐसे जातक के हाथ में खूब सुन्दर सूर्य-रेखा होने पर भी धन-संग्रह नहीं कहना चाहिए क्योंकि ऐसे

व्यक्तियों को मान-प्रतिष्ठा विशेष प्राप्त होती है, धन कम । हाँ यदि भाग्य-रेखा भी विशेष पुष्ट हो तो धन-संग्रह होगा—किन्तु वह फलादेश भाग्य-रेखा का हुआ सूर्य-रेखा का नहीं ।

किन्तु यदि चतुष्कोणाकृति हाथ में सूर्य-रेखा हो तो छोटी भी रेखा सांसारिक सफलता प्रकट करने के कारण विशेष महत्व रखती है । इसी प्रकार जिन हाथों में उंगलियों का अग्रभाग चौड़ा (चमसाकार) हो तो हाथों में छोटी भी सूर्य-रेखा विशेष सफलता प्रकट करती है । इस बात को सदैव स्मरण रखना चाहिये कि (१) हाथ से जिस प्रकार का कार्य जातक का प्रकट होता है उसी प्रकार की सफलता सूर्य-रेखा से प्रकट होती है ।

(२) अन्य बात यह है कि भाग्य-रेखा की सहायिका रेखा के रूप में इसे समझना चाहिये । यदि भाग्य-रेखा पूर्ण और सुन्दर हो और सूर्य-रेखा भी वैसी ही हो तो एक-एक मिलकर का ग्यारह प्रभाव होगा—किन्तु यदि भाग्य-रेखा नहीं हो तो सूर्य-रेखा का प्रभाव भी विशेष फलीभूत नहीं होगा ।

जिन व्यक्तियों के हाथ में सूर्य-रेखा सुन्दर और पुष्ट होती है वे आसानी से लोगों को अपना मित्र बना लेते हैं । उन्हें अपेक्षाकृत कम परिश्रम से धन, मान और यश प्राप्त हो जाता है । किन्तु सूर्य-रेखा का पूर्ण फल तभी होता है जब जातक के हाथ में अन्य गुण भी हों । उदाहरण के लिए सूर्य-रेखा तो अच्छी हो किन्तु हाथ मोटा तथा ढीला, लटकता हुआ—मानो इसमें शक्ति ही नहीं हो, कमज़ोर, पूर्ण स्नायविक-शक्ति से हीन, निष्क्रिय-सा प्रतीत हो तो सूर्य-रेखा का पूर्ण फल नहीं होगा । उद्योगहीनता ऐसे हाथ का लक्षण है । क्रियाहीन को सफलता प्राप्त नहीं होती । इसी प्रकार यदि अँगूठा कमजोर है तो जातक में दृढ़ निश्चय का अभाव प्रकट होता है । बिना संकल्प के सिद्धि नहीं । ऐसी स्थिति में भी सूर्य-रेखा पूर्ण फलद नहीं होती । यदि बुध, शुक्र, बृहस्पति तथा शनि के क्षेत्र अच्छे

नहीं हैं तो इन-इन क्षेत्रों के जो विशेष गुण जातक में होने चाहियें उन गुणों का अभाव होगा; तो भी सूर्य-रेखा का पूर्ण फल नहीं होगा। यदि शीर्ष-रेखा ही ख़राब है तो जातक में बुद्धि, चिन्तन तथा विचार-शक्ति कहाँ से आवेगी ? बिना इनके सूर्य-रेखा अपना पूर्ण शुभ फल किस प्रकार दिखा सकती है ? इसलिये सूर्य-रेखा अपना पूर्ण तथा सुन्दर फल तभी दिखाती है जब अन्य सुलक्षण भी हों—यह विस्मरण नहीं करना चाहिये।

यदि सूर्य-रेखा न हो

यदि सूर्य-रेखा हाथ में न हो तो इसका यह अर्थ नहीं है कि जातक का जीवन सफल नहीं होगा। अधिकांश हाथों में सूर्य-रेखा नहीं होती और बहुत से हाथ ऐसे देखे हैं जिनमें सूर्य-रेखा न होने पर भी जातक अपने जीवन में सफल हुए हैं। सूर्य-रेखा सफलता को सुगम बना देती है। बिना सूर्य-रेखा के उतनी ही सलफता प्राप्त करने के लिये परिश्रम विशेष करना पड़ता है। इसलिये यदि सूर्य-रेखा न भी हो किन्तु हाथ के अन्य लक्षणों से जातक में बुद्धि, चिन्तन, सुविचार, दृढ़-संकल्प तथा अध्यवसाय प्रकट होते हैं तो जातक उस व्यक्ति की बजाय विशेष सफल होगा जिसके हाथ में सूर्य-रेखा तो हो किन्तु हाथ निष्क्रिय, शक्तिहीन हो, अँगुष्ठ तथा ग्रह-क्षेत्र कमज़ोर हों और शीर्ष-रेखा भद्दी हो।

सूर्य-रेखा की लम्बाई

सूर्य-रेखा जितनी लम्बी हो उतनी ही अधिक प्रभावशाली होगी। यदि मणिबन्ध से निकलकर सूर्य-क्षेत्र के अन्त तक सीधी, अखण्डित हो तो जातक अत्यन्त बुद्धिमान होगा और जीवन में क्रमशः उसके गुणों में विकास होगा जिस कारण उसे पूर्ण सफलता प्राप्त होगी। किन्तु यदि हथेली के नीचे के भाग से सूर्य-रेखा प्रारम्भ होकर थोड़ी दूर तक जावे और आगे न बढ़े तो उन गुणों के विद्यामन रहने पर भी जातक के जीवन में उनका विकास या उपयोग न होगा—इस

कारण जीवन में वह कोई बड़ी सफलता प्राप्त नहीं कर सकेगा। यदि शीर्ष-रेखा तथा हृदय-रेखा के बीच सूर्य-रेखा हो तो ३५ से ५० तक की अवस्था में उन गुणों का विकास विशेष होगा। इस अवस्था में बुद्धि परिपक्व हो जाने तथा अपनी आर्थिक स्थिति के प्रायः स्वतंत्र हो जाने से जातक जिस भी क्षेत्र में वह हो, बड़ा काम कर सकता है, इस कारण सफलता सुगम होती है।

यदि सूर्य-रेखा सूर्य-क्षेत्र पर पहुँच जाती है तो सूर्य-क्षेत्र की विशिष्टता के सब गुण जातक में पाये जावेंगे। यदि किसी भी क्षेत्र पर एक लम्बी खड़ी रेखा हो तो उस क्षेत्र के प्रभाव को बहुत बढ़ा देती है यह सामान्य नियम है। सूर्य-रेखा के सूर्य-क्षेत्र पर होने से चाहे जातक लेखक या कलाकार हो, उच्च पदाधिकारी या व्यापारी हो—अपनी बुद्धि और कौशल से वह अपना विशेष स्थान बना लेगा। औरों की अपेक्षा उसे अधिक महत्व और सफलता-प्राप्ति होगी।

सूर्य-रेखा का प्रारम्भ से अन्त तक निरीक्षण करते समय भाग्य-रेखा पर भी बराबर दृष्टि रखनी चाहिये। इन दोनों रेखाओं का एक प्रकार से 'अन्योन्याश्रय' सम्बन्ध है—अर्थात् एक को दूसरे से बल मिलता है। जीवन के जिस काल में भाग्य-रेखा खण्डित हो उसी काल में सूर्य-रेखा भी खण्डित हो तो जीवन के उस काल में सफलता रुक जावेगी। किन्तु दोनों रेखाओं में एक उस काल में सुन्दर और सम्पूर्ण दोष-रहित हो तो दूसरी रेखा के खण्डित होने का उतना दुष्प्रभाव नहीं होता।

यदि सूर्य-रेखा बीच में गायब दिखाई दे तो—ऐसा क्यों हुआ ? कारण की गवेषणा करनी चाहिये। जिनके जीवन के बाद के काल में सूर्य-रेखा हो (हृदय-रेखा और अनामिका उंगली के बीच में—या शीर्ष-रेखा और अनामिका उंगली के बीच में) उनके जीवन के पूर्व भाग में सूर्य-रेखा न हो तो केवल यह प्रकट होता है कि सूर्य-रेखा के गुण उनके जीवन में बचपन से थे किन्तु उनका विकास तथा

उपयोग जीवन के बाद के भाग में हुआ। किन्तु यदि मणिबन्ध से ही—या हाथ के अन्य भाग के नीचे ही—सूर्य-रेखा प्रारम्भ हो और थोड़ी दूर चले फिर गायब, फिर चले फिर गायब, यह दशा हो तो देखना चाहिये कि किस कारण ऐसा हुआ।

जीवन के जिस काल में सूर्य-रेखा 'लुप्त' है, उस काल में यदि जीवन-रेखा अशुभ लक्षणों से युक्त है तो अस्वास्थ्य के कारण सफलता में रुकावट प्रकट होती है। यदि उस काल में शीर्ष-रेखा में दोष है तो मानसिक दुर्बलता के कारण सफलता या महत्व में बाधा समझनी चाहिये।

जिस स्थान में सूर्य-रेखा लुप्त हो यदि उस स्थान को काटती हुई कोई रेखा जा रही हो तो उस काटने वाली रखा के उद्गम-स्थान, सम्बन्ध तथा योग से यह अनुमान लगाना चाहिये कि किस कारण सफ़लता या महत्व में बाधा हुई।

सूर्य-रेखा के प्रारम्भिक स्थान

१. यदि सूर्य-रेखा जीवन-रेखा से निकलकर सूर्य-क्षेत्र तक जावे तो भाग्य-वृद्धि-कारक होती है।

२. यदि भाग्य-रेखा से सूर्य-रेखा निकले तो यह भी शुभ है।

३. यदि मणिबन्ध से निकलकर सीधी सूर्य-क्षेत्र पर जावे तो बहुत अच्छी और स्वाभाविक स्थिति है।

४. यदि यह रेखा चन्द्र-क्षेत्र से निकलकर सूर्य-क्षेत्र पर जावे तो जातक की कल्पना-शक्ति अच्छी होती है और भाषा पर अच्छा अधिकार होता है। यदि उंगलियों के प्रथम पर्व भी लम्बे हों तो निश्चय ही जातक विशेष बुद्धिमान और विद्वान् होगा। यदि उंगलियाँ पतली और नुकीली हों तो जातक काव्य और साहित्य का प्रेमी होगा। यदि शनि का क्षेत्र उन्नत होगा तो वैज्ञानिक विषयों पर लिखेगा। यदि उंगलियाँ गाँठदार और चतुष्कोणाकृति

हों तो ऐतिहासिक ग्रन्थ लिखेगा। इसी प्रकार यदि मंगल और शुक्र-क्षेत्र उन्नत हों तो उन ग्रहों से सम्बन्धित साहित्य-सृजन करेगा।

५. यदि मंगल के प्रथम क्षेत्र से सूर्य-रेखा प्रारम्भ हो तो ऐसे जातक में बहुत अधिक धैर्य और साहस होगा और इन गुणों के कारण सफलता प्राप्त करेगा।

सूर्य-रेखा पूर्ण रूप से तभी प्रभावशालिनी होती है जब यह सूर्य-क्षेत्र के ऊपर तक पहुँचे।

सूर्य-रेखा के गुण-दोष

यदि रेखा स्पष्ट और गहरी हो तो इसका पूर्ण प्रभाव होता है। जिन व्यक्तियों के हाथ में यह पाई जाती है उनमें क्रियात्मक शक्ति विशेष होती है। यदि उंगलियों के प्रथम पर्व लम्बे हों तो साहित्य और कला के क्षेत्र में जातक को विशिष्टता प्राप्त होती है। यदि द्वितीय पर्व लम्बे हों तो द्रव्य कमाने की क्षमता विशेष होती है। यदि तृतीय पर्व लम्बे हों तो जातक में केवल द्रव्य कमाने की भावना प्रबल होती है और सूर्य तथा भाग्य-रेखाओं के रहने से जातक अपनी इस इच्छा में सफल भी होता है।

चित्र न० ७२

यदि रेखा पतली हो तो पूर्ण प्रभावशाली नहीं होती। ऐसे जातक को थोड़ा-सा मान, थोड़ी-सी प्रतिष्ठा और थोड़ा ही धन प्राप्त होता है। यदि रेखा चौड़ी और उथली हो तो इस रेखा को कमज़ोर समझना चाहिए। इसी प्रकार यदि शृंखलाकार रेखा हो तो उसका कोई विशेष अच्छा प्रभाव नहीं होता। यदि सूर्य-रेखा का रंग पीलापन या सफ़ेदी लिए हो तो रेखा को निर्बल समझना चाहिए, यदि गुलाबी हो तो अच्छा समझना चाहिए।

यदि रेखा कटी हो या बीच-बीच में लुप्त हो गई हो या अन्य दोषों से युक्त हो तो अपना प्रभाव खो बैठती है। यदि यह रेखा कहीं पतली और क्षीण, कहीं स्पष्ट और गम्भीर हो तो कभी जातक धन, मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा और कभी सब की कमी हो जायगी। ऐसी रेखाओं में यह देखना चाहिए कि सूर्य-क्षेत्र पर पहुँचने पर उनका क्या स्वरूप है, वह रेखा का अन्त का स्थान है इसलिए वहाँ रेखा गहरी और स्पष्ट हो तो इस बात का लक्षण है कि जीवन के अन्तिम भाग में जातक को यश और सम्मान प्राप्त होगा।

यदि सूर्य-रेखा लहरदार हो तो यह प्रकट होता है कि जातक धैर्यपूर्वक किसी एक ही कार्य में नहीं लगा रहेगा। कभी एक काम और कभी दूसरा काम उठा लेने से उसे किसी एक कार्य में सफलता नहीं मिलेगी। किन्तु यदि यह रेखा सूर्य-क्षेत्र पर जाकर स्पष्ट और सुन्दर हो गई हो तो जातक किसी-न-किसी एक बात में सफलता प्राप्त कर लेगा।

यदि सूर्य-रेखा के अन्त पर तारे का चिह्न हो तो जीवन के अन्तकाल में बहुत मान और प्रतिष्ठा मिलेगी।

यदि सूर्य-रेखा में बीच-बीच में द्वीप-चिह्न हों तो जातक को बहुत बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। वह उत्साह में आकर ऐसे काम करने की चेष्टा करेगा जिनसे एकदम बहुत बड़े लाभ की आशा हो किन्तु परिणाम विपरीत होगा। उसे घाटा लगेगा और असफलता होगी। ऐसी रेखा के साथ-साथ यदि अनामिका उंगली मध्यमा उंगली के बराबर हो तो जातक बहुत बड़ा सट्टा करने वाला होगा। यदि साथ-ही-साथ जीवन और शीर्ष-रेखाओं के प्रारम्भ में अधिक अन्तर हो तो जातक बिना आगा-पीछा सोचे सट्टे या व्यापार में बहुत बड़ा दाँव लगायेगा। किन्तु सूर्य-रेखा में द्वीप होने से इतना बड़ा घाटा लगेगा कि बिलकुल बरबाद हो जावेगा। यदि अनामिका उंगली का तृतीय

पर्व लम्बा और मोटा हो तो मनुष्य नीचे दर्जे का जुआरी होगा। यदि सूर्य-रेखा अच्छी हो और कनिष्ठा उंगली टेढ़ी और घुमावदार हो तो जातक ताश खेलने में या अन्य कामों में बेईमानी द्वारा लाभ उठावेगा। सूर्य-रेखा ने बुद्धि और लाभ दिया और छोटी उंगली के टेढ़ेपन ने बेईमानी।

यदि सूर्य-रेखा छोटी-छोटी आड़ी रेखाओं से कटी हो तो यह बाधा का चिह्न है। यह ध्यान से देखना चाहिए कि ये अत्यन्त सूक्ष्म हैं या मोटी। सूर्य-रेखा को ये काटती हैं या सूर्य-रेखा इनको काटकर, दबाती हुई आगे चली जाती है। यदि काटने वाली रेखा अत्यन्त सूक्ष्म हों तो केवल चिन्ता या मामूली विघ्न उपस्थित होंगे। किन्तु यदि काटने वाली रेखाएँ मोटी हैं तो बड़े विघ्न समझने चाहिए। यदि काटने वाली रेखाएँ सूर्य-रेखा को काटती हैं तो जातक को उन अवस्थाओं पर असफलता प्राप्त होगी या घाटा लगेगा। किन्तु यदि सूर्य-रेखा अधिक बलवान है और बाधा-रेखाओं को काटकर उनके ऊपर से चली जाती है तो जातक बाधाओं को पार कर उन्नति करता रहेगा।

चित्र नं० ७३

यदि सूर्य-रेखा पर बिन्दु-चिह्न हों तो जातक की बदनामी होने का लक्षण है। हल्के बिन्दु हों तो लोग केवल कानाफूसी करके चुप हो जावेंगे किन्तु यदि बिन्दु गहरे हों तो मान, प्रतिष्ठा को बट्टा लगेगा। यदि इन बिन्दुओं वा ऊपर बताई हुई बाधा-रेखा का किसी प्रभाव-रेखा या ग्रह-क्षेत्र से सम्बन्ध हो तो उनसे कारण का अनुमान करना चाहिए।

यदि सूर्य-रेखा टूटी हो तो असफलता का लक्षण है। ऐसे जातक में योग्यता होते हुए भी कला या व्यापार जो भी उसका कार्य-क्षेत्र

हो उसमें पूर्ण सफलता नहीं मिलेगी। यदि टूटी हुई रेखा का सुधार हो गया हो अर्थात् जहाँ खण्डित है उसके पास ही कोई दूसरी छोटी रेखा खण्डित भाग के ऊपर सहायक रूप से हो या खण्डित भाग के चारों ओर वर्ग-चिह्न हों तो कुछ हद तक टूटी हुई रेखा का दोष कम हो जाता है। किन्तु जिस प्रकार चौड़ी और उथली रेखा पूर्ण प्रभावशालिनी नहीं होती उसी प्रकार टूटी हुई रेखा सुधार होने पर भी पूर्ण फल नहीं देती।

सूर्य-रेखा का अन्त[1]

(१) यदि प्रारम्भ में सूर्य-रेखा स्पष्ट और गहरी हो और बाद में हल्की और अस्पष्ट हो जाय तो जिस अवस्था में रेखा गहरी हो उसी में मान, प्रतिष्ठा अधिक प्राप्त होती है। जीवन के बाद के काल में कोई विशेष सफलता नहीं मिलती।

(२) यदि रेखा के अन्त पर बिन्दु-चिह्न हो तो बाद में घाटा या दिवालिया हो जाने के कारण अप्रतिष्ठा होगी।

(३) यदि रेखा के अन्त पर तारे का चिह्न हो तो पूर्ण मान, प्रतिष्ठा व सफलता का चिह्न है। ऐसे हाथों में यह देखना चाहिए कि कलाकार, कवि या मस्तिष्क-सम्बन्धी झुकाव हो तो इन क्षेत्रों में यश और प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। व्यापारिक हाथ हो तो जातक धन बहुत कमाता है।

(४) यदि उपर्युक्त (३) प्रकार की रेखा हो और एक की बजाय दो तारे के चिह्न हों तो पूर्ण यश, प्रतिष्ठा और सफलता का लक्षण है। जिस अवस्था पर पहले तारे का चिह्न हो उस अवस्था से यश और लाभ प्रारम्भ होगा और आखीर तक मान, प्रतिष्ठा उसी प्रकार बनी रहेगी।

---

१. सूर्य-रेखा के अन्त पर विविध चिह्नों द्वारा जो फल बतायें गये हैं उनका प्रभाव केवल जीवन के अन्तिम काल में ही होता है ऐसा नहीं समझना चाहिए। इनका प्रभाव, एक प्रकार से समस्त जीवन-काल में रहता है।

(५) यदि सूर्य-रेखा के आरम्भ और अन्त दोनों सिरों पर तारे का चिह्न हो तो जातक का सारा जीवन सफलतामय तथा प्रतिष्ठा-पूर्ण रहेगा।

(६) यदि सूर्य-रेखा के अन्त पर कोई छोटी आड़ी रेखा उसके मार्ग को रोकती हो तो जातक के जीवन के अन्त में कोई बड़ी बाधा उपस्थित होकर उसके कार-बार को रोक देगी। जिस अवस्था पर यह बाधक-रेखा हो उस अवस्था पर भाग्य-रेखा में क्या लक्षण है यह भी ध्यानपूर्वक विचारना चाहिए। यदि उसकी भी दशा

चित्र नं० ७४

उस अवस्था में खराब हो तो भाग्य में पूर्ण हानि समझिए। जिस अवस्था पर यह बाधक-रेखा हो उस अवस्था में यदि जीवन-रेखा भी दोषयुक्त हो और उससे बीमारी प्रकट होती हो तो अस्वास्थ्य के कारण उन्नति में बाधा होगी। यदि इस अवस्था पर शीर्ष-रेखा में कोई तारे या द्वीप का चिह्न हो तो मानसिक शक्तियों की कमी के कारण सफलता रुकेगी। यदि शीर्ष-रेखा से कोई शाखा-रेखा निकलकर—जहाँ बाधा-रेखा सूर्य-रेखा का मार्ग रोकती है उस स्थान से योग करे तो किसी गलत निर्णय के कारण घाटा होता है। उदाहरण के लिए, जातक किसी ऐसे कारबार में रुपया लगा, दे जहाँ आशा हो लाभ की किन्तु हानि हो जावे। (देखिये चित्र नं० ७५)
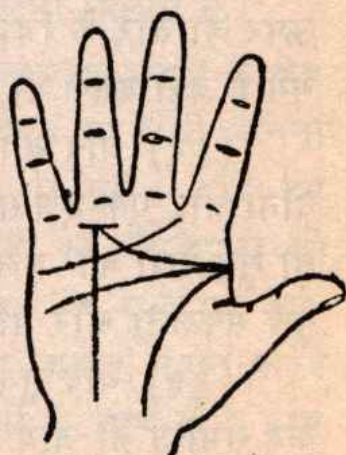
चित्र नं० ७५

(७) यदि उपर्युक्त (६) प्रकार की रेखाएँ हों किन्तु छोटी बाधा-रेखा की बजाय सूर्य-रेखा के अन्त पर क्रॉस-चिह्न हो तो और भी अशुभ चिह्न है। जातक जिस नतीजे पर

पहुँचना चाहता है उस पर नहीं पहुँच पाता क्योंकि उसका सारा अन्दाज़ और अनुमान गलत बैठता है और उसे असफलता तथा अप्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

(८) यदि सूर्य-रेखा के अन्त पर वर्ग-चिह्न हो और उस वर्ग के बीच में जाकर सूर्य-रेखा का अन्त हो जावे तो अशुभ परिणामों से रक्षा होती है। यदि कोई अशुभ लक्षण हो और साथ में वर्ग-चिह्न भी हो हो पूर्ण अशुभ फल नहीं होगा।

(९) यदि सूर्य-रेखा के अन्त पर द्वीप-चिह्न हो तो इसे भी क्रास की भाँति पूर्ण अशुभ लक्षण समझिए; सूर्य-रेखा कैसी भी सुन्दर हो जीवन के अन्त में ऐसा बड़ा घाटा लगेगा कि सारी इज्जत चली जायगी।

(१०) यदि सूर्य-रेखा अन्त में दो शाखायुक्त हो जाय तो यह प्रकट होता है कि जातक में कई विशेष योग्यताएँ हैं और इस कारण कई तरह का काम करने से उसे किसी एक काम में पूर्ण सफलता नहीं मिलेगी।

(११) यदि अन्त में सूर्य-रेखा तीन शाखायुक्त (त्रिशूल की भाँति) हो जाय तो ऊपर जो तारे के चिह्न के शुभ लक्षण बताये गये हैं वही इसके भी होते हैं। देखिये चित्र।

चित्र नं० ७६

(१२) यदि सूर्य-क्षेत्र पर सूर्य-रेखा के दोनों ओर एक-एक समानान्तर रेखा और हो तो सूर्य-रेखा को बल प्राप्त होता है और पूर्ण सफलता और प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

(१३) यदि सूर्य-रेखा सूर्य-क्षेत्र तक जा कर समाप्त हो जाय और सूर्य-रेखा पर बहुत सी हल्की-हल्की खड़ी रेखा हों तो ऊपर (१०) का जो फल बताया गया है वही होता है।

(१४) यदि सूर्य-रेखा सूर्य-क्षेत्र पर जाकर गोपुच्छाकृति हो जाय तो भी उपर्युक्त (१०) का फल होता है।

ऊपर जो दोष बताये गये हैं—वे, सूर्य-रेखा अच्छी हो तो भी दोष समझने चाहिये। किन्तु यदि सूर्य-रेखा स्वयं कमज़ोर या अन्य दुष्ट लक्षणों से दूषित हो तो महान् दोष समझने चाहिये। इसी प्रकार जो गुण बताये गये हैं वे सूर्य-रेखा के उत्तम होने से पूर्ण शुभ फल दिखाते हैं। किन्तु सूर्य-रेखा भद्दी ही तो पूर्ण शुभ प्रभाव नहीं होता।

सूर्य-रेखा की शाखाएँ

(१) यदि सूर्य-क्षेत्र पर पहुँचने पर सूर्य-रेखा से निकलकर एक शाखा शनि-क्षेत्र पर और दूसरी बुध-क्षेत्र पर जाये तो जातक में योग्यता, बुद्धि की गम्भीरता और चतुरता तीनों गुण हैं और उसे धन और प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी।

(२) सूर्य-रेखा से निकलकर जो भी शाखाएँ या हल्की छोटी रेखाएँ ऊपर की ओर (उंगलियों की ओर) जावें तो शुभ लक्षण है, शुभ प्रभाव की वृद्धि होती है।

(३) सूर्य-रेखा से निकलकर हल्की-हल्की या नन्ही छोटी रेखाएँ नीचे की ओर आवें तो सूर्य-रेखा को कमज़ोर करती हैं। ऐसे जातक को विशेष परिश्रम करने पर सफलता मिलती है।

(४) यदि सूर्य-रेखा से कोई शाखा निकलकर बृहस्पति के क्षेत्र पर जावे तो जातक में महत्वाकांक्षा और हुकूमत करने की भावना विशेष होती है और उसे इसमें सफलता भी मिलेगी। यदि इस शाखा-रेखा के अन्त में बृहस्पति-क्षेत्र पर तारे का चिह्न हो तो विशेष शुभ लक्षण है। यदि साथ ही सूर्य-रेखा के अन्त पर सूर्य-क्षेत्र पर भी तारे का चिह्न हो तो अवश्य ऐसा जातक महान् राज्य का अधिकारी होगा। किन्तु इन शुभ लक्षणों के साथ-साथ हाथ मुलायम हो, शुक्र का क्षेत्र उच्च हो, उंगलियाँ पतली और नुकीली हों तो केवल गायन विद्या में श्रेष्ठता होगी। यदि चन्द्र-क्षेत्र भी उच्च हो तो संगीत में और भी विशिष्टता प्राप्त होगी।

किन्तु यदि उंगलियाँ आगे से फैली हुई हों या चतुष्कोण हों तो जातक बाजा बजाने या अन्य कलाओं में सफल होगा। यदि उंगलियों के तृतीय पर्व लम्बे और पुष्ट हों तो कलाप्रियता न होकर केवल रुपया कमाने पर ध्यान होगा।

(५) यदि सूर्य-रेखा से कोई रेखा निकलकर शनि-क्षेत्र पर जाये तो जातक में बुद्धि-गाम्भीर्य और मितव्ययता आदि गुण होंगे। अगर अँगूठा सख्त हो तो जातक बहुत कंजूस भी होगा। यदि शाखा-रेखा के अन्त में, शनि-क्षेत्र पर तारे का चिह्न हो तो विशेष सफलता प्राप्त होती है किन्तु यदि तारे के चिह्न की बजाय वहाँ कोई छोटी आड़ी रेखा, बिन्दु, क्रॉस या अशुभ चिह्न हो तो सफलता की बजाय अशुभता और बदनामी ही प्राप्त होगी। यदि शनि-क्षेत्र पर शाखा-रेखा के पास एक या दो सहायक-रेखा के रूप में रेखाएँ हों तो सफलता का चिह्न है। किन्तु यदि शाखा-रेखा शनि-क्षेत्र के पहुँचने के पहले ही रुक जावे और शनि-क्षेत्र पर कई खड़ी रेखाएँ हों तो जातक अनेक कार्यों में सफलता प्राप्त करने की चेष्टा करता है इस कारण उसे किसी भी कार्य से विशिष्टता प्राप्त नहीं होती। यदि शाखा-रेखा के अन्त में शनि-क्षेत्र पर शुभ लक्षण हो और सूर्य-रेखा के अन्त में सूर्य-क्षेत्र पर तारे का चिह्न हो तो विशेष सफलता का द्योतक है।

(६) यदि सूर्य-रेखा से निकलकर कोई शाखा-रेखा बुध के क्षेत्र पर जावे तो बुध-क्षेत्र-सम्बन्धी प्रभाव या सफलता विशेष होती है। यदि उंगलियों के, खासकर कनिष्ठा उंगली का प्रथम पर्व लम्बा हो तो जातक अच्छा लेखक या वक्ता होगा। यदि कनिष्ठा का द्वितीय पर्व लम्बा हो और बुध-क्षेत्र पर कई खड़ी रेखा हों तो जातक ख्याति-प्राप्त डाक्टर होगा। यदि तृतीय पर्व लम्बा हो तो धन-उपार्जन में विशेष सफलता होगी। यदि दोनों शाखाओं के अन्त में तारे का चिह्न हो तो विशेष शुभ लक्षण और सफलता प्रकट

होती है । किन्तु यदि बुध-क्षेत्र पर क्रॉस, बिन्दु या बाधा-रेखा का चिह्न हो तो घाटा लगेगा; यदि छोटी उंगली मुड़ी या टेढ़ी हो तो जातक चालाकी और बेईमानी का भी उपयोग करेगा ।

(७) यदि सूर्य-रेखा से कोई शाखा-रेखा निकलकर मंगल-क्षेत्र पर जाये तो जातक में उत्साह, आत्म-शक्ति और साहस विशेष होता है । मंगल-क्षेत्र पर शाखा-रेखा के अन्त में तारे आदि का शुभ चिह्न हो तो शुभ-परिणाम । यदि अशुभ चिह्न हो तो अशुभ परिणाम होता है ।

(८) यदि चन्द्र-रेखा से कोई रेखा निकलकर सूर्य-रेखा में योग करे तो जातक में कल्पना-शक्ति विशेष होती है । यदि उंगलियाँ चिकनी हों और अग्रभाग नुकीले हों तो काव्य लिखने में विशेष यश मिलेगा । किन्तु यदि सूर्य-रेखा के अन्त में शुभ चिह्न हों तभी शुभ परिणाम समझना चाहिए । अशुभ-चिह्न हों तो अशुभ परिणाम ।

(९) यदि सूर्य-क्षेत्र से कोई रेखा निकलकर शुक्र-क्षेत्र पर जावे तो शुक्र-क्षेत्र-सम्बन्धी (ललित कला, गायन आदि) सफलता होती है । यदि सूर्य-रेखा के अन्त में अशुभ-चिह्न हों तो उलटे हानि ही होती है ।

(१०) यदि सूर्य-रेखा से कोई शाखा निकलकर शीर्ष-रेखा में विलीन हो जाये और शीर्ष-रेखा सुन्दर, सुस्पष्ट और बलवान हो तो जातक को अपनी दिमाग़ी ताकत की वजह से सफलता और यश प्राप्त होंगे । (देखिये चित्र नं० ७७) ।

(११) यदि सूर्य-रेखा से कोई शाखा निकलकर हृदय-रेखा में विलीन हो जाये तो जातक को शराफ़त और भलाई के कारण अनेक मित्रों और सम्बन्धियों की सहायता से सफलता मिलेगी ।

चित्र नं० ७७

(१२) यदि कोई रेखा शुक्र-क्षेत्र से आकर सूर्य-रेखा को काटे तो अशुभ लक्षण है किन्तु यदि आकर उसमें विलीन हो जाये तो शुभ लक्षण है। शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ हुई प्रभाव-रेखाओं के प्रकरण में यह विस्तारपूर्वक बताया गया है अतः उस प्रकरण को देखिए।

१५वां प्रकरण

स्वास्थ्य-रेखा

भारतीय मतानुसार कनिष्ठिका उंगली के मूल में जो लम्बी रेखा हो उससे स्वास्थ्य का विचार किया जाता है—

'सर्वांगुली मूल भवोर्द्धरेखा पर्वण्यधस्तान्मुनिभिः प्रशस्ता।
आरोग्य नामस्तुति लाभ पुत्रान् धत्ते कनिष्ठादि भव क्रमेण ॥"

यदि यह अविछिन्न, सुन्दर, बलवान् हो तो सुन्दर स्वास्थ्य रहता है। पाश्चात्य हस्तपरीक्षकों ने इसका विस्तृत विवेचन किया है।

पाश्चात्य मत

जिस प्रकार करतल के नीचे के भाग से प्रारम्भ होकर सूर्य-रेखा सूर्य के क्षेत्र पर जाकर समाप्त होती है या सूर्य-क्षेत्र की ओर जाती है, उसी प्रकार स्वास्थ्य-रेखा चन्द्र-क्षेत्र या हथेली के नीचे के किसी भी भाग से प्रारम्भ होकर बुध के क्षेत्र पर या बुध के क्षेत्र की ओर जाती है। इस कारण इसको बुध-रेखा भी कह सकते हैं; बल्कि बहुत से हस्तपरीक्षक इसको बुध-रेखा ही कहते हैं। किन्तु इस रेखा से स्वास्थ्य का विशेष विचार किया जाता है इस कारण अंग्रेजी पुस्तकों में इसका नाम 'लाइन आफ हैल्थ' अर्थात् 'स्वास्थ्य-रेखा' प्रचलित है।

चित्र नं० ७८

जब कभी हाथ में कोई अशुभ लक्षण दिखाई दे तो उसका

कारण प्रायः स्वास्थ्य की खराबी होती है। जितनी बीमारियाँ हैं उनका तो स्वास्थ्य से साक्षात् सम्बन्ध है ही ; किन्तु प्रेम में सफलता, मित्रों से लाभ, भाग्योदय, व्यापारिक सफलता, प्रसिद्धि, यश, सम्मान आदि सब के मूल में वे शक्तियाँ छिपी हैं जिनके कारण ये सब ऐश्वर्य प्राप्त होते हैं और उन छिपी हुई शक्तियों का स्वास्थ्य से गहरा सम्बन्ध है। जिसका स्वास्थ्य अच्छा होगा वह परिश्रम भी पूर्ण कर सकेगा। मन और बुद्धि दोनों का योग अच्छा होने से तथा परिश्रम करने से विद्या और लक्ष्मी दोनों ही प्राप्त होती हैं। उच्चपद, यश, राजनीतिक सफलता आदि सभी सफलताओं के मूल में सुन्दर स्वास्थ्य है। शारीरिक स्वास्थ्य से बढ़कर ऊँचा स्थान है मानसिक स्वास्थ्य का। चित्त प्रसन्न रहने से मित्र भी अधिक होते हैं। स्त्री-सुख भी अच्छा मिलता है। इस कारण हाथ में जब कोई अशुभ लक्षण दिखाई दे तो यह यत्न-पूर्वक देखना चाहिये कि स्वास्थ्य से उन अशुभ लक्षणों का क्या सम्बन्ध है ?

बहुत से डाक्टरों की यह राय है कि शरीर में पाचन-शक्ति खराब होने से पित्त का प्रकोप होता है। पित्त के प्रकोप से दुष्ट बुद्धि होती है और मनुष्य बहुत से अनुचित कर्म करता है (चोरी आदि)। इसके विपरीत जिन का स्वास्थ्य अच्छा है, दिमाग़ साफ़ है उनको व्यापारिक बातें भी अच्छी सूझती हैं। इसलिये स्वास्थ्य-रेखा अच्छी होने से अन्य शुभ लक्षण भी अपना पूर्ण शुभ फल दिखाते हैं। स्वास्थ्य-रेखा खराब होने से भिन्न-भिन्न कारणों से रोग होते हैं। यदि जातक पर बृहस्पति का प्रभाव अधिक है और स्वास्थ्य-रेखा खराब है तो समझ लीजिये कि उसके रोग का कारण अधिक भोजन करना है। यदि शीर्ष-रेखा में कोई अशुभ लक्षण हो तो स्वास्थ्य-रेखा से यह पता लगेगा कि यकृत (जिगर) और पेट की हालत क्या है। इसी प्रकार हृदय-रेखा में कोई अशुभ लक्षण

हो और दिल की बीमारी का अन्देशा हो तो स्वास्थ्य-रेखा से यह पता लग सकेगा कि जिगर और पेट की खराबी के कारण तो हृदय-रोग नहीं है ? भाग्य-रेखा के प्रसंग में बताया जा चुका है कि जिस अवस्था पर भाग्य-रेखा कमज़ोर हो उसी अवस्था में स्वास्थ्य-रेखा भी खराब हो तो अस्वास्थ्य के कारण भाग्य-हानि समझनी चाहिये। कहने का तात्पर्य यह है कि स्वास्थ्य-रेखा की सहायता से अन्य रेखाओं के फल जानने में भी आसानी होती है।

स्वास्थ्य-रेखा के लक्षण

सब लोगों के हाथ में स्वास्थ्य-रेखा नहीं पाई जाती। करीब ५० फ़ीसदी हाथों में स्वास्थ्य-रेखा दिखाई नहीं देती। स्वास्थ्य-रेखा का न होना अशुभ लक्षण नहीं है। यदि स्वास्थ्य-रेखा लम्बी और सुन्दर (टूटी या अन्य दोषयुक्त न हो) हो तो जातक का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। किन्तु यदि स्वास्थ्य-रेखा खण्डित या दोषयुक्त हो तो इसकी बजाय स्वास्थ्य-रेखा का बिलकुल न होना ही अच्छा है। प्रायः जिन हाथों में कम रेखा होती हैं, स्वास्थ्य-रेखा भी नहीं होती। पतली-पतली बहुत-सी रेखाओं का जाल स्नायुओं की कमज़ोरी प्रकट करता है। ऐसा आदमी जल्दी घबरा जाता है। उसे शीघ्र क्रोध हो जाता है, उत्साह की कमी होती है। स्वास्थ्य-रेखा खण्डित या दूषित होने से प्रायः जिगर और पेट की खराबी रहती है और यदि हाथ में पतली-पतली बहुत सी रेखाओं का जाल हो तो समझना चाहिये कि यकृत की खराबी से जातक का स्वभाव चिड़चिड़ा और ग़मगीन है। यदि स्वास्थ्य-रेखा न हो और हाथ में बहुत सी पतली-पतली रेखा न दिखाई दें तो समझना चाहिये कि जातक का जिगर और पेट ठीक काम कर रहा है। इस कारण स्वाभाविक दुर्बलता नहीं है।

रेखा का प्रारम्भ

साधारणतः इस रेखा का प्रारम्भ चन्द्र-क्षेत्र से होना चाहिये किन्तु बहुत कम हाथों में ऐसा होता है। बहुत बार यह (१) जीवन-रेखा से (२) या भाग्य-रेखा से या (३) करतल-मध्य से प्रारम्भ होकर बुध-क्षेत्र की ओर जाती है। यदि भाग्य-रेखा और चन्द्र-क्षेत्र के बीच से यह-रेखा प्रारम्भ हो तो कोई दोष नहीं किन्तु भाग्य-रेखा या जीवन-रेखा या इन दोनों के बीच के स्थान से प्रारम्भ होना अच्छा लक्षण नहीं है। यदि स्वास्थ्य-रेखा जीवन-रेखा से प्रारम्भ हो तो ऐसा जातक पूर्ण स्वस्थ नहीं रहेगा। जीवन-रेखा से प्रारम्भ होकर कोई रेखा स्वास्थ्य-रेखा से मिल जावे तो उसे अशुभ लक्षण नहीं समझना चाहिए।

चित्र नं० ७९

यदि स्वास्थ्य-रेखा गहरी हो तो स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा। उत्तम स्वास्थ्य रहने से अच्छी स्मरण-शक्ति, बुद्धिमत्ता आदि गुण भी होंगे। यदि किसी की जीवन-रेखा पतली, शृङ्खलाकार या अन्य दोष-युक्त हो और स्वास्थ्य-रेखा उत्तम हो तो जिस प्रकार सुन्दर मंगल-रेखा जीवन-रेखा के दोष को दूर कर प्राणों को बल प्रदान करती है, उसी प्रकार सुन्दर स्वास्थ्य-रेखा होने से दोषयुक्त जीवन-रेखा के अशुभ फल कम हो जायेंगे।

मस्तिष्क की कमज़ोरी प्रायः मंदाग्नि आदि पेट की ख़राबी से होती है। इस कारण शीर्ष-रेखा अच्छी भी हो किन्तु स्वास्थ्य-रेखा खराब हो तो शीर्ष-रेखा का पूर्ण शुभ फल नहीं प्राप्त होगा। सुन्दर स्वास्थ्य-रेखा होने से हृदय-रेखा के दोष भी कुछ अंशों तक दब जाते हैं। इसका कारण यह है कि हृदय और जिगर का सम्बन्ध है।

यदि तीनों रेखायें (जीवन, शीर्ष और हृदय) सुन्दर हों और मंगल तथा स्वास्थ्य-रेखायें भी अच्छी हों तो ऐसा जातक पूर्ण स्वस्थ रहेगा। यदि ऐसे व्यक्ति का मंगल-क्षेत्र अति उन्नत हो, हाथों पर बाल हों तो उसमें तामसिक प्रकृति अधिक होने के कारण उसे कसरत, खेल-कूद आदि में अपनी शक्ति लगानी चाहिए अन्यथा उसकी पूर्ण शक्ति उसे दुष्कर्मों की ओर ले जावेगी।

स्वास्थ्य-रेखा पर दोष-चिह्न

यदि स्वास्थ्य-रेखा पतली हो तो भी यही सूचित होता है कि यकृत अपना काम अच्छी तरह कर रहा है। रेखा का गहरा होना अधिक अच्छा लक्षण है। उसकी बराबरी पतली रेखा नहीं कर सकती। किन्तु स्वास्थ्य-रेखा दोष-युक्त हो (टूटी, लहरदार, बिन्दु, द्वीप-युक्त आदि) तो अस्वास्थ्य प्रकट होता है।

(१) यदि स्वास्थ्य-रेखा चौड़ी और उथली हो तो उसका जिगर बहुत मज़बूत नहीं होगा। थोड़ी सी ही बदपरहेज़ी से सिर-दर्द, मंदाग्नि, अपच, जलन आदि होंगे।

(२) यदि स्वास्थ्य-रेखा शृङ्खलाकार हो तो जिगर और पेट की खराबी प्रकट होगी। ऐसे व्यक्तियों को gall stone, यकृत-शोथ आदि रोग होते हैं। ऐसे व्यक्ति न केवल बीमार रहते हैं बल्कि उनका दिमाग़ भी ग़मगीन और उत्साहशून्य होता है। ऐसे लोग शक्की और चिड़चिड़े स्वभाव के होते हैं। इस कारण व्यापारिक सफलता भी उन्हें नहीं मिलती।

चित्र नं० ८०

(३) यदि यह रेखा लम्बी और सुन्दर हो तो आजीवन सुन्दर स्वास्थ्य रहेगा। किन्तु यदि कहीं तो सुन्दर हो और कहीं

पतली, टूटी या अन्य दोष-युक्त हो तो जीवन के जिस काल में अच्छी रेखा है उस काल में अच्छा स्वास्थ्य रहेगा तथा जिस काल में अशुभ लक्षण हैं उस काल में अशुभ परिणाम होगा। चन्द्र-क्षेत्र की ओर से इसका प्रारम्भ माना जाता है और बुध-क्षेत्र पर इसका अन्त माना जाता है। जैसे अन्य रेखाओं के विषय में बताया गया है उसी प्रकार इस रेखा पर अवस्था का अनुमान करना चाहिए। उसको देखने से यह स्पष्ट हो जायगा कि स्वास्थ्य-रेखा का कौन-सा भाग जीवन के किस काल को प्रकट करता है। इसकी सहायता से यह निश्चय करना चाहिए कि जातक कब स्वस्थ रहेगा और कब अस्वस्थ।

जीवन के जिस काल में स्वास्थ्य-रेखा खराब हो यदि उसी काल में जीवन-रेखा भी अशुभ लक्षणों से युक्त हो तो दोनों रेखाओं के अशुभ हो जाने से जीवन का वह भाग काफ़ी बीमारो और मुसीबतों से भरा होगा। किन्तु स्वास्थ्य-रेखा पर तो अशुभ चिह्न हो और जीवन-रेखा उस काल में सुन्दर, दोषहीन हो तो अधिक अनिष्ट परिणाम नहीं होता।

(४) यदि स्वास्थ्य-रेखा का कोई भाग शृंखलाकार हो तो देखना चाहिए कि किस उम्र में अस्वास्थ्य प्रकट होता है। उदाहरण के लिए यदि किसी के हाथ में बत्तीस-तेतीस वर्ष की उम्र पर स्वास्थ्य-रेखा शृंखलाकार है और शीर्ष-रेखा से भी यह प्रकट होता है कि ३२-३३ वर्ष में द्वीप-चिह्न है या अन्य दोष है तो इस नतीजे की पुष्टि हुई कि इस अवस्था में दिमाग की कमज़ोरी, पागलपन आदि होगा।

(५) यदि स्वास्थ्य-रखा कुछ दूर तक गहरी और सुन्दर हो फिर हलकी पड़ कर लुप्त हो जाय और आगे चलकर बुध-क्षेत्र पर पुनः स्पष्ट और गहरी दिखाई पड़े तो समझना चाहिए कि बीच में स्वास्थ्य की कमज़ोरी थी किन्तु जातक बाद में ठीक हो गया।

(६) स्वास्थ्य-रेखा पर, कहीं पर भी छोटी आड़ी काटने वाली

रेखा, बिन्दु, क्रॉस या द्वीप-चिह्न हो तो इसे रोग का लक्षण समझना चाहिए। यदि यह रेखा के अन्तिम भाग में हो तो जातक पूर्ण आरोग्य लाभ नहीं करेगा। किन्तु बीच में कहीं हो और बाद में स्वास्थ्य-रेखा अच्छी दिखाई दे तो यह स्वस्थ हो जाने का लक्षण है।

स्वास्थ्य-रेखा का रंग

वैसे तो जीवन-रेखा आदि अन्य रेखाओं के रंग से भी स्वास्थ्य का पता चलता है किन्तु स्वास्थ्य-रेखा के रंग का विशेष महत्व है। किन्तु कोई नतीजा निकालने के पहले यह अच्छी तरह विचार कर लेना चाहिए कि जातक का शरीर और प्रकृति किस ग्रह से विशेष प्रभावित हैं। यदि जातक पर बृहस्पति, शुक्र अथवा सूर्य का विशेष प्रभाव है तो उसकी हथेली का रंग ललाई लिए हुए होगा। जिस पर मंगल का प्रभाव अधिक होता है उसकी हथेली भी स्वभावत: अधिक लाल होती है। इसलिये यदि ऐसे हाथ में स्वास्थ्य-रेखा पीली हो तो बहुत अधिक दोष समझा जावेगा। किन्तु जिन व्यक्तियों पर बुध या शनि का प्रभाव अधिक होता है उनकी हथेली में ललाई अधिक नहीं होतो। इस कारण ऐसे हाथों में यदि स्वास्थ्य-रेखा कुछ पीली-सी दिखाई दे तो उतनी अधिक दोषकारक नहीं। इसी प्रकार चन्द्रमा का प्रभाव जिन पर अधिक होता है उनके हाथों में सफ़ेदी या पीलापन जल्दी ही आ जाता है। पीलेपन के मायने हैं कि जिगर अपना काम ठीक तौर पर नहीं कर रहा और पित्त का प्रकोप हो जाने से यह पीलापन स्वास्थ्य-रेखा में दिखाई देने लगा है। जब यह रोग अधिक बढ़ जाता है तब तो हाथ ही क्या सारा शरीर पीला हो जाता है और स्पष्ट पीलिया रोग मालूम होने लगता है। किन्तु प्रारम्भिक अवस्था में यदि स्वास्थ्य-रेखा पीली दिखाई दे तो चिड़-चिड़ापन, दु:खी रहना, उत्सहहीनता आदि लक्षण जातक में दिखाई देते हैं; यदि रंग भी पीला या पीलापन लिए हुए हो और स्वास्थ्य-

रेखा की बनावट भी खराब हो तो विशेष अनिष्ट प्रभाव सूचित होगा।

यदि स्वास्थ्य-रेखा लहरदार हो

यदि स्वास्थ्य-रेखा लहरदार हो तो यह सूचित करती है कि ऐसा जातक लम्बे अरसे तक कुछ-कुछ बीमार रहेगा। जिगर की खराबी से पचासों रोग होते हैं और जो भी लम्बा रोग जातक को हो उसकी जड़ में—मूल कारण जिगर की खराबी होगी। यदि जातक पर शनि का प्रभाव अधिक हो तो वात-विकार या गठिया-रोग होगा। स्नायु की दुर्बलता के कारण अन्य रोग भी हो सकते हैं। लहरदार स्वास्थ्य-रेखा होने से अनेक प्रकार के पित्त ज्वर—मलेरिया आदि होते हैं। जिन पर सूर्य का अधिक प्रभाव हो और स्वास्थ्य-रेखा लहरदार हो तो पाचन-शक्ति की खराबी के कारण उनको हृदय-रोग की शंका होगी। ऐसे व्यक्तियों को उचित है कि वे अपने पेट और जिगर को ठीक हालत पर लावें, हृदय-रोग अपने-आप ठीक हो जावेगा। यदि मंगल का प्रभाव अधिक होगा तो पेट की अंतड़ियों में शोथ हो जावेगा। जब कभी भी स्वास्थ्य-रेखा अच्छी न हो तो, हाथ के अन्य लक्षणों से तुलना कर यह विचार करना चाहिए कि क्या रोग होगा।

चित्र नं० ८१

स्वास्थ्य-रेखा पर बिन्दु-चिह्न

ऊपर स्वास्थ्य-रेखा के कुछ दोष बताए जा चुके हैं। अब विशेष दोष-लक्षणों से क्या रोग अधिकतर होते हैं यह बताया जाता है—

(१) यदि स्वास्थ्य-रेखा छोटी-छोटी आड़ी रेखाओं से नसेनी की भाँति बनी हो तो बहुत तीव्र उदर-रोग का लक्षण है। अंतड़ियों

की सूजन, मंदाग्नि, उदर-विकार के कारण ज्वर आदि काफ़ी परेशान करने वाले रोग होते हैं। यदि ऐसी रेखा पर कोई रंगदार बिन्दु-चिह्न हो तो उस अवस्था पर बहुत अधिक बीमारी का चिह्न है। साधारणतः बिन्दु-चिह्न उदर-विकार का लक्षण है किन्तु यदि यह बिन्दु लाल हो तो तीव्र ज्वर का लक्षण है। यदि सफ़ेद हो तो यह प्रकट होता है कि लम्बे अरसे तक बीमारी रहेगी।

(२) बिन्दु-चिह्न बीमारी का लक्षण है यह ऊपर बताया जा चुका है। यदि इस बिन्दु से प्रारम्भ होकर कोई रेखा किसी ग्रह-क्षेत्र पर जाती हो और वहाँ किसी दोष-चिह्न से योग करती हो तो उससे क्या रोग होगा यह नतीजा निकालना चाहिये।

(३) यदि स्वास्थ्य-रेखा पर बिन्दु-चिह्न हो और तर्जनी का तृतीय पर्व मोटा और पुष्ट हो तो अधिक भोजन करने के कारण उदर-विकार होगा। यदि शनि-क्षेत्र पर कोई दोष हो तो वायु या पित्त-ज्वर का लक्षण है। बिन्दु लाल होने से ज्वर और पीला होने से वात-विकार समझा जाता है। यदि हृदय-रेखा सूर्य-क्षेत्र के नीचे टूटी, द्वीप-युक्त या अन्य दोषयुक्त हो तो पाचन-शक्ति की खराबी के कारण हृदय-रोग होगा। यदि सूर्य-क्षेत्र पर जाल-चिह्न हो और हाथ के नाखूनों से भी हृदय-रोग की सम्भावना प्रतीत हो तो इस लक्षण की पुष्टि होती है।

(४) यदि स्वास्थ्य-रेखा पर बिन्दु-चिह्न हो और स्वास्थ्य-रेखा बुध-क्षेत्र पर जाकर खण्डित या अन्य दोषयुक्त हो जाय तो जिस अवस्था पर बिन्दु हो उस अवस्था पर पित्त ज्वर होता है।

(५) स्वास्थ्य-रेखा पर बिन्दु-चिह्न हो और मंगल-क्षेत्र पर जाल, अर्गला-रेखा हो तो अंतड़ियों की सूजन आदि रोग होते हैं।

चित्र नं० ८२

(६) यदि स्वास्थ्य-रेखा पर बिन्दु-चिह्न हो और—

(क) चन्द्र-क्षेत्र का मध्य तृतीयांश जाल-चिह्न युक्त हो तो वात-विकार।

(ख) यदि चन्द्र-क्षेत्र का ऊपर का तृतीयांश जाल-चिह्न या अन्य दोषयुक्त हो तो अंतड़ियों की सूजन आदि का रोग होता है।

अन्य दोष

(१) जिस अवस्था पर स्वास्थ्य-रेखा को कोई आड़ी रेखा काटे उस अवस्था पर कोई रोग होगा। यदि आड़ी काटने वाली रेखा छोटी और पतली हो तो साधारण रोग समझना चाहिए; यदि मोटी और गहरी हो तो ज्यादा गहरी बीमारी होगी। यदि काटने वाली कई रेखाएँ हों तो कई बार बीमारी होने का लक्षण है। यदि स्वास्थ्य-रेखा तथा शीर्ष-रेखा दोनों को बहुत नन्ही-नन्ही सूक्ष्म रेखाएँ काटें तो जिगर खराब रहने के कारण पित्त के प्रकोप से सिर-दर्द रहता है।

(२) यदि स्वास्थ्य-रेखा पर द्वीप-चिह्न हो तो जिस अवस्था में यह द्वीप-चिह्न है, जीवन के उस काल में स्वास्थ्य कमज़ोर रहेगा। यदि इस द्वीप-चिह्न से प्रारम्भ होकर कोई रेखा किसी ग्रह-क्षेत्र पर जा रही हो और वहाँ किसी अशुभ चिह्न से योग करे तो उस ग्रह-क्षेत्र से सम्बन्धित बीमारी समझनी चाहिए। परन्तु स्वास्थ्य-रेखा पर द्वीप-चिह्न प्रायः पेट की बीमारियों को प्रकट करता है—तथा जिगर या अंतड़ियों की खराबी, (Appendicitis) वगैरह। इस पुस्तक में नाखून, हृदय-रेखा, ग्रह-क्षेत्र आदि से जो रोग बताये गए हैं वे लक्षण भी यदि हाथ में हों तो स्वास्थ्य-रेखा पर द्वीप-चिह्न होने से उन-उन रोगों के कारण स्वास्थ्य कमज़ोर होगा।

(३) यदि स्वास्थ्य-रेखा पर दो, तीन या अधिक द्वीप-चिह्न

हों तो प्रायः गले या फेफड़े की बीमारी होती है। यदि साथ-साथ बृहस्पति के क्षेत्र पर भी द्वीप-चिह्न हो तो गले और फेफड़े की बीमारी होने के लक्षण की पुष्टि होती है। कुछ हस्त-परीक्षकों ने स्वास्थ्य-रेखा पर द्वीप-चिह्न को "दिवालिया होने का लक्षण बताया है" किन्तु भाग्य-रेखा तथा सूर्य-रेखा पर भी इसी अवस्था पर दिवालिया होने का कोई लक्षण हो तभी दिवालिया कहना चाहिए।

चित्र नं० ८३

(४) यदि स्वास्थ्य-रेखा टूटी हो तथा जिस अवस्था पर टूटी दिखाई दे उस अवस्था पर तीव्र रोग या लम्बे अरसे तक रहने वाली बीमारी होगी। यदि रेखा कई जगह टूटी हो तो पेट बहुत कमज़ोर रहेगा। जिगर के ठीक काम न करने से मंदाग्नि आदि रोग होंगे। यदि टूटे हुए स्थान के चारों ओर चतुष्कोण चिह्न हो तो इस दोष की कमी समझनी चाहिए। चतुष्कोण चिह्न रक्षा करता है इस कारण अधिक बीमार होने पर भी प्राण नहीं जावेंगे। इसी प्रकार यदि टूटे हुए स्थान के पीछे कोई सहायक-रेखा हो तो स्वास्थ्य-रेखा के टूटने के दोष को कम करती है।

स्वास्थ्य-रेखा से भाग्योदय विचार

बहुत-से प्राचीन हस्त-परीक्षकों ने स्वास्थ्य-रेखा को व्यापार का स्वामी माना है। इसका कारण यह है कि बुध का व्यापार से बहुत अधिक सम्बन्ध है। परन्तु अधिकतर झुकाव इसी ओर है। अतः इस रेखा से स्वास्थ्य का विचार करना चाहिए। हाँ! यदि किसी हाथ में भाग्य-रेखा तथा सूर्य-रेखा न हों तो स्वास्थ्य-रेखा को ही भाग्य-रेखा मानकर विचार किया जाता है। जिस प्रकार अन्य रेखाओं के सुन्दर और सबल होने से उन-उन रेखाओं से सम्ब-

न्धित सुख और ऐश्वर्य होता है। उसी प्रकार स्वास्थ्य-रेखा के अच्छे होने से स्वास्थ्य अच्छा रहेगा और भाग्योदय भी अच्छा होगा।

स्वास्थ्य-रेखा से निकली हुई शाखायें

(१) यदि स्वास्थ्य-रेखा बुध-क्षेत्र के मध्य तक जाये और इस रेखा से निकलकर शाखा-रेखा ऊपर की ओर जावे तो शुभ लक्षण है। ऐसे व्यक्ति का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा और उसे व्यापारिक सफलता भी प्राप्त होगी।

(२) यदि शाखा-रेखा ऊपर की ओर न जाकर नीचे की ओर जावे तो यह सूचित होता है कि ऐसे व्यक्ति को कठिन परिश्रम करना पड़ेगा और कठिन परिश्रम के उपरान्त ही सफलता प्राप्त होगी।

(३) यदि बुध-रेखा सबल हो और उसमें से कोई शाखा निकलकर बृहस्पति के क्षेत्र पर जावे तो जातक की व्यापारिक सफलता का लक्षण है। इस व्यापारिक सफलता के मूल में महत्वाकांक्षा और अपने अधीन लोगों से अच्छी प्रकार कार्य लेने की योग्यता होगी। यदि बृहस्पति पर तारे का चिह्न भी हो तो प्रभावशाली व्यक्तियों की मित्रता और सहायता से सफलता प्राप्त होगी।

(४) यदि सबल और सुन्दर स्वास्थ्य-रेखा से कोई शाखा निकलकर शीर्ष-क्षेत्र पर जावे तो ऐसे व्यक्ति में सावधानी, बुद्धि, दूरदर्शिता, मितव्ययता आदि गुण होते हैं और इन गुणों के कारण सफलता प्राप्त होती है।

(५) यदि बुध-रेखा से कोई रेखा निकलकर सूर्य-क्षेत्र पर जाये तो भी सफलता का लक्षण है। ऐसे व्यक्ति में प्रखर बुद्धि, मिलनसारी, शिष्टता आदि विशेष होती है। (देखिये चित्र नं० ८४)

स्वास्थ्य-रेखा बुध-क्षेत्र पर जाती है और बुध का बुद्धि तथा व्यापार से सम्बन्ध है इस कारण इस रेखा से व्यापारिक सफ-

लता आदि गुण बताये गए हैं। किन्तु सर्वत्र इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि बुध से लिखने-पढ़ने तथा बोलने की चतुरता भी होती है, बुध के शुभ फल से ही कुशल डाक्टर और वैज्ञानिक होते हैं और बुध से ही व्यापारिक सफलता मिलती है। इस बात का निश्चय करने के लिए कि बुध के किस गुण का विशेष शुभ फल होगा यह निश्चय करना चाहिए कि छोटी उंगली का कौन-सा पर्व लम्बा है। यदि प्रथम पर्व विशेष लम्बा हो तो लिखने-पढ़ने की योग्यता, वाग्मिता आदि विशेष गुण होंगे। यदि मध्यम पर्व लम्बा हो तो वैज्ञानिक या डाक्टर का कार्य करने से जातक उन्नति करेगा। यदि तृतीय पर्व लम्बा हो तो जातक को व्यापारिक सफलता होगी।

चित्र नं० ८४

प्रत्येक गुण कहाँ तक फलीभूत होगा इसका विचार करते समय अन्य लक्षणों का सामञ्जस्य कर लेना चाहिये। यदि शीर्ष-रेखा कमज़ोर हो तो विद्वत्ता कैसे होगी ? यदि भाग्य-रेखा और सूर्य-रेखा न हों और ग्रह-क्षेत्र भी धँसे हुए हों तो धन कैसे संग्रह होगा ?

(६) यदि चन्द्र-क्षेत्र से कोई रेखा आकर स्वास्थ्य-रेखा में मिलती हो तो चन्द्र-क्षेत्र का जो गुण है—कल्पना-शक्ति, वह भी जातक में विशेष मात्रा में होगी और यदि साहित्यिक, कवि या लेखक होने के लक्षण जातक में हैं तो उसमें कल्पना-शक्ति बहुत सहायक होगी। जो व्यक्ति सट्टा आदि व्यापारिक कार्य करते हैं उनको भी कल्पना-शक्ति सहायक होती है। बुद्धि और कल्पना दो अलग-अलग गुण हैं। केवल बुद्धि से व्यक्ति सुन्दर, आलोचक या विद्वान् हो सकता है, कवि नहीं। केवल बुद्धि से व्यापारिक कार्य कर सकता है, सट्टे में या किसी बड़ी व्यापारिक योजना में सफल नहीं हो सकता। बुद्धि में कल्पना सहायक होती है, केवल कल्पना हो और बुद्धि न हो तो

व्यक्ति शेखचिल्ली होता है।

(७) यदि बुध-रेंखा से कोई शाखा निकलकर शीर्ष-रेखा में जाकर मिल जाए तो बुद्धि की प्रखरता के कारण सफलता मिलती है।

स्वास्थ्य-रेखा का अन्त

प्रायः जिन हाथों में स्वास्थ्य-रेखा होती है वह बुध-क्षेत्र तक जाती है। किन्तु कुछ हाथों में बुध-क्षेत्र पर अन्य एक या दो खड़ी रेखाएँ भी होती हैं। इस कारण यह ध्यान से देखना चाहिए कि बुध-क्षेत्र पर जो रेखा है वह स्वास्थ्य-रेखा ही है, अन्य स्वतन्त्र रेखा नहीं।

(१) यदि बुध-क्षेत्र पर कोई विवाह या प्रेम-रेखा स्वास्थ्य-रेखा को काटे तो प्रेम या विवाह के कारण उन्नति या स्वास्थ्य में बाधा होगी।

(२) यदि इस रेखा के अन्त पर कोई छोटी आड़ी-रेखा हो या कॉस-चिह्न हो तो बाधा का चिह्न है। यदि साथ-ही-साथ हृदय-रेखा पतली हो या अच्छी न हो, उंगलियाँ टेढ़ी हों और हाथ में अन्य लक्षण भी अच्छे न हों तो ऐसा व्यक्ति धोखेबाज़ होता है और इस कारण उसे सफलता नहीं मिलती।

चित्र नं० ८५

(३) यदि इस रेखा के अन्त पर जाल-चिह्न हो तो और भी अशुभ लक्षण है। स्वास्थ्य की खराबी या बेईमानी के कारण मनुष्य को सफलता प्राप्त नहीं होती। यदि सूर्य-क्षेत्र पर बिन्दु-चिह्न भी हो तो दिवालिया होने का या व्यापारिक वदनामी का लक्षण है।

(४) यदि इस रखा के अन्त पर तारे का चिह्न हो तो पूर्ण सफलता का लक्षण है। भाग्य-रेखा और सूर्य-रेखा से इस फल की पुष्टि होती है या नहीं यह भी विचार करना उचित है।

(५) स्वास्थ्य-रेखा बुध-क्षेत्र पर पहुँच कर दो शाखायुक्त हो

जाए तो ऐसा व्यक्ति अपनी बुद्धि को एक से अधिक प्रकार के कार्यों में एक साथ लगाता है इस कारण पूर्ण सफलता नहीं होती।

(६) यदि जैसा ऊपर बताया गया है दो शाखा की बजाय कई शाखा निकल आयें तो भी अनेक कामों में बुद्धि को लगाने से असफलता का लक्षण है।

(७) जहाँ स्वास्थ्य-रेखा शीर्ष-रेखा को काटती हो वहाँ या उसके पास तारे का चिह्न हो तो —

(क) स्त्री के हाथ में यह लक्षण होने से गर्भाशय-सम्बन्धी रोग होता है। यदि साथ ही चन्द्र-क्षेत्र के नीचे के तिहाई भाग में जाल-चिह्न हो तो इस रोग की पुष्टि का लक्षण है। ऐसी स्त्रियों को सन्तान पैदा करने में बहुत कठिनता होती है। यदि जीवन-रेखा का घुमाव बहुत कम हो और शुक्र-क्षेत्र छोटा तथा नीचा हो तो प्रायः सन्तान नहीं होती।

(ख) पुरुष के हाथ में हो—अन्य लक्षण अच्छे हों अर्थात् स्वास्थ्य-रेखा और शीर्ष-रेखा उत्तम हो तो प्रखर बुद्धि का लक्षण है। यदि शीर्ष-रेखा और स्वास्थ्य-रेखा खराब हों तो दिमागी बीमारी का लक्षण है।

उपसहार

यदि बुध-रेखा सुन्दर और सबल हो तो उसके सम्बन्ध में या उससे निकली हुई शाखाओं के सम्बन्ध में जो फल बताये गये हैं पूर्ण रूप से शुभ फल देते हैं। यदि रेखा दोषयुक्त अथवा निर्बल हों तो अशुभ लक्षण पूर्ण अशुभ फल देते हैं। यदि सुन्दर रेखा में कोई थोड़ा सा दोष-चिह्न भी कहीं हो तो इतना नुकसान नहीं होता किन्तु निर्बल या लहरदार रेखा हो और उस पर द्वीप या अन्य अशुभ लक्षण हों तो अधिक अनिष्ट परिणाम होता है।

अन्य रेखाओं तथा ग्रह-क्षेत्रों के लक्षणों से जो फल प्रतीत होते हैं उनकी पुष्टि के लिए स्वास्थ्य-रेखा का अध्ययन आवश्यक है किन्तु
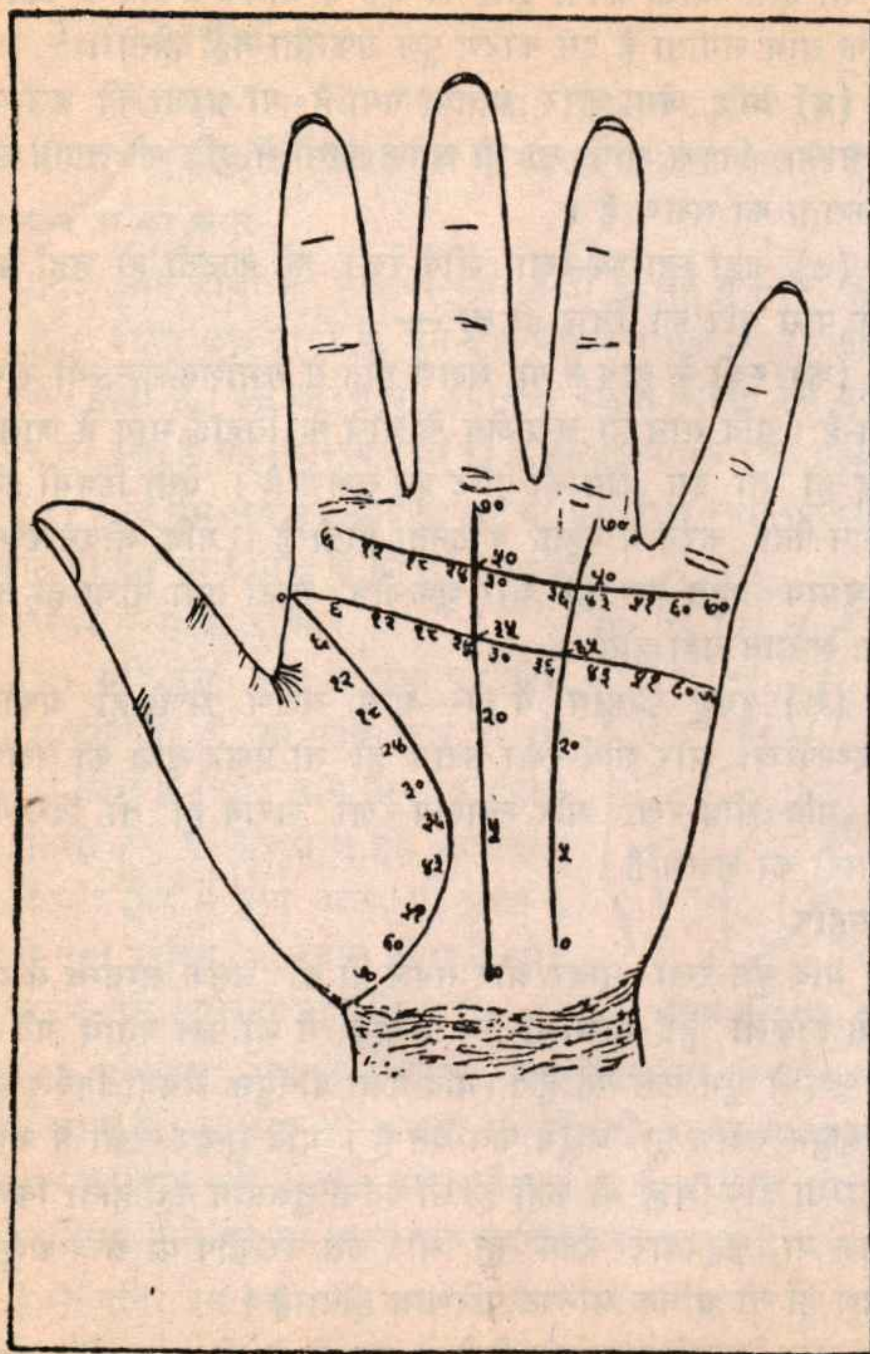
चित्र नं० ८६

यदि स्वास्थ्य-रेखा हो ही नहीं तो यह भी शुभ लक्षण है।

चित्र-परिचय (चित्र नं० ८६)

जीवन-रेखा तथा भाग्य-रेखा पर किस स्थान से कौन सी उम्र समझना, इस विषय का एक चित्र दसवें प्रकरण के अन्त में दिया गया है।

सब हाथों की बनावट एक सी नहीं होती। रेखा की लम्बाई तथा दिशा में अन्तर होता है। इस कारण अनुमान सही तभी उतरता है जब निरन्तर हाथ देखते-देखते इसका पूर्ण अभ्यास किया जावे।

एक अन्य विद्वान् ने रेखाओं पर से उम्र का अन्दाज करने के लिए एक अन्य चित्र दिया है। उसकी प्रतिलिपि यहाँ दी जाती है। इस पर से जीवन-रेखा तथा अन्य रेखाओं पर जो विविध चिह्न होते हैं वे किस अवस्था में होंगे इसका अनुमान करना चाहिए।

विविध हाथों की रेखाओं की लम्बाई, गोलाई, सीधेपन आदि में अन्तर होता है—इस कारण एक ही पैमाना सबके लिये बिलकुल उपयुक्त नहीं हो सकता। सही अनुमान तो अभ्यास पर ही निर्भर है। तथापि यह चित्र इस सम्बन्ध में बहुत सहायक होगा यह आशा की जाती है।

१६वाँ प्रकरण

विवाह-रेखा

भारतीय मत

कनिष्ठिका उंगली के नीचे और हृदय-रेखा के ऊपर हाथ के बाहरी भाग से प्रारम्भ हो बुध के क्षेत्र पर गई हुई रेखा या रेखाओं को विवाह-रेखा कहते हैं। समुद्र ऋषि कहते हैं—

चित्र नं० ८७

स्थिताश्चान्ते च या रेखाः
कनिष्ठा जीव रेखयोः ।
तावन्त्यो महिला स्तस्य
स्त्रिया स्तावन्मिताधवाः ॥

अर्थात् ये रेखा जितनी हों पुरुष के उतनी स्त्रियाँ और स्त्रियों के उतने पति होते हैं।

'प्रयोग पारिजात' में भी लिखा है—

रेखाः कनिष्ठिकायुर्लेखामध्ये नरस्य यावत्यः ।
तावत्यो महिलाः स्युर्महिलायाः पुनरपि मनुष्याः ॥
रेखाभिर्विषमाभिर्विषमा समाभिरथ समशीला ।
हीनतरा हीनाभिर्ध्रुव मधिकतराः समधिकाभिः ॥
पुष्टाभिर्हि पुनर्भू कन्याभिरेखाभिरथ सुदीर्घाभिः ।
सुभगा सूक्ष्माभिः स्यात्स्फुटिताभिर्दुर्भगा नारी ॥

अर्थात् पुरुष के हाथ में जितनी रेखा हों उतनी स्त्रियाँ उसके होंगी और महिला के हाथ में जितनी हों उतने पति उसके होंगे।

विषम रेखा हों तो विषम (नीचे कुल की स्त्री से) यदि सम हों तो समशील (अपने समान कुलशील वाली) से विवाह होता है।

यदि रेखा सुन्दर, सूक्ष्म-दीर्घ हो तो कन्या (जिसका पहले विवाह न हुआ हो) से विवाह होता है यदि हीन (सुन्दर नहीं, छोटी) किन्तु पुष्ट (मोटी) रेखा हो तो ऐसी स्त्री से विवाह होता है जिसका पहले विवाह हो चुका हो। यदि रेखा फटी हुई हो तो स्त्री दुर्भगा (सौभाग्ययुक्त नहीं) होती है।

इन सब रेखाओं का फल, देश, काल, समाज का विचार कर कहना चाहिये।

पाश्चात्य मत

बहुत से पाश्चात्य हस्तपरीक्षक इन को विवाह-रेखा न कहकर प्रेम-रेखा कहते हैं क्योंकि हज़ारों-लाखों आदमी ऐसे देखे गये है—जिनके हाथ में यह रेखा थी किन्तु वे सारे जीवन-भर अविवाहित रहे और मर गये। उनके जीवन में गहरे प्रेम-सम्बन्ध अवश्य हुए। उनको प्रकट करने वाली यही विवाह या प्रेम-रेखा उनके हाथों में थी।

यूरोप आदि पाश्चात्य देशों में इतनी अधिक संख्या में लोग विवाह नहीं करते जितनी कि भारतवर्ष में। वहाँ का सामाजिक जीवन भिन्न प्रकार का है; किन्तु भारतवर्ष में ९९ फीसदी स्त्रियों के और ८०-९० प्रतिशत पुरुषों के विवाह होते हैं। इस कारण अपने देश के दृष्टिकोण से इन्हें विवाह-रेखा कहना ही विशेष उपयुक्त होगा। जहाँ कहीं इसका फल विवाह के रूप में न मिले वहाँ उसका अर्थ अपनी विवाहिता पत्नी के अतिरिक्त किसी स्त्री से प्रेम-सम्बन्ध समझना पड़ेगा। इसी प्रकार स्त्रियों के हाथ में यदि एक से अधिक रेखा हो तो जिन समाजों में विधवा-विवाह या पुनर्विवाह प्रचलित है उनमें तो दो या अधिक विवाह-रेखाओं का अर्थ दो या अधिक विवाह किया जावेगा। किन्तु जिन समाजों में पुनर्विवाह प्रचलित नहीं है या ऐसी स्त्रियों के हाथ देखने का अवसर मिले जिनकी अवस्था इतनी अधिक हो चुकी हो कि पुनर्विवाह का प्रश्न ही नहीं उठता—तो ऐसी परिस्थिति में एक से

अधिक विवाह-रेखाओं का अर्थ एक से अधिक प्रेम-सम्बन्ध अवश्य मानना पड़ेगा। युक्तियुक्त और तर्कसम्मत पक्ष तो यही है। किन्तु सामाजिक परिस्थिति पर भी ध्यान देना—स्त्रियों की कुलीनता पर भी दृष्टि रखना आवश्यक है। इस कारण देश, काल, पात्र का विचार कर, पति के अतिरिक्त अन्य पुरुष से प्रेम-सम्बन्ध नहीं कहना चाहिये। इसमें दो वैज्ञानिक हेतु भी हैं—(१) बहुत से लक्षण जब बलवान नहीं होते तब उनके फल स्वप्न में ही प्राप्त होते हैं ऐसा वराहमिहिराचार्य ने लिखा है।

इस कारण प्रत्येक लक्षण का समाज-भिन्नता से पूरा फल ठीक नहीं बैठता।

(२) अन्य हेतु यह है कि किसी एक लक्षण से अन्तिम निर्णय पर नहीं पहुँचा जा सकता। इस कारण स्त्री-लक्षण प्रकरण में जो अनेक लक्षण कुलटाओं के बताये गए हैं वे भी यदि किसी स्त्री में हों और विवाह-रेखा भी कई हों तो ऐसी स्त्री का पर-पुरुषों से सम्बन्ध है या रहा है यह निश्चय किया जा सकता है।

कुछ हाथों में केवल एक ही रेखा होती है, कुछ हाथों में अनेक। जिन व्यक्तियों का जीवन विवाह से बहुत प्रभावित हुआ है—अर्थात् विवाह के उपरान्त जिनका जीवन बहुत प्रेममय रहा हो और जिनके दिल और दिमाग पर विवाहित जीवन की गहरी छाप लगी हो उनके हाथ में गहरी विवाह-रेखा होगी। किन्तु जिनका विवाह हुआ—वैवाहिक जीवन भी व्यतीत किया; सन्तानें भी हुईं; किन्तु उनके दिल और दिमाग में वैवाहिक तन्मयता नहीं हुई उनके हाथ में विवाह-रेखा पतली और क्षीण होगी। ऐसे भी लोगों के हाथ देखे गये हैं जो बीस-बीस, पच्चीस-पच्चीस वर्ष से विवाहित हैं किन्तु उनके हाथ में विवाह-रेखा बिलकुल नहीं है। इससे यही नतीजा निकाला जाता है कि विवाह द्वारा जिनका जीवन एक विशेष प्रभावशाली धारा में बहने लगा, उनके हाथ में विवाह-रेखा

गहरी, स्पष्ट और लम्बी होगी। किन्तु जन्मभर गृहस्थी की गाड़ी चलाते हुए भी, जिसके हृदय या मस्तिष्क का पूर्ण लगाव वैवाहिक जीवन के साथ नहीं हुआ, उसके हाथ में विवाह-रेखा इतनी अस्पष्ट और क्षीण होगी कि सम्भवतः यह प्रतीत होगा कि उसका विवाह हुआ ही नहीं। यह बहुत महत्व का विषय है इस कारण इस ओर विशेष ध्यान दिलाया गया है।

विवाह के विषय में फलादेश करते समय जातक के स्वरूप, प्रकृति और स्वभाव की ओर ध्यान देना भी आवश्यक है। जिन पर सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति या शुक्र का प्रभाव अधिक होता है वे प्रायः जवानी के प्रारम्भ में ही विवाह करते हैं। इसलिये यदि बृहस्पति के प्रभाव से युक्त पुरुष के हाथ में विवाह-रेखा हृदय-रेखा के पास ही हो (अर्थात् बहुत दूर न हो) तो जातक का कम उम्र में विवाह होगा किन्तु यदि ऐसी ही रेखा शनि या चन्द्र प्रभाव वाले व्यक्ति के हाथ में हो तो उसका विवाह अधिक अवस्था में ही कहना चाहिये। यदि रेखा क्षीण हो तो भी शुक्र या बृहस्पति प्रभाव वाले व्यक्तियों का विवाह हो जावेगा—क्योंकि उनकी इस ओर स्वाभाविक प्रवृत्ति रहती है। किन्तु इस प्रकार की रेखा का परिणाम शनि प्रभाव-युक्त व्यक्ति के हाथ में पूर्ण फलद नहीं होता। बहुत गहरी रेखा हो तभी विवाह का फलादेश करना चाहिये ; और वह भी अपेक्षाकृत विलम्ब से।

चित्र नं० ८८

विवाह की उम्र बताने का नियम यह है कि कनिष्ठिका उंगली के मूल और हृदय-रेखा में जो अन्तर हो उसे दो भागों में विभक्त करना चाहिये। यदि विवाह-रेखा—हृदय-रेखा की ओर जो आधा भाग है उस में हो तो विवाह जल्दी—जवानी के प्रारम्भ में ही होता है। विवाह-रेखा हृदय-रेखा के

जितने पास हो उतनी ही जल्दी विवाह होगा। किन्तु यदि विवाह-रेखा कनिष्ठिका उंगली के ओर वाले आधे भाग में हो तो विवाह ढलती हुई जवानी में होता है। विवाह-रेखा चिटली उंगली के जितने अधिक पास गई हो उतनी ही अधिक उम्र में विवाह होता है।

विवाह की उम्र निश्चित करने का यह साधारण नियम है। किन्तु भिन्न-भिन्न प्रकार के हाथों में—जैसे बृहस्पति या शनिप्रभाव-युक्त व्यक्तियों के हाथ में—भिन्न-भिन्न प्रभाव होता है यह ऊपर उदाहरण देकर समझाया गया है। इस विचार के साथ-साथ यह भी ध्यान में रखना चाहिये कि यूरोप आदि देशों में अधिक अवस्था में लोग विवाह करते हैं इस कारण यदि भारतवर्ष में इक्कीस-बाईस वर्ष की अवस्था में किसी पुरुष के विवाह करने पर जल्दी विवाह कहा जाय तो इंग्लैंड आदि देशों में २७-२८ वर्ष की अवस्था में भी वहाँ शीघ्र विवाह समझा जावेगा। भारतवर्ष में ही कुछ प्रदेशों में अधिक अवस्था में विवाह करना प्रचलित हो गया है। किसी समय २०-२२ वर्ष की उम्र में बंगाली नययुवकों के विवाह हो जाते थे। किन्तु अब तीस-पैंतोस वर्ष की अवस्था में, आधुनिक शिक्षित बंगाली विवाह करते हैं।

लडकियों के विवाह के सम्बन्ध में भी यही बात लागू होती है। जिस समाज में जैसी प्रथा हो उसके अनुरूप ही कम उम्र क्या है और अधिक उम्र क्या यह निश्चित करना चाहिये। उदाहरण के लिए किसी समय १२-१३ वर्ष की अवस्था में विवाह हो जाते थे और यदि १५वें या १६वें वर्ष में विवाह हुआ तो विलम्ब से विवाह समझा जाता था। किन्तु अब १५वें या १६वें वर्ष में विवाह हो तो शीघ्र विवाह समझा जाता है और पच्चीस या इससे भी अधिक अवस्थाओं की स्त्रियों का विवाह अब साधारण बात हो गई है।

ऊपर जो विवाह का समय निश्चित करने के लिए नियम

बताया गया है उसके अनुसार प्रधान विवाह-रेखा किस अवस्था में है यह निश्चित करना चाहिये। यदि इसके पहले अन्य छोटी-पतली रेखायें हों तो विवाह के पूर्व प्रेम-सम्बन्ध प्रकट होता है। यदि विवाह-रेखा के उपरान्त ये रेखायें हों तो विवाह के बाद प्रेम-सम्बन्ध का लक्षण समझना चाहिये। किस अवस्था में यह प्रेम-सम्बन्ध होगा इसका निश्चय उस रेखा की स्थिति से होगा—अर्थात् यह रेखा हृदय-रेखा से कितनी और कनिष्ठिका उंगली के मूल से कितनी दूर है। यदि ये (प्रधान विवाह-रेखा के अतिरिक्त) अन्य रेखायें लम्बी और गहरी हों तो जातक के जीवन पर या हृदय पर इन सम्बन्धों का विशेष प्रभाव पड़ा है यह समझना उचित है किन्तु ये रेखा छोटी या अस्पष्ट हों तो या तो ऐसा सम्बन्ध थोड़े काल तक रहा या जातक के हृदय पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ा यह नतीजा निकालना उचित है।

उदाहरण के लिए किसी जातक के हाथ में प्रधान विवाह-रेखा से पहले दो छोटी रेखा हों तो समझना चाहिये कि विवाह के पूर्व दो प्रेम-सम्बन्ध हुए; जिनका प्रभाव थोड़े दिन तक रहा। किन्तु यदि दो विवाह-रेखा—दोनों गहरी और लम्बी—हों तो इसका अर्थ दो विवाह होता है। किस अवस्था में ये विवाह हुए या होंगे इस का निश्चय उनकी स्थिति से करना चाहिए। कितने ही ऐसे व्यक्तियों के हाथ हमने देखे जिनके तीन विवाह हुए। दो रेखायें तो लम्बी और गहरी थीं और एक अत्यन्त छोटी और हल्की थी। उनको जब यह बताया गया कि उनके दो विवाह और विवाह के पूर्व एक प्रेम-सम्बन्ध का लक्षण उनके हाथ में है तो उन्होंने बताया कि वास्तव में उनके तीन विवाह हो चुके हैं—पहला विवाह १३-१४ साल की उम्र में ही हुआ और चार-पाँच वर्ष के बाद ही उस पत्नी का देहान्त हो गया। फिर दूसरा विवाह दो-तीन वर्ष बाद हुआ; दस-बारह वर्ष तक वह पत्नी जीती रही और उसके उपरान्त तीसरा विवाह हुआ। ऐसे हाथों में छोटी और अस्पष्ट रेखा भी

प्रेम-सम्बन्ध नहीं बल्कि विवाह ही प्रकट करती है।

बहुत से ऐसे व्यक्तियों के हाथ देखने का अवसर मिला जिनके पाँच-छः विवाह हो चुके थे किन्तु उनके दोनों हाथों को देखने पर भी दो-तीन से अधिक विवाह-रेखा न दीख पड़ीं। इससे यही परिणाम निकला कि उनका प्रेम और सहवास दो-तीन पत्नियों से ही विशेष रहा है।

यदि आप किसी हाथ में दो विवाह-रेखा देखें और प्रथम रेखा अधिक लम्बी और गहरी हो तो आप निश्चयपूर्वक कह सकते हैं कि जातक का अपनी प्रथम पत्नी के साथ द्वितीय की अपेक्षा विशेष प्रेम है। यहाँ यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि विवाह-रेखाओं का विस्तार करते समय प्रथम, द्वितीय, तृतीय आदि हृदय-रेखा की ओर से गिनना प्रारम्भ करना चाहिए।

यदि कोई रेखा विशेष लम्बी किन्तु पतली हो और सबसे अधिक लम्बी होने के कारण यह निश्चय किया जाय कि वही विवाह-रेखा है और इस रेखा के पहले कोई गहरी रेखा हो तो समझना चाहिए कि जातक प्रेम तो किसी अन्य व्यक्ति को करता था किन्तु विवाह दूसरे से हुआ। यदि दोनों रेखा पास-पास और समान रूप से गहरी और लम्बी हों तो यह परिणाम निकालना चाहिए कि जातक दो व्यक्तियों को समान रूप से प्रेम करता रहा—चाहे दोनों पत्नी हों या एक या दोनों उपपत्नी।

प्रेम की गहराई का लक्षण रेखा की चौड़ाई और गहराई से ही लगता है। यदि रेखा हल्की और पतली हो तो ऐसे जातक की अपनी पत्नी के प्रति उदासीनता होती है। जिनके हाथ में बहुत बारीक-बारीक और बहुत छोटी बहुत-सी रेखायें हों तो यह प्रकट होता है कि जातक का प्रेम करने का स्वभाव नहीं है। बल्कि भौंरे के सदृश इधर-उधर रस लेने का स्वभाव होता है। रेखाओं के विषय में कुछ अन्य लक्षण नीचे बताए जाते हैं—

(१) यदि हाथ के बाहरी भाग से प्रारम्भ होते समय पहले हिस्से में रेखा गहरी हो और बाद में हल्की और पतली होती चली जाय तो समझना चाहिए कि विवाह या प्रेम-सम्बन्ध में, प्रारम्भिक काल में तो जातक के दिल में मुहब्बत का जोश था किन्तु बाद में ठंडा होता गया।

(२) यदि प्रारम्भिक काल में (करपृष्ठ की ओर वाले भाग में) रेखा हल्की हो और बुध-क्षेत्र पर आकर धीरे-धीरे गहरी होती जावे तो समझना चाहिए कि पहले प्रेम हल्का था बाद में अधिक हो गया।

(३) यदि रेखा के रंग में सफेदी या पीलापन हो तो अधिक प्रेम सूचित नहीं होता। किन्तु यदि गुलाबी या लाल रंग हो तो प्रेम में जोश होता है।

(४) यदि विवाह-रेखा द्वीप-युक्त हो तो व्यभिचार का लक्षण है या वैवाहिक जीवन में कष्ट और कलह सूचित होता है। पति-पत्नी में विच्छेद भी हो सकता है। यदि विवाह-रेखा के प्रारम्भ में यह चिह्न हो तो विवाह के प्रारम्भ काल में, यदि बीच में हो तो मध्य-काल में, यदि अन्त में हो तो अन्तिम काल में—जितना लम्बा द्वीप हो उतने काल तक कलह और दुःख समझना चाहिए।

(५) यदि विवाह-रेखा सुन्दर और अच्छी हो और चन्द्र-क्षेत्र से प्रारम्भ होकर कोई प्रभाव-रेखा भाग्य-रेखा में आकर मिल जाय तो धनिक कुल में विवाह होता है। (देखिये चित्र नं० ८६) वास्तव में यह दो लक्षणों का समन्वय है। चन्द्र-क्षेत्र से कोई भी रेखा आकर यदि भाग्य-रेखा में मिलती है तो अपने सम्बन्धियों के अतिरिक्त किसी बाहरी व्यक्ति की सहायता से भाग्य-वृद्धि का लक्षण है। इस का अर्थ विवाह द्वारा भाग्योदय किया जाता है। स्त्रियों के

चित्र नं० ८६

हाथ में यह अर्थ विशेष सही बैठता है क्योंकि विवाह के उपरान्त उनके जीवन में विशेष परिवर्तन होता है।

यदि चन्द्र-क्षेत्र से घुमावदार या टेढ़ी रेखा आकर भाग्य-रेखा में योग करे तभी उपर्युक्त अर्थ करना चाहिये।

(६) यदि चन्द्र-रेखा से कोई रेखा प्रारम्भ होकर कुछ दूर तक सीधी जावे और फिर मुड़ कर भाग्य-रेखा से योग करे तो प्रेम के कारण नहीं किन्तु लहर (किसी अस्थायी प्रभाव या झोंक) में आकर मनुष्य विवाह करता है।

(७) यदि उपर्युक्त (५ और ६) चन्द्र-क्षेत्र से आई हुई रेखा भाग्य-रेखा की अपेक्षा विशेष बलवान (गहरी और चौड़ी) हो तो जातक की अपेक्षा उसकी पत्नी विशेष प्रभाव और व्यक्तित्व रखती है। यदि किसी स्त्री के हाथ में ऐसी रेखा हो तो पत्नी के स्थान में पति समझना चाहिये।

(८) यदि उपर्युक्त चन्द्र-क्षेत्र से आई हुई प्रभाव-रेखा भाग्य-रेखा के साथ-साथ सुन्दर और गहरी दूर तक जाये तो वैवाहिक-जीवन सुखमय होता है।

(९) विवाह-रेखा यदि सुन्दर, सीधी, लम्बी और गहरी हो तो पूर्ण और शुभ फल देती है। किन्तु यदि बीच में कटी, क्रॉस या अन्य अशुभ लक्षणयुक्त हो तो अनिष्ट फल होता है।

(१०) यदि विवाह-रेखा कुछ दूर सीधी आकर बाद में नीचे की ओर—हृदय-रेखा की ओर घूम जाये तो जातक की पत्नी (या प्रेमिका) की मृत्यु पहले होगी, जातक की बाद में। यदि स्त्री के हाथ में ऐसी रेखा हो तो पति की मृत्यु पहले समझनी चाहिये।

(११) यदि उपर्युक्त रेखा नीचे की ओर न घूम कर ऊपर की ओर (कनिष्ठिका उंगली की ओर घूमी हो) तो कीरो के मतानुसार ऐसे जातक का विवाह नहीं होता। परन्तु भारतीय परिस्थिति में इसका अर्थ यह करना उचित होगा कि जातक की स्वयं की मृत्यु

पहले होगी, पत्नी की बाद में।

(१२) यदि विवाह-रेखा स्पष्ट हो लेकिन उससे निकल कर पतली-पतली रेखायें हृदय-रेखा की ओर आयें तो जातक की पत्नी (या पति) का स्वास्थ्य खराब रहने के कारण वैवाहिक जीवन सुखमय न होगा।

(१३) विवाह-रेखा बुध के क्षेत्र पर पूरी आकर हृदय-रेखा की ओर घूम गई हो और इस घुमाव पर छोटे से क्रॉस का चिह्न हो तो जातक की पत्नी (या पति) की सहसा बीमारी से या किसी दुर्घटना से मृत्यु हो जायगी। किन्तु यदि इस घुमाव पर कोई चिह्न न हो और घुमाव भी लम्बा और क्रमशः हो तो पत्नी (या पति) की लम्बे अरसे की बीमारी या अस्वास्थ्य के बाद मृत्यु होगी।

(१४) यदि विवाह-रेखा द्विशाखा युक्त हो जाये तो पति-पत्नी में कलह का लक्षण है। ये दोंनों शाखायें जितनी अधिक चौड़ी (एक-दूसरे से दूर) होंगी उतना ही अधिक कलह या प्रेम की कमी समझनी चाहिये। यह विच्छेद या कलह जातक की गलती से नहीं बल्कि दूसरे फ़रीक की गलती से होता है। यदि विवाह-रेखा अन्त में दो शाखाओं में विभाजित हो जाय और घूमकर हाथ के मध्य भाग की दिशा में जावे तो विवाह-विच्छेद होता है। यदि करतल के मध्य भाग से कोई रेखा आकर इस द्विशाखायुक्त विवाह-रेखा से योग करती हो या उसके पास तक आती हो तो इस लक्षण की पुष्टि होती है। (देखिये चित्र नं० ९०)

चित्र नं० ९०

(१५) यदि विवाह-रेखा में छोटे-छोटे अनेक द्वीप हों और उस रेखा से निकलकर अति सूक्ष्म रेखायें नीचे की ओर जाती हों तो अत्यधिक अशुभ लक्षण है। ऐसे व्यक्ति को कभी वैवाहिक सुख

नहीं प्राप्त हो सकता । इस कारण उसे विवाह नहीं करना चाहिए ।

(१६) यदि विवाह-रेखा दो खण्डों में विभाजित हो तो वैवाहिक जीवन में घोर संकट उपस्थित होगा । रेखा के टूटी हुई होने से विवाह-विच्छेद भी हो सकता है । किन्तु यदि दोनों खण्ड एक-दूसरे के ऊपर आ जावें तो फिर मेल भी हो जायगा ।

(१७) यदि विवाह-रेखा में द्वीप-चिह्न हो और अन्त में जाकर दो शाखायुक्त हो जाये तो उपर्युक्त (१५) में जो फल बताया गया है वही होता है ।

(१८) यदि विवाह-रेखा में से एक शाखा निकल कर सूर्य-क्षेत्र पर पहुँचे और सूर्य-रेखा में ऊपर की ओर जाकर मिल जाय तो ऐसे व्यक्ति का किसी उच्च और अत्यन्त प्रतिष्ठित कुल में विवाह होता है ।

(१९) किन्तु यदि विवाह-रेखा से कोई रेखा निकलकर या विवाह-रेखा स्वयं घूमकर नीचे की ओर जावे और सूर्य-रेखा को काटे तो यह बहुत अशुभ लक्षण है । (देखिये चित्र नं० ९१) ऐसा व्यक्ति विवाह के कारण अपना उच्च पद खो बैठता है । कहा जाता है कि ड्यूक आव विन्डसर (सम्राट् एडवर्ड अष्टम) के हाथ में इसी प्रकार की रेखा है और इसको देखकर प्रसिद्ध हस्तपरीक्षक कीरो ने बरसों पहले यह बता दिया था कि भावी सम्राट् किसी ऐसी स्त्री से विवाह करेंगे जिस के कारण उन्हें राज्यच्युत होना पड़ेगा ।

(२०) यदि विवाह-रेखा के बाद उसके ही समानान्तर रेखा हो तो विवाह के उपरान्त जातक का किसी अन्य स्त्री से प्रेम-सम्बन्ध होता है ।

चित्र नं० ९१

विवाह-रेखा पर चिह्न

विवाह-रेखा पर कुछ चिह्नों का फल तो

ऊपर बताया जा चुका है। इसके अतिरिक्त यदि शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ होकर कोई रेखा विवाह-रेखा तक आवे या उसे काटे तो इसका फलादेश उस (प्रभाव-रेखा के) प्रकरण में दिया गया है; किन्तु कुछ अन्य चिह्नों का फल नीचे दिया जाता है—

(१) यदि विवाह-रेखा पर क्रॉस का चिह्न हो तो अशुभ लक्षण है। वैवाहिक जीवन में काफ़ी क्लेश और बाधा का सामना करना पड़ेगा।

(२) यदि विवाह-रेखा सूर्य-क्षेत्र तक जाये और वहाँ किसी तारे के चिह्न से योग करे तो जातक का विवाह किसी सुविख्यात और सुप्रतिष्ठित व्यक्ति से होता है।

(३) यदि विवाह-रेखा अन्त में त्रिशूलाकृति (तीन शाखायुक्त) हो जाये तो भी यही समझना चाहिए कि पति-पत्नी में प्रेम नहीं रहा। चाहे अदालत के ज़रिये विच्छेद न हो किन्तु गार्हस्थ्य जीवन सुखमय नहीं होता।

(४) यदि विवाह-रेखा बुध-क्षेत्र पर घूमकर अंकुश की भाँति हो जाये तो भी प्रेम नष्ट हो जाता है।

(५) यदि विवाह-रेखा पर बिन्दु-चिह्न हो तो अशुभ लक्षण है, इससे बाधा या विघ्न सूचित होता है। यदि इस बिन्दु के बाद विवाह-रेखा क्रमशः क्षीण होती जावे तो समझना चाहिए कि उस विघ्न के कारण धीरे-धीरे प्रेम भी नष्ट हो जावेगा। यदि विवाह-रेखा पर काला दाग़ हो तो जातक विधवा या विधुर होता है।
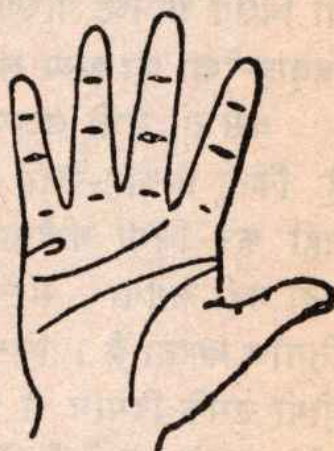
चित्र नं० ६२

(६) यदि विवाह-रेखा किसी छोटी आड़ी रेखा से कटी हो और वहाँ से कोई रेखा आकर शीर्ष-रेखा से योग करती हो और

शीर्ष-रेखा में उस स्थान पर द्वीप-चिह्न हो तो जातक के वैवाहिक जीवन में बाधा पहुँचने के कारण उसे मस्तिष्क-विकार होगा।

यदि इस लक्षण में शीर्ष-रेखा पर द्वीप के स्थान में क्रॉस, छोटी आड़ी रेखा या बिन्दु-चिह्न हो तो भी यही फल बताना चाहिये।

(७) शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ होकर आने वाली प्रभाव-रेखाओं से यदि विवाह-रेखा कटी हो या विवाह-रेखा बुध-क्षेत्र पर कुछ दूर सीधे आए फिर घूमकर लम्बी, शुक्र-क्षेत्र पर चली जावे तो यह सूचित होता है कि जातक जिससे प्रेम करता था और विवाह करना चाहता था उससे उसके सम्बन्धियों ने विवाह नहीं होने दिया और इस कारण उसकी अभिलाषा में बाधा पड़ी या यह विवाह-रेखा लम्बी और गहरी हो तो यह फल समझना चाहिए कि सम्बन्धियों के हस्तक्षेप के कारण विवाह-सुख में बाधा पड़ी। जिस स्थान पर यह प्रभाव-रेखा विवाह-रेखा को काटती हो उस स्थान पर विवाह-रेखा पर अशुभ लक्षण (द्वीप, द्विशाखायुक्त होना आदि) हो तो विशेष अनिष्ट परिणाम समझना चाहिये।

विवाह-रेखा का अन्य लक्षणों से सामञ्जस्य

वैसे तो सभी लक्षणों का परस्पर सामञ्जस्य करना आवश्यक है किन्तु विवाह-रेखा का जब तक अन्य लक्षणों से पूरा मिलान नहीं कर लिया जावेगा तब तक वैवाहिक जीवन की यथार्थता का पता नहीं लगेगा। मनुष्य का वैवाहिक जीवन बहुत-कुछ वह स्वयं निर्माण करता है। जिसकी शीर्ष-रेखा बिलकुल सीधी और बलवान होगी उसके दिमाग में इश्क के ख़यालों के लिये जगह कहाँ? जिस की हृदय-रेखा हथेली में काफी नीची और सीधी हो तथा शनि-क्षेत्र के नीचे तक ही आकर रुक जावे वह प्रेम के तूफ़ान में कैसे बह सकता है? जिसकी हथेली और उंगलियों का अग्र भाग चौकोर हो वह अपने समय को सांसारिक उन्नति के उपयोग में लगावेगा। पत्नी या प्रेयसी की इच्छानुसार वह अपना समय कैसे व्यतीत करेगा?

जिसके अँगुष्ठ का प्रथम पर्व बड़ा और बलवान हो वह किसी दूसरे के हाथ में अपनी नकेल देकर उसकी इच्छानुसार कैसे चलेगा? जिसकी उंगलियों के बीच में छिद्र ही नहीं है और धन खर्च करना जिसे अच्छा नहीं लगता वह कैसे उपहारों द्वारा अपनी प्रेयसी का मन प्रसन्न करेगा ?

इस कारण, हाथ के सब लक्षणों के साथ विवाह-रेखा का मिलान कर अन्तिम निर्णय पर पहुँचना चाहिए।

तृतीय खण्ड

१७वाँ प्रकरण

अन्य रेखायें तथा हाथ पर विविध चिह्न

पिछले खण्ड में सात प्रधान रेखाओं का विस्तृत परिचय दिया जा चुका है। अब इस खण्ड में अन्य रेखाओं तथा हथेली एवं उंगलियों पर विविध चिह्न, उनके लक्षण तथा फल दिये जाते हैं।

सत्रहवें प्रकरण में निम्नलिखित रेखाओं का वर्णन दिया गया है—

(क) मंगल-रेखा
(ख) शुक्र-क्षेत्र से जाने वाली प्रभाव-रेखाएँ
(ग) शुक्र-मेखला
(घ) शनि-मुद्रिका
(ङ) बृहस्पति-मुद्रिका।

अन्य रेखाओं यथा यात्रा-रेखा, भ्रातृ-रेखा, संतान-रेखा आदि का वर्णन अठारहवें प्रकरण में दिया गया है।

उंगलियों तथा ग्रह-क्षेत्रों पर विविध चिह्नों का फल उन्नीसवें और बीसवें प्रकरण में दिया गया है।

मंगल-रेखा

मंगल के द्वितीय क्षेत्र से प्रारम्भ होकर यह रेखा जीवन-रेखा की भाँति गोलाई लिये प्रायः जीवन-रेखा के समानान्तर चलती है। यह एक प्रकार से जीवन-रेखा की सहायिका रेखा है और जीवन-रेखा को बल प्रदान करती है। जिनके हाथ में जीवन-रेखा सुन्दर और पुष्ट न हो या दोषयुक्त हो उनके हाथ में यदि मंगल-रेखा

लम्बी और पुष्ट हो तो जीवन-रेखा के दोष की निवृत्ति होती है और उनका स्वास्थ्य अच्छा ही रहता है। यदि जीवन-रेखा किसी स्थान पर खण्डित भी हो और उसके पीछे मंगल-रेखा, सुन्दर, अखण्डित व पुष्ट हो तो ऐसा व्यक्ति बीमार होने पर भी मृत्यु से बच जाता है।

चित्र नं० ६३

यदि जीवन-रेखा सुन्दर और पुष्ट हो और साथ ही मंगल-रेखा भी बलयुक्त हो तो ऐसे व्यक्ति में प्राणशक्ति बहुत अधिक मात्रा में होती है। उसमें उत्साह, सहन-शक्ति, परिश्रम करने का गुण और बल-प्रयोग का स्वभाव अधिक मात्रा में होता है। ऐसे लोग निरन्तर कुछ-न-कुछ कार्य करते ही रहते हैं। प्राणशक्ति का आधिक्य होने से निर्बलता या आलस्य या अकर्मण्यता नहीं होती और बिना किसी कार्य के वे निकम्मे नहीं बैठ सकते।

ऐसे व्यक्तियों पर यदि बृहस्पति का प्रभाव अधिक हो तो खाने-पीने के बहुत शौकीन होते हैं। यदि मंगल का प्रभाव अधिक होगा तो खूब खाने-पीने के अतिरिक्त सैनिक-कार्य या खेल-कूद या अन्य ऐसा कार्य विशेष करेंगे जिसमें परिश्रम विशेष पड़े। इनमें सहन-शक्ति और परिश्रमशीलता विशेष होती है।

मंगल-रेखा की लम्बाई

यदि मंगल-रेखा शुरू से आखीर तक जीवन-रेखा के साथ-साथ चले तो समस्त जीवन-भर प्राणशक्ति बहुतायत से होगी। यदि लगातार न हो तो जीवन-रेखा के जिस भाग के पीछे सुन्दर और पुष्ट मंगल-रेखा होगी, जीवन के उस भाग में प्राणशक्ति विशेष मात्रा में होगी।

मंगल-रेखा से निकलने वाली रेखायें

यदि मंगल-रेखा से कोई रेखा निकलकर जीवन-रेखा को काटती हुई ऊपर की ओर जावे तो यह परिश्रम के फलस्वरूप भाग्योदय का लक्षण है। यदि ऐसी ऊर्ध्वगामी रेखा जाकर शीर्ष-रेखा में मिल जावे तो यह प्रकट होता है कि प्राणशक्ति जातक के मस्तिष्क (दिमाग़) को बल पहुँचाती है। यदि यह रेखा जाकर भाग्य-रेखा में मिले तो भाग्य-वृद्धि सूचित होती है।

मंगल-रेखा से निकलकर जो रेखाएँ शीर्ष-रेखा या भाग्य-रेखा में मिले केवल उन्हें शुभ फलदायक समझना चाहिये, यदि इन रेखाओं को काटें तो अशुभ लक्षण है क्योंकि काटने वाली रेखाएँ सदैव अशुभ परिणाम सूचित करती हैं।

मंगल-रेखा से निकली रेखाओं का अन्य लक्षणों के सहयोग से फल

यदि शुक्र-क्षेत्र बहुत उन्नत हो और जीवन-रेखा तथा मंगल-रेखा दोनों पुष्ट और बलवान हों तो ऐसा व्यक्ति बहुत कामुक होगा और भोग-विलास बहुत करेगा।

(१) यदि ऐसे हाथ में मंगल-रेखा से कोई रेखा निकलकर भाग्य-रेखा या सूर्य-रेखा को काटे तो अत्यन्त भोग-विलास की प्रवृत्ति के कारण भाग्य-हानि, यश-हानि आदि अशुभ फल होते हैं। यदि ऐसी स्थिति में सूर्य-रेखा पर बिन्दु-चिह्न, क्रॉस या कोई आड़ी अर्गला-रेखा हो तो उपर्युक्त लक्षण की पुष्टि होती है।

(२) यदि ऐसे हाथ में मंगल-रेखा से निकली हुई रेखा विवाह या प्रेम-रेखा को काटे तो जातक के भोग-विलास (अन्यथा सम्बन्ध) के कारण वैवाहिक सुख में बाधा होगी। यदि विवाह-रेखा भी दो शाखायुक्त हो तो उपर्युक्त लक्षण की पुष्टि होती है।

(३) यदि मंगल-रेखा से निकली हुई रेखा चन्द्र-क्षेत्र पर आवे तो अशुभ लक्षण है। ऐसा व्यक्ति भोगी, विलासी, चंचल प्रकृति का, बहुत घूमने वाला आवारा, गाने-बजाने का शौकीन होता है। यदि

ऐसी चन्द्र-क्षेत्र पर आई हुई रेखा के अन्त पर बिन्दु, अर्गला-रेखा, क्रॉस या तारे का चिह्न हो तो अत्यन्त भोग-विलास के कारण शारीरक शक्ति का ह्रास हो जाने पर मनुष्य सहसा मर जाता है। यदि जीवन-रेखा के अन्त पर भी 'क्रॉस' या 'तारे' का चिह्न हो तो उपर्युक्त अशुभ लक्षण की पुष्टि होती है।

(४) यदि शीर्ष-रेखा बीच में दोषयुक्त हो जावे तो समझना चाहिये कि इन बुराइयों के फलस्वरूप दिमाग़ कमज़ोर, रोगयुक्त या निकम्मा हो गया है। यदि शीर्ष-रेखा पर 'तारे' का चिह्न हो तो उपर्युक्त लक्षण होने से मनुष्य पागल हो जाता है।

मंगल-रेखा और जीवन-रेखा का तुलनात्मक अध्ययन

यदि मंगल-रेखा जीवन-रेखा की अपेक्षा विशेष पुष्ट और बल-युक्त हो तो समझना चाहिये कि जातक को देखने से या जीवन-रेखा को देखने से जो बाहरी शक्ति मालूम होती है उसकी अपेक्षा भीतरी प्राणशक्ति विशेष है और जीवन-रेखा की भाँति मंगल-रेखा का भी गम्भीर अध्ययन करना चाहिये। किन्तु यदि जीवन-रेखा ही विशेष पुष्ट और बलयुक्त हो तो मुख्य (जीवन) रेखा की सहायिका होती है।

शुक्र-क्षेत्र की प्रभाव या चिन्ता-रेखाएँ

वैसे तो हाथ में सभी रेखाएँ अपना प्रभाव रखती हैं—कुछ कम कुछ अधिक; किन्तु शुक्र-क्षेत्र से जो रेखाएँ उठकर करतल की ओर आती हैं या अन्य किन्हीं प्रधान रेखा या रेखाओं से योग करती हैं वे जातक के जीवन को विशेष रूप से प्रभावित करती हैं या चिंता का कारण उपस्थित करती हैं; इस कारण उन्हें प्रभाव-रेखा या चिन्ता-रेखा भी कहते हैं। जीवन-रेखा, शीर्ष-रेखा, हृदय-रेखा ये सर्वप्रधान तीन रेखाएँ हैं। इनके बाद भाग्य-रेखा, सूर्य-रेखा तथा बुध-रेखा हैं—ये तीनों ही नीचे से ऊपर को जाने वाली रेखाएँ हैं। इन छः रेखाओं के अतिरिक्त विवाह-रेखा, भ्रातृ-रेखा संतान-रेखा,

मंगल-रेखा, मणिबन्ध-रेखा आदि अन्य रेखाएँ हैं—परन्तु शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ होने वाली रेखाओं का प्रभाव जातक पर बहुत अधिक होता है; इसका कारण यह है कि अँगुष्ठ सब उंगलियों में प्रधान है और अँगुष्ठ के नीचे वाले स्थान (शुक्र-क्षेत्र) से ये रेखाएँ प्रारम्भ होती हैं। शुक्र-क्षेत्र बहुत बड़ा होने के कारण एक नहीं अनेक रेखाएँ इस स्थान पर होती हैं—कुछ तो भीतर की ओर जीवन-रेखा के प्रायः समानान्तर होती हैं और शुक्र-क्षेत्र के बाहर नहीं जातीं, किन्तु कुछ अन्य रेखाएँ शुक-क्षेत्र से आड़ी निकलकर जीवन-रेखा, शीर्ष-रेखा, हृदय-रेखा, भाग्य-रेखा, सूर्य-रेखा, विवाह-रेखा—इनमें से एक या कई को काटती हुईं—हाथ में तिरछी स्थिति में रहती हैं—इन सब रेखाओं का नाम 'शुक्र-रेखा' रखना विशेष उपयुक्त है—किन्तु सैकड़ों वर्ष से इन्हें 'प्रभाव'-रेखा या चिन्ता-रेखा यह नाम दिया गया है। इस कारण प्रस्तुत पुस्तक में भी इनका इन्हीं नामों से वर्णन किया जावेगा। यदि किसी हाथ में इन रेखाओं का जाल-सा हो अर्थात् २०-२५-३० रेखा हों तो उनमें से-२-४ जो मोटी और स्पष्ट हों—उनको चुनकर—प्रत्येक का अध्ययन करना चाहिये। यदि कोई स्पष्ट न हों, सब बड़ी सूक्ष्म हों तो यह स्नायविक दुर्बलता का लक्षण है—यह समझकर इन रेखाओं का विचार छोड़ देना चाहिये।

चित्र नं० ६४

'मंगल-रेखा' भी एक प्रकार से—बहुत सी शुक्र-रेखा या प्रभाव-रेखाओं में से एक है किन्तु जीवन-रेखा के बिलकुल समीप और प्रायः समानान्तर होने से यह जीवन-रेखा की 'सहोदरा' (बहन) मानी गई है। दूसरी बात यह है कि प्रायः मंगल-रेखा, मंगल के द्वितीय क्षेत्र से प्रारम्भ होती है इस कारण इसका नाम मंगल-रेखा रखा गया है। किन्तु मंगल-रेखा के अतिरिक्त जो उसके

समानान्तर—कुछ गोलाई लिये हुए—शुक्र-क्षेत्र पर अन्य रेखाएँ होती हैं उन सब को प्रभाव-रेखा ही कहते हैं। (देखिये चित्र नं० ९४) इस प्रकार प्रभाव-रेखाओं को निम्नलिखित वर्गों में विभाजित कर सकते हैं—

(१) शुक्र-क्षेत्र पर—जीवन-रेखा के भीतर की ओर—जीवन-रेखा या मंगल-रेखा के समानान्तर रेखाएँ।

(२) शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ होकर जीवन-रेखा को काटकर करतल-मध्य की ओर जाने वाली तिरछी रेखाएँ।

इन दोनों वर्गों में जो शुक्र-क्षेत्र पर ही मंगल-रेखा की समानान्तर रेखाएँ होती हैं वे जातक पर किसी स्त्री या स्त्रियों का प्रभाव प्रकट करती हैं। यदि किसी स्त्री के हाथ में ये रेखा हों तो किसी पुरुष या पुरुषों का प्रभाव समझना चाहिये। जितनी लम्बी और जितनी गहरी ये रेखा हों उतना ही अधिक प्रभाव समझना चाहिये।

यदि शुक्र-क्षेत्र के काफी नीचे (मणिबन्ध की ओर) से कोई प्रभाव-रेखा प्रारम्भ हो जीवन-रेखा के साथ-साथ (समानान्तर) चले और मंगल के द्वितीय क्षेत्र को चली जावे तो यह प्रकट होता है कि जातक पर किसी स्त्री या पुरुष का प्रभाव रहा था परन्तु वह अन्य व्यक्ति धीरे-धीरे जातक से किनाराकशी (तटस्थता) कर लेगा।

तिरछी प्रभाव रेखाएँ

ऊपर जो तिरछी प्रभाव या चिन्ता-रेखाएँ बताई गई हैं वे कुछ तो बहुत छोटी होती हैं और कुछ बहुत लम्बी। इसके अतिरिक्त कुछ रेखाओं के आदि या अन्त में कोई चिह्न (यथा त्रिकोण, क्रॉस, तारा) नहीं होता, परन्तु किसी के प्रारम्भ में कोई चिह्न होता है किसी के अन्त में। इन विविध चिह्नों के आदि या अंत में रहने के कारण फलादेश अलग-अलग हो जाता है। इस कारण इनका अच्छी प्रकार अध्ययन करने के लिए इन्हें पाँच वर्गों में विभाजित किया जाता है—

(क) छोटी रेखाएँ जो किसी रेखा को न काटें और भाग्य-रेखा तक न पहुँचें।

(ख) लम्बी रेखाएँ जो कई रेखाओं को काटती हुई किसी ग्रह-क्षेत्र पर जाकर समाप्त हों या अन्य रेखाओं को काटें या उन्हीं में विलीन हो जावें।

(ग) जिसके आरम्भ में चिह्न हो।

(घ) जिसके अन्त में चिह्न हो।

(ङ) जिसके आदि और अन्त दोनों स्थानों पर कोई चिह्न हो।

(क) छोटी रेखाएँ

अब उपर्युक्त प्रत्येक प्रकार की रेखाओं का वर्णन किया जाता है—

(१) यदि जीवन-रेखा से प्रारम्भ होकर कोई रेखा मंगल के द्वितीय क्षेत्र पर आवे तो यह रेखा जीवन-रेखा से घिरे हुए शुक्र-क्षेत्र पर होगी। यदि ऐसी रेखा किसी स्त्री के हाथ में हो तो जीवन के प्रारम्भिक भाग में किसी गुप्त प्रेम के कारण घोर दुःख होगा।

(२) यदि उपर्युक्त दृष्टांत में एक की बजाय दो-तीन छोटी-छोटी रेखाएँ जीवन-रेखा से प्रारम्भ होकर—आगे जाकर परस्पर मिलकर एक रेखा हो जावें और मंगल के द्वितीय क्षेत्र पर ऊपर की भाँति जावें और ऐसी रेखा यदि स्त्री के हाथ में हो तो उसका गुप्त प्रेमी बहुत कामुक होगा और उसके द्वारा निरन्तर पीड़ा पहुँचाई जावेगी।

(३) शुक्र-क्षेत्र या मंगल के द्वितीय क्षेत्र से जो रेखा प्रारम्भ होकर केवल जीवन-रेखा को काटे—छोटी होने के कारण शीर्ष-रेखा या भाग्य-रेखा तक न पहुँचे तो समझना चाहिये कि जातक के घर वाले—माता, पिता, भाई तथा अन्य रिश्तेदार उसके जीवन में बहुत दस्तन्दाज़ी (हस्तक्षेप) करते रहेंगे जिसके कारण उसे परेशानी अनुभव होगी।

यदि ऐसी बहुत सी पतली-पतली रेखाएँ हों तो यह सूचित

होता है कि जातक में स्नायविक दुर्बलता है और वह छोटी-छोटी बातों की अकारण चिन्ता करता है ।

(४) यदि अँगुष्ठ के द्वितीय पोरवे से प्रारम्भ होकर कोई गहरी रेखा जीवन-रेखा को काटे और जीवन-रेखा को काट कर कुछ दूर ही पर समाप्त हो जावे तो किसी प्रियजन की मृत्यु या प्रियजन के विश्वासघात (उसके अन्य को प्रेम करने) के कारण घोर संताप होता है ।

(५) यदि रेखा उपर्युक्त (४) प्रकार की हो किन्तु अँगुष्ठ के द्वितीय पर्व की बजाय प्रथम पर्व से प्रारम्भ हो तो किसी शस्त्र से जातक की मृत्यु होती है ।

(६) यदि कोई अर्धवृत्त सदृश छोटी-सी रेखा जीवन-रेखा को काटे तो अचानक भयंकर रोग या मृत्यु सूचित होती है ।

चित्र नं० ६५

(ख) बड़ी रेखाएँ
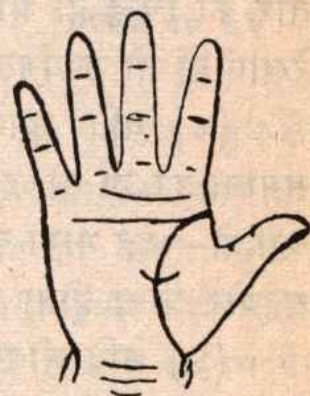
अब शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ होने वाली उन बड़ी तिरछी रेखाओं का वर्णन किया जाता है जो जीवन-रेखा को काट कर— आगे बढ़कर किसी ग्रह-क्षेत्र पर जाती हैं या अन्य रेखा या रेखाओं को भी काटती हैं—

(१) यदि शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ होकर कोई रेखा जीवन-रेखा को काटती हुई बृहस्पति के क्षेत्र पर पहुँचे तो जातक में बहुत अभिमान होता है और उसमें महत्वाकांक्षा भी बहुत अधिक होती है । अन्य लक्षण अच्छे हों तो उन्नति भी विशेष होती है ।

यदि इस रेखा के अन्त पर (बृहस्पति-क्षेत्र पर) तारे का चिह्न हो तो सफलता प्रकट होती है । किन्तु यदि वहाँ इसको कोई छोटी-सी आड़ी-रेखा काटे तो असफलता का लक्षण है; यदि 'क्रॉस'-चिह्न हो तो और भी खराबी होती है ।

(२) यदि शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ हो चिंता-रेखा जीवन-रेखा आदि को काटती हुई शनि-क्षेत्र पर पहुँचे तो किसी जानवर या मोटर से टकराने की या इसी प्रकार की दुर्घटना होती है। यदि शनि-क्षेत्र पर पहुँचकर इस रेखा की दो शाखा हो जावें (एक प्रधान रेखा—एक शाखा) तो उपर्युक्त दुर्घटना से मृत्यु हो जाती है या दाम्पत्य जीवन कलहमय होता है।

(३) यदि उपर्युक्त रेखा (२) मध्यमा उंगली के तृतीय पर्व पर पहुँचे तो ऐसी रेखा वाली स्त्री को गर्भाशय के रोग रहते हैं या प्रसव में बहुत कष्ट होता है।

यदि शीर्ष-रेखा तथा स्वास्थ्य-रेखा के योग होने के स्थान पर तारे का चिह्न हो और चन्द्र-क्षेत्र पर जाल की तरह अनेक पतली रेखाएँ हों तो उपर्युक्त फल की पुष्टि होती है।

(४) यदि उपर्युक्त रेखा (२) करीब-करीब भाग्य-रेखा के समानान्तर हो तो इसे भाग्य-रेखा की सहायिका रेखा समझना चाहिये—यह भाग्य-वृद्धि सूचित करती है। मित्रों या सम्बन्धियों का सहयोग प्राप्त होता है।

(५) यदि जीवन-रेखा से प्रारम्भ होकर यह रेखा बृहस्पति के क्षेत्र पर जावे और वहाँ पहुँचकर एकदम घूम कर शनि-क्षेत्र पर पहुँच जावे तो धार्मिकता की ओर प्रवृत्ति होती है—ऐसी धार्मिकता में दुनियादारी छिपी रहती है।

(६) यदि शुक्र-क्षेत्र से चिंता-रेखा प्रारम्भ हो कर जीवन-रेखा को काटती हुई, जीवन-रेखा में निकली किसी ऊर्ध्वगामी छोटी रेखा को काटती हुई, मुड़कर शनि-क्षेत्र पर पहुँचे तो पति-पत्नी में बहुत कलह रहता है या विवाह-विच्छेद हो जाता है। (देखिये चित्र नं० ६६)

(७) यदि उपर्युक्त (६) रेखा बुध-क्षेत्र पर पहुँचे या विवाह-रेखा को काटे तो भी यही फल होगा।

(८) यदि शुक्र-क्षेत्र से रेखा प्रारम्भ हो—सीधी (लहरदार नहीं) और पूर्ण स्पष्ट एकदम सूर्य-क्षेत्र पर आवे तो मित्रों या कुटुम्बियों की सहायता से जातक को यश तथा ख्याति प्राप्त होती है।

चित्र नं० ६६

(६) यदि उपर्युक्त रेखा (८) अस्पष्ट या टूटी हो या सीधी न हो—बल्कि लहरदार हो—तो जातक को यश तथा ख्याति मिलने में बाधा होती है—किस दोष के कारण ? यह अन्य रेखाओं या लक्षणों से विचार करना चाहिये। ऐसा जातक बन्धुओं और मित्रों से सहायता प्राप्त करने पर भी सफलता या यश प्राप्त नहीं कर सकेगा।

(१०) यदि उपर्युक्त (८) रेखा सूर्य-क्षेत्र की बजाय बुध-क्षेत्र पर आवे तो व्यापार या विज्ञान-क्षेत्र में अत्यन्त उन्नति और लाभ प्रकट होता है। (चिटली उंगली का द्वितीय पर्व बड़ा होने से व्यापार में, या प्रथम पर्व बड़ा होने से विद्या-सम्बन्धी विशिष्टता) इसमें मित्र तथा सम्बन्धी सहायक होंगे। इस रेखा के एकदम सीधे (लहरदार नहीं), स्पष्ट और अन्य दोषरहित होने से शुभ फल होता है।

(११) यदि उपर्युक्त (१०) रेखा टूटी, अस्पष्ट या लहरदार हो तो असफलता या विघ्न-बाधा का लक्षण है।

(१२) यदि शुक्र-क्षेत्र से चिंता-रेखा प्रारम्भ होकर जीवन, भाग्य, शीर्ष तथा सूर्य-रेखाओं को काटती हुई मंगल के प्रथम क्षेत्र पर आवे तो सिर में चोट का आघात होता है (सम्भवतः किसी मित्र या सम्बन्धी द्वारा), किस वर्ष में ?—वह जीवन-रेखा को जहाँ काटती हो उस स्थान से अनुमान करना चाहिये। किन्तु यदि उपर्युक्त मंगल-क्षेत्र अत्यधिक उन्नत हो या उस पर बहुत-सी रेखाएँ

हों तो जातक क्रोध में स्वयं दूसरे पर प्रहार करता है।

(१३) यदि शुक्र-क्षेत्र से चिंता-रेखा प्रारम्भ हो जीवन तथा भाग्य-रेखाओं को काटती हुई चन्द्र-क्षेत्र पर आवे तो ऐसे पुरुष के कारबार (या नौकरी में) स्त्री या स्त्रियों के अनुचित हस्तक्षेप के कारण दुर्भाग्य उपस्थित होता है। यदि स्त्री के हाथ में हो तो पुरुषों द्वारा हस्तक्षेप के कारण दुर्भाग्य होता है।

(१४) यदि शुक्र-रेखा प्रारम्भ होकर भाग्य-रेखा को काटकर वहीं समाप्त हो जावे तो सम्बन्धी या मित्रों द्वारा भाग्य में बाधा। कई बार यह ऐसे विवाह का भी लक्षण होता है जिसके कारण जातक के भाग्य की गति रुक जाती है या बिगड़ जाती है।

(१५) शुक्र-क्षेत्र से रेखा प्रारम्भ हो, जीवन तथा भाग्य-रेखाओं को काटकर कुछ ज़रा सी आगे बढ़ कर समाप्त हो जावे तो जातक के मित्र या सम्बन्धी अनुचित हस्तक्षेप द्वारा जातक के रोज़गार में बाधा डालेंगे (उदाहरण के लिए जातक नौकरी कर अपना भाग्योदय करता हो तो नौकरी छुड़वा कर उसे व्यापार में लगा देना)।

(१६) शुक्र-क्षेत्र से रेखा प्रारम्भ हो, जीवन-रेखा को काटती हुई शीर्ष-रेखा को काट कर वहीं समाप्त हो जावे तो जातक के स्वतन्त्र विचार में सम्बन्धियों द्वारा अनुचित हस्तक्षेप।

(१७) यदि उपर्युक्त (१६) रेखा, शीर्ष-रेखा को काट कर कुछ आगे बढ़ जावे तो मस्तिष्क-विकार या सम्बन्धियों के हस्तक्षेप के कारण परेशानी।

(१८) यदि उपर्युक्त (१६) रेखा, आगे बढ़कर हृदय-रेखा को काटे और वहाँ समाप्त हो तो जातक के मित्रों या सम्बन्धियों के विश्वासघात या दुर्व्यवहार के कारण हृद्रोग। बहुत से परिवारों के एक या अनेक स्त्री या पुरुष ऐसे कलहकारी होते हैं कि झगड़ा करके जातक को इतना परेशान कर देते हैं कि हृदय-रोग हो

जाता है।

(१९) यदि उपर्युक्त (१८) रेखा हृदय-रेखा को कुछ काटकर आगे बढ़े तो समझना चाहिये कि जातक जहाँ स्वयं अपनी मर्ज़ी से विवाह करना चाहता है वहाँ उसके प्रिय व्यक्ति से विवाह करने में जातक के सम्बन्धी बाधा डालेंगे।

(२०) यदि उपर्युक्त (१९) रेखा, जीवन-रेखा से निकली हुई ऊर्ध्वगामी किसी छोटी रेखा को काटे तथा शीर्ष एवं हृदय-रेखाओं को भी काटे तो वैवाहिक जीवन परम अशांतिमय, कलहपूर्ण होगा तथा सम्बन्ध-विच्छेद की नौबत आवेगी। यदि शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ हुई प्रभाव-रेखा विवाह-रेखा को भी काटे तो निश्चय विवाह-विच्छेद होगा।

(२१) यदि शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ हुई प्रभाव या चिंता-रेखा हृदय-रेखा तक पहुँचते-पहुँचते दो शाखायुक्त हो जावे (एक प्रधान-रेखा—एक शाखा) और दोनों शाखाएँ हृदय-रेखा को काटें तो विवाह-विच्छेद का लक्षण है।

(२२) यदि उपर्युक्त (२१) रेखा, जहाँ भाग्य-रेखा को काटे वहाँ भाग्य-रेखा पर द्वीप-चिह्न भी हो तो किसी अनुचित गुप्त प्रेम-सम्बन्ध के कारण बदनामी तथा विवाह-विच्छेद।

(२३) यदि शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ हुई प्रभाव-रेखा, शीर्ष-रेखा तथा हृदय-रेखा को काटकर कुछ दूर आगे समाप्त हो—और इस प्रभाव-रेखा पर द्वीपचिह्न हो—तो जातक का किसी से गुप्त प्रेम होता है जिसका बहुत भयंकर परिणाम होता है।

(२४) यदि शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ होकर प्रभाव-रेखा आकर सूर्य-रेखा में विलीन हो जावे तो सम्बन्धियों से सहायता के कारण सफलता, यश तथा ख्याति प्राप्त होती है।

(२५) जहाँ से जीवन-रेखा प्रारम्भ होती है—उसके भीतरी

चित्र नं० ६७

भाग (द्वितीय मंगल-क्षेत्र) से प्रारम्भ होकर कोई रेखा सूर्य-रेखा को काटे तो जातक के माता-पिता की बदनामी या उनको अत्यधिक घाटा होने के कारण जातक के बचपन में धन-हानि समझनी चाहिये।

(२६) यदि शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ होने वाली रेखा सूर्य-रेखा को काटे तो यह समझें कि सम्बन्धियों के हस्तक्षेप के कारण जातक जैसा सफल अपना जीवन बनाना चाहता था वैसा नहीं बना सकेगा। यदि हाथ में अन्य अशुभ लक्षण हों तो जिस अवस्था पर सूर्य-रेखा कटी हो उस अवस्था पर बदनामी और मान-हानि।

(२७) यदि उपर्युक्त (२६) रेखा, जीवन-रेखा से निकली हुई ऊर्ध्वगामी किसी छोटी रेखा को काटती हुई आगे बढ़कर सूर्य-रेखा पर जाकर समाप्त हो जावे तो जातक किसी सम्बन्धी से मुकदमा जीतता है। किन्तु यदि सूर्य-रेखा को पार कर प्रभाव-रेखा आगे बढ़ जावे तो मुकदमा हार जाता है।

(२८) यदि प्रभाव-रेखा विवाह-रेखा को काटे तो तलाक़ या विवाह-विच्छेद के मुकदमे में जातक को मुद्दायला बनना पड़ता है।

(२९) यदि उपर्युक्त (२८) रेखा द्वीपयुक्त हो तो विवाह-विच्छेद जातक के किसी अन्य व्यक्ति के साथ गुप्त प्रेम के कारण होता है; डिगरी जातक के खिलाफ़ होती है।

(३०) यदि उपर्युक्त (२८) रेखा, जीवन-रेखा से निकली हुई ऊर्ध्वगामी किसी छोटी रेखा को काटती हुई आगे बढ़कर दो शाखा-युक्त विवाह-रेखा में जाकर विलीन हो जावे तो विवाह-विच्छेद अवश्य होता है, जातक के हक़ में डिग्री होती है।

(ग) प्रभाव-रेखाएँ जिनके प्रारम्भ में कोई चिह्न हो

(१) बिन्दु (क) यदि शुक्र-क्षेत्र पर कोई बिन्दु हो और उससे प्रारम्भ होकर कोई रेखा जीवन-रेखा को काटे तथा जीवन-रेखा से निकली हुई ऊपर को जाती हुई किसी रेखा को काटे तथा (ख) बृहस्पति के क्षेत्र पर 'क्रॉस' चिह्न स्पष्ट हो तो जातक का किसी स्त्री से प्रेम हो जाता है; उससे विवाह भी होता है किन्तु बाद में विवाह-विच्छेद होता है।

चित्र नं० ६८

(२) **तारे का चिह्न**—यदि शुक्र-क्षेत्र पर कोई तारे का चिह्न हो, और वहाँ से प्रारम्भ होकर कोई प्रभाव-रेखा जीवन-रेखा को काटे और जरा सी आगे बढ़कर समाप्त हो जावे तो जीवन-रेखा को जिस अवस्था पर काटे उस अवस्था पर किसी सम्बन्धी की मृत्यु।

(३) यदि उपर्युक्त (२) प्रभाव-रेखा शनि-क्षेत्र तक आवे और वहाँ दो शाखायुक्त (एक प्रधान-रेखा—एक शाखा) हो जावे तो वैवाहिक जीवन संतापमय होता है—जातक की पत्नी पागल हो जाती है या मर जाती है।

(४) यदि उपर्युक्त (२) प्रकार की प्रभाव-रेखा सूर्य-क्षेत्र पर आवे तो किसी सम्बन्धी या मित्र की मृत्यु के उपरान्त झगड़ा या मुकदमेबाज़ी होती है जिसके परिणमस्वरूप बहुत बर्बादी होती है।

(५) यदि उपर्युक्त (२) प्रकार की प्रभाव-रेखा आकर भाग्य-रेखा में योग करे और उसमें मिलकर विलीन हो जावे तो ऊपर (४) में जो फल बताया गया है वह होता है किन्तु झगड़े या मुकदमेबाज़ी से बर्बादी न होकर भाग्य-वृद्धि होती है।

(६) यदि उपर्युक्त (२) प्रभाव-रेखा भाग्य-रेखा को काटे तो किसी सम्बन्धी या मित्र की मृत्यु से भाग्य में बहुत हानि होती है।

(७) यदि उपर्युक्त (२) प्रकार की प्रभाव-रेखा सूर्य-रेखा में योग करे और उसमें मिलकर विलीन हो जावे तो किसी सगे-सम्बन्धी या मित्र की मृत्यु से भाग्य-वृद्धि होती है।

(८) यदि उपर्युक्त रेखा (२) सूर्य-रेखा को काटे तो किसी सम्बन्धी या मित्र की मृत्यु से भाग्य-हानि या धन-हानि होती है।

(९) यदि शुक्र-क्षेत्र पर तारे का चिह्न हो, वहाँ से प्रारम्भ होकर कोई प्रभाव-रेखा जीवन-रेखा को काटे तथा जीवन-रेखा से प्रारम्भ हुई, ऊपर की ओर जाने वाली किसी छोटी रेखा को भी काटे तो किसी सगे-सम्बन्धी या मित्र की मृत्यु हो जाने पर विरासत के लिए मुक़दमेबाज़ी होती है।

यदि उपर्युक्त रेखा सूर्य-रेखा को भी काटे तो मुक़दमे में जातक की हार होती है। यदि सूर्य-रेखा में योग कर विलीन हो जावे तो जातक मुकदमा जीतता है। विरासत में धन या जायदाद मिलती है।

(१०) द्वीप-चिह्न—यदि शुक्र-क्षेत्र पर द्वीप-चिह्न हो—वहाँ से प्रारम्भ होकर कोई प्रभाव-रेखा बुध-क्षेत्र पर आवे तो जातक का किसी से अनुचित प्रेम-सम्बन्ध हो जाता है—इस कारण कम-से-कम कुछ समय के लिये भाग्य में रुकावट होती है।

(११) यदि शुक्र-क्षेत्र पर द्वीप-चिह्न से प्रारम्भ हो प्रभाव-रेखा जीवन-रेखा को काटे—जीवन-रेखा से निकली हुई ऊपर की ओर जाती हुई किसी छोटी रेखा को काटती हुई आगे बढ़कर सूर्य-रेखा से योग कर उसमें विलीन हो जावे तो जातक का किसी से गुप्त प्रेम-सम्बन्ध होता है—इस कारण किसी व्यक्ति से मुक़दमेबाज़ी होती है। परिणाम में विजय जातक की होती है।

(घ) शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ प्रभाव-रेखाएँ—जिनके अन्त में कोई चिह्न हो

अब उन प्रभाव-रेखाओं का वर्णन किया जाता है जिनके अन्त में कोई चिह्न हो—

(१) यदि शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ होकर कोई रेखा बृहस्पति के क्षेत्र पर आवे और इस प्रभाव-रेखा के अन्त पर तारे का चिह्न हो तो महत्वाकांक्षा की सफलता का लक्षण है।

(२) यदि उपर्युक्त रेखा के अन्त पर तारे का चिह्न न हो किन्तु द्वीप-चिह्न हो तो फेफड़े की बीमारी होती है।

(३) यदि शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ हो प्रभाव-रेखा जीवन-रेखा तथा भाग्य-रेखा को काटे और स्वास्थ्य-रेखा तक न पहुँचे तथा इस प्रभाव-रेखा के अन्त में तारे का चिह्न हो तो बहुत बड़ा धन का घाटा होता है।

(४) यदि उपर्युक्त (३) रेखा का जहाँ अन्त हो वहाँ तारे की बजाय 'वर्ग'-चिह्न हो और वर्ग के बीच में प्रभाव-रेखा समाप्त हो जावे तो जातक का किसी से गुप्त प्रेम हो जाता है इस कारण भविष्य में होने वाली किसी विपत्ति से रक्षा होती है (उदाहरण के लिये यदि यह गुप्त प्रेम न होता तो किसी अनुपयुक्त स्थान में विवाह हो जाता और उस कारण बदनामी या संताप होता)।

(५) यदि शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ होकर कोई रेखा जीवन-रेखा को काटे तथा वहाँ पर इस रेखा की लम्बी द्वीपाकृति हो जावे जिससे शीर्ष-रेखा कटे और शनि-क्षेत्र के नीचे—जहाँ हृदय-रेखा तथा भाग्य-रेखा का योग होता है—वहाँ तक द्वीप-चिह्न जावे और यदि ऐसी रेखा पुरुष के हाथ में हो, तो किसी विवाहिता स्त्री से प्रेम। यदि स्त्री के हाथ में हो तो किसी शादीशुदा आदमी से प्रेम।

(६) यदि शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ हुई प्रभाव-रेखा जीवन-रेखा को काटती हुई शीर्ष-रेखा पर आकर समाप्त हो जावे और जहाँ समाप्त हो वहाँ तारे का चिह्न हो तो सम्बन्धियों तथा मित्रों के कारण चिन्ता—दिमाग़ी परेशानी—मस्तिष्क-विकार का लक्षण है।

(७) यदि दो प्रभाव-रेखाएँ शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ हो—एक ही स्थान पर—भाग्य-रेखा पर योग करें और वहाँ तारे का चिह्न हो

तो जातक का दो व्यक्तियों से एक साथ प्रेम-सम्बन्ध होता है। इस कारण दोनों-प्रेम सम्बन्धों में हानि और परेशानी होती है या दो बार प्रेम-सम्बन्ध और परिणाम में परेशानी उठानी पड़ती है।

(८) यदि प्रभाव-रेखा शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ होकर शीर्ष-रेखा और सूर्य-रेखा का जहाँ योग होता है वहाँ आकर समाप्त हो जावे और उस स्थान पर 'दाग' का चिह्न हो तो नेत्र-विकार, आँखों की रोशनी में कमी व अन्धेपन का भय।

(९) यदि शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ कर प्रभाव-रेखा हृदय-रेखा पर आकर समाप्त हो और समाप्ति पर तारे का चिह्न हो तो सम्बन्धियों या मित्रों द्वारा इतना तंग और परेशान किया जाता है कि जातक को हृदय-रोग हो जाता है।

(१०) यदि प्रभाव-रेखा जीवन-रेखा को काटती हुई आकर सूर्य-रेखा को काटे और इसके अन्त में द्वीप-चिह्न हो तो जातक का किसी से अनुचित प्रेम होता है और इस कारण काफ़ी बदनामी और अप्रतिष्ठा होती है।

चित्र नं० ९९

(११) यदि प्रभाव-रेखा जीवन-रेखा तथा उससे निकली किसी छोटी ऊर्ध्वगामी रेखा को काटती हुई सूर्य-रेखा पर आकर समाप्त हो जावे और वहाँ समाप्ति पर तारे का चिह्न हो तो या तो किसी बड़े मुकदमे में हार होती है या बहुत अधिक बदनामी और अप्रतिष्ठा।

(ङ) प्रभाव-रेखाएँ—जिनके आदि तथा अन्त में दोनों स्थानों पर चिह्न हो।

अब शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ हुई उन रेखाओं का वर्णन किया जाता है जिनके आदि में कोई चिह्न हो और समाप्ति पर भी।

(१) यदि शुक्र-क्षेत्र पर तारे का चिह्न हो—वहाँ से प्रारम्भ

होकर प्रभाव-रेखा जीवन-रेखा को काटती हुई—स्वास्थ्य-रेखा तक पहुँचने के पूर्व ही समाप्त हो जावे और इस समाप्ति-स्थान पर भी तारे का चिह्न हो तो किसी सगे-सम्बन्धी या परम मित्र की मृत्यु के कारण घोर सर्वनाश (धन-हानि) होता है।

(२) यदि शुक्र-क्षेत्र पर, जहाँ से प्रभाव-रेखा प्रारम्भ होती है। तारे का चिह्न हो और प्रभाव-रेखा जीवन-रेखा को काटती हुई भाग्य-रेखा पर समाप्त हो जावे और इस समाप्ति-स्थान पर बिन्दु-चिह्न हो तो किसी सगे-सम्बन्धी की मृत्यु से जातक के भाग्य को कुछ समय के लिये गहरा धक्का लगता है।

(३) यदि शुक्र-क्षेत्र पर तारे का चिह्न हो—वहाँ से प्रभाव-रेखा प्रारम्भ होकर जीवन-रेखा को काटती हुई शीर्ष-रेखा तक आवे और प्रभाव-रेखा की समाप्ति-स्थान पर—बिन्दु-चिह्न हो तो सगे-सम्बन्धी की मृत्यु से घोर संताप उठाना पड़ता है।

(४) यदि उपर्युक्त (३) प्रकार की रेखा हो किन्तु शीर्ष-रेखा पर जहाँ प्रभाव-रेखा समाप्त होती है बिन्दु-चिह्न न हो बल्कि तारे का ही चिह्न हो तो किसी सगे-सम्बन्धी की मस्तिष्क-विकार, रक्तचाप या पागलपन के कारण मृत्यु होती है।

(५) यदि उपर्युक्त (४) प्रकार की प्रभाव-रेखा हो किन्तु जहाँ प्रभाव-रेखा शीर्ष-रेखा पर समाप्त होती है वहाँ शीर्ष-रेखा स्वयं द्वीपयुक्त हो तो जातक के किसी सगे-सम्बन्धी की मस्तिष्क-विकार या राजयक्ष्मा आदि से मृत्यु होती है।

(६) यदि प्रभाव-रेखा शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ हो जीवन-रेखा को काटती हुई भाग्य-रेखा पर आकर समाप्त हो जावे और प्रभाव-रेखा के आदि तथा अन्त दोनों स्थानों पर तारे का चिह्न हो तो किसी सगे-सम्बन्धी या मित्र की मृत्यु के कारण भाग्य को गहरा धक्का लगता है। किस अवस्था में ? यह जीवन-रेखा जहाँ कटती हो उससे अनुमान लगाना चाहिये।

(७) यदि उपर्युक्त (६) प्रकार की रेखा हो किन्तु जो बात भाग्य-रेखा पर बताई गई है, वह भाग्य-रेखा पर न होकर सब लक्षण सूर्य-रेखा पर समाप्त हों तो सगे-सम्बन्धी की मृत्यु से गहरा आर्थिक धक्का लगता है।

(८) यदि उपर्युक्त (७) प्रकार की रेखा हो, पर सूर्य-रेखा पर जहाँ प्रभाव-रेखा समाप्त हो वहाँ सूर्य-रेखा स्वयं द्वीपयुक्त हो तो ऊपर (७) जो में फल बताया गया है—वही इसका भी फल है।

(९) शुक्र-क्षेत्र पर द्वीप का चिह्न हो—उस द्वीप से प्रारम्भ होकर कोई प्रभाव-रेखा जीवन-रेखा को काटती हुई भाग्य-रेखा पर समाप्त हो जावे—और इसकी समाप्ति पर—भाग्यरेखा पर तारे का चिह्न हो तो जातक का किसी से अनुचित प्रेम होता है इस कारण कुछ काल तक भाग्य में हानि तथा बाधा होती है।

(१०) यदि शुक्र-क्षेत्र पर द्वीप-चिह्न हो और वहाँ से प्रारम्भ होकर प्रभाव-रेखा, जीवन-रेखा को काटती हुई शीर्ष-रेखा पर समाप्त हो और इस समाप्ति-स्थान पर बिन्दु-चिह्न हो तो जातक के अनुचित गुप्त-प्रेम के कारण दुश्चिन्ता या मस्तिष्क-विकार का लक्षण है।

(११) यदि प्रभाव-रेखा जीवन-रेखा से ही प्रारम्भ हो—प्रारम्भिक स्थान पर जीवन-रेखा पर बिन्दु हो और जीवन-रेखा से तिरछी निकल कर शीर्ष-रेखा को काटती हुई प्रभाव-रेखा मंगल के प्रथम क्षेत्र पर समाप्त हो तथा समाप्ति-स्थान पर तारे का चिह्न हो तो खूनी बवासीर का रोग होता है।

(१२) यदि शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ हुई प्रभाव-रेखा चन्द्र-क्षेत्र पर आवे और इस रेखा के आदि तथा अन्त दोनों स्थानों पर तारे का चिह्न हो तो किसी सगे-सम्बन्धी की मृत्यु से जातक के मस्तिष्क को इतना सदमा पहुँचता है कि वह पागल हो जाता है।*

*नोट—इस ग्रन्थ में कई स्थानों पर जहाँ अन्य रेखाओं के संयोग से प्रभाव-रेखाएँ विघ्न या चिन्ता उत्पन्न करती हैं उनका चिन्ता-रेखा नाम से भी उल्लेख किया गया

शुक्र-मेखला

प्रथम या द्वितीय उंगलियों के नीचे से प्रारम्भ होकर तृतीय या चतुर्थ उंगली के नीचे समाप्त होने वाली अर्धवृत्त के आकार की रेखा किसी-किसी के हाथ में दिखाई देती है। इस रेखा का शुक्र-क्षेत्र से कोई सम्बन्ध नहीं है फिर भी इसको 'शुक्र-मेखला' कहते हैं। इसे यह नाम पाश्चात्य हस्त-रेखा-परीक्षकों ने दिया है। अंग्रेज़ी में इसे 'गार्डिल आव् वीनस' कहते हैं जिसका अनुवाद बहुत से हिन्दी हस्त-परीक्षकों ने 'शुक्र-मुद्रिका' या 'शुक्र-कंकण' किया है। किन्तु वास्तव में अंग्रेज़ी के 'गार्डिल' शब्द का भाव मेखला से अच्छी तरह व्यक्त होता है—इस कारण इस पुस्तक में इस रेखा का परिचय शुक्र-मेखला नाम से दिया गया है।

चित्र नं० १००

जिस प्रकार सब हाथों में जीवन-रेखा, शीर्ष-रेखा तथा हृदय-रेखा होती हैं उसी प्रकार 'शुक्र-मेखला' प्रत्येक हाथ में नहीं होती। यह तो दो-चार सौ हाथों में से किसी एक हाथ में होती है। तथापि इस रेखा का कुछ महत्व है इस कारण इसका विस्तारपूर्वक वर्णन किया जाता है।

प्रथम बात तो यह है कि इसका कोई सम्बन्ध शुक्र-क्षेत्र से नहीं, फिर इसका नाम 'शुक्र-मेखला' क्यों रखा गया? पिछले प्रकरणों में बताया गया है कि शुक्र-क्षेत्र का कामवासना से विशेष सम्बन्ध है। जिनके हाथ में शुक्र-क्षेत्र विशेष उन्नत होता है उनमें

है। शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ होने वाली रेखाएँ शुभ तथा अशुभ दोनों प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करती हैं। इस कारण इनका अशुभ प्रभाव उत्पन्न करने पर चिन्ता-रेखा नाम विशेष उपयुक्त है।

कामवासना भी विशेष होती है। यही कामवासना जब बुद्धि से विशिष्ट संयोग करती है तो सौन्दर्यप्रियता, कलापटुता, गायन-चातुर्य आदि अनेक रूपों में प्रकट होती है। यह सब मनोवृत्ति शुक्र-क्षेत्र से सम्बन्धित है। ज्योतिष में भी शुक्र को "स्त्री कारक" माना गया है और क्योंकि इस रेखा का सम्बन्ध कामवासना से विशेष है अतः इस रेखा का नाम 'शुक्र-मेखला' रख दिया गया है।

प्राचीन पाश्चात्य हस्तपरीक्षकों ने लिखा है कि जिसके हाथ में शुक्र-मेखला हो वह व्यभिचारी होता है। इसका कारण यह है कि जिस पुरुष या स्त्री में कोई भाव विशेष होता है वह उसकी पूर्ति उचित या अनुचित मार्ग से करना चाहता है और शुक्र-मेखला हाथ में होने से अत्यधिक कामवासना जातक में रहती है। किन्तु 'कीरो' का मत है कि चौड़े-मोटे हाथ में शुक्र-मेखला हो तो व्यभिचार-प्रवृत्ति समझनी चाहिये, किन्तु यदि ऐसी रेखा पतले, नुकीली उंगलियों वाले हाथ में हो तो जातक अत्यन्त बुद्धिमान् होता है, किन्तु ज़रा सी बात में घबरा जाने वाला या नाराज़ हो जाने वाला अस्थिर प्रकृति का होता है। स्नायविक तंतु जब अत्यन्त असहन-शील होते हैं तो उनकी सूक्ष्म वृत्ति के कारण जातक में प्रेम, सौन्दर्य-प्रियता, चिन्ता, निराशा आदि सभी भाव उग्र मात्रा में—थोड़े से ही कारण से प्रकट हो जाते हैं। ऐसे जातकों में बहुत शीघ्र उत्साह उत्पन्न हो जाता है किन्तु चित्तवृत्ति में स्थिरता नहीं होती।

कीरो ने शुक्र-मेखला के सम्बन्ध में केवल एक ही महत्व की बात लिखी है कि शुक्र-मेखला यदि विवाह-रेखा से स्पर्श करे तो वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं होगा। जातक बहुत शक्की दिमाग़ होता है अतः थोड़ी सी बात में या अकारण ही उसके हृदय में ईर्ष्या हो जाती है। वह चाहता है कि अपनी पत्नी को बिलकुल शिकंजे में बाँध कर रखे। इसी प्रकार जिन स्त्रियों के हाथ में शुक्र-मेखला बुध-क्षेत्र की ओर इतनी बढ़ी हुई हो कि विवाह-रेखा को काटे या

स्पर्श करे तो वे इतनी असहनशील प्रकृति की होंगी कि यदि उनके पति किसी अन्य स्त्री से साधारण बात भी करते होंगे तो उनका पारा सातवें आसमान पर चढ़ जावेगा।

संक्षेप में 'शुक्र-मेखला' के लक्षण ऊपर बताये गये हैं। अब इस रेखा के गुण, दोष, प्रारम्भ तथा अन्त के स्थानों की विभिन्नता के अनुसार फलादेश में विभिन्नता तथा यदि एक रेखा शुद्ध अर्धवृत्ताकार हो या कई टूटी रेखा मिलकर शुक्र मेखला बनाती हों तो क्या फल होता है, यह सब विस्तार से समझाया जाता है।

'शुक्र मेखला' एक प्रकार से हृदय-रेखा के नीचे होती है इस कारण इसे हृदय-रेखा की सहायिका-रेखा कह सकते हैं। किन्तु यह हृदय पर 'संयम' रखने में सहायक नहीं होती। हृदय में प्रेम या 'कामविकार' के जो भाव होते हैं उन्हें अधिक मात्रा में उत्तेजित करती है। इस कारण जिनके हाथ में शुक्र-मेखला हो वे दुगुने वेग से प्रेम करते हैं और 'कामविकार' से सम्बन्धित ईर्ष्या, क्रोध आदि के जो भाव हैं वे भी दुगुने वेग से जातक पर अपना प्रभाव दिखाते हैं। किस जातक पर अधिक या कम प्रभाव होगा यह निश्चय करने के लिये उसके हाथ की बनावट, विशेषकर उंगलियों की ओर ध्यान देना चाहिये। यदि हाथ पतला हो, शरीर भी दुबला-पतला हो, करतल अनेक पतली-पतली रेखाओं से भरा हुआ हो तो ऐसे हाथ में शुक्र-मेखला बहुत जल्दी घबराहट, चिन्ता, ईर्ष्या, क्रोध आदि उत्पन्न कर देगी। यदि शरीर भारी हो, हाथ भी चौकोर, बहुत रेखाओं से युक्त न हो तो प्रकृति में विशेष स्थिरता होगी। किन्तु यदि ऐसे हाथ में शुक्र-क्षेत्र बहुत उन्नत हो, हाथ में ललाई अधिक हो, तो जातक में कामवासना विशेष होगी।

शुक्र-मेखला का भिन्न-भिन्न प्रकार के हाथों में भिन्न-भिन्न फल

(१) यदि शुक्र-क्षेत्र चपटा, शक्तिहीन, ढीला हो; जीवन-रेखा का दायरा चौड़ा न हो (अर्थात् शुक्र-क्षेत्र छोटा भी हो), हाथ के रंग

में सफ़ेदी हो (इससे रक्त की कमी प्रकट होती है), उंगलियों के तृतीय पर्व बीच में पतले हों तो ऐसे जातक में 'शुक्र-मेखला' कामवासना का लक्षण नहीं बल्कि 'घबराहट' तथा 'चिन्ता' का लक्षण समझना चाहिये।

(२) यदि शुक्र-क्षेत्र ऊँचा उठा हुआ, बड़ा हो तथा उस पर आड़ी, तिरछी बहुत सी रेखाएँ हों, उंगलियों के तृतीय पर्व मोटे हों, प्रथम पर्व छोटे हों, जीवन-रेखा खूब घूमकर गई हो (इस कारण शुक्र-क्षेत्र बहुत बड़ा होगा), हृदय-रेखा गहरी और लाल हो, मंगल-क्षेत्र उन्नत हो, हथेली के रंग में ललाई अधिक हो, करपृष्ठ पर बाल हों—तो ऐसे जातक में 'शुक्र-मेखला' घबराहट या चिन्ता का लक्षण न समझकर अत्यधिक कामवासना (जिसका एक परिणाम व्यभिचार-प्रवृत्ति होती है) का लक्षण समझना उचित है।

(३) यदि चन्द्र-क्षेत्र के नीचे का तृतीयांश अधिक उन्नत हो, हाथ पतला हो, हाथ में माँस अधिक न हो, शुक्र-क्षेत्र, चपटा हो, मंगल का क्षेत्र भी नीचा हो तो ऐसे जातक की व्यभिचार-प्रवृत्ति स्वयं तक ही सीमित रहेगी।

रेखा के स्वरूप के अनुसार फल में विभिन्नता

(१) यदि शुक्र-मेखला की एक ही गोलाई लिये हुए रेखा, शुद्ध, अखंडित और स्पष्ट हो तो जातक में घबराहट या चिंता का लक्षण नहीं समझना चाहिये। यह विशेष 'कामविकार' का ही लक्षण है।

(२) यदि यह रेखा टूटी हुई हो, या बहुत से छोटे-छोटे टुकड़ों से बनी हुई हो तो घबराहट, चिन्ता, कामविकार-जनित स्नायविक अस्थिरता विशेष होती है। यदि हाथ के अन्य लक्षणों से भी स्नायविक दुर्बलता प्रकट होती हो तो ऐसे जातक को हिस्टीरिया या घबराहट के अन्य रोग हो जाते हैं। इस कारण जातक का स्वास्थ्य खराब रहता है। उसमें सदैव असंतोष और दुःख की भावना रहती है।

(३) यदि शुक्र-मेखला पर दोहरी या तीन सम्पूर्ण रेखाएँ—एक के ऊपर एक—हों तो इस रेखा के, जैसे हाथ में जो दोष बताये गये हैं, वे अधिक मात्रा में होते हैं। यदि रेखा अधिक गहरी हो तो भी 'कामवासना' विशेष मात्रा में होती है।

(४) यदि उपर्युक्त (२) प्रकार की रेखा हो और जीवन तथा शीर्ष-रेखायें भी दोषयुक्त हों तो जातक को मानसिक या स्नायविक रोग होने की आशंका होगी। यदि शीर्ष-रेखा पर द्वीप-चिह्न, क्रॉस या तारे का चिह्न हो तो जातक के मस्तिष्क में विकार या पागलपन आ जावेगा।

(५) यदि शीर्ष-रेखा घूम कर चन्द्र-क्षेत्र के निचले भाग पर जाती हो और जहाँ शीर्ष-रेखा का अन्त हो वहाँ तारे, बिन्दु, क्रॉस या द्वीप का चिह्न हो, साथ ही शुक्र-मेखला टूटी हो और हाथ बहुत-सी रेखाओं से युक्त हो तो पागलनपन का लक्षण है (विकृत तथा अत्यधिक कल्पना का परिणाम पागलपन होता है)।

(६) यदि शनि-क्षेत्र पर क्रॉस का चिह्न हो, शुक्र-मेखला टूटी हो, शनि-क्षेत्र के नीचे—शीर्ष-रेखा पर बिन्दु या द्वीप चिह्न हो, चन्द्र-क्षेत्र पर 'जाल' हो, नाखून शीघ्र टूटने वाले हों या उन पर खड़ी रेखाएँ हों तो ऐसे जातक को 'लकवा' होने का भय रहता है।

(७) यदि हाथ का नीचे का भाग मोटा हो, हाथ की उंगलियाँ मोटी हों, हाथ का रंग लाल हो, रेखायें भी गहरी और लाल हों, जीवन-रेखा तथा शीर्ष-रेखा छोटी हों और इन दोनों रेखाओं के अन्तिम भाग में अशुभ लक्षण हों तो अत्यधिक भोग-विलास के कारण जातक अल्पायु होगा। कितनी आयु होगी यह जीवन-रेखा से अनुमान करना चाहिये।

(८) यदि हाथ की बनावट से जातक विलासी प्रकृति का प्रतीत होता हो, भाग्य-रेखा दोषयुक्त हो और शुक्र-मेखला से कटी हुई हो, सूर्य-रेखा पर या सूर्य-रेखा के अन्त पर बिन्दु-चिह्न हो तो

अत्यन्त भोग-विलास के कारण जातक अपना कारबार या नौकरी नष्ट कर देगा और उसकी बदनामी भी होगी।

(६) यदि शुक्र-मेखला गम्भीर हो और विवाह-रेखा को काटे, हृदय-रेखा से निकलकर नन्ही-नन्ही रेखाएँ नीचे की ओर जावें, शीर्ष-रेखा का अन्तिम भाग दोषयुक्त हो और शीर्ष-रेखा के अन्त में तारे का चिह्न हो, भाग्य-रेखा का मार्ग किसी छोटी आड़ी रेखा से रुका हो, तो अत्यन्त उच्छृंखल कामवासना के कारण जातक का वैवाहिक सुख नष्ट हो जावेगा। उसका दिमाग़ भी खराब होगा और कारबार या नौकरी सबका सर्वनाश होगा।

इस प्रकार जातक के स्वरूप, प्रकृति, हाथ के लक्षणों से समन्वय कर फलादेश करना उचित है।

शनि-मुद्रिका

चित्र नं० १०१

तर्जनी और मध्यमा उंगली के मूल के बीच से प्रारम्भ होकर गोलाई लिए हुए शनि-क्षेत्र को घेरती हुई यह रेखा मध्यमा और तर्जनी उंगलियों के मूल के बीच में समाप्त होती है। यह शनि-क्षेत्र को अँगूठी की भाँति घेरे रहती है—इस कारण इसे 'शनि-मुद्रिका' कहते हैं। यह रेखा सब हाथों में नहीं होती। किसी-किसी व्यक्ति के हाथ में होती है। कभी-कभी यह रेखा सम्पूर्ण नहीं होती। दो टूटे रेखा-खंडों से मुद्रिका का-सा आकार दिखाई देता है। (देखिये चित्र नं० १०१)

जिनके हाथ में यह रेखा होती है उनमें अध्यवसाय की कमी होती है। किसी एक काम को जम कर नहीं करते। एक काम आरम्भ करते हैं उसको अधूरा छोड़कर दूसरा कार्य प्रारम्भ कर देते हैं, इस कारण ऐसे व्यक्ति प्रायः असफल रहते हैं। आड़ी-रेखाएँ प्रायः

बाधक-रेखा होती हैं—बाधा उपस्थित करती हैं। शनि-मुद्रिका एक प्रकार की आड़ी रेखा है और शनि-क्षेत्र के स्वाभाविक गुणों को नष्ट करती है। शनि-क्षेत्र यदि गुणयुक्त हो तो मनुष्य दूरदर्शी गम्भीर विचार करने वाला व परिश्रमी होता है। यदि इन गुणों की मनुष्य में कमी हो जावे तो स्वभावतः जीवन में सफलता नहीं मिलती। यदि हाथ में अन्य अशुभ लक्षण हों तो मनुष्य में जुर्म या अपराध करने की प्रवृत्ति होती है।

हाथ में अन्य लक्षणों के योग से शनि-मुद्रिका के निम्नलिखित फल होते हैं—

(१) यदि मंगल का प्रथम क्षेत्र नीचा और दबा हुआ हो, अँगूठा छोटा हो, स्वास्थ्य-रेखा दोषयुक्त (उस पर तारे का चिह्न या द्वीप-चिह्न हो) तो मनुष्य अत्यन्त निराश हो जाता है। ऐसे मनुष्य अत्यन्त नैराश्यग्रस्त हो पागल हो जाते हैं या आत्महत्या करने की इच्छा करते हैं।

(२) यदि हाथ मुलायम, निर्जीव-सा हो, शीर्ष-रेखा बलवान न हो, मंगल-क्षेत्र नीचा और दबा हुआ, चन्द्र-क्षेत्र अति उच्च हो, तो शनि-मुद्रिका से निराशा, धैर्य की कमी आदि अवगुणों का फल विशेष होगा।

(३) यदि शीर्ष-रेखा घूमकर चन्द्र-क्षेत्र पर आवे, चन्द्र-क्षेत्र बड़ा, उच्च और जालयुक्त हो तो कल्पना के अत्यधिक और अनुचित विकास के कारण मनुष्य में अस्थिरता, बेचैनी और एक काम को छोड़कर दूसरे को करने की ऐसी विकलता हो जाती है कि वह जीवन में बिलकुल असफल रहता है।

(४) यदि भाग्य-रेखा खंडित और दोषयुक्त हो तो शनि-मुद्रिका यह प्रकट करती है कि जीवन की असफलता अथवा भाग्य-हानि का कारण एक कार्य को लगकर नहीं करना—एक काम

करना और छोड़ना—यही दोष होता है।

(५) यदि सूर्य-रेखा दोषयुक्त या खंडित हो तो शनि-मुद्रिका वही परिणाम प्रकट करती है जो ऊपर (४) में बताया गया है।

(६) टूटी हुई या द्वीपयुक्त शीर्ष-रेखा होनें से मनुष्य के इरादों में तबदीली हुआ करती है। वह कायम-मिज़ाज नहीं होता। यदि साथ ही शनि-मुद्रिका हो तो इस अवगुण की और वृद्धि समझनी चाहिए।

(७) चन्द्र-क्षेत्र के दोष से जो चित्त में अस्थिरता होती है उसकी भी शनि-मुद्रिका वृद्धि करती है।

यदि शनि-मुद्रिका खंडित हो तो शनि-मुद्रिका के जो अवगुण ऊपर बताए गए हैं, उनमें कमी हो जाती है। मुद्रिका जितनी पूर्ण होगी उतने ही उपर्युक्त अवगुण अधिक होंगे। यदि टूटी हुई शनि-मुद्रिका के दोनों खण्ड एक-दूसरे के ऊपर इस प्रकार आ जावें कि 'क्रॉस'-चिह्न बन जावे तो इसका वही फल होता है जो 'क्रॉस-चिह्न' का—अर्थात् भाग्य-हानि, दुर्घटना आदि अशुभ परिणाम होता है।

हाथ के अन्य लक्षणों से यह अन्तिम निर्णय करना चाहिए कि शनि-मुद्रिका का किस हद तक अशुभ परिणाम होगा। शीर्ष-रेखा अच्छी हो, अँगुष्ठ बलवान हो, चन्द्र-क्षेत्र अत्युच्च या दोषयुक्त न हो, प्रथम मंगल-क्षेत्र उन्नत हो तो मनुष्य में धैर्य, अध्यवसाय, उत्साह, परिश्रम आदि के गुण होते हैं और कोरी 'कल्पना' का दुष्परिणाम नहीं होता, इस कारण शनि-मुद्रिका का दोष भी कम अशुभ फल दिखावेगा।

बृहस्पति-मुद्रिका

तर्जनी और मध्यमा उंगलियों के बीच के भाग से प्रारम्भ होकर गोलाई लिये हुए बृहस्पति-क्षेत्र को अँगूठी की भाँति घेरती

चित्र नं० १०२

हुई यह रेखा होती है (देखिये चित्र नं० १०२)। यह सब हाथों में नहीं पाई जाती। जिनके हाथ में यह रेखा होती है वे गुप्त विद्याओं (ज्योतिष, मंत्र-शास्त्र, तंत्र शास्त्र आदि) के अध्ययन में विशेष रुचि रखते और उनमें विद्वान् होते हैं। परन्तु यह फलादेश करते समय हाथ के अन्य लक्षण, उंगलियों के आकार, ग्रह-क्षेत्र और विशेष-कर शीर्ष-रेखा को ध्यान से देखना चाहिए कि उपर्युक्त लक्षणों की पुष्टि होती है या नहीं।

१८वाँ प्रकरण

यात्रा-रेखा आदि शेष पाँच रेखाएँ

यात्रा-रेखाएँ

यात्रा-रेखाओं का लक्षण बताने के पहले यह कहना आवश्यक है कि केवल यात्रा के ही सम्बन्ध में नहीं सर्वत्र फलादेश करते समय देश, काल, पात्र और परिस्थिति का विचार करना आवश्यक है। किसी समय मद्रास से काशी या हरिद्वार जाना बहुत बड़ी यात्रा समझी जाती थी, परन्तु आजकल नित्य लोग दिल्ली से मद्रास, कलकत्ता, बम्बई जाते हैं। इसी प्रकार आज से ४०-५० वर्ष पहले बहुत कम लोग विलायत या अमेरिका जाते थे, परन्तु अब विशेषकर भारतीय स्वतन्त्रता के बाद दसों हज़ार व्यक्ति विलायत जाते हैं। इसलिए जो विशेष भ्रमण या यात्रा करते हैं और बीसों बार विलायत जा चुके हैं, वे यात्रा को मुख्यता नहीं देते, किन्तु जिनको ऐसा अवसर प्राप्त नहीं होता या सम्भावना नहीं होती उनके लिए विदेश-यात्रा या लम्बी यात्रा विशेष घटना होती है।

यात्रा की रेखा तीन स्थानों पर होती है—

१. चन्द्र-क्षेत्र पर

२. मणिबन्ध से प्रारम्भ होकर ऊपर को जाती हुई

३. जीवन-रेखा से निकलकर जीवन-रेखा के सहारे-सहारे चलने वाली रेखाएँ।

चन्द्र-क्षेत्र पर यात्रा-रेखाएँ

चन्द्र-क्षेत्र पर आड़ी रेखा प्रायः यात्रा-रेखा समझी जाती है। पहले विदेश-यात्रा समुद्र-पार जल-मार्ग से होती थी और चन्द्रमा का जल तथा समुद्र से विशेष सम्बन्ध है। चन्द्रमा समुद्र का पुत्र

है, समुद्र से निकला है और चन्द्रोदय से समुद्र का जल ऊँचा उठता तथा गिरता है (ज्वारभाटा आता है)।

यदि चन्द्र-क्षेत्र की यात्रा-रेखा भाग्य-रेखा से योग करे तो ऐसी यात्रा का भाग्य पर विशेष प्रभाव पड़ता है। यदि यात्रा-रेखा छोटी और गहरी हो परन्तु भाग्य-रेखा से योग न करे तो उसे इतनी महत्वपूर्ण यात्रा नहीं समझना चाहिए। (देखिए चित्र नं० १०३ रेखा क)

(१) यदि यह यात्रा-रेखा भाग्य-रेखा में विलीन हो जावे और उसके बाद भाग्य-रेखा गहरी हो तो समझना चाहिए कि यात्रा के फलस्वरूप भाग्य मे गहरी उन्नति हुई।

चित्र नं० १०३

(२) यदि यह यात्रा-रेखा नीचे की ओर (कलाई की ओर) झुकी हुई हो या कुछ मुड़ जावे तो यात्रा में बाधक होती है (देखिए चित्र नं० १०३ रेखा ख)। किन्तु यदि यह ऊपर की ओर जावे तो यात्रा से वृद्धि होती है।

(३) यदि एक यात्रा-रेखा दूसरी यात्रा-रेखा को काटे तो किसी कारण से दो बार यात्रा करनी पड़ेगी।

चित्र नं० १०४

(४) यदि इस यात्रा-रेखा के अंत पर 'वर्ग'-चिह्न हो तो यात्रा से दुर्घटना होगी किन्तु प्राण-रक्षा हो जावेगी।

(५) यदि यात्रा-रेखा शीर्ष-रेखा में मिले और वहाँ बिन्दु, दाग़, द्वीप-चिह्न हो या शीर्ष-रेखा खण्डित हो तो ऐसी यात्रा के परिणामस्वरूप सिर में चोट या बीमारी होगी (देखिये चित्र नं० १०४ रेखा ग)।

मणिबन्ध से प्रारम्भ होने वाली यात्रा-रेखाएँ

दूसरी यात्रा-रेखाएँ वे होती हैं जो मणिबन्ध (प्रथम रेखा) से प्रारम्भ होकर ऊपर की ओर चन्द्र-क्षेत्र पर जाती हैं। (देखिए चित्र नं० १०५ रेखा क, ख)

चित्र० नं० १०५

(१) यदि ऐसी रेखा के अन्त पर 'क्रॉस'-चिह्न हो (चित्र में रेखा ख) तो यात्रा का परिणाम अच्छा नहीं होता। निराशा और असफलता होती है।

(२) यदि रेखा के अन्त में द्वीप-चिह्न हो तो भी द्रव्य-हानि या नुकसान वा असफलता का लक्षण है। (देखें चित्र में रेखा क)

(३) यदि मणिबन्ध से प्रारम्भ होकर यात्रा-रेखा बृहस्पति के क्षेत्र पर जावे तो यात्रा लम्बी होगी और अधिकार तथा प्रभुत्व भी बढ़ेगा। यदि शनि-क्षेत्र पर जावे तो किसी गहरे घटना-चक्र से यात्रा सम्बन्धित होगी। यदि सूर्य-क्षेत्र पर जावे तो यश, धन, नाम की वृद्धि और बुध-क्षेत्र पर जावे तो सहसा आकस्मिक धन-प्राप्ति का लक्षण है।

जीवन-रेखा से निकलने वाली रेखाएँ

तीसरी रेखा जिससे यात्रा का विचार किया जाता है जीवन-रेखा से निकलकर उसके सहारे-सहारे चलती है। इस रेखा का फल यह होता है कि मनुष्य अपनी जन्मभूमि छोड़कर विदेश में कारबार या नौकरी करता है। इस कारण—चन्द्र-क्षेत्र पर साधारण यात्रा-रेखाओं की अपेक्षा इसका विशेष महत्व है।

चित्र नं० १०६

यात्रा-सम्बन्धी दुर्घटनाएँ

यात्रा-सम्बन्धी दुर्घटनाएँ एक प्रकार से जीवन-रेखा के अन्तर्गत आ गई हैं, और ऊपर चन्द्र-क्षेत्र की यात्रा-रेखा व शीर्ष-रेखा का दोषयुक्त स्थान पर योग हो तो उसका भी फल बताया गया है किन्तु निम्न प्रकार के लक्षणों की ओर विशेष ध्यान आकृष्ट किया जाता है।

(१) दुर्घटनाओं के लक्षण जोवन-रेखा या शीष-रेखा पर अवश्य होते हैं।

(२) शनि-क्षेत्र पर द्वीप-चिह्न हो और वहाँ से प्रारम्भ होकर रेखा जीवन-रेखा को काटती हुई शुक्र-क्षेत्र पर जावे तो सांसारिक दुर्घटना का लक्षण है।

(३) यदि उपर्युक्त (२) रेखा के अन्त पर 'क्रॉस'-चिह्न हो तो गहरी दुर्घटना होने पर भी प्राणरक्षा हो जायगी।

(४) शनि-क्षेत्र या इसके कुछ नीचे से आकर कोई भी रेखा जीवन-रेखा को काटे तो दुर्घटना का लक्षण है।

ऊपर जो लक्षण जीवन-रेखा के सम्बन्ध में बताये गए हैं उन्हें शीर्ष-रेखा पर भी लागू करना चाहिए। शीर्ष-रेखा से सम्बन्धित दुर्घटना हो तो मस्तिष्क-विकार, सिर को चोट या प्राणान्त भी हो सकता है। लक्षण जितने अशुभ होंगे उतना ही भयंकर परिणाम होगा। किन्तु जीवन-रेखा सुन्दर और अन्य लक्षण दीर्घायु होने के हों तो प्राण-रक्षा हो जावेगी।

सन्तान-रेखा

सन्तान का विचार दो स्थानों से किया जाता है। एक तो शुक्र-क्षेत्र का करपृष्ठ की ओर का जो भाग है (अँगूठे से नीचे का हथेली का बाहर की ओर का भाग) उससे और दूसरा विवाह-रेखा पर जो अति सूक्ष्म रेखा होती हैं—उससे।

यह पहले बताया जा चुका है कि जीवन-रेखा को भारतीय

पद्धति के अनुसार 'गोत्र'-रखा या 'कुल'-रेखा कहते हैं। दोनों का अर्थ है वंश-वृद्धि। इस नाम से यह प्रकट होता है कि जिसकी जीवन-रेखा सुन्दर और बलवान होगी तथा जीवन-रेखा से घिरा हुआ भाग गुणयुक्त होगा उसी का 'कुल' चलेगा—उसी की 'गोत्र'-वृद्धि होगी। पुत्र, पौत्र, प्रपौत्र आदि एक के बाद दूसरे की सन्तान स्वस्थ होती चली जावे तभी कुल या गोत्र की वृद्धि संभव है। इसीलिये हमारे भारतीय महर्षियों ने कुल-वृद्धि या

चित्र नं० १०७

गोत्र-वृद्धि का अर्थ केवल 'पुत्र' तक ही सीमित नहीं रखा। यदि कदाचित् किसी की निर्बल अवस्था में निर्बल पुत्र हो गया और आगे उसकी वंश-वृद्धि नहीं हुई तो 'गोत्र'-वृद्धि नहीं मानी जावेगी। पुरुषों तथा स्त्रियों दोनों की सन्तानोत्पादन शक्ति, शुक्र-क्षेत्र तथा जीवन-रेखा पर बहुत अधिक मात्रा में अवलंबित है। इसी कारण अँगुष्ठ के नीचे के भाग पर—करपृष्ठ की ओर निकली हुई रेखाओं से सन्तान का विचार किया जाता है। (देखिये चित्र नं० १०७)

'भविष्य पुराण' में लिखा है—

अंगुष्ठ मूलं रेखाः पुत्राः स्युर्दारिकाः सूक्ष्मा।

'प्रयोग पारिजात' में भी लिखा है—

मूलेऽङ्गुष्ठस्य नृणां स्थूला रेखा भवन्ति यावत्यः।
तावन्तः पुत्राः स्युः सूक्ष्माभिः पुत्रिकास्ताभिः॥

अर्थात् अँगूठे के मूल में जो स्थूल रेखा हों उन्हें पुत्र-रेखा तथा जो सूक्ष्म-रेखा हों उन्हें कन्या-रेखा समझना चाहिये।

स्त्रियों के हाथ में भी इन्हीं रेखाओं को सन्तान-रेखा माना है। 'गरुड़ पुराण' का वचन है कि—

बृहत्यां पुत्राः स्वल्पासु प्रमदाः परिकीर्तिताः ।
स्वल्पायुषो लघुच्छिन्नाः दीर्घाच्छिन्ना महायुषः ।।

बृहत् रेखाओं से पुत्र और स्वल्प रेखाओं से कन्या अर्थात् जितनी मोटी रेखा हों उतने पुत्र और जितनी पतली रेखा हों उतनी कन्या होंगी। जितनी छोटी और कटी हुई रेखा हों उतनी सन्तान अधिक नहीं जीवेगी। जितनी बड़ी और बिना कटी रेखा हों उतनी सन्तान जीवेगी।

पहले, प्रायः 'सन्तान कितनी होंगी—कितने लड़के कितनी लड़की, कितनी दीर्घजीवी होंगी, कितनी शीघ्र मर जावेंगी—यह विषय हस्त-रेखा-परीक्षकों से बहुत दिलचस्पी से पूछा जाता था। अब धीरे-धीरे शिक्षा और औषधियों के प्रभाव से बच्चों की प्राण-रक्षा हो रही है। अकाल-मृत्यु पहले की अपेक्षा कम होती है। दूसरे, एक, दो या तीन सन्तान तक ही सन्तान-संख्या लोग सीमित रखना चाहते हैं और बहुत से लोग कृत्रिम उपायों से ऐसा करते भी हैं।

हमारे हाथ की रेखाएँ स्वाभाविक सन्तानोत्पादक शक्ति बताती हैं। यदि कोई बाल-विधवा हो जावे और उस समाज में विधवा-विवाह प्रचलित न हो तो सन्तान-रेखाओं का पूर्ण फल नहीं होगा। इसी प्रकार सन्तान-निरोध के उपयों को काम में लेने वाले व्यक्तियों के हाथ में भी ये रेखाएँ अपना पूर्ण प्रभाव नहीं दिखा पावेंगी।

इसके अतिरिक्त देश, काल, पात्र का भी विचार करना चाहिये। काश्मीर जैसे ठण्डे मुल्क में एक-एक स्त्री के १०-१२ सन्तान होती हैं और प्रायः सब जीवित रहती हैं। किन्तु कानपुर या बम्बई में मिलों में काम करने वाली स्त्रियों की सब सन्तान दीर्घजीवी नहीं होतीं।

चित्र नं० १०८

ऊपर सन्तान-रेखा-विचार का भारतीय मत बताया गया है। पाश्चात्य मतानुसार

विवाह-रेखा पर जो खड़ी अति सूक्ष्म-रेखा होती है उससे सन्तान-विचार करना चाहिये। (देखिये चित्र नं० १०८)

हथेली के बाहरी ओर की तरफ़ जो पहली रेखा हो उसे प्रथम सन्तान, द्वितीय रेखा को द्वितीय सन्तान, तृतीय रेखा को तृतीय सन्तान समझना चाहिये। जो रेखा बिलकुल सीधी हों उन से 'लड़के' और जो कुछ झुकी हुई हों उनसे 'लड़कियों' का अनुमान लगाना उचित है। जितनी रेखा अति सूक्ष्म या खण्डित हों उतनी सन्तान अल्पायु होती हैं। विवाह-रेखा पर जो सन्तान-रेखा बताई गई है वें कभी-कभी इतनी सूक्ष्म होती हैं कि अणुवीक्षण यंत्र या आईग्लास से ही दृष्टि में आती हैं। इन रेखाओं की परीक्षा करते समय 'कीरो' के मतानुसार निम्नखिखित बातों पर विशेष ध्यान रखना चाहिये—

(१) शुक्र-क्षेत्र उन्नत तथा विशाल होने से सन्तान अधिक होती है।

(२) चौड़ी रेखाओं से पुत्र एवं पतली और सूक्ष्म रेखाओं से कन्या समझना चाहिये।

(३) यदि रेखाएँ सुन्दर और सबल हों तो बच्चे दीर्घजीवी होंगे। यदि कमजोर या लहरदार हों तो अल्पायु।

(४) यदि किसी रेखा के प्रारम्भ में द्वीप-चिह्न हो तो बालक का प्रारम्भिक काल (बचपन) रोगयुक्त होता है।

(५) यदि बाद में द्वीप हो तो बालक दीर्घजीवी नहीं होता।

(६) यदि कोई रेखा अन्य की अपेक्षा लम्बी और प्रधान हो तो उस बालक का माता-पिता के लिये विशेष महत्व होगा।

(७) स्त्रियों के हाथ में सन्तान-रेखा विशेष स्पष्ट होती हैं।

चित्र नं० १०६

भ्रातृ-रेखा

मणिबन्ध और 'आयु' (हृदय)-रेखा के बीच में, हथेली में बाहर की ओर निकली हुई जितनी रेखाएँ हों उतने भाई-बहन होते

हैं। (देखिए चित्र नं० १०६)

'स्कन्द पुराण' काशीखंड में लिखा है—

यावन्त्यो मणिबन्धायुर्लेखयोरन्तरे स्थिताः ।
सहोदरगणस्तावान् विज्ञेयः पाणि पल्लवे ।।

'सामुद्रतिलक' में भी लिखा है—

यावन्त्यो मणिबन्धायुर्लेखान्तः प्रतिष्ठिताः स्थूलाः ।
तावत्संख्याकान् भ्रातृन वदन्ति सूक्ष्माः पुनर्भगिनीः ।।
रेखाभिश्छिन्नाभिः संभावित मृत्यवो ज्ञेयाः ।
यावत्यस्ताः पूर्णानियतं जीवन्ति तन्संख्याः ।।

अर्थात् जितनी रेखा हों उतने सहोदर भाई, बहन होते हैं । स्थूल रेखा से भाई, सूक्ष्म रेखाओं से बहन समझना चाहिए । खडित या छिन्न रेखाओं से अल्पायु और पूर्ण तथा सुन्दर रेखाओं से दीर्घायु भाई तथा बहन होते हैं ।

स्वास्थ्य-रेखा की सहायिका-रेखा

बहुत से हाथों में स्वास्थ्य-रेखा के समानान्तर एक रेखा और होती है । इसे अंगरेजी में Via Lasciva कहते हैं । इसका यदि हिन्दी अनुवाद किया जावे तो इसे 'कामुकता की रेखा' कह सकते हैं। यदि दोनों हाथों में स्पष्ट हो तो ऐसा व्यक्ति कामुक तथा धन की अत्यन्त इच्छा रखने वाला होता है । (देखिये चित्र नं० ११०)

चित्र नं० ११०

यदि यह रेखा लहरदार हो तो मनुष्य व्यभिचारी होता है । इस कारण उसके भाग्य में भी बाधा होती है । यदि लहरदार हो और शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ हो तो व्यभिचार के कारण मनुष्य की आयु भी कम हो जाती है ।

यह एक प्रकार से स्वास्थ्य-रेखा की सहायिका-रेखा है और जिस प्रकार जीवन-रेखा कटी या दोषयुक्त हो और उस स्थान पर मंगल-रेखा सुन्दर, स्पष्ट, गहरी हो तो जीवन-रेखा के दोष को दूर करती है। उसी प्रकार यदि स्वास्थ्य-रेखा खंडित या दोषयुक्त हो और उस स्थान पर यह सहायिका-रेखा सुन्दर और पूर्ण हो तो स्वास्थ्य-रेखा के दोष को दूर करती है।

इसके विषय में निम्नलिखित बातों पर विशेष ध्यान रखना चाहिए—

(१) यदि वह बुध-क्षेत्र पर जाकर समाप्त हो तो मनुष्य भाग्यवान्, वाग्मी (सुन्दर वक्ता) व राजनीति में कुशल होता है किन्तु उसका चरित्र अच्छा नहीं होता।

(२) यदि अन्त में दो शाखायुक्त हो जावे तो मनुष्य आलसी, नपुसक होता है। अत्यन्त भोग के कारण जीर्ण रोगी, कमज़ोर हो जाता है।

(३) यदि यह स्वास्थ्य-रेखा को काटे तो यकृत रोग, मन्दाग्नि आदि रोग होते हैं। इसके अतिरिक्त स्वास्थ्य-रेखा से भाग्योदय आदि के जो शुभ लक्षण बताए गए हैं उनके फल को नष्ट करती है। प्रायः व्यापार आदि में जो सुन्दर स्वास्थ्य-रेखा के कारण धन-लाभ आदि होते उस शुभ फल को अत्यन्त भोगविलास के कारण मनुष्य स्वयं नष्ट कर देता है। जिस अवस्था पर स्वास्थ्य-रेखा को काटे उसी अवस्था पर यह अशुभ फल होता है।

(४) यदि इस रेखा से निकलकर कोई रेखा सूर्य-रेखा में जाकर मिले—उसे काटे नहीं तो धनागम, भाग्योदय का लक्षय है। किन्तु यदि सूर्य-रेखा को काटे तो उलटा फल होता है, धन-हानि, यश-हानि आदि। इसका हेतु वहा अत्यन्त भोगविलास, व्यभिचार-प्रवृत्ति आदि समझनी चाहिए।

(५) यदि इस पर 'तारे' का चिह्न हो तो शुभ लक्षण है। मनुष्य को धन-प्राप्ति होती है किन्तु भोगी प्रवृत्ति होने के कारण धन-रक्षा में बहुत प्रयत्नशील होना पड़ता है।

एक प्रकार से यह स्वास्थ्य-रेखा की सहायिका रेखा है इसलिये लक्षण स्वास्थ्य-रेखा के अनुसार ही समझने चाहिए।

अतीन्द्रिय ज्ञान-रेखा

मनुष्य के पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और पाँच कर्मेन्द्रियाँ होती हैं। आँख कान, नाक, त्वचा और जिह्वा इन ज्ञानेन्द्रियों से देखने का, सुनने का, सुगन्धि-दुर्गन्धि का, गरम, ठण्डा, खुरदरा, मुलायम आदि का स्पर्श-ज्ञान एवं जिह्वा से मीठा, कड़वा, खट्टा आदि का रसज्ञान होता है। किन्तु बिना किसी भी ज्ञानेन्द्रिय की सहायता के बहुत बार मन या 'चित्त' को पता लग जाता है कि ऐसा होने वाला है। उदाहरण के लिए कोई आपका मित्र आपसे मिलने आया। बिना हेतु के भी आप ताड़ जाते हैं कि यह रुपया उधार माँगेगा। या कोई स्त्री एकान्त में बैठी है और कोई पुरुष किसी बहाने से उसके पास आता है। उसे फ़ौरन भान हो जाता है कि इस पुरुष के मन में पाप-विचार है।

हमारा मन असल में ग्यारहवीं इंद्रिय का काम करता है। किसी घटना का कोई हेतु न होते हुए भी बहुत से लोगों के दिल में इस प्रकार की स्फूर्ति होती है—या छाया-सी पड़ती है और भविष्य में होने वाली घटना की झलक उनके दिल में पड़ जाती है। यह एक प्रकार से पाँचों ज्ञानेन्द्रियों से ज्ञातव्य ज्ञान से भिन्न है, इसी कारण इसे अतीन्द्रिय ज्ञान कहते हैं। यह सब मनुष्यों में समान नहीं होता। मन में जो अकल्पित घटना-सम्बन्धी स्वयं सूझ या स्फूर्ति होती है—इसे अंग्रेजी में Intuition कहते हैं।

बहुत से व्यक्तियों में यह अतीन्द्रिय ज्ञान विशेष मात्रा में होता

है। उनके हाथ में यह व्यक्त करने वाली रेखा होती है। प्रायः चन्द्र-क्षेत्र से प्रारम्भ हो यह गोलाई लिए बुध-क्षेत्र पर आती है (देखिए चित्र नं० १११)। ऐसे व्यक्ति ज्योतिष आदि गुप्त विद्याओं में भी विशेष प्रवीण हो सकते हैं।

चित्र नं० १११

(१) यदि यह रेखा स्पष्ट हो और बृहत् चतुष्कोण में क्रॉस-चिह्न हो तो ज्योतिष आदि फलित शास्त्र में ऐसा व्यक्ति बहुत प्रवीण होता है।

(२) यदि यह रेखा सुन्दर और स्पष्ट हो और चन्द्र-क्षेत्र के ऊपर का भाग विशेष उच्च हो तो मनुष्य मेस्मेरिज़म आदि द्वारा दूसरों पर गहरा प्रभाव डाल सकता है।

(३) चन्द्र-क्षेत्र पर जितने अधिक ऊपर के भाग से यह रेखा प्रारम्भ होगी उतना ही अधिक यह विशेष ज्ञान मनुष्य में होगा।

(४) यदि यह रेखा मंगल के प्रथम क्षेत्र पर समाप्त हो तो उपर्युक्त (२) में बताया हुआ फल विशेष मात्रा में होता है।

(५) यदि यह रेखा छोटी, लहरदार व शाखायुक्त हो तो मनुष्य सदैव अस्थिर और अशांत रहता है। ऐसे व्यक्ति को प्रसन्न करना कठिन होता है।

(६) यदि कई जगह खंडित हो तो कभी तो इस विशेष ज्ञान का उदय बहुत अधिक मात्रा में हो जाता है—कभी बिलकुल नहीं होता।

(७) यदि भाग्य-रेखा, शीर्ष-रेखा और उस रेखा द्वारा त्रिकोण बनता हो तो ऐसा व्यक्ति गुप्त विद्याओं में बहुत प्रवीण होता है।

(८) यदि दोनों हाथों में हो और जीवन-रेखा, भाग्य-रेखा तथा यह रेखा बहुत सी आड़ी रेखाओं से कटी हों तो उस व्यक्ति के सम्बन्धी उसकी गुप्त विद्याओं की प्रवृत्ति में बाधक होते हैं।

१६वाँ प्रकरण

करतल में चिह्न

'भविष्य पुराण' में लिखा है कि गहरी और चिकनी रेखा धनियों के हाथ में होती है दरिद्रों के नहीं। जिसके हाथ में मछली के आकार की रेखा हो उसको सब कार्यों में सफलता मिलती है और वह धनी तथा बहु पुत्रवान होता है। जिसके हाथ में बहुत बड़ी तराजू का चिह्न हो उसको व्यापार में सफलता होती है।

जिसके हाथ में सूर्य या चन्द्रमा का चिह्न हो वह नित्य यज्ञ करने वाला और बहुत धनी होता है। जिसके हाथ में पर्वत या वृक्ष का चिह्न हो वह बहुत धनवान होता है और उसके बहुत से नौकर होते हैं।

जिसके हाथ में शक्ति, तोमर, बाण, तलवार या धनुष के आकार का चिह्न हो वह लड़ाई (झगड़ा या मुकदमेबाज़ी) होने पर विजयी होता है। यदि हाथ के बीच में ध्वजा या शंख दिखाई दे वह बहुत बली होता है और समुद्र-यात्रा करता है।

जिसके हाथ में चक्र की ही आकार की तरह श्रीवत्स का चिह्न हो या कमल का या वज्र का अथवा रथ या कुम्भ (घड़े) का चिह्न हो वह दूसरों की सेना को हराने वाला राजा होता है। आजकल की परिस्थिति में यह कह सकते हैं कि वह अपने राजनीतिज्ञ दल का नेता होकर दूसरे पक्ष को हराता है—

तिस्रो रेखा मणिबन्धनोत्थिताः करतलोपगता नृपतेः।
मीनयुगांकित पाणि नित्यं सत्रप्रदो भवति ।।
वज्राकारा धनिनां विद्याभाजां तु मीन पुच्छनिभा।
शंखातपत्र शिबिका गजाश्व पद्मोपमा नृपतेः ।।

कलशमृणालपताकाङ्कुशो पमाभिर्भवति भूपालाः ।
दामनिभैश्चगवाढ्यः स्वस्तिकरूपाभि रैश्वर्यम् ।।
चक्रासि परशुतोमर शक्ति धनुः कुन्त सन्निभा रेखाः ।
कुर्वन्ति चमूनाथं यज्वानमुलूखलाकारः ।।
मकरध्वज कोष्ठागार सन्निभाभिर्महाधनो पेताः ।
वेदीनिभेन चैवाग्नि होत्रिणो ब्रह्मतीर्थेन ।।

वराहमिहिर ने भी कहा है कि यदि तीन रेखा मणिबन्ध से प्रारम्भ होकर करतल के अन्त तक जावें तो मनुष्य राज्य पदवी प्राप्त करता है अर्थात् राजा होता है । जिसके हाथ में दो मछलियों के चिह्न हों वह नित्य यज्ञ करने वाला और जिसके हाथ में वज्र का चिह्न हो वह धनी होता है । जिनके हाथ में मछली की पूँछ की तरह का आकार बनता हो वे विद्वान् होते हैं । जिनके हाथ में शंख, छत्र, पालकी, हाथी, घोड़े, कमल, कलश, कमल का डंठल, पताका या अंकुश की आकार का चिह्न हो वे भूपाल अर्थात् पृथ्वी के पालन करने वाले (शक्ति और ऐश्वर्य-सम्पन्न पदाधिकारी) होते हैं । जिनके हाथ में माला का चिह्न हो वे धनाढ्य और जिनके हाथ में स्वस्तिक (चतुष्क—चौकोर) चिह्न हो वे ऐश्वर्यमान होते हैं । जिनके हाथ में ऊखल (ओखली) का-सा चिह्न हो वे यज्ञ करने वाले होते हैं । जिनके हाथ में चक्र, तलवार, फरसा, तोमर, शक्ति, धनुष या भाले का चिह्न हो उनके मातहत बड़ी सेना रहती है ।

जिनके हाथ में मगर, ध्वजा, कोष्ठागार (कोठा) की तरह चिह्न हो वे बहुत धनी होते हैं । जिनके हाथ में बावड़ी, मन्दिर या त्रिकोण चिह्न हो वे धार्मिक और धनवान होते हैं । सिंहासन, रथ, घोड़े आदि का चिह्न भी शुभ लक्षण है । 'गरुड़ पुराण' तथा 'स्कन्द पुराण' काशीखंड में भी इन्हीं शुभ चिह्नों को दोहराया गया है । स्त्रियों के करतल के विषय में कहा गया है कि यदि उनके करतल में श्रीवत्स, ध्वजा, शंख, कमल, गज, घोड़ा, चक्र, स्वस्तिक,

वज्र, तलवार, पूर्ण कुम्भ, रथ, अंकुश, प्रासाद, छत्र, मुकुट, हार, केयूर, कुंडल, तोरण आदि शुभ चिह्न हों तो वे राजा की पत्नी होती हैं—अर्थात् करतल में ये सब चिह्न होना शुभ लक्षण है।

जिस स्त्री के हाथ में स्रुव, रक्त वृक्ष, दण्ड, कुण्ड आदि के चिह्न हों वह यज्ञ करने वाले की पत्नी होती है। जिसके हाथ में दुकान, रास्ता, तराजू, भाण्ड, मुद्रा आदि का चिह्न हो वह रत्न और सुवर्ण की स्वामिनी—वैश्य की पत्नी होती है। जिसके हाथ में कृषि में काम आने वाले हल, ऊखल आदि के चिह्न हों उसका पति कृषि से बहुत कमाता है।

ये सब उस समय के शास्त्रों के वचन हैं जब ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सब अपने-अपने वर्ण के अनुरूप कार्य करते थे।

आजकल के समय में जब सब जाति के लोग सब कार्य करते हैं इन लक्षणों का अक्षरशः मिलना कठिन है। देश और काल में महान् परिवर्तन हो गया है। इन लक्षणों का यहाँ देने का अभिप्राय यह है कि भारतीय लक्षण-शास्त्र में करतल के चिह्न के विषय में क्या लिखा है यह परिचय हो जावे और इन लक्षणों का सार व्यवहार में लिया जावे—अर्थात् ये शुभ लक्षण हैं—समृद्धिकारक हैं।

अनेक प्राचीन ग्रन्थों से संग्रह कर जैन श्वेताम्बर धर्मोपदेष्टा श्री शान्तिविजय जी ने हाथ में अनेक चिह्नों का फल दिया है। (देखिये चित्र न० ११२)

१. **गज**—यदि हाथी का निशान हो तो मनुष्य भाग्यवान् बुद्धिमान, राजा के सदृश वैभव वाला हो। हाथी के व्यापार से लाभ हो।

२. **मत्स्य**—धनवान्, आरामतलब, समुद्र-पार देशों की यात्रा करने वाला। मत्स्य (मछली) का चिह्न बहुत शुभ समझा जाता है।

३. **पालकी**—बहुत द्रव्य-संग्रह हो, उत्तम सवारी, बहुत से नौकर-चाकर हों।

४. **घोड़े का चिह्न**—ऐसा चिह्न होने से घोड़ों का सुख, राज्य में ऊँचा पद, सेना में सम्माननीय स्थान आदि शुभ फल हों।

५. **सिंह**—यह आकृति होने से बहुत वीर, दूसरों पर शासन करने वाला, कभी न हारने वाला, राज-वैभव युक्त हो।

६. **फूल माला**—प्रसिद्ध, धार्मिक रुचि वाला, धर्म-कार्यों में व्यय करने वाला, विजयी, धनी हो।

७. **त्रिशूल**—धर्म में दृढ़ मति हो।

८. **देव विमान**—ऐसा चिह्न होने से शुभ तीर्थ-यात्रा, मन्दिर-निर्माण आदि 'देवाय धर्माय' व्यय करने वाला व्यक्ति होता है।

९. **सूर्य**—यह चिह्न होने से तेजस्वी प्रकृति का, वीर, सात्विक अधिकार-युक्त हो।

१०. **अंकुश**—विजयी, धनयुक्त हो।

११. **मोर**—संगीत कला में अभिरुचि वाला, प्रतिष्ठित, भोगी हो।

१२. जिसके हाथ में ऐसा चिह्न हो वह प्रतापी, भोगी व लोक-विख्यात हो।

१३. **कलश**—धार्मिक यात्रा करने वाला, विजयी, देव-मन्दिर, धर्मशाला आदि बनवावे।

१४. **तलवार**—भाग्यवान, राज-सम्मानित, विजयी हो।

१५. **जहाज**—समुद्र-पार देशों से व्यापार करे; भाग्यवान और दीर्घायु हो।

१६. **लक्ष्मी**—पूर्ण भाग्यवान, धनी।

१७. **स्वस्तिक**—विद्याभोगी, बुद्धिमान्, ऐश्वर्ययुक्त, लोगों में प्रतिष्ठित, मन्त्री या इसी प्रकार का उच्च वैभवयुक्त हो।

१८. **कमंडल**—सुखी, धनी, साधुसेवी, धर्मप्रचारक, दूर देशों की यात्रा करने वाला हो।

१९. **सिंहासन**—उच्च पदाधिकारी, राजा या मन्त्री, शासन
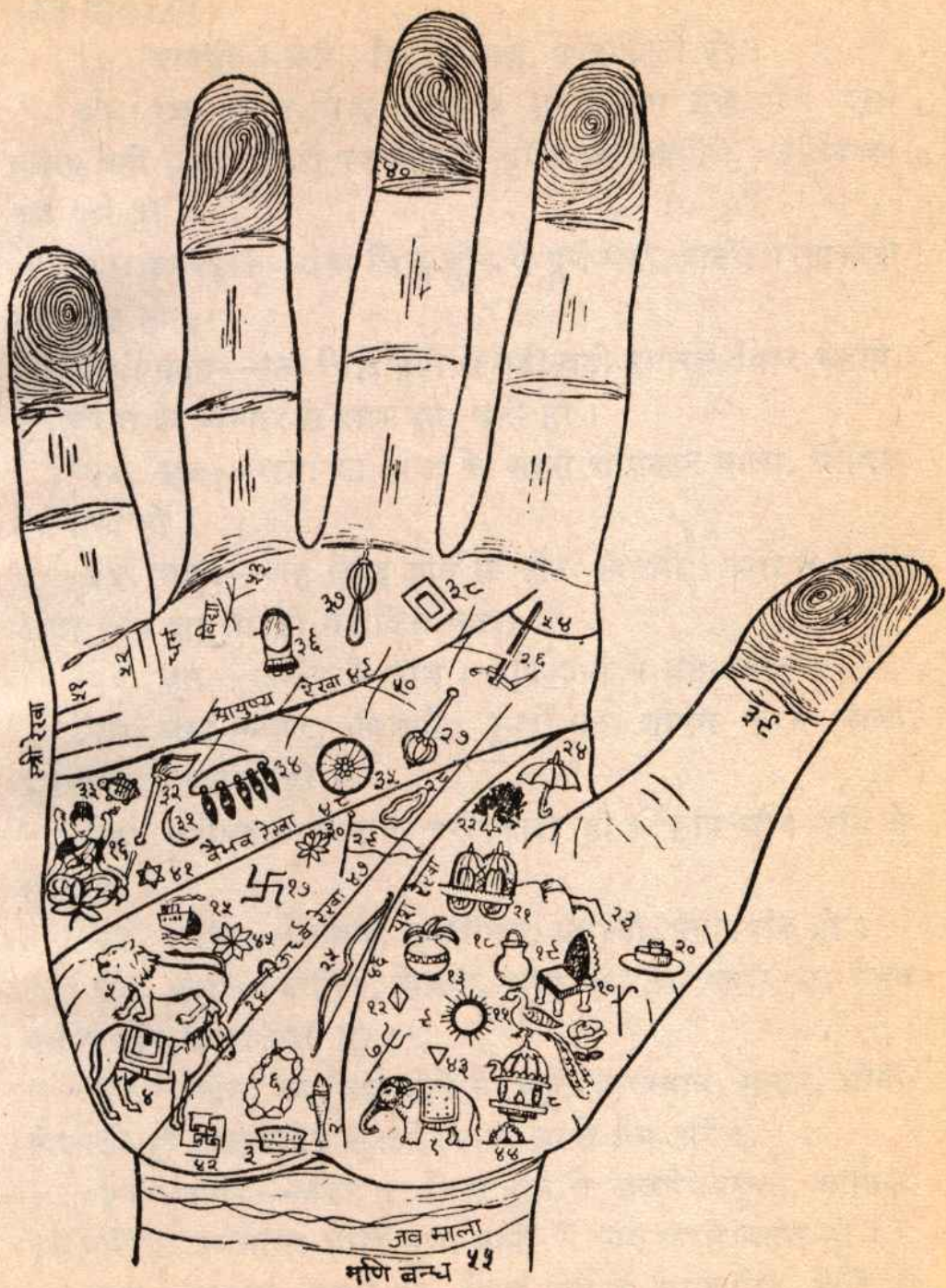
चित्र नं०-११२

करने वाला हो।

२०. **बावड़ी**—धनी, वीर, धार्मिक, परोपकारी हो।

२१. **रथ**—ऐसा चिह्न होने से सवारी का सुख हो। ऐसा व्यक्ति धनी तथा शत्रुओं पर विजयी हो। बाग-बगीचे, ज़मीन का सुख पूर्ण हो।

२२. **कल्पवृक्ष**—ऐसा चिह्न होने से पूर्ण धनी, दानी, परोपकारी भोगयुक्त हो।

२३. **पर्वत**—यह चिह्न होने से बड़ी-बड़ी इमारतें तैयार करावे, जवाहरात के व्यापार से लाभ हो, धनी हो।

२४. **छत्र**—राजा या राजा के सदृश अधिकार वाला, धार्मिक सर्वमान्य हो।

२५. **धनुष**—यह चिह्न होने से वीर, विजयी, कभी न हारने वाला हो। शत्रुओं को पराजित करे।

२६. **हल**—ज़मीन से लाभ। कृषि-कार्य से धन-प्राप्ति।

२७. **गदा**—वीर, विजयी, दूसरों पर शासन करने वाला प्रभावशाली व्यक्ति हो।

२८. **सरोवर**—धनवान्, परोपकारी हो। कृषि और भूमि से लाभ हो।

२९. **ध्वजा**—धार्मिक, कुलदीपक, यशस्वी, प्रतापवान् हो।

३०. **पद्म**—धार्मिक, विजयी, राजा या राजा सदृश, धन-वैभव वाला और शक्तिशाली हो।

३१. चन्द्रमा का चिह्न होने से बहुत भाग्यवान, सुन्दर, भोगी-विलासी हो तथा अनेक सुन्दर स्त्रियाँ उससे प्रेम करें।

३२. **चामर**—चँवर का चिह्न होने से राजवैभवयुक्त, धार्मिक, देव-मन्दिर, धर्मशाला आदि पुण्य-कार्यों में व्यय करने वाला हो।

३३. **कच्छप**—कछुवे का चिह्न होने से समुद्र-पार देशों की यात्रा करने वाला, ऐश्वर्ययुक्त हो।

३४. **तोरण**—धनी, मकान, बगीचे आदि जायदाद से युक्त विशिष्ट भाग्ययुक्त हो।

३५. **चक्र**—धार्मिक, विद्वानों की सहायता करने वाला, अति धनी, चक्रवर्ती राजा या राजा-सदृश वैभवयुक्त हो। अनेक परम सुन्दर रमणियाँ उसको प्रेम करें।

३६. **शीशा या दर्पण**—उच्च पद पर प्रतिष्ठित होकर शासन करे। तीर्थों में धर्मशाला या देव-मन्दिर निर्माण करावे। वृद्धावस्था में विरक्त हो, धर्म-प्रचार करे और आत्मोन्नति में समय लगावे।

३७. **वज्र**—यह चिह्न हो तो परम वीर, विजयी, शासन करने वाला, उच्च पदाधिकारी हो।

३८. **वेदी**—यह चिह्न होने से मनुष्य धार्मिक, यज्ञकर्ता, मन्त्र-विद्या का ज्ञाता व सात्विक ऐश्वर्य से युक्त होता है।

३९. अँगूठों में यव-चिह्न होने से धनी, बुद्धिमान्, सुन्दर वक्ता लोकविख्यात और प्रतिष्ठित होता है।

४०. **शंख**—यह चिह्न होने से समुद्र-पार देशों की यात्रा करे और वहाँ के पदार्थों के व्यापार से उत्तम धनलाभ हो। धार्मिक यात्रा तथा देव-मन्दिर, धर्मशाला आदि पुण्य-कार्यों में सद्व्यय करे।

४१. **षट्कोण**—भूमि-लाभ हो। ऐसा व्यक्ति धनी और ऐश्वर्य-युक्त हो।

४२. नंद्यावर्त्त स्वस्तिक का चिह्न होने से धनी, प्रतिष्ठित धार्मिक यात्रा करने वाला, वैभवयुक्त हो।

४३. **त्रिकोण**—यह चिह्न होने से सवारी तथा गाय-भैंस आदि का सुख, भूमि से लाभ हो। ऐसा व्यक्ति प्रतिष्ठित और धनी हो।

४४. **मुकुट**—यह चिह्न होने से विद्वान्, परम चतुर, धार्मिक, लोकविख्यात, यशस्वी राजा या राजा के सदृश प्रतिष्टित पदा-धिकारी हो।

४५. **श्रीवत्स**—यह चिह्न होने से धार्मिक, सदैव सुखी, प्रसन्न-

मुख वैभवयुक्त हो। उसके मनोरथ पूरे हो।

४६. **यश-रेखा**—इसका प्रसिद्ध नाम 'जीवन-रेखा' है विस्तृत के लिए फल पृष्ठ १२९-१६५ देखिये।

४७. **ऊर्ध्व-रेखा**—इसका प्रसिद्ध नाम 'भाग्य-रेखा' है। देखिये पृष्ठ २२२-२४१।

४८. **वैभव-रेखा**—इसका प्रसिद्ध नाम शीर्ष-रेखा है। विस्तृत फल पहले दिया जा चुका है। देखिये पृष्ठ १६६-१९३।

४९. **आयु-रेखा**—इसके विस्तृत विवरण के लिये १२वाँ प्रकरण देखिये।

५०. **सम्पत्ति-रेखा**—इन चतुष्कोणाकृति रेखाओं का नाम सम्पत्ति-रेखा है। जितने चतुष्कोणाकृति या वर्ग-चिह्न हों उतनी ही अधिक सम्पत्ति होगी। इस सम्बन्ध में हमारा मत श्री शान्ति-विजय जी से पृथक् है। हमारे मतानुसार काटने वाली रेखा सदैव अशुभ होती हैं। केवल ऊर्ध्वगामी-रेखा जो ऊपर की ओर जावें और किसी रेखा में मिलकर उनको बल प्रदान कर दें, किन्तु काटें नहीं वही शुभ होती हैं।

५१. **स्त्री-रेखा**—इसका प्रसिद्ध नाम 'विवाह-रेखा' है। विस्तृत विवरण १६वें प्रकरण में दिया गया है।

५२. **धर्म-रेखा**—यह सुन्दर व अच्छिन्न होने से व्यक्ति में धार्मिकता आदि गुण होते हैं। (पाश्चात्य मत भिन्न है जो पृथक् दिया गया है)।

५३. **विद्या-रेखा**—प्रसिद्ध नाम 'सूर्य-रेखा' है। देखिये पृष्ठ २४२-२५८।

५४. **दीक्षा-रेखा**—यह होने से, व्यक्ति धार्मिक व श्रद्धावान् होता है और दीक्षा ग्रहण करता है। इसे अंग्रेजी में 'बृहस्पति-मुद्रिका' कहते हैं। देखिये पृष्ठ ३१६।
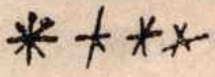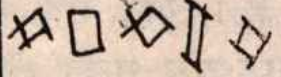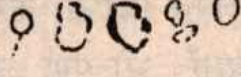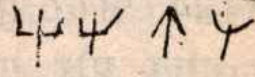
५५. यवमाला—(इसके विस्तृत फल के लिये देखिये पृष्ठ ४७-४६)।

श्री शान्तिविजयजी ने इन चिह्नों का एक चित्र भी दिया है जो पाठकों के अवलोकनार्थ दिया जा रहा है। वास्तव में इस प्रकार के हाथी-घोड़े आदि हाथ में दिखाई देते नहीं। प्राचीन ऋषियों का हाथी-घोड़े से क्या तात्पर्य था—किस चिह्न को हाथी का प्रतीक, किसको घोड़े का प्रतीक माना जाता था। इस सम्प्रदाय और परम्परा का प्राय: लोप हो गया है। इस कारण यह कहना बहुत कठिन है कि किस चिह्न को हाथी, किसको घोड़ा, किसको जहाज माना जाय। दर्पण या शीशा भी भिन्न-भिन्न आकार का होता है। दर्पण का प्रतीक कौनसा चिह्न माना जाय यह समस्या है। ध्वजा, हल, त्रिशूल, डमरू, त्रिकोण, षट्कोण, वेदी, चन्द्रमा, धनुष आदि चिह्न सुगमता से पहचाने जा सकते हैं। किन्तु 'पर्वत' से तात्पर्य उठे हुए ग्रह-क्षेत्रों से (जिन्हें-माउण्ट कहते हैं) तो नहीं है? जिसे अंग्रेजी में तारे का चिह्न कहा है वही कच्छप (चारों ओर निकले हुए पैर वाला) तो नहीं है इत्यादि शंका होती है। अस्तु, इस सम्बन्ध में विद्वान् पाठक अपनी बुद्धि से निर्णय कर लें। प्राचीन मत का परिचय कराने में यह विवरण सहायक होगा। इस दृष्टिकोण से उपर्युक्त विवरण दिया गया है। अब पाश्चात्य मत दिया जाता है।

पाश्चात्य मत

हाथ पर विविध चिह्न

हाथ पर अनेक प्रकार के चिह्न होते हैं—कुछ तो प्रधान रेखाओं के परस्पर मेल से बन जाते हैं—जैसे जीवन-रेखा, शीर्ष-रेखा और स्वास्थ्य-रेखा के मिलने से एक बृहत् (बड़ा) त्रिकोण बन जाता है। किन्तु इन प्रधान रेखाओं के अलावा कुछ चिह्न नन्ही-नन्ही स्वतन्त्र-रेखाओं से बन जाते हैं। ये चिह्न अनेक प्रकार के होते हैं जिन्हें उनके स्वरूप के अनुसार तारे का चिह्न, क्रॉस

तारे का चिह्न	द्वीप चिह्न	बिन्दु चिह्न
क्रॉस चिह्न	त्रिकोण चिह्न	जाल चिह्न
वर्ग या चतुष्कोण चिह्न	वृत्त चिह्न	त्रिशूल चिह्न

चित्र नं० ११३

त्रिकोण, चतुष्कोण, बिन्दु आदि कहते हैं। साथ के चित्र में इन सब का स्वरूप दिखाया गया है। इसको देखकर पाठक देखेंगे कि एक ही चिह्न कई प्रकार का होता है। इसका कारण यह है कि प्रत्येक मनुष्य की प्राणशक्ति और प्रवृत्तियाँ भिन्न-भिन्न होती हैं। इस कारण मनुष्य का स्वरूप, हाथ का लक्षण और चिह्नों के आकार भी अलग-अलग होते हैं। तारे का चिह्न या क्रॉस प्रायः स्वतन्त्र ही होते हैं। किन्तु त्रिकोण या वर्ग-चिह्न बहुधा किसी प्रधान रेखा पर इस प्रकार बने होते हैं कि एक भुजा प्रधान रेखा बनाती है और अन्य दो या तीन भुजायें अन्य गौण रेखाओं द्वारा बनती हैं।

तारे का चिह्न

बृहस्पति के क्षेत्र पर

तारे का चिह्न मुख्य चिह्नों में से एक है। यह सदैव अशुभ नहीं होता बल्कि अच्छे स्थानों में होने से बहुत उत्तम फल दिखाता है। यदि बृहस्पति-क्षेत्र के सबसे ऊँचे उठे हुए स्थान पर हो तो जातक को बहुत उच्च मान, प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। उसकी महत्वाकांक्षाएँ सफल होती हैं और ऐसा जातक सब कठिनाइयों और विरोधियों पर विजय पाकर पूर्ण गौरव प्राप्त करता है। यदि शीर्ष-रेखा तथा भाग्य और सूर्य-रेखाएँ भी पूर्ण बलिष्ठ और सुन्दर हों तो कोई भी काम इतना ऊँचा नहीं जिसमें जातक सफलता प्राप्त नहीं कर सके। प्रायः ये लक्षण अत्यन्त महत्वाकांक्षी और उच्च पद पर पहुँचने वाले लोगों के हाथ में पाये जाते हैं।

किन्तु यदि ग्रह-क्षेत्र के उच्च शिखर पर यह चिह्न न हो किन्तु क्षेत्र के समाप्ति-स्थान पर बिलकुल तर्जनी उंगली के नीचे या हथेली के बाहरी भाग की ओर हो तो जातक बड़े-बड़े लोगों के सम्पर्क में आता है किन्तु स्वयं किसी बहुत उच्च पद पर नहीं पहुँच पाता यह इस तारे के चिह्न का फल है। यदि हाथ में अन्य शुभ लक्षणों

से महान् पदवी प्राप्त कर ले तो भिन्न बात है।

शनि-क्षेत्र पर

यदि यह तारे का चिह्न शनि-क्षेत्र के सर्वोच्च शिखर पर हो तो किसी भयानक दुर्घटना का लक्षण है; इस चिह्न से मनुष्य बहुत विख्यात हो जाता है। किन्तु नेकनामी से नहीं, बल्कि बदनामी से। बहुत बार इस का फल यह होता है कि जातक को लकवे की बीमारी होती है। पुराने हस्तपरीक्षकों के अनुसार यदि हाथ में अन्य अशुभ लक्षण हों और दोनों हाथों में इसी स्थान पर तारे का चिह्न भी हो तो जातक को फाँसी की सज़ा होती है। किन्तु यदि एक ही हाथ में यह चिह्न हो और वह भी अस्पष्ट और खण्डित रूप में हो तो अस्वास्थ्य का लक्षण है। ऐसे जातक का बुढ़ापा भी अच्छा नही बीतता। यदि यह तारे का चिह्न शुक्र-मेखला पर हो तो जातक को आतशक या सुज़ाक की भयंकर बीमारी होती है। यदि भाग्य-रेखा मध्यमा उंगली के भीतर तक गई हो और भाग्य-रेखा पर—शनि-क्षेत्र पर तारे का चिह्न हो तो जातक का कोई खून करे या हाथ में अन्य अशुभ लक्षण हों तो जातक स्वयं हिंसक प्रवृत्ति का हो। यह तारे का चिह्न शनि-क्षेत्र के बिलकुल किनारे पर—जहाँ शनि-क्षेत्र समाप्त होता है हो—तो जातक किसी ऐसे व्यक्ति के सम्पर्क में आता है जो खून या अन्य दुष्कर्मों के कारण बदनाम हो।

सूर्य-क्षेत्र पर

यदि सूर्य-क्षेत्र के सर्वोच्च शिखर पर तारे का चिह्न हो तो जातक को धन, मान और प्रतिष्ठा तो बहुत ऊँचे दर्जे की प्राप्त होती है किन्तु उसका जीवन सुखी नहीं होता। प्रायः ऐसे व्यक्ति बुढ़ापे में अधिक धनी होते हैं और उच्चपद प्राप्त करते है। इस सफलता की प्राप्ति के लिये जीवन-भर अत्यन्त परिश्रम करने के कारण उनका स्वास्थ्य खराब हो जाता है और उनके मन में भी सदैव अशान्ति रहती है। इस कारण उनका जीवन सुख और शान्तिमय

नहीं होता। यदि यही तारे का चिह्न सूर्य के क्षेत्र की सीमा के आस-पास हो तो जातक उपर्युक्त प्रकार के प्रभावशाली व्यक्ति के सम्पर्क में आता है, किन्तु स्वयं उच्चपद पर नहीं पहुँचता। यदि सूर्य-रेखा के ऊपर यह चिह्न हो तो बहुत शुभ लक्षण है, इसका विवरण सूर्य-रेखा के प्रकरण में दिया गया है। बिलकुल उंगली के मूल में यह उतना प्रभावशाली नहीं होता जितना क्षेत्र के मध्य में; यदि सूर्य-रेखा अच्छी न हो और केवल तारे का चिह्न हो तो बहुत साहस-पूर्ण (जिसमें घाटे की भी आशंका हो) कार्य द्वारा जीवन में धन प्राप्त होता है। किन्तु अच्छी सूर्य-रेखा से युक्त होने से अपनी बुद्धि और परिश्रम से (अन्याय से नहीं) शुभ मार्ग से धन की प्राप्ति होती है।

बुध के क्षेत्र पर

यदि बुध-क्षेत्र के शिखर पर यह चिह्न हो तो वैज्ञानिक आविष्कारों में या व्यापार में जातक बहुत बुद्धिमान होता है और पूर्ण सफलता प्राप्त करता है। बुध-क्षेत्र तथा कनिष्ठिका उंगली से व्यापार-वक्तृत्व शक्ति आदि देखे जाते हैं। इसलिये अन्य लक्षणों से जिस ओर विशेष झुकाव मालूम हो उसी कार्य में सफलता-प्राप्ति कहनी चाहिए। किन्तु यदि यह चिह्न बिलकुल सीमा-प्रदेश पर हो तो जातक केवल उपर्युक्त प्रकार के लोगों के सम्पर्क में आता है। यदि हाथ में अन्य लक्षण बेईमानी के हों तो तारे के चिह्न से बेईमानी बढ़ जाती है। यदि हाथ में शुभ लक्षण हों तो जातक अवश्य बुद्धिमान होता है। वह दूसरे के विचारों और योजनाओं को भली प्रकार समझ सकता है। यदि स्वास्थ्य-रेखा जीवन-रेखा से योग न करती हो और बुध-क्षेत्र तक तिरछी, सुन्दर (लहरदार या टूटी न हो) आवे और इस रेखा के अन्त पर बुध-क्षेत्र के ऊपरी भाग पर तारे का चिह्न हो और बुध-क्षेत्र भी अच्छा हो तो जातक को निरन्तर सफलता प्राप्त होती है। व्यापारियों के हाथ में यह बहुत उत्तम लक्षण है।

मंगल-क्षेत्र पर

यदि मंगल के प्रथम क्षेत्र पर यह चिह्न हो तो जातक धैर्यपूर्वक निरन्तर परिश्रम करने के कारण सफलता प्राप्त करता है। किन्तु हाथ में यदि अन्य अशुभ लक्षण हों और मंगल का क्षेत्र अत्यधिक उन्नत हो तो जातक किसी का खून करता है। यदि क्षेत्र साधारण उन्नत है और उस पर यह चिह्न है तो अन्य अशुभ लक्षण होने से जातक का स्वयं का खून किया जाता है। यदि मंगल के द्वितीय क्षेत्र पर यह चिह्न हो तो लड़ाई में वीरतापूर्वक लड़ने के कारण जातक को सुयश और प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। किन्तु यदि किसी सीधी रेखा (शीर्ष-रेखा के प्रायः समानान्तर) के अन्त में यह चिह्न हो तो जातक के किसी अत्यन्त प्रिय सम्बन्धी (पिता आदि) की मृत्यु का लक्षण है।

चन्द्र-क्षेत्र पर

यदि चन्द्र-क्षेत्र पर तारे का चिह्न हो तो बहुत से हस्तपरीक्षकों के अनुसार यह पानी में डूबने का लक्षण है। यदि शीर्ष-रेखा घूम कर चन्द्र-क्षेत्र के नीचे के भाग पर आती है तो इससे कल्पना की अधिकता प्रकट होती है। उस रेखा के अन्त पर तारे का चिह्न होने से उसकी कल्पना में इतनी अधिकता हो जाती है कि उसे एक प्रकार से मस्तिष्क-विकार समझना चाहिए। अन्य शुभ लक्षणों के साथ यदि चन्द्र-क्षेत्र पर तारे का चिह्न हो तो उसे अशुभ लक्षण नहीं समझना चाहिए। क्योंकि शुभ कल्पना द्वारा यह सफलता और प्रतिष्ठा दिलाता है। किन्तु यदि अन्य अशुभ लक्षण हों तो चन्द्र-क्षेत्र के बिलकुल नीचे के भाग में होने से जातक को जलोदर रोग होने का लक्षण है। यदि मध्य भाग में हो तो पानी में डूबने का; यदि समुद्र-यात्रा-रेखा पर हो तो जहाज़ डूबने का।

शुक्र-क्षेत्र पर

'कीरो' का मत है कि यदि शुक्र-क्षेत्र के सबसे ऊँचे भाग पर या मध्य भाग में यह चिह्न हो तो शुभ लक्षण है। ऐसे जातक को प्रेम

में असाधारण सफलता प्राप्त होती है। प्रायः अधिक प्रेम प्राप्त होने पर भी ईर्ष्या या कलह के कारण प्रेम की मधुरता में कटुता आ जाती है। किन्तु शुक्र-क्षेत्र पर यह चिह्न होने से किसी प्रकार का विघ्न नहीं होता। किन्तु 'सेंट जरमेन' के मत से यदि यह चिह्न बिलकुल अँगूठे के मूल में—शुक्र-क्षेत्र पर हो तभी यह फल घटित होता है। यदि अन्य स्थान पर हो तो किसी प्रिय सम्बन्धी की मृत्यु का लक्षण है। यदि कई तारे के चिह्न पास-पास हों तो जितने चिह्न हों उतने ही प्रिय-जनों की मृत्यु समझनी चाहिए। यदि शुक्र-क्षेत्र पर मणिबन्ध रेखा से एक अँगुल दूर—जहाँ सन्तान-रेखा होती है वहाँ यह चिह्न हो तो किसी स्त्री से प्रेम के द्वारा जातक की भाग्य-हानि का लक्षण है। यदि स्त्री के हाथ में हो तो किसी पुरुष के प्रेम के कारण समझना चाहिये। यदि इसके अतिरिक्त शीर्ष-रेखा भी घूम कर चन्द्र-क्षेत्र पर गई हो तो मस्तिष्क-विकार का लक्षण है।

क्रॉस का चिह्न

बृहस्पति के क्षेत्र पर

कुछ स्थानों के अतिरिक्त तारे का चिह्न प्रायः शुभ लक्षण समझा जाता है किन्तु क्रॉस के चिह्न का प्रभाव अधिकतर अशुभ होता है। यदि बृहस्पति के क्षेत्र पर हो तो जातक को प्रेम या विवाह में सुख और जीवन में सफलता मिलती है। यदि इस लक्षण के साथ-साथ भाग्य-रेखा भी चन्द्र-क्षेत्र से प्रारम्भ हुई हो तो बहुत ही शुभ लक्षण है। जातक को प्रेम-क्षेत्र में पूर्ण सुख प्राप्त होता है। यदि यह क्रॉस जीवन-रेखा के बिलकुल पास हथेली के अन्त में गुरु-क्षेत्र पर हो तो युवावस्था के प्रारम्भ में ही शुभ प्रेम या विवाह-सम्बन्ध होता है। यदि गुरु-क्षेत्र के मध्य में चिह्न हो तो युवावस्था के मध्य में और यदि बिलकुल तर्जनी उंगली के मूल में गुरु-क्षेत्र पर क्रॉस का चिह्न हो तो जवानी ढलने पर यह शुभ अवसर मिलता है।

यहाँ इस ओर ध्यान दिलाना आवश्यक है कि यह क्रॉस का

चिह्न बिलकुल दो स्वतन्त्र नन्ही रेखाओं के एक-दूसरे को काटने से बनेगा तभी शुभ लक्षण समझा जायगा। यदि जीवन-रेखा से कोई शाखा या सूक्ष्म रेखा निकल कर बृहस्पति के क्षेत्र पर आई हो और उसको कोई छोटी रेखा आड़ी काट कर क्रॉस का चिह्न बनावे तो यह अशुभ लक्षण है। इसका अर्थ है कि जीवन-रेखा से निकल कर ऊपर की ओर जाती हुई जो रेखा उन्नति या अभ्युदय सूचित करती थी उसमें बाधा पड़ गई, इसलिये निराशा और असफलता का लक्षण हुआ। इसी प्रकार यदि हृदय-रेखा से निकलकर कोई शाखा या सूक्ष्म रेखा बृहस्पति के क्षेत्र पर जावे और उसको कोई छोटी आड़ी रेखा काटे तो प्रेम में निराशा या इस कारण भाग्य-हानि सूचित होती है।

यदि बृहस्पति के क्षेत्र पर तारे का तथा स्वतन्त्र रेखाओ द्वारा बना क्रॉस-चिह्न ये दोनों शुभ लक्षण हों, तो जातक को विवाह (या प्रेम) द्वारा पूर्ण सुख और प्रतिष्ठा दोनों प्राप्त होती हैं।

शनि के क्षेत्र पर

यदि शनि के क्षेत्र पर क्रॉस का चिह्न हो तो अशुभ लक्षण है। शनि-क्षेत्र से सम्बन्धित जो बीमारी या दुर्घटना या भाग्य-हानि के लक्षण हैं—उन सब में और भी बुराई पैदा करता है। यदि इस स्थान पर भाग्य-रेखा से योग करता हो तो सहसा या किसी दुर्घटना से मृत्यु का लक्षण है। यदि शुक्र-क्षेत्र बहुत छोटा और दबा हुआ हो, सन्तान-रेखाये अस्पष्ट हों और शनि-क्षेत्र पर क्रॉस चिह्न हो तो जातक के सन्तान नहीं होती।

सूर्य-क्षेत्र पर

सूर्य-क्षेत्र पर यह चिह्न होना घोर निराशा, असफलता, धननाश आदि का अशुभ लक्षण है। यदि सूर्य-रेखा से योग करता हो और सूर्य-रेखा बहुत उत्तम हो तो धार्मिक प्रवृत्ति बहुत उत्तम होती है और सफलता भी मिलती है। किन्तु सूर्य-रेखा खराब हो तो

धर्मान्धता होती है। जो कुछ शुभ लक्षण यहाँ बताया गया है वह सूर्य-रेखा की उत्तमता के कारण; क्रॉस का चिह्न तो अशुभ ही है। यदि जातक कलाकार होगा तो कुछ ऐसी गलती करेगा कि उसे असफलता ही मिलेगी। जिनके हाथ में यह चिह्न हो उनको सावधान कर देना चाहिये कि घाटे का या सट्टे का काम न करें वरना बहुत अधिक घाटा सहना पड़ेगा।

बुध-क्षेत्र पर

यदि बुध-क्षेत्र पर क्रॉस-चिह्न हो तो जातक में चालाकी ज़रूरत से ज़यादा होती है। वह दोरंगी बातें करता है, मन में कुछ और बाहर कुछ और। ऐसे लोग प्रायः बेईमान भी होते हैं। यदि हाथ में अन्य अशुभ लक्षण हों तो निश्चय ऐसा व्यक्ति धोखेबाज़ होता है। परन्तु साथ ही उसमें चतुरता इतनी होती है कि जिससे अत्यन्त द्वेष या घृणा रखता हो उसको भी झुक के नमस्कार करेगा और मीठी-मीठी बातें करेगा। यदि छोटे-छोटे कई क्रॉस-चिह्न हों तो उसमें गुप्त दुर्गुण होते हैं।

मंगल के क्षेत्र पर

यदि मंगल के प्रथम क्षेत्र पर यह चिह्न हो तो उसके शत्रु बहुत भयानक रूप से जातक का विरोध करते हैं। यदि मंगल का क्षेत्र अति उच्च हो तो जातक स्वयं भी बड़ा झगड़ालू होता है और स्वयं जातक को चोट लगने या भय की आशंका होती है। यदि मंगल के द्वितीय क्षेत्र पर हो तो करीब-करीब उपर्युक्त किन्तु विशेष भयानक फल होता है। यदि यह क्रॉस बेढंगा-सा बना हो तो जातक की स्वभाव की तीव्रता के कारण आत्महत्या की ओर भी प्रवृत्ति होती है।

चन्द्र-क्षेत्र पर

यदि चन्द्र-क्षेत्र पर क्रॉस का चिह्न हो और शीर्ष-रेखा के नीचे हो तो जातक के विचारों में युक्ति, व्यावहारिकता नहीं होती, इस

कारण वह स्वयं भी धोखे में पड़ा रहता है और किसी कार्य का सफलतापूर्वक सम्पादन नहीं कर सकता। यदि यह चिह्न बहुत बड़ा हो तो जातक धोखेबाज़ होता है। या कम-से-कम अपनी शेख़ी बघारा करता है। स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यह अशुभ लक्षण है। यदि चन्द्र-क्षेत्र के ऊपर के तृतीयांश पर हो तो अन्तड़ियों की बीमारी, उदरविकार आदि होते हैं। यदि मध्य में हो तो वात-विकार गठिया आदि। यदि नीचे के तृतीयांश में हो तो गुर्दे का रोग, मूत्राशय-सम्बन्धी रोग। यदि स्त्रियों के हाथ में हो तो गर्भाशय-सम्बन्धी रोग होते हैं।

शुक्र-क्षेत्र पर

यदि शुक्र-क्षेत्र पर क्रॉस का गहरा चिह्न हो तो किसी सम्बन्धी के (पिता-माता, चाचा आदि) प्रेम के कारण बहुत कठिनता या मुसीबत उठानी पड़ेगी। किन्तु कुछ पाश्चात्य हस्तपरीक्षकों के विचार से यदि यह क्रॉस बड़ा हो तो प्रेम में सफलता का लक्षण है। जातक किसी एक व्यक्ति को ही जी-जान से प्रेम करता है। किन्तु यदि क्रॉस का चिह्न बहुत छोटा हो और जीवन-रेखा के बिलकुल पास हो तो नज़दीकी सम्बन्धियों से कलह और कटुता का लक्षण है।

अन्य स्थान पर

यदि भाग्य-रेखा के पास (उस ओर, जिस ओर जीवन-रेखा है) करतल-मध्य में क्रॉस का चिह्न हो तो जातक के कारबार में उसके सम्बन्धी रिश्तेदार बाधा पहुँचाते हैं। इस कारण कारोबार या नौकरी में महान् परिवर्तन होता है। किन्तु यदि यही चिह्न रेखा के इस ओर न होकर दूसरी ओर (चन्द्र-क्षेत्र की ओर) हो तो कारबार (या नौकरी) की दृष्टि से कोई लम्बी यात्रा की जाये तो परिणाम में निराशा प्राप्त होती है। यदि शीर्ष-रेखा के ऊपर यह चिह्न हो तो सिर में चोट या दुर्घटना का लक्षण है। यदि सूर्य-रेखा के बगल में हो तो पदच्युति और निराशा का लक्षण है। यदि भाग्य-

रेखा के ऊपर क्रॉस का चिह्न हो तो आर्थिक घाटा या धन-प्राप्ति में निराशा होगी। यदि हृदय-रेखा पर क्रॉस-चिह्न हो (यह आवश्यक नहीं कि हृदय-रेखा को स्पर्श करे) तो किसी प्रियजन की मृत्यु का अशुभ लक्षण है।

चतुष्कोण चिह्न

चतुष्कोण या वर्ग-चिह्न कई प्रकार के होते हैं। रेखागणित की परिभाषा के अनुसार वर्ग उसे कहते हैं जिसकी चारों भुजायें बराबर हों और चारों कोण समकोण हों। चतुष्कोण उसे कहते हैं जिसकी चार भुजायें हों परन्तु हस्त-रेखा-चिह्नों में चाहे चारों समकोण हों या, न्यून या अधिक कोण। मोटे तौर पर यदि वर्ग या चतुष्कोण का चिह्न बनता हो तो उन सब का फलादेश चतुष्कोण या वर्ग मानकर ही किया जाता है। इस कारण रेखागणित की भाँति हस्त-रेखा-विज्ञान में परिभाषा की बारीकी से पाबन्दी नहीं करनी चाहिए।

चतुष्कोण चिह्न को अच्छा चिह्न माना गया है। बहुत बार दो प्रधान रेखाओं को यदि दो अन्य रेखायें जोड़ कर चतुष्कोण बनता है तो उसे भी चतुष्कोण मान लिया जाता है और यह तो अकसर होता है कि वर्ग या चतुष्कोण की एक भुजा तो किसी प्रधान रेखा का एक भाग हो और बाकी तीन भुजायें छोटी स्वतन्त्र रेखायें हों।

साधारणतः चतुष्कोण चिह्न किसी विपत्ति से रक्षा सूचित करता है इसलिये यदि किसी अशुभ चिह्न के चारों ओर चतुष्कोण चिह्न हो तो विपत्ति से रक्षा समझनी चाहिये। उदाहरण के लिये जीवन-रेखा खण्डित हो और खण्डित भाग के चारों ओर चतुष्कोण चिह्न हो तो किसी भयानक बीमारी या दुर्घटना होने पर भी जातक की प्राणरक्षा हो जावेगी। यदि खंडित भाग्य-रेखा किसी सुनिर्मित[1]

---

१. जब चतुष्कोण की चारों भुजायें सुस्पष्ट और गहरी हों और अच्छी तरह वर्ग या चतुष्कोण का आकार बनता है तो इसे सुनिर्मित कहते हैं।

चतुष्कोण के अन्दर से जा रही हो तो किसी आर्थिक विपत्ति या कठिनता से रक्षा सूचित करती है। यह तो फलादेश हुआ व्यापारिक-वर्ग के लिये। जो लोग नौकरीपेशा हैं उनके जीवन में नौकरी छूटने का प्रसंग या झंझट उपस्थित होगा। यह भी सम्भव है कि उन्हें किसी अन्य प्रकार से घाटा लग जाये। किन्तु भाग्य-रेखा बिना खण्डित हुए चतुष्कोण के बीच से निकलती हुई—आगे सुन्दर और सबल रूप से चली जाये तो हानि या घाटा नहीं होने पाता। यदि भाग्य-रेखा बीच में टूट कर फिर शुरू हो जाये और इस खण्डित भाग के चारों ओर चतुष्कोण चिह्न हों तो यह समझना चाहिये कि भाग्य-सम्बन्धी कोई महान् संकट उपस्थित हुआ किन्तु थोड़ी ही विपत्ति के बाद रक्षा हो गई, बड़ा संकट टल गया। यदि भाग्य-रेखा के ऊपर ठीक शनि-क्षेत्र के नीचे वर्ग-चिह्न हो तो किसी दुर्घटना से रक्षा सूचित होती है। यदि शीर्ष-रेखा किसी वर्ग-चिह्न के अन्दर होकर जाती हो तो यह प्रकट होता है कि जातक को घोर मानसिक परिश्रम करना पड़ा या घोर चिन्ता के कारण उपस्थित हुए, परन्तु जातक का दिमाग़ सही-सलामत रहा। यदि यह चिह्न शनि-क्षेत्र के नीचे शीर्ष-रेखा पर हो तो सिर की गहरी चोट से रक्षा हुई।

यदि हृदय-रेखा किसी वर्ग-चिह्न के अन्दर से जाती हो तो प्रेम के कारण गहरी विपत्ति या कष्ट की द्योतक है। यदि यह वर्ग-चिह्न उपर्युक्त प्रकार का शनि-क्षेत्र के नीचे हो तो जातक के किसी अत्यन्त प्रेमी व्यक्ति की दुर्घटना से मृत्यु होती है। ये उदाहरण इसलिये दिये गये हैं कि इसी के अनुसार अन्य किसी रेखा पर या उसके चारों ओर वर्ग-चिह्न हो तो रेखा और स्थान का तारतम्य करके नतीजा निकालना चाहिये।

चित्र नं० ११४

ग्रह-क्षेत्रों पर वर्ग-चिह्न का प्रभाव

यदि बृहस्पति के क्षेत्र पर वर्ग-चिह्न हो तो अत्यधिक उत्साह या घमण्ड से जातक को बचाता है। बहुत बार मनुष्य इस कारण सफल नहीं होता कि वह अपनी हैसियत से कहीं ऊँची वस्तु पाने की महत्वाकांक्षा रखता है। इसी प्रकार व्यापार में सम्भावना से कहीं अधिक लाभ की आशा में मनुष्य रुपया बुरी तरह लगा देता है। बृहस्पति-क्षेत्र अत्यधिक उन्नत होने से मनुष्य में अभिमान की मात्रा भी बहुत अधिक हो जाती है और इसका परिणाम बुरा होता है। इन सब बातों से वर्ग-चिह्न रक्षा करता है। यदि शनि-क्षेत्र पर हो तो किसी दुर्घटना से जातक को बचाता है अर्थात् दुर्घटना हो तो भी जातक की मृत्यु नहीं होती। यदि वर्ग के अन्दर तारे का चिह्न हो तो कोई व्यक्ति जातक को कत्ल करने का उद्योग करेगा किन्तु जातक की रक्षा हो जायगी। यदि वर्ग के चारों कोणों पर लाल बिन्दु हो तो आग में जल जाने की दुर्घटना उपस्थित होगी किन्तु जातक बच जावेगा।

यदि सूर्य-क्षेत्र पर वर्ग-चिह्न हो तो जातक में अत्यधिक यश-लिप्सा नहीं होती। जिसके हाथ में यह चिह्न होता है वह इस भावना से कि मेरी ख्याति हो जायगी आर्थिक दृष्टिकोण को बिलकुल भुला दे—ऐसा नहीं होता। ऐसा व्यक्ति व्यापारियों से कस कर पैसा लेता है। अधिक धन-संचय करने पर भी उसमें घमण्ड नहीं होता।

यदि बुध-क्षेत्र पर यह चिह्न हो तो जातक में विशेष चंचलता नहीं होती बल्कि वह स्थिर प्रकृति का होता है। भारी आर्थिक घाटे से भी यह चिह्न रक्षा करता है।

यदि मंगल का प्रथम क्षेत्र खासा उन्नत हो तो जातक का गुस्से का स्वभाव होता है। परन्तु उस पर यदि वर्ग-चिह्न हो तो वह

संयम द्वारा अपने क्रोध को काबू में रखता है। यदि यह क्षेत्र नीचा हो और इस पर वर्ग-चिह्न हो तो समझना चाहिए कि जातक के शत्रु उस पर शारीरिक हमला करेंगे किन्तु उसकी रक्षा हो जावेगी।

यदि चन्द्र-क्षेत्र पर यह चिह्न हो तो अत्यधिक कल्पना से (खयाली पुलाव पकाना) जो दोष होते हैं उनसे रक्षा होती है। यदि जल में डूबने के या अन्य अशुभ लक्षण चन्द्र-क्षेत्र पर हों तो वर्ग-चिह्न उन सब दुर्घटनाओं से रक्षा करता है।

यदि शुक्र-क्षेत्र पर वर्ग-चिह्न हो तो अत्यधिक कामवासना के कारण जातक किसी कठिनाई या परेशानियों में नहीं पड़ता। यदि शुक्र-क्षेत्र के बिलकुल बीच में यह चिह्न हो तो मनुष्य किसी से प्रेम हो जाने के कारण अनेकों झंझटों और मुसीबतों में पड़ जायगा लेकिन बिना किसी खास नुकसान के उनसे सही-सलामत निकल जावेगा। यदि शुक्र-क्षेत्र पर बिलकुल नीचे और जीवन-रेखा के बिलकुल पास यह चिह्न हो तो या जातक को जेल होती है अथवा वह कुछ काल के लिये एकान्तवास करता है।

यदि वर्ग-चिह्न जीवन-रेखा से भिड़ा हुआ, जीवन-रेखा के बाहरी भाग पर हो (जीवन-रेखा के एक ओर शुक्र-क्षेत्र होता है इसलिये दूसरी ओर) तो भी जातक को जेल होती है या वह एकान्त-वास करता है।

जाल-चिह्न

जब अनेक छोटी-छोटी सीधी और आड़ी रेखायें एक-दूसरे को काटती हुई जाल-सी बना दें तो उन्हें जाल-चिह्न कहते हैं। प्रायः ये ग्रह-क्षेत्रों पर अधिक दिखाई देते हैं। यह अशुभ लक्षण है। जिस ग्रह-क्षेत्र पर यह चिह्न हो उस ग्रह-सम्बन्धी जातक की उन्नति में बाधा पड़ती है। प्रायः उस ग्रह से सम्बन्धित कोई अवगुण जातक की प्रकृति में ऐसा होता है जिसके कारण वह उन्नति नहीं कर पाता।

यदि बृहस्पति के क्षेत्र पर जाल-चिह्न हो तो जातक में मिथ्या

अभिमान, दूसरे को दबाकर रखने की चेष्टा, धर्मान्धता तथा चरित्र-हीनता के दुर्गुण होते हैं। यदि शनि-क्षेत्र पर हो तो जिन्दगी-भर जातक भाग्यहीन रहता है, ख़ास तौर पर आर्थिक दृष्टि से बुढ़ापा बुरा बीतता है। अन्य अशुभ लक्षण होने से जातक जेल भी जाता है। इस क्षेत्र पर जाल-चिह्न का यह भी प्रभाव होता है कि जातक सदैव दुःखी और गमगीन रहता है।

यदि सूर्य-क्षेत्र पर यह चिह्न हो तो जातक में घमण्ड बहुत होता है। उसके दिल में बस एक ही भावना प्रबल होती है कि वह प्रसिद्ध हो जाये और इसलिए बेवक़ूफ़ियाँ करता है। वास्तव में जातक में योग्यता तो होती है कम परन्तु वह समझता है कि वह बहुत योग्य है और इस कारण वह अपनी सही स्थिति को समझकर जो थोड़ी सी सफलता प्राप्त कर सकता था वह भी नहीं कर पाता। यदि बुध-क्षेत्र पर जाल का चिह्न हो तो मनुष्य अस्थिर बुद्धि का होता है, उसके मन में उचित-अनुचित का भी विचार नहीं होता और बेईमानी करता है। यदि अन्य अशुभ लक्षण हों तो इस बेईमानी के कारण गहरी यातना भोगनी पड़ती है (जेल जाना आत्महत्या करना आदि)। यदि मंगल के क्षेत्र पर यह चिह्न हो तो रक्तस्राव का रोग या चोट लगने से रक्तस्राव होता है। यदि मंगल का क्षेत्र बहुत उन्नत हो तो जातक स्वयं किसी का खून बहाना चाहता है। यदि जाल-चिह्न इतना बड़ा हो कि आधा मंगल-क्षेत्र और चन्द्र-क्षेत्र का ऊपर का तृतीयांश जाल-चिह्न से भरा हुआ हो तो उदर-विकार व अंतड़ियों की बीमारी होती है।

जिस व्यक्ति के चन्द्र-क्षेत्र पर जाल-चिह्न होता है उसके मन में सदैव अस्थिरता, अशांति और असन्तोष रहता है। यदि इसके साथ-साथ (१) हृदय-रेखा शृंखलाकार या द्वीपयुक्त हो तो ऐसे आदमी अस्थिर प्रेम-सम्बन्ध वाले, व्यभिचारी प्रवृत्ति के होते हैं।

(२) यदि शीर्ष-रेखा शृंखलाकार, घूमी हुई या अन्य अशुभ

लक्षणयुक्त हो तो मस्तिष्क-विकार होता है।

(३) शनि-क्षेत्र पर तारे का चिह्न हो तो लकवा या Apoplexy का भय।

(४) यदि सूर्य-रेखा बहुत सुन्दर हो तो सुन्दर काव्य लिखने की शक्ति होती है।

चन्द्र-क्षेत्र को तीन भागों में बाँटना चाहिये। ऊपर के तृतीयांश पर जाल-चिह्न हो तो उदर-विकार, अन्तड़ियों की बीमारी, यदि मध्य तृतीयांश में हो तो वात-विकार, गठिया आदि। यदि नीचे के तृतीयांश में हो तो गुर्दे का रोग या मूत्राशय-सम्बन्धी रोग समझने चाहिये। यदि स्त्रियों के हाथ में नीचे के तृतीयांश में जाल-चिह्न हो तो गर्भाशय-सम्बन्धी रोग का लक्षण है।

यदि शुक्र-क्षेत्र पर जाल-चिह्न हो तो जातक बहुत कामुक होता है। जिधर तबीयत आई उधर ही चले गये। जिससे प्रेम करना है उसकी स्थिति, प्रतिष्ठा आदि का विचार जातक नहीं करता। यदि साथ ही शुक्र-क्षेत्र चपटा और सख़्त हो तो जातक में सौन्दर्य-प्रियता या प्रेम-सम्बन्धी उच्च भावना नहीं रहती। वह केवल व्यभिचारी होता है।

त्रिकोण-चिह्न

यह शुभ लक्षण है, परन्तु प्रधान रेखा या रेखाओं के मिलने से हाथ में अनेक त्रिकोण बनते हैं उनका लक्षण यहाँ नहीं दिया जा रहा है। यहाँ केवल उन त्रिकोण चिह्नों का लक्षण देते हैं जो शुद्ध स्वतन्त्र रूप से किसी ग्रह-क्षेत्र पर स्पष्ट हों। यदि बृहस्पति-क्षेत्र पर त्रिकोण चिह्न हो तो ऐसा व्यक्ति नीतिकुशल और बुद्धिमान होता है। उसमें प्रबन्ध-कुशलता भी बहुत अधिक होती है और वह मातहत लोगों से अच्छी तरह काम ले सकता है। यदि शनि-क्षेत्र पर हो तो गुप्त विद्याओं (योग, ज्योतिष, मंत्र-तंत्र आदि) में विशेष बुद्धि लगती है। किंतु यदि मध्यम उंगली के तृतीय

पर्व पर तारे का चिह्न भी हो तो जातक अपनी उपर्युक्त योग्यता द्वारा दूसरे को हानि पहुँचाता है। यदि सूर्य-क्षेत्र पर त्रिकोण चिह्न हो तो ख्याति-प्राप्त होने पर भी जातक में घमण्ड नहीं होता। वह अपनी कला या बुद्धि का व्यावहारिक दृष्टि से उपयोग करता है। जिससे उसको सफलता और ख्याति प्राप्त होती है।

यदि बुध-क्षेत्र पर हो तो बुद्धि में स्थिरता होती है और व्यापार तथा धनोपार्जन में सफलता प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति राजनीति-कुशल भी होता है। यदि मंगल के क्षेत्र पर हो तो विपत्ति के समय भी मनुष्य नहीं घबराता और शांतिपूर्वक संकट से निकलने की युक्ति सोचता है। यदि किसी फ़ौजी जनरल के हाथ में यह चिह्न हो तो वह बड़े तरीके से अपनी फ़ौजों को लड़ायेगा। सैनिक उत्कृष्टता का यह उत्तम लक्षण है।

जिन व्यक्तियों के चन्द्र-क्षेत्र पर त्रिकोण चिह्न होता है वे कल्पना के बहाव में बह नहीं जाते। कल्पना का उचित प्रयोग करते हैं और किसी कार्य को तरतीब से सोचकर उसका सम्पादन करते हैं। कल्पना और बुद्धि के संयोग से ऐसे व्यक्तियों को सफलता प्राप्त होती है।

यदि शुक्र-क्षेत्र पर त्रिकोण-चिह्न हो तो ऐसा जातक प्रेम के तूफ़ान में बह नहीं जाता। उसमें विचार-शक्ति और संयम होता है। वह ठण्डे दिमाग से सोचकर प्रेम-सम्बन्ध करता है।

त्रिशूल-चिह्न

किसी भी ग्रह-क्षेत्र पर त्रिशूल चिह्न पाया जाय तो यह शुभ लक्षण है। जिस ग्रह के क्षेत्र पर यह हो उस ग्रह-सम्बन्ध। सफलता का लक्षण है।

वृत्त-चिह्न

पृष्ठ ३३७ पर दिये गये वृत्त चिह्न देखिये। यद्यपि रेखा-गणित

की परिभाषा के अनुसार वृत्त-चिह्न बिलकुल गोल नहीं होते फिर भी वृत्त-चिह्न की भाँति गोलाई लिए हुए जो चिह्न मिलते हैं उन्हें वृत्त-चिह्न कहते हैं। यदि किसी प्रधान रेखा पर यह चिह्न हो तो यह प्रकट होता है कि उस समय जातक कठिनाई में पड़ेगा। बार-बार उन कठिनाइयों से निकलने की चेष्टा करेगा—उसे मालूम होगा कि वह किनारे पर आ लगा है, परन्तु फिर फिसल कर गड्ढे में जा पड़ेगा और कठिनाइयों का क्रम बना रहेगा।

यदि बृहस्पति-क्षेत्र पर यह चिह्न हो तो कुछ हस्त-परीक्षकों ने इसे सफलता का लक्षण बताया है। एक तो साधारणतः इस क्षेत्र पर यह चिह्न पाया ही नहीं जाता और जहाँ मिला भी वहाँ हमारे अनुभव से यह शुभ लक्षण सिद्ध नहीं हुआ। शनि-क्षेत्र पर भी यही फल समझना चाहिये। सूर्य-क्षेत्र पर यह चिह्न हो तो जातक की अत्यन्त ख्याति होती है। किन्तु यदि वृत्त-चिह्न सुस्पष्ट और पूर्ण न हो अर्थात् अच्छी प्रकार से न बना हो और सूर्य-रेखा भी दुर्बल हो तो अशुभ लक्षण समझना चाहिये। वृद्धावस्था में नेत्रों की ज्योति क्षीण हो जायगी। बुध-क्षेत्र पर यह बहुत अशुभ लक्षण है। यदि किसी जातक के हाथ पर स्पष्ट वृत्त-चिह्न बन रहा हो तो जहरीले पदार्थ खाने से उसकी मृत्यु होती है। मंगल के क्षेत्र पर भी यह अशुभ लक्षण है। आँख में चोट लगती है। चन्द्र-क्षेत्र पर होने से ऐसा व्यक्ति डूब कर मरता है। शुक्र-क्षेत्र पर होने से जातक को लम्बे अरसे तक कोई रोग होता है और वह बीमारी कुछ-न-कुछ परेशान करे रहती है।

धब्बे या बिन्दु-चिह्न

यह भी अशुभ लक्षण है। दोनों का फल प्रायः एक-सा है। पहले बताया जा चुका है कि यह रोग का लक्षण है। जीवन-रेखा के सिलसिले में इसका काफ़ी हवाला दिया गया है। यदि इनका रंग

काला या नीला हो तो स्नायु-सम्बन्धी रोग होते है। यदि स्वास्थ्य-रेखा पर लाल बिंदु या धब्बे हों तो बुखार और यदि इसी प्रकार का कोई धब्बा शीर्ष-रेखा पर हो तो सिर में चोट लगती है।

बृहस्पति के क्षेत्र पर होने से आदमी की बदनामी और बरबादी होती है। बहुत घाटा लगने या अन्यान्य कारण से मानभंग, निर्धनता आदि का लक्षण है। यदि शनि-क्षेत्र पर हो तो दुष्प्रवृत्ति होती है। ये बुरी भावनाएँ किस तरफ़ जावेंगी इनका परिचय शीर्ष तथा हृदय-रेखाओं से लगेगा। यदि सूर्य-क्षेत्र पर यह चिह्न हो तो मान-भंग, प्रतिष्ठा नाश आदि का अत्यन्त अशुभ लक्षण है। बुध-क्षेत्र पर होने से व्यापार में गहरा घाटा लगता है। यदि मसूर की तरह बड़ा चिह्न हो तो किसी दुर्घटना से शरीर में चोट भी लगती है। मंगल-क्षेत्र पर होने से जातक की किसी के साथ लड़ाई होती है और उसके चोट लगती है। किन्तु यदि मंगल-क्षेत्र उन्नत हो तो जातक दूसरे को घायल करता है। यदि चंद्र-क्षेत्र पर हो तो स्नायु-सम्बन्धी या मस्तिष्क-सम्बन्धी विकार होता है; यदि अन्य अशुभ लक्षण हों तो पागलपन वरना साधारण रोग समझना चाहिये। शुक्र-क्षेत्र पर ऐसा चिह्न होने से आतशक, सुज़ाक या इसी प्रकार का रोग होता है। यदि काला चिह्न हो तो इसी रोग की भयंकरता समझनी चाहिए।

ग्रह-क्षेत्र पर एक या अधिक सीधी या आड़ी रेखाओं का फल

बृहस्पति-क्षेत्र पर

यदि वृहस्पति-क्षेत्र पर जहाँ तर्जनी और अनामिका उंगलियाँ मिलती हैं, कोई खड़ी रेखा हो[1] तो अंतड़ियों की कमज़ोरी—उदर-विकार होता है। यदि वृहस्पति-क्षेत्र के मध्य में कोई खड़ी रेखा हो तो उस क्षेत्र के शुभ-फल को बढ़ाती है किन्तु यदि दो

---

१. उंगलियों की दिशाओं में जो रेखा हो वह खड़ी रेखा और हृदय-रेखा की दिशा में जो रेखायें हों उन्हें इस प्रकरण में आड़ी रेखा कहा गया है।

समानांतर खड़ी रेखाएँ हों तो ऐसे आदमी की महत्वाकांक्षाएँ दो दिशाओं को जाती हैं, इस कारण उसे सफलता नहीं होती। यहाँ यह भी स्मरण रखना चाहिए कि एक खड़ी रेखा का जो शुभ फल बताया गया है वह तभी होता है जब वह किसी प्रधान-रेखा को न काटे। उदाहरण के लिए जिस एक खड़ी रेखा का होना शुभ बताया गया है वह यदि हृदय-रेखा या हृदय-रेखा की शाखा को काटे तो पूर्ण अशुभ फल होगा।

यदि गुरु-क्षेत्र पर छोटी-छोटी चार, पाँच या अधिक खड़ी रेखाएँ हों तो ऐसा व्यक्ति बारम्बार सफलता के लिए उद्योग करेगा किन्तु उसे सफलता प्राप्त न होगी। यदि बृहस्पति-क्षेत्र पर छोटी-छोटी आड़ी रेखाएँ हों तो असफलता का चिह्न है। ऐसे व्यक्ति को बारम्बार घाटा होता है।

शनि-क्षेत्र पर

यदि शनि-क्षेत्र पर केवल एक ही खड़ी रेखा हो तो शुभ चिह्न है। ऐसा व्यक्ति बहुत भाग्यशाली होता है। किन्तु यदि यह रेखा स्वतन्त्र रेखा न हो केवल भाग्य-रेखा का ही अंतिम भाग हो और भाग्य-रेखा कई जगह कटी हो तो ऐसे जातक का बुढ़ापा साधारण तथा शान्तिपूर्वक बीतता है। यदि भाग्य-रेखा के दोनों ओर एक-एक छोटी समानान्तर-रेखा हो तो जीवन के अन्तिम भाग में बहुत परिश्रम के फलस्वरूप सफलता प्राप्त होती है। यदि शनि-क्षेत्र पर कई खड़ी रेखा हों तो दुर्भाग्य का लक्षण है। जितनी अधिक रेखाएँ होंगी उतना ही अधिक दुर्भाग्य समझना चाहिए। यदि कई रेखाएँ न तो बिलकुल आड़ी हों न बिलकुल सीधी किन्तु करीब ४५° का कोण बनाती हुईं, हृदय-रेखा को काटती हुईं शनि-क्षेत्र पर आवें तो वात-विकार, वायु का लक्षण है।

यदि कोई छोटी रेखा आड़ी हो और भाग्य-रेखा को काटे तो अशुभ लक्षण है। भाग्य में हानि होती है। यदि सूर्य-रेखा सूर्य-क्षेत्र

पर अच्छी न हो तो शनि-क्षेत्र पर भाग्य-रेखा का कटना विशेष अशुभ लक्षण समझना चाहिये। यदि कई छोटी-छोटी आड़ी रेखाएँ एक के ऊपर एक नसेनी-सी बनाती हों तो ऐसे जातक की क्रमशः उन्नति होती है।

सूर्य-क्षेत्र पर

यदि सूर्य-क्षेत्र पर एक शुद्ध, गम्भीर खड़ी रेखा हो तो जातक बहुत धनी और यशस्वी होता है। यदि दो रेखायें हों तो ऐसा व्यक्ति दो ओर अपनी बुद्धि और ध्यान को लगाता है इस कारण उसे सफलता प्राप्त नहीं होती। किन्तु यदि एक प्रधान सूर्य-रेखा हो और दूसरी उसकी सहायक-रेखा हो तो शुभ फल है। यदि कई खड़ी रेखा हों तो न शुद्ध रूप से साहित्यिक या कलात्मक प्रवृत्ति होती है न वैज्ञानिक या व्यावसायिक। इस कारण जातक का मन किसी एक कार्य में स्थिरतापूर्वक नहीं लगता। अनेक बात करने का विचार करता है और परिणाम कुछ नहीं निकलता।

बुध-क्षेत्र पर

यदि बुध-क्षेत्र पर एक खड़ी रेखा हो तो अकस्मात् आर्थिक उन्नति या व्यापार से लाभ होता है। यदि यह रेखा बहुत गहरी हो और अन्य लक्षण भी विज्ञान की ओर प्रवृत्ति करते हों तो वैज्ञानिक आविष्कार में विशेष सफलता मिलती है। यदि कई खड़ी रेखाएँ हों तो ऐसा व्यक्ति यदि डाक्टरी पढ़े तो कुशल चिकित्सक हो सकता है। यदि स्त्री के हाथ में हो तो वह भी डाक्टर होती है या डाक्टर से विवाह करती है। किन्तु यदि छः से अधिक और अत्यन्त सूक्ष्म खड़ी रेखाएँ हों तो जातक बहुत चालाक होता है। यदि वैज्ञानिक हो तो विज्ञान का दुरुपयोग करता है। यदि ये रेखाएँ हृदय-रेखा का स्पर्श करें तो जातक उदारता के आवेश में रुपया बरबाद करता है। यदि किसी स्त्री के हाथ में बुध-क्षेत्र पर कई छोटी-छोटी खड़ी रेखायें हों तो वह बहुत बातूनी होती है। यदि

बुध के क्षेत्र पर एक गहरी आड़ी रेखा हो तो जातक के घर में चोरी होती है और द्रव्य-हानि का लक्षण है ।

मंगल के क्षेत्र पर

यदि मंगल के क्षेत्र पर एक खड़ी रेखा हो तो जातक में साहस होता है । विपत्ति में भी उसका दिमाग ठण्डा रहता है । घबराता नहीं । यदि कई घिचपिच लाइनें हों तो जातक को क्रोध बहुत आता है । उसके चित्त में कठोरता होती है और यह चरित्रहीनता का भी लक्षण है । यदि हाथ के अन्य लक्षणों से अस्वास्थ्य सूचित होता हो तो फेफड़े या गले की बीमारी होती है । खास तौर पर यदि यह रेखा द्विशाखायुक्त हो जाये ।

यदि मंगल-क्षेत्र पर कई आड़ी रेखायें हों तो शत्रुता प्रकट करती हैं । यदि ये रेखायें गहरी और लम्बी हों तो शत्रु भी शक्तिशाली होंगे । यदि हलकी और छोटी हों तो शत्रु विशेष पराक्रमी न होंगे । यदि ये रेखायें बहुत बड़ी हों और स्वास्थ्य-रेखा को काटें तो शत्रुता के कारण स्वास्थ्य में खराबी होगी । यदि सूर्य-रेखा को काटें तो मान-प्रतिष्ठा में बट्टा लगेगा और धनहानि भी होगी । यदि भाग्य-रेखा को काटें तो जातक के कारबार को गहरा धक्का लगेगा या नौकरी छूटेगी । यदि यह जीवन-रेखा को काटे तो रिश्तेदार या अपने मित्र ही छिपे हुए दुश्मन होंगे ।

चन्द्र-क्षेत्र पर

यदि चन्द्र-क्षेत्र पर एक खड़ी रेखा हो तो अशुभ लक्षण है । यदि इस खड़ी रेखा को कोई छोटी आड़ी रेखा काटे (खास तौर पर चन्द्र-क्षेत्र के मध्य भाग में) तो गठिया, वायु-विकार की बीमारी होती है । यदि बहुत-सी टूटी-फूटी खड़ी रेखायें हों तो मस्तिष्क की कमज़ोरी से नींद नहीं आती । यदि हाथ के बाहरी भाग से प्रारम्भ होकर एक या अनेक आड़ी रेखा हों तो समुद्र-यात्रा या लम्बी

यात्रा होती है। यदि यह यात्रा-रेखा टूटी हो या द्वीपयुक्त हो या किसी छोटी रेखा से कटी हो तो यात्रा में भय या अशुभ परिणाम होता है। यदि यह रेखा हृदय-रेखा तक जाय और वहाँ जाकर समाप्त हो जाय तथा उस स्थान पर (हृदय-रेखा पर) तारे का चिह्न हो तो जातक सब कुछ का त्याग कर अपने प्रेमी (या प्रेमिका) को लेकर दूर देश चला जावेगा।

यदि चन्द्र-क्षेत्र पर बहुत-सी घिच-पिच रेखायें हों और शीर्ष-रेखा द्वीपयुक्त या शृंखलाकार घूमकर चन्द्र-क्षेत्र पर आवे और वहाँ शीर्ष-रेखा के अन्त पर तारे का चिह्न भी हो तो जातक पागल हो जाता है।

शुक्र-क्षेत्र पर

यदि जीवन-रेखा के समानान्तर, मंगल-रेखा की भाँति अन्य रेखा हो तो जातक का प्रेम-सम्बन्ध प्रकट करती है। यदि शुक्र-क्षेत्र पर दो या तीन खड़ी रेखायें हों तो जातक के प्रेम-सम्बन्ध में स्थिरता नहीं होती अर्थात् कई सम्बन्ध होते हैं।

यदि गहरी आड़ी रेखायें हों और अँगुष्ठ-मूल से निकलकर जीवन-रेखा तक आयें तो समझना चाहिये कि जातक के जीवन में किसी समय स्त्रियों का प्रभाव उस पर विशेष रहा है। यदि स्त्री के हाथ में ऐसी रेखा हो तो पुरुष का प्रभाव विशेष समझना चाहिए।

यदि इन `खाओं में से किसी के बीच में द्वीप-चिह्न हो तो अनुचित प्रेम-सम्बन्ध प्रकट होता है।

शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ होकर जो प्रभाव या चिन्ता-रेखायें करतल-मध्य की ओर आती हैं उनका विस्तृत वर्णन भिन्न प्रकरण में दिया गया है।

बृहत् चतुष्कोण में विविध चिह्न और उनका फल

रेखाएँ—यदि हाथ बड़ा हो, हथेली लम्बी हो, उँगलियाँ छोटी

हों और उनमें गाँठें न निकली हों और इस भाग में बहुत-सी सूक्ष्म रेखा हों तो मस्तिष्क कमज़ोर होता है, इस कारण कम बुद्धि, मानसिक उद्वेग तथा स्वभाव में चिड़चिड़ापन होता है (देखिये चित्र नं० ११५)

चित्र नं० ११५

खड़ी रेखा—यदि इस भाग से प्रारम्भ होकर कोई रेखा सूर्य-क्षेत्र पर जावे तो किसी बड़े आदमी की सहायता के कारण सफलता मिलती है।
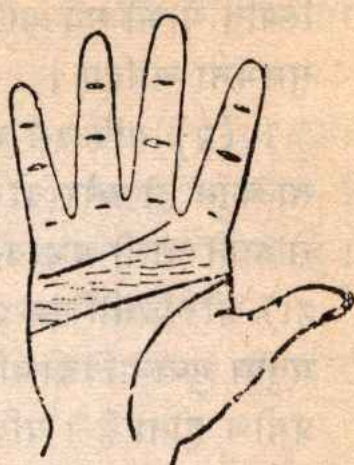
आड़ी-रेखा—यदि हृदय-रेखा तथा शीर्ष-रेखा के समानान्तर कोई दो शाखायुक्त रेखा हो तो मनुष्य नासमझी से कार्य करता है, (जिस अवसर जो नहीं करना चाहिए वह करता है) और हानि उठाता है।

लाल बिन्दु चिह्न—यदि हाथ में अन्य लक्षण खराब हों तो ऐसा मनुष्य किसी का कत्ल करता है या गहरी चोट पहुँचाता है। परन्तु यदि जीवन-रेखा आदि यह सूचित करती हों कि स्वयं इसकी आकस्मिक मृत्यु होगी तो स्वयं जातक को कोई कत्ल करता है या गहरी चोट पहुँचाता है।

सफ़ेद चिह्न—शारीरिक कमज़ोरी, खराब स्वास्थ्य का लक्षण है।

क्रॉस-चिह्न—(१) यदि क्रॉस-चिह्न इस प्रकार बना हो कि हृदय-रेखा को स्पर्श करे तो ऐसे पुरुष पर किसी स्त्री का प्रभाव होता है। यदि स्त्री के हाथ में हो तो पुरुष का प्रभाव समझना चाहिए। यदि यह क्रॉस भाग्य-रेखा या सूर्य-रेखा को स्पर्श न करे तो शुभ लक्षण है। यदि शीर्ष-रेखा को स्पर्श करे तो जिसके हाथ में चिह्न हो वह अन्य स्त्री-पुरुष पर विशेष प्रभाव डालता है। इस

स्थिति में भी सूर्य या भाग्य-रेखा को स्पर्श करे तो अशुभ अन्यथा शुभ समझना चाहिए।

(२) यदि इस भाग में शनि-क्षेत्र के नीचे सुन्दर, सुस्पष्ट, बड़ा-सा क्रॉस हो और दो छोटी स्वतन्त्र रेखाओं से बनता हो (शुक्र-क्षेत्र से आने वाली प्रभाव-रेखा, भाग्य-रेखा, सूर्य-रेखा आदि से न बनता हो) और अतीन्द्रिय ज्ञान-रेखा (Line of Intuition) स्पष्ट हो तो मनुष्य गुप्त विद्याओं (मंत्रशास्त्र, तंत्र, ज्योतिष आदि) में बहुत प्रवीण होता है। यदि यह भाग्य-रेखा को स्पर्श करे तो धार्मिक या धर्म-सम्बन्धी कार्यों के कारण भाग्य-वृद्धि का लक्षण है।

ऊपर जो 'क्रॉस'-चिह्न के फल बताये गये हैं वे तभी शुभ फल देंगे जब वे सुन्दर और स्पष्ट हों। यदि अस्पष्ट क्रॉस-चिह्न दोनों हाथों में हो तो अशुभ लक्षण है। जो ग्रह-क्षेत्र हाथ में अत्युन्नत हो उस पर अशुभ चिह्न के कारण जो हानि बताई गई है उसमें वृद्धि करते हैं। यदि बृहस्हति-क्षेत्र अत्युन्नत हो तो अत्यधिक महत्वाकांक्षा के कारण हानि, शनि-क्षेत्र उन्नत हो तो दुःखी स्वभाव और नैराश्य, सूर्य-क्षेत्र अति उन्नत हो तो अति अभिमान और लोभ; बुध-क्षेत्र अति उन्नत हो तो धोखा देने या चोरी करने की प्रवृत्ति; चन्द्र-क्षेत्र हो तो पागलपन का रोग (भविष्य में), मंगल का प्रथम क्षेत्र अति उच्च हो तो अत्यन्त क्रोधी स्वभाव, शुक्र-क्षेत्र अति उच्च हो तो कामुकता तथा व्यभिचार की प्रवृत्ति, मंगल का द्वितीय क्षेत्र दोषयुक्त हो तो कायरता व भाग्य-हानि का कारण होता है।

तारे का चिह्न—यदि बृहत् चतुष्कोण में शनि-क्षेत्र के नीचे तारे का चिह्न हो तो मनुष्य की भाग्यवृद्धि बहुत अधिक होती है और उसे अपने कारबार या नौकरी में प्रमुखता प्राप्त होती है। यदि सूर्य-क्षेत्र के नीचे वाले भाग में हो तो बहुत धन प्राप्त होता है अथवा कला या साहित्य में यश-प्राप्ति होती है। बुध-क्षेत्र के नीचे

हो तो व्यापार या वैज्ञानिक क्षेत्र में या इंजीनियरी आदि में सफलता का लक्षण है।

यदि तारे का चिह्न भाग्य-रेखा के दाहिनी ओर (दाहिने हाथ में) या बायें हाथ में (भाग्य-रेखा के बायीं ओर) बृहत् चतुष्कोण में हो और हृदय-रेखा टूटी हो तो किसी स्त्री से अत्यन्त प्रेम होता है। स्त्री के हाथ में पुरुष (या पति) का प्रेम समझना चाहिए।

त्रिकोण-चिह्न—गम्भीर वैज्ञानिक विषयों के अध्ययन की ओर प्रवृत्ति होती है।

वर्ग-चिह्न—यदि बृहत् चतुष्कोण सुन्दर आकार का हो तो मनुष्य दयालु स्वभाव का होता है। किन्तु यदि वर्ग-चिह्न हो तो दयालु स्वभाव होने पर भी अत्यन्त क्रोधी होता है। यदि किसी रेखा (भाग्य-रेखा या सूर्य-रेखा आदि) का स्पर्श करे तो उस रेखा की त्रुटि की पूर्ति करता है।

वृत्त-चिह्न—(१) नेत्र-रोग का लक्षण है।

(२) यदि शनि-क्षेत्र के नीचे तीन वृत्त-चिह्न एक-दूसरे को स्पर्श करते हुए हों तो मिरगी का रोग होता है।

जाल-चिह्न—यदि बृहत् चतुष्कोण बहुत चौड़ा हो और मंगल-क्षेत्र बहुत उच्च हो और बृहत् चतुष्कोण में जाल-चिह्न हो तो ऐसा व्यक्ति पागल की तरह बकता या अधिक बोलता है।

बृहत् त्रिकोण में विविध चिह्न और उनका फल

बिन्दु-चिह्न—यदि स्त्रियों के हाथ में लाल बिन्दु-चिह्न हो तो उनके गर्भिणी होने का लक्षण है। यदि सफ़ेद बिन्दु-चिह्न हो तो खून की कमी, कमजोरी से मूर्च्छा रोग का लक्षण है।

रेखा—(क) जीवन-रेखा से निकल कर यदि ऊपर की ओर रेखायें जावें (देखिए चित्र नं० ११६) तो यह बहुत शुभ लक्षण है। जिस अवस्था में जीवन-रेखा से ये शाखा-रेखा निकलें उस वर्ष में धनागम, भाग्योदय, यश, प्रतिष्ठा-वृद्धि समझना चाहिए।

(ख) यदि बृहत् त्रिकोण के मध्य में (जीवन-रेखा या भाग्य-रेखा को स्पर्श न करती हुई) कोई दो शाखायुक्त छोटी-सी रेखा हो तो स्वास्थ्य की कमज़ोरी प्रकट करती है।

चित्र नं० ११६

क्रॉस-चिह्न— (क) यदि मध्य भाग में कोई 'क्रॉस'-चिह्न हो तो ऐसा व्यक्ति अन्य लोगों से झगड़ा कर अपने लिए कठिनाइयाँ पैदा करेगा। यदि दोनों में यह चिह्न हो और अन्य लक्षणों से पुष्टि होती हो, तो कत्ल तक कर सकता है।

(ख) यदि बहुत से 'क्रॉस'-चिह्न हों तो निरन्तर भाग्यहीनता (तरक्की में रुकावट) प्रकट होती है। यदि जहाँ स्वास्थ्य-रेखा जीवन-रेखा से मिलती है। उस कोण के पास बृहत् त्रिकोण में क्रॉस-चिह्न हो तो कोई फ़ौजदारी मुकदमा चलता है। ऐसे व्यक्ति की मान-प्रतिष्ठा को काफ़ी धक्का पहुँचने का अन्देशा होता है। जीवन में काफ़ी गिरावट (तबदीली) होती है।

(ग) यदि जहाँ जीवन-रेखा और शीर्ष-रेखा मिलती हैं उस कोण के पास क्रॉस-चिह्न हो और किसी प्रधान रेखा को स्पर्श न करता हो तो ऐसा व्यक्ति मुकदमा जीतत है किन्तु यदि शीर्ष-रेखा या जीवन-रेखा को क्रॉस स्पर्श करे तो मुकदमा हार जाता है।

(घ) यदि बृहत् त्रिकोण के मध्य में स्पष्ट-सा क्रॉस-चिह्न हो (शुद्ध एक रेखा दूसरे को न काटे किन्तु क्रॉस के ढंग का चिह्न हो) और शनि-क्षेत्र पर आड़ी रेखायें हों तो बराबर भाग्यहीनता का सिलसिला चलता है।

तारे का चिह्न—(क) यदि एक हाथ में एक चिह्न हो तो शुभ लक्षण है। मनुष्य को बहुत परिश्रम करने पर धन या सफलता प्राप्त होती है किन्तु यदि दोनों हाथों में यह चिह्न हो तो अशुभ लक्षण

है। किसी शस्त्र या दुर्घटना से मृत्यु होती है।

(ख) यदि स्वास्थ्य-रेखा के पास—बृहत् त्रिकोण के अन्दर तारे का चिह्न हो तो ऐसा व्यक्ति अन्धा हो जाता है।

(ग) यदि तारे का चिह्न स्पष्ट न हो किन्तु घिच-पिच हो तो प्रेम-सम्बन्ध के कारण कठिनाइयाँ होती हैं।

(घ) यदि शुक्र-क्षेत्र से कोई प्रभाव-रेखा चलकर जीवन-रेखा को काटती हुई बृहत् त्रिकोण के मध्य में आवे और समाप्त हो जावे और इस रेखा के अन्त पर तारे का चिह्न हो तो बड़ा सदमा होता है। यदि जहाँ से यह प्रभाव-रेखा प्रारम्भ हुई है उस ओर भी तारे का चिह्न हो तो अत्यन्त निकट सम्बन्धी या मित्र की मृत्यु का सदमा लगता है।

वृत्त-चिह्न—किसी स्त्री के कारण कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं। यदि स्त्री के हाथ में हो तो किसी पुरुष के कारण समझनी चाहिए। यदि चन्द्र-क्षेत्र भी उच्च हो तो चिड़चिड़ापन, दूसरे की बात काटना, झगड़ा करना आदि का स्वभाव होता है।

वर्ग-चिह्न—यदि किसी रेखा का स्पर्श न करे तो खतरे का अन्देशा सूचित करता है।

त्रिकोण-चिह्न—यदि जीवन-रेखा और भाग्य-रेखा के बीच में हो तो लड़ाई (फ़ौजी जीवन) में यश, प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

जाल-चिह्न—यदि हाथ में अन्य लक्षण अच्छे हों तो यह प्रकट होता है कि ऐसे व्यक्ति के बहुत से गुप्त शत्रु होंगे। यदि हाथ में अन्य लक्षण अच्छे न हों तो ऐसे व्यक्ति की शर्मनाक मृत्यु होती है।

२०वाँ प्रकरण

अँगूठे और उंगलियों पर चिह्न

भारतीय मतानुसार उंगलियों तथा अँगुष्ठ पर यह चिह्न होना अच्छा माना गया है। खड़ी रेखाओं को भी शुभ लक्षण कहा है। परन्तु रेखाओं से भी अधिक महत्व उन आकृतियों को दिया गया है जो शरीर की त्वचा में सूक्ष्म धारियों के विविध आकार के होने से बन जाती हैं। जब अँगूठे या उंगली के अग्रभाग की छाप सफ़ेद कागज़ पर ली जाती है तो इन धारियों की आकृति स्पष्ट दिखाई देती है।

जो शंख की आकृति के चिह्न होते हैं, उन्हें शंख कहते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं—एक बायीं ओर घूमे हुए, दूसरे दाहिनी ओर घूमे हुए। जो गोल-कुण्डल के समान आकृति होती है उसे 'चक्र' कहते हैं। इन दोनों लक्षणों से भिन्न जो आकृति होती है उसे 'सीप' कहते हैं।

चारों उंगलियों तथा अँगुष्ठ के अग्र भाग पर चक्र होना शुभ लक्षण है। इस प्रकार दोनों हाथों में दस चक्र-चिह्न हों तो मनुष्य सर्वैश्वर्यवान् किन्तु अल्पायु होता है, नौ चक्र हों तो राजा, आठ हों तो रोगयुक्त शरीर वाला, सात हों तो पुण्यशील, छः हों तो भोग-विलास में रत, पाँच हों तो भी यही फल, चार हों तो दरिद्र, तीन हों तो धनवान्, दो हों तो मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला, एक हो तो सुखी होता है।

इसी प्रकार यदि दस शंख हों तो विशिष्ट राजा या विशिष्ट योगी, नौ हों तो स्त्री-प्रकृति का, आठ हों तो सुखी, सात हों तो दरिद्र, छः हों तो विद्वान्, पाँच हों तो बहुत बड़े साम्राज्य का

अधीश्वर, चार हों तो राजा, तीन हों तो स्त्री-वियोगी, दो हों तो दरिद्र, एक हो तो विद्वान् होता है ।

सीप का फल इस प्रकार है— एक सीप वाला राजा, दो हों तो दरिद्र, तीन हों तो योगी, चार हों तो दरिद्र, पाँच हों तो धनी, छः हों तो योगी, सात हों तो दरिद्र, आठ हों तो धनी, नौ हों तो योगी, दस हों तो दरिद्र होता है । बहुत-से ग्रन्थों के अनुसार, एक से अधिक शुभ फल दो का, दो से अधिक तीन का, इस प्रकार उत्तरोत्तर शुभ फल होता है । परन्तु हम इस मत से सहमत नहीं हैं ।

पाश्चात्य मत

प्रथम पर्व पर चिह्न

रेखा–यदि अँगूठे के प्रथम पर्व पर एक, दो या तीन खड़ी रेखाएँ हों तो इच्छाशक्ति या चित्त की दृढ़ता में वृद्धि होती है । ऐसे व्यक्ति अपने इरादे के पक्के होते हैं । यदि तीन रेखाएँ हों तो इच्छाशक्ति के अनेक बातों में बट जाने के कारण किसी एक इरादे में मनुष्य उतना पक्का नहीं रहता । (देखिये चित्र नं० ११७) यदि बिलकुल नाखून के पास हो तो विरासत मिलती है ।

चित्र नं० ११७

यदि इन खड़ी रेखा या रेखाओं को कोई आड़ी रेखा काटती हो, या कोई खड़ी रेखा न हो और केवल आड़ी रेखाएँ हों तो सफलता में बाधा समझनी चाहिये ।

यदि प्रथम पर्व से प्रारम्भ होकर कोई रेखा जीवन-रेखा तक आवे तो शस्त्र से मृत्यु होती है ।

क्रॉस-चिह्न—यदि अँगुष्ठ के प्रथम पर्व पर नाखून के बिलकुल पास क्रॉस-चिह्न हो और शुक्र-क्षेत्र बहुत उन्नत हो या जालयुक्त हो तो अन्य स्त्री या पुरुष से अनुचित प्रेम-सम्बन्ध होता है ।

यदि नाखून के पास दो क्रॉस-चिह्न हों तो ऐसा व्यक्ति बहुत ग्रारामतलब होता है ।

तारे का चिह्न—यदि प्रथम पर्व पर तारे का चिह्न हो तथा शुक्र-क्षेत्र बहुत ऊँचा उठा हो या जालयुक्त हो तो ऐसे व्यक्ति का चरित्र ग्रच्छा नहीं होता ।

यदि ग्रँगूठे के नाखून के पास दो तारे के चिह्न हों तो ऐसा व्यक्ति हमेशा दूसरे की बात में गलतियाँ निकालता रहता है ग्रौर नुकताचीनी की ग्रादत होती है ।

त्रिकोण-चिह्न—यदि ग्रँगूठे के प्रथम पर्व पर त्रिकोण का चिह्न हो तो जातक की चित्त-शक्ति वैज्ञानिक ग्रनुसंधान या कार्यों में विशेष लगती है । यदि किसी ऐसे पुरुष या स्त्री के ये लक्षण हों ग्रौर विज्ञान से उस व्यक्ति का कोई सम्पर्क न हो तो ऐसे काम में चित्त का लगना बताना चाहिये जिसमें हिसाब-किताब, नाप-तोल ग्रादि का ज़्यादा कार्य पड़ता हो ।

वृत्त-चिह्न—यदि प्रथम पर्व पर वृत्त-चिह्न हो तो ऐसा व्यक्ति ग्रपने इरादे का बहुत पक्का होता है ग्रौर एक बार जिस विषय का विचार कर लेता है उसको पूरा करके ही छोड़ता है । मनुष्य के इरादे दो कारण से बदलते हैं—एक तो मन की स्वाभाविक चंचलता ग्रौर दूसरा धैर्य की कमी । ग्रापत्तियों या कठिनता के कारण जिस कार्य का दृढ़ निश्चय करते हैं उसे लोग छोड़ देते हैं । किन्तु प्रथम पर्व पर वृत्त-चिह्न होने से मनुष्य ग्रपने इरादे का बहुत पक्का होता है ग्रौर ग्रन्त में उसे विजय या सफलता प्राप्त होती है ।

वर्ग-चिह्न—यदि प्रथम पर्व पर वर्ग-चिह्न हो तो इच्छाशक्ति किसी एक ही बात पर जमी रहती है ग्रर्थात् यदि ऐसे व्यक्ति ने विचार कर लिया कि मैं ग्रमुक कार्य करूँगा तो फिर वह उसी पर ग्रड़ा रहेगा । यदि उससे ग्रच्छा भी कोई कार्य उसके हाथ में ग्रावे तो उसकी ग्रोर वह ध्यान नहीं देगा । ऐसे व्यक्ति प्रायः कठोर वृत्ति के

होते हैं और दूसरों पर निर्दयतापूर्वक शासन करते हैं।

जाल-चिह्न—यदि नाखून के पास हो तो यह बहुत अशुभ चिह्न है। पति-पत्नी में अत्यन्त कलह होता है और एक-दूसरे की हिंसा भी कर सकते हैं। हाथ में अन्य क्रूरता के लक्षण हों तभी उपर्युक्त फलादेश करना चाहिये।

द्वितीय पर्व पर चिह्न

यदि द्वितीय पर्व पर खड़ी रेखायें (एक छोर प्रथम पर्व की दिशा में, दूसरा छोर शुक्र-क्षेत्र की दिशा में) हों तो ऐसे व्यक्ति में तर्क-शक्ति अच्छी होती है, किसी बात की गुण-दोष-विवेचना जातक अच्छी प्रकार कर सकता है। यह स्मरण रखना चाहिये कि जिस स्थान पर खड़ी रेखा हो वह उस स्थान के गुण को बढ़ाती है और आड़ी रेखायें उस स्थान-सम्बन्धी बाधा या अवगुण प्रकट करती हैं यह साधारण नियम है। इसलिए यदि खड़ी रेखा न होकर आड़ी रेखायें हों (यवचिह्न के समानान्तर) तो ऐसे व्यक्ति में तर्कशक्ति का अभाव होता है। वह किसी बात से सही नतीजा नहीं निकाल सकता। इस कारण आड़ी रेखाओं को बुद्धि की कमी का लक्षण समझना चाहिए। खड़ी रेखा प्रायः अच्छी होती है यह ऊपर बताया गया है किन्तु यदि अँगुष्ठ के द्वितीय पर्व से प्रारम्भ होकर कोई खड़ी रेखा जीवन-रेखा से आकर मिले तो वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं होता। पति-पत्नी में कलह होता रहता है। यदि कोई आड़ी-रेखा दो शाखायुक्त हो तो ऐसा व्यक्ति किसी भी काम के करने में झिझकता रहता है।

क्रॉस-चिह्न—यदि द्वितीय पर्व पर क्रॉस-चिह्न हो तो जातक शीघ्र ही दूसरे से प्रभावित हो जाता है। यदि अँगूठे का प्रथम पर्व छोटा और निर्बल हो तो इस लक्षण की पुष्टि होती है। यदि बुध और मंगल के क्षेत्र विशेष उन्नत होंगे तो जातक में स्वयं ऊहापोह और विचार-शक्ति अधिक होगी। इस कारण वह शीघ्र प्रभावित

नहीं होगा। किन्तु ये दोनों क्षेत्र नीचे हों और अँगुष्ठ के द्वितीय पर्व पर उपर्युक्त लक्षण हों तो जातक शीघ्र प्रभावित होगा।

तारे का चिह्न—यदि द्वितीय पर्व पर एक या दो तारे के चिह्न हों तो जातक बहुत खुशमिजाज होता है परन्तु बुरे कामों की ओर उसका स्वाभाविक रुझान होता है।

त्रिकोण-चिह्न—यदि त्रिकोण-चिह्न हो तो वैज्ञानिक या दर्शन-शास्त्रों में विशेष प्रवीणता होती है।

वर्ग-चिह्न—यदि वर्ग-चिह्न हो तो ऐसा आदमी तर्क द्वारा जिस नतीजे पर पहुँचता है उस नतीजे से उसे हिलाया नहीं जा सकता। यदि हाथ में अन्य बुद्धिमत्ता आदि के लक्षण न हों तो ऐसा व्यक्ति बहुत जिद्दी और दुराग्रही होता है।

वृत्त-चिह्न—द्वितीय पर्व पर वृत्त-चिह्न तर्क-शक्ति को विशेष मात्रा में बढ़ाता है। इस कारण यदि ऐसा व्यक्ति कोई ऐसा कार्य करे जिसमें विचार और ऊहापोह की विशेष आवश्यकता हो तो उसे पूर्ण सफलता प्राप्त होती है।

जाल-चिह्न—यदि द्वितीय पर्व पर जाल-चिह्न हो तो ऐसा व्यक्ति तर्क करने में ईमानदारी से काम नहीं लेता, न नैतिक आदर्श की ओर ही उसका ध्यान रहता है।

उंगलियों पर चिह्न

पहले वे लक्षण बताये जाते हैं जो चारों उंगलियों पर होने से फलदायक हो जाते हैं। इसके बाद जिन लक्षणों का भिन्न-भिन्न उंगलियों पर भिन्न-भिन्न प्रभाव होता है उनका वर्णन किया जायगा।

सामान्य लक्षण—यदि उंगलियों के प्रथम पर्व का भीतरी भाग (एक ओर नख होता है दूसरी ओर वाला भाग) गोलाई लिये हुए हो तो ऐसे व्यक्ति में नफ़ासत और चतुरता होती है। वह किसी बात को बहुत शीघ्र समझ लेता है परन्तु उसे थोड़े से कारण पर ही अरुचि, अप्रसन्नता या क्रोध भी हो जाता है।

यदि उंगलियों के बीच में जो पर्व की रेखा होती हैं उनको (साधारणत: चारों उंगलियों में कुल बारह पर्व और बारह ही पर्व की रेखा होती हैं) छोटी खड़ी रेखाएँ काटें तो ऐसे व्यक्ति की सहसा मृत्यु होती है।

यदि सब उंगलियों पर एक-एक लम्बी खड़ी रेखा हो जो तीनों पर्वों तक जाय तो ऐसे व्यक्ति में ईमानदारी की भावना बहुत अधिक होती है।

यदि सब उंगलियों के प्रथम पर्व पर लहरदार आड़ी रेखायें हों तो मृत्यु की (जल में डूबकर या अन्य प्रकार से) आशंका समझनी चाहिए। हाथ में अन्य लक्षणों से मिलान करना भी उचित है कि उपर्युक्त फल की पुष्टि होती है या नहीं।

यदि द्वितीय और तृतीय पर्व के बीच की पर्व-रेखाओं पर छोटे-छोटे त्रिकोण-चिह्न हों तो ऐसे व्यक्ति का स्वास्थ्य कमज़ोर रहता है। यह बीमारी का लक्षण है।

उंगलियों पर विविध चिह्नों के फल लिखे जाते हैं। यदि किसी उंगली के किसी पर्व पर किसी चिह्न का फल न दिया गया हो तो समझना चाहिए कि वहाँ उसका कोई विशेष फल नहीं है।

तर्जनी पर चिह्न

खड़ी रेखा—यदि तर्जनी के प्रथम पर्व पर खड़ी रेखायें हों तो धार्मिक उन्नति और उच्चता का लक्षण है। यदि द्वितीय पर्व पर ऐसी रेखायें हों तो जातक को अपनी महत्वाकांक्षा-पूर्ति में सहायता प्राप्त होगी। किन्तु यदि ये खड़ी रेखायें लहरदार या घिचपिच हों तो जातक की महात्वाकांक्षा का विषय कोई अच्छा न होगा। यदि द्वितीय पर्व पर कोई खड़ी रेखा शाखायुक्त हो तो वह सफलता का लक्षण है।

यदि शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ होकर कोई खड़ी रेखा तर्जनी के द्वितीय पर्व तक आवे तो ऐसा व्यक्ति बहुत उच्च चरित्र का होगा और उसे बहुत इज्ज़त प्राप्त होगी।

यदि तर्जनी के तृतीय पर्व पर छोटी-छोटी बिलकुल सीधी खड़ी रेखायें हों तो ऐसा व्यक्ति दूसरों पर भली प्रकार हुकूमत करता है। किन्तु यदि ये रेखा अस्पष्ट या लहरदार हों तो ऐसे व्यक्ति को सासारिक सुख के पदार्थों की विशेष इच्छा रहेगी। यदि साथ ही जीवन-रेखा से निकल कर ऊपर की ओर जाने वाली रेखा भी हों (अर्थात् हाथ में यह द्वितीय लक्षण भी हो) तो धन-प्राप्ति होती है।

आड़ी रेखा—यदि तर्जनी के प्रथम पर्व पर आड़ी रेखायें हों तो धर्मान्धता का लक्षण है। यदि द्वितीय और तृतीय दोनों पर्वों पर ऐसी रेखा हों तो ईर्ष्यालु और दूसरे को धोखा देने की प्रवृत्ति होती है। यदि केवल तृतीय पर्व पर हों तो विरासत में धन मिलता है। हुकूमत के कार्य में बाधाएँ उपस्थित होती हैं। यदि अन्य लक्षण अस्वास्थ्य के हों तो यह कमजोर पाचन-शक्ति का भी लक्षण है।

क्रॉस-चिह्न—यदि तर्जनी के प्रथम पर्व पर क्रॉस-चिह्न हो तो पागलपन का रोग या अचानक मृत्यु होती है। पुष्टि के लिए अन्य लक्षणों का भी अन्वेषण करना चाहिए। यदि द्वितीय और प्रथम पर्व के बीच वाली आड़ी रेखा पर 'क्रॉस'-चिह्न हो तो साहित्यिक सफलता प्राप्त होती है। यदि द्वितीय पर्व पर एक या दो क्रॉस-चिह्न हों तो बड़े आदमियों का संरक्षिकत्व (सहायता) प्राप्त होता है। तृतीय पर्व पर क्रॉस-चिह्न होने से, कामुकता और अन्य खराब आदतें होती हैं।

तारे का चिह्न—यदि तर्जनी के प्रथम पर्व पर तारे का चिह्न हो तो जातक के जीवन में कोई बहुत सौभाग्यशाली घटना होती है। यदि यह चिह्न द्वितीय पर्व पर हो और इसके दोनों ओर एक-एक खड़ी रेखा भी हो तो पातिव्रत्य का लक्षण है। पुरुषों के हाथ में एक-पत्नीव्रत समझना चाहिए। किन्तु यदि

चित्र नं० ११८

तारे के चिह्न के बगल में अर्धवृत्त चिह्न हो तो निर्लज्जता का लक्षण है। तृतीय पर्व पर तारे का चिह्न हो तो भी निर्लज्जता होती है।

त्रिकोण-चिह्न—यदि तर्जनी के प्रथम पर्व पर त्रिकोण-चिह्न हो तो धार्मिक ग्रंथों तथा गुप्त विद्याओं के अध्ययन की ओर विशेष प्रवृत्ति होती है। द्वितीय पर्व पर यह चिह्न होने से मनुष्य कुशल राजनीतिज्ञ होता है। तृतीय पर्व पर भी शुभ लक्षण है।

वर्ग-चिह्न—यदि तर्जनी के प्रथम पर्व पर वर्ग-चिह्न हो तो मनुष्य में धैर्य और अध्यवसाय होता है। द्वितीय पर्व पर भी यही फल। तृतीय पर्व पर यह चिह्न होने से तानाशाही प्रकृति होती है। कामुकता का भी लक्षण है।

वृत्त-चिह्न—प्रथम पर्व पर वृत्त-चिह्न होने से तर्क या ज्ञान-मार्ग की अपेक्षा भक्ति की ओर विशेष झुकाव होता है। द्वितीय पर्व पर महत्वाकांक्षाओं की सफलता का लक्षण है। तृतीय पर्व पर भी यही फल।

जाल-चिह्न—यदि प्रथम पर्व पर हो तो जेल या निर्जन एकान्त-प्रदेश में वास। अन्ध-धार्मिकता का भी लक्षण है—द्वितीय पर्व पर होने से दुष्प्रवृत्ति और असफलता। तृतीय पर्व पर होने से चरित्र अच्छा नहीं होता; जेल-यात्रा भी होती है।

मध्यमा उंगली पर विविध चिह्न और उनका फल

खड़ी रेखा—यदि मध्यमा उंगली पर—तीनों पर्वों पर फैली हुई लम्बी लहरदार खड़ी रेखा हों और शनि-क्षेत्र पर छोटी-छोटी आड़ी रेखा हों तो जीवन में बहुत-सी भाग्य-हानि या शरीर-कष्ट-सम्बन्धी दुर्घटनाएँ होती हैं।

चित्र नं० ११९

यदि केवल प्रथम पर्व पर दो-तीन छोटी-छोटी खड़ी रेखा हों तो आत्महत्या की प्रवृत्ति का लक्षण है (अन्य लक्षण भी
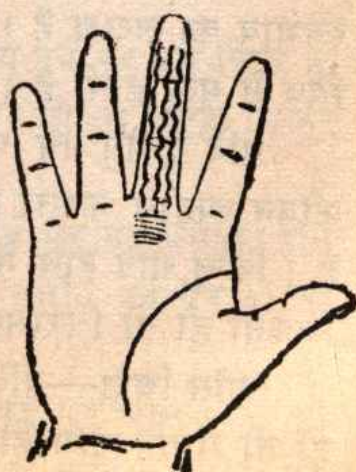
इस फल की पुष्टि के लिए देखने चाहिए)।

यदि प्रथम पर्व के अन्त से प्रारम्भ होकर एक खड़ी रेखा तीसरे पर्व तक आवे तो मूर्खता का लक्षण है।

यदि द्वितीय पर्व से प्रारम्भ होकर एक या दो खड़ी रेखा तृतीय पर्व पर आवें तो बुद्धिमत्ता का लक्षण है।

यदि तृतीय पर्व पर केवल एक खड़ी रेखा हो और वह शनि-क्षेत्र तक न आवे तो सैनिक विभाग में सफलता होती है। यदि यह रेखा बिलकुल सीधी न हो बल्कि कुछ तिरछी हो तो लड़ाई में मृत्यु होती है।

यदि तृतीय पर्व पर कई खड़ी, स्पष्ट और सुन्दर रेखा हों तो ज़मीन के अंदर की वस्तुओं, लोहा, खनिज पदार्थ आदि के कार्य से धन-प्राप्ति होती है। यदि ये रेखा असुन्दर और अस्पष्ट हों तो मनुष्य दुःखी रहता है।

आड़ी रेखा—यदि मध्यमा उंगली के प्रथम पर्व पर छोटी-छोटी कई आड़ी रेखा हों तो आत्महत्या की ओर प्रवृत्ति होती है। हाथ में अन्य लक्षण इसकी पुष्टि करते हों तभी यह फलादेश करना उचित है।

यदि द्वितीय पर्व पर ऐसी कई रेखा हों तो अज्ञानता, ज़िद्दी स्वभाव का लक्षण है। यदि केवल एक मोटी आड़ी रेखा हो तो विष से मृत्यु होती है।

यदि तृतीय पर्व पर कई आड़ी रेखा हों तो ऐसा व्यक्ति दुःखी जीवन व्यतीत करता है। उसके मित्र उससे किनाराकशी कर लेते हैं। किन्तु यदि हाथ में अन्य शुभ लक्षण हों और प्रथम पर्व बहुत चिकना हो तो विरासत में धन मिलता है।

क्रॉस-चिह्न—यदि मध्यमा उंगली के प्रथम पर्व पर क्रॉस-चिह्न हो तो अंधविश्वास होता है। आत्महत्या या अन्य जुर्म करने की ओर भी प्रवृत्ति होती है। यदि द्वितीय पर्व पर हो तो भी बहुत

अशुभ लक्षण है। यदि तृतीय पर्व पर स्त्री के हाथ में यह चिह्न हो तो वह वन्ध्या होती है।

तारे का चिह्न—यदि प्रथम पर्व पर हो तो या तो ऐसा व्यक्ति बहुत भाग्यशाली होता है और बहुत उन्नति करता है या बहुत मन्दभागी होता है। यदि दोनों हाथों में मध्यमा उंगली के प्रथम पर्वों पर ऐसा चिह्न हो तो शस्त्र से मृत्यु होती है।

यदि केवल एक हाथ में प्रथम पर्व पर तारे का चिह्न हो और शनि-क्षेत्र पर त्रिकोण-चिह्न हो तो दुश्चरित्रिता का लक्षण है।

यदि प्रथम पर्व पर एक तारे का चिह्न और द्वितीय पर एक तारे का चिह्न हो तो फाँसी लगती है।

यदि केवल द्वितीय पर्व पर यह चिह्न हो तो भी अशुभ लक्षण है। ऐसा व्यक्ति जुर्म करता है तथा दण्ड पाता है। यदि केवल तृतीय पर्व पर यह चिह्न हो तो ऐसा व्यक्ति किसी की हत्या करता है। यदि हाथ के अन्य लक्षणों से ऐसा प्रतीत न हो तो ऐसे व्यक्ति की स्वयं की हत्या से मृत्यु होती है।

त्रिकोण-चिह्न—यदि मध्यमा उंगली के द्वितीय पर्व पर त्रिकोण-चिह्न हो तो गुप्त विद्याओं की ओर विशेष रुचि होती है। यदि तृतीय पर्व पर हो तो अशुभ लक्षण है। ऐसा व्यक्ति दुष्ट प्रकृति का और मन्दभागी होता है।

वर्ग-चिह्न—यदि मध्यमा उंगली के द्वितीय पर्व पर वर्ग-चिह्न हो तो अपमृत्यु का लक्षण है। यदि तृतीय पर्व पर हो तो मनुष्य निष्ठुर प्रकृति का और कंजूस होता है।

वृत्त-चिह्न—मध्यमा उंगली के द्वितीय पर्व पर वृत्त-चिह्न होने से गुप्त विद्याओं में विशेष विद्वान् होता है। तृतीय पर्व पर हो तो दर्शन-शास्त्र का पंडित होता है।

जाल-चिह्न—मध्यमा उंगली के द्वितीय पर्व पर जाल-चिह्न हो तो मन्दभागी और रोगी होने का लक्षण है। कान की, पैरों की

वायु या स्नायु-विकार आदि होते हैं। तृतीय पर्व पर हो तो मनुष्य बहुत कंजूस और अनुदार होता है।

अनामिका उंगली पर विविध चिह्न और उनका फल

खड़ी रेखा—यदि अनामिका उंगली के प्रथम पर्व पर दो-तीन खड़ी रेखा हों तो ऐसा व्यक्ति कलाकार होता है किन्तु अपनी धुन में पागल रहता है। यदि एक खड़ी रेखा द्वितीय पर्व के ऊपरी भाग से प्रारम्भ हो तीसरे पर्व के मध्य तक गहरी हो तो ऐसा व्यक्ति बहुत ख्याति और यश प्राप्त करता है। यदि ऊपर जिस प्रकार की एक रेखा बतलाई गई है—दो रेखा हों और बृहत् त्रिकोण तीनों रेखाओं से स्पष्ट और सुन्दर बना हो और हृदय-रेखा तथा शीर्ष-रेखा के बीच का स्थान (बृहत् चतुष्कोण) चौड़ा हो तो, मनुष्य मुस्तकिल मिज़ाज नहीं होता; उसके विचार बदलते रहते हैं।

यदि तृतीय पर्व पर कई लम्बी खड़ी रेखा—सारे पर्व की लम्बाई पर हों तो किसी स्त्री के कारण भाग्यहानि होती है। स्त्री के हाथ में पुरुष के कारण समझनी चाहिए। किन्तु यदि ऐसी रेखा केवल एक हो और उंगली के जड़ तक नहीं पहुँचे तो भाग्य और सुख का लक्षण है।

आड़ी रेखा—यदि प्रथम पर्व पर कई छोटी-छोटी आड़ी रेखा हों तो कला के जीवन में बहुत विघ्न-बाधा आती हैं जिस कारण मस्तिष्क उलझन में पड़ा रहता है। द्वितीय पर्व पर हों तो मनुष्य में कोई विशेष योग्यता नहीं होती। उसका ईर्ष्यालु स्वभाव होता है। तृतीय पर्व पर निरन्तर भाग्यहीनता और दरिद्रता का लक्षण है।

क्रॉस-चिह्न—यदि अनामिका उंगली के प्रथम पर्व पर क्रॉस-चिह्न हो तो पातिव्रत्य या एक-पत्नीव्रत का लक्षण है। मनुष्य अपने कला-प्रेम में इतना मग्न रहता है कि उसी धुन में पागल रहता है। यदि द्वितीय पर्व पर क्रॉस-चिह्न हो तो मनुष्य को अपने प्रतियोगियों पर विजय प्राप्त नहीं होती और वह ईर्ष्या में जला

करता है। तृतीय पर्व पर यह चिह्न हो तो उसे सफलता नहीं प्राप्त होती; आकांक्षाएँ मिट्टी में मिल जाती हैं।

तारे का चिह्न—यदि अनामिका के प्रथम पर्व पर तारे का चिह्न हो तो मनुष्य अत्यन्त उच्चकोटि का कलाकार होता है। किन्तु हाथ में अन्य लक्षण खराब हों तो पागलपन होता है। द्वितीय पर्व पर तारे का चिह्न अत्यधिक योग्यता का लक्षण है। तृतीय पर्व पर हो तो मनुष्य बहुत खुशामद पसन्द होता है और आत्म-प्रशंसा के लिए सदैव लालायित रहता है।

त्रिकोण-चिह्न—यदि प्रथम पर्व पर हो तो सौन्दर्यप्रियता का लक्षण है; द्वितीय पर्व पर होने से कला के हृदय तक पहुँचने की क्षमता होती है। तृतीय पर्व पर मनुष्य अपनी ख्याति और नाम के लिए सदैव प्रयत्नशील रहता है।

वृत्त-चिह्न—प्रथम पर्व पर हो तो सहसा बहुत उच्च सफलता प्राप्त होती है। द्वितीय और तृतीय पर्व पर भी सफलता और सौभाग्य का लक्षण है।

वर्ग-चिह्न—यदि द्वितीय पर्व पर हो तो बुद्धि की जैसी उपयोगिता या प्रसार होना चाहिए वैसा नहीं हो पाता। सीमित क्षेत्र तक ही सफलता प्राप्त होती है।

जाल-चिह्न—प्रथम पर्व पर हो तो पागलपन का लक्षण है। द्वितीय पर्व पर होने से मनुष्य बहुत ईर्ष्यालु होता है। तृतीय पर्व पर होने से अनेक प्रकार के अपमान सहन करने पड़ते हैं—ईर्ष्यालु प्रकृति होती है। दरिद्रता में जीवन बीतता है।

कनिष्ठिका उंगली पर विविध चिह्न और उनका फल

खड़ी रेखा—यदि एक ही लम्बी खड़ी रेखा तीनों पर्वों पर व्याप्त हो तो मनुष्य सत्यवादी व उचित वक्ता होता है। यदि ऐसी दो रेखा हों तो मनुष्य सच्चे और उच्च चरित्र का होता है।

यदि प्रथम पर्व पर छोटी-छोटी खड़ी रेखा हों तो मनुष्य दूसरों

के कार्यों में हस्तक्षेप करता रहता है। कभी-कभी बहुत बड़े असम्भावित कारबार की आयोजना करता है। यदि हाथ में अन्य लक्षण अच्छे हों तो वाग्मिता और गुप्त विद्याओं के अध्ययन में विशेष दक्षता होती है। यदि दूसरे पर्व पर कई घिचपिच खड़ी रेखा हों तो मनुष्य दूसरों को धोखा देता है। यदि द्वितीय पर्व से प्रारम्भ होकर तृतीय पर्व के नीचे तक एक लम्बी स्पष्ट खड़ी रेखा हो तो वैज्ञानिक अनुसन्धानों में सफलता प्राप्त होती है। किन्तु यदि उपर्युक्त रेखा लहरदार हो तो मनुष्य चालाक होता है। देखिये चित्र नं० १२०।

यदि तृतीय पर्व पर कई घिचपिच या लहरदार रेखा हों तो चोरी की प्रवृत्ति। एक छोटी गहरी रेखा हो तो भी चोरी करने की आदत होती है।

आड़ी रेखा—यदि प्रथम पर्व पर छोटी-छोटी आड़ी रेखा हों तो मनुष्य बहुत बातूनी (व्यर्थ की बात करने वाला) झूठा और चोर होता है। द्वितीय पर्व पर होने से—मनुष्य अनेक प्रकार के कार्य करता है (व्यवसाय बदलता रहता है)। तृतीय पर्व पर ऐसी रेखा हों तो चोरी करने की प्रवृत्ति रहती है।

चित्र नं० १२०

क्रॉस-चिह्न—यदि शुभ लक्षणयुक्त हाथ में कनिष्ठिका उंगली के प्रथम पर्व पर क्रॉस-चिह्न हो तो मनुष्य में भविष्य फलादेश करने की क्षमता होती है। यदि हाथ में अच्छे लक्षण न हों तो चोरी या डकैती का लक्षण है। द्वितीय पर्व पर होने से जातक को बहुत कठिनताओं और मुसीबतों का सामना करना पड़ता है—जेल भी जा सकता है। तृतीय पर्व पर चोरी करने का लक्षण है।

तारे का चिह्न—प्रथम पर्व पर हो तो द्रव्य कमाने में सफलता

नहीं होती किन्तु भाषण देने में सफलता मिलती है। द्वितीय पर्व पर होने से चोरी, जालसाजी आदि से बदनामी होती है। तृतीय पर होने से वाग्मिता, हाजिरजवाबी आदि गुण होते हैं। किन्तु यदि तृतीय पर्व पर दो तारे के चिह्न हों तो चोरी के कारण अपमानजनक मृत्यु होती है।

त्रिकोण-चिह्न—प्रथम पर्व पर हो तो गुप्त विद्याओं में प्रेम; द्वितीय पर गुप्त विद्याओं के अध्ययन और अभ्यास में सफलता; तृतीय पर्व पर होने से राजनीतिक कुशलता होती है।

वर्ग-चिह्न—कनिष्ठिका के प्रथम पर्व पर वर्ग-चिह्न हो तो व्यापार में धन-लाभ होता है। द्वितीय पर्व पर यह चिह्न होने से जो अनेक कामों में चतुर होने का बुध-क्षेत्र का प्रभाव है वह नहीं रहता। हाथ में अन्य दुष्ट लक्षण हों तो जेल-यात्रा होती है। तृतीय पर्व पर हो तो ऐसे व्यक्ति के मन की बात कोई नहीं जान सकता।

जाल-चिह्न—यदि प्रथम पर्व पर हो तो मंत्र विद्या में निपुण हो। किन्तु हाथ में अन्य लक्षण खराब हों तो झूठ बोलना, चोरी आदि दुर्गुण का लक्षण है। द्वितीय पर्व पर होने से मनुष्य अपना कारबार तरतीब से नहीं करता। जेल जाने का लक्षण भी है। तृतीय पर्व पर अत्यन्त मूर्खता का लक्षण है।

वृत्त-चिह्न—कनिष्ठिका उंगली के तृतीय पर्व पर वृत्त-चिह्न होने से चोरी की इच्छा रहती है परन्तु करता नहीं।

चतुर्थ खण्ड

२१वाँ प्रकरण

शरीर-लक्षण

लक्षण-शास्त्र का महत्व

मनुष्य के चेहरे तथा सिर की बनावट से बहुत कुछ उसके चरित्र तथा बुद्धि का पता लग जाता है। अपने मित्रों एवं सम्बन्धियों के सिर की बनावट तथा ललाट, नेत्र, भौं, कान, नाक मुँह, होंठ, ठोड़ी आदि की ओर ध्यान से देखकर विचार कीजिये तो पता लगेगा कि उनके स्वभाव तथा प्रकृति का कितना ठीक अन्दाज़ आप लगा सकते हैं। जिन्होंने इस विषय का गंभीर अध्ययन किया है या जिनका इस विषय का अनुभव विशेष है वे इस कला में इतने चतुर हो जाते हैं कि उनका अनुभव प्रायः सच्चा उतरता है। जिन दुकानदारों को उधार देने का काम पड़ता है, वे प्रायः उधार वस्तु खरीदने वालों के, वस्त्र या ज़ेवर की ओर इतना ध्यान नहीं देते जितना उनकी मुखाकृति और बातचीत के ढंग पर, और उनको यह निश्चय करने में देर नहीं लगती कि अमुक ग्राहक साधारण कपड़े पहने है फिर भी वह बाद में मूल्य चुका देगा और एक दूसरा व्यक्ति भड़कीले और कीमती कपड़े पहने है तथापि उसके यहाँ की रकम खटाई में पड़ने का डर है। इसी प्रकार कुशल तथा अनुभवी पुलिस के अफ़सर चेहरे, मोहरे, हरकत, बातचीत के ढंग से, यह शीघ्र ही निश्चय कर लेते हैं कि चोरी या जुर्म करने वाला व्यक्ति अमुक है। जो लोग ज़िम्मेदारी के काम पर प्रायः नये नौकर रखते हैं उनका अनुभव और अभ्यास इतना दृढ़ हो जाता है कि

ईमानदार और बेईमान, अपना उत्तरदायित्व पूरा करने वाले और न पूरा करने वालों की, पहचान उन्हें तुरन्त हो जाती है। इसी प्रकार जो दुश्चरित्र स्त्रियों की खोज में रहते हैं वे स्त्री की मुखाकृति, हाव-भाव, बातचीत से तत्काल यह समझ जाते हैं कि वह चरित्र से गिरी हुई है। अंग्रेज़ी की एक कहावत है "यदि वह देखने में पतिव्रता नहीं मालूम होती तो मैं उसकी कोई कद्र नहीं करता, चाहे वह वास्तव में पतिव्रता ही हो।"[१]

महाकवि शेक्सपियर ने कहा है कि मनुष्य के दिमाग़ की बनावट का नकशा चेहरे से जाना जा सकता है "To Find the minds construction in the face."[२] कितनी ही बार, आंतरिक दुष्टता को छिपाने के लिए दुर्जन मुसकरा-मुसकरा कर बात करते हैं। इस आशय का महाकवि शेक्सपियर का वाक्य है कि "He may smile and smile and be a villian still." अर्थात् वह चाहे बारंबार मुसकरा कर बात करे, परन्तु हो सकता है कि उसका हृदय दुष्टता से परिपूर्ण हो।[३]

सुप्रसिद्ध रोमन बादशाह जुलियस सीज़र की पत्नी क्लिओपेट्रा बहुत सुन्दर और कामुक थी। उसकी अनुपम सुन्दरता तथा चरित्र के कारण रोम का इतिहास ही बदल गया। उसी के विषय में कहा गया है कि क्लिओपेट्रा की नाक यदि कुछ छोटी होती तो सारे संसार का इतिहास ही भिन्न होता।[४]

अंग्रेज़ कवि, कलाकार तथा साहित्यिकों का लक्षण-शास्त्र का अध्ययन बहुत गंभीर और विशाल है। उन्होंने शरीर-लक्षणों से

---

१. If she seem not chaste to me, what care I, how chaste she be ? —Sir walter Raleigh

२. देखिये उनका सुप्रसिद्ध दुःखान्त नाटक (Macbeth)।

३. देखिए उनका नाटक (Hamlet)।

१. देखिये Pascal Pensees II.

जो निष्कर्ष (नतीजे) निकाले हैं वे बहुत ही खोजपूर्ण हैं। परन्तु हमारे भारतवर्ष और इंगलैण्ड आदि ठंडे मुल्कों की जलवायु आदि में इतना अन्तर है कि उनके सब लक्षण यदि इस देश के मनुष्यों पर घटाये जायें तो पूरे नहीं उतरते। विभिन्न देश और जातियों के शरीर की बनावट, गठन तथा मुखाकृति भिन्न-भिन्न होती है। चीनियों के चेहरे दूसरी प्रकार के होते हैं। बर्मा या जापान के लोगों की आँख, नाक आदि हम लोगों से भिन्न प्रकार की होती हैं। इसी प्रकार इंगलैण्ड आदि निवासी नौर्मन, स्लैव आदि विविध नस्ल के होने के कारण, यूरोप के अन्य देशों की अपेक्षा अंग्रेज़ों के शरीर की बनावट तथा मुखाकृति भिन्न होती है। इस कारण पाश्चात्य शरीर-लक्षण-शास्त्र की भारतीय नर-नारियों के लिये उतनी उपयोगिता नहीं हो सकती। इस कारण यद्यपि इस शास्त्र के मूल सिद्धान्त तो एक ही हैं तथापि भारतीय लक्षण-शास्त्र भारतीयों पर विशेष लागू होने के कारण उन्हें प्रधान मान मुख्य-मुख्य लक्षण दिये जाते हैं।

भारतीय लक्षण-शास्त्र की उपयोगिता और प्राचीनता

भारतीय लक्षण-शास्त्र बहुत प्राचीन है। लक्षण देखकर किसी का भूत या भविष्य बताना एक विशेष विद्या है जिसको उसी विद्या के आचार्य जानते हैं जिन्होंने उसका अच्छी प्रकार अध्ययन किया है। जिस प्रकार कुशल कविराज (वैद्य) नाड़ी देखकर शरीर की आभ्यन्तरिक क्रिया को जान लेता है, अथवा जिस प्रकार आकाश की स्थिति को देखकर आँधी, वर्षा आदि का ज्ञान हो जाता है उसी प्रकार मनुष्य के शरीर को देखने से उसकी शारीरिक, मानसिक तथा चित्त की व्यवस्था का पता लगाना कठिन नहीं है। घोड़ों के बच्चों को देखकर ही चतुर घुड़सवार पहचान लेते हैं कि बड़े होने पर वह कैसा दौड़ेंगे। गाय तथा भैंस को देखकर वह कैसा दूध देगी यह अनुमान लगाना सर्वसाधारण का अनुभूत विषय है।

पुरुष-लक्षण, स्त्री-लक्षण, गज-लक्षण, वाजि-लक्षण ग्रादि सभी के सुलक्षण एवं कुलक्षण शास्त्रों में वर्णित हैं। ये हज़ारों वर्ष पूर्व भारत में लिखे गये ग्रौर इनका उद्देश्य था उस ज्ञान का प्रसार जिसके द्वारा ग्रपने ग्रभ्युदय के लिये मनुष्य सुलक्षण लोगों से सम्पर्क स्थापित करे तथा कुलक्षणयुक्त ग्रादमियों से बचे।

वराह मिहिर ग्रादि केवल ज्योतिष के ग्रादि ग्राचार्यों ने ही पुरुष-लक्षण, स्त्री-लक्षण ग्रादि की विस्तृत विवेचना नहीं की है। हमारे धर्मशास्त्रकारों ने भी 'लक्षण शास्त्र' पर बहुत ज़ोर दिया है। 'मनुस्मृति', 'याज्ञवल्क्य स्मृति' ग्रादि 'स्मृतियों' में इस बात का विवेचन किया गया है कि कन्या का पिता, किन लक्षणों से यह ज्ञात कर सके कि 'वर' में पुंस्व (पुरुषत्व) है। इस प्रकार वर किस प्रकार के लक्षणों से युक्त कन्या से विवाह करे जिससे उसका गार्हस्थ्य-जीवन सुखी हो सके। ये स्मृतियाँ, श्रुतियों के वचन की पोषक हैं। 'श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत्।' इससे सिद्ध हुग्रा कि भारतीय लक्षण-शास्त्र का ग्राधार स्वयं भगवान् वेद हैं।

वाल्मीकि जी द्वारा शरीर-लक्षणों का उल्लेख

लौकिक काव्यों में महर्षि वाल्मीकिकृत रामायण सबसे प्राचीन है। इसी कारण महर्षि वाल्मीकि को ग्रादि कवि कहा है। इन्होंने भी सुलक्षणों का विषय उठाया है। जब हनुमानजी सीता जी को ढूँढ़ते हुए ग्रशोक वाटिका में पहुँचे तो सीताजी ने कहा,

"यानि रामस्य चिह्नानि लक्ष्मणस्य च वानर।
तानि भूयः समाचक्ष्व........................।।"

ग्रर्थात् राम के जो चिह्न हैं ग्रौर जो लक्ष्मण के चिह्न हैं उन्हें कहो। इस पर हनुमान जी ने कहा—

"विपुलांसो महाबाहुः कम्बुग्रीवः शुभाननः।
गूढजत्रुः सुताम्राक्षो रामो नाम जनैः श्रुतः।।

दुन्दुभिस्वन निर्घोषः स्निग्धवर्णः प्रतापवान् ।
समश्च सुविभक्ताङ्गो वर्णं श्यामं समाश्रितः ।।
त्रिस्थिर स्त्रि-प्रलम्बश्च त्रिसमस्त्रिषु चोन्नतः ।
त्रिताम्रस्त्रिषु च स्निग्धो गंभीर स्त्रिषु नित्यशः ।।
त्रिवल मांस्त्रयवनत श्चतुर्व्यङ्ग स्त्रिशीर्षवान् ।
चतुष्कलश्चतुर्लेखश्चतुष्किष्कुश्चतुः समः ।।
चतुर्दश समद्वन्द्वश्चतुर्दंष्ट्र श्चतुर्गतिः ।
महोष्ठहनुनासश्च पञ्चस्निग्धोऽष्टवंशवान् ।।
दशपद्मो दश बृहत् त्रिभिर्व्याप्तो द्विशुक्लवान् ।
षडुन्नतो नवतनु त्रिभिर्व्याप्तोति राघवः ।।"

अर्थात् बड़े कंधों वाले, महाबाहु, शंख की-सी गर्दन वाले, सुन्दर वदन, हंसलियों की अस्थियाँ मांसयुक्त, अरुण आँख वाले, लोगों में राम नाम से विख्यात हैं। वह गंभीर शब्द वाले, चिकने वर्ण वाले, प्रतापी, सुविभक्त अंग वाले, श्याम-वर्ण हैं। तीन वस्तु उनकी स्थिर हैं—अंक, कलाई और मुक्का। तीन अंग लम्बे हैं—भौंह, हाथ आदि। तीन समतल हैं—केश का अगला भाग, घुटने आदि। तीन स्थल उन्नत हैं—नाभि के चारों ओर का स्थान, सीना तथा बाजू। तीन स्थलों में लालिमा हैं—नेत्रों के छोर में, नाखूनों में तथा हाथ और पैरों के तलुओं में। तीन वस्तुओं में स्निग्धता है—पैर की रेखाओं, सिर के केश आदि में। तीन गंभीर हैं—नाभि, स्वर तथा गति। पेट तथा गले में त्रिवलियाँ हैं। तीन गहरे हैं—पैरों के तलुओं का मध्य भाग, पैरों की रेखायें और स्तन के अग्रभाग। चार अंग छोटे हैं—गर्दन, पीठ, पिंडलियाँ आदि। उनके शीर्ष पर तीन आवर्त हैं। उनके अँगूठे की जड़ में चार लकीरें हैं। वह चार हाथ ऊँचे हैं। उनके चार अंग सम हैं—हाथ, घुटने, गोदी तथा गाल। चारों युग्म अवयव एक समान हैं अर्थात् विषमता नहीं है। उनके चौदह अंगद्वन्द्व (दोनों ओर के अंग) सम हैं—भौंहें नासिकापुट

(नथुने), नेत्र, कान, ओष्ठ, स्तनाग्र, कुहनी, कलाई, घुटने, हाथ, कमर के दोनों भाग आदि। उनके मुख में दोनों तरफ चार-चार बराबर 'दाढ़ें' हैं। सिंह (बबर शेर), व्याघ्र हाथी तथा बैल के समान उन की चाल है। उनके ओष्ठ, ठोड़ी तथा नाक बड़े हैं। पाँच वस्तु उनकी चिकनी और मुलायम हैं—जीभ, मुँह, नाख़ून, बाल और त्वचा (शरीर का चमड़ा)। आठ वस्तु उनकी बाँस की तरह सीधी और पुष्ट ग्रंथि वाली हैं—दोनों हाथों की उंगलियाँ, जाँघें तथा पिंडलियाँ। उनके दश शरीर के भाग पद्म (कमल) के समान हैं मुख, नेत्र, जीभ, चेहरा ओष्ठ, तालु, स्तन, नख, हाथ तथा पैर। दस अंग उनके बड़े हैं—वक्षःस्थल, शीर्ष (माथा), गर्दन, हाथ, कन्धे, नाभि, पैर, रीढ तथा कान। तीन वस्तुओं से वह व्याप्त हैं—अर्थात् श्री, यश तथा तेज से—भावार्थ यह है कि उनके स्वरूप में इनका आभास मिलता है। दो वस्तु उनकी सफ़ेद हैं, दाँत तथा नेत्र। छः अंग उनके उन्नत हैं—कक्षा (काँख), नाक, बाँह, उरःस्थल, कंधे तथा ललाट। नौ अंग सूक्ष्म हैं—उंगलियां, केश, लोम, नख, त्वचा, मूंछ, बुद्धि, दृष्टि आदि।

ऊपर इन श्लोकों का अनुवाद इसलिये दिया गया है कि श्याम[१] वर्ण को छोड़कर और जितने भी लक्षण भगवान् रामचन्द्र के दिये गए हैं वे सब महापुरुषों के लक्षण हैं। ऊपर लिखे लक्षणों में जितने भी किसी पुरुष में पाये जावें उतना ही श्रेष्ठ वह 'पुरुष' होगा यह अनुमान करना चाहिये। इसी प्रकार जब युद्ध करते समय भगवान् राम और लक्ष्मण मूर्च्छित हो गये तो राक्षसराज रावण की आज्ञा से सीताजी को विमान में ऊपर ले जाकर बताया गया कि राम और लक्ष्मण लड़ाई में मारे गये और उनके मूर्च्छित शरीरों के लिये 'ये राम और लक्ष्मण के मृत शरीर हैं' यह कहा गया। स्वभावतः सीताजी शोक-संतप्त हो गईं। उस समय उन्होंने दुःख में जो उद्गार निकाले हैं उनसे भी स्पष्ट है कि स्त्रियों के लक्षण देख-

१. श्याम तथा गौर दोनों वर्णों के पुरुष श्रेष्ठ होते हैं।

कर उनका भावी शुभाशुभ पंडित लोग बताया करते थे। 'वाल्मीकि रामायण' के उपर्युक्त प्रकरण सम्बन्धी श्लोक ये हैं—

"भर्तारं निहतं दृष्ट्वा लक्ष्मणं च महा बलम्।
विललाप भृशं सीता करुणं शोक कर्षिता॥
ऊचुर्लाक्षणिका ये मां पुत्रिण्यविधवेति च।
तेऽद्य सर्वे हते रामे ज्ञानिनोऽनृत वादिनः॥
यज्वनो महिषी ये मामूचुः पत्नीं च सत्त्रिणः।
तेऽद्य सर्वे हते रामे ज्ञानिनोऽनृत वादिनः॥
ऊचुः संश्रवणे ये मां द्विजाः कार्तान्तिकाः शुभाभ्।
तेऽद्य सर्वे हते रामे ज्ञानिनोऽनृत वादिनः॥
इमानि खलु पद्मानि पादयोर्वै कुलस्त्रियः।
आधिराज्येऽभिषिच्यन्ते नरेन्द्रैः पतिभिः सह॥
वैधव्यं यान्ति वै नार्योऽलक्षणै र्भाग्यदुर्लभाः।
नात्मनस्तानि पश्यामि पश्यन्ती हत लक्षणा॥
सत्यनामानि पद्मानि स्त्रीणामुक्तानि लक्षणैः।
तानद्य निहते रामे वितथानि भवन्ति मे।
केशाः सूक्ष्माः समा नीला भ्रुवौ चासंहते मम।
वृत्ते चारोमके जंघे दन्ताश्चा विरला मम॥
शङ्खे नेत्रे करे पादौ गुल्फावूरू समौचितौ।
अनुवृत्त नखाः स्निग्धाः समाश्चाङ्गुलयो मम॥
स्तनौ चाविरलौ पीनौ मामकौ मग्नचूचुकौ।
मग्ना चोत्सेधिनी नाभिः पार्श्वोरस्कं च मे चितम्॥
मम वर्णो मणिनिभो मृदून्यङ्गरुहाणि च।
प्रतिष्ठितां द्वादशभि र्मामूचुः शुभलक्षणाम्॥
समग्र यव मच्छिद्रं पाणि पादं च वर्णवत्।
मन्दस्मिते त्येव च मां कन्या लाक्षणिका विदुः॥

श्राधिराज्ये ऽभिषेको मे ब्राह्मणैः पतिना सह ।
कृतान्त कुशलैरुक्तं तत्सर्वं वितथीकृतम् ।"

अर्थात् देह के लक्षण जानने वाले पण्डितों ने मुझे बताया था कि मैं पुत्रवती होऊँगी और जीवन-भर सधवा रहूँगी । ज्योतिषियों ने कहा था कि रामचन्द्र बहुत-से अश्वमेध यज्ञ करेंगे और मैं उनकी पटरानी होऊँगी । मुझे कल्याणी और पति से सम्मान पाने वाली बताया था । आज रामचन्द्र के मारे जाने से उन लोगों के वचन असत्य हुए । जिन ज्योतिषियों ने मुझे जीवन-भर सधवा रहने की बात बताई थी, उनकी बात भी आज असत्य हुई ।

जिन कुलीन स्त्रियों के पैरों में पद्म चिह्न होते हैं वे अपने पति के साथ राज्यसिंहासन पर अभिषिक्त होती हैं । मेरे पैरों में पद्म भी हैं । जिन लक्षणों से स्त्रियाँ विधवा और अभागिनी होती हैं वे लक्षण मेरी देह में नहीं हैं । सामुद्रिक जानने वाले पण्डितों ने स्त्रियों के जो शुभ लक्षण बताए हैं आज रामचन्द्र के मारे जाने से उनकी सब बातें असत्य हुईं । मेरे सिर के बाल सूक्ष्म, काले और समान हैं । भौंहें एक में जुटी नहीं हैं, पिंडलियाँ गोल हैं, और उनमें रोयें नहीं हैं । दाँत विरल नहीं हैं, दोनों नेत्रों के ऊपर का भाग, आँखें, हाथ-पैर, घुटने और जंघा (पिंडलियाँ) समान हैं । उंगलियाँ स्निग्ध और बराबर हैं । नख गोलाकार और लाल हैं । स्तन कठोर हैं और कुचाग्र मग्न हैं । नाभि गहरी और उसके किनारे ऊँचे हैं । छाती चौड़ी और पार्श्व भरी हुई है । देह की कान्ति मणि के समान चमकती है ।

रोयें कोमल हैं । पैरों की उंगलियाँ और तलवे ज़मीन से उठे नहीं रहते । मेरे हाथ और पैर में यव-चिह्न हैं । उंगलियाँ घनी हैं । हथेली और तलवे लाल हैं । मन्द मुसकान है । इन सब लक्षणों से ज्योतिषियों ने पति के साथ राज्य-सिंहासन पर हमारा अभिषेक बताया था, उनकी बात असत्य हुई ।

सौभाग्यवती स्त्रियों में क्या शुभ लक्षण होते हैं इनका वर्णन उपर्युक्त पंक्तियों में महर्षि वाल्मीकि जी द्वारा अच्छा किया गया है। जब संस्कृत के आदि काव्य में स्त्री-लक्षण तथा पुरुष-लक्षण इतनी सूक्ष्मता और विस्तार से दिये गए हैं तो यह आसानी से अनुमान लगाया जा सकता है कि हमारा लक्षण-शास्त्र कितना प्राचीन और कितना विशद था।

केवल 'वाल्मीकीय रामायण' ही में नहीं 'श्रीमद्भागवत' आदि अन्य प्राचीन ग्रन्थों में पद-चिह्न आदि का सूक्ष्म वर्णन किया गया है—

"पदानि व्यक्त मेतानि नन्दसूनोर्महात्मनः।
लक्ष्यन्ते हि ध्वजाम्भोज वज्राङ्कुश यवादिभिः॥"

(१०-३०-२५)

अर्थात् अवश्य ही यह चरण-चिह्न उदार शिरोमणि नन्दनन्दन के हैं क्योंकि इनमें ध्वजा, कमल, वज्र, अंकुश और जौ आदि के चिह्न स्पष्ट दीख रहे हैं।

ज्योतिष और लक्षण-शास्त्र का सम्बन्ध

पुराणों में तो 'लक्षणों' का इतना अधिक उल्लेख है कि यदि उन सब का संग्रह किया जाय तो एक बृहत् पुस्तक का निर्माण हो सकता है। ज्योतिष और लक्षण-शास्त्र का घनिष्ठ सम्बन्ध है। ज्योतिषी जिन बातों को जन्म-कुंडली के ग्रह तथा राशि से बताते हैं उन्हीं बातों को लाक्षणिक स्त्री किंवा पुरुष के शरीर को देख कर बता सकते हैं। कारण यह कि जन्म-कुंडली की बारह राशियाँ या भावों या विभागों का, शरीर के बारह अंगों से सम्बन्ध है—

१. मेष राशि या प्रथम भाव — शिर प्रदेश

२. वृषभ राशि या द्वितीय भाव — मुखमंडल

३. मिथुन राशि या तृतीय भाव	गर्दन, दोनों बाहु, हाथ
४. कर्क राशि या चतुर्थ भाव	हृदय प्रदेश, वक्ष:स्थल
५. सिंह राशि या पञ्चम भाव	पेट (नाभि के ऊपर, छाती के नीचे)
६. कन्या राशि या षष्ठ भाव	नाभि के नीचे 'बस्ति' के ऊपर
७. तुला राशि या सप्तम भाव	(नाभि और लिंग के बीच के स्थान से लेकर 'बस्ति' तक)
८. वृश्चिक राशि या अष्टम भाव	लिंग-मूल से गुदा तक
९. धनु राशि या नवम भाव	दोनों ऊरु (जाँघ)
१०. मकर राशि या दशम भाव	दोनों घुटने
११. कुंभ राशि या एकादश भाव	पिंडलियाँ गुल्फ तक
१२. मीन राशि या द्वादश भाव	चरण-युगल

इसका विशेष विवरण देखने के लिए 'बृहज्जातक' (१—४); 'फलदीपिका' (१—४); 'सारावली' (१—५) आदि ज्योतिष के ग्रन्थ देखने चाहिये। जिस व्यक्ति के जन्म के समय जो राशि या भाव निर्बल, पापग्रह से युत या वीक्षित होता है उस मनुष्य के शरीर का भी वह भाग दुष्ट लक्षणों से दूषित पाया जायगा। जो मनुष्य

नोट—नाभि से लिंग-मूल तक का भाग दो हिस्सों में विभाजित करने से ऊपर का षष्ठ भाव, नीचे का सप्तम भाव।

शीर्षोदय है और माता के शरीर से निकलते समय जिनका 'सिर' पहले निकला उनके लिए यह क्रम है। जिनके जन्म के समय 'पैर' पहले निकले उनका प्रथम भाव पैर, द्वितीय भाव पिंडली, तृतीय जानू, यह क्रम समझना चाहिये। (देखिये—'दैवज्ञ कामधेनु', १२-३५)

इसी प्रकार द्रेक्काण (जन्मलग्न का तृतीय भाग) के अनुसार भी शरीर को तीन भागों में विभाजित कर एक भाग को १२ हिस्सों में बाँटा जाता है—प्रथम द्रेक्काण (१) सिर, (२) दाहिना नेत्र, (३) दाहिना कान, (४) दाहिना नथना या नासिका का दाहिना भाग, (५) दाहिना कपोल, (६) ठोड़ी का दाहिना हिस्सा, (७) मुँह, (८) ठोड़ी का बायाँ हिस्सा, (९) बायाँ कपोल, (१०) नासिका का वाम भाग, (११) वाम कर्ण, (१२) वाम नेत्र।

द्वितीय भाग के बारह हिस्से निम्नलिखित प्रकार से किये जाते हैं—

(१) कंठ, (२) दाहिना कंधा, (३) दाहिनी भुजा, (४) दाहिना पार्श्व (५) छाती का दाहिना हिस्सा (६) क्रोड़ का दक्षिण भाग (७) नाभि (८) क्रोड़ का वाम भाग (९) छाती का वाम भाग (१०) वाम पार्श्व (११) वाम भुजा (१२) वाम कंधा।

तृतीय भाग के बारह हिस्से निम्नलिखित प्रकार से किये जाते हैं—

(१) बस्ति (२) शिश्न (३) दक्षिण वृषण (४) दक्षिण जाँघ (५) दक्षिण घुटना (६) दाहिनी पिंडली (७) दोनों पैर (८) वाम पिंडली (९) वाम घुटना (१०) वाम जंघा (११) वाम वृषण (१२) गुदा।

वराह मिहिराचार्य का मत है कि 'तस्मिन् पापयुते व्रणः शुभयुते दृष्टे च लक्ष्मादिशेत्' ('बृहज्जातक', ६—२५) जिस द्रेक्काण में पापग्रह हो वहाँ व्रण होता है या व्रणचिह्न होता है। शुभ ग्रह से युक्त, वीक्षित हो तो शुभ चिह्न होता है।

एक प्रकार से यह कहना चाहिये कि 'जन्म-कुण्डली' मनुष्य के शरीर का एक नकशा है। जन्म-कुंडली की जो राशि, भाव या द्रेक्काण शुभ ग्रह से युत, दृष्ट बलवान होता है, वह जिस शरीर के अंग का अधिष्ठाता होता है, वह अंग भी पुष्ट और सुन्दर होता है। ज्योतिष विद्या और लक्षण-शास्त्र एक-दूसरे से बहुत अधिक सम्बद्ध हैं। इसलिये हस्त-रेखा, शरीर-लक्षण आदि के अवलोकन तथा फल-कथन में ज्योतिष विद्या के विद्वान् जितने सफल होते हैं उतने अन्य नहीं। हस्त-रेखा ज्ञान तथा लक्षण-शास्त्र में विशेष दक्षता की इच्छा रखने वालों को उचित है कि ज्योतिष शास्त्र का भी थोड़ा ज्ञान प्राप्त कर लें। हाथ में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि आदि के जो स्थान हैं उनको देखकर कितने ही व्यक्तियों को हमने बताया है कि जन्म-कुंडली में उनका कौन सा ग्रह अच्छा पड़ा है और कौन सा बिगड़ा है। जो ग्रह स्वगृही, उच्च या केन्द्र त्रिकोण में होता है उसका हाथ में जो स्थान* है वह उन्नत, सुन्दर, शुभ रेखायुक्त होता है; और जो ग्रह नीच, शत्रु-क्षेत्री या अनिष्ट भावस्थित होता है, हाथ में उस ग्रह का स्थान नीचे दबा हुआ कटी-फटी रेखाओं से युक्त, निस्तेज होता है।

इसी प्रकार जिनकी जन्म-कुंडली में धन भाव बलवान होगा उनके नेत्र, मुख, कपोल, शुभ लक्षणों से युक्त होंगे। जिनकी जन्म-कुंडली में तृतीय 'भाव' अच्छा होगा उनके बाहु, ग्रीवा आदि श्रेष्ठ होंगे। जन्म-लग्न से चतुर्थ भाव में जिसके बलवान ग्रह पड़े होंगे उसका वक्षःस्थल उन्नत तथा पुष्ट होगा। इसी प्रकार सर्वत्र समझना चाहिये।

विविध लक्षणों का समन्वय और संतुलन

लक्षण-शास्त्र के अनुसार मनुष्य के शरीर के अंग-प्रत्यंग से यह

---

*इसे माउण्ट, पर्वत, ग्रह-स्थान, ग्रह-क्षेत्र आदि कहते हैं।

अनुमान करना चाहिये कि इसकी प्रकृति, स्वभाव तथा भविष्य कैसा है। किन्तु जिस प्रकार जन्म-कुंडली में सभी ग्रह शुभ या सभी ग्रह अशुभ नहीं होते उसी प्रकार शरीर-लक्षणों में, किसी के शरीर में शुभ लक्षण ही शुभ लक्षण मिलें—अशुभ लक्षण कोई न मिले ऐसा नहीं होता। जिस प्रकार जन्म-कुंडली में शुभ ग्रहों के सुप्रभाव की अनिष्ट ग्रहों के कुप्रभाव से तुलना कर ज्योतिषी फलादेश करते हैं उसी प्रकार शरीर के शुभ लक्षणों का क्या प्रभाव होगा और दुष्ट-लक्षण-दूषित अंगों का क्या प्रभाव होगा इनका भली-भाँति विचार तथा दोनों की तुलनात्मक विवेचना कर किसी नतीजे पर पहुँचना चाहिये। केवल एक लक्षण से जो बिना विचार किए हुए तत्काल कह उठते हैं कि 'यह बेईमान है' या 'यह व्यभिचारी है' वे बड़ा अनर्थ करते हैं क्योंकि जो तराज़ू के दोनों पलड़ों की ओर देख कर बताता है कि किस तरफ़ तराज़ू झुकेगी उसी का अनुमान सत्य निकलता है—जो केवल एक पलड़े के वज़न को देख-कर ही, बिना दूसरी ओर की आलोचना किये, शीघ्रता से किसी नतीजे पर पहुँच जाते हैं उनकी बात सही नहीं उतरती।

इसलिये इस गम्भीर लक्षण-शास्त्र का, विद्या की भाँति अध्य-यन कर, शरीर-लक्षणों से यदि किसी पुरुष का, फलादेश करना हो, तो उसके शरीर में सिर से पैर तक जो लक्षण दिखाई दें उन्हें सूक्ष्म दृष्टि से देख कर एक काग़ज़ पर लिखना चाहिये। इसके साथ उसकी हस्त-रेखाओं से जो निष्कर्ष (नतीजा) निकाला जाय वह भी काग़ज़ पर विस्तारपूर्वक लिखते जाना चाहिये। इसमें धैर्यपूर्वक समय लगाना उचित है। त्वरा या जल्दी में, रास्ते चलते समय या जनसमुदाय के बीच जहाँ लोग वार्तालाप में निमग्न हों और बुद्धि का मनोयोग सम्भव नहीं हो—फलादेश करना उचित नहीं।

शुभ और अशुभ लक्षणों का संतुलन अर्थात् अपनी बुद्धि से उनको तोल कर परिणाम क्या होगा यह बताना अनुभवसाध्य है।

कई बार शुभ लक्षण और अशुभ लक्षण एक-दूसरे के प्रभाव को नष्ट कर देते हैं। कई बार दोनों प्रकार के परिणाम होते हैं—परन्तु जीवन के भिन्न-भिन्न काल में। उदाहरण के लिए किसी के शरीर में 'धन सम्पन्न' होने के भी लक्षण हैं और 'निर्धन' होने के भी, तो जीवन के भिन्न-भिन्न काल में इनका परिपाक हो सकता है।

बहुत से विशिष्ट व्यक्तियों की हस्त-रेखा देखने का अवसर हमें प्राप्त हुआ। उनके शरीर में वे बहुत से लक्षण हैं जिनके कारण वे उच्च पद पर आसीन हुए। परन्तु जीवन का प्रारम्भिक बहुत-सा भाग उनका साधारण स्थिति में ही व्यतीत हुआ था। ऐसे व्यक्ति के शरीर में दोनों प्रकार के लक्षण हमने देखे। आगे चलकर यह बताया जाएगा कि शरीर-लक्षणों से यह ज्ञान कैसे हो कि किस अवस्था में भाग्योदय होगा। परन्तु यहाँ यह लिखना आवश्यक है कि (क) लक्षण-शास्त्र (ख) हस्त-रेखा-ज्ञान, (ग) स्वर-शास्त्र, (घ) ज्योतिष-शास्त्र (ङ) शकुन-शास्त्र आदि एक ही महाविद्या के अंग हैं। इनका मनोयोगपूर्वक अध्ययन कर, शरीर-लक्षण तथा हस्त-रेखा देखने का अभ्यास करना चाहिये। बिना अभ्यास के विद्या फलीभूत नहीं होती। गत ३० वर्षों में, हमने शरीर-लक्षणों का अवलोकन कर जो निष्कर्ष निकाले हैं वे निरन्तर अभ्यास के ही परिणाम हैं। जिस प्रकार पाकशास्त्र की पुस्तक-मात्र पढ़ लेने से, बिना अभ्यास के कोई सुस्वादु भोजन नहीं बना सकता उसी प्रकार शरीर-लक्षण देखते-देखते यह अभ्यास हो जाता है कि शुभ लक्षणों का इतना वज़न है, अशुभ लक्षणों का इतना, और परिणाम यह होगा।

हमारे प्राचीन ऋषि-मुनि, स्मृतिकार, वराहमिहिर, गर्ग आदि आचार्यों के वचनों को अनुभव की कसौटी पर कस कर विविध लक्षणों का समन्वय और संतुलन कर परिणाम कहना चाहिये।

केवल एक लक्षण से जो फलादेश करेगा उसका कथन भ्रमात्मक हो सकता है।

लक्षण-शास्त्र में वर्णित शरीर के विविध अंग

लक्षण-शास्त्र के अन्तर्गत निम्नलिखित अंग, क्रिया आदि के लक्षण आते हैं—उन्मान (ऊँचाई), मान (वज़न), गति (चाल), संहति,[1] सार (ताकत), वर्ण, स्नेह (चिकनाई), स्वर, प्रकृति, सत्व (साहस), अनूक, क्षेत्र, शरीर-कान्ति, गन्ध, रुधिर, पैर (पदतल), पैर का अंगुष्ठ, पैर की उंगलियाँ, नख, पादपृष्ठ, गुल्फ, पार्ष्णि, जंघा (पिंडली), रोम, जानु (घुटने), ऊरु (जाँघ), कमर, नाभि, कुक्षि (कोख), पार्श्व (बगल—कमर से काँख तक), पेट, त्रिवली, हृदय, कन्धे, कक्षा (काँख) बाहु, ग्रीवा, ठोड़ी, मूँछ, कपोल, मुख, ओष्ठ दाँत, जिह्वा, मसूड़े, तालु, नासिका, हंसना, छींकना, नेत्र, दृष्टि, पक्ष्म (बरौनी), पलक मारना, बोलना, भौं, कान, ललाट, सिर, केश आदि।

हाथ, हाथ की उंगलियाँ, मणिबन्ध, हाथ का अँगूठा, कर-रेखा वर्ण, करतल, करपृष्ठ आदि भी लक्षण-शास्त्र के अन्तर्गत हैं और प्राचीन आचार्यों ने मनुष्य के शरीर-लक्षणों के अन्तर्गत इनकी भी विशद व्याख्या की है। परन्तु 'हस्तरेखा' का विषय स्वयं बहुत विस्तृत और उपादेय होने के कारण, इस पुस्तक में पृथक् दिया गया है। इसी प्रकार शरीर के विभिन्न भागों में तिल आदि का जो फल है वह भी लक्षण-शास्त्र के अन्तर्गत है परन्तु पाठकों की सुविधा के विचार से उसका प्रकरण भिन्न कर दिया है।

दाहिना भाग प्रधान या बायाँ

वैसे तो पुरुषों और स्त्रियों के दाहिने तथा बाएँ दोनों ही शरीर-भाग मुख्य हैं, परन्तु पुरुषों के शरीर में दाहिनी ओर और स्त्रियों के

---

१. अंगों का परस्पर सम्मिलन।

शरीर में बायीं ओर विशेष ध्यान देना चाहिये। 'प्रयोग पारिजात' में लिखा है कि समुद्र ऋषि का (जिनके नाम से यह शास्त्र 'सामुद्रिक-शास्त्र' कहलाता है) यही मत है—'वाम भागे तु नारीणां दक्षिणे पुरुषस्य तु। निर्दिष्टं लक्षणं तज्ज्ञैः समुद्रवचनं यथा।।' 'स्कन्दपुराण-काशीखण्ड' में नारद ऋषि का भी वाक्य है, 'पाणिं दर्शय दक्षिणम्' अर्थात् दाहिना हाथ दिखाइये। यद्यपि शरीर के अन्य अंग दाहिनी और बायीं ओर प्रायः एक-से होते हैं तथापि कभी-कभी दोनों ओर के अंगों में विभिन्नता भी पाई जाती है। ऐसी स्थिति में पुरुष के दाहिने अंग को और स्त्री के वाम अंग को प्रधानता देनी चाहिये।

उन्मान (उँचाई)

'उन्मान मान गति संहति सारवर्ण
स्नेहस्वर प्रकृति सत्व मनूक मादौ।
क्षेत्रं मृजां च विधिवत्कुशलो ऽवलोक्य
सामुद्र विद्वदति यातमनागतं वा।।
(बृहत्संहिता, ६८-१)

"मनुष्य की ऊँचाई, वज़न, चाल (चलने का प्रकार), सार (रक्त आदि किस धातु की अधिकता है, वर्ण (कृष्ण, श्याम, गेहुँआ, गौर, अति गौर आदि), स्नेह (अंगों का चिकनापन), स्वर (बोलते समय कंठ से जो ध्वनि निकले), प्रकृति (स्वभाव), सत्व (चित्त के धर्म—धैर्य, उद्वेग आदि), अनूक (पूर्वजन्म को सूचित करने वाली आकृति), क्षेत्र (शरीर के विभिन्न विभाग), मृजा (शरीर की उज्ज्वलता अर्थात् कान्ति) इनको विधिपूर्वक देखकर सामुद्रिक शास्त्र का ज्ञाता भूत तथा भविष्य को जान सकता है।"

कात्यायन ऋषि का मत है कि मनुष्य खड़ा होने पर जितना ऊँचा हो उसे 'उन्मान' कहते हैं। पुरुष को खड़ा करके पादतल से मस्तक तक तागे से नापना चाहिए। जितना ऊँचा मनुष्य हो,

उतनी उँचाई पर तागे पर चिह्न करके तागा काट देना चाहिए। इस तागे को जिस मनुष्य का नाप लिया गया है, उसी की उंगलियों से नापना चाहिए। यदि यह लम्बाई—

(१) १०८ अँगुल हो तो उत्तम
(२) १०० ,, ,, ,, मध्यम
(३) ९० ,, ,, ,, निकृष्ट समझना

चाहिये। यह 'भविष्य पुराण' में समुद्र ऋषि का मत दिया है। किन्तु वराह मिहिराचार्य के मत से—

(१) १०८ अँगुल हो तो उत्तम
(२) ९६ ,, ,, ,, सम
(३) ८४ ,, ,, ,, हीन

आम तौर पर चारों उंगलियों से नाप कर 'चार अँगुल' कह दिया जाता है परन्तु कोई उंगली अधिक चौड़ी होती है कोई कम, इसलिए उंगली की चौड़ाई कितनी ली जावे? 'सामुद्र तिलक' का मत है कि बीच की उंगली का बीच का पर्व (पोरवा) जितना चौड़ा हो वह एक अंगुल चौड़ा मान लेना चाहिये। किन्तु 'हेमाद्रि' के अनुसार अपने अँगूठे के मध्मभाग के बराबर चौड़ाई को एक अँगुल मानना चाहिये।

'उन्मान' किंवा ऊँचाई से उत्तम, मध्यम, साधारण यह तीन प्रकार के पुरुषों की पहचान बताई गई है। अब 'ऊँचाई' से श्रेष्ठता ज्ञात करने का एक दूसरा प्रकार बताया जाता है—

'स्कन्दपुराण काशीखंड' में लिखा है कि कुंकुम से रंगे हुए सूत की तीन लड़ करे और गणेश, उमा, महेश्वर का भक्ति-पूर्वक स्मरण कर उत्तराभिमुख खड़े हुए मनुष्य को पादतल से मस्तक तक नापे। फिर उस मनुष्य से कहे कि दोनों भुजा और हाथ फैलाकर खड़े हो जाओ। अर्थात् उत्तर की ओर मुख कर खड़े हुए आदमी का दाहिना हाथ पूर्व की ओर और बायाँ हाथ पश्चिम की

श्रौर कंधे के समतल फैला हुश्रा होगा। तब दाहिने हाथ की मध्यांगुली (बीच की उंगली) के श्रन्त से बायें हाथ की बीच की उंगली के श्रन्त तक नापे। यदि यह १०८ श्रँगुल हो (जैसा ऊपर बताया गया है) श्रौर ऊँचाई के बराबर हो तो ऐसा मनुष्य बहुत श्रेष्ठ श्रधिकारी होता है।

मान (वज़न)

वराह मिहिराचार्य ने लिखा है कि जिसका वज़न श्राधा 'भार' हो वह सुखी, यदि इससे कम हो तो दुःखी। यदि वज़न एक 'भार' हो तो श्रति धनी। यदि वज़न डेढ़ 'भार' हो तो बहुत ही श्रेष्ठ पदवी का श्रधिकारी होता है। ('बृहत्संहिता', श्रध्याय ६८-१०६)

भार कितने वज़न का होता है यह 'निघण्टु' में दिया गया है—

५ गुंजा (चिरमठी) का	१ माशा
१६ माशे का	१ कर्ष
४ कर्ष का	१ पल
१०० पल का	१ तुला
२० तुला का	१ भार

यहाँ स्वभावतः यह शंका उठती है कि किस श्रवस्था में यह वज़न लिया जावे क्योंकि जैसे-जैसे श्रवस्था बढ़ती है वज़न बढ़ता जाता है। इस शंका का समाधान करते हुए श्राचार्य कहते हैं कि २० वर्ष की युवती तथा २५ वर्ष के युवक की ऊँचाई तथा वज़न लेकर उपर्युक्त परिणाम निकालने चाहिए।

गति (चाल)

गति, चाल या चलने के ढंग को कहते हैं। समुद्र ऋषि का मत है हंस, गृध्र या तोते की तरह जिसकी गति हो वह राजाश्रों में श्रेष्ठ होता है। हाथी, सिंह, बैल इनकी गति वाले भी भाग्यवान

होते हैं। 'सामुद्र तिलक' में लिखा है कि मत्त (जिसके गालों से मद चू रहा हो) गजेन्द्र, नेवले, हंस तथा वृषभ (बैल) की गति वाले धर्मपरायण, धनी और भोगी होते हैं और इसके विपरीत जिनकी चाल गीदड़, गधे, भैंसे, कृकलास (गिरगट), ख़रगोश या हरिण की तरह होती है वे दुःखी तथा सम्मानहीन होते हैं। 'भविष्य पुराण' में लिखा है कि जल की लहर की तरह, कौए या उल्लू की तरह जिनकी गति हो वे दुःखी, शोकाकुल और भयभीत रहते हैं। कुत्ते, भैंसे, ऊँट, सुअर, गधे या मेढ़े की तरह चाल वाले भाग्यहीन होते हैं। वराह मिहिर का मत है कि सिंह, व्याघ्र, वृषभ गजेन्द्र तथा मोर की-सी चाल वाले राजा होते हैं। जिनके चलने से शब्द न हो वे उच्च पदवी प्राप्त करते हैं। जो तेज़ी से या मेढक की तरह व्याकुलता से चलते हैं वे दरिद्र होते हैं।

संहति

शरीर में परस्पर एक अंग के दूसरे अंग से मिलान को संहति कहते हैं। यथा किसी के कान तो बहुत सुन्दर हैं परन्तु अपने स्थान पर लगे ठीक न हों तो कहेंगे कि कान तो सुन्दर हैं परन्तु इनकी संहति ठीक नहीं है। किसी व्यक्ति के अंगों के परस्पर सम्मिलन में जो मांस, हड्डी, संधि-बन्ध आदि की शिथिलता या ढीलापन है वह दरिद्रता का परिचायक है। जिनके शरीर में परस्पर अंगों की सुश्लिष्टता और संहति हो वे सुखी और दीर्घायु होते हैं।

सार

मनुष्य के शरीर में सात 'सार' हैं—मेद (चरबी), मज्जा (हड्डी के भीतर का भाग), चर्म, हड्डी, शुक्र, रुधिर और मांस।

जिनके शरीर में मज्जा और मेद विशेष होती है और अच्छा शरीर होता है वे धन और सन्तानयुक्त होते हैं। जिनका शरीर का चमड़ा स्निग्ध अर्थात् चिकना हो वे धनी; मुलायम हो वे सुन्दर,

ग्रौर पतला हो वे बुद्धिमान् होते हैं। जिनकी हड्डी मोटी हों वे बलवान, विद्वान् ग्रौर सुन्दर होते हैं। जिनके शरीर में शुक्र की बहुलता होती है (ग्रर्थात् वीर्य बलवान तथा ग्रधिक होता है) वे बुद्धिमान्, विद्वान् ग्रौर सुन्दर होते हैं। जिनमें रक्त का ग्राधिक्य होता है उनके तालु, ग्रोष्ठ, मसूड़े, जीभ, पलक का भीतरी भाग, हथेली तथा पैर के तलुए ललाई लिये हुए होते हैं। जिनके शरीर में मांस ग्रधिक हो ग्रौर सुगठित शरीर हो वे विद्वान् ग्रौर सुन्दर होते हैं।

'हेमाद्रि' में लिखा है कि जिसके शरीर में चरबी ग्रधिक हो वह नित्य प्रसन्न रहने वाला (ग्रर्थात् हँसमुख) सुन्दर, धनी ग्रौर कम क्रोध करने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति 'स्थिरमति' भी होता है ग्रथात् विचार दृढ़ कर लेने पर उस पर कायम रहता है। जिसके शरीर में वीर्य की प्रधानता हो ग्रौर दाँतों में चमक हो तो यह मज्जा-प्रधान का लक्षण है। ऐसा व्यक्ति गुणी, साहसी ग्रौर बुद्धिमान होता है। जिसके शरीर का चमड़ा चिकना, कोमल ग्रौर पतला हो वह बिना विशेष परिश्रम किये द्रव्य कमा लेता है, वस्त्र ग्रौर ग्राभूषणों का शौकीन होता है। उसकी श्रृंगार की ग्रोर विशेष प्रवृत्ति होती है। ऐसे व्यक्ति सुशील होते हैं ग्रौर प्रशंसा प्राप्त करते हैं। जिसकी हड्डियों में दृढ़ता हो वह दीर्घायु होता है। जिसके शरीर में रक्त की ग्रधिकता हो वह बुद्धिमान, धनवान, पुत्रवान, चतुर, साहसी ग्रौर सुखी होता है परन्तु उसमें शठता (शैतानी या चालाकी) भी होती है। जिसके शरीर में मांसाधिक्य हो ग्रौर सम्पूर्ण शरीर का स्पर्श सुखकर हो ग्रौर ग्रधिक सोता हो ऐसा पुरुष दीर्घायु, धनी ग्रौर सीधा होता है।

उपर्युक्त छः (मेद, मज्जा, त्वचा, मांस, ग्रस्थि, रुधिर) सारों की प्रधानता से जो गुण वर्णित किये गए हैं वे सब उस व्यक्ति में होते हैं जिसमें वीर्य की प्रधानता हो। ग्रर्थात् 'शुक्र' बलवान होने

से ऊपर लिखे हुए सभी गुण मनुष्य में होते हैं। सब 'सारों' का मुकुट-मणि शुक्र है। चेहरे पर तेज, आँखों में ज्योति आदि 'शुक्र-सारता' के लक्षण हैं। इसीलिये प्रयत्नपूर्वक 'शुक्र' की रक्षा करनी चाहिए।

उपर्युक्त सात 'सारों' के अतिरिक्त 'हेमाद्रि' में एक 'सत्व' सार और दिया गया है। निम्नलिखित गुण जिसमें हों वह 'सत्व' सारयुक्त कहलाता है—

कृतज्ञ, धर्मज्ञ, शूर, पवित्र, मर्यादा के अन्दर रहने वाला, दुःख नहीं करने वाला, विद्वान्, अहंकार (घमंड) नहीं करने वाला, ख्याति-युक्त, उद्यमशील, निराश न होने वाला, आशा रखने वाला, पास में थोड़ा भी हो तब भी देने वाला (दाता) और कल्याण की इच्छा रखने वाला व्यक्ति यदि अन्य शारीरक 'सार' (मेद, मांस, मज्जा आदि) से हीन भी हो तो भी राजा के समान उच्च पदवी प्राप्त करता है।

'हेमाद्रि' में उपर्युक्त लक्षण लिखने का अभिप्राय यह है कि शरीर तो मनुष्य अपना बनाता नहीं है, वह तो माता-पिता की देन है और आहार, विहार आदि से बन जाता है किन्तु मनुष्य अपनी चित्तवृत्ति, व्यवहार आदि को उपर्युक्त साँचे में ढालने का प्रयत्न करे तो उसका भाग्योदय होता है।

वर्ण (रंग)

शरीर या मुख के रंग की मीमांसा करते समय हमारे आचार्यों ने तीन विभाग किये हैं—(१) गौर, (२) श्याम (३) कृष्ण। कहने की आवश्यकता नहीं कि गौर के अनेक भेद होते हैं; श्याम वर्ण भी कम या अधिक तारतम्य के अनुसार एकसा नहीं होता। परन्तु मुख्यतः इन्हीं तीनों भेदों के अनुसार शुभाशुभ कथन किया गया है। इनमें गौर और श्याम इन दो वर्णों को अच्छा और शुभ माना गया

है। कृष्ण वर्ण अर्थात् अत्यन्त काला अच्छा नहीं समझा गया है।

इन तीनों वर्णों में भी स्निग्धता (चेहरे की चिकनाई) और चमक पर विशेष ज़ोर दिया गया है। जिसके चेहरे पर चिकनाई और चमक मालूम हो वह श्रेष्ठ—उत्तम कोटि का, जिसके चेहरे पर यह कम मात्रा में हो वह मध्यम कोटि का होता है। परन्तु जिसके चेहरे पर रूखापन हो या कहीं चिकनाई मालूम हो, कहीं रूखापन वह अच्छा नहीं होता। रूक्षता (रूखापन) धनहीनता का लक्षण है।

गौर वर्ण की परिभाषा करते हुए कहते हैं कि (१) कमल के किञ्जल्क के समान जिसका वर्ण हो वह गौर, (२) प्रियङ्गु के पुष्प की तरह जिसका वर्ण हो वह श्याम तथा (३) काजल की तरह जो काला हो वह कृष्ण वर्ण होता है।

'स्नेह'-लक्षण

'स्नेह' का अर्थ है चिकनाई। यह शरीर में सौभाग्य का लक्षण है। 'वाराही संहिता' अध्याय ६८, श्लोक १०१ में लिखा है कि पाँच जगह स्निग्धता देखनी चाहिए, 'वाणी, जिह्वा, दाँत, आँख और नाखूनों में। यदि इन सब स्थानों में चिकनापन हो तो ऐसा मनुष्य सुत, धन, सौभाग्य से युक्त होता है। यदि इन स्थानों में रूक्षता हो तो निर्धनता होती है। 'सामुद्र तिलक' में इसी विषय की विवेचना करते हुए कहते हैं कि जिह्वा की स्निग्धता से प्रियभाषण करने वाला होता है, दाँतों में स्निग्धता होने से अच्छा भोजन मिलता है। जिसके नेत्रों में स्निग्धता हो वह जनप्रिय होता है। शरीर के चमड़े में स्निग्धता या स्नेह हो तो 'अति सौख्य' प्राप्त होता है। यदि किसी नीची श्रेणी के व्यक्ति में भी स्निग्धता दिखाई दे तो उपर्युक्त फलादेश करना चाहिए। गर्ग ऋषि का मत है कि—

"चक्षुः स्नेहेन सौभाग्यं दन्तस्नेहेन भोजनम्।
त्वक् स्नेहेन परं सौख्यं नखस्नेहेऽधिकं धनम्॥

त्वक् रोम नख केशेषु दन्तोष्ठनयनेषु च ।
स्नेहो येषां तु दृश्येत कार्यं तेषामकारणम् ॥"

अर्थात् नेत्रों की स्निग्धता से सौभाग्य होता है, दाँतों के स्नेह से उत्तम भोजन, त्वक् (शरीर-चर्म) स्नेह से सुख, तथा नाखूनों की चिकनाई से अधिक धन । जिनके नख, केश आदि स्वभाव से ही स्निग्ध हों उनके बिना यत्न किये ही कार्य सिद्ध हो जाते हैं । 'प्रयोग पारिजात' का वचन है कि त्वचा की स्निग्धता से शय्यासुख तथा पैर के चिकनेपन से सवारी मिलती है । ('ज्योतिर्निबन्ध', पृष्ठ १३७) ।

स्वर

'भविष्य पुराण' का वचन है कि हंस का-सा जिनका स्वर हो तथा मेघध्वनि के समान जिनकी वाणी हो या जिनकी कंठध्वनि चक्रवाक या क्रौञ्च की कंठध्वनि के समान हो वे राजा होते हैं । इसी प्रकार घड़े को पानी में डुबाने से जो गम्भीर ध्वनि होती है या दुन्दुभि के समान जिनकी वाणी में गम्भीरता हो वे श्रेष्ठ पदवी प्राप्त करते हैं । इसके विपरीत गधे, कुरर या बच्चों के सदृश जिन की वाणी हो वे क्रूर और क्लेशभागी होते हैं । वराह मिहिर ने लिखा है कि जिस मनुष्य का स्वर (क) दुन्दुभि (ख) मृदंग, (ग) मेघध्वनि, (घ) सिंह, (ङ) गज, (च) वृषभ का-सा हो वह राजा होता है, परन्तु जिसका स्वर गधे की तरह या रूखा व जर्जर हो वह निर्धन तथा दुःखी होता है ।

हंस, चक्रवाक आदि तो देखने को भी नहीं मिलते और नगर में रहने वाले व्यक्तियों को सिंह तथा गज की वाणी सुनने का अवसर ही प्राप्त नहीं होता इस कारण श्रेष्ठता तथा सौभाग्य प्रकट करने वाले जो गुण हैं तथा धनहीनता एवं दुर्भाग्य द्योतित करने वाले जो अवगुण हैं दोनों की नीचे व्याख्या की जाती है—

'स्वर' से तात्पर्य यहाँ गाना गाने से नहीं है। स्वाभाविक रूप से बोलते हुए कंठ से जो ध्वनि निकलती है उसी पर से नतीजा निकालना चाहिये—

गंभीर—जब बोलने में आदि, मध्य तथा अवसान तीनों समय एक-सा शब्द हो उसे गंभीर कहते हैं।

दुन्दुभि—जो सब लोगों के मन को प्रसन्न करने वाला हो।

स्निग्ध—जिस वाणी में हर्ष, दीनता, भय, व्याधि, क्रोध आदि का प्रभाव प्रकट न हो और सुनने वालों के कानों को सुख देने वाली हो।

महान्—बहुत से लोग एक साथ बात कर रहे हों उसमें जिस की आवाज़ सबसे बुलन्द हो और सुनाई दे।

अनुनादी—दूर से धीरे-धीरे बोलने पर भी जो सुनाई दे।

गर्ग ऋषि ने 'स्वर' के उपर्युक्त पाँच गुण दिये हैं और लिखा है कि जिस व्यक्ति के स्वर में ये गुण पाये जावें वह दीर्घायु होता है। उसको विद्या, मान, सौख्य, धनागम, सवारी, पुत्र, स्त्री, भोग, ऐश्वर्य आदि सब शुभफल प्राप्त होते हैं। ऐसा व्यक्ति भोगी, दानी, बुद्धिमान तथा पुण्य-कर्म करने वाला होता है।

अब स्वर में दोष या अशुभ लक्षण क्या होते हैं उन्हें बताया जाता है—

विस्वर—घर्घर स्वर अर्थात् बोलते समय सुस्पष्ट, एकसी आवाज़ का न आना।

अतिस्वर—चंडस्वर—जोर से बोलना (जैसा किसी को डाँटते या धमकाते समय बोला जाता है।)

भग्न स्वर—खंडितस्वर—बोलते-बोलते बीच में वाणी का टूटना, हकलाना।

क्षार स्वर—बोलते-बोलते तुतला जाना या कोई अक्षर छोड़ जाना।

रूक्ष स्वर—ऊपर 'स्निग्ध' स्वर की परिभाषा दी गई है; जो उसके विरुद्ध हो, रूक्ष स्वर होता है।

जर्जरित—फूटे काँसे की-सी आवाज़ वाला।

निम्न—कंठ में ही जो आवाज़ रह जावे।

इन दुर्गुणों के अतिरिक्त जिसकी वाणी कठोर हो, कटु शब्द बोले या जिसकी वाणी से अति भयानकता प्रतीत हो या बोलते समय थूक के छींटे निकलें ये सभी कुलक्षण हैं। इन सब 'स्वर' के कुलक्षणों से यह परिणाम निकालना चाहिए कि यह व्यक्ति कलह करने वाला, कोधी, शठ, कठोर, अपमान करने वाला, निर्दयी, लोभी और तामसिक प्रवृत्ति का है।

भेड़िया, कौआ, उल्लू, ऊँट, प्लवग, क्रोष्ट, गधा व सुअर इनकी बोली से जिनकी आवाज़ मिलती है वे व्यक्ति दुष्ट. होते हैं। संक्षेप में यह है कि जिनकी वाणी मधुर, गम्भीर, कानों को सुख देने वाली हो वे उत्तम, और जिनकी वाणी सुनकर कर्कशता, अस्पष्टता या विषमता (कभी तेज कभी धीरे, कभी बहुत जल्दी कभी बहुत धीरे) प्रतीत हो वे बहुत शठ होते हैं।

प्रकृति और सत्व

यहाँ 'प्रकृति' का अर्थ है 'स्वभाव'—कुछ मनुष्य पृथ्वी-प्रकृति या पृथ्वी-स्वभाव के होते हैं, कुछ जल-प्रकृति या जल-स्वभाव के होते हैं इत्यादि। वैसे तो पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश ये पाँचों ही तत्व मनुष्य के शरीर में हैं और पाँचों ही तत्वों की प्रकृति या स्व-भाव मनुष्य में पाया जाता है किन्तु किसी व्यक्ति में किसी तत्व की विशेषता रहती है, किसी की कमी—और जिस तत्व की विशेषता रहती है, उसी प्रकृति का उस मनुष्य को कहा जाता है। इसी प्रकार सत्त्व, रज, तम ये तीनों ही गुण प्रत्येक मनुष्य में रहते हैं। बिना इन तीनों गुणों के मनुष्य-शरीर रह ही नहीं सकता किन्तु सत्त्वगुण-प्रधान होने से व्यक्ति सात्विक, रजोगुण प्रधान होने से

राजसिक तथा तमोगुण प्रधान होने से तामसिक कहा जाता है। प्राचीन आचार्यों ने पुरुषों को दस श्रेणी में बाँटा है—

(१) मही स्वभाव (२) तोय स्वभाव (३) अग्नि स्वभाव (४) वायु स्वभाव (५) आकाश स्वभाव (६) सुर प्रकृति (७) नर प्रकृति (८) राक्षस प्रकृति (९) पिशाच प्रकृति (१०) तिरश्चीन प्रकृति।

'बृहत्संहिता' में लिखा है कि जो व्यक्ति मही स्वभाव के होते हैं उनके शरीर से शुभ पुष्पों की-सी गन्ध निकलती है, उनकी श्वास सुगंधित होती है, वे स्थिर और संभोगवान् होते हैं। जिनकी जल-प्रकृति होती है वे जल बहुत पीते हैं, प्रियभाषण करते हैं और रसिक होते हैं और रस-भोजन के भी प्रिय होते हैं। अग्नि प्रकृति का मनुष्य चपल, अति तीक्ष्ण, चण्ड (क्रूर तथा क्रोधी), क्षुधालु (जिसको सदैव भूख मालूम होती हो) तथा बहुत भोजन करने वाला होता है। वायु-प्रकृति का मनुष्य चंचल प्रकृति का तथा दुर्बल होता है। उसे शीघ्र ही क्रोध आ जाता है। आकाश-प्रकृति का मनुष्य निपुण, अधिकतर खुला मुँह रखने वाला, गाने में कुशल, सुकुमार अंग वाला होता है। सुर 'सत्व' (देव-प्रकृति) का मनुष्य मृदु कोप करने वाला, त्यागशील, स्नेहरत होता है। मानव-प्रकृति का व्यक्ति गीतप्रिय, भूषण-प्रिय, सुशील, बाँटकर खाने वाला होता है। निशाचर-प्रकृति का मनुष्य बहुत उग्र क्रोधी, दुष्ट कार्य करने वाला तथा पापी होता है। पिशाच-प्रकृति का व्यक्ति चपल, गन्दा, बहुत बात करने वाला अधिक अंगवाला या शरीर से मोटा होता है। पशु-प्रकृति का मनुष्य भीरु, सदैव खाने की इच्छा रखने वाला, बहुत खाने वाला होता है।

'गर्ग संहिता' के अनुसार सत्व की दूसरी ही व्याख्या की गई है। सत्त्व वह है जिसकी मुख्यता से सब फल होते हैं—वे जिनके कारण आपत्ति के समय धैर्य नहीं छोड़ा जाता उसे सत्त्व कहते हैं। सत्त्व की प्रशंसा और उसके महत्व के विषय में कहते हैं—'गति' से अधिक

महत्व 'वर्ण' का है, वर्ण से अधिक महत्व 'स्वर' का, 'स्वर' की अपेक्षा भी महत्व है 'सत्त्व' का। 'सत्त्व' का ही सर्वत्र सुप्रभाव और फल दृष्टिगोचर होता है। अस्थियों (हड्डियों) के शुभ लक्षण से धन होता है। मांसलता के शुभ लक्षण से सुख, त्वचा के सुलक्षण से भोग, नेत्रों की शुभता से भोग, गति की शुभता से सवारी, स्वर के सुलक्षण से हुकूमत किन्तु 'सत्त्व' के सुलक्षण से ये सभी प्राप्त होते हैं, 'सत्त्वं सर्वे प्रतिष्ठितम्'। 'विवेक विलास' में भी लिखा है कि गति, वर्ण, स्नेह, स्वर, तेज, सत्त्व ये उत्तरोत्तर विशेष महत्व के हैं।

'सामुद्रतिलक' का वचन है कि और सब लक्षण एक तरफ़ और अकेला 'सत्त्व' एक तरफ़। जिसमें 'सत्त्व' होता है उस मनुष्य को लक्ष्मी कभी दुर्लभ नहीं होती। जिस तरह स्त्रियों का सबसे बड़ा भूषण 'सौभाग्य' है उसी प्रकार पुरुष का सबसे महत्त्वशाली गुण 'सत्त्व' है। इसके बिना पुरुष की पराजय होती है। बिना 'सत्त्व' के मनुष्य सदैव चिन्तित रहता है—

> "ननु येषां न मनागपि मनो विकारं कथञ्चनाभ्येति।
> आपद्यपि सम्पद्यपि ते सत्त्व विभूषिताः पुरुषाः॥
> शुभलक्षण मप्येकं बाह्यं न विलोक्यते स्फुटं यस्य।
> अथ दृश्यते पुनः श्रीस्तस्य तदस्ति ध्रुवं सत्त्वम्॥"

आपत्ति में या सम्पत्ति प्राप्त होने पर जिनके चित्त में तनिक भी मनोविकार नहीं होता वे ही 'सत्त्व'-युक्त पुरुष हैं। जिनमें बाहरी तौर पर देखने से कोई भी शुभ लक्षण साफ़ न दिखाई दे और वे धनिक हों तो समझना चाहिये उनमें 'सत्त्व' है। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम के सत्त्व की प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि उनके मुख की शोभा राज्याभिषेक से न प्रसन्नता को प्राप्त हुई न वनवास-दुःख से म्लान हुई—'प्रसन्नतां यो न गताऽभिषेकतः तथा न मम्लौ वनवास दुःखतः।' इसलिए मनुष्य की मुखाकृति, बात, व्यवहार

श्रादि से 'सत्त्व' का निर्णय करना चाहिये।

श्रनूक

पूर्व-जन्म में जैसा 'सत्त्व', 'स्वर', 'रूप', 'गति' श्रादि मनुष्य की थी उस श्रभ्यास के संस्कार-स्वरूप इस जन्म में भी पूर्व-जन्म का मनुष्य श्रनुकरण करता है। वह 'चेहरा' किस पशु-पक्षी श्रादि से मिलता है इसका निर्णय ध्यान से करना चाहिए। वैसे तो मनुष्य की मुखाकृति श्रौर पशुश्रों की मुखाकृति सर्वथा भिन्न होती है इस कारण भिन्नता होगी, परन्तु साथ के चित्र से स्पष्ट होगा कि किस प्रकार मनुष्य की मुखाकृति का पशुश्रों की श्राकृति से साम्य होता है—

चित्र नं० १२१ बैल के सदृश मुखाकृति
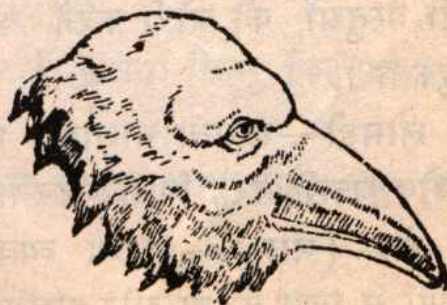
चित्र नं० १२२ कौए के सदृश मुखाकृति

चित्र नं० १२३ भेड़ के सदृश मुखाकृति

"जिनकी मुखाकृति गौ, वृषभ, सिंह, व्याघ्र या गरुड़-जैसी होती है वे प्रतापी और शत्रुओं को जीतने वाले, राजपद प्राप्त करने वाले होते हैं। जिनका मुख बन्दर, भैंस, सुअर या बकरे की तरह होता है, विद्या, धन और सुख प्राप्त करते हैं। जिनकी मुखाकृति गधे या ऊँट की-सी होती है वे दुःखी और दरिद्र होते हैं।" ('बृहत्संहिता', अध्याय ६८, श्लोक १०३-१०४)

पाश्चात्य मत यह है कि जिस पशु या पक्षी से मुखाकृति मिलती हो उसका स्वरूप और स्वभाव मनुष्य का होता है। इसका सर्वप्रथम प्रतिपादन एरिस्टोटिल ने किया। सुप्रसिद्ध लेखक Decker के मतानुसार निम्नलिखित तालिका दी जाती है—

सादृश्य स्वभाव तथा गुण

बन्दर—सावधान, खुशामदी, धोखा देने वाला, भीरु, छोटी-छोटी वस्तुओं की चोरी करने की आदत, मदिरापान की प्रवृत्ति, कामुकता।

लोमड़ी—अत्यन्त चालाक, धैर्य, ऊहापोह (किसी बात का गुणदोष अच्छी तरह विचार करना), घमंड, खुशामद।

रीछ (भालू)—असभ्य व्यवहार, मिलनसारी का अभाव, मनुष्यों से घृणा करना और अलग-अलग रहना।

बघेरा—चिड़चिड़ापन, शैतानी, ज्ञानेन्द्रियों का ठसपन (मोटी

चमड़ी और मोटी बुद्धि)।

शेर—महत्ता, बड़प्पन, उदारता, स्थिरता, दृढ़ता, चरित्र की शालीनता, बुद्धि, शांति।

भेड़िया—धोखा देने की प्रवृत्ति और मृदुता का सर्वथा अभाव, झगड़ालू प्रकृति, ढोंग तथा बहाना, गमग़ीन मिज़ाज।

तोता—ऐसे व्यक्तियों की प्रायः तोते के चोंच-जैसी नाक और भीतर धँसी हुई ठोड़ी होती है। ऊपरी और दिखावटी ज्ञान, विचारशीलता का अभाव, बातूनी होना, चिड़चिड़ापन, लोभ।

उल्लू—कल्पना का अभाव, बहुत दबने वाला भी नहीं किन्तु साहस की कमी, चीज़ों को तरतीब से रखना, हरेक बात में संयम।

कौआ—चतुरता, बेहया और बदतमीज़, हरेक चीज़ को झपट लेने की इच्छा करना, लोभ।

ईगिल (चील के सदृश पक्षी)—उच्च चरित्र, साहस, विचार की दृढ़ता।

कुत्ता—साहस, स्वामिभक्ति, प्रेम।

बिल्ली—घमंड, खुशामद करना, ऊपर से दिखाना परन्तु भीतर सच्ची हितैषिता का अभाव।

फ़ैरट (जंगली चूहे के समान जानवर)—हरेक बात की जानकारी की इच्छा करना और पूछना, शैतानी, झगड़ा करने की आदत, अशान्ति और अत्यन्त चालाकी।

भेड़—सीधा-सादा ढंग, भलाई, नम्रता किन्तु ज़िद्दीपन, नकल (अनुकरण) करने की आदत।

सुअर—मृदुता तथा दया का अभाव, लापरवाही, बहुत अधिक खाने की आदत।

घोड़ा—उदारता किन्तु घमंड।

गधा—सुस्ती, अपने ही में खुश रहना, खाने-पीने, पहरने आदि

की अभिरुचि और बौद्धिक कार्य, पठन, चिंतन आदि का सर्वथा अभाव।

बैल—लापरवाही और दूसरे की फ़िक्र न करना, जैसे दूसरे परिश्रम करते हैं वैसे ही लगकर परिश्रम करना; औरों के लिये उपयोगी साबित होना, अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह करने की चिन्ता।

ऊँट—परिश्रमी तथा गम्भीर किन्तु प्रेम एवं सहानुभूति का अभाव। दूसरे को चुभने वाली या तानेज़नी की बात कहना।

ऊपर निदर्शन-मात्र किया गया है। विज्ञ पाठक मुखाकृति देख-कर अपने परिचित मित्रों की प्रकृति तथा स्वभाव का अध्ययन करें तो अभ्यास से यह सुगम हो जायागा।

मृजा (शरीर-कान्ति)

संस्कृत में शरीर-कान्ति को मृजा तथा छाया भी कहते हैं। वराहमिहिर ने अपने सुप्रसिद्ध ग्रंथ 'वाराही संहिता' में लिखा है कि घड़े के अन्दर रखे हुए दीपक की प्रभा जैसे घड़े के बाहर भी दिखाई देती है उसी प्रकार शरीर की कान्ति से आभ्यन्तरिक (भीतर के) गुण और अवगुण, शुभ और अशुभ फल मालूम हो जाते हैं।

शरीर की कान्ति को पाँचों तत्त्व के अनुसार (१) पृथ्वी-प्रधान (२) जल-प्रधान (३) अग्नि-प्रधान (४) वायु-प्रधान तथा (५) आकाश-प्रधान माना है। वराहमिहिर के मतानुसार जिस ग्रह की महादशा या अन्तर्दशा मनुष्य की होती है उसी के अनुसार शरीर की कान्ति बदलती रहती है। सूर्य की महादशा, अन्तर्दशा हो तो अग्नि-प्रधान कान्ति होगी। यदि यह कान्ति उत्तम तेजयुक्त हो तो प्रताप को बढ़ाने वाली, शत्रु पर विजय प्राप्त कराने वाली, अधिकार वृद्धिकारक है। यदि चन्द्रमा की दशा अन्तर्दशा हो और शरीर की कान्ति विशेष लावण्ययुक्त, मृदुता, स्निग्धता आदि गुण-विशिष्ट हों तो जल-प्रधान या समुद्र-पार से आये पदार्थों से लाभ,

लोकप्रियता, धन-लाभ आदि होता है। यदि मंगल की दशा अन्तर्दशा हो तो शरीर-कान्ति में अग्नि की तरह ललाई लिये हुए चमक, प्रकृति में कुछ तेजी, सहनशक्ति की कमी, नेत्रों की तिरछी दृष्टि आदि इसके लक्षण हैं। ऐसा व्यक्ति यदि सेना में हो तो विजय-प्राप्ति करता है। यदि सेना में न हो तो भी विजय प्राप्त करने वाला तथा शीघ्र वाञ्छित (मनचाही) वस्तु या धन प्राप्त करने में सफल होता है।

यदि बुध की महादशा अन्तर्दशा हो तो शरीर की कान्ति में वृद्धि होती है—किन्तु कुछ श्यामता लिये। मनुष्य अधिक क्रियाशील हो जाता है। उसके शरीर की त्वचा (खाल), नख, रोम, केश, चिकने और मुलायम प्रतीत होते हैं। ऐसे मनुष्य के शरीर में से स्वाभाविक सुगंधि निकलती है, "छाया सुगन्धा च मही समुत्था।" इस प्रकार की कान्ति धनधान्य की वृद्धिकारक है।

बृहस्पति की दशा महादशा हो तो शरीर-कान्ति कुछ पीला-पन लिये हुए गौर और शांत प्रतीत होती है। चेहरे पर संतोष की छाप और धार्मिकता की ओर प्रवृत्ति होती है। धन, धर्म, विद्या आदि की सफलता की यह द्योतक है।

शुक्र की महादशा अन्तर्दशा हो तो शरीर-कान्ति में वृद्धि, लावण्य, आकर्षण विशेष होता है। विवाह तथा वैवाहिक सुख, भोग-पदार्थ तथा धनोपार्जन के लिये उत्तम है।

शनि, राहु, केतु की अन्तर्दशा हो तो शरीर-कान्ति कम हो जाती है। चेहरे पर रूखापन, विवर्णता, मलिनता आदि दोष प्रकट होते हैं। शरीर से गन्ध अच्छी नहीं आती। यह हिंसा-प्रवृत्ति, शोक, अर्थनाश आदि दुःख और संकट प्रकट करती है।

सूर्य और मंगल की अग्नि-प्रधान, चन्द्रमा और शुक्र की जल-प्रधान, बुध की पृथ्वी-प्रधान, बृहस्पति की आकाश-प्रधान तथा शनि, राहु, केतु की वायु-प्रधान शरीर की कान्ति होती है।

'गर्ग संहिता' में भी लिखा है कि शरीर की कांति तेजयुक्त, प्रसन्नता और सौन्दर्य प्रकट करने वाली हो तो शुभ लक्षण और विवर्ण, परुष, रूक्ष, भस्मवर्ण, श्याम, दग्ध-सी हो तो दुःख और दौर्भाग्य-द्योतक है (अर्थात् रूखापन, काली झाईं, मटमैला रंग हो जाना; कहीं चेहरे का रंग उड़ा हुआ प्रतीत हो कहीं गहरा, चेहरे का कुरूप या कांतिहीन होना अशुभ लक्षण है।

गंध-लक्षण

'गर्गसंहिता' का वचन है कि जिनके शरीर से प्याज़, लहसुन, सड़े हुए मांस, चर्बी, विष्ठा, मूत्र आदि की गन्ध आती हो वे व्यक्ति भयंकर (क्रूरकर्मा, विश्वास के अयोग्य) होते हैं। समुद्र ऋषि ने ऐसे व्यक्तियों को अतिनिन्दित कहा है। इसके विपरीत जिनके शरीर से सुगन्ध या मधुर-गन्ध आवे वे सत्य, धर्मपरायण, सात्त्विक पुरुष होते हैं।

'सामुद्र तिलक' में लिखा है कि गन्ध श्वास और त्वचा के छिद्रों से आती है। जिसके शरीर से कपूर, अगरु, चन्दन, कस्तूरी, चमेली, तमाल या पृथ्वी की गन्ध (प्रारम्भिक वर्षा के समय पृथ्वी से जैसी गन्ध निकलती है) निकले, वे शुभ हैं। ऐसे व्यक्ति भोगी, धनी तथा ऐश्वर्यसम्पन्न होते हैं। किन्तु जिनके शरीर से मछली, अण्डे, सड़े हुए मांस, नीम, चरबी आदि की दुर्गन्ध निकले वे दरिद्री और दौर्भाग्ययुक्त होते हैं।

रुधिर-लक्षण

रक्त-कमल के रंग की तरह जिसके रुधिर का रंग हो वह धनवान् होता है। जिसके रुधिर में ललाई के साथ-साथ श्यामता भी हो तो वह पापकर्म करने वाला होगा। ऐसा व्यक्ति अधम कोटि का होता है। जिसका रुधिर ललाई के साथ-साथ कुछ पीलापन लिये हो वह मध्यम कोटि का होता है, कभी सुखी, कभी दुःखी रहता है परन्तु जिसका रुधिर शुद्ध प्रवाल की तरह लाल हो वह उत्तम कोटि

का धनैश्वर्यसम्पन्न अधिकारी होता है।

'लाख' की तरह लाल रुधिर का वर्ण बहुत अच्छा माना गया है—

"अलक्त सदृशं रक्तं जायते यस्य शोणितम्।
धनवान् भोगवांश्चैव स नरः परिकीर्तितः॥"

यदि रक्त में कुछ सफ़ेदी या नीलापन हो तो ऐसे व्यक्ति के कन्या अधिक होती हैं और वह दुःखी रहता है—

"पद्मपत्र निभं यस्य देहे भवति शोणितम्।
जनयेत् बहुधा कन्या दुःखितं च सदा भवेत्॥"

यहाँ पद्म-पत्र का अर्थ शास्त्रकारों ने सफ़ेद कमल या नील-कमल किया है।

क्षेत्र (शरीर के दस भाग)

इस बात की विस्तार से आलोचना की जा चुकी है कि किन सुलक्षणों से मनुष्य भाग्यवान होता है और किन कुलक्षणों से दरिद्री और दुखी; किन्तु जिस प्रकार हस्त-रेखा में जहाँ दोष, त्रुटि या कुचिह्न होते हैं उनसे किस अवस्था में कष्ट होगा यह अनुमान लगा लेते हैं। अथवा ऊर्ध्वगामी रेखा से—किस वय में भाग्योन्नति होगी यह निश्चय कर लेते हैं। उसी प्रकार शरीर-लक्षण से यह कैसे ज्ञात किया जावे कि जीवन का अमुक भाग सुखमय होगा और अमुक भाग दुःखमय? जिसके शरीर में सभी लक्षण दुःख और दरिद्रता प्रकट करने वाले हैं, पैर से सिर तक सभी अंगहीनता एवं कष्ट द्योतित करते हैं उसका तो समस्त जीवन ही दुःखमय होगा। इसी प्रकार जिसके पद-तल से सिर तक सभी में सुख और सौभाग्य के लक्षण हैं उसका सारा ही जीवन, सुख और समृद्धि से पूर्ण उत्कर्ष की होगा। किन्तु जिनके शरीर में कोई अंग सुलक्षण-युक्त और कोई दुष्ट लक्षण दूषित हो उनको किस अवस्था में सुख-प्राप्ति होगी और कब कष्ट होगा इसका निर्णय कैसे किया जावे?

इस विषय में वराह मिहिराचार्य कहते हैं कि पहले हस्त-परीक्षा द्वारा यह निर्णय करना चाहिए कि इस व्यक्ति की आयु[1] कितनी है—अर्थात् यह कितने वर्ष जियेगा। जो आयु निश्चय की जाये उसे दस भागों में बाँटना चाहिए। अर्थात् यदि यह निश्चय किया जाय कि यह मनुष्य ६० वर्ष जियेगा तो ६० के १० खंड करने से ६ वर्ष तक का एक खंड हुआ। यदि यह निश्चय किया कि यह मनुष्य ७५ वर्ष जियेगा तो ७$\frac{1}{2}$ वर्ष का एक खंड हुआ— (१) जीवन का प्रथम भाग जन्म से ७$\frac{1}{2}$ वर्ष तक, (२) द्वितीय भाग ७$\frac{1}{2}$ वर्ष से १५ तक, (३) तृतीय भाग १५ से २२$\frac{1}{2}$ वर्ष तक, (४) चतुर्थ भाग २२$\frac{1}{2}$ से ३० तक, (५) पंचम भाग ३० से ३७$\frac{1}{2}$ तक, (६) षष्ठ भाग ३७$\frac{1}{2}$ से ४५ तक, (७) सप्तम भाग ४५ से ५२$\frac{1}{2}$ तक, (८) अष्टम भाग ५२$\frac{1}{2}$ से ६० तक, (९) नवम भाग ६० से ६७$\frac{1}{2}$ तक, (१०) दशम भाग ६७$\frac{1}{2}$ से ७५ तक समझना चाहिए। इस प्रकार जितनी भी आयु निश्चित हो उसको १० से भाग देकर प्रत्येक खंड कितने वर्ष का होगा यह निश्चित करना चाहिये। नीचे लिखे अनुसार जिस शरीर-भाग (अंग) में सुलक्षण हों उसके अनुरूप आयु-भाग में सुख-समृद्धि होगी। जिस शरीर-भाग में अशुभ लक्षण हों उसके अनुरूप आयु-भाग में कष्ट होगा।

(१) प्रथम भाग दोनो पैर, गुल्फ़ (टखने सहित)
(२) द्वितीय ,, दोनों पिंडली और घुटने
(३) तृतीय ,, दोनों घुटनों से लेकर कमर तक
(४) चतुर्थ ,, नाभि तथा कमर

---

१. हिन्दी में—आपकी क्या अवस्था है ? आपकी क्या आयु है ? आप कितने वर्ष के हैं ? ये सब वाक्य एक ही अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। किन्तु संस्कृत में इस समय जो अवस्था हो उसे 'वय' कहते हैं और कितने वर्ष मनुष्य जियेगा इसे आयु कहते हैं। इस ग्रन्थ में सर्वत्र 'आयु' संस्कृत के अनुसार ही प्रयुक्त हुआ है।

(५) पंचम ,, पेट
(६) षष्ठ ,, हृदय तथा स्तन का प्रदेश
(७) सप्तम ,, बाहु तथा हँसली की हड्डी
(८) अष्टम " ओष्ठ, गला तथा कंधे
(९) नवम " नेत्र, भ्रू (भौं), ललाट
(१०) दशम " सिर

उदाहरण के लिये आयु-विचार से किसी की आयु ७० वर्ष की आती है। और उसके शरीर में और सब लक्षण अच्छे हैं किन्तु नेत्र, भौं, ललाट अशुभ लक्षणयुक्त है तो उसके जीवन का नवम भाग (५६वें वर्ष से ६३वें वर्ष तक) अच्छा नहीं बीतेगा। इसी प्रकार सर्वत्र समझना चाहिये।

यद्यद् गात्र रूक्षं मांसविहीनं शिरावनद्धं च।
तत्तदनिष्टं प्रोक्तं विपरीत मतः शुभं सर्वम् ॥

जो-जो भाग सूखा, खुरदरा, मांसविहीन हो, या जिसमें नसें उभरी हुई हों उसके अनुरूप आयु का भाग अशुभ होता है।

जिस प्रकार जन्म-कुंडली में ग्रहों की दशा लगाते हैं उसी प्रकार शरीर में दस दशा लगानी चाहिए।

प्रथम दशा पैर की दूसरी पिंडलियों की······दसवीं सिर की

क्षेत्र वंशाज्जायन्ते मनुजानां जगति दश दशा क्रमशः।
क्षेत्रष्वशुभेष्वशुभा दशा शुभेषु च शुभा प्रायः ॥

जो शरीर का भाग जैसा शुभ या अशुभ लक्षणयुक्त होता है प्रायः वैसा ही उस शरीर-भाग की दशा का फल होता है।

२२ वाँ प्रकरण

मनुष्य का पैर

पुरुष के पैर के विषय में 'भविष्य पुराण' तथा 'गरुड़ पुराण' दोनों का मत है कि यदि पैर मांसल (काफ़ी मांस भाग सहित), चिकने और सुन्दर हों तो शुभ लक्षण हैं। पैर के तलुए कमलपुष्प के भीतरी भाग की तरह गुलाबी तथा मुलायम होने चाहिए। पैर में पसीना आना अच्छा लक्षण नहीं है। पैर की उंगलियाँ परस्पर एक-दूसरे से भिड़ी और सुन्दर नखसहित होनी चाहिए। पैरों की एड़ियाँ गोलाई लिए हुए मांसल होनी अच्छी हैं। टखनों की हड्डियाँ अधिक निकला रहना अच्छा नहीं। इसी प्रकार पैरों में नसें दिखाई देना अशुभ लक्षण है। पैरों को छूने से उनमें कुछ गरमाई होना शुभ लक्षण है और उनका ठंडा होना अशुभ लक्षण है।

जिस पुरुष के पैर में अंकुश की भाँति रेखा हो वह पुरुष आजीवन सुख भोगता है। जिसके पैर आगे बहुत चौड़े और पीछे बहुत सिकुड़े हों, या सूखे या दूर-दूर उंगलियों सहित या जिस के पैरों में नसों का जाल दिखाई दे वह दरिद्र और दुःखी होता है। जिनके पैरों के तलवे पीले हों वे व्यभिचारी तथा जिनके पैर के तलवे कृष्ण वर्ण हों वे सदैव यात्रा करने वाले रहते हैं। जिके पैरों के तलवे सफ़ेदी लिये हों वे अभक्ष्य भक्षण करते हैं।

'स्कन्द पुराण काशी-खंड' में भी लिखा है—

पादौ समाँसलौ रक्तौ समौ सूक्ष्मौ सुशोभनौ।
समगुल्फौ स्वेदहीनौ स्निग्धावैश्वर्य सूचकौ॥

इस मत से पैरों का सूक्ष्म होना गुण है। लोक में कहावत है 'सिर बड़ा सरदार का, पैर बड़ा गँवार का', किन्तु 'ज्योतिक निबन्ध'
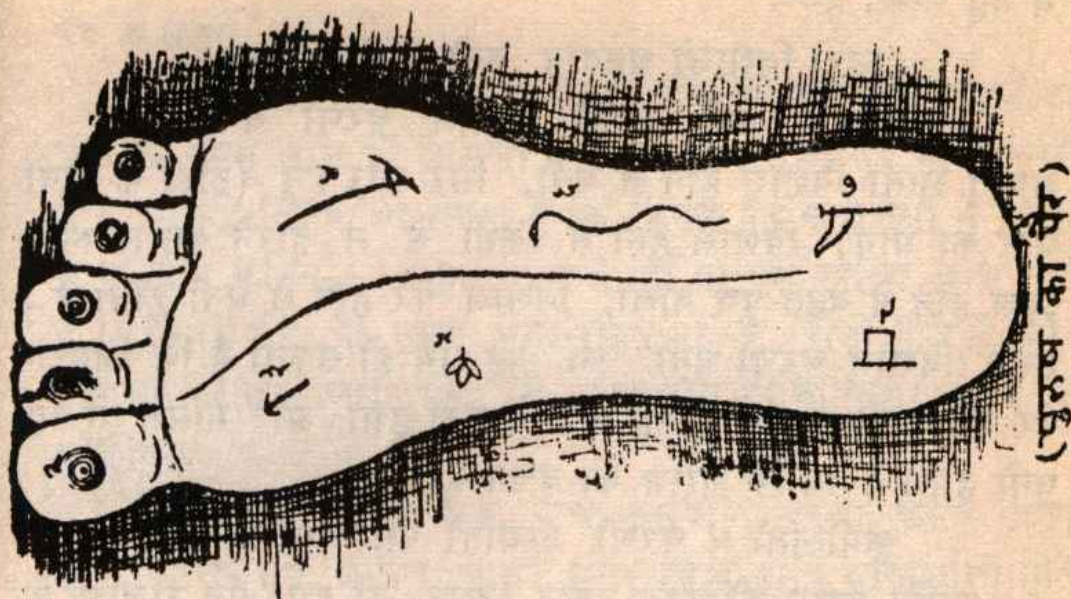
(चित्र नं० १२४) १. शंख २. चक्र ३. बाण ४. हल ५. कमल ६. सर्प ७. ध्वजा ८. व्यजन (पंखा)
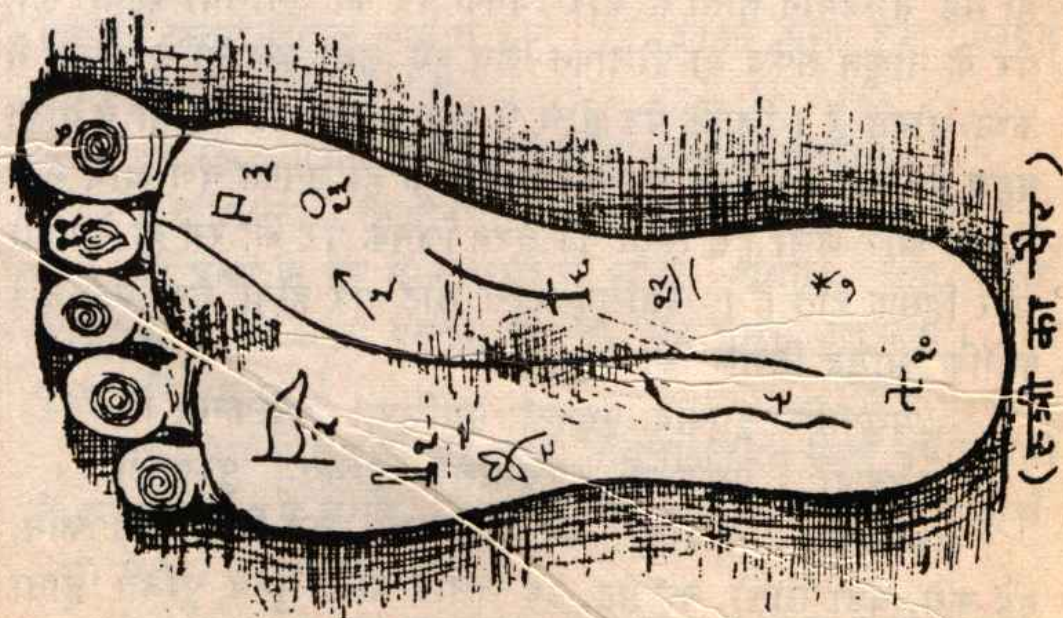
(चित्र नं० १२५) १. स्तम्भ चिह्न २. ध्वजा ३. व्यजन (पंखा) ४. चक्र ५. बाण ६. तलवार ७. नक्षत्र ८. पद्म ९. सर्प १०. स्वस्तिक ११. शंख १२. वेदी १३. वृत्त चिह्न।

नोट—जो लम्बी रेखा है उसे 'ऊर्ध्व' रेखा कहते हैं। देखिये पृष्ठ ४७४-७५

में यह लिखा है—

"उरो विशालो धनवान हनौ शीर्षेऽपराजितः ।
बहुपुत्रः कटि स्थूलो विशाल चरणो धनी ।।"

अर्थात् छाती विशाल होने से धनी, सिर और हनु (ठोड़ी के दोनों ओर का भाग) विशाल होने से किसी से न हारने वाला, कमर स्थूल होने से बहुत पुत्र वाला, विशाल पैर होने से धनी होता है। उसमें 'विशाल चरणो धनी' का यह अर्थ हो सकता है कि जिसका पैर कछुए की पीठ की तरह बीच में उठा हुआ और मांसल हो वह धनी होता है क्योंकि शास्त्र का वचन है कि—

'कूर्मोन्नतौ च चरणौ प्रख्यातौ पार्थिवस्य तु ।'

अर्थात् कछुए की तरह उन्नत (ऊपर उठे हुए) पैर राजाओं के होते हैं। वराहमिहिर का भी यही मत है कि जिसके पैर कोमल, कछुए की तरह ऊँचे, उंगलियाँ परस्पर मिली हुई लाल नखसहित हों वह भाग्यवान होता है और जिनके पैर की उंगलियाँ छीदी हों, पैर के नाखून सफेद या पीलापन लिए हुए तथा रूखे हों वे जीवन में कष्ट भोगते हैं। जिनके पैर बीच में कुछ ज्यादा उठे हुए हों वे यात्रा बहुत करते हैं। जिनके पैर कषाय वर्ण के हों उनका वंश आगे नहीं चलता और जली हुई मिट्टी की तरह जिनके पैर का रंग हो वे पापी और हिंसक होते हैं। इसलिए बहुत छोटे पैर होना गुण नहीं है। क्योंकि 'सामुद्र तिलक' का वचन है कि—

"पृथुपाणिः पृथुपादः पृथुकर्णः पृथुशिराः पृथुस्कन्धः ।
पृथुवक्षाः पृथुजठरः पृथुभालः पूजितः पुरुषः ।।"

अर्थात् बड़े हाथ वाला, बड़े पैर वाला, बड़े सिर, बड़े कान, बड़े कंधे, बड़ी छाती, बड़े पेट, बड़े ललाट वाला पुरुष पूजित होता है। इसमें 'पृथुपाद' अर्थात् बड़े पैर होना 'पूजित पुरुष' के लक्षणों में बताया गया है।

पैर के तलुए

'गर्ग संहिता' के मतानुसार जिनके पैर के तलुए पद्म, गुलाब या रक्त की तरह लाल हों वे सुखी होते हैं और उच्च पद प्राप्त करते हैं। 'सामुद्र तिलक' में लिखा है कि जिनके पैर के तलुओं में रेखा न हो और कठिन, फटे हुए या रूखे हों तो ऐसे व्यक्ति दुःख पाते हैं। जिनके पैर के तलुए मांस-रहित हों वे रोगी होते हैं और जिनका पैर का तलुआ मध्य में उठा हुआ हो वे यात्रा करने के शौकीन।

जिनके पैर में शंख, छत्र, वज्र, तलवार, ध्वजा, कमल, धनुष बाण, शक्ति, सर्प, व्यजन, चामर आदि चिह्न हों वे भाग्यशाली होते हैं। इन रेखाओं का गम्भीर (गहरा) और पूर्ण होना आवश्यक है अर्थात् बीच में कटी-फटी नहीं होनी चाहिए। यदि ये चिह्न हों तो पूर्ण किन्तु किसी रेखा से कटे भी हों तो जीवन के उत्तारार्द्ध में (अर्थात् आधा जीवन व्यतीत होने पर) इनको भोग और ऐश्वर्य प्राप्त होता है—

"रेखाः शंख छत्रांकुशकुलिशसि ध्वजादि संस्थानाः।
अच्छिन्नाः गम्भीराः स्फुटास्तले भागधेयवताम्॥"

यदि पुरुष के पैर में रेखाओं से साही, शृंगाल, चूहा, तोता, कौआ आदि की शक्ल बनती हो तो यह अशुभ लक्षण है। ऐसा पुरुष दरिद्र होता है।

लंका देश में हजारों वर्ष पहले सिंहलाक्षरों में लिखे गये लक्षणों के अनुसार पैर में कमल, ध्वजा, कुण्डल आदि के चिह्न तथा ऊर्ध्व-रेखा मनुष्य को राजा बनाती है—

"अंभोजचक्रां कुश कुण्डलानां दंभोलि शंख ध्वज वारिजानाम्।
चिह्नानि कुर्युः मनुज नरेशं पादेऽपि चैवं विहितोर्ध्व रेखा॥"

पैर का अँगूठा

यदि पैर का अँगूठा गोल, रक्त-नख का तथा स्वयं ललाई लिए

हुए हो तो बहुत शुभ लक्षण है। ऐसा व्यक्ति उच्च पद प्राप्त करता हैं और सुख भोगता है। पैर का अँगूठा बड़ा होना अच्छा लक्षण नहीं। जिनके पैर के अँगूठे टेढ़े-मेढ़े हों वे भटकते फिरते हैं और क्लेश पाते हैं। यदि अँगूठा चपटा, कटा-फटा, टेढ़ा, रूखा या बहुत छोटा हो तो यह भी अशुभ लक्षण है—

"वृत्तैस्ताम्रनखैं रक्तैं रंगुष्ठै राज्यभागिनः।
अंगुष्ठाः पृथुला येषां ते नरा भाग्यवर्जिताः॥
क्लिश्यन्ते विकृतांगुष्ठास्ते नरा वन गामिनः।
चिपिटै विक्षतै भंग्नैरंगुष्ठै रतिनिन्दिताः॥
वक्रैः रूक्षैस्तथा ह्रस्वैरंगुष्ठैः क्लेशभागिनः।

'सामुद्र तिलक' के मतानुसार पैर का अँगूठा सर्प के फण की तरह गोलाई लिए, मांसल हो तो शुभ है और यदि बहुत छोटा या बहुत बड़ा या टेढ़ा या चपटा हो या उसमें नसें दिखाई देती हों तो अशुभ—

"वृत्तो भुजग फणाकृति स्तुंगो मांसलः शुभोऽङ्गुष्ठः।
सशिरो ह्रस्वाश्चिपिटो वक्रो विपुलः स पुनरशुभः॥"

कितनी लम्बाई या मोटाई का अँगूठा बड़ा समझा जाना चाहिए और किस नाप से छोटा, ह्रस्व समझा जावे? यह आगे 'पैर के प्रमाण' शीर्षक लक्षण में बतलाया गया है।

पैरों की उंगलियाँ

'भविष्य पुराण' के अनुसार पैरों की उंगलियाँ बराबर, कुछ दाहिनी ओर झुकी हुई, मुलायम, परस्पर मिली हुई, उन्नत, आगे से गोल तथा देखने में चिकनी और चमकदार मालूम हों तो ऐसा पुरुष बहुत ऐश्वर्यशाली एवम् प्रतिष्ठित पद प्राप्त करने वाला होता है। जिस पुरुष के पैर में अँगूठे के बाद की उंगली अँगूठे से आगे बढ़ जाय वह पुरुष निश्चय स्त्री-सुख पाप्त करता है। यदि कनिष्ठिका (चिटली उंगली) बड़ी हो तो पुरुष सुवर्ण (सोना) प्राप्त

करता है। जिस पुरुष के पैर की उंगलियाँ चपटी, फैली हुई (परस्पर एक-दूसरी से दूर) और सूखी हुई हों वह धनहीन होता है और सदैव दुःखी रहता है—

चिपटा विरलाः शुष्का यस्याङ्गुल्यो भवन्ति वै।
स भवेत् दुःखितो नित्यं धनहीनश्च जायते॥
यस्य प्रदेशिनी दीर्घा अंगुष्ठञ्च व्यतिक्रमेत्।
स्त्रीभोगं लभते सोऽपि पुरुषो नात्र संशय॥
मध्यमायां तु दीर्घायां विद्या भोगी भवेन्नरः।
स च ह्रस्वा भवेद्यस्य भार्याहानिमवाप्नुयात्॥

समुद्र ऋषि का भी यही मत है कि प्रदेशिनी अँगूठे की अपेक्षा लम्बी होने से पुरुष स्त्री-भोग प्राप्त करता है। किन्तु इनके मत से यदि प्रदेशिनी छोटी हो तो ऐसे पुरुष की स्त्री मर जाती है या प्रथम पुत्र मर जाता है और वह झगड़ालू होता है।

यदि मध्यमा उंगली प्रदेशिनी से बड़ी हो तो ऐसा पुरुष विद्या-भोगी होता है अर्थात् विद्वान् होता है और विद्या से धन उपार्जन करता है। यदि मध्यमा उंगली अनामिका से छोटी हो तो स्त्री-हानि करता है, अर्थात् उसको स्त्री-सुख कम होता है। यदि मध्यमा उंगली प्रदेशिनी के बराबर हो और इधर-उधर की उंगलियों से भिड़ी हो तो उसके अनेक पुत्र होते हैं। जिस पुरुष के पैर में अनामिका मध्यमा से बड़ी हो उसको सोना मिलता है और यदि अनामिका कनिष्ठिका से छोटी हो तो ऐसे पुरुष व्यभिचारी होते हैं। जिसके पैर में प्रदेशिनी और कनिष्ठिका स्थूल हों उसकी माता बचपन में मर जाती है यह समुद्र ऋषि का मत है। जिसके पैर की उंगलियाँ छोटी हों और छितराई हुई हों (अर्थात् परस्पर भिड़ी हुई न हों) तो ऐसा व्यक्ति क्षुद्र नौकरी करके अपना जीवन व्यतीत करता है—

"असंगताभिः ह्रस्वाभिरंगुली भिस्तु मानवः ।
दासो वा दासकर्मा वा भवेन्मर्त्यो न संशयः ॥
अनामिकायां दीर्घायां स्वर्णभागी भवेन्नरः ।
स च ह्रस्वा भवेद्यस्य तं विद्यात्परदारगम् ॥

नख-लक्षण

जिनके उंगलियों के नाखून लाल, शंख की भाँति घुमावदार और चमकदार हों वे श्रेष्ठ पुरुष होते हैं। जिनके नखों में चिकनाई हो और शुभ्र बिन्दुयुक्त हों वे सौभाग्यवान होते हैं। नाखूनों पर सफेद चिह्न होने के सम्बन्ध में दो मत हैं। कुछ शास्त्रकार इन्हें अच्छा समझते हैं और कुछ इनकी निन्दा करते हैं। नखों का सूक्ष्म, निर्मल और कुछ उठा हुआ होना अच्छा लक्षण माना गया है और नाखूनों का रूखा, मोटा, विकृत (भद्दे आकार का) या स्फुटित (फटा हुआ) होना अशुभ लक्षण है। जिनके पैर के नाखून टेढ़े-मेढ़े हों वे सुशील नहीं होते और उनका जीवन आनंद में नहीं बीतता। 'भविष्य पुराण' के मतानुसार यदि नाखून मोटे, फटे हुए और बेढंगे हों तो मनुष्य दरिद्र होता है। यदि नाखूनों में कालापन हो तो ऐसा आदमी पाप-कर्म करने वाला होता है। उसके भाई उसे छोड़ देते हैं और ऐसे व्यक्ति का कुल नष्ट हो जाता है। 'सामुद्रतिलक' में लिखा है कि यदि नाखून मोटे, बीच में चिरे हुए, छाजले की तरह या गधे या घोड़े के नाखून की तरह बहुत बड़े हों, तेज और कान्तिहीन और सफेदी या कालापन लिये हों तो ऐसे व्यक्ति दरिद्री होते हैं।

पादपृष्ठ लक्षण—यदि पैर के ऊपर का भाग उठा हुआ, मांसल और कोमल हो तो शुभ लक्षण है। पैर के इस भाग में भी पसीना आना या बाल होना अशुभ लक्षण है। यदि नसें दिखाई दे तों यह भी अच्छा लक्षण नहीं।

गुल्फ-लक्षण

यदि पुरुष के पैर के टखने मांस से ढके हों तो शुभ लक्षण है। समुद्र ऋषि के अनुसार जिनके गुल्फ शूकर के गुल्फ के समान होते हैं वे कष्ट उठाते हैं। भैंसे की तरह जिनके टखने हों वे पापकर्मा और दुखी होते हैं। टखनों का टेढ़ा होना भी अशुभ लक्षण है। यदि गुल्फों पर रोएँ हों तो सन्तान नहीं होती या पुत्र-सुख कम होता है।

पार्ष्णि (एड़ी)

समुद्र ऋषि के अनुसार यदि एड़ी बड़ी हो तो पुरुष दीर्घायु होता है—यदि पैर के बराबर हो तो ऐसा व्यक्ति कभी दुःखी कभी सुखी। यदि एड़ी छोटी हो तो दरिद्र और यदि उन्नत हो तो शत्रु पर विजय प्राप्त करता है।

पैर का प्रमाण (लम्बाई, चौड़ाई, मोटाई)

ऊपर बताया जा चुका है कि छोटे और बड़े पैर के क्या-क्या शुभाशुभ लक्षण हैं किन्तु 'बड़ा' पैर कब समझना चाहिये और 'छोटा' कब ? प्रत्येक मनुष्य का पैर बहुत-कुछ उसकी ऊँचाई पर निर्भर रहता है। इसलिए एक ही ऊँचाई के ४-६ व्यक्तियों के पैर नापे जावें तो बड़े-छोटे की तुलना हो सकती है। किन्तु किसी व्यक्ति के पैर को नाप कर यह कैसे कहा जावे कि जितना होना चाहिये उससे यह छोटा है या अधिक लम्बा ? इस विषय में हमारे शास्त्रकार कहते हैं कि एड़ी से प्रदेशिनी तक चौदह उंगल (जिस मनुष्य का पैर हो उसके हाथ की बीच की उंगली के द्वितीय पोरवे की चौड़ाई को एक उंगल मानना चाहिए) लम्बा पैर होना चाहिये। चौड़ाई छः उंगल हो। अँगूठा दो उंगल लम्बा और उसका परिणाह (यदि तागा अँगूठे के चारों ओर लपेटा जावे तो उस तागे की लम्बाई) ४ उंगल होना चाहिये। इससे अधिक लम्बा और मोटा हो तो सामान्य से बड़ा और इससे पतला या छोटा हो

तो 'ह्रस्व' समझना चाहिए।

प्रदेशिनी उंगली अँगूठे के बराबर होनी चाहिये। मध्यमा उंगली प्रदेशिनी से षोड़शांश १/१६ कम। अनामिका उंगली मध्यमा से अष्टमांश १/८ कम और कनिष्ठिका अनामिका से १/६ षष्ठांश कम अर्थात् छोटी होनी चाहिए—

आपार्ष्णि ज्येष्ठान्तं तलमत्र चतुर्दशांगुलायाम।
विस्तारेण षडङ्गुल मंगुष्ठो व्यङ्गुलायाम: ॥
पञ्चाङ्गुल परिणाह: पादोनं तन्नखोऽङ्गुलं दैर्घ्यात्।
अंगुष्ठ समा ज्येष्ठा मध्या तत्षोड़शांशोना ॥
अष्टांशोनानामा कनिष्ठिका षष्ठभाग परिहीना।
सर्वासाप्यासां नखा: स्वपर्व त्रिभाग मिता: ॥
सत्र्यंगुलि परिणाहा प्रथमाङ्गुली विस्तृताङ्गुली भवति।
अष्टाष्ट भागहीना: शेषा: क्रमश: परिज्ञेया: ॥

इन सब उंगलियों के नख—पैर की उंगली के पोरवे से तिहाई लम्बे होने चाहिये। प्रदेशिनी उंगली की मोटाई (अर्थात् यदि एक तागा उसके चारों ओर लपेटा जावे तो उस तागे की लम्बाई) तीन उंगल होनी चाहिये। जितनी मोटी प्रदेशिनी हो उससे अष्टमांश १/८ कम मोटी मध्या उंगली और मध्या उंगली से अष्टमांश कम कनिष्ठिका होनी चाहिए।

लंका प्रदेश के प्राचीन विद्वान् का मत

श्री अनवमदर्शी स्थविर* के मतानुसार यदि जन्म के समय ही पैर में मस्सा या तिल हो तो वह प्राकृतिक होता है। किन्तु पैदा होने के समय तो न हो और बाद में मस्सा या तिल हो तो उसे 'औत्पातिक' समझना चाहिये। उसका फल निम्नलिखित है—

* यह महानुभाव लंका देश में करीब ७०० वर्ष पहले उत्पन्न हुए और संस्कृत भाषा में किन्तु 'सिंहल' अक्षरों में इनकी कृति लिखी गई।

'धनक्षयं वितनुते माषको दक्षिणे पदे ।
स्त्री विप्रयोगं वामे तु जङ्घयोरर्थ सम्पदौ ॥'

दाहिने पैर में नवीन मस्सा हो तो धन का नाश कराता है । बायें पैर में हो तो स्त्री-विरह । दाहिने या बायें किसी भी पिंडली पर हो तो धन-सम्पत्ति दिलाता है ।

'तिल' के सम्बन्ध में भी उनका यही मत है कि जन्म के समय से ही तिल हो तो वह प्राकृतिक ही गिना जायगा । बाद में यदि दाहिने पैर में तिल हो तो उस पुरुष के पुत्र को कष्ट होगा (पुत्र को भयंकर बीमारी या मृत्यु-तुल्य कष्ट या मृत्यु भी) यदि बायें पैर में नवीन तिल हो उस पुरुष की पत्नी या मित्र के लिए अनिष्टकारक है (अर्थात् उसकी स्त्री या मित्र अत्यन्त बीमार हो जावे या मर जावे) । स्त्रियों के पैर में उलटा फल—जो दाहिने में कहा गया है वह बायें में और जो बायें में कहा गया है वह दाहिने में समझना चाहिए—

"दक्ष पादतले जातस्तिलक स्तनयापहः ।
वामे निहन्ति वनितां कुरुते च सुहृत्क्षयम् ॥"

चाहे बायें या दाहिने पैर के नाखूनों में यदि सफ़ेद, काले, पीले या लाल किसी भी रंग के बिन्दु-चिह्न हो जावें तो वह 'उत्पात' कारक हैं । यदि पैर के दाहिने अँगूठे के नाखून में हो तो धन-नाश होता है और कलक लगता है । यदि प्रदेशिनी उंगली के नाखून पर हो तो झगड़ा होता है, यदि बीच की उंगली के नाखून पर हो तो चिन्ता और उद्वेगकारक है । यदि अनामिका उंगली के नाखून पर हो तो प्रिय कार्य कराता है और कनिष्ठा उंगली के नाखून पर पुत्र से हर्ष होता है अर्थात् यदि नवीन सन्तान उत्पन्न होने की अवस्था हो तो पुत्र होता है । यदि सन्तानोत्पत्ति की अवस्था बीत गई हो तो पुत्र सम्पत्ति-लाभ करता है अर्थात् पुत्र को धन-लाभ होता है ।

बायें पैर में इसका उलटा फल होता है। अर्थात् बायें पैर के अँगूठे, प्रदेशिनी या मध्यमा उंगली के नख पर दाग़ हो जावें तो शुभ और अनामिका तथा कनिष्ठिका उंगलियों पर हों तो अशुभ समझना चाहिए।

दाहिने या बायें किसी पैर के ऊपर चिह्न हों तो माता-पिता को पीड़ा होती है।

लाल या काले दाग़ का प्रभाव विशेष उत्कट होता है। सफ़ेद या पीले बिन्दु-चिह्नों का कम। जितने दिन तक ये चिह्न रहें उतने समय तक इनका प्रभाव रहता है। यदि चिह्न लुप्त हो जावें तो इनका प्रभाव भी समाप्त समझना चाहिए।

स्यन्द

यदि पुरुष के दाहिने पैर के तलुए में पसीना आवे तो यह भय-कारक है। उसे यात्रा करनी पड़ेगी।

पुरुष के बायें पैर का फल इससे विपरीत समझना चाहिए। अर्थात् बायें पैर के तलुए में स्यन्दन हो तो शुभ लक्षण है।

स्त्रियों का फल इससे विपरीत समझना चाहिये। दाहिने में शुभ बायें में अशुभ।

कण्डू—यदि पैर में खुजली हो तो अच्छा नहीं है। शारीरिक रोग, यात्रा या धनक्षय होता है।

स्यन्द और कण्डू का फल १५ दिन के अन्दर होता है।

स्त्रियों के पैर

प्रतिष्ठितलाः सम्यक् रक्ताम्भोज समत्विषः।
तादृशा श्चरणा धन्या योषितां भोगवर्द्धनाः॥
करालैरति निर्मांसै रूक्षै रथशिराततैः।
दारिद्रय दुर्भगत्वं च प्राप्नुवन्ति न संशयः॥

(भविष्य पुराण)

चलते समय जिन स्त्रियों के पैर के तलुए भूमि-भाग से संलग्न

हों (अच्छी तरह लगें) और रंग में लाल कमल के समान हों ऐसे चरण प्रशंसा के योग्य हैं। ऐसी स्त्रियाँ धन और ऐश्वर्य भोगती हैं। यदि पैर कराल (बेढंगे, बड़े और भयानक), सूखे, रूखे हों और वहुत-सी नसें पैर में दिखाई देती हों तो दरिद्रता तथा दुर्भाग्य की द्योतक हैं।

शास्त्रों ने स्त्रियों के पैर के लक्षणों को बहुत अधिक महत्व दिया है। यहाँ तक लिख दिया है कि यदि कोई ऐसी कन्या से विवाह करे जिसके पैर निम्नलिखित शुभ लक्षणों से युक्त हों तो वह राजा हो जावेगा। स्त्री के सौभाग्य या दुर्भाग्य का प्रभाव पति पर पड़ता है। इस कारण शुभ-लक्षण कन्या से विवाह करने से सौभाग्य-वृद्धि और अशुभ-लक्षण वाली कन्या से विवाह करने से दुर्भाग्य होता है—

"यस्याः स्निग्धौ समौ पादौ तनु ताम्रनखौ तथा।
श्लिष्टाङ्गुली चोन्नताग्रौ तां प्राप्य नृपति र्भवेत्॥
निगूढ गुल्फोपचितौ पद्मकान्ति तलौ शुभौ।
अस्वेदनौ मृदुतलौ मत्स्याङ्कुश यवाङ्कितौ।
वज्राब्ज हल चिह्नौ च दास्याः पादौ ततोन्यथा॥"

(गरुड़ पुराण)

तात्पर्य—दोनों पैर बराबर तथा चिकने हों। उनके नख ताम्र वर्ण के तथा पतले हों। पैर की उंगलियाँ परस्पर भिड़ी हुई हों। पैर आगे से ऊँचे हों। गुल्फ (टखने) मांसल हों अर्थात् टखनों की हड्डियाँ दिखाई न दें। पैरों के तलुए पद्म की कांति के हों—उनमें पसीना न आता हो, मृदु हों और उनमें मछली, अंकुश, यव, वज्र, कमल तथा हल के आकार की रेखा हों—ऐसी कन्या से विवाह करे तो नृपति हो जावे। वराह मिहिर ने कन्याओं के पैर के शुभ-लक्षण बताते हुए उपर्युक्त गुण गिनाये हैं और लिखा है, "तामुद्वहेद यदि भुवोऽधिपतित्वमिच्छेत्" अर्थात् यदि पृथ्वी का स्वामी होना चाहे तो ऐसी कन्या का पाणिग्रहण करे। जो शुभ चिह्न-'गरुड़-

पुराण' में बताये गये हैं उनके अतिरिक्त असि का चिह्न भी वराह-मिहिर ने लिखा है। अर्थात् पैर के तलुए में यदि तलवार की आकार का चिह्न हो तो वह भी शुभ-लक्षण है।

पादतल लक्षण

'स्कन्द पुराण' के मतानुसार स्त्रियों के पैर के तलुए चिकने, मांसल, मृदु तथा सम होने चाहिये—अर्थात् कहीं ऊँचे कहीं नीचे नहीं। उनमें कुछ-कुछ गरमाई होना शुभ लक्षण हैं। पसीना आना अशुभ लक्षण है। इसी प्रकार यदि पैर के तलुए रूक्ष (रूखे), एक-सा रंग न हो या रंग उड़ा-उड़ा लगे, खुरदरे, बीच में खण्डित हों या उनमें परछाईं पड़े या दिखाई दे या सूप (छाजले) की तरह हों या बहुत सूखे हों तो दुख और दौर्भाग्यसूचक हैं। 'सामुद्रतिलक' में भी लिखा है—

"असितं दौर्भाग्याय श्वेतं दुःखाय योषाणाम्।
शूर्पाकृतिभिश्चेष्ट्यः कुटिलैः स्युर्दुर्भागाश्चरणतलैः॥"

यदि स्त्री के चरणतल काले हों तो दौर्भाग्य का लक्षण है, यदि सफ़ेद हों तो दुःख प्राप्त होता है, यदि शूर्प (छाजले—सूप) की आकृति के हों और कुटिल (टेढ़े) हों तो ऐसी स्त्रियाँ नौकरानी होती हैं और कष्ट पाती हैं।

पाद-रेखा-लक्षण

समुद्र ऋषि का मत है कि जिस स्त्री के पैर में रेखा तर्जनी में सुप्रकाशित (स्पष्ट) हो उसका शीघ्र विवाह होता है और उसका पति उसे बहुत प्यार करता है। जिन स्त्रियों के पैर के तलुओं में चक्र, पद्म, ध्वजा, छत्र, स्वस्तिक आदि के चिह्न हों उनका विवाह उच्च पदाधिकारियों तथा शासकों से होता है। ऐसी स्त्रियाँ बहुत ऐश्वर्यशालिनी होती हैं। इसी प्रकार जिनके माला, अंकुश, दाहिनी ओर घूमा हुआ आवर्त चिह्न हो अति श्रेष्ठ तथा सम्माननीय कुल में विवाही जाती हैं तथा उनके पति राजा के समान ऐश्वर्यशाली

श्रौर प्रतिष्ठित होते हैं।

'स्कन्द पुराण काशीखण्ड' के मतानुसार जिनके पैर में चक्र, स्वस्तिक, शंख, कमल, ध्वजा छत्र तथा मत्स्य-रेखा हो उनके पति पृथ्वीपति होते हैं। यदि पादतल के मध्य से रेखा चलकर—मध्यांगुली तक जावे तो ऐसी स्त्री श्रखण्ड भोग भोगती है। किन्तु यदि उसके पैर में चूहे या सर्प के श्राकार की रेखा हों तो दुःख श्रौर दरिद्रता प्रकट होती है—

"भवेदखंड भोगाय मध्यांगुलि संगता।
रेखाऽऽखुसर्पकाभा दुःख दारिद्र्यसूचिका॥"

'सामुद्रतिलक' के मतानुसार भी उपर्युक्त ऊर्ध्व रेखा होने से पति की प्यारी होती है श्रौर उसका पति धनी होता है 'गरुड़ पुराण' में उपर्युक्त शुभ चिह्नों के श्रतिरिक्त निम्नलिखित शुभ चिह्न श्रौर गिनाये गए हैं—

घोड़ा, हाथी, खंभा, यव (जौ), तोमर, पर्वत, श्रंकुश, कुंडल, वेदी, रथ, श्रीवृक्ष (बिल्वल) श्रादि। जिन स्त्रियों के पदतल में उपर्युक्त चिह्नों में से एक या श्रनेक हों वे बहुत उच्च तथा प्रतिष्ठित श्रधिकारी की पत्नी होती हैं।

'गर्गसंहिता' के वचनानुसार निम्नलिखिल चिह्न पैरकी उंगलियों या तलुश्रों में होना सुख, समृद्धि, संतति तथा सौभाग्य का शुभ लक्षण है—

शंख, श्रंकुश, पद्म, छत्र, पृथ्वी, नक्षत्र, पर्वत, चन्द्र, चक्र, सूर्य, चामर, वज्र, व्यजन, (पंखा), तोरण, सिंह, बछड़ा, घोड़ा, स्वस्तिक, मत्स्य, हंस, पूर्णकुंभ, मकर, पताका श्रादि।

'सामुद्रतिलक' के मतानुसार यदि पदतल में कुत्ते, शृगाल, भैंसा कौवा, उल्लू, सर्प, चक्रवाक श्रादि के चिह्न हों तो ऐसी स्त्री दुःख भोगती है।

उपर्युक्त जो शुभ श्रौर श्रशुभ चिह्न बताये गये हैं वे संपूर्ण (सब-

के-सब) हों तो पूर्ण शुभफल और सब अशुभ चिह्न हों तो अत्यन्त अशुभ फल समझना चाहिए। किन्तु कुछ शुभ हों तो उसी अनुपात से शुभ और कुछ अशुभ हों तो उसी अनुपात से अशुभ समझना चाहिये—

"चक्रादि चिह्न मध्ये स्यादेकं बहूनि वा यासाम्।
ऐश्वर्यं सौख्यं वा तासामपि तदनुमानेन ॥"

अंगुष्ठ-लक्षण

उन्नतो मांसलोऽङ्गुष्ठो वर्त्तुलोऽतुल भोगदः।
वक्रो ह्रस्वश्च विकटो दुःख दौर्भाग्य सूचकः॥
विधवा विपुलाङ्गुष्ठा दीर्घाङ्गुष्ठेन दुर्भगा॥
(स्कन्द पुराण काशीखण्ड)

जिस स्त्री के पैर के अँगूठे ऊँचे, मांसल, गोल हों वह बहुत ऐश्वर्य और सौभाग्यशालिनी होती है यदि पैर के अँगूठे टेढ़े, बहुत छोटे, विकट (बेढंगे) हों तो दुःख और दौर्भाग्य प्रकट होता है। यदि पैर के अँगूठे बहुत बड़े हों तो स्त्री विधवा होती है—यदि लम्बे अधिक हों तो दौर्भाग्यकारक हैं। 'सामुद्रतिलक' के मतानुसार भी छोटा, चपटा, टेढ़ा पैर का अँगूठा होने से कुलक्षय होता है। अर्थात् या तो स्त्री विधवा हो जावे, इस कारण संतान न होने से कुल आगे न बढ़े या उसकी संतति जीवे नहीं, तो भी कुलक्षय हुआ। यदि अँगूठे छोटे और गोल हों तो वह द्वेष करती है। अति लम्बा होना भी अशुभ है। वह पति की अप्रियकारिणी होती है।

पैरों की उंगलियाँ

'भविष्य पुराण' मतानुसार यदि स्त्री के पैर की उंगलियाँ परस्पर मिली हुई, सीधी, गोलाई लिये हुए हों और पैर के नाखून पतले तथा छोटे हों तो वह अनन्त ऐश्वर्यशालिनी होती है और राजसी भोगों को भोगती है—

"अंगुल्यः संहतावृत्ता ऋज्व्यः सूक्ष्मनखास्तथा।
कुर्वन्त्यनन्तमैश्वर्यं राजभोगं च योषिताम्॥
ह्रस्वाश्च जीवितं ह्रस्वं विरला वित्तहानये।
दारिद्र्यं मूलभुग्नास्तु प्रेष्यत्वं पृथुलासु च॥"

यदि पैर की उंगलियाँ बहुत छोटी हों तो अल्पायु होने का लक्षण है। यदि विरल हों अर्थात् एक-दूसरे से मिली न हों तो ऐसी स्त्री के पास धन-संग्रह नहीं होता या उसको धनहानि होकर घाटा उठाना पड़ता है। यदि पैर में जहाँ उंगलियाँ निकलती हैं उस ओर से गिनने पर प्रथम पर्व टेढ़ा हो तो दरिद्रता का लक्षण है। यदि बहुत मोटी हों तो ऐसी स्त्री नौकरानी होती है—गृहस्थी में नौकरानी की तरह काम करती रहती है।

यदि पैर की उंगलियाँ एक-दूसरे पर चढ़ी हुई हों, पतली और लम्बी पोरवे वाली हों तो पति-सुख में कमी प्रकट होती है तथा दरिद्रता का भी लक्षण है। 'स्कन्द पुराण काशीखंड' के मतानुसार यदि पैर की उंगलियाँ बहुत लम्बी हों तो कुलटा और यदि अत्यन्त पतली हों तो निर्धनता का लक्षण है—

"दीर्घाङ्गुलीभिः कुलटा कृशाभिरतिनिर्धनाः।"

यदि उंगलियाँ चपटी या छिद्रयुक्त (एक-दूसरे से भिड़ी हुई न हों) हों तो यह भी अशुभ लक्षण है। चपटी उंगलियाँ होने से दासी होती है—अपने स्वयं के घर में सदैव कार्य करने वाली या अन्य के घर में कार्य कर अपना पेट पालना दासी का लक्षण है। यदि छिद्र-युक्त हों तो द्रव्य जमा नहीं होता।

जो स्त्री इस प्रकार चले कि उसके पैर के आघात से पृथ्वी से धूल उड़े तो इसे अत्यन्त अशुभ लक्षण समझना चाहिये—ऐसी स्त्री कुल का विनाश करने वाली होती है।

स्त्रियों के पैर की उंगलियों के सम्बन्ध में 'विवेक विलास', ,गरुड़ पुराण', 'विष्णुधर्मोत्तर पुराण' आदि ग्रन्थों में तथा समुद्र

ऋषि, पराशर ऋषि श्रादि ने बहुत विस्तारपूर्वक लिखा है । ग्रन्थ-विस्तार-भय से वह सब-का-सब विषय इस पुस्तक में उद्धृत नहीं किया जाता है । कुछ मोटी-मोटी बातें नीचे लिखी जाती हैं ।

पराशर ऋषि का मत है कि जिस स्त्री के पैर के तलुए का मध्य भाग पृथ्वी का स्पर्श न करे श्रौर साथ ही पैर की कोई सी उंगली भी पृथ्वी का स्पर्श न करे—ऐसी स्त्री को श्रधमा (बहुत निकृष्ट कोटि की) समझना चाहिये । यदि किसी स्त्री की प्रदेशिनी उंगली श्रँगुष्ठ से बहुत बढ़ी हुई हो तो ऐसी कन्या दु:खिता तथा दौर्भाग्ययुक्त होती है । यदि मध्यमा उंगली पृथ्वी का स्पर्श न करे (श्रर्थात् इतनी उठी हुई हो कि ज़मीन से ऊँची रहे) तो ऐसी स्त्री स्वच्छन्द वृत्ति की होती है—क्या कार्य है, क्या श्रकार्य है, इसका विवेक उसे नहीं होता । यदि किसी स्त्री के पैर की श्रनामिका उंगलो पृथ्वी का स्पर्श न करे तो यह भो श्रशुभ लक्षण है । यदि कनिष्ठिका उंगली पृथ्वी का स्पर्श न करे तो उसके दो पति श्रल्पजीवी होते हैं, तीसरे के साथ सुख-चैन करती है ।

समुद्र ऋषि के मतानुसार···यदि स्त्री के पैर की कनिष्ठिका उंगली भूमि का स्पर्श न करे तो 'भर्तारं प्रथमं हत्वा द्वितीयेन सहस्थिता' श्रर्थात् पहले पति को मार कर दूसरे के साथ रहती है । यदि इस लक्षण के साथ-साथ चिटली उंगली छितराई हुई श्रर्थात् श्रनामिका से बहुत दूर हो (दोनों के बीच में काफी श्रन्तर हो) श्रौर भौं झुकी हुई, गाल पिचके हुए हों तो दुर्भाग्य का लक्षण है—ऐसी स्त्री व्यभिचारिणी भी होती है ।

जिस स्त्री की श्रनामिका छोटी हो वह बहुत झगड़ालू होती है । छोटी होने से तात्पर्य है कि पुरुषों के पैर के वर्णन में जो सब उंगलियों की पारस्परिक लम्बाई दी गई है—'उसके श्रनुसार जो लम्बाई होनी चाहिये—उससे यदि छोटी हो तो 'कलहप्रिया' होती है—

"यस्या अनामिका ह्रस्वा तां विद्यात्कलहप्रियाम् ।
अंगुष्ठं तु व्यतिक्रम्य यस्याः पादे प्रदेशिनी ।
कुमारी कुरुते जारं यौवनस्यैव का कथा ॥

यदि प्रदेशिनी उंगली अँगूठे से बहुत बड़ी हो तो भी अशुभ लक्षण है ।

'विवेक विलास' के अनुसार उंगलियों की जो लम्बाई दी गई है उस लम्बाई से कोई भी उंगली छोटी हो तो ऐसी स्त्री कलह-कारिणी होती है—

"यत्पादांगुलिरेकापि भवेद् हीना कथंचन ।
येन केनापि सा सार्धं प्रायः कलह कारिणी ॥"

केवल पति से ही नहीं—किसी-न-किसी से वह झगड़ा करती ही रहती है ।

'विष्णुधर्मोत्तर पुराण' में लिखा है कि यदि चिटली उंगली भूमि को स्पर्श न करे तो ऐसी कन्या से विवाह न करे । विद्वानों का मत है कि ऐसी कन्या साक्षात् 'मृत्यु' होती है अर्थात् उसका पति अल्पायु होता है । 'गरुड़ पुराण' के मतानुसार यदि निम्नलिखित दोनों अशुभ लक्षण कन्या में हों तभी वह कुलटा होती है—

(क) कनिष्ठिका या अनामिका भूमि का स्पर्श न करे ।

(ख) अंगुष्ठ से बहुत बड़ी प्रदेशिनी हो ।

प्रायः इन्हीं लक्षणों को 'भविष्य पुराण' में भी दोहराया गया है—

"यस्याः कनिष्ठिका भूमिं न गच्छन्त्या परिस्पृशेत् ।
अनामिका मध्यमा च यस्या भूमिं न संस्पृशेत् ॥
पतिद्वयं निहन्ताद्या द्वितीया च पतित्रयम् ।
पतिहीनत्व कारिण्यौ हीने ते द्वे इमे यदि ॥
प्रदेशिनी भवेद्यस्या अंगुष्ठादतिरेकिणी ।
कन्यैव कुलटा सा स्यादेष एव विनिश्चयः ॥"

उपर्युक्त मतानुसार यदि कनिष्ठिका, अनामिका तथा मध्या तीनों भूमि का स्पर्श न करें और प्रदेशिनी अँगूठे से बहुत आगे निकली हो तो और भी अशुभ लक्षण है।

पैर की उंगलियों के छोटे होने से अल्पायु तथा टेढ़े होने से 'टेढ़ी' (क्रुद्ध प्रकृति की—विषम स्वभाव वाली—पति के प्रतिकूल) होती है—

'ह्रस्वायुष्या च ह्रस्वाभिर्भुग्नाभि र्भुग्नवर्तिनी।'

'स्कन्द पुराण' के अनुसार यदि उंगलियाँ मुलायम, सघन (परस्पर भिड़ी हुई) उन्नत (पुष्ट) तथा गोलाई लिये हुए हों तो प्रशंसा के योग्य अर्थात् यह शुभ लक्षण है। यदि उंगलियाँ अँगुष्ठ के समान उन्नत पर्व वाली, आगे से नुकीली, कोमल, बराबर हों तो ऐसी स्त्री रत्न तथा सुवर्ण की मालकिन होती है; यदि इससे विपरीत हों तो विपत्तिकारक होती है।

उंगलियों का बहुत मोटा होना भी निर्धनता तथा आजीवन परिश्रम करना प्रकट करता है—'प्रेष्यत्वं पृथुलासु च'।

'वक्राङ्गुलितलौ पादौ कन्यां तां परिवर्जयेत्।'

जिस स्त्री के पैर के तलुए या पैर की उंगलियाँ टेढ़ी हों उससे विवाह न करे—

''स्थूल पादा च या कन्या सर्वाङ्गेषु च लोमशा।
स्थूलोष्ठदन्ता यस्याः स्युर्विधवां तां विनिर्दिशेत॥
यस्या हस्तौ च पादौ च मुखं च विकृतं भवेत्।
उत्तरोष्ठे च रोमाणि सा क्षिप्रं भक्षयेत्पतिम्॥''

जिस स्त्री के पैर मोटे हों और सारे शरीर पर रोएँ हों, जिसके होंठ और दाँत मोटे हों ऐसी स्त्री विधवा हो जाती है। जिसके हाथ, पैर और मुख विकृत (बेढंगे—ऊटपटाँग, भद्दे) हों और ऊपर के होंठ पर (मूंछ की जगह) रोम हों उसके पति की जल्दी मृत्यु हो जाती है।

कूर्म पृष्ठनखाः यस्याः स्निग्ध भाव विवर्जिता।
बाह्यांगुलितलौ पादौ तां कन्यां परिवर्जयेत् ॥
स्थूल पादा च या कन्या दासीं तां च विनिर्दिशेत्।
तथैवोत्कट पादा च वर्जनीया प्रयत्नतः ॥

जिसके पैर के नाखून कछुए की पीठ की तरह बीच में ऊँचे, चारों ओर नीचे तथा खुरदरे और रूखे हों तथा उंगलियाँ बाहर निकली हों ऐसी कन्या से विवाह न करे। जिसके पैर बहुत मोटे हों वह दासी होती है। इस प्रकार जिसके पैर उत्कट (बहुत बड़े बेडौल और भयानक) हों उससे विवाह न करे। जिसके पैर की उंगलियाँ एक-दूसरे से भिड़ी हुईं—डोडी की तरह आगे पतली—हों उससे विवाह करना चाहिये।

पादौ यस्याः स्फुटितौ रोमश चिपिटांगुली निगूढ नखौ।
कच्छप पृष्ठ नखौ वा सा दुःख दरिद्रता हेतुः ॥
विपुल मुखी विपुल कुचा विपुल पदा विपुल कर्णहृन्नासा।
विपुलांगुलिका प्रायो भर्तृघ्नी जायते योषित् ॥

जिसके पैर फटे, रोमयुक्त, उंगलियाँ चपटी हों, पैर के नाखूनों के चारों ओर चमड़ा ऊपर चढ़ा हुआ हो, कछुए की पीठ की तरह बीच में ऊँचे नाखून हों तो दुःख और दरिद्रता प्रकट करते हैं।

यदि स्त्री का बहुत बड़ा मुख, बहुत बड़े कुच, बहुत बड़े पैर, बहुत वड़े कान, बहुत बडी छाती, बहुत बड़ी नाक, बहुत बड़ी उंगली हों तो प्रायः उसका पति मर जाता है।

पैरों के नाखून

यदि स्त्रियों के पैर के नख लाल, चिकने और सुन्दर हों तो शुभ लक्षण है—

सुभगत्व नखैः स्निग्धैराताम्रैश्च धनाढ्यता।
पुत्राः स्यु रुन्नतैरेभिः सुसूक्ष्मैश्चापि राजता ॥

पाण्डुरैः स्फुटितै रूक्षै र्नीलैः धूम्रै स्तथा खरैः ।
निःस्वता भवति स्त्रीणां पीतैश्चाभक्ष्यभक्षणम् ॥
(भविष्य पुराण)

यदि नख चिकने हों तो सौभाग्य, यदि लाल हों तो धनाढ्यता, यदि उन्नत हों तो अनेक पुत्रों की माता होती है । यदि सुन्दर और पतले हों तो ऐश्वर्य । यदि सफ़ेदी लिए हों, फटे, रूखे, नीलापन लिए, खुरदरे या बदरंग हों तो दरिद्रता का लक्षण है । यदि पीला-पन लिये हों तो उचित-अनुचित का विचार किये बिना स्त्री सब-कुछ खाती रहती है ।

चरणपृष्ठ लक्षण

'स्कन्द पुराण काशीखंड' के अनुसार यदि स्त्रियों के पादपृष्ठ (पैर का ऊपर का भाग) उन्नत हों तो वे उच्च पदाधिकारी की पत्नी तथा ऐश्वर्यशालिनी होती हैं । पैर में पसीना नहीं आना, नसों का दिखाई न देना, चिकनापन, मांसलता तथा मृदुता शुभ लक्षण हैं । बीच का भाग यदि नीचा हो तो दरिद्रता, यदि नसें निकली हों तो सदा रास्ता चलने वाली, यदि रोम (पैर पर बाल) हों तो दासी (सदैव दासी की भाँति काम करने वाली) तथा पैर मांसरहित हों तो दुर्भाग्ययुक्त होती है ।

गुल्फ-लक्षण

जिसके पैर के गुल्फ चिकने तथा गोल हों, नसें दिखाई न दें वह बन्धु-बांधुओं द्वारा धनाढ्य होती है अर्थात् पितृ-कुल तथा श्वशुर-कुल दोनों कुलों के लोग सम्पन्न होते है ।

गुल्फों का मांस में छिपा होना तथा नसों का दिखाई न देना जिस प्रकार शुभ लक्षण है उसी प्रकार गुल्फों का ऊँचा-नीचा होना या बाहर निकला रहना, ढीला होना और रूखा होना दुर्भाग्य-सूचक है । समुद्र ऋषि के मतानुसार यदि भैंस की तरह गुल्फ हों तो बन्धन को प्राप्त होती है—अर्थात् अन्य अशुभ लक्षण हों तो जेल

जावे या इतनी परतन्त्रता में रहे कि जीवन दुःखमय हो जावे—

गुल्फैश्च महिषाकारै र्बन्धनं वधमाप्नुयात् ।
निगूढ़ गुल्फा या नारी सात्यन्तं सुखमेधते ॥

गर्ग ऋषि का भी वाक्य है कि गुल्फ अत्यन्त बड़े, बाहर निकले हुए, नसें जिनमें दिखाई देती हों तो ऐसी स्त्री की न सन्तान होती है, न धनाढ्य होती है बल्कि विधवा होती है—

अत्युन्नताभ्यन्तरतः शिराला,
गुल्फा विशालाश्च भवन्ति यासाम् ।
प्रजान विन्दन्ति धनं न चार्या,
स्ता गुल्फ दोषै र्विधवा भवन्ति ॥

पार्ष्णि (एड़ी)-लक्षण

यदि एड़ियाँ सम (बराबर, बहुत निकली हुई नहीं) हों तो शुभ लक्षण है । यदि बहुत लम्बी या चौड़ी हों तो दुःख और दुर्भाग्यसूचक हैं । यदि बहुत उन्नत हों तो ऐसी स्त्री चंचल स्वभाव की होती है ।

'स्कन्द पुराण' के मतानुसार एड़ी का बहुत 'उन्नत' होना कुलटा-पने का लक्षण है किन्तु समुद्र ऋषि के मतानुसार ऐसी स्त्री दुःशीला (सुशीला के विपरीत) होती है । यदि एड़ी बहुत बड़ी हो तो व्यभि-चारिणी होती है—

उन्नत पार्ष्णिः दुःशीला महापार्ष्णिस्तु वन्धकी ।
दीर्घपार्ष्णिः परिक्लिन्ना समपार्ष्णिस्तु शोभना ॥

'विवेक विलास' के अनुसार एड़ी बहुत बड़ी हो तो कृपण (कंजूस), यदि चौड़ी अधिक हो तो क्रोध करने वाली, यदि उन्नत हो तो दुःशीला तथा एड़ी ऊँची-नीची हो तो निन्दनीय होती है—

कृपणा स्यान्महा पार्ष्णि दीर्घ पार्ष्णिस्तु कोपना ।
दुःशीलोन्नत पार्ष्णिश्च निन्द्या विषम पार्ष्णिका ॥

'स्कान्द शारीरक' मतानुसार पैर की रेखाओं का फलादेश

यह फल पुरुष और स्त्री दोनों के लिये लागू है ।

मदाघूर्णा पार्ष्णिभागे प्रादेशाङ्गुल संतता ।
अस्याः प्रयत्नसंचारी विच्छिन्नः स्वजनैरपि ।।

यदि एड़ी से लेकर पिंडली तक—हाथ की प्रदेशिनी उंगली के बराबर लम्बी कोई रेखा दिखाई दे और कटी न हो तो इसे 'मदाघूर्णा' रेखा कहते हैं। जिसके पैर में यह रेखा हो वह मद्य पीने वाली से संसर्ग करता है और स्वजनों से (अपने भाई, बन्धु पुत्रादि से) उसका विरोध होता है। कर्म विशेष के परिज्ञान या फल परिज्ञान में प्रत्येक कार्य के प्रयत्न में उसकी प्रवृत्ति होती है ।

मदः पादतलस्था या मध्यमामभिगच्छति ।
तद्दाने तस्य सामर्थ्यं शुभमेव प्रयच्छति ।।

यदि पैर के तलुए में कोई रेखा मध्यमाङ्गुलि को जावे तो उस को 'मद' कहते हैं। ऐसा व्यक्ति सब विषयों में दानशक्ति रखता है अर्थात् मद तथा अन्य वस्तुओं के दान की सामर्थ्य उसमें होती है। यह शुभ रेखा है। पैर की ऊर्ध्व-रेखा तो मूल से प्रारम्भ हो-कर उंगलियों तक जाती है—किन्तु यह 'मद' रेखा पैर के केवल चौथाई भाग में होती है—यही दोनों में अन्तर है ।

तत्रैवानामिकां या तु गच्छन्ती स्फुट निम्नगा ।
अविच्छेदे स्थानयुग्मे सालसा परिकीर्त्यते ।।

यदि यही रेखा स्पष्ट हो, टूटी न हो और मध्यमा उंगली की बजाय अनामिका उंगली को जावे तो इसको 'अलसा' कहते हैं। ऐसा मनुष्य आलसी होता है।

तले पादस्य द्वास्था सा वामस्याङ्गुष्ठ सन्निधौ ।
कीर्ति धर्मादि जनिता कीर्तिमतं सुतं तथा ।।

बायें पैर के अँगूठे के नीचे बन्धिनी रेखा के नीचे रेखा हो तो उसे 'द्वास्था' कहते हैं। जिस पुरुष के पैर में यह रेखा हो वह धार्मिक तथा कीर्तियुक्त होता है और उसका पुत्र भी कीर्तिमान्

होता है। यह रेखा जितनी लम्बी हो उतनी शुभता अधिक समझनी चाहिये।

बालिका स्वच्छवर्णाभा क्वचिद् बिल्वस्थिता ततः।

उपर्युक्त जिस 'द्वास्था' रेखा का वर्णन किया गया है उसके पास एक अँगुल-भर दूरी पर रेखा हो तो उसे 'बालिका' कहते हैं। यदि यह सुन्दर वर्ण की हो तो जो 'द्वास्था' का फल है वही इसका समझना चाहिये। किन्तु यह कृष्ण वर्ण की हो तो 'लोभ' सूचित करती है। अर्थात् ऐसा व्यक्ति लोभी होता है।

पादस्य मध्यतले या गता प्राप्तासनो भवेत्।

यदि पैर के मध्य में कोई रेखा हो तो ऐसा व्यक्ति धन-धान्य समृद्धिमान, सर्वस्व-सम्पन्न होता है। ऊर्ध्व रेखा की भाँति यह भी वैभव प्रदर्शित करती है। इसे शाकटायिनी कहते हैं।

विद्रुम प्रभया युक्ता महद्भिः सेव्यते बुधैः।

यदि उपर्युक्त रेखा विद्रुम (मूँगे) की-सी कान्ति की हो तो बड़े-बड़े विद्वान् उसकी सेवा में रहते हैं। अर्थात् यदि पुरुष के पैर में हो तो ऐसा व्यक्ति अत्यन्त उच्च पदाधिकारी होता है—यदि स्त्री के पैर में हो तो वह महारानी या उत्कृष्ट पदाधिकारी की पत्नी होती है।

शंकुरावपनं पुंसः पार्ष्णिमूलस्थिता भवेत्।

यदि तलुए में एड़ी के नीचे रेखा हो तो उसे 'शंकु' कहते हैं। यह रेखा होने से पूर्व प्रवृत्ति का विच्छेद होता है। अर्थात् बाल्यावस्था या युवावस्था के आरम्भ में जिस-जिस कार्य की ओर विशेष रुचि होती है अधिक अवस्था होने पर उससे भिन्न कार्य में मनुष्य की रुचि होती है।

आत्रोटनं परं पुंसमनालस्यं प्रयच्छति।

यदि अँगूठे से करीब एक अंगुल दूर कोई रेखा प्रारम्भ हो तो उसे 'आत्रोटन' कहते हैं। ऐसा व्यक्ति आलसी नहीं होता।

पृष्ठा प्रतिष्ठिता भूमौ पूर्वस्याः संकुलाधरा ।

जिसका पैर पृथ्वी पर अच्छी तरह प्रतिष्ठित हो—पैर का तलुआ तथा उंगलियाँ पृथ्वी का स्पर्श करें ऐसा व्यक्ति स्त्री-प्रिय होता है। यदि स्त्री उपर्युक्त लक्षण से युक्त हो तो वह पुरुष-प्रिय होती है—यदि अन्य शुभ लक्षण हों तो अपने पति की। यदि अशुभ लक्षण हों तो उस तारतम्य से फलादेश करना उचित है।

कन्दुर्नाम मनुष्याणां तस्करत्व प्रयोजिका।
पार्ष्णिमूल प्रदेशे तु चतुरगल मायता ।।

यदि एड़ी के नीचे चार अँगुल लम्बी रेखा हो तो उसे 'कन्दु' कहते हैं। यदि यह रेखा हो तो जातक 'चोर' होता है। स्त्रियों के पैर में भी यही फल होता है।

कागर्णिजित कन्दर्पा भवेत् स्त्री निज भाषणात्।
लक्षणं तु तले पाद गामिनी जर्जरस्थितिः ।।

यदि पैर के तलुए जर्जर हों—चलने में पुरुष रव (अप्रिय घर-घराहट) हो तो ऐसी स्त्री में वे लक्षण होते हैं जो साहित्य में 'स्वयंदूती' किंवा 'वचन विदग्धा' में वर्णित किये गये हैं।

छिदिः प्ररोह पर्यन्ता पार्ष्णिभागे क्वचित्स्थिता।

यदि एड़ी में कहीं एक अँगुल लम्बी रेखा हो तो ऐसे जातक को स्त्री-सुख, होता है। स्त्री के पैर में पुरुष-सुख समझना चाहिये।

तिस्रस्तु पश्चात् संयन्ति पार्ष्णि यस्य फलानि तु।
आयुः पुष्टं रतिश्चापि तादृशी धर्मसंहिता ।।

यदि बायें पैर की एड़ी पर तीन रेखा हों तो अच्छी आयु, रति (स्त्री-सुख, स्त्री के पैर में पति-सुख) तथा धार्मिकता होती है।

पैर में ऊर्ध्व रेखा का फल

यदि पैर के तलुए में ऊर्ध्व रेखा (जिस प्रकार हाथ में भाग्य-रेखा होती है उसी प्रकार की रेखा पैर में) हो और ऊर्ध्व रेखा के नीचे तीन रेखा हों अर्थात् तीन रेखा आकर मिलें और वहाँ से

एक रेखा पैर की उंगलियों की ओर सीधी लम्बी जावे तो साम्राज्य-दायिनी होती है अर्थात् ऐसा पुरुष या स्त्री पूर्ण ऐश्वर्यशाली होता है—

"यदि सा पादतलगा साम्राज्यं सूचयेद् ध्रुवम् ।
रेखात्रयोपबद्धा चेन्निरूढा मूलतोप्यसौ ।।"

जितनी लम्बी यह रेखा होगी उतना ही अधिक फल ऊर्ध्व-रेखा का होगा । यदि पैर के मूल (एड़ी के नीचे का हिस्सा) से ही प्रारम्भ हो तो बहुत अधिक फल होगा ।

पादयोस्तलयोः स्युश्चेन्मोहः कान्तिरनादरः ।
अंगुलीषु शिराबन्धा शून्यतां दापयन्ति हि ।।

यदि पैर के तलुओं में नसें दिखाई दें तो इसका फल मोह, कान्ति तथा अनादर है । पैर की उंगलियों में नसें दिखाई दें तो द्रव्य नहीं ठहरता ।

२३वाँ प्रकरण (प्रथम भाग)

पुरुष-लक्षण

पैरों के लक्षण पिछले प्रकरण में बताये जा चुके हैं। अब पिडलियों, घुटनों तथा पुरुषों के अन्य अगों के लक्षण बताये जाते हैं।

जंघा-लक्षण

बहुत से लोग समझते हैं कि जाँघ शब्द संस्कृत के जंघा शब्द का अपभ्रंश है इस कारण जंघा का अर्थ जाँघ हुआ, परन्तु संस्कृत में जंघा कहते हैं घुटने तथा पैर के बीच के भाग को जिसे हिन्दी में पिंडली कहते हैं। यदि घोड़े या हिरन की तरह टाँगों का नीचे का आधा भाग हो तो मनुष्य भाग्यशाली होता है। मछलियों की तरह जिनकी जंघा होती हैं वे ऐश्वर्यशाली होते हैं। जिन व्यक्तियों की जंघा (पिंडलियाँ) सिंह या व्याघ्र की तरह हों वे धनी होते हैं। यदि पिंडलियों पर बहुत रोयें हों तो मनुष्य दरिद्री होता है और दुःख पाता है। शृगाल की तरह जंघा वाला भाग्यहीन और कौए की तरह टाँग वाला दुःखी होता है। जंघा का बहुत बड़ा या मोटा होना भी भाग्यहीनता का लक्षण है। यदि टाँग का निचला भाग हाथी की सूँड की तरह गोलाई लिए हुए, नीचे पतली ऊपर मोटी हो, उस पर कम रोम हों तथा जो रोम हों वे मुलायम हों तो शुभ लक्षण है।

समुद्र ऋषि के मतानुसार यदि अत्यन्त गोल जंघा हों तो ऐसा व्यक्ति ऐश्यर्यशाली होता है। यदि कुत्ते, शृगाल, गधे, या रीछ की तरह जांघ हो तो अशुभ समझना चाहिए। ऊपर सर्वत्र घुटने से नीचे तथा टखनों के ऊपर जो टाँग का भाग है उसके लिए जंघा

शब्द का प्रयोग किया गया है।

रोम-लक्षण

ऊपर जंघाओं के सिलसिले में रोम या रोयें के विषय में चर्चा की गई है। किस प्रकार के रोयें शुभ और किस प्रकार के अशुभ होते हैं यह बताया जाता है। रोम शरीर के चमड़े में जहाँ से निकलता है वहाँ एक अति सूक्ष्म छिद्र होता है इसे रोमकूप कहते हैं। यदि एक रोमकूप में से एक ही रोम निकले तो मनुष्य बहुत उच्च पद प्राप्त करता है। एक रोमकूप में से यदि एक ही सिर का बाल भी निकले तो उसे भी बहुत शुभ लक्षण मानना चाहिए। यदि शरीर में या सिर पर एक-एक रोमकूप से दो-दो रोम निकलें तो ऐसा व्यक्ति महा बुद्धिमान और विद्वान् होता है। किन्तु यदि एक-एक रोमकूप से तीन-तीन रोम निकलें तो मनुष्य दरिद्री और दुःखी होता है।

'सामुद्रतिलक' के मतानुसार यदि शरीर में भौंरे के समान काले, सुन्दर, चिकने, अत्यन्त पतले रोम हों तो जातक राजा या उसके समान श्रेष्ठ पद प्राप्त करता है। शरीर में रोम होने से मनुष्य सौभाग्यवान होता है। यदि रोयें बहुत घने हों तो जातक विद्वान् होता है। यदि मनुष्य के शरीर में बिलकुल रोम न हों तो संन्यासी होता है। यदि मोटे, रूखे तथा चुभने वाले रोम हों तो ऐसे मनुष्य को अधम समझना चाहिए। यदि रोम आगे से फटे हुए हों अर्थात् एक रोम आगे चलकर चिरा हुआ हो तो मनुष्य धनी होता है। यदि शरीर में रोम पीले हों तो पाप-कर्म करने वाला होता है।

जानु (घुटने)-लक्षण

यदि घुटने भीतर धँसे हुए हों तो मनुष्य परदेश में मरता है और अपनी स्त्री या स्त्रियों के अधीन रहता है। यदि घुटने टेढ़े-मेढ़े, विकराल या बहुत छोटे हों तो मनुष्य धनहीन होता है। यदि घुटने खूब मोटे हों और मांसयुक्त हों तो मनुष्य ऐश्वर्यवान और

दीर्घायु होता है ।

'सामुद्रतिलक' के अनुसार यदि हाथी के समान घुटने हों तो मनुष्य भोगी होता है । यदि घुटने मोटे हों तो पृथ्वी का स्वामी । यदि घुटने की संधि (जोड़) पैरों में मज़बूत और सुन्दर हो (अर्थात् मांसल होने से दिखाई न दे) तो मनुष्य दीर्घायु होता है ।

यदि घड़े की तरह घुटने हों तो मनुष्य की दुर्गति होती है । यदि तालफल की तरह हों तो बहुत दुःख उठाता है । जिसके दोनों घुटने कमज़ोर, ऊँचे-नीचे हों वह छोटे दर्जे की नौकरी करता है और दरिद्रता भोगता है । घुटनों पर मांस समान रूप से न हो, कहीं मांसल और कहीं मांसहीन तो भी अशुभ लक्षण है । ऐसे मनुष्य धनी नहीं होते ।

कटि-लक्षण

'बृहत् संहिता' के अनुसार यदि शेर की-सी कमर हो तो मनुष्य उच्चाधिकारी होता है । यदि बन्दर या हाथी के बच्चे की तरह कमर हो तो धनहीन होता है । समुद्र ऋषि के मतानुसार सिंह या व्याघ्र की तरह कमर होने से दण्डनायक (दूसरे को दंड देने का अधिकार रखने वाला मजिस्ट्रेट, जज, कलेक्टर आदि) होता है किन्तु बन्दर, कुत्ते, सियार, हाथी या भालू की तरह हो तो निर्धन होता है। 'सामुद्रतिलक' में लिखा है कि कमर पर बहुत अधिक रोम हों तो दरिद्र । यदि बहुत छोटी कमर हो तो दुर्भाग्ययुक्त; यदि मोटी, बड़ी कमर हो तो मनुष्य धनी होता है ।

नाभि

जिसकी नाभि विस्तृत, गोल, चारों ओर से ऊँची उठी हुई हो-तो जातक सुखी, वीर तथा धन-धान्य-सम्पन्न होता है । यदि नाभि नीची और छोटी हो तो मनुष्य क्लेश पाता है । यदि बीच में घुमाव हो, या रेखा हो तो धनहानि होती है तथा पेट में दर्द होता है । यदि नाभि बायीं ओर घूमी हुई हो तो ऐसा मनुष्य सदैव

दुष्टता करता रहता है। यदि दाहिनी ओर घुमाव हो तो बहुत विद्वान् और बुद्धिमान होता है। यदि बग़ल में ज़्यादा फैली हो तो जातक दीर्घायु होता है। यदि ऊपर को ज़्यादा फैली हो तो मनुष्य ऐश्वर्य-युक्त होता है। यदि नीचे की ओर ज़्यादा फैली हो तो ऐसे व्यक्ति के पास गाय, बैल अधिक रहते हैं अर्थात् धनी होता है। नीचे अधिक फैली हुई होने से केवल धन विशेष कहना चाहिए। ऊपर विशेष चौड़ी होने से धन और पद दोनों में विशिष्टता प्राप्त होती है। यदि कमल की कली के समान सुन्दर नाभि हो तो मनुष्य निश्चय राजा या उसके समान होता है। पुरुषों की नाभि गम्भीर और गोल होना शुभ लक्षण है। इससे विपरीत हो तो मनुष्य दुःखी होता है।

कुक्षि-लक्षण

पेट के बग़ल के भाग को कुक्षि कहते हैं। 'भविष्य पुराण' के अनुसार जिसकी कुक्षि बराबर हो (अर्थात् न ऊँची उठी हुई न नीची ढली हुई) वह भोगी होता है। जिसकी कुक्षि नीची हो उसका धन-नाश होता है। जिसकी कुक्षि हाथी के समान हो वह मायावी (बाहर से कुछ और भीतर से कुछ और) होता है और सदा कपट व्यवहार करता है।

पार्श्व-लक्षण

यदि पार्श्व मांसल हों तो शुभ लक्षण। इस भाग का मुलायम होना शुभ लक्षण है। यदि पार्श्व बड़ी, मांसल और मृदु हों तो जातक धनी, उच्चाधिकारी होता है और यदि टेढ़ी-मेढ़ी गड्ढेदार हों तो दरिद्र होता है। पार्श्व के बाल बराबर, मुलायम और दाहिनी ओर घूमे हुए हों तो सौभाग्य का लक्षण है। यदि इससे विरुद्ध लक्षण हों तो जातक निर्धन तथा पराधीन होता है।

उदर (पेट)

'भविष्य पुराण' के अनुसार पेट आगे को निकला हुआ न होना

शुभ लक्षण है। ऐसा व्यक्ति जिसका उदर सम (बराबर) हो तो धन-ऐश्वर्य-सम्पन्न होता है। घड़े की तरह पेट होना दरिद्रता का लक्षण है। "जिसका पेट हिरन या मोर की तरह हो वह 'धन्य' है।" जिसका पेट व्याघ्र या सिंह की तरह हो वह राजा होता है। जिसका पेट मेढक की तरह हो वह पृथ्वी का स्वामी होता है। वराहमिहिर ने लिखा है कि साँप की तरह पेट होना अशुभ लक्षण है। घड़े या हाँडी की तरह पेट होने से आदमी बहुत भोजन करने वाला होता है। 'सामुद्रतिलक' ने भी प्रायः उपर्युक्त लक्षणों को ही दोहराया है। लिखा है कि 'चारों ओर से पेट बराबर होने से मनुष्य बहुत धनी होता है। 'मेढक की तरह पेट होने से राजा; बैल या मोर की तरह पेट होने से भोगी; गोल पेट होने से सुखी; मछली या व्याघ्र की तरह पेट होने से सौभाग्यशाली सर्प की तरह पेट होने से नौकर और बहुत भोजन करने वाला होता है।' यदि कुत्ते, गीदड़ या भेड़िये की तरह पेट हो तो मनुष्य दरिद्र होता है। बहुत पतला पेट होने से मनुष्य पाप करने वाला तथा हिरन के बच्चे की तरह पेट वाला चोर होता है। पेट में बलि या सलवट पड़ना अच्छा लक्षण है। यदि ये वलियाँ सीधी हों तो मनुष्य सदाचारी और सुखी होता है किन्तु ऊँची-नीची या टेढ़ी हों तो व्यभिचार का लक्षण है। सीधी—यदि एक वलि हो तो विद्वान्, दो हों तो भोगी, तीन हों तो अनेक शास्त्रों का विद्वान्, चार हों तो बहुत पुत्रवान होता है। किसी-किसी जगह एक वलि होना अच्छा नहीं माना गया है। सीधी वलि होना यद्यपि शुभ लक्षण हैं किन्तु यदि एक भी वलि न हो तो वह भी उत्तम लक्षण है।

नोट—नाभि से ऊपर कंठ तक के भाग को तीन भागों में बांटा है। पेट, हृदय और वक्षःस्थल; इसी प्रकार बगल के भाग को तीन भागों में बांटा है। सब से नीचे का भाग कुक्षि (कोख), उससे ऊपर का भाग पार्श्व (जिसमें पंसलियाँ होती हैं और ऊपर का कक्षा (कांख)।

हृदय-लक्षण

जिनका हृदय विस्तृत और माँसल होता है वे दीर्घायु होते हैं। हृदय का भाग ऊँचा उठा हुआ, स्थिर तथा बिना रोम के अच्छा माना गया है। यदि रोम हों भी तो मृदु रोम होना अशुभ लक्षण नही है। पैने तथा चुभने वाले रोम हों या नसें निकली हुई हों तो ऐसा व्यक्ति अधम होता है। हृदयँ का सबसे शुभ लक्षण यह है कि कैसी भी परिस्थिति में उसकी धड़कन तेज़ न हो। हृदय का काँपना अशुभ लक्षण है।

वक्ष (छाती)

पेट के ऊपर और छाती के नीचे हृदय-भाग होता है। हृदय-भाग के ऊपर वक्ष। यदि छाती समतल हो तो मनुष्य धनी होता है, यदि ऊँची-नीची हो तो शस्त्र से मृत्यु होती है। यदि छाती मोटी और पुष्ट हो तो आदमी बहादुर होता है, यदि छाती पतली हो तो मनुष्य द्रव्यहीन होता है। छाती पर खूब रोयें होना शुभ लक्षण है। यदि रोयें ऊपर की ओर जाते हों तो विशेष शूरता का द्योतक है। उरःस्थल जितना चौड़ा, स्थिर, उन्नत और कठिन हो उतना ही शुभ लक्षण समझना चाहिए।

जत्रु (हंसली की हड्डी)

यदि हंसली निकली हुई हो तो मनुष्य दरिद्र होता है। यदि माँसल और ऊँची उठी हुई हो तो मनुष्य धनी और भोगी होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि माँस में छिपी हुई हो और उन्नत हो तो शुभ लक्षण है और बिना माँस के केवल हड्डी निकली हुई हो तो अशुभ लक्षण।

स्कन्ध (कंधे) लक्षण

यदि कंधे ऊँचे, बड़े और मांसल हों तो ऐसा व्यक्ति बहादुर होता है। यदि हाथी, बैल या सुअर की तरह कंधे हों तो मनुष्य महाभोगी, महाधनी और उच्च पदाधिकारी होता है। कंधों का

मांसहीन होना या छोटा गड्ढेदार होना अच्छा लक्षण नहीं है। कंधे पर रोम होना भी दरिद्रता का चिह्न है। केले के स्तम्भ की तरह या बकरे की तरह जिसका कन्धा होता है वे महाबलवान और धनी होते हैं।

कक्षा (कांख)-लक्षण

'भविष्य पुराण' के मतानुसार जिसका काँख उन्नत, बिना पसीने वाला, पुष्ट, मांसल और सुगन्धयुक्त हो वह राजा होता है। 'गरुड़-पुराण' में लिखा है कि पीपल के पत्ते की आकार की, सुगन्धित, मृदु-रोमयुक्त काँख राजाओं की होती है। इससे विरुद्ध लक्षण हों तो मनुष्य निर्धन होता है। सम होने से भोगी, नीची गड्ढेदार होने से निर्धन, उन्नत होने से राजा और विषम (ऊँची-नीची) होने से मनुष्य बेईमान और कपटी होता है।

बाहु (भुजा)-लक्षण

कन्धे से लेकर मध्यमा उंगली के अन्त तक के भाग को बाहु कहते हैं। जिसकी बाहु हाथी की सूँड की तरह पुष्ट और गोल हो तथा घुटने तक आवे वह राजा होता है। बाहुओं का लम्बा होना गुण है। बाहुओं की गोलाई सुन्दर होनी चाहिए। कन्धे के पास स्वभावतः बाहु विशेष मोटी होगी और कलाई के पास कम। इसी को स्पष्ट करने के लिए 'सामुद्रतिलक' में लिखा है कि गाय की पूँछ जैसे ऊपर मोटी और नीचे क्रमशः पतली होती जाती है उसी प्रकार पुरुष की दोनों भुजाएँ होनी चाहिएँ। बाहुओं में नसें दिखाई देना या अधिक रोम होना अच्छा लक्षण नहीं है। जिनकी बाहु छोटी और रोमयुक्त होती हैं वे दरिद्री होते हैं। यदि बाहु समान रूप से गोल न हों किन्तु ऊँची-नीची हों तो ऐसा मनुष्य चोर होता है। बाहु छोटी होने से स्वयं स्वतन्त्र या उच्चपदाधिकारी नहीं होता है किन्तु दूसरे की सेवा करने वाला पराधीन होता है।

पृष्ठ (पीठ)-लक्षण

'भविष्य पुराण' के अनुसार जिस पुरुष की पीठ व्याघ्र के समान हो वह सेना का नायक होता है किन्तु यदि सिंह के समान पीठ हो तो बन्धन को प्राप्त होता है। कछुए के समान पीठ होना बहुत शुभ लक्षण है। ऐसे व्यक्ति धनवान और सौभाग्यशाली होते हैं। जिनकी पीठ पर रोयें न हों वे धनी और जिनकी पीठ पर बहुत रोयें हों वे निर्धन होते हैं। समुद्र ऋषि के मतानुसार जिस आदमी की पीठ घोड़े या व्याघ्र के समान हो वह पृथ्वीपति होता है। समुद्र ऋषि ने पीठ के विषय में चार शुभ लक्षण कहे हैं। चिकनी हो, मांसल हो, बीच में गड्ढेदार न हो और रोम न हों। ये चारों धनिकों के लक्षण हैं। इससे विपरीत निर्धनता के लक्षण समझने चाहिए।

ऊपर जो व्याघ्र की पीठ शुभ और सिंह की पीठ अशुभ बताई गई है सो हिन्दी भाषा में प्रायः दोनों प्रकार के जन्तुओं को शेर ही कहते हैं। किन्तु व्याघ्र से काली धारीदार बाघ और सिंह से काठियावाड़ी बबर शेर समझना चाहिए।

कृकाटिका (गर्दन का पिछला हिस्सा)-लक्षण

यदि गर्दन के पिछले भाग में रोम हों या नसें निकली हों तो दरिद्रता का सूचक है। यदि यह भाग टेढ़ा-मेढ़ा या बहुत बड़ा हो तो भी रोग और दरिद्रताकारक होता है।

ग्रीवा (गर्दन)-लक्षण

'भविष्य पुराण' के अनुसार चपटी गर्दन वाला दरिद्र होता है। जिसके गले में नसें निकल रही हों उसका भी यही फल है। जिसकी गर्दन भैंसे के समान हो वह शूरवीर, मृग के समान हो वह डरपोक होता है। छोटी गर्दन वाला सुखी, भोगी और धनवान होता है। जिसकी गर्दन में शंख के समान रेखा हों वह सब दुष्टों पर विजय पाने वाला होता है—

शूरः स्यान्महिषग्रीवो मृगग्रीवो भयातुरः।
ह्रस्वग्रीवस्तुधनवान् स सुखी भोगवांस्तथा ॥

जिनकी गर्दन बड़ी, टेढ़ी, सूखी या कृश हो या खरगोश के समान गर्दन हो, वे निर्धन होते हैं। 'गरुड़ पुराण' में भी प्रायः यही लक्षण दोहराये गये हैं। यह विक्षेष रूप से लिखा गया है कि मृग के समान कंठ होने से शस्त्र द्वारा मृत्यु होती है। बहुत लम्बी गर्दन होने से पुरुष अधिक भोगी होता है। समुद्र ऋषि लिखते हैं कि जिसके गले में तीन वलि (सलवट) पड़ें उसे शंख के समान ग्रीवा वाला समझना चाहिए। जिसकी गर्दन गोल घड़े के समान हो वह धनी और दीर्घायु होता है। जिसकी गर्दन टेढ़ी हो वह चुग़लखोर, जिसकी बगले के समान हो वह पाखंडी और गधे के समान ग्रीवा वाला दुःखी होता है।

चिबुक (ठोड़ी)-लक्षण

होंठ के नीचे जो ठोड़ी का भाग है उसे संस्कृत में चिबुक कहते हैं और गाल के नीचे ठोड़ी के दोनों ओर जो भाग है उसे संस्कृत में हनु कहते हैं। पहले चिबुक का लक्षण बताया जाता है। 'सामुद्र-तिलक' के अनुसार पुण्यवान व्यक्तियों के चिबुक गोल, मांसल, छोटे और मुलायम होते हैं। चिबुक बड़ा होना अच्छा नहीं। अति कृश, दीर्घ, स्थूल या आगे से दो भागों में बँटा हुआ चिबुक दरिद्रता का लक्षण है। समुद्र ऋषि लिखते हैं, "जिनकी ठोड़ी बड़ी और मांस-हीन होती है वे सदैव निर्धन और रास्ता चलने वाले होते हैं। यदि चिबुक मांसल हो तो पुरुष धनी और बहु पुत्रवान होते हैं।"

हनु-लक्षण

दीर्घ हनु होने से मनुष्य में दृढ़ता होती है। प्रायः जिस मनुष्य में दृढ़ता और बुद्धि होती है वह हार नहीं खाता; इसलिए कहा गया है कि जिसका सिर और हनु ये दोनों भाग बड़े हों वह मनुष्य विजयी होता है। हनु भाग बड़ा और टेढ़ा हो तो शुभ लक्षण है।

श्मश्रू-लक्षण

प्राय: आजकल लोग दाढ़ी-मूँछ रखते ही नहीं इस कारण दाढ़ी-मूँछ का लक्षण कुछ महत्व नहीं रखता। फिर भी 'सामुद्र-तिलक' का मत है कि दाढ़ी-मूँछ के केश सघन, मृदु, सूक्ष्म होना उत्तम है। आगे से फटे हुए (दो भागों में विभक्त) केश अच्छे नही होते। एक संस्कृत का प्रसिद्ध श्लोक इस प्रसंग में दिया जाता है—

"चिबुके यस्य रोमाणि न वक्षसि न गण्डयो:।
तेन सख्यं न कुर्वीत यदि निर्मानुषं जगत्॥"

अर्थात् जिसके चिबुक पर रोम हों किन्तु कपोल या हनु पर बाल न हों और वक्ष:स्थल (छाती) पर भी बाल न हों उससे कभी दोस्ती न करे। यदि संसार में कोई दूसरा मनुष्य न हो और केवल ऐसा ही एक पुरुष हो तो भी उससे मित्रता नहीं करे क्योंकि ऐसा व्यक्ति विश्वास के योग्य नहीं।

कपोल (गाल)-लक्षण

'भविष्य पुराण' के अनुसार जिस पुरुष के कपोल फूले हुए और कमल के पत्र की तरह कान्तियुक्त होते हैं उसको कृषि (खेती) से बहुत धन प्राप्त होता है। यदि सिंह, व्याघ्र या बड़े हाथी की तरह कपोल हों तो ऐसा व्यक्ति सेना का नायक और ऐश्वर्यशाली होता है। जिस समय 'भविष्य पुराण' का निर्माण हुआ भारत-जैसे कृषि-प्रधान देश में अधिकतर लोग खेती से धनवान होते थे किन्तु आजकल कृषि थोड़े लोग करते हैं इस कारण कपोल मांसल और कान्तियुक्त हों तो किसी भी साधन से धनयुक्त समझना चाहिए।

'गरुड़ पुराण' के अनुसार भी उन्नत कपोल होने से भोगी और उच्चपदाधिकारी होता है। 'सामुद्रतिलक' में लिखा है कि उन्नत कपोल होने से सुखी और मांसल कपोल होने से भोगी होता है। जिनके कपोल सिंह या हाथी की तरह हों वे किसी प्रान्त या रियासत पर हुकूमत करने वाले होते हैं। जिनके कपोल धँसे हुए या मांस-

हीन हों या जिनके कपोल पर बहुत कम रोयें हों (अर्थात् घनी दाढ़ी न हो) वे पापी, दुःखी, भाग्यहीन, सदैव दूसरे की नौकरी करने वाले होते हैं।

मुख-लक्षण

मुख का बहुत अधिक महत्व है। जब हम किसी व्यक्ति से मिलते हैं तो सबसे पहले उसके चेहरे की तरफ़ ही दृष्टि जाती है। 'हेमाद्रि' में लिखा है कि सारे शरीर में शुभ लक्षण हों और मुख में भी सुलक्षण हों तभी मनुष्य सुखी होता है। 'गर्ग संहिता' ने भी चेहरे को सबसे अधिक महत्व दिया है। लिखा है कि "यह एक प्रकार से मनुष्य के प्राण का घर है क्योंकि मुख से ही मनुष्य बोलता है। मुख ही वास्तव में पुरुष है। जिसका मुख मांसल, चिकना अच्छी कान्तियुक्त, देखने में प्रिय लगने वाला, मनोहर वाणीयुक्त हो और आँख, कान, नाक, कपोल, अधर आदि प्रत्येक अवयव सुस्पष्ट हों वह मनुष्य सुखी और भोगी होता है।"

'भविष्य पुराण' के अनुसार जिस मनुष्य का मुख (चेहरा) गोलाई लिए हुए हो उसको धार्मिक वृत्ति का समझना चाहिए। इसके विपरीत जिनका चेहरा टेढ़ा-मेढ़ा हो या बहुत बड़ा हो या घोड़े की तरह हो या विकृत हो वे भाग्यहीन होते हैं—

"महावक्त्रा नरा ये तु दुर्भगास्ते न संशयः।
हरिवक्त्रा जिह्ववक्त्रा विकृतास्यास्तथा नराः॥"

इसी प्रकार जिनका मुँह कराल या भग्न हो (देखने से ऐसा प्रतीत हो कि कहीं कुछ हिस्से की कमी है।) तो ऐसे व्यक्ति चोर होते हैं। जिनके मुँह चारों ओर से एक समान पुष्ट हों और हाथी या शेर की-सी मुखाकृति हो वे राजा होते हैं। जिनका मुख बकरे या बन्दर की तरह हो वे निर्धन होते हैं। समुद्र ऋषि का वाक्य है कि जिनका चेहरा हरिण या चूहे की तरह हो वे दुःख भोगते हैं। 'सामुद्रतिलक' के मतानुसार जिसका चेहरा गधे, व्याघ्र, ऊँट, मेढक

या बन्दर की तरह हो वह दुःखभागी होता है। मनुष्य का चेहरा किस जानवर की तरह है यह विषय इसी पुस्तक में 'अनूक'-लक्षण के प्रसंग में काफ़ी विस्तारपूर्वक बता दिया गया है। इसलिए पुनरावृत्ति नहीं की जाती है।

'भविष्य पुराण' के अनुसार सम (अर्थात् दोनों ओर से एक सा), चिकना, गोलाई लिए हुए, जिसको देखने से सौम्यता मालूम हो अर्थात् जो सज्जन और शरीफ़ प्रतीत हो वह व्यक्ति राजा या राजा के समान अधिकारी, पृथ्वीपति होता है। मुख का चारों ओर से समान रूप से पुष्ट और कान्तियुक्त होना भोगी (उत्तम भोजन, वस्त्र, मकान, सवारी, शयन आदि) पुरुष का लक्षण है। इस प्रकार उत्तम चेहरे के शुभ लक्षणों का फल बताने के बाद 'भविष्य पुराण' में अशुभ लक्षण भी बताये गये हैं कि उपर्युक्त लक्षणों से भिन्न यदि लक्षण हों तो फल भी उलटा—दुःख, दरिद्रता आदि समझना चाहिए। यदि किसी पुरुष का मुख स्त्री का-सा हो—अर्थात् चेहरे पर दाढ़ी-मूँछ के बाल बहुत कम हों और सहसा देखने से ऐसा लगे कि यह तो कोई स्त्री है—ऐसे पुरुष के पुत्र होते नहीं और होते हैं तो नाश हो जाते हैं। यदि शरीर के अनुपात से चेहरा बहुत बड़ा हो तो ऐसा व्यक्ति भय उत्पन्न करने वाला पाप-कर्मी होता है। जिसका चेहरा नीचा हो या धँसा हुआ हो उसको स्त्री-सुख या पुत्र-सुख नहीं होता। जिसका चेहरा चौकोर हो वह धूर्त अर्थात् चालाक और दगाबाज़ होता है और उसको स्त्री-पुत्रादि का सुख नहीं होता। यदि चेहरा बहुत छोटा हो तो ऐसा व्यक्ति या तो दीर्घायु नहीं होता या उसका धन-नाश हो जाता है। 'गरुड़ पुराण' के मतानुसार जिसका चेहरा बहुत छोटा हो तो वह कृपण (कंजूस) होता है और जिसका मुख नीचा धँसा हुआ हो उसके पुत्र नहीं होता। समुद्र ऋषि का भी मत है कि छोटा चेहरा होने से कंजूस और चपटा चेहरा होने से दूसरों की नौकरी कर पेट पालने वाला

होता है। वराहमिहिर ने लिखा है कि जिनका चेहरा स्त्री के चेहरे की तरह हो वे संतानरहित होते हैं तथा बिलकुल गोल चेहरे वाले शठ (शैतान और चालाक) होते हैं। इस प्रकार स्त्री के समान चेहरा होना अशुभ लक्षण माना गया है। किन्तु साथ ही यह भी लिखा है कि 'धन्या मातृमुखासुता' अर्थात् माँ की तरह बेटे का चेहरा हो तो धन्य है। क्या इन दोनों मतों में विरोध है? नहीं, शास्त्रकारों ने इसका सामञ्जस्य इस प्रकार किया है—

(१) यदि माता से मुख न मिले और स्त्री का-सा मुख हो तो दोष समझना चाहिए अन्यथा नहीं।

(२) जब बच्चा छोटा होता है तब माता के समान चेहरा होना उसके भावी ऐश्वर्य का लक्षण है। माता के समान मुखाकृति होने पर भी जैसे-जैसे वह बढ़ता जायगा, युवावस्था प्राप्त होने पर दाढ़ी-मूँछ आदि निकलने पर बदन की लम्बाई-चौड़ाई से जो माता के मुख के समान वाला होगा, वह भी पूर्ण रूप से पुरुष मालूम होगा। माता के समान मुख होना—इसका अर्थ है कि माता की मुखाकृति के सदृश मुखाकृति होना किन्तु स्त्री-मुख से तात्पर्य है कि जिसे देखने से लगे कि यह व्यक्ति तो स्त्री है; इस प्रकार दोनों में बहुत अन्तर है।

'गरुड़ पुराण' में लिखा है कि जो देखने में डरपोक दिखाई देते हैं वे प्रायः पापी होते हैं। 'सामुद्रतिलक' के मतानुसार जिनका चेहरा टेढ़ा-मेढ़ा, सूखा या घोड़े की तरह हो वे निर्धन होते हैं।

अधर-लक्षण

कमल के समान जिसका नीचे का होंठ लाल हो वह धनवान तथा ऐश्वर्यवान होता है। 'गरुड़ पुराण' में लिखा है कि बिम्ब-फल के समान लाल और चिकने अधर वाले राजा होते हैं। इसके विपरीत जिनके नीचे के होंठ फटे हुए, विवर्ण (रंग उड़ा हुआ) रूखे या खण्डित हो तो वे धनहीन होते हैं। अधरों के उपर्युक्त शुभ

लक्षणों में दो लक्षण और वराहमिहिर ने बताये हैं। इनके अनुसार अधर पतला और सीधा होना चाहिए तभी मनुष्य राजा या राजाओं के समान श्रेष्ठ होता है।

'सामुद्रतिलक' के अनुसार जिसका अधर बिम्ब-फल के सदृश हो वह धनाढ्य होता है; जिसका अधर पाटल पुष्प की तरह लाल हो वह विद्वान् होता है और यदि मूँगे की तरह सुन्दर कान्ति-युक्त अधर हो तो मनुष्य किसी बहुत बड़े राज्य का अधिकारी होता है। "जिनके अधर और ओष्ठ दो अँगुल चौड़े, कोमल और चिकने हों और ओष्ठों के कोने भी मुलायम और चिकने हों वे प्रायः धनवान होते हैं।"

ऊपर का ओष्ठ

यदि ऊपर का ओष्ठ फटा हुआ, रूखा, भद्दे रंग का (जिसमें ललाई न हो) हो तो मनुष्य निर्धन होता है।

'सामुद्रतिलक' के मतानुसार यदि ऊपर का ओष्ठ मोटा हो तो मनुष्य सौभाग्यवान किन्तु यदि बहुत बड़ा हो तो मनुष्य डरपोक होता है। यदि ऊपर का ओष्ठ छोटा हो तो ऐसा व्यक्ति भोगी होता है किन्तु यदि बहुत छोटा हो तो दुःखी होता है।

दन्त-लक्षण

कुन्द कुड्मल संकाशैः प्रकाशैर्दशनैर्नृपाः।
ऋक्ष वानर दन्ताश्च नित्यं क्षुत्परिपीड़िताः ॥
हस्तिदन्ताः खरदन्ताः स्निग्धदन्ता गुणान्विताः।
सर्वे ते धनिनो ज्ञेयाः समुद्र वचनं यथा ॥
करालै विरलै रूक्षैर्दशनै दुःख भागिनः।
द्वात्रिंशद्दन्ता राजानः सैकत्रिंशश्च भोगवान् ॥

जिनके दांत रीछ या वानर की तरह होते हैं वे सदैव भूख से पीड़ित रहते हैं (अर्थात् उनको अच्छे भोजन प्राप्त नहीं होते)। जिनके दाँत कराल (बहुत बड़े और बेढंगे, जिन्हें देखने से डर

मालूम हो) और दूर-दूर होते हैं वे हमेशा दुःख पाते हैं। 'गरुड़-पुराण' में लिखा है कि चिकने, परस्पर भिड़े हुए दांत शुभ होते हैं। बग़ल के दांत बराबर और पैने हों तो श्रेष्ठ पुरुष का लक्षण है। 'भविष्य पुराण' के अनुसार हाथी या गधे के समान चिकने दांत वाले गुणी और धनी होते हैं। यदि ३२ दांत हों तो बहुत उत्तम है। ऐसा व्यक्ति राजा होता है, ३१ दांत वाला भोगी; ३० दांत वाला सुखी और दुःखी अर्थात् कभी सुख पाता है, कभी दुःख। २९ दाँत यदि हों तो पुरुष दुःखभागी होता है। 'सामुद्रतिलक' का भी प्रायः यही मत है। केवल यही अन्तर है कि इस ग्रन्थ के अनुसार ३० दांत वाला धनी होता है। २९ दांत वाला दुःखी होता है किन्तु २८ दांत वाला सुखी होता है। यदि दांत अच्छे भी हों किन्तु जितने दांत ऊपर हों उतने नीचे न हों अर्थात् ऊपर-नीचे के दांत की संख्या में अन्तर हो तो मनुष्य दुखी होता है। बच्चे के यदि बारह मास पूर्ण होने के पहले नीचे दांत आवें तो शुभ है। किन्तु यदि पहले ऊपर के दो दांत आ जायें तो शुभ नहीं होता। समुद्र ऋषि का मत है कि दांत यदि कुछ ऊँचे हों तो ऐसा व्यक्ति बलवान और भोगी होता है। जिनके दांत न हों या थोड़े दांत हों, या काले दांत हों या चूहे की तरह छोटे-छोटे दाँत हों वे पाप-कर्म करने वाले होते हैं।

जिह्वा (जीभ)-लक्षण

'भविष्य पुराण' के अनुसार जिसकी जीभ काली हो वह छोटी नौकरी करता है। यदि दो रंग की जीभ हो (सारी जीभ का एक समान रंग न हो) तो वह पाप-कर्म करने वाला होता है। जिसकी जीभ मोटी हो उसकी वाणी में रूखापन होता है (ऐसे व्यक्ति रूखा और अप्रिय उत्तर देते हैं; उनसे बात करने में रस या आनन्द नहीं आता)। जिनकी जीभ सफ़ेदी लिये हो वे आचारहीन होते हैं। किन्तु समुद्र ऋषि के मतानुसार यदि जिह्वा में कुछ कालापन हो

तो दोष नहीं है। ऐसा व्यक्ति श्रेष्ठ होता है। इसी प्रकार जीभ में कुछ सफ़ेदी हो तो मनुष्य आचारहीन नहीं होता। उन्होंने यहाँ तक लिख दिया है कि यदि कुछ श्यामता लिये हुए दीर्घ जिह्वा हो तो ऐसा व्यक्ति राजा होता है। इसलिये अति श्वेत और अति कृष्ण जिह्वा निन्दनीय समझनी चाहिए।

जिसकी जीभ पीली हो वह मूर्ख होता है और सदैव दुःखी रहता है। जीभ का लाल और न बहुत बड़ा, न बहुत छोटा होना शुभ लक्षण है। 'भविष्य पुराण' में लिखा है कि जिसकी जीभ लाल कमल के पत्र की भाँति चिकनी और दीर्घ हो—न स्थूल, न फैली हुई—वह व्यक्ति बहुत उच्च पदवी पाता है। यदि जीभ का अग्र भाग नीचा, चिकना, छोटा और लाल हो तो ऐसा व्यक्ति अनेक विद्याओं का विद्वान् और सुन्दर वक्ता होता है।

तालु-लक्षण

जिनका तालु काला हो वे कुल का नाश करने वाले, दुःखी होते हैं। ऐसे व्यक्तियों का धन-नाश हो जाता है। यदि तालु में कुछ पीलापन हो तो श्रेष्ठ है। यदि लाल रंग का और बड़ा तालु हो तो भी शुभ है। सिंह या हाथी के समान जिनका तालु हो वे राजा होते हैं। लाल कमल के रंग के समान यदि तालु हो तो भी मनुष्य राजा या राजा के समान होता है। तालु यदि सफ़ेद हो तो मनुष्य धनी होता है। चिकना और उत्तम वर्ण का तालु शुभ तथा विकृत, फटा, रूखा, मैला, खुरदरा तालु अशुभ समझना चाहिए।

हसित-लक्षण

जो व्यक्ति हँसते समय हिले नहीं उसे अच्छा समझना चाहिए। हँसते समय जिसकी आँखें बन्द हो जायें उसे कपटी तथा पाप-कर्म करने वाला समझना चाहिए। जो श्रेष्ठ पुरुष होते हैं उनके हँसते समय दांत नहीं दिखाई देते, केवल कपोल विकसित हो जाते हैं। हँसने के बहुत से भेद हैं—स्मित, हसित आदि, जिनका विशेष

वर्णन साहित्य की पुस्तकों में किया गया है। दुष्ट पुरुष बार-बार हँसता है।

नासिका-लक्षण

'भविष्य पुराण' के मतानुसार जिनकी नाक तोते के समान हो वे राजा या राजा के समान उच्च पदवी प्राप्त करते हैं; जिनकी नाक बड़ी हो वे भोगी होते है, जिनको नाक सीधी हो वे धर्मशील। जिनकी नाक हाथी, घोड़े या सिंह की तरह हो या आगे से पतली हो उनको व्यापार में अच्छा लाभ होता है। जिनकी नाक टेढ़ी-मेढ़ी, भद्दी या आगे से मोटी हो उसे पाप-कर्म करने वाला समझना चाहिए। 'बृहत्-सहिता' में लिखा है कि तोते के समान जिसकी नाक हो वह सुखी होता है। जिसकी नाक सूखी हुई हो (मांसल न हो) वह दीर्घजीवी होता है। बड़ी नाक होना शुभ लक्षण है; यदि टेढ़ी नाक हो तो चोर; चपटी नाक होने से स्त्री के कारण मृत्यु होती है। यदि आगे से नाक कुछ झुकी हुई हो तो ऐसा व्यक्ति धनी होता है। यदि दाहिनी ओर नाक झुकी हो तो क्रूर होता है। नथुनों का सुन्दर होना और नाक के छिद्रों का छोटा होना शुभ लक्षण है। 'सामुद्रतिलक' में लिखा है कि नाक बहुत बड़ी या बहुत छोटी हो और आगे से दो भागों में विभक्त हो तो मनुष्य निर्धन होता है।

छींक

जो धनी होते हैं वे एक बार छींकते हैं। दो या तीन बार जो छींके वह दीर्घायु होता है। चार बार छींकना भोग-नाश का लक्षण है। इससे अधिक छींकना भी दोषयुक्त है।

नेत्र-लक्षण

"जिसके नेत्र अनार के पुष्प के भाँति हों वह बहुत बड़ा भूपति होता है। जिसके नेत्र व्याघ्र के समान हों वह क्रोधी; मुर्गे के समान नेत्र वाले झगड़ालू होते हैं। बिल्ली के समान जिसके

नेत्र हों उसे हिंसक और अधम समझना चाहिए। मोर या नेवले की तरह नेत्र वाले मध्यम कोटि के होते हैं। शहद के रंग के जिनके नेत्र हों वे सदैव धनी होते हैं। गोरोचन, हड़ताल या हाथी के समान कुछ पीलापन लिये हुए नेत्र वाले धनी, भोगी तथा उच्च-पदाधिकारी होते हैं।" (भविष्य पुराण)

'गर्ग-संहिता' में लिखा है कि लक्षण-शास्त्र के अनुसार सब अंगों की अपेक्षा चेहरे का विशेष महत्त्व है और चेहरे में नेत्रों को सर्व-प्रधान समझना चाहिए। जिनके नेत्रों की सफ़ेदी गाय के दुग्ध के समान शुभ्र वर्ण हो और पुतलियाँ काली हों तो बहुत अधिक शुभ लक्षण समझना चाहिए। सुन्दर, गोलाई लिये हुए, विशाल और फैले हुए नेत्र, जिनसे प्रसन्नता टपकती हो, बहुत शुभ लक्षण है। गर्ग मुनि ने भी व्याघ्र, मुर्ग़ा तथा खरगोश के-से नेत्रों की निन्दा की है। ऐसे व्यक्ति निर्दयी, क्रूर, पापी और झगड़ालू होते हैं। जिनके नेत्र गधे, भैंसे या सर्प के समान हों उनकी शस्त्र से मृत्यु होती है। ऊँट के समान नेत्र वाले निर्दयी, पाप-कर्म करने वाले होते हैं। आँखों में चमक और उज्ज्वलता शुभ लक्षण है। इससे विपरीत यदि रूखे, धँसे हुए, खुरदरे, जिनमें चमक न हो, ऐसे नेत्र हों—उन्हें अशुभ लक्षण समझना चाहिए। जिनके नेत्र बड़े और टेढ़े हों वे स्त्रियों के वशीभूत रहते हैं। नेत्र के प्रान्त (किनारे) कुछ ललाई लिये हुए हों तो शुभ लक्षण है। बैल, मेढक, क्रौंच या कुरर के समान नेत्र वाले राजा होते हैं। जिनके नेत्र ऊँचे, चौड़े और बड़े हों—हंस, करीर या घोड़े की तरह नेत्र वाले—प्रजा-पालन में दक्ष और सबको सुख पहुँचाते हैं!

'गरुड़ पुराण' के अनुसार जिनके नेत्र औड़े हों वे क्रूर होते हैं। जिनके नेत्र हरिण की तरह हों वे पाप मति वाले होते हैं। जिनके एक ओर ढलावदार, टेढ़े या नेत्रों में Squint हो वे चोर होते हैं। और हाथी के-से नेत्र वाले सेना के नायक होते हैं। जिनकी दृष्टि

गम्भीर हो वे उच्च अधिकारी, जिनकी मोटी आँखें हों वे मन्त्री, नील कमल-सदृश नेत्र वाले विद्वान् तथा जिनके नेत्रों की पुतलियाँ काली हों वे सौभाग्यवान होते हैं।

'बृहत्-संहिता' के अनुसार कमल-दल के समान जिनके नेत्र हों वे धनी और नेत्र के अन्त के भाग में ललाई होने से लक्ष्मीवान होते हैं। जिनकी नेत्र की पुतलियाँ अति कृष्ण हों उनकी आँखें निकाली जाती हैं। (पुराने समय में आँखें निकालने का दण्ड दिया जाता था। आजकल ऑपरेशन समझना चाहिए।)

महाभारत में लिखा है कि अन्धा आदमी अच्छा लेकिन काना नहीं। काना होना अच्छा लेकिन केकर (औडा-ऐंचा-ताना) होना अच्छा नहीं। केकर होना अच्छा लेकिन पिंगल(बिल्ली के-से नेत्र)होना अच्छा नहीं। यह दुर्योधन राजा कर्कश मधु-पिंगल लोचन वाला है। केवल कुल का ही अन्त नहीं करायेगा, सारे क्षत्रियों का अन्त करा देगा।

ऊपर कई स्थानों में मधु-पिंगल लोचन धनी होने का लक्षण बताया गया है—

"न श्रीस्त्यजति रक्ताक्षं पुरुषं मधु पिङ्गलम्।"

(समुद्र ऋषि)

"न श्रीस्त्यजति सर्वत्र पुरुषं मधुपिङ्गलम्।
आपिङ्गलाक्षा राजानः सर्वभोग समन्विताः॥"

(भविष्य पुराण)

परन्तु दुर्योधन का मधु-पिंगल लोचन होना अशुभ बताया गया है। इससे परिणाम निकलता है कि केवल मधु-पिंगल लोचन होना धनी होने का लक्षण है लेकिन कर्कशता आदि अन्य अवगुणों के कारण दुर्योधन कुल-घातक सिद्ध हुआ।

समुद्र ऋषि के अनुसार मुर्गे की तरह जिसके नेत्र होते हैं वह अपनी माता तथा पुत्रों से द्वेष करता है। पीछे बताया जा चुका है कि 'गरुड़ पुराण' में मेढक के नेत्र के समान जिसके नेत्र होते हैं

उसे शुभ लक्षण कहा है किन्तु 'सामुद्रतिलक' के अनुसार मेढक या कौए की तरह जिनके नेत्र हों उन्हें अधम कहा गया है। जिनके नेत्र मटमैले होते हैं वे अधम होने पर भी बहुत जीते हैं। जिनके नेत्र बहुत उन्नत होते हैं वे सौभाग्यवान होने पर भी कम जीते हैं।

वैसे तो शरीर में सभी लक्षणों की प्रधानता है किन्तु गर्ग मुनि का मत बताया जा चुका है कि शुभाशुभ देखते समय नेत्रों को बहुत अधिक प्रधानता देनी चाहिए। गर्ग मुनि ने यहाँ तक लिख दिया है कि अन्य सौ अशुभ लक्षण एक पलड़े में और शुभ लक्षण वाले नेत्र एक पलड़े में रखे जायँ तो नेत्रों के शुभ लक्षणों का पलड़ा भारी होगा। इसलिए शुभाशुभ परीक्षा करने वालों को उचित है कि यत्न-पूर्वक नेत्रों को देखें।

दृष्टि (निगाह)-लक्षण

जिनकी दृष्टि में चिकनाई हो वे धनाढ्य होते हैं। जिनकी दृष्टि में दीनता हो वे निर्धन होते हैं। जिनकी दृष्टि में सफ़ेदी या कुछ पीलापन हो वे प्रशंसा के योग्य हैं। जिनकी दृष्टि गूढ़ हो वह महत्ता को प्रकट करती है। सर्प की तरह दृष्टि वाले क्रूर और दुश्शील होते हैं। जो निगाहें नीची रखते हैं वे भी क्रूर होते हैं। जिसकी दृष्टि नासिका (नाक) के अग्र भाग पर रहती है वह विद्वान् होता है। किसी चीज़ को बारीकी से देखना सूक्ष्म-दृष्टि कहलाता है। बहुत-सी विस्तृत वस्तुओं को एक ही साथ देखना स्थूल-दृष्टि कहलाता है। स्थूल-दृष्टि वाले सौभाग्यवान होते हैं। 'सामुद्रतिलक' के अनुसार जिनकी दृष्टि में श्यामता हो वे सौभाग्यवान होते हैं। जिनकी दृष्टि में चिकनापन हो वे बहुत भोगी होते हैं। स्थूल-दृष्टि वाले विद्वान्, दीन-दृष्टि वाले निर्धन। जिनका सरल चित्त होता है उनकी दृष्टि सीधी होती है। पुण्यात्मा सदा ऊपर की ओर देखते हैं। पापी नीचे की ओर देखते हैं। जो तिरछी नज़र से देखते हैं वे क्रोधी होते हैं—

"दुष्टो दारुणो दृष्टिः कुक्कुट दृष्टिः कलिप्रियो भवति ।
अहिदृष्टि दृगरोगी बिडालदृष्टिः सदापापः ॥"

जिसकी दृष्टि में क्रूरता हो वह दुष्ट होता है । मुर्ग़ की-सी दृष्टि वाला नेत्र-रोगी और बिलाव की तरह देखने वाला पापी होता है ।

पक्ष्म (बरौनी) लक्षण

जिनकी आँखों की बरौनी सघन, सूक्ष्म, सुदृढ़ और बिलकुल काली होती हैं वे दीर्घायु, धनवान, सौभाग्ययुक्त होते हैं । इससे विपरीत बरौनी वाले पापी और व्यभिचारी होते हैं ।

निमेष (पलक)-लक्षण

जिसकी पलक नहीं झपकती वह धनरहित होता है । जो करीब ५ सैकिण्ड में एक दफ़ पलक मारते हैं वे भी निर्धन होते हैं । जो १० सैकिण्ड में पलक गिराते हैं वे भी दूसरों के आश्रित रहके अपना जीवन-निर्वाह करते हैं । करीब १५ सैकिण्ड में जिनकी पलक गिरती है वे धनी होते हैं । २० सैकिण्ड में जिनकी पलक गिरती है वे भी धनी होते हैं । २५ सैकिण्ड में जिनकी पलक गिरे वे दीर्घायु, भोगी और धनी होते हैं ।

रुदित-लक्षण

रोते समय जिनके अश्रु गिरें, दीनता न हो बल्कि चेहरे पर मुस्कराहट हो ऐसे रोने को शुभ समझना चाहिए । यदि रोते समय दीनता तथा कंठ में रूखापन हो तो अशुभ समझना चाहिए ।

भ्रू (भौंह)-लक्षण

यदि द्वितीया के चन्द्रमा के समान भौं हो तो ऐसा व्यक्ति धनी होता है । बड़ी और परस्पर मिली हुई भौं होना शुभ लक्षण है । यदि भौं खण्डित हों तो मनुष्य निर्धन होता है; यदि बीच में झुकी हुई हों तो ऐसे पुरुष का दूसरी स्त्रियों से प्रेम होता है । वराहमिहिर का मत है कि द्वितीया के चन्द्रमा के समान भौं न होकर ऊँची-नीची हों तो मनुष्य दरिद्र होता है । किन्तु 'सामुद्रतिलक' के

अनुसार नाक के ऊपरी भाग से प्रारम्भ होकर अलग-अलग दोनो दिशा में गोलाई लिए हुई, दीर्घ, पृथुल (बड़ी), उन्नत, श्याम रंग की, मृदु रोमवाली भौं होना श्रेष्ठ है। यदि रोम बहुत थोड़े, स्थूल या अत्यन्त सूक्ष्म हों, पीले रंग के या बहुत कड़े रोम हों तो शुभ नहीं होता।

कर्ण (कान)-लक्षण

'बृहत्संहिता' के मतानुसार मांसहीन कान होने से अपमृत्यु होती है। यदि कान चपटे हों तो मनुष्य बहुत सुख भोगता है। जिनके कान छोटे होते है वे कंजूस होते हैं; नीचे से नुकीले कान होना ऐश्वर्य का लक्षण है; जिनके कानों में नसें दिखाई दें वे क्रूर होते हैं; लम्बे और मांसल कान वाले सुखी, बड़े कान वाले धनी और जिनके कानों में रोम हों वे दीर्घायु होते हैं। 'भविष्य पुराण' के अनुसार बड़े कान वाले दीर्घायु और लम्बे कान वाले तपस्वी होते हैं।

'सामुद्रतिलक' का मत है कि जिनके कान का सारा भाग पूर्ण, पुष्ट और सुव्यक्त हो, कान कनपटी के साथ सुन्दरता से जुड़े हों—कान तो विस्तीर्ण हों किन्तु कान के छेद छोटे-छोटे हों तो ऐसे व्यक्ति राजा होते हैं। लम्बे कान वाला धनी होता है। जिसके कान की गोलाई और आवर्त्त (चारों ओर का घुमाव) सुन्दर हो तथा कान मुलायम हों वह सुखी होता है। चूहे के-से कान वाला बुद्धिमान, भाले की-सी नोक वाला सेनानायक होता है। जिनके कानों के छिद्र बड़े हों और कान गहरे न हों—देखने से ही जो विरूप (कुरूप) मालूम हों—ऐसे कान वाले अल्पायु और दरिद्री होते हैं।

सर्वगात्र (सब अंगों के विषय में)-लक्षण

'विष्णु-धर्मोत्तर' तथा 'अग्नि-पुराण' में लिखा है कि जो-जो अंग सूखा, नसों से युक्त, मांसरहित तथा दुर्गन्धियुक्त हो वह अशुभ समझना चाहिए। और जो अंग चिकना, मांसल, कान्तियुक्त तथा

सुगन्धि-युक्त हो उसे शुभ समझना चाहिए। 'गरुड़-पुराण' का भी यही मत है कि नसों का दिखाई देना, खुरदरापन, मांस की कमी होने से अशुभ समझना और इनसे विपरीत हो तो शुभ समझना चाहिए।

आवर्त्त (भौंरी)-लक्षण

पुरुषों के दाहिने अंग में दाहिनी ओर घूमी हुई भौंरी हो तो पूर्ण शुभ फल; यदि दाहिने अंग में बायीं ओर घूमी हो तो मध्यम शुभ फल; यदि बायें अंग में बायीं ओर घूमी हुई भौंरी हो तो पूर्ण अशुभ फल; यदि बायें अंग में दाहिनी ओर घूमी हो तो मध्यम अशुभ फल समझना चाहिए।

सुस्पष्ट भौंरी शुभ होती है। शिर, भौं के बीच में या बाहु पर दाहिनी ओर घूमी हुई भौंरी विशेष शुभ फलकारक होती है। ललाट में भौंरी होने से मनुष्य अल्पायु होता है (पैर में यदि दो भौंरी हों तो वह निरन्तर घूमता रहता है। यह अशुभ लक्षण है।

२३वाँ प्रकरण (द्वितीय भाग)

स्त्री-लक्षण

आजकल प्रायः शास्त्र का दुरुपयोग किया जाता है। स्त्रियों के लक्षण-शास्त्र में इसलिये बताये गये हैं कि वर स्वयं या वर के माता-पिता आदि गुरुजन अच्छी कन्या का अन्वेषण करते समय अपने मन में यह निश्चय कर लें कि अमुक कन्या में क्या-क्या शुभ लक्षण हैं और उससे विवाह करना कहाँ तक उपयुक्त होगा। स्त्री-लक्षण-शास्त्र का ज्ञान करके यह कहना उचित नहीं है कि अमुक की पत्नी अच्छी है, अमुक की पत्नी दुष्ट लक्षणा। इसलिए इस शास्त्र को पढ़ने वाले लोगों से साग्रह अनुरोध है कि बिना इस विद्या में पारंगत हुए और बिना वर्षों तक इसका अभ्यास किये किसी निर्णय पर तत्काल न पहुँचें।

यदि उपर्युक्त नियम का पालन नहीं किया जायगा तो दो प्रकार के दोषों की सम्भावना है—

(१) शुभाशुभ दोनों प्रकार के लक्षण प्रत्येक व्यवित में पाये जाते हैं। जिस प्रकार के लक्षण अधिक बलवान और विशेष संख्या में होते हैं वे विपरीत लक्षणों को दबा देते हैं। 'विवेक-विलास' में लिखा है—

"पुष्टं यदेव देहे स्याल्लक्षणं वाप्यलक्षणम्।
इतराब्दाध्यते तेन बलवत् फलदं भवेत्॥"

अतः हो सकता है किसी लक्षण से कोई स्त्री दुष्टा प्रतीत होती हो किन्तु उसमें ऐसे बलवान शुभ लक्षण भी हों जिनको हम नहीं देख सकते।

(२) प्रत्येक स्थान पर ज्योतिष की भाँति लक्षण-शास्त्र में

भी देश, काल और पात्र का विचार करना उचित है। किसी समय कन्याओं के बहुत बाल्य-अवस्था में विवाह होते थे तब उसी उम्र में जो वर्ष शुभ प्रतीत होता था उसी में 'विवाह होगा' यह कहा जाता था, किन्तु अब विभिन्न जातियों में और विविध प्रदेशों में कन्याओं के विवाह की अवस्था बढ़ती जा रही है। इस कारण विवाह की अवस्था निर्णय करने में जैसे हम देश और काल का विचार करते हैं वैसे ही सामाजिक परिस्थिति, कुल, शील, मर्यादा आदि का विचार रखना चाहिए। सद्गृहस्थों के यहाँ कन्यायें या विवाहिता स्त्रियाँ अनुचित पथ पर नहीं जाती। इस कारण यदि सामान्य दुष्ट लक्षण अच्छे कुल की स्त्रियों में मिले तो भी वे दुष्ट नहीं हो जावेगी। इसके विपरीत बहुत-सी जातियाँ ऐसी हैं जिनका व्यवसाय ही सदाचार के विरुद्ध है। उन जातियों में सुलक्षण कन्या भी सम्भवतः सदाचारिणी न मिलेगी। इसी प्रकार आर्थिक परिस्थिति को भी ध्यान में रखना चाहिये। दरिद्र के घर में उत्पन्न हुई कन्या के लक्षण यदि धनवती होने के हों तो भी वे शायद दस-बीस-पच्चीस हजार तक का ही संग्रह करने में सफल हों। इसके विपरीत यदि किसी महाराजा की कन्या धन के लक्षणों से युक्त न भी हो तो भी वह सम्भवतः लाखों की स्वामिनी हो।

सदाचार भी देश-देश तथा जाति-जाति में भिन्न होता है। कहीं स्त्रियों का शराब पीना और अन्य पुरुषों के साथ नाच, राग-रंग में शामिल होना सदाचार के विरुद्ध नहीं है और कहीं दिन में भी स्वतन्त्र घूमना मर्यादा के विरुद्ध माना जाता है। इसलिए सब बात का विचार कर फलादेश करना उचित है।

कन्या-निरीक्षण काल

'भविष्य पुराण' का वचन है कि शुभ दिन और शुभ महूर्त में ब्राह्मणों के साथ जाकर कन्या-निरीक्षण करना चाहिये। 'जगन्-मोहन' नामक ग्रन्थ में समुद्र ऋषि का भी वाक्य है कि शुभ-ग्रह

अर्थात् शुक्ल पक्ष का चन्द्रमा, बुध, बृहस्पति, शुक्र जब बलवान हों तब विवाह के लिए कन्या का निरीक्षण करना उचित है। 'आश्वलायन गृह्य-सूत्र' के अनुसार कन्या में निम्नलिखित शुभ लक्षण होने चाहिए—

(१) बुद्धि, (२) रूप, (३) लक्षण, अर्थात् शुभ लक्षण (४) शील (५) आरोग्य। रूप की परिभाषा करते हुए शास्त्रकार कहते हैं कि जिसमें वर का मन रमे उसे रूप कहते हैं। आपस्तम्ब ऋषि का भी कथन है कि—

"यस्यां मनश्चक्षुषोर्निबन्धस्तस्यामृद्धिरिति।"

अर्थात् जिसको देखने से, नेत्र और मन जहाँ बँध जायें, ऐसी कन्या से विवाह शुभ है। कन्या के शुभ लक्षणयुक्त होने पर बहुत ज़ोर दिया गया है। मनु महाराज कहते हैं कि कन्या लक्षणान्विता होनी चाहिए—'कन्या अंगहीन न हो, कोई अंग छोटा-बड़ा न हो, जिसके नाम में सौम्य हो, जो हंस या हाथी की भाँति चलती हो, जिसके शरीर के रोम, केश और दाँत पतले हों और जिसका शरीर मृदु हो,' ऐसी कन्या से विवाह करना उचित है। दक्ष तथा याज्ञवल्क्य ऋषि ने भी लिखा है कि विवाह के पूर्व कन्या के लक्षणों को अवश्य देखे।

शातातप-प्रणीत 'पृथ्वी चन्द्रोदय' में लिखा है कि जिसकी वाणी हंस के समान हो और वर्ण मेघ की तरह हो अर्थात् चिकनाई लिए हुए श्याम-वर्ण, ऐसी कन्या से विवाह करने से गार्हस्थ्य-सुख प्राप्त होता है। नारदजी ने भी लिखा है कि मृग के समान जिसके नेत्र और ग्रीवा हो और हंस के समान जिसकी गति और वाणी हो ऐसी स्त्री राजपत्नी होती है। जिसकी भाषा मृदु हो अर्थात् चीख-कर, पुकारकर या कर्कश स्वर से न बोले और कोमल शब्द-व्यवहार करे, जिसके चलने के समय पैरों से आवाज़ न हो, जिसके पैर के तलुए मुलायम हों और मुख का वर्ण कुमुद के पुष्प के तरह सुन्दर हो, वह बहुत धनाढ्य और प्रतिष्ठित व्यक्ति की पत्नी होती है।

'गरुड़ पुराण' में लिखा है कि जिस कन्या के केश अति सुन्दर हों और उनका अग्रभाग कुछ टेढ़ा हो, मुख गोल हो और नाभि में दाहिनी तरफ़ घुमाव हो, ऐसी कन्या कुल की वृद्धि करने वाली होती है। जिसका वर्ण (शरीर-कान्ति, मुख-कान्ति) सोने की तरह हो और हाथ लाल कमल की तरह कोमल और ललाई लिये हुए हों ऐसी स्त्री पतिव्रता होती है। पूर्ण चन्द्रमा के समान जिस कन्या का मुख सुन्दर हो या उदित होते हुए सूर्य के समान जिसकी कान्ति हो, जिसके नेत्र विशाल हों और जिसके ओष्ठ बिम्ब-फल के समान हों वह कन्या समस्त जीवन-सुख भोगती है—

"यस्यास्तु कुंचिताः केशा मुखं च परिमण्डलम्।
नाभिश्च दक्षिणावर्ता सा कन्या कुल वर्द्धिनी ॥
या च कांचनवर्णाभा रक्त हस्त सरोरुहा।
सहस्राणां च नारीणां भवेत्सा च पतिव्रता ॥"

'विष्णु धर्मोत्तर पुराण' तथा 'अग्नि पुराण' के अनुसार नीचे दिये हुए लक्षण शुभ लक्षण हैं। जिसके सब अंग सुन्दर हों जो मद-पूर्ण हाथी की तरह चलती हो, जिसके रोम बारीक हों, शरीर पतला हो, कमर पतली हो किन्तु जाँघें पुष्ट और भारी हों, कबूतर की तरह जिसकी दृष्टि हो, कोकिल की तरह मीठी वाणी हो, सुन्दर काले केश हों, जिसके शरीर का वर्ण चिकनाई लिए हुए मनोहर हो— ऐसी कन्या प्रशंसा के योग्य है।

कन्या के दोष

किस प्रकार की कन्या से विवाह करना उचित नहीं इस सम्बन्ध में मनु महाराज कहते हैं जो सूरजमुखी हो (अर्थात् सारा शरीर, सिर के केश, भौंह, पलक के बाल आदि सफ़ेद हों) जिसके कोई अधिक अंग हो, जो रोगिणी हो, जिसके शरीर में बिलकुल रोयें न हों या बहुत अधिक हों और जो वाचाल हो और जिसके नेत्रों के डिम्ब पीले हों—ऐसे कोई भी कुलक्षण जिस कन्या

में हों उससे विवाह नहीं करना चाहिए। 'वाचाल' का अर्थ करते हुए शास्त्रकार कहते हैं कि जो दूसरों की बहुत निन्दा करने वाली हो। मनु महाराज ने और भी कहा है कि नक्षत्र नाम वाली (जैसे रोहिणी, विशाखा, रेवती) या जिनका नाम नदी, पर्वत, पक्षी, सर्प-वाचक हो या जिसका नाम अन्त्यज (भंगी, चमार आदि) या नोकर के नाम पर हो या जिसका नाम हृदय में भय उत्पन्न करने वाला हो (जैसे कराली) ऐसे नाम वाली कन्या से भी विवाह न करे। नाम का भी बहुत महत्त्व है। नाम और रूप में ही सब-कुछ प्रतिष्ठित है। यह बहुत गहन और गम्भीर विषय है। इस सिद्धान्त की यहाँ विशेष व्याख्या नहीं की जा रही है किन्तु मनु महाराज का यह आदेश स्मरण रखने योग्य है।

बौधायन ऋषि कहते हैं कि जिसकी भौंह मिली हुई हों, जिसके नेत्र पीले हों, जिसकी एड़ी मोटी हो, जो जुड़ली[1] हो, जिसके शरीर में बहुत रोम हों, जिसके दांत काले या मैले हों ऐसी कन्या से विवाह न करे। शातातप ऋषि का वाक्य है कि जो अंगहीन हो, व्यभिचारिणी हो, जिसके शरीर में दीर्घ और कुत्सित रोग हो, (दीर्घ रोग—लम्बे समय तक रहने वाले रोग, जैसे—दमा, तपेदिक आदि; कुत्सित रोग—कुष्ठ) या जो कन्या किसी अन्य पुरुष से विवाह करना चाहती हो उससे विवाह न करे। 'विष्णु पुराण' में निर्देश किया गया है कि जो शरीर से अत्यन्त दुर्बल और क्षीण हो, जिसका स्वर घर्घर या कौए के समान हो, जिसकी आँखें बिलकुल गोल हों या अच्छी तरह खुलती ही न हों, ऐसी कन्या से विवाह न करे।

जिसकी पिंडलियों पर बहुत बाल हों, गुल्फ़ (टखने) निकले हुए हों और हँसते समय गाल पर गहरे गड्ढे पड़ें, बुद्धिमान व्यक्ति को चाहिए कि ऐसी कन्या से विवाह न करे। जिसके चेहरे पर

---

१. एक साथ जब माता के गर्भ से दो बच्चे होते हैं वे यमल या जोड़ले कहलाते हैं।

रूखापन हो, हथेली तथा पैरों के तलुवे में पीलापन, नाखूनों में ललाई न हो सफ़ेदी हो, तथा नेत्र लाल हों उसे भी सुलक्षणा नहीं कहना चाहिए।

'भविष्य पुराण' में निम्नलिखित दोष गिनाये गये हैं। यदि कन्या सूरजमुखी (शरीर का वर्ण, सिर के बाल, भौं और पलक आदि सब सफ़ेद हों) या रोगिणी हो, भूरे नेत्र हों, गालों पर गड्ढे हों, नीले होंठ हों और शरीर पर बिलकुल रोयें न हों—ये सब दुर्लक्षण हैं।

'बृहन्नारदीय पुराण' में लिखा है कि जिस कुल में राजयक्ष्मा आदि संक्रामक भीषण रोग आदि हों या कन्या स्वयं रोगिणी हो, जिसके सिर में अत्यन्त केश हों या बिलकुल केश न हों जो कन्या बौनी हो या दीर्घ देह वाली हो (अर्थात् बहुत लम्बे-चौड़े शरीर वाली), देखने में भद्दी मालूम या क्रोधी स्वभाव की हो, पागल हो या उसके शरीर में कोई अंग कम या अधिक हो तो उससे विवाह करना उचित नहीं। जिसके गुल्फ (पैर के टखने) बहुत स्थूल हों, पिंडलियाँ बहुत बड़ी हों और पुरुषाकृति हो (अर्थात् देखने में मर्दाना औरत मालूम पड़े), जिसके ऊपर के होंठ पर मूँछें आ रही हों, जो बिना बात ही हँसती रहती हो या सदा दूसरों के घर में रहती हो—ऐसी कन्या से विवाह करना अच्छा नहीं। जो कन्या झगड़ालू हो या जिसका बहस करने का स्वभाव हो, जिसके दांत बहुत बड़े हों, जिसके शरीर की हड्डियाँ भी बहुत बड़ी हों, जो सदैव घूमने की शौकीन हो, निष्ठुर (अर्थात् क्रूर-हृदया) हो, या बहुत अधिक खाने वाली हो उससे भी विवाह नहीं करे। जिसके चेहरे का रंग पीला पड़ गया हो या लाल वर्ण हो या जिसको रोने की आदत हो या जो बहुत धूर्त (चालाक) हो, जिसको खाँसी या दमे का जीर्ण रोग हो, जो अधिक सोती हो या अपशब्द या अमंगल शब्द बोलती हो, सबसे द्वेष रखती हो, सदैव औरों की निन्दा

करती हो, जिसमें चोरी की या धोखा देने की आदत हो, जिसके बदन में बाल हों, जिसकी नाक बहुत बड़ी हो, जो घमंडी हो तथा जिसकी बक-वृत्ति हो, (बाहर से भोलापन, भीतर से घात) उससे विवाह न करे।

'पृथ्वी चन्द्रोदय' में भी लिखा है कि जो स्त्रियाँ बहुत छोटी (बौनी) या बहुत ऊँची, अत्यन्त दुबली या अत्यन्त मोटी हों या जिनकी आँखों की पुतलियाँ पीले रंग की हों, उनसे सम्बन्ध न करे।

'गरुड़ पुराण' के मतानुसार जिस कन्या के टेढ़े बाल हों और बिलकुल गोल आँखें हों उसका पति अल्पायु होता है और वह स्वयं दुःखभागिनी होती है। जिस स्त्री के पैर के अँगूठे और अनामिका उंगली पृथ्वी से स्पर्श न करे उसका पति अल्पायु होता है और वह स्वेच्छाचारिणी होती है। अर्थात् अपनी मर्ज़ी के माफ़िक चलती है। जिसके पैरों में, स्तनों में रोम हों और दोनो होंठ उठे हुए हों, उसका पति अल्पायु होता है।

'नागर खण्ड' में लिखा है कि कोई पुरुष कितना भी कुलहीन, कितना भी दरिद्र तथा कितनी भी कठिन परिस्थिति में हो तो भी ऐसी स्त्री से विवाह न करे जिसके तीन स्तन हों और पीठ पर भौंरी हो।

कन्या-परीक्षा का एक प्रकार

शुभ समय में आठ जगह से मिट्टी लाकर कन्या से कहे कि इनमें से एक उठा लो।

(१) यदि वह खेत से लायी हुई मिट्टी का ढेला उठाये तो यह समझना चाहिए कि इसकी सन्तान धान्य-सम्पन्न होगी।

(२) यदि गोष्ठ (ग्वाड़ा, जहाँ गाय रहती हैं) से लायी मिट्टी उठाये तो वह बहुत पशुओं की स्वामिनी होगी।

(३) यदि वह वेदी (जिस पर हवन इत्यादि किया जाता है)

से लायी हुई मिट्टी उठाये तो ब्रह्मवर्चस्विनो (तपस्विनी, धर्मपरायणा) होगी।

(४) यदि वह जलपूर्ण तालाब से लाई हुई मिट्टी उठाये तो सर्व-सम्पन्न होगी।

(५) जहाँ पर जुआ खेला जाता है वहाँ से लाया हुआ मिट्टी का ढेला उठाये तो चालाक और धोखेबाज़ होगी।

(६) यदि चौराहे से लाई हुई मिट्टी का ढेला उठाये तो अच्छा लक्षण नहीं है।

(७) यदि ऊसर ज़मीन से लायी हुई मिट्टी उठाये तो अच्छा लक्षण नहीं।

(८) यदि श्मशान से लायी हुई मिट्टी उठाये तो पति को मारने वाली होती है।

सुलक्षणा और सदाचारिणी कन्या से विवाह करने से पति की आयु तथा सौभाग्य की वृद्धि होती है और कुलक्षण कन्या से विवाह करने से पति की आयु कम होती है तथा भाग्य में भी वाधा पहुँचती है।

स्त्रियों के सिर के लक्षण तथा पैर के लक्षण पृथक् प्रकरणों में दिये गये हैं। पैर से लेकर गले तक का भाग वस्त्र से छिपा रहता है, इस कारण कौन से लक्षण मिलते हैं, कौन से नहीं इसका निर्णय नहीं हो सकता। इसलिए यहाँ केवल वे लक्षण दिये जा रहे हैं जिनको सुगमता से देखा जा सकता है।

कंठ-लक्षण

जिस स्त्री का कंठ माँसल, गोल तथा चार अँगुल लम्बा हो तो उत्तम है। यदि चपटा, ऊँचा-नीचा या बहुत बड़ा कंठ हो तो अच्छा नहीं। जिसकी बहुत मोटी गर्दन हो वह विधवा होती है, टेढ़ी गर्दन हो तो नौकरानी होती है, चपटी गर्दन हो तो वन्ध्या और छोटी गर्दन हो तो निर्धन होती है।

'भविष्य-पुराण' के मतानुसार यदि गर्दन में चार अँगुल लम्बी तीन रेखा दिखाई दें तो ऐसी स्त्री सौभाग्यशालिनी होती है और उसको रत्नों से जड़े हुए सोने के भूषण प्राप्त होते हैं। जिस स्त्री की ग्रीवा (गला) दुर्बल हो तो अधमता का लक्षण है। यदि गर्दन स्थूल हो तो दुःखभागिनी होती है, यदि छोटी हो तो सन्तति मर जाती है, जिसकी गर्दन बहुत लम्बी हो वह बन्धकी (व्यभिचारिणी) होती है—

"अधमा स्त्री कृशग्रीवा दीर्घग्रीवा च बन्धकी ।
ह्रस्वग्रीवा मृतापत्या स्थूलग्रीवा च दुःखिता ॥"

गर्ग मुनि के मतानुसार भी तीन रेखाओं का ग्रीवा में दिखाई देना, सुन्दर, गोल आकार, न अति दीर्घ, न अति ह्रस्व, चार अंगुल का परिमाण उचित है।

चिबुक तथा हनु-लक्षण

'चिबुक' ठोड़ी को कहते हैं और हनु भी ठोड़ी को कहते हैं। परन्तु दोनों में अन्तर यह है कि ठोड़ी का जो भाग निचले ओष्ठ के नीचे होता है वह तो चिबुक कहलाता है और दोनों गालों के नीचे तथा चिबुक के दोनों ओर जो भाग है उसे हनु कहते हैं।

स्त्रियों का चिबुक, गोल, पुष्ट, सुकोमल, दो अँगुल का हो तो शुभ लक्षण है। यदि यह भाग बहुत मोटा, बहुत चौड़ा, दो भागों में बँटा हुआ या रोमयुक्त हो तो ऐसी कन्या से विवाह नहीं करना चाहिए।

'भविष्य-पुराण' के मतानुसार हनु का स्थूल, कृश, टेढ़ा, रोमयुक्त या बहुत छोटा होना अशुभ लक्षण है। 'स्कन्द-पुराण काशीखण्ड' के अनुसार हनु भाग चिबुक से बिलकुल मिला हुआ होना चाहिए। इस भाग का मांसल होना गुण है किन्तु स्थूलता आदि के जो दोष ऊपर बताये गये हैं वे नहीं होने चाहिए।

कपोल-लक्षण

चारों ओर से गोल, कुछ पीलापन लिए हुए गालों का होना

शुभ लक्षण है । गाल पुष्ट, मांसल और उन्नत होने चाहिए । यदि पिचके, खुरदरे, मांसरहित या रोमयुक्त हों तो शुभ लक्षण नहीं है। यदि सब समय—बिना हँसे भी गालों के बीच में गड्ढे हों तो यह अच्छा लक्षण नहीं है।

मुख-लक्षण

'भविष्य-पुराण' के अनुसार सुन्दर, चमकीला, चिकना मुख भाग्यशाली स्त्रियों का होता है। पूर्णिमा के चन्द्रमा की तरह आकर्षक, गौर, शीतलता लिए हुए, कान्तियुक्त मुख हो तो स्त्री सौभाग्य, धन, पुत्र व सम्पत्तियुक्त सब फलों को प्राप्त करती है। जिन स्त्रियों का मुख कमल के समान मृदु तथा शोभायुक्त हो तथा उनके मुख से मालती, बकुल, कमल, गुलाब आदि पुष्पों की सुगन्ध आती हो उनको सदैव सरस भोजन, पान (सुगन्धित, पीने वाले पदार्थ) तथा ताम्बूल (पान के बीड़े) की कमी नहीं रहती अर्थात् राजसी भोज प्राप्त होते हैं—

"चतुरस्रमुखी धूर्ता मण्डलास्या च या भवेत् ।
अप्रजा वाजिवक्त्रा च महावक्त्रा च दुर्भगा ।।"

जिनका मुख बिलकुल चौकोर हो वे चालाक और धोखेबाज़ होती हैं। जिनका मुख-मण्डल बहुत बड़ा और बिलकुल गोल हो वे भी विश्वास के योग्य नहीं होतीं। जिनका चेहरा घोड़े की तरह हो उनको सन्तान-सुख नहीं होता, जिनका चेहरा बहुत बड़ा और बेडौल हो वे दुर्भाग्ययुक्त होती हैं। जिनकाचे हरा कुत्ते, सूअर, भेड़िये, उल्लू या मगर से मिलता हो वे क्रूर और पापकर्म करने वाली होती हैं। ऐसी स्त्रियों को सन्तान अथवा भाई-बन्धुओं का सुख नहीं होता। परन्तु जिनका मुंह कुछ गोलाई लिए हुए स्निग्ध, बराबर मांसल तथा स्वाभाविक सुगन्ध से युक्त होता है यह सौभाग्य का द्योतक है। उपर्युक्त गुणों के साथ-साथ जिस कन्या का चेहरा अपने पिता के सदृश हो वह धन्य है—बहुत प्रशंसा के योग्य है—

'जनितृवदना च्छायं धन्यानामिह जायते ।'
कन्या का मुँह पिता से मिलना तथा पुत्र का मुँह माता के चेहरे से मिलना विशेष सौभाग्य का लक्षण है। 'उत्तर रामचरित' में महाकवि भवभूति ने भी लिखा है कि कुश और लव का चेहरा जानकीजी से मिलता था।

अधर-लक्षण

ताँबे की तरह लाल और शोभायुक्त, कुछ झुका हुआ और कुछ ऊँचा अधर जिस स्त्री का होता है वह बहुत भोग भोगती है। अधर नीचे के होंठ को कहते हैं। अधर का स्थूल (मोटा) होना भी दुर्गुण है और कृश होना भी अवगुण है। 'भविष्य-पुराण' के मतानुसार यदि अधर का रंग उड़ा-उड़ा हो तो स्त्री अति दुःखित होती है; यदि अधर स्थूल हो तो कलहकारिणी। 'स्कन्द पुराण काशीखंड' के अनुसार यदि अधर में चार गुण हों—(१) पाटल पुष्प की तरह लाल, (२) गोलाई लिए हुए, (३) चिकनाई तथा (४) बीच में एक रेखायुक्त तो ऐसी स्त्री का विवाह किसी उच्च पुरुष के साथ होता है। यदि अधर सूखा, लम्बा (नीचे लटका हुआ), टेढ़ा या पतला हो तो दुर्भाग्य-सूचक है। जिस स्त्री का अधर मोटा और काला हो वह विधवा और कलहकारिणी होती है। 'गरुड़-पुराण' के मतानुसार यदि ओठ कुछ-कुछ लाल हों तो श्रेष्ठता सूचित करते हैं। वराहमिहिराचार्य ने लिखा है कि बिम्ब-फल के सदृश लाल अधर ऐश्वर्य का लक्षण है। समुद्र ऋषि का भी यही मत है कि जिसके अधर मांसल तथा चिकने हों, फटे हुए न हों और बिम्ब-फल के सदृश लाल हों तो ऐसी कुमारी राजा की रानी होती है।

ऊपर का ओष्ठ

ऊपर के ओष्ठ का रंग, चिकनाई आदि सब नीचे के होंठ की तरह से होना शुभ लक्षण है इसलिए उस लक्षण को दोहराया नहीं जाता है। ऊपर का ओष्ठ तीक्ष्ण (कठोर) और पैना हो तो स्त्री

अत्यन्त क्रोधकारिणी होती है। यदि ऊपर के होंठ पर रोम हों तो अपने पति के लिए शुभ नहीं होती।

दन्त-लक्षण

जिसके दांत चिकने, सीधे, एक दूसरे से मिले हुए, शंख, कुंद के पुष्प या चन्द्रमा की तरह सफेद हों और आगे को निकले न हों वह स्त्री सदैव मिठाई आदि सरस भोजन और सुन्दर पेय पदार्थ प्राप्त करती है अर्थात् राजसी स्थिति में रहती है। यदि दांत अति पतले या अति छोटे हों या रूखे, या फटे हुए हों तो ऐसी स्त्री मूर्ख या दुर्बुद्धियुक्त होती है।

'गरुड़ पुराण' के मतानुसार यदि दांत कराल और विषम (ऊँचे-तीखे एक समान नहीं) हो तो क्लेश और भयानक होते हैं। यदि दांतों का मसूड़ा काला हो तो ऐसी स्त्री में चोरी करने की आदत होती है; यदि दांत बहुत बड़े हों तो उसका पति अल्पायु होता है। 'स्कन्द पुराण' के अनुसार गाय के दूध की तरह सफ़ेद और चिकने, ऊपर-नीचे बराबर, कुछ-कुछ उठे हुए ३२ दांत हों तो शुभ लक्षण है। यदि कोई दांत आगे निकले हों कोई पीछे, मोटे या बड़े दांत हों तो अशुभ समझना चाहिए। दांतों के पीले या काले होने से स्त्री कष्ट पाती है। यदि दांत सीप के आकार के हों (बीच में चौड़े, नीचे, नुकीले) तो यह भी अच्छा लक्षण नहीं है। यदि नीचे के जबड़े में ऊपर की अपेक्षा अधिक दांत हों तो ऐसी कन्या की माता कम जीती है। यदि बहुत बड़े या चौड़े, भयंकर दांत हों तो ऐसी स्त्री पति से हीन होती है (विवाह न हो या पति जल्दी मर जाये)। जिसके दांत छीदे हों अर्थात् एक दांत और दूसरे दांत में अन्तर हो वह कुलटा होती है।

समुद्र ऋषि का वाक्य है कि—

"अनपत्या भवेन्नारी दन्तानां चलनं यदि।
निधनत्वं च दारिद्रयं तस्याश्चैव विनिर्दिशेत्॥"

जिस स्त्री के दांत चलें, (दांत परस्पर भिड़ें जैसे—प्रायः सोते समय बहुत-सी स्त्रियाँ दाँत किटकिटाती हैं) तो उस स्त्री को सन्तान-सुख नहीं होता। ऐसी स्त्री दरिद्रा और दुःखभागिनी भी होती है। गर्ग मुनि ने लिखा है कि दांत आगे से कुछ गोलाई लिए हुए तथा तेज़ और दृढ़ होने उत्तम हैं। यदि मृणाल या चाँदी के समान उज्ज्वल, परस्पर एक-दूसरे से भिड़े हुए दांत हों तो ऐसी स्त्री धन्य है।

जिह्वा-लक्षण

'भविष्य-पुराण' के अनुसार जिह्वा में चार गुण सर्वोपरि हैं। लम्बी हो, सीधी हो, पतली और ताँबे की भाँति लाल। इसके विपरीत यदि छोटी, टेढ़ी, मोटी, फटी हुई या जिसमें ललाई न हो ऐसी फीकी जिह्वा निन्दित है। 'स्कन्द पुराण' के अनुसार जिस स्त्री की जीभ लाल और मुलायम होती है उसको आजीवन सुन्दर, सरस मिष्टान्न भोजन प्राप्त होता है। यदि काली जीभ हो तो स्त्री दुःख भोगती है। बीच में सकड़ी और आगे चौड़ी जिस स्त्री की जीभ हो वह भी दुःख पाती है। यदि सफ़ेद जीभ हो तो पानी में डूब कर या जल-विकार से मृत्यु होती है। यदि जिह्वा काली हो तो ऐसी स्त्री अत्यन्त कलहकारिणी होती है; यदि मोटी हो तो दरिद्रा। यदि बहुत लम्बी जीभ हो तो उचित, अनुचित का बिना विचार किये सब कुछ खाती रहती है। यदि बहुत विशाल (बहुत लम्बी और बहुत चौड़ी) जीभ हो तो स्त्री नशा करती है या लापरवाह होती है। समुद्र ऋषि के मतानुसार भी जीभ में श्यामता होना अशुभ लक्षण है। गर्ग मुनि ने जिह्वा के और तो वही शुभ लक्षण बताये हैं जो ऊपर बताये जा चुके हैं किन्तु जिह्वा का छोटा होना प्रशस्त माना है। ऊपर 'भविष्य पुराण' के अनुसार ह्रस्व होना अवगुण है। इसलिये परिणाम यह निकलता है कि बहुत चौड़ी, लम्बी और मोटी जीभ होना दोष है तथा पतली, लाल मध्यम माप

की जीभ होना शुभ लक्षण है ।

तालु-लक्षण

तालु तालुए को कहते हैं । जिन स्त्रियों के तालु लाल, चिकने और कोमल हों वे सौभाग्यशालिनी होती हैं । 'स्कन्द पुराण' के अनुसार यदि तालु पीला हो तो स्त्री संन्यासिनी हो जाती है, यदि सफ़ेद हो तो विधवा । यदि तालु पीला हो तो सन्तान-सुख नहीं होता । 'गरुड़-पुराण' के मतानुसार यदि तालु सफ़ेद हो तो अशुभ लक्षण अवश्य है, किन्तु स्त्री विधवा नहीं होती; यह धन के घाटे या निर्धनता का लक्षण है । 'गरुड़-पुराण' में यह भी लिखा है कि सन्तान-सुख के अभाव का जो लक्षण काले तालु होने का है वह तभी घटित होता है जब तालु में श्यामता के साथ-साथ खुरदरापन भी हो । समुद्र ऋषि के मतानुसार तालु सफ़ेदी लिये हो तो दासी, श्यामता लिये हो तो दुःखिता, कालापन और रूखापन लिये हो तो संन्यासिनी हो जाती है ।

ये जो अलग-अलग रंगों के लक्षण बताये हैं उनको आज-कल के समाज पर लागू करने से संन्यासिनी का अर्थ यही किया जावेगा कि—सांसारिक जीवन से विरक्त होना । विरक्ति और वैराग्य आजकल 'ज्ञान' के कारण इतना नहीं होता जितना दुःख के कारण । गर्ग मुनि ने संक्षेप में यह भी लिख दिया है कि जिन स्त्रियों के तालु मांसल और लाल होते हैं—धब्बेदार नहीं होते, वे स्त्रियाँ सौभाग्यशालिनी और पुत्रवती होती हैं ।

हसित (हँसने का)-लक्षण

'भयिष्य-पुराण' के अनुसार यदि हँसने के समय दांत दिखाई न दें, गाल कुछ फूल जायँ, नेत्र बन्द न हों तो शुभ लक्षण है । हँसते समय गालों पर गड्ढा पड़ना अशुभ लक्षण है ।

नासा (नाक का)-लक्षण

'स्कन्द-पुराण' में लिखा है कि जिस स्त्री की नाक अच्छी तरह

उठी हो किन्तु न मोटी हो, न पतली, न टेढ़ी, न बहुत बड़ी, वह शुभ होती है। ऐसी स्त्री धन्य है। 'गरुड़ पुराण' के अनुसार नथुने फूले हुए होना अच्छा लक्षण नहीं है। नाक के छिद्र गोल और छोटे शुभ माने गये हैं। यदि नाक का अग्र भाग मोटा हो और अधिक ऊँची हो तो अच्छा लक्षण नहीं। जिसकी नाक टेढ़ी-मेढ़ी हो या बहुत छोटी हो वह दासी की भाँति आजीवन मेहनत करती रहती है। जिसकी नाक बहुत बड़ी हो वह स्त्री झगड़ालू होती है। यदि नाक का अग्र भाग लाल हो और कुछ झुका हुआ हो तो पति-सुख में बाधा करता है।

समुद्र ऋषि के मतानुसार—

"दीर्घेण नासिकाग्रेण नारी भवति कोपना।
ह्रस्वेण च भवेद्दासी परकर्म्मकरी सदा।"
चिपिटा नासिका यस्या वैधव्यमधिगच्छति॥

नाक का आगे का हिस्सा बहुत बड़ा होने से स्त्री बहुत क्रोधी होती है। यदि नाक बहुत छोटी हो तो दासी। जिसकी नाक बहुत चपटी हो तो—यह विधवा होने का लक्षण है।

छींक

यदि छींकने में देर लगे (अर्थात् ३-४ सैकिण्ड लगें, यह नहीं कि एक ही सैकिण्ड में छींक समाप्त हो जाये) और दो-तीन छींक एक साथ आवें तो दीर्घायु का लक्षण है।

नेत्र-लक्षण

भविष्य पुराण का मत—यदि कमल के आकार के बड़े नेत्र हों, उनमें कुछ-कुछ ललाई हो और नेत्र की बरौनी सुन्दर हों तो ऐसी स्त्री सुख और सौभाग्य भोगती है। खरगोश, मृग या सुअर के नेत्र के समान जिसके नेत्र हों, वह स्त्री बहुत भोग भोगती है। यदि नेत्र का डिम्ब शहद के रंग का हो तो ऐसी स्त्रियों का विवाह उच्च पदाधिकारियों से होता है। यदि नेत्र बड़े, सुन्दर और

चमकीले हों (अर्थात् कान्तियुक्त हों, धुँधले नहीं) तो बहुत धन की स्वामिनी होती है। यदि नेत्र पीलापन लिये हों और भीतर धँसे हुए हों तो स्त्रियाँ बहुत जीती हैं किन्तु दुःखिनी होती है, किन्तु जिनकी आँखे बहुत अधिक बाहर निकली हों उनकी केवल मध्यम आयु होती है। जिसकी कुत्ते की तरह आँख हो या नेत्र में सफेदी न हो, मटमैला रंग हो या नेत्र लाल हों या छोटे-बड़े हों तो ऐसी कन्या से विवाह न करे क्योंकि ये सब अशुभ लक्षण हैं। यदि औंडे या घूमे हुए नेत्र हों तो स्त्रियाँ मद्य-मांस प्रिय तथा चपल होती हैं।

'स्कन्द-पुराण' के मतानुसार यदि नेत्रों का डिम्ब काला हो, नेत्रों के कोने कुछ लाल हों तथा और सब भाग गाय के दूध की तरह सफ़ेद और चिकना व कान्तियुक्त हो तो बहुत शुभ लक्षण है। उन्नत नेत्र वाली स्त्री दीर्घायु नहीं होती। यदि नेत्र बिलकुल गोल हों तो कुलटा होती है। यदि मेढ़े या भैंसे के नेत्र के समान आँखें हों या औंडे नेत्र हों तो सुन्दर लक्षण नहीं है। यदि गाय की आँखों की तरह नेत्र हों तो उसका चलन अच्छा नहीं होता। यदि नेत्र लाल हों तो पति की मृत्यु जल्दी हो जाती है। कबूतर के नेत्र के समान हों तो दुश्शीला होती है। यदि आँखें बिलकुल अन्दर धँसी हों तो दुष्ट होती है। हाथी के नेत्र की तरह जिसके नेत्र हों वह भी अच्छा लक्षण नहीं जो बायें आँख से कानी हो वह व्यभिचारिणी होती है और जो दाहिनी आँख से कानी हो वह वन्ध्या होती है। यदि शहद के वर्ण का आँखों का डिम्ब हो तो बहुत ऐश्वर्यशालिनी होती है।

'बृहत् संहिता' में लिखा है कि जिसके नेत्र औंडे या डिम्ब पीला या मटमैला हो, जो बार-बार चंचल नेत्रों से इधर-उधर देखती हो तो वह असती होती है। समुद्र ऋषि के अनुसार यदि नील कमल की तरह लावण्ययुक्त आँखें हों तो ऐसी स्त्री धन-धान्य-युक्त सौभाग्यशालिनी होती है। 'सामुद्रतिलक' के अनुसार पिंगल नेत्र

अर्थात् (पीले नेत्र) होना या गो-पिंगल नेत्र होना चरित्र-भ्रष्ट होने का लक्षण है।

पक्ष्म (आँखों की बरौनी)-लक्षण

यदि आँखों की बरौनी सूक्ष्म किन्तु सघन, स्निग्ध (चिकनी और मुलायम) हो तो सौभाग्य का लक्षण है किन्तु इसके विपरीत बरौनी के बाल मोटे, दूर-दूर या भूरे रंग के हों तो अच्छा लक्षण नहीं।

भ्रू (भौंह)-लक्षण

यदि भौं ऊँची उठी हुई और एक-दूसरे से मिली हुई न हों तो अच्छा है। भौं के बाल मुलायम होना चाहिये। यदि भौं आधी टेढ़ी और सूक्ष्म हों तो ऐसी स्त्री सुख पाती है। यदि दोनों भौंहें गोल हों तो सौभाग्य का लक्षण है किन्तु बड़े-बड़े रोयें होने से स्त्री वन्ध्या होती है। जिस स्त्री की भौंहें छोटी, परस्पर मिली हुई हों और भौं के रोम पीलापन लिये हुए हों वह दरिद्रा होती है। 'स्कन्दपुराण' में भी प्रायः इन्हीं गुणों को दोहराया गया है। धनुष की तरह गोलाई लिये हुए मुलायम भौं को अच्छा और मिली हुई या सीधी भौं को निन्दित कहा गया है।

कर्ण (कान)-लक्षण

यदि कान लम्बे और सुन्दर, घुमावदार हों तो अच्छे माने जाते हैं। यदि उनमें नसें निकली हों, टेढ़े-मेढ़े, छोटे, दुबले या पतले हों तो अच्छा लक्षण नहीं होता। 'गरुड़पुराण' के मतानुसार दोनों कान बराबर, मुलामय, कनपटी पर सुन्दर प्रकार से लगे हुए होने चाहिए। 'भविष्यपुराण' के मतानुसार यदि गधे, ऊँट, नेवले या उल्लू की तरह कान हों या कठिन (सख्त) हों तो ऐसे कान वाली स्त्रियाँ दुःख पाती हैं।

तिल, मस्सा, लहसन[1]

जिस स्त्री के कंठ, ओष्ठ, बायें हाथ या कान पर मस्सा या

---

१. विस्तृत फल २५वें प्रकरण में दिया गया है।

तिल हो उसके पुत्र उच्च पदवी प्राप्त करते हैं। यदि भौं के बीच में मस्सा हो तो ऐसी स्त्री बहुत ऊँचा पद प्राप्त करती है। यदि बायें गाल पर लाल मस्सा हो तो सदैव अच्छे-अच्छे भोजन प्राप्त होते हैं। हृदय पर तिल या मस्से का चिह्न हो तो यह भी शुभ है। यदि नाक के अग्र भाग पर तिल हो तो अच्छा लक्षण है। ऐसी स्त्री का विवाह किसी उच्च पदाधिकारी के साथ होता है। किन्तु यदि काला हो तो ऐसी स्त्री अच्छी नहीं होती। यदि गुल्फ (पैर का टखना) पर तिल या मस्से का चिह्न हो तो दरिद्रता का लक्षण है। यदि ललाट पर चमकीला काला तिल हो तो उस स्त्री के पांच पुत्र होते हैं; वह धार्मिक स्वभाव की तथा सौभाग्यवती होती है। स्त्रियों के बाएँ भाग में इन सब चिह्नों को शुभ समझना चाहिए।

भौंरी

यदि नाभि घुमावदार न हो और पीठ पर भौंरी का चिह्न हो तो उसका पति कम जीता है। नाभि में घुमाव होने से पतिव्रता होती है। यदि पैर में दाहिनी ओर भौंरी हो तो अच्छा लक्षण है। नाभि, कान तथा हृदय पर दाहिनी ओर घूमी भौंर अच्छा लक्षण है। यदि कंठ में, सीमन्त या ललाट पर भौंरी हो तो बहुत अशुभ लक्षण है। यदि सिर पर एक या दो भौंरी हों तो भी बहुत अशुभ लक्षण समझना चाहिये। कमर पर भौंरी होने से स्वच्छन्दचारिणी —मनमानी करने वाली; पीठ पर भौंरी होने से विधवा तथा व्यभिचारिणी होती है। यदि दाहिने हाथ में दाहिनी तरफ़ घूमने वाली भौंरी हो तो धन और सौभाग्य का लक्षण है। बायें हाथ में हो तो अशुभ लक्षण।

गन्ध-लक्षण

बिना साबुन, तेल लगाये हुए—यदि शरीर पर कोई भी सुगन्ध युक्त वस्तु न लगाई जाय—तो शरीर से जो स्वाभाविक गन्ध निक-

लती है, उसके विचार से शुभाशुभ लक्षण बताया जाता है। जिस स्त्री के शरीर से अन्न, नीम, दूध, शहद या खून की गन्ध आती हो ऐसी कन्या से विवाह न करे। जिसके शरीर से गो-मूत्र, हड़ताल या और कोई दुष्ट गन्ध आती हो उसके साथ न रहे। जिसके शरीर से चकचून्दर या मछली की गन्ध या और कोई उग्र (तेज़) गन्ध आवे तो उसे छोड़ दे। जिस स्त्री के शरीर से तूम्बी के फूल की सी गन्ध निकले या लाख (चमड़ी) की गन्ध आवे वह गर्भ धारण नहीं करती और दुर्भाग्ययुक्त होती है। जिसके शरीर से चमेली चम्पा, अशोक, बकुल, केवड़ा या कमल की-सी गन्ध निकले वह बहुत भोग भोगती है और बहुत दीर्घजीवी सन्तानों से युक्त होती है। यदि कोई स्त्री देखने में रूपहीन भी हो किन्तु उसके सारे शरीर से कस्तूरी की-सी गन्ध निकले तो बहुत उच्च पदवी प्राप्त करती है।

छाया-लक्षण

स्त्रियों के शरीर में सब अंगों के अतिरिक्त जो एक विशेष लावण्य—कान्ति होती है, उसे छाया कहते हैं। जिसे देखने से नेत्रों को सन्तोष हो और सौभाग्य तथा लक्ष्मी का प्रसाद मालूम हो ऐसी स्त्री शुभ होती है। इसके विपरीत यदि उसे देखने से अशान्ति और उद्वेग हो तो उसे दुष्ट लक्षणा समझना चाहिए।

सत्त्व-लक्षण

जो स्त्री आपत्ति के समय घबरावे नहीं और सम्पत्ति पाकर फूले नहीं, गम्भीरतायुक्त हो—तो सत्त्व का लक्षण है। जिनमें सत्त्व होता है उन स्त्रियों में दया, सत्य, स्थिरता आदि गुण होते हैं। उनमें कुटिलता नहीं होती और प्रायः दूसरों का हित और कल्याण करती हैं।

स्वर-लक्षण

जिनका स्वर वीणा, बांसुरी, हंस, कोकिल या मोर की तरह

हो तो ऊँचे पदाधिकारियों तथा सम्पन्न पुरुषों से उनका विवाह होता है। 'हेमाद्रि' के अनुसार जिस स्त्री का स्वर मेघ, सारस, दुन्दुभि (नगाड़े) आदि की तरह गम्भीर हो तो वह बहुत ऐश्वर्यशालिनी होती है। यदि स्त्री की आवाज़ फूटे काँसे की तरह कर्कश या गधे और कौवे की आवाज़ की तरह कर्ण-कटु हो तो वह स्त्री रोगिणी, व्याधियुक्त होती है। उसे भय और शोक झेलने पड़ते हैं तथा दरिद्रा होती है। 'सामुद्रतिलक' में लिखा है कि जिस स्त्री की वाणी में कठोरता न हो किन्तु दीनता भी न हो, चतुरतायुक्त हो किन्तु कुटिलता (दूसरे को चुभने वाली) न हो, स्निग्धता हो तथा सुनने से सान्त्वना और सन्तोष प्राप्त हो तो ऐसी स्त्री को शुभ लक्षण वाली कहना चाहिए।

गति-लक्षण

जिन स्त्रियों की गति सिंह, गज, हंस, चकवा, गौ (गाय) या बैल की तरह होती है, वे बहुत ऐश्वर्यशालिनी होती हैं। इसके विपरीत यदि कुत्ते, गीदड़ या कौवे की तरह चले तो निन्दनीय समझनी चाहिए। यदि हिरन की तरह चले तो दासी होती है। यदि बहुत शीघ्र चले तो अच्छा चरित्र नहीं होता।

वर्ण-लक्षण

स्वर्ण या कुंकुम की तरह जिनकी शरीर की कान्ति सौंदर्य-युक्त हो तो उत्तम है। यदि श्याम-वर्ण हो और चेहरे पर कान्ति हो या दूब की नई कोंपल के समान सुन्दर श्याम-वर्ण हो तो शुभ है। गौर-वर्ण और श्याम-वर्ण दोनों वर्ण शुभ हैं। यदि स्त्री का रंग काला भी हो किन्तु उसके चेहरे पर चिकनाई और कान्ति हो तो शुभ लक्षण है किन्तु यदि काले रंग के साथ-साथ रूखापन और कान्ति-हीनता हो तो अच्छा लक्षण नहीं।

अन्य लक्षण पुरुष-लक्षण के सदृश समझने चाहिए। यह पहले ही लिखा जा चुका है कि स्त्रियों के शरीर के जो भाग नहीं

देखे जा सकते उनके लक्षण इस पुस्तक में नहीं दिये गये हैं। पैर, पैर की उंगलियाँ, तलुए, रेखा, गुल्फ आदि के लक्षण पृथक् प्रकरण में विस्तारपूर्वक दिये गये हैं। इसी प्रकार मस्तक, केश, ललाट आदि के लक्षण आगे २४वें प्रकरण में दिये गये हैं। सब लक्षणों को अच्छी तरह देखकर, हाथ की रेखाओं से मिलान कर राय कायम करने से सही परिणाम निकाला जा सकता है। देश, काल, पात्र और परिस्थिति का विचार रखना भी परमावश्यक है।

२४वाँ प्रकरण

मनुष्य का सिर

इस विषय में भारतीय शास्त्रों में तो सिद्धान्त मिलते ही हैं परन्तु पाश्चात्य विद्वानों ने भी बहुत विस्तृत खोज की है, इस कारण पहले पाश्चात्य मत ही दिया जाता है। किन्तु यूरोप की स्त्रियों के केश भूरे, सुनहरी या ललाई लिये हुए तरह-तरह के होते हैं। वैसा प्रायः भारतवर्ष की स्त्रियों में नहीं पाया जाता। शरीर का वर्ण (गौर, अति गौर, ललाई लिये हुए) जैसा यूरोप देश के नर-नारियों में होता है, हमारे देश में सम्भव ही नहीं है। इस कारण पाश्चात्य लक्षण-शास्त्र के मूल सिद्धान्तों को भारतीय नर-नारियों पर लागू करते समय उपर्युक्त उचित विचार अवश्य कर लें।

सिर का महत्व

मनुष्य का चरित्र और दिमाग़, उसकी वृत्ति और प्रवृत्ति, ऊहापोह-शक्ति (विचार और तर्क करने की क्षमता), लोभ, क्रोध, मोह, विद्या-प्राप्ति, ज्ञान-संचय की इच्छा, धनिक होने की उत्कंठा और धन-उपार्जन करने की क्षमता आदि प्रायः सभी भाव और भावनाएँ मस्तक के आकार-प्रकार तथा उसके अन्तर्गत विविध ज्ञान-कोषों से विशेष सम्बन्ध रखती हैं। 'मस्तिष्क' हमारी सारी शारीरिक और मानसिक क्रियाओं के संचालन का अधिष्ठाता है और उसी का बाहरी आवरण है 'सिर'।

यदि किसी के सिर की बनावट अच्छी है तो उसमें बहुत से गुण होंगे। यदि 'सिर' की बनावट ही खराब है तो मनुष्योचित गुणों की उसमें बहुत कमी होगी। यदि मध्यम दर्जे का 'सिर' है तो गुण भी मध्यम मात्रा में ही पाये जावेंगे। नीचे एक 'सिर' का चित्र

दिया जाता है । सिर की एक प्रकार की बनावट तो काली रेखा में दिखाई गई है और अन्य दो प्रकार की दानेदार रेखा में ।
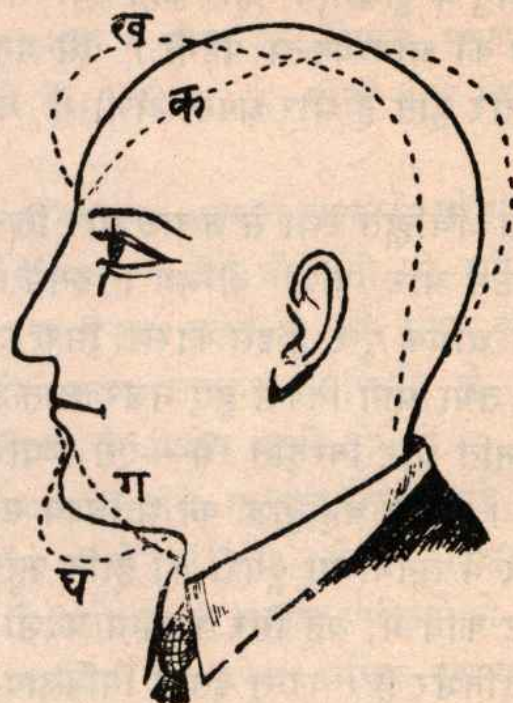
चित्र नं० १२६

काली रेखा में जैसी आकृति दिखाई गई है वैसी ही प्राय: साधारण अच्छी योग्यता के व्यक्तियों के सिर की रूप-रेखा होती है । इसके सब हिस्से यथोचित रूप में हैं। कोई भाग सामान्य से अधिक निकला हुआ और कोई जहाँ जितना पिचका होना चाहिए उससे ज़्यादा पिचका हुआ नहीं है । इस प्रकार के सिर से यही नतीजा निकाला जायेगा कि ऐसा व्यक्ति विश्वासपात्र, योग्य, विचारक्षम, साहसी और सभ्य होगा। ललाट प्राय: सीधा और ऊँचा है। इस कारण ऐसे व्यक्ति को खासा बुद्धिमान कहेंगे ।

अब आप 'क' चिह्नित रेखा से ललाट और सिर का जो आकार दिखाया गया है उस पर दृष्टि दीजिए । बुद्धि-कोष जहाँ मस्तक के अन्दर होते हैं वह स्थान इस आकार में बहुत ही पिचका हुआ है।

इससे यही परिणाम निकाला जायेगा कि ऐसे व्यक्ति के बुद्धि-कोष उन्नत तथा विस्तृत नहीं हैं और यह भाग सामान्य से कम पुष्ट होने के कारण, ऐसा मनुष्य बुद्धिमान नहीं कहा जा सकता। उस को बारंबार समझाने की आवश्यकता पड़ेगी। ऐसे मनुष्य बाल्यावस्था में पढ़ाई में कमजोर होते हैं और अपनी श्रेणी में कमजोर छात्रों में गिने जाते हैं।

अब आप 'ख' चिह्नित रेखा से ललाट और सिर का जो आकार दिखाया गया है उस ओर दृष्टि दीजिये। इसमें बुद्धि-कोषों का स्थान सामान्य से अधिक पुष्ट है इस कारण सिर का अग्र भाग और ललाट उभरे हुए तथा आगे निकले हुए नज़र आते हैं। बुद्धि-कोषों की अत्यधिक उन्नति और विस्तृति से—ऐसे व्यक्ति बहुत अधिक बुद्धिमान होते हैं। उनका वह बुद्धि का आधिक्य सत्कार्य, सदुद्योग नवीन आविष्कार में लगेगा या दूसरों को हानि पहुँचाने में, धोखा देने में या अनिष्ट कार्य में; यह सिर के अन्य प्रदेशों तथा शरीर के अन्य लक्षणों पर निर्भर है। परन्तु इतना निर्विवाद कहा जा सकता है कि ऐसे मनुष्य अत्यन्त बुद्धिमान होते हैं। अत्यन्त बुद्धिमान होने से ही यह नहीं समझ लेना चाहिए कि ऐसे व्यक्ति मिलनसार या खुशमिज़ाज होते हैं। बहुत बार बुद्धिकोषों की अत्यधिक पुष्टि अन्य प्रवृत्ति-कोषों को इतना संकुचित कर देती है कि ऐसे व्यक्तियों में बुद्धि की अधिकता पाई जाने पर भी दया, दाक्षिण्य (चतुरता), प्रेम, सहिष्णुता आदि गुणों की त्रुटियों के कारण उनके साथ रहना भी कष्टप्रद हो जाता है।

सिर का परिमाण—सिर के बड़े और छोटे होने पर ही बुद्धि की प्रखरता, उदारता, दयालुता आदि निर्भर हैं, ऐसा नहीं समझना चाहिए क्योंकि किसी भी वस्तु का 'परिमाण' ही सब कुछ है ऐसा समझना भ्रामक है। 'परिमाण' से अधिक महत्व है 'गुण' का। यदि 'मस्तिष्क' प्रदेश या ज्ञान-कोष पुष्ट हुए परन्तु उनमें 'शक्ति'

या गुण का अभाव हुआ तो केवल 'परिमाण' उस त्रुटि की पूर्ति नहीं कर सकता।

जो वास्तव में महान् पुरुष हैं या हुए हैं उनके सिर बड़े थे लेकिन यह कहना सत्य न होगा कि जितने मनुष्यों के सिर बड़े हैं वे सब महान् भी हैं। महत्ता के तीनों नीचे लिखे हुए 'गुण' होने चाहियें—

(क) **बड़ा परिमाण**—अर्थात् लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई।

(ख) **विशेष वज़न**—जैसे घी पानी की अपेक्षा भारी होता है। एक सोने का टुकड़ा उतने ही बड़े पत्थर के टुकड़े से अधिक भारी होगा उसी प्रकार उत्कृष्ट व्यक्तियों के मस्तिष्क सामान्य व्यक्तियों के मस्तिष्क से विशेष भारी होते हैं।

(ग) **विशिष्टता**—जैसे मलमल, मोटे कपड़े की अपेक्षा बारीक होती है या रेशम के डोरे में सूती डोरे की अपेक्षा विशेष बल और चिकनाई होती है उसी प्रकार महान् व्यक्तियों के ज्ञान तथा प्रवृत्ति-कोष साधारण व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक गुण-युक्त होते हैं।

अतः यदि दो व्यक्तियों के सिर में उपर्युक्त (क) और (ख) गुण यदि समान मात्रा में हों तो जिसके सिर का परिमाण अधिक हो अर्थात् जिसका सिर बड़ा हो उसको अधिक बुद्धिमान कहना चाहिये। सिर के बड़े होने से यही अन्दाज़ा लगाया जाता है कि इसके ज्ञान-कोष बड़े और पुष्ट हैं। विशिष्टता का कुछ अनुमान तो सिर के विविध भागों की उन्नति, अवनति से हो जाता है और कुछ वाणी, मुखाकृति, नेत्र आदि से; जिसका विस्तृत विवेचन पिछले प्रकरणों में किया गया है।

सिर की नाप

बुद्धिमान् तथा विद्वान् पुरुषों के सिर को यदि नापा जाय तो उसकी परिधि २१" (इक्कीस इन्च) से कम नहीं होगी। नापने का तरीका यह है कि एक फीता लेकर सिर के चारों ओर इस

प्रकार लपेटिये कि दोनों कान के ऊपर के सिर का भाग, ललाट और सिर के पिछले हिस्से को छूता हुआ सिर का नाप पूरा आ जावे। जितना नाप आवे उस लम्बाई को फ़ुटे से नाप लीजिये। एक कान से ललाट के ऊपर होते हुए, दूसरे कान तक फ़ीते की लम्बाई यदि १०$\frac{१}{२}$ (साढ़े दस) इंच से कम है और सारे सिर की नाप (जैसा ऊपर नापने का तरीका बतलाया जा चुका है।) यदि २१ इंच से कम है तो ऐसा मनुष्य विद्वान् या विशिष्ट कोटि का बुद्धिमान नहीं होगा। इस परिमाण से छोटे सिर वाले चतुर, परिश्रमी, दूसरों की बातों को समझने की क्षमता रखने वाले, कलाकार, संगीत में निपुण हो सकते हैं। यह भी सम्भव है कि उनकी स्मरण-शक्ति बहुत उच्च कोटि की हो परन्तु बुद्धि की प्रखरता, शक्ति, नवीन आविष्कार की क्षमता या प्रकाण्ड पाण्डित्य ऐसे व्यक्तियों में नहीं मिलेगा।

अमेरिका, कनाडा, जर्मनी, इंगलैंड आदि देशों में २२ इंच सिर की नाप प्राय: अच्छी समझी जाती है। यदि सिर इससे भी बड़ा हो तो अच्छा परन्तु २३ या २४ या २४$\frac{१}{२}$ इंच तक ही सिर का नाप हो तो उत्तरोत्तर अच्छा समझना चाहिये। यदि इससे भी बड़ा सिर हो तो वह बड़प्पन या विशिष्टता का द्योतक नहीं है। किन्तु यह समझना चाहिये कि सम्भवत: कोई रोग है।

जो मनुष्य मूर्ख होते हैं, बहुत बार उनके सिर के परिमाण में तो कोई कमी नहीं होती (अर्थात् उनका सिर काफ़ी बड़ा होता है।) परन्तु या तो आकार ठीक नहीं होता या ज्ञानकोष विस्तृत होते हुए भी उनमें क्षमता या शक्ति का अभाव होता है। परन्तु अधिकतर मूर्ख लोगों के मस्तिष्क होते ही छोटे परिमाण के हैं। यदि किसी व्यक्ति की सिर की नाप १८ इंच से भी कम हो, और मस्तिष्क सिर के पीछे नीची ओर हो तो यही निष्कर्ष निकालना चाहिये कि बुद्धि तथा मस्तिष्क-शक्ति की कमी है।

स्त्रियों के सिर पुरुषों के सिर की अपेक्षा कुछ छोटे होते हैं। यदि साधारण बुद्धि के मनुष्य के सिर का नाप २१ इंच रखा जावे तो स्त्री के सिर का नाप २० इंच समझना चाहिये। बाल्यावस्था में सिर अधिक बढ़ता है। ज्यों-ज्यों अवस्था अधिक होती जाती है सिर के बढ़ने की रफ़्तार धीमी होती जाती है। बहुत से वैज्ञानिकों का कथन है कि १६-२० वर्ष की अवस्था तक जितना सिर को बढ़ना है उतना बढ़ जाता है। परन्तु कभी-कभी ४० वर्ष तक के मनुष्यों के सिर में वृद्धि के लक्षण पाये गये हैं।

सिर के बड़े या छोटे होने के विषय में सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक Macnish का कथन है कि यदि अन्य बातें समान हों तो जिस जाति का सिर बड़ा हो वह उस जाति के लोगों को दबा लेगा जिनका सिर छोटा हो। स्कॉटलैण्ड के निवासियों का सिर बड़ा होता है इसलिये सम्भवत: अंगरेज (इंगलैण्ड के निवासी) उन्हें स्थायी रूप से नहीं दबा-सके। जब भी आप यह देखें कि कोई एक मनुष्य जनता पर बहुत बड़ा प्रभाव रखता है तो आप अवश्य यह देखेंगे कि उस व्यक्ति का सिर बड़ा है। इस सम्बन्ध में Pericles, Miaabeau, Franklin, क्रौमवैल, नेपोलियन आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। ये सब अपने-अपने क्षेत्र में बड़े नेता हुए हैं। नेतृत्व के लिये केवल प्रखर बुद्धि की ही आवश्यकता नहीं है। चरित्र की दृढ़ता, शक्ति, किसी बात को आगे बढ़ाने की लगन और अध्यवसाय की भी आवश्यकता होती है। इन गुणों के लिए यह आवश्यक है कि इनसे सम्बन्धित ज्ञान-कोष भी मस्तिष्क में पूर्ण रूप से विकसित और पुष्ट हों। इन्हीं कोषों की विस्तृति और

Pericles—यह प्राचीन काल में ग्रीक प्रजातन्त्र का प्रभावशाली नेता था।

Mirabeau—फ्रांस की राष्ट्रीय सभा में जब इसका ओजस्वी भाषण होता था तो सभा मन्त्र-मुग्ध हो उसकी सिंह-गर्जना सुनती थी।

Franklin—सुप्रसिद्ध अमेरिकन नेता था।

पुष्टि से मस्तिष्क का आकार बड़ा होता है और प्रायः मस्तिष्क बड़ा होने से उसका बाहरी आवरण—मस्तक भी बड़ा होता है।

कुछ समय पूर्व 'मस्तक विज्ञान परिषद्' के सम्मुख डॉक्टर इलियटसन ने एक जन्मजात मूर्ख का सिर परीक्षा के लिए रखा। इसकी अवस्था १८ वर्ष की थी परन्तु सिर का दायरा (चारों ओर का नाप) १६ इंच था और एक कान से लेकर सिर के ऊपर से नापते हुए—दूसरे कान तक—कुल लम्बाई ७$\frac{3}{4}$ इंच ही थी। मस्तिष्क के ऊपरी भाग का वज़न केवल एक पौंड ७$\frac{1}{2}$ औंस था। और नीचे के भाग का केवल ४ औंस। इस प्रकार कुल मिलाकर १ पौंड ११$\frac{1}{2}$ औंस वज़न था। अब तुलना कीजिए Cuvier के मस्तिष्क से जिसका वज़न था ३ पौंड १० औंस ४$\frac{1}{2}$ ड्राम।

यदि सिर के चारों ओर की नाप (परिधि) १७ इंच से कम हो तो निश्चय यही अनुमान लगाना चाहिए कि मस्तिष्क पूर्ण विकसित नहीं है।

ललाट

सिर की गवेषणा करते समय निम्नलिखित बातों पर विशेष ध्यान रखना चाहिए—

(क) ललाट का केवल चौड़ा और ऊँचा होना ही आवश्यक नहीं है। यह भी आवश्यक है कि सिर के आगे का हिस्सा और ललाट प्रमुख हों। अर्थात् यदि सिर को दो भागों में विभक्त किया जावे (अ) कानों के आगे का भाग और (ब) कानों के पीछे का भाग—तो प्रथम भाग अपेक्षाकृत बड़ा और विशेष उन्नत होना चाहिए।

(ख) ललाट यदि चौड़ा, ऊँचा और गहरा (जैसा ऊपर बताया जा चुका है।) भी है, किन्तु क्या ललाट में सामने की ओर उभार है ?

(ग) कितनी ही बार ललाट में उपर्युक्त गुण होते हैं और ललाट इतना प्रमुख और उन्नत होता है कि मनुष्य के पुष्ट मस्तिष्क

को पर्याप्त रूप में प्रमाणित करता है, किन्तु यदि समान रूप से ललाट उन्नत न हो तो विद्या-सम्बन्धी खोज, सूझ-बूझ, दार्शनिक गवेषणा आदि के गुण तो मनुष्य में आ जाते हैं किन्तु, विचारों को कार्य में परिणत करना और लोक-सफलता आदि नहीं आने पाती। ललाट के किस भाग के उन्नत होने से कौनसा गुण या स्वभाव विशेष मात्रा में होता है यह आगे विस्तारपूर्वक बताया गया है।
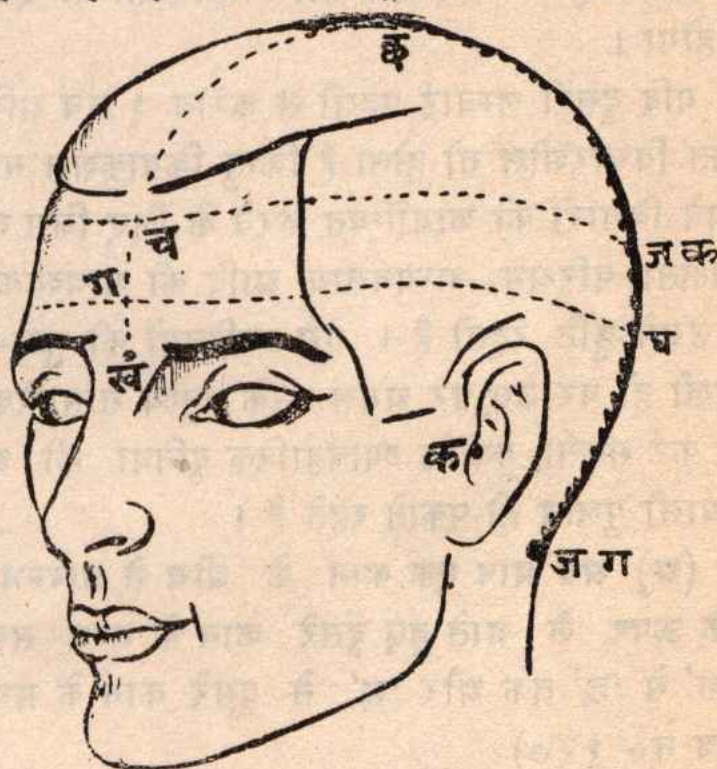
चित्र नं० १२७

नाप

(१) सिर के चारों ओर एक फीते से—'ग' से 'घ' तक नापिये और फिर सिर का चक्कर पूरा करके 'ग' पर वापिस आ जाइये।

(२) इसी प्रकार 'च' से 'ज क' तक नापये और फीते से सिर का चक्कर पूरा करके 'च' पर वापस आ जाइये।

ये दोनों लम्बाइयाँ प्रायः बराबर होनी चाहिएँ। अनुभव से यह ज्ञात होता है कि प्रथम द्वितीय की अपेक्षा कुछ अधिक होती है। इन

नापों से निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं—

(क) यदि प्रथम लम्बाई द्वितीय से आधा या पौन इंच अधिक हो तो ऐसा व्यक्ति व्यापारकुशल और परिश्रमी होगा।

(ख) ये दोनों नाप करीब २२½ इंच हों तो ऐसा व्यक्ति साहित्यिक, अध्ययनशील और विद्वान् होगा।

(ग) यदि यह नाप २३ इंच या अधिक हो तो ऐसा व्यक्ति वैज्ञानिक होगा।

(घ) यदि दूसरी लम्बाई पहली से करीब १ इंच अधिक हो तो ऐसा व्यक्ति विचारशील तो होता है किन्तु क्रियाकुशल नहीं होता। अर्थात् अपने विचारों को कार्यान्वित करने के लिए जिस लोकपटुता, व्यवहार-दक्षता, परिश्रम, अध्यवसाय आदि की आवश्यकता होती है उसकी उसमें त्रुटि रहती है। ऐसे व्यक्तियों की सूझ-बूझ चाहे जैसी अनोखी हो पर उन पर अमल करके मनुष्य सांसारिक सफलता नहीं प्राप्त कर सकता, क्योंकि व्यावहारिक दुनिया की अपेक्षा ऐसे व्यक्ति खयाली पुलाव ही पकाते रहते हैं।

(३) (अ) **अब आप एक कान के बीच से प्रारम्भ कर फीते को सिर के ऊपर ले जाते हुए दूसरे कान के मध्य तक नापिये** (अर्थात् 'क' से 'छ' तक और 'छ' से दूसरे कान के मध्य तक—देखिये चित्र नं० १२७)

(ब) अब **आप 'ख' से 'छ' के ऊपर होते हुए सिर के पीछे की ओर तक—जहाँ सिर गर्दन से मिलता है 'ज ग' तक नापिये।**

ये दोनों लम्बाइयाँ प्रायः समान होनी चाहिए। यदि आध इंच के करीब कम हो तो कोई खास फ़र्क़ नहीं पड़ता। परन्तु इनकी तुलनात्मक विवेचना से निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं—

(१) यदि 'प्रथम' की अपेक्षा 'द्वितीय' करीब आधा इंच अधिक हो तो ऐसे व्यक्ति में बौद्धिक विकास और आदर्शवादिता, महत्वाकांक्षा आदि गुण विशेष होते हैं। प्रबन्ध-पटुता तथा स्वार्थ-

श्री नेहरू   चित्र नं० १२८
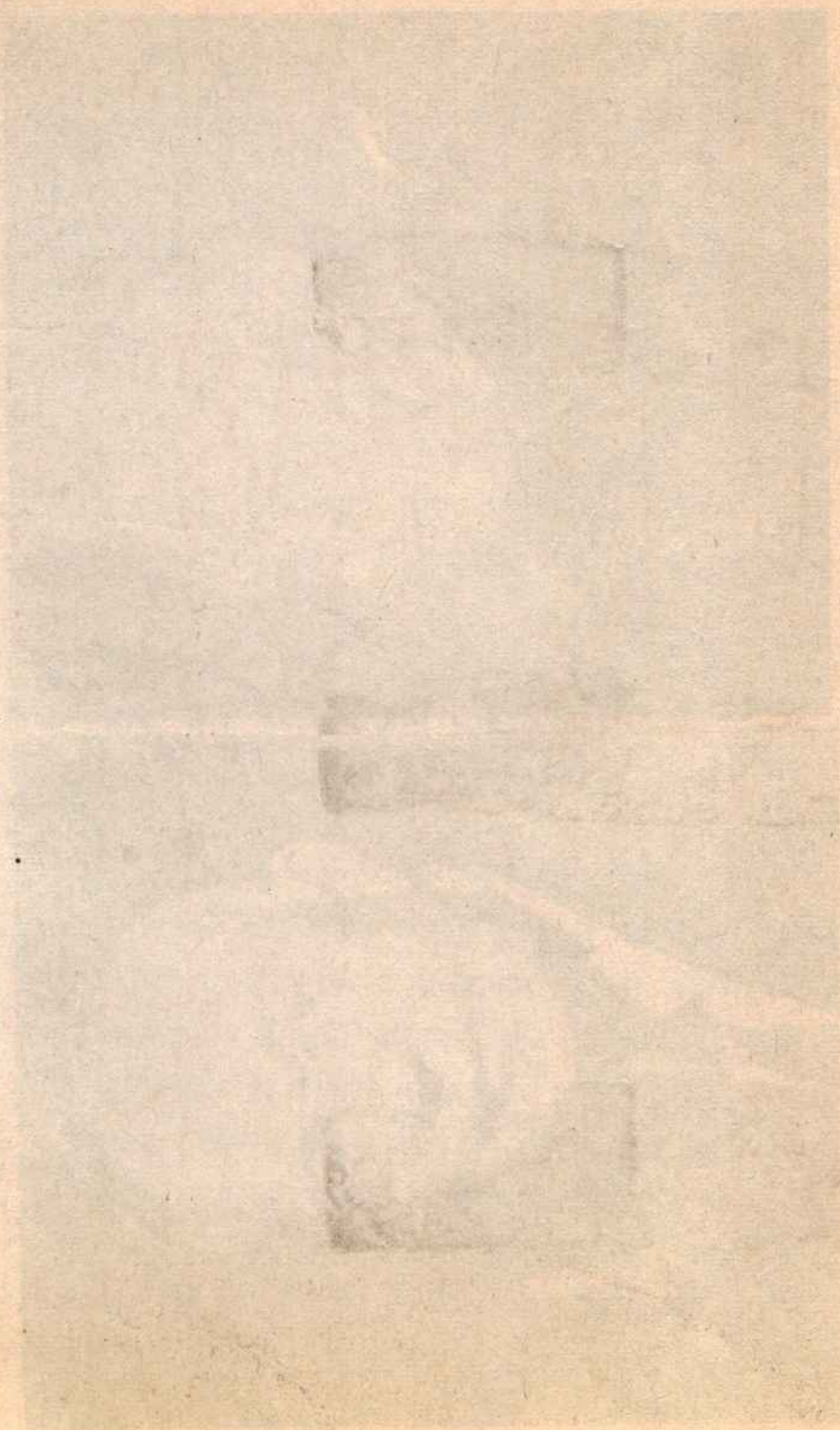
श्री आइजन हावर   चित्र नं० १२९

प्रवृत्ति अपेक्षाकृत कम होती है।

(२) यदि प्रथम की अपेक्षा द्वितीय १ इंच या अधिक हो तो ऐसा व्यक्ति शीघ्र प्रसन्न होने वाला, न्यायप्रिय होता है।

(३) यदि प्रथम की अपेक्षा द्वितीय बहुत अधिक हो (२ इंच या अधिक) तो ऐसे व्यक्ति में इतनी आदर्शवादिता आ जाती है कि उसे किसी के काम से सन्तोष नहीं होता।

(४) यदि द्वितीय की अपेक्षा प्रथम अधिक हो तो सब बातों को गुप्त रखने की प्रवृत्ति, लालच, संग्रहशीलता, दूसरे को नष्ट करने की बुद्धि आदि राजसिक व तामसिक गुण होते हैं। आत्मिक या नैतिक उन्नति की अपेक्षा ऐसे व्यक्ति और सावधानी तथा चतुरता को विशेष महत्त्व देते हैं।

(५) यदि मस्तिष्क का भीतरी विकास अच्छा न हो तो उपर्युक्त (नं० ४ में कथित) राजसिक और तामसिक गुण चोरी, अनाचार आदि की ओर प्रवृत्ति करते हैं।

सिर का आकार

सिर के परिमाण (बड़े या छोटे होने) के सम्बन्ध में ऊपर बताया जा चुका है। परन्तु 'परिमाण' के साथ-ही-साथ 'आकार' का बहुत अधिक महत्त्व है। दोनों में क्या अंतर है यह समझाया जाता है। कोई मिट्टी का ढेला किसी रबर की गेंद से परिमाण में बड़ा हो सकता है किन्तु ढेले का 'आकार' उतना सुन्दर नहीं होगा जितना गेंद का। सिर के आकार से तात्पर्य है कि यह देखना चाहिये कि वह गोल अधिक है या लम्बोतरा— आगे को झुका हुआ है, या पीछे को झुका हुआ—क्रमशः गोलाई लिये है या कुछ दूर तक चपटा फिर एकदम गोल है इत्यादि।

सिर के 'परिमाण' से जो नतीजे निकाले जा सकते हैं—मनुष्य की बुद्धिमत्ता, उदारता, दयाशीलता आदि का जो पता सिर के बड़े या छोटे होने लगता है इसका पर्याप्त विवरण पिछले पृष्ठों में दिया जा

चुका है। देखिये श्री नेहरू जी तथा जनरल आइज़न हावर का चित्र।

किन्तु सिर के आकार का भी बुद्धि तथा मानसिक शक्ति से बहुत अधिक सम्बन्ध है। 'आकार' से स्वभाव तथा 'चरित्र' का भी काफ़ी पता चलता है। मस्तिष्क के अन्दर का स्नायुजाल जब परिष्कृत और उच्चकोटि का होता है तो सिर का आकार भी भिन्न होता है। जिस प्रकार सफ़ेदा या दशहरी आम के आकार से उनके भीतर के गूदे के स्वाद और सुगन्धि का पता लगा सकते हैं उसी प्रकार सिर के आकार-मात्र से यह पता लग जाता है कि मनुष्य बुद्धिमान है या मूर्ख, तथा इसका झुकाव किस ओर है।

इसी पृष्ठ पर ६ सिर के चित्र दिये जा रहे हैं। जिस व्यक्ति का सिर जितना बड़ा तथा जिस आकार का था उसके सिर का चित्र भी उसी अनुपात से दिखाया गया है इसलिये यह नहीं समझना चाहिए कि किसी का सिर छोटा था उसे बड़ा करके दिया गया है या किसी का सिर बड़ा था उसे चित्र में छोटा करके दिखाया गया है। (देखिये चित्र नं० १३०)

इन छहों सिरों में प्रथम सिर वाला सबसे अधिक बुद्धिमान का चित्र है। इसके बाद बुद्धिमान द्वितीय सिर वाला है। इस प्रकार क्रमशः समझना चाहिए। छठे सिर वाला सबसे कम बुद्धि वाले का
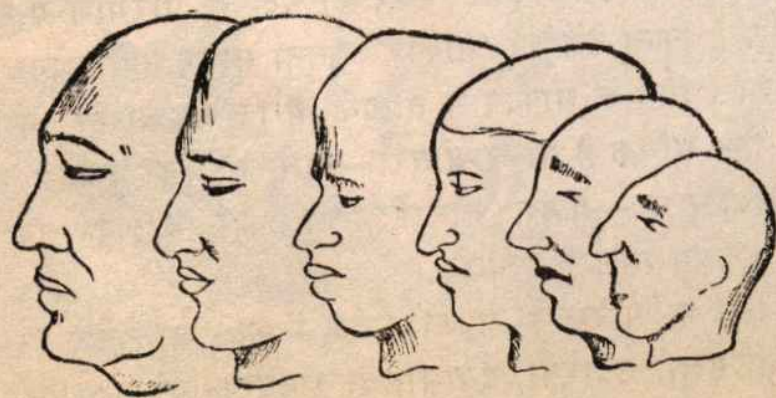
चित्र नं० १३०

है। यहाँ 'परिमाण' के साथ-साथ ललाट की ऊँचाई तथा सिर का ऊपर की ओर जो चढ़ाव है उस ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

इन चित्रों को सदैव अपने ध्यान में रखने से जब आप किसी मनुष्य की ओर देखेंगे तो आपका ध्यान न केवल सिर के बड़ेपन या छोटेपन पर जावेगा किन्तु आप यह भी अवश्य देख लेंगे कि उसका सिर—ललाट भाग—कितना ऊँचा तथा आगे निकला हुआ है और ऊपर की तरफ़ चढ़ाव कैसा है।

सिर के विविध बाह्य भागों के सम, विषम, उन्नत या अवनत होने से फल में विभिन्नता

सिर के किस भाग के उन्नत और पुष्ट होने से कौन से गुण या प्रवृति विशेष मात्रा में है यह निम्नलिखित चित्रों से स्पष्ट होगा। किस स्थान से क्या विचार करना यह नीचे बताया जाता है—

(१) **कामवासना**—यह उन्नत होने से कामवासना आवश्यकता से अधिक होती है।

(२) **वात्सल्य भाव**—अपनी संतान के प्रति प्रेम। यह उन्नत होने से मनुष्य अपनी संतानों को सामान्य से अधिक प्रेम करता है।

(३) **अपने घर तथा देश के प्रति प्रेम**—कुछ लोग 'मकानी' अर्थात् अपने मकान में ही अधिक रहना पसन्द करते हैं। कुछ 'सैलानी'—मकान से बाहर सैर-सपाटे में अधिक रुचि रखते हैं। जिन के मस्तक का यह भाग अधिक उन्नत और पुष्ट होता है वे बाहर सैर की अपेक्षा अपने घर में ही रहना पसन्द करते हैं।

(४) **मित्रता की प्रवृत्ति**—लोगों से प्रेम करना, मिलनसारी। जिनका यह भाग उन्नत हो उनके बहुत मित्र होते हैं। वे मित्रों के लिए कुछ कष्ट उठाने को भी तैयार होते हैं।

(५) **युद्धप्रियता**—ऐसे व्यक्ति झगड़ा हो जाने पर शांत नहीं होते। उनको आप दबाकर नहीं रख सकते। जितना दबावेंगे उतनी ही तीव्र प्रतिक्रिया उनके मन में होगी। कठिनताओं से इनकी बदला
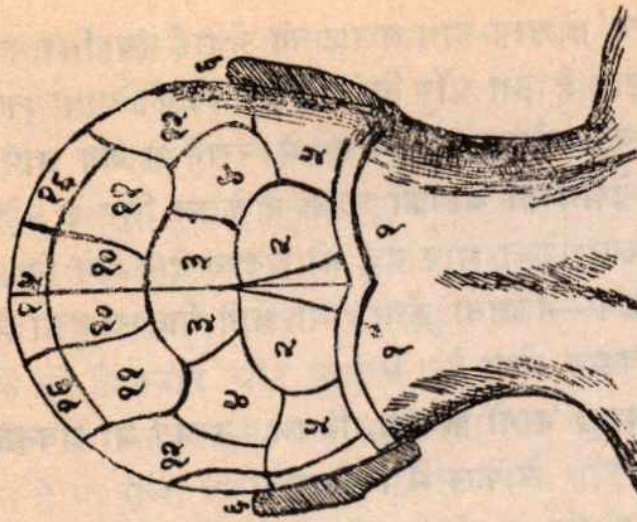
चित्र नं० १३१
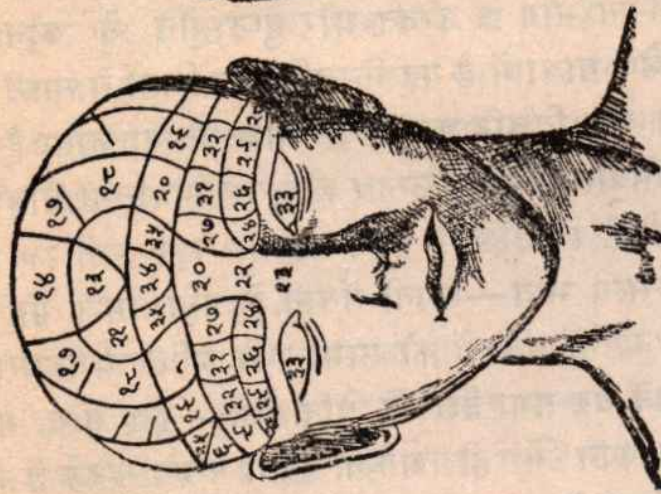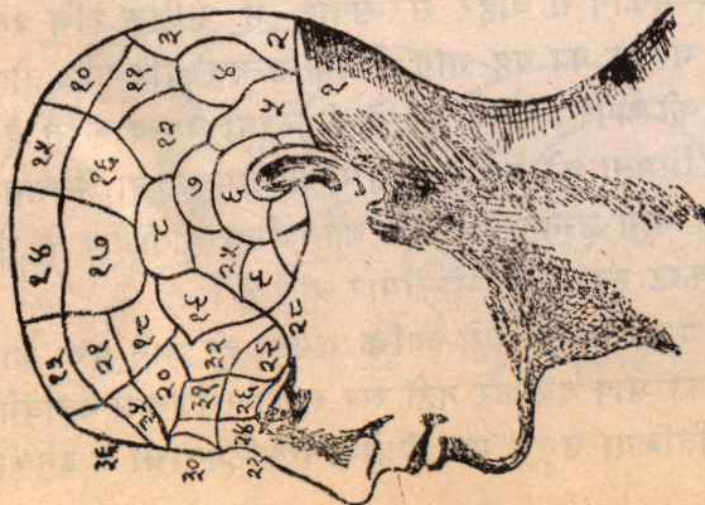
चित्र नं० १३२

चित्र नं० १३३

लेने की भावना कम नहीं होती किन्तु बढ़ती है। मुकद्दमा शुरू हो जायेगा तो चाहे घर-बार बिक जावे लेकिन सुप्रीम कोर्ट तक लड़ेंगे।

(६) **नष्ट करने की प्रवृत्ति**—ऐसे लोग दूसरों को नुकसान पहुँचाने में नहीं झिझकते। पुराना मकान होगा तो उसे पूरा तुड़वा कर नया बनावेंगे। घर में कागज़ फैले होंगे, तो तुरन्त रद्दी कागज़ छाँटकर फाड़ देंगे या जला देंगे। पेड़ों को कटवा देंगे। मैदानों को सफ़ा कर देंगे।

(७) **मन के विचारों को गुप्त रखने की इच्छा**—जिसके मस्तिष्क का यह भाग उन्नत हो वह अपने विचारों को अकारण भी दूसरे पर प्रकट नहीं करेगा। चाहे वह कितना भी मिलनसार और हँसमुख हो, आप उसके मन का भेद नहीं पा सकेंगे। यदि मकान बनवायेगा तो उसमें 'तहखाना' या गुप्त अलमारियाँ अवश्य बनवायेगा। छोटी चीज़ को भी छिपाकर या ताले में रखेगा। उसके पास कितना रुपया है, यह शायद उसके भाई, बन्धु, स्त्री, पुत्र आदि भी न जान सकेंगे।

(८) **लोभ तथा संग्रहशीलता**—यह भाग उन्नत होने से मनुष्य में लोभ की मात्रा विशेष होती है। ऐसे व्यक्ति द्रव्योपार्जन के लिए सदैव प्रयत्नशील रहते हैं और कष्ट को कष्ट नहीं गिनते। जो भी चीज़ देखेंगे उसे ले लेना चाहेंगे—अमुक वस्तु पर अपना अधिकार हो जावे और वह अपनी हो जावे, यह उनकी बलवती इच्छा होती है। आवश्यकता न होने पर भी वह अपनी सम्पत्ति, मकान, जायदाद आदि बढ़ाते रहते हैं और आख़िर तक—मृत्यु के पहले दिन तक—अपने पुत्रों का भी अपनी सम्पत्ति पर अधिकार नहीं देना चाहते।

(९) **मस्तिष्क की सृजनात्मक प्रवृत्ति**—यह भाग उन्नत और पुष्ट होने से मनुष्य नयी वस्तु की सृष्टि में रुचि रखता है। यदि मस्तक के अन्य भाग से मनुष्य विद्वान् प्रतीत हो तो वह सृजनात्मक

प्रवृत्ति पुस्तक-निर्माण आदि का रूप धारण करेगी। यदि लोभ तथा संग्रहशीलता विशेष हो तो जातक मकान आदि निर्माण कराता है। व्यापारिक या व्यावसायिक प्रवृत्ति का संयोग होने से कल-कारखाने आदि बनाने में लगा रहता है।

(१०) **आत्म-सम्मान**—इस भाग के नीचे मस्तिष्क की वे शिराएँ तथा ज्ञान-कोष हैं जिनसे आत्म-सम्मान की भावना दृढ़ होती है। यदि अधिक उन्नत हो तो जातक अभिमानी होता है।

(११) **आत्म-प्रशंसा**—यह भाग पुष्ट और ऊँचा होने से जातक आत्म-प्रशंसा का भूखा रहता है—वह चाहता है कि जो काम उसने किया हो वह साधारण हो या विशिष्ट—लोग उसकी प्रशंसा करें। जिन अफ़सरों या अधिकारियों के मस्तक का यह भाग बहुत उन्नत हो उनकी चापलूसी मात्र करने से आप उनसे अपना कार्य सिद्ध करा सकते हैं।

(१२) **शंकाशीलता**—संदेह करने की आदत। इस भाग के नीचे स्नायुमण्डल का वह भाग है जो विशेष पुष्ट और सक्रिय होने से मनुष्य आगा-पीछा सोचता रहता है—नवीन काम करने में या नवीन व्यक्ति को नौकर रखने में सोचता है कि कहीं घाटा न लग जाय या आदमी धोखा न दे दे। जिनका यह भाग साधारण उन्नत हो उनमें यही शंकालुता दूरदर्शिता बन गुण सिद्ध होती है—किन्तु इस भाग का अत्यन्त विकास होने से सदैव औरों के कार्य तथा व्यवहार में शंका होने से मनुष्य दूसरों का विश्वास नहीं करता और शक्की दिमाग़ या वहमी होने से व्यापारिक कार्य में सफलता प्राप्त नहीं होती। अत्यन्त अवनत या नीचा होने से लोग सच्चे तथा झूठे दोनों प्रकार के लोगों का विश्वास कर लेते हैं और धोखा खाते हैं।

(१३) **दयालुता**—मस्तक के इस भाग के नीचे मस्तिष्क की वे पेशियाँ जिनमें दया तथा उपकार करने की भावना का केन्द्र

रहता है। यह भाग पुष्ट होने से मनुष्य दूसरों के संग दयालुता तथा उपकार करता है।

(१४) **श्रद्धा**—शास्त्र, देवता, गुरु या अन्य आदरणीय पूज्य-जनों के प्रति जो सम्मान की सम्भावना होती है उसका केन्द्र इस स्थान के नीचे है। संसार की दृष्टि में या पुलिस के डर से राज-नीतिक नेताओं का लोग सम्मान चाहे कर लें किन्तु वास्तव में 'श्रद्धा' भाग जब तक पुष्ट न हो, मनुष्य की हृदय से श्रद्धा अन्य व्यक्ति में नहीं हो सकती।

(१५) **दृढ़ता**—जो ऊपर श्रद्धा-भाग दिखाया गया है ठीक उसके ऊपर जो भाग है उससे मनुष्य की विचार की दृढ़ता या अस्थिरता प्रकट होती है। कुछ लोग अपनी बात पर, अपने विचार पर दृढ़ रहते हैं परन्तु बहुत से चाहते हैं कि दृढ़ रहें किन्तु अपनी कमज़ोरी से दृढ़ रहने नहीं पाते। यद्यपि वे जानते हैं कि 'दृढ़' रहने में उनका अपना ही लाभ है किन्तु वे अपनी प्रकृति से लाचार होते हैं। यह भाग उन्नत होने से दृढ़ता होती है, अवनत होने से विचारों में अस्थिरता—ऐसे व्यक्ति ढुलमुल-यकीन होते हैं।

(१६) **न्यायप्रियता**—ऊपर दृढ़ता-प्रदर्शक मस्तक का भाग बताया गया है। उसके दोनों ओर यदि मस्तक-भाग उन्नत हो तो मनुष्य कर्त्तव्यपरायण, न्यायप्रिय होता है। उसमें ईमानदारी का भाव विशेष जागरूक रहता है। उसके कार्य की देखरेख करने की आवश्यकता नहीं। उसकी आत्मा इतनी बलवान् और जागरूक रहती है कि वह उचित-रीति से अपना कर्त्तव्य सम्पादन करता है।

(१७) **आशावादिता**—कुछ मनुष्य स्वभाव से ही आशावादी होते हैं और कुछ निराशावादी। आशावादी वे हैं जो भविष्य को उज्ज्वल समझते हैं। उनके मत से कठिनाइयाँ दूर हो जायेंगी उलझनें सुलझ जायेंगी—अपने कठिन परिश्रम से या भगवद्-अनु-ग्रह से प्रतिकूल परिस्थिति को भी वे अनुकूल बना लेंगे। ऐसी जिन

की भावना होती है उन्हें आशावादी कहते हैं। यह भाग जिनका उन्नत होता है वे आशावादी होते हैं। इसके प्रतिकूल जिनके मस्तक का यह भाग धँसा हुआ होता है वे निराशावादी होते हैं। उत्तम परिस्थिति में भी घबराये रहते हैं कि भविष्य में न जाने क्या हो—कल्पित तथा अकल्पित घटनाओं की आशंका से उन्हें भविष्य में निराशा-ही-निराशा नज़र आती है।

(१८) **धार्मिक विश्वास**—जिन व्यक्तियों का सिर का यह भाग विशेष उन्नत हो उनमें धार्मिक विश्वास अधिक मात्रा में होता है। अत्यधिक उन्नत होने से अन्ध-विश्वास भी हो जाता है।

(१९) **आदर्शवादिता—सौंदर्यप्रियता**—जिनका यह भाग उन्नत होता है वे आदर्श सौंदर्य-प्रेमी होते हैं। काव्य, कला, संगीत, साहित्य सभी में वे सौंदर्य का उत्कृष्ट रूप देखना चाहते हैं। इनकी सौन्दर्यप्रियता वास्तविक होती है, वासनामूलक नहीं।

(२०) **हँसी-दिल्लगी का शौक**—मज़ाकिया प्रवृत्ति तथा मसखरापन—जिनका यह भाग उन्नत होता है उनमें उपर्युक्त प्रवृत्ति अधिक पायी जाती है। वे हाज़िर-जवाब भी होते हैं।

(२१) **नकल करने की आदत**—यह भाग पुष्ट होने से दूसरे की नकल करने की प्रवृत्ति होती है! यदि विद्वत्ता आदि के अन्य विशिष्ट लक्षण हों तो ग्रन्थकारिता, मशीन-निर्माण आदि में अन्य लोगों के ग्रन्थ किंवा मशीन आदि का अनुसरण जातक करता है। यदि विद्वत्ता आदि के लक्षण न हों तो दूसरों की नकल कर मज़ाक उड़ाना तथा चुहलबाज़ी करना—यही आदत जातक में पायी जाती है।

(२२) **वस्तु-निर्देशता—पृथक् करण**—यदि यह भाग उन्नत हो तो विश्लेषणात्मक बुद्धि प्रबल होती है। संयुक्त वस्तुओं या विचार को अलग-अलग कर जातक उलझी हुई गुत्थियों को सुलझाने में सफल होता है।

(२३) यह भाग पुष्ट होने से मनुष्य को बहुत काल पहले भी देखे हुए आदमियों या वस्तुओं का अच्छी तरह स्मरण रहता है। पुस्तक के श्लोक या कविता या गद्यांश याद रखना भिन्न बात है और लोगों या वस्तुओं का स्वरूप याद रखना भिन्न। ऐसे जातक एक बार देखे हुए लोगों को तुरन्त पहचान लेते हैं और वस्तुओं की—आकार के दृष्टिकोण से परख भी अच्छी होती है।

(२४) कौन सी चीज़ कितनी लम्बी या कितनी चौड़ी थी—इस सम्बन्ध में स्मरण-शक्ति तथा परखने की शक्ति—इस स्थान के उन्नत होने से होती है।

(२५) यह भाग पुष्ट होने से जातक वस्तु को छूकर या हाथ में लेकर उसके वज़न का अनुमान अच्छी तरह लगा सकता है। ऐसे जातक जल्दी घबराते नहीं।

(२६) यह भाग बहुत अच्छा हो (पूर्ण उन्नत तथा सुन्दर हो) तो जातक 'रंग' का परिज्ञान भली प्रकार कर सकता है। प्रायः साधारण आदमी 'रंग' की उतनी बारीकियों में नहीं जाता। किन्तु कलाकार या जो विविध रंग या 'शेड' के कपड़े मिलों में बनवाते हैं 'रंग' तथा उसके प्रभाव के विशेष पारखी होते हैं। रत्न-परीक्षक भी ज़रा से रंग के अन्तर से रत्नों की कीमत एकदम कम या ज़्यादा आँकते हैं।

(२७) इस भाग के नीचे वे स्नायुपेशियाँ हैं जिनके विशेष सक्रिय होने से जातक यात्रा करना पसन्द करता है और भ्रमणशील होता है।

(२८) इस भाग के उन्नत होने से मनुष्य किसी वस्तु का मूल्यांकन अच्छी तरह कर सकता है। इसके अतिरिक्त हेतु तथा तर्क की बुद्धि अच्छी होती है।

(२९) इस भाग के नीचे वे स्नायुपेशियाँ हैं जिनसे मनुष्य सुव्यवस्था पसन्द करता है और उसके विचारों, कार्यों तथा व्यव-

हार की वस्तुओं में कायदा, सफ़ाई तथा सुव्यवस्था नज़र आती है।

(३०) इस भाग के उन्नत तथा पुष्ट होने से प्राचीन घटनाओं की स्मृति अच्छी होती है।

(३१) इस भाग के पुष्ट होने से किस समय क्या बात हुई थी—तथा अन्य समय-सम्बन्धी बातों का अनुमान करने में जातक कुशल होता है।

(३२) इस भाग के नीचे वे स्नायुपेशियाँ हैं जिनके उन्नत होने से जातक गान व वाद्य में कुशल होता है तथा भिन्न-भिन्न रसों तथा तालों का सूक्ष्म ज्ञान और उनमें विश्लेषण करने की विशेष योग्यता होती है।

(३३) यह नेत्रों के ऊपर मस्तक का भाग है। जिनका यह भाग पुष्ट हो वे नयी भाषा सीखने में विशेष पटु होते हैं। कई भाषाओं के पंडित होते हैं।

(३४) इस भाग के नीचे वे स्नायु हैं जिनके पुष्ट तथा सक्रिय होने से व्यक्ति भिन्न-भिन्न विषयों का विश्लेषण तथा तुलनात्मक विवेचन एवं आलोचना करने में विशेष क्षम होता है।

(३५) इस भाग का सम्बन्ध दार्शनिक अनुसंधानों से है। यह उन्नत होने से जातक दर्शन-शास्त्र का विशेष अध्ययन करता है।

(३६) यदि आँख के नीचे की हड्डी कुछ उठी हुई हो तो विविध भाषाओं को याद रखने की क्षमता (स्मरण-शक्ति) विशेष होती है।

(३७) नं० (१०) तथा नं० (३) के बीच का स्थान उन्नत हो तो 'एकाग्रता' की विशेष शक्ति होती है।

(३८) कनपटी के पास का यह भाग उन्नत हो तो खाने-पीने का बहुत शौक होता है। ऐसे जातक को भूख (सच्ची या झूठी) बहुत लगती है, जिह्वा-लोलुपता की पूर्ति के लिये विशेष उत्सुक रहता है।

'सिर'—भारतीय मत

पाश्चात्य वैज्ञानिकों ने शरीर के अन्य अंगों की अपेक्षा सिर का अध्ययन विशेष किया है इसलिये हाथ को छोड़कर अन्य अंगों की अपेक्षा 'सिर'-सम्बन्धी अध्ययन का जितना साहित्य पाश्चात्य देशों में उपलब्ध होता है उतना हमारे शास्त्रों में नहीं। हमारे यहाँ अनेक शरीर-अंगों में 'सिर' भी एक प्रधान अंग है—यह विचार कर सूत्र-रूप से थोड़े में बहुत बता दिया है। 'भविष्य पुराण' का वचन है—

"उच्चैरनिम्नं तु शिरः श्लक्ष्णं संहतमेव च।
छत्राकारं नरेन्द्राणां गवाढ्यं मंडलं स्मृतम् ॥"

ऊँचा, नीचा नहीं, चिकना, दृढ़, छत्राकार (छतरी की तरह का चारों ओर बराबर गोलाई लिये—लंबोतरा नहीं) सिर, श्रेष्ठ पुरुषों का होता है। जिनका शिर मंडलाकार होता है उनके पास गो-सम्पत्ति (गाय, बैल, बछड़ा) विशेष होती है। पहले गो-सम्पत्ति कृषि, धन-धान्य, समृद्धि का द्योतक था। अर्वाचीन समय में इसका अर्थ धन-सम्पत्ति युक्त करना चाहिये।

यदि सिर विषम हो (बेढंगे तौर पर ऊँचा-नीचा) तो दरिद्रता प्रकट करता है। यदि अन्दाज़ से बहुत बड़ा हो तो भी मनुष्य दुःखित रहता है। हाथी के कुंभ (सिर का एक भाग) की तरह परस्पर अच्छी तरह जुड़ा हुआ चारों ओर एक-सी क्रमिक ढाल वाला सिर जिसका होता है वह धनी और भोगयुक्त होता है। जिसका सिर चपटा हो उसके माता-पिता दीर्घायु नहीं होते अथवा उसको माता-पिता का किसी भी कारण से पूर्ण सुख नहीं प्राप्त होता। यदि घड़े की तरह सिर हो तो यात्रा बहुत करता है। यदि सिर नीचा हो (अर्थात् ऊपर की ओर उभार न हो) तो अनर्थ का कारण

होता है। अर्थात् ऐसा मनुष्य दरिद्र होता है और आपत्तियों में फँसा रहता है—

"विषमं तु दरिद्राणां शिरोदैर्घ्ये तु दुःखिता।
गज कुंभनिभं सक्तं समं सर्वत्र भोगिनः॥
चिपिटं तु शिरो यस्य हन्यात् हि पितरौ नरः।
घटाकृति शिरोऽध्वान मसकृत्सेवते नरः॥
निम्नं शिरोऽनर्थदं स्यान्नराणामृषभोत्तम॥"

वराह मिहिराचार्य ने भी 'बृहत्संहिता' में लिखा है कि घड़े की-सी आकृति का सिर वाला व्यक्ति सदैव यात्रा करने की इच्छा रखता है और जो 'द्विमस्तक' हो, जिसका मस्तक देखने में ऐसा लगे कि दो मस्तक मानो जुड़े हुए हैं—वह व्यक्ति पाप-कर्म करने वाला और निर्धन होता है।

यहाँ यह बताना आवश्यक है कि 'द्विमस्तक' से क्या तात्पर्य है। जब सिर की गोलाई और ऊँचाई समान रूप से चारों ओर होती है तो वह सुन्दर मस्तक प्रतीत होता है किन्तु ऊपर का भाग दो जगह से अधिक ऊँचा हो या आगे के सिर के अनुरूप पीछे का भाग न हो या बीच से विभाजित हो तो ऐसा प्रतीत होगा कि दो अलग-अलग आकार और परिमाण के सिर के आधे-आधे भाग लेकर जोड़ दिये गये हैं। ऐसे सिर वाले व्यक्ति को 'द्विमस्तक' कहते हैं।

हाथी के 'कुंभ'-सदृश सिर और 'घट'—घड़े के सदृश सिर में क्या अन्तर है यह बताना भी आवश्यक है। हाथी के सिर के दो भाग होते हैं प्रत्येक भाग 'कुंभ' कहलाता है। यह 'घड़े' की तरह होता है इसलिये इसे 'कुंभ' कहते हैं क्योंकि 'कुंभ' का अर्थ है 'घड़ा', तब 'कुंभ' और 'घट' में क्या अन्तर है कि शास्त्रकारों ने दोनों तरह के सिर का पृथक्-पृथक् फल निर्देश किया? प्रथम अन्तर यह है कि हाथी का कुंभ उलटे घड़े की तरह होता है। दूसरा अन्तर

है कि हाथी के कुंभ में ढलाव क्रमशः होता है। 'घट' में अधिक।

"घट मूर्द्धा चाध्वरुचि द्विमस्तकः पापकृत् धन परित्यक्तः।"

(बृहत्संहिता)

"धन विरहितो द्विमौलिः पापरतो मीन मौलिरति दुःखी।
अध्वरुचिर्घट मौलिः धननत मौलिः सदानिन्द्यः॥"

(सामुद्रतिलक)

मछली की तरह जिसका सिर हो वह अति दुःखी होता है। आगे की ओर जिसका सिर झुका हो वह भी अच्छा नहीं।

लंका देश के प्राचीन विद्वान् श्री अनवमदर्शी के मतानुसार यदि सिर दोनों ओर विभाजित दिखाई दे—जैसे हाथी के सिर पर दोनों ओर 'कुंभ' होते हैं तो जातक परस्त्रीगामी होता है—

"द्विधा विभिन्ना द्विप कुंभ तुल्यं।
शिरो भवेदन्य वधूरतानाम्॥"

सिर का परिमाण

ठोड़ी से लेकर नाक, ललाट, सिर के ऊपर फीते को ले जाकर जहाँ सिर के बाल पीछे समाप्त होते हैं, वहाँ तक नापिये। यह नाप ३२ अँगुल हो तो सिर श्रेष्ठ है, यदि इससे न्यून हो तो बड़प्पन की निशानी नहीं। एक कान से दूसरे कान तक १८ अँगुल लम्बाई होनी चाहिये। प्रत्येक मनुष्य को स्वयं के अंगुल से नापना चाहिये। मध्यमा उंगली के मध्य पर्व की चौड़ाई को एक अँगुल समझना चाहिए—

"आचिबुक पश्चिम कचप्रान्तं द्वात्रिंशदङ्गुलो मूर्धा।
कर्णद्वयस्य मध्ये पुनरष्टाधिक दशांगुलिकः॥"

स्त्रियों का सिर

जिस स्त्री के सिर का घेरा लम्बाई से दुगुना और 'ललाट' से तिगुना हो या हाथी की तरह सिर हो वह उत्तम है। ललाट कितना लम्बा है—इसे एक फीते से नापिये। फिर कान के ऊपर से सिर

को चारों ओर से नापिए। यदि सिर के चारों ओर की नाप, ललाट की लम्बाई से तिगुनी हो तो यह प्रशस्त है।

'स्कन्द पुराण काशीखंड' में लिखा है कि यदि स्त्री का सिर हाथी के 'कुंभ' की तरह गोलाई लिये हो तो सौभाग्य और ऐश्वर्य का सूचक है। जिसका स्थिर 'स्थूल' हो वह विधवा होती है तथा जिसका सिर दीर्घ हो वह दासी की तरह घर का काम परिश्रमपूर्वक करने में ही अपना जीवन बिताती है। चारों ओर बराबर उन्नत सिर शुभ लक्षण है। यदि सिर विशाल हो तो भी दुर्भाग्यसूचक है। 'गरुड़ पुराण' के मतानुसार स्त्रियों का सिर 'सम' होना अच्छा है। इसके विपरीत यदि 'विषम' हो (बीच-बीच में कहीं निकला हुआ ऊँचा-नीचा) तो यह अच्छा नहीं—

> "द्विगुणं परिणाहेन ललाटात् त्रिगुणं च यत्।
> शिरः प्रशस्तं नारीणां सुधन्या हस्ति मस्तका ॥
> गजकुंभ निभोवृत्तः सौभाग्यैश्वर्य सूचकः।
> स्थूल मूर्द्धा च विधवा दीर्घशीर्षा च बन्धकी ॥
> विशालेनापि शिरसा भवेद्दौभग्य भाजनम् ॥"

पुरुषों के 'केश'

सिर के बालों को केश कहते हैं यदि पुरुषों के सिर के केश, शरीर के रोम, या दाढ़ी-मूँछ के बाल रूखे, मोटे, कड़े, चुभने वाले, फटे[1] या भूरे हों तो ऐसे व्यक्ति दुःखित रहते हैं—अर्थात् धनवान सौभाग्यशील नहीं होते। बहुत घने बालों की अपेक्षा कुछ कम घने हों तो अधिक प्रशस्त है। केशों का भ्रमर के समान श्याम वर्ण, सुन्दर चिकनाई लिये हो तथा मृदुता सौभाग्य का लक्षण है ऐसा 'भविष्यपुराण' का वचन है—

१—फटे से तात्पर्य है अग्रभाग में दो शाखायुक्त।

वराहमिहिर का भी मत है कि—

"एकैक भवैः स्निग्धैः कृष्णैराकुंचितैरभिन्नाग्रैः ।
मृदुभितन्वाति बहुभिः केशैः सुखभाक् नरेन्द्रो वा ।।
बहुमूल विषम कपिलाः स्थूल स्फुटिताग्र परुष ह्रस्वाश्च ।
अति कुटिलाश्चातिघनाश्च मूर्द्धजा वित्तहीनानाम् ।।"

अर्थात् एक रोमकूप में एक ही बाल होना, स्निग्धता (चमक और मुलायम होना), कोमलता, कृष्ण वर्ण (बिलकुल स्याह) और बहुत घने न होना सुखी और श्रेष्ठ पुरुष का लक्षण है। यदि एक ही जड़ से बहुत से बाल निकलें, बालों में सफ़ेदी लिये हुए भूरापन हो, मोटे हों, आगे से छिदे (दो शाखा वाले), सख्त और छोटे हों, अत्यन्त कुटिल (ऐसे घुँघराले कि छल्ले-छल्ले से पड़ जावें), या अत्यन्त सघन हों तो वित्तहीनता का लक्षण है। ऐसे पुरुषों के पास लक्ष्मी स्थिर नहीं होती।

स्त्रियों के केश

'गरुड़ पुराण' में लिखा है कि काले, चिकने, मुलायम और आगे से कुंचित होने वाले केश यदि स्त्रियों के हों तो शुभ है। 'भविष्य पुराण' का भी मत है कि सूक्ष्म, कृष्ण, मृदु, स्निग्ध तथा आगे से कुछ मुड़ने वाले केश लक्ष्मी और सौभाग्य के सूचक हैं। इससे विपरीत यदि मोटे, भूरे, कर्कश, रूखे केश हों तो क्लेश और शोक देने वाले होते हैं। 'स्कन्द पुराण काशीखंड' में लिखा है—

"केशा अलिकुलच्छायाः सूक्ष्माः स्निग्धाः सुकोमलाः ।
किञ्चिता कुञ्चिताग्राश्च कुटिलाश्चाति शोभनाः ।।
परुषा स्फुटिताग्राश्च विरलाश्च शिरोरुहाः ।
पिंगला लघवो रूक्षा दुःख दारिद्रच बान्धवाः ।"

पुरुषों के केश विरल होना गुण है किन्तु इसके विपरीत स्त्रियों के केश का सघन होना गुण है।

पुरुषों का ललाट

"ललाटेनार्ध चन्द्रेण भवन्ति पृथिवीश्वरा: ।
विपुलेन ललाटेन महानरपतिः स्मृतः ।
श्लक्ष्णेन तु ललाटेन नरो धर्मरतस्तथा ।।"
(भविष्य पुराण)

यदि पुरुष का ललाट अर्धचन्द्र की तरह हो तो ऐसा व्यक्ति जमीन-जायदाद का मालिक, ऐश्वर्य-सम्पन्न होता है। विपुल (उन्नत और फैला हुआ) ललाट होने से मनुष्य ऊँचे ओहदे पर पहुँचता है। यदि ललाट चिकना हो तो मनुष्य धर्म में रत (धार्मिक) होता है।

जिस व्यक्ति के ललाट में त्रिशूल या 'पट्टिश' (भाले) का चिह्न हो वह बहुत ऊँचे पद पर पहुँचने वाला (गवर्नर, मिनिस्टर आदि) भोगी (धनैश्वर्यसम्पन्न, सुखी) तथा कीर्तिमान होता है। जिनके दोनों नेत्रों के ऊपर के भाग की ललाट की हड्डी विपुल (बड़ी और फैली हुई) और उन्नत (ऊँची) हो ऐसे व्यक्ति धन्य हैं। अर्थात् वे ख्याति-प्राप्त, धनधान्य, ऐश्वर्य-सम्पन्न, बहुत मान और प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले होते हैं।

जिसका ललाट नीचा हो उसको पुत्र-सुख कम होता है। यह दरिद्रता का लक्षण भी है। यदि ललाट ऊँचा-नीचा हो तो भी मनुष्य धनहीन होता है। यदि सीप की तरह ऊँचा और फैला हुआ ललाट हो तो उच्च विद्वत्ता का लक्षण है—

"शुक्ति विशालै राचार्याः शिरा सन्नतै रधर्मरताः ।"
(बृहत् संहिता)

यदि ललाट नीचा हो और उसमें नसें निकली हुई दिखाई दें तो मनुष्य अधर्म में रत रहता है। किन्तु यदि इन नसों से 'स्वस्तिक' का चिह्न बना हुआ हो और ललाट उन्नत हो तो मनुष्य धनिक होता है।

जिसका ललाट सकड़ा होता है वे कृपण होते हैं। जिनका ललाट नीचा हो वे क्रूर-कर्म करने वाले तथा हिंसक होते हैं और यदि अन्य अशुभ लक्षण हों तो जेल जाने का या गहरी विपत्ति में पड़ने का योग भी बन सकता है। बहुत उन्नत ललाट वाले प्रायः स्वतन्त्र और हुकूमत करने वाले होते हैं।

समुद्र ऋषि का कथन है—

"निःस्वा विषमभालेन दुःखिता ज्वर जर्ज्जराः ।
परकर्म करानित्यं प्राप्यन्ते वधबन्धनम् ॥"

जिसका ललाट ऊँचा-नीचा हो (क्रमशः ऊँचा नहीं—कुछ ऊँचा फिर धँसा हुआ फिर ऊँचा) वे दुःखी, ज्वर-पीड़ित और धनहीन होते हैं। ऐसे लोगों का जीवन दूसरों का काम करने (नौकरी) में ही जाता है। ऐसे व्यक्तियों के हृदय में दया कम होती है और कष्ट पाते हैं।

'सामुद्रतिलक' का वचन है कि जिसके ललाट में रेखाओं सेठ नसों से या रोम से 'श्रीवत्स', 'धनुष' आदि के शुभ चिह्न बनते हों वे भोगी (स्त्री, धन, वाहन, भृत्य आदि भोग-साधन सम्पन्न) और उच्च पदवी प्राप्त करने वाले होते हैं—

"श्रीवत्स कार्मुकाद्या यस्य शिरारोमभिः कृता भाले ।
रेखाभिर्वा नृपतिर्भोगी व जायते सपदि ॥"

ललाट-लक्षण से आयु-विचार

यदि ललाट फैला हुआ भी कम हो और ऊँचा भी कम हो तो व्यक्ति अल्पायु होता है। इसके अतिरिक्त ललाट की रेखाओं से भी आयु का ज्ञान किस प्रकार हो यह 'भविष्य पुराण' में बताया गया है।

"जिस स्त्री या पुरुष के पाँच सम्पूर्ण रेखा ललाट में हों वे ऐश्वर्यवान होते हैं और १०० वर्ष तक जीते हैं—अर्थात् पूर्णायु प्राप्त करते हैं। यदि चार रेखा आड़ी और सम्पूर्ण हों तो ८० वर्ष

की आयु और यदि ३ रेखा पूर्ण हों तो ७० वर्ष की आयु समझनी चाहिये। यदि दो रेखा सम्पूर्ण और अखंडित हों तो ६० वर्ष तक और यदि केवल एक रेखा पूर्ण हो तो ४० वर्ष तक की आयु निर्धारित करनी चाहिये। यदि ललाट में कोई रेखा न हो तो केवल २५ वर्ष की आयु समझनी चाहिये।"

पूर्णायु १०० वर्ष की मान कर—'भविष्य पुराण' में जो आयु का मान दिया गया है, वह उस समय तो अवश्य बिलकुल ठीक लागू होता था जब लोग दीर्घायु होते थे। किन्तु आजकल पूर्ण दीर्घजीवी व्यक्ति भी १०० वर्ष तक नहीं जीते इसलिये यदि साधारणतया इसमें कुछ न्यूनता कर दी जावे तो आयु का अधिक सही अनुमान बैठेगा। इंगलैण्ड आदि ठण्डे और विशेष धनधान्य, आरोग्य, साधन-सम्पन्न देशों में भारत की अपेक्षा दीर्घजीवी व्यक्ति होते हैं। गत १५-२० वर्षों में भारत में भी औसत आयु बढ़ गई है। इसलिये देश और काल का पूर्ण विचार कर—पूर्णायु १०० की अपेक्षा कुछ कम कायम कर—उसी क्रम से ४ रेखा की, ३ रेखा की, २ रेखा की और १ रेखा की—जितनी रेखा ललाट में आड़ी, अविच्छिन्न सुन्दर हों, आयु निश्चित करना उचित है।

यह रेखा सारे ललाट में एक ओर से दूसरी ओर तक पूर्ण होनी चाहिये तभी प्रत्येक रेखाकृत पूर्ण आयु-मान ठीक बैठेगा। वराहमिहिर का मत ऊपर दिये गये 'भविष्य पुराण' के मत से कुछ भिन्न है। वह लिखते हैं—

"तिस्रो रेखाः शतजीविनां ललाटायताः स्थिता यदि ताः।
चतसृभि रवनीशत्वं नवति श्चायुः स पञ्चाब्दा॥

(बृहत् संहिता—अध्याय ६८, श्लोक ७५)

यदि सारे ललाट पर तीन लम्बी आड़ी रेखा हों तो मनुष्य सौ वर्ष तक जीता है। यदि ऐसी चार रेखा हों तो राजा हो और ९५ वर्ष की आयु हो।"

ललाट की रेखा सारे ललाट पर फैली हुई (एक ओर से दूसरी ओर तक पूर्ण) शुभ लक्षण है किन्तु यदि यह कटी हो तो मनुष्य व्यभिचारशील होता है। यदि रेखा न हो तो भी ९० वर्ष की आयु होती है। यदि रेखा ललाट के ऊपरी भाग पर केश को छुए तो ८० वर्ष की आयु और यदि पाँच रेखा हों तो ७० वर्ष की आयु। यदि एक रेखा के अग्र से अन्य रेखा काटती हो या कोने पर मिल जावे तो ६० वर्ष की आयु और बहुत सी (पाँच से अधिक) रेखा हों तो जातक केवल ५० वर्ष जीता है। यदि रेखाएँ टेढ़ी हों (आड़ी तो हों किन्तु बिलकुल सीधी न हों) तो मनुष्य की आयु केवल ४० वर्ष की, और भौं को छूती हुई आड़ी रेखा हो तो ३० वर्ष की आयु होती है। यदि रेखा ललाट के बायीं ओर को झुकी हुई हो तो केवल २० वर्ष समझना चाहिए। यदि रेखा छोटी हों तो मनुष्य अल्पायु होता है। कोई रेखा लम्बी और कोई छोटी हो तो इसी अनुपात से आयु निश्चय करनी चाहिए।" (बृहत्संहिता, अध्याय ६८, श्लोक ७६-७८)

उपर्युक्त श्लोकों से वराहमिहिर और 'भविष्य पुराण' के मतों में अन्तर प्रतीत होता है, परन्तु सामंजस्य के लिये शास्त्रकारों ने यह व्याख्या की है कि 'भविष्य पुराण' में जो पाँच रेखा होने पर १०० वर्ष की पूर्णायु बताई है वह वरामिहिर ने ३ रेखा होने पर ही—इसका कारण यह है कि वराहमिहिर के मतानुसार तीन रेखा ललाट पर एक कान से दूसरे कान तक पूर्ण होनी चाहिये क्योंकि 'गरुड़ पुराण' में लिखा है कि जिनके एक कान से दूसरे कान तक ललाट पर फैली हुई तीन पूर्ण रेखा हों वे सौ वर्ष तक जीते हैं—

"आकर्णान्तगता रेखास्तिस्त्रः स्युश्च शतायुषः।
ललाटोपसृता स्तिस्त्रो रेखाः स्युः शतवर्षिणाम् ॥"

एक कान से दूसरे कान तक ललाट पर रेखा होनी तभी संभव है जब ललाट पूर्ण लम्बा और उन्नत हो।

इस विषय में सभी शास्त्र एकसम्मत हैं कि यदि ललाट की रेखा ह्रस्व हों और कटी हुई हों तो ऐसा मनुष्य अल्पायु और व्यभिचारशील होता है। रेखाओं का कटा होना या टेढ़ा-मेढ़ा होना अच्छा लक्षण नहीं है।

स्त्रियों के ललाट

"अर्द्धेन्दु प्रतिमा भोगमरोश मनायतम्।
तत् श्रीभोगकरं श्रेष्ठं ललाटं वर योषिताम्॥"

(भविष्य पुराण)

अष्टमी के चन्द्र के आकार का, जिस पर रोएँ न हों, बहुत चौड़ा नहीं—ऐसा ललाट मदि स्त्रियों का हो तो श्रेष्ठ है। इस शुभ लक्षण से स्त्री धनी और सौभाग्ययुक्त होती है। 'स्कन्द पुराण' के अनुसार स्त्रियों का ललाट यदि आगे झुका न हो, रोमरहित हो, अष्टमी के चन्द्रमा का आकार का हो, उसमें नसें दिखाई न दें, और तीन अँगुल चौड़ा हो तो सौभाग्य और आरोग्य प्रकट करता है।

जिस स्त्री के ललाट पर रेखाओं से स्वस्तिक का चिह्न बने वह राज्य और सम्पदा पाती है अर्थात् बहुत उच्च पदवी, मान-प्रतिष्ठा व धनैश्वर्यशालिनी होती है। यदि उसके ललाट पर रेखाओं से त्रिशूल चिह्न बने तो हजारों स्त्रियों की स्वामिनी होती है (वह स्वयं हुकूमत करती है या उसका पति बहुत उच्च-पदाधिकारी होता है)।

समुद्र ऋषि के मतानुसार भी स्त्रियों का ललाट तीन अँगुल से अधिक ऊँचा नहीं होना चाहिये। ललाट का निर्मल होना तथा बराबर (गड्ढेदार नहीं) और सुन्दर होना जिसमें नसें और रोएँ दिखाई न दें दीर्घ आयु, सुख और धन का द्योतक है।

यदि ललाट पर नसें और रोएँ अधिक हों तो अशुभ लक्षण है। जिसका ललाट बहुत लम्बा हो उसका देवर (पति का छोटा भाई) दीर्घायु नहीं होता।

२५वां प्रकरण

तिल-विचार

तिल और मस्सों का विचार इस प्रकरण में दिया जा रहा है। वराहमिहिर के मतानुसार यदि मस्सा शरीर के वर्ण का हो या उज्ज्वल कान्तियुक्त हो तो ब्राह्मण के लिये विषेष शुभ होता है। अर्थात् यदि ब्राह्मण के शरीर पर ऐसा मस्सा हो तो उसके लिये शुभ होता है, क्षत्रिय के शरीर पर सफ़ेद (उज्ज्वल कान्ति का—शरीर के वर्ण की भाँति हो) या कुछ ललाई लिए हुए मस्सा हो तो शुभ है। वैश्य के शरीर पर उज्ज्वल कान्ति का, ललाई लिये हुए या कुछ पीलापन लिये हो तो शुभ है। शूद्र के शरीर पर उपर्युक्त तीनों में से किसी रंग का या काला मस्सा हो तो वह भी शुभ है।

यदि सिर पर उपर्युक्त शुभ मस्सा हो तो बहुत धनागम होता है। अगर चेहरे के पृष्ठभाग पर (सिर के पिछले हिस्से पर हो) तो भी सौभाग्य-लक्षण है। ललाट पर होने से बहुत धनागम होता है। भौं पर दौर्भाग्य का लक्षण है। यदि भ्रुवों के बीच में हो तो ऐसे व्यक्ति का प्रियजनों से विशेष समागम होता है किन्तु ऐसा व्यक्ति स्वयं दुष्ट होता है। पलक पर मस्सा हो तो दुःखदायी है। नेत्र पर हो तो प्रियजनों का दर्शन-सुख, यदि कनपट्टी या भौं के ऊपर ललाट और नेत्र की हड्डी के योग-स्थान पर हो तो ऐसा मनुष्य सब-कुछ त्याग कर संन्यास ग्रहण करता है। जहाँ नेत्र से आँसू गिरते हैं उस स्थान पर हो तो चिन्ता उत्पन्न होती है।

बहुत बार यह देखा गया कि जन्म के समय तो मस्सा इत्यादि नहीं होता, बाद में हो जाता है। जब नवीन मस्सा हो, तब 'चिन्ता उत्पन्न होना' आदि फल लागू होते हैं। यदि नाक पर हो तो नवीन

वस्त्र-प्राप्ति, कपोल पर सुत-प्राप्ति, ओष्ठ पर उत्तम भोजन, चिबुक पर भी यही फल होता है। हनु[1] प्रदेश पर हो तो बहुत धनागम होता है और कान पर होने से भूषण-प्राप्ति तथा ज्ञान-प्राप्ति, वेदान्तादि का अध्ययन होता है। गले पर हो तो अच्छे पदार्थ, भोजन और पीने के लिये पेय प्राप्त हो। जहाँ सिर और गर्दन का जोड़ है वहाँ मस्सा निकल आवे तो लोहे के शस्त्र या औज़ार से चोट लगती है—ग्रीवा पर चोट। किन्तु यदि हृदय पर या वक्षःस्थल पर हो तो पुत्र-प्राप्ति। पार्श्व (पसली) या उसके नीचे हो तो दुःख। कंधे पर हो तो वृथा घूमना और काँख में हो तो अनेक प्रकार से धननाश हो। पीठ पर होने से दुःख और चिन्ताओं से निवृत्ति होती है। बाहु पर हो तो शत्रुनाश, भूषण तथा वस्त्र-प्राप्ति। किन्तु यदि कलाइयों पर हो तो अशुभ है—मनुष्य स्वयं बन्धन को प्राप्त होता है।

यदि हाथ या उंगलियों पर हो तो धनागम और सौभाग्य का लक्षण है, किन्तु पेट पर हो तो दुःख या क्लेश का लक्षण है। नाभि पर होने से उत्तम भोजन और पेय पदार्थ प्राप्त हों। यदि नाभि के नीचे हो तो चोरी से धनहानि होती है। यदि बस्ति[2] पर हो तो धन-धान्य, मेढ़्र पर सुन्दर स्त्री और पुत्र-प्राप्ति, वृषण पर सौभाग्य, उससे नीचे धनागम प्रकट करता है।

जाँघ पर 'पिटक' या मस्सा हो तो सवारी तथा स्त्री का लाभ; घुटनों पर हो तो अशुभ होता है। शत्रुओं से हानि होती है। पिंडलियों पर होने से शस्त्राघात से पीड़ा, टखनों पर बन्धन, यात्रा-कष्ट आदि अशुभ फल।

नितम्ब पर धनानाश, एड़ी पर किसी से अनुचित सम्बन्ध

---

१. हनु और चिबुक ठोड़ी को कहते हैं परन्तु कौन सा भाग हनु और कौन सा भाग चिबुक कहलाता है यह पृष्ठ ४४८ पर देखिये।

२. बस्ति शरीर के किस भाग को कहते हैं यह पृष्ठ ३८७ पर देखिये।

और यात्रा। पैर की उंगलियों पर बन्धन, किन्तु पैर के अँगूठे पर शुभ फल—लोगों से सम्मान प्राप्त होता है।

पुरुषों के शरीर पर मस्सा, फड़कना, तिल, लहसन या भौंरी शरीर के दक्षिण भाग पर हो तो शुभ होता है। स्त्रियों के वाम भाग पर शुभ, दाहिने अंग में अशुभ समझना चाहिये। ऊपर जो मस्सों का फल दिया गया है वही तिल, लहसन तथा भौंरी का होता है।

शरीर में तिल, मस्से और लहसन

अनेक भारतीय शास्त्रों का अवलोकन कर 'जैनमत पताका' में तिल, मस्सों आदि के निम्नलिखित फल दिये हैं। वे यहाँ उद्धृत किये जाते हैं—

(१) "शरीर के चमड़े पर तिल–जैसे आकार का श्याम रंग का निशान हो उसको तिल बोलते हैं। चमड़ी में कुछ ऊँची बढ़कर मांस की छोटी-सी गाँठ राइ या बाजरे जितनी हो उसको मस्सा बोलते हैं, इससे बड़ा मस्सा हो वह अच्छा नहीं।

(२) लहसन उसको बोलते हैं जो कुसुंभे के रंग के माफ़िक लाल रंग का निशान शरीर की चमड़ी पर होता है। तिल, मस्सा या लहसन कोई हो, अगर खूबसूरत या साफ़ हो तो उम्दा फल देगा, बदसूरत या टूटा-फूटा हो तो अच्छा फल न देगा।

(३) व्यंजन शब्द का अर्थ तिल या मस्सा है। तिल-मस्से का रंग श्याम और लहसन का रंग लाल या कुछ श्याम होता है।

(४) मस्तक पर तिल, मस्सा या लहसन हो तो वह पुरुष हर जगह इज्ज़त पावे और फ़ायदा मिले।

(५) ललाट की दाहिनी तरफ़ तिल हो वह शख्स दौलत पावे, बायीं तरफ़ हो तो फल कम होगा, मगर बिलकुल बेफ़ायदे नहीं।

(६) भ्रू पर तिल हो तो मुल्कों की सैर करे और लाभ उठाये।

(७) आँख पर तिल हो तो नेता तथा अधिकारी हो।

(८) मुख पर तिल हो तो दौलत झलाझल मिले।

(६) गाल पर तिल हो तो उसकी पत्नी सुन्दर हो।

(१०) ऊपर के ओष्ठ पर तिल हो तो दौलत पावे और उसकी बात ऊँची रहे।

(११) नीचे के होंठ पर तिल हो तो कंजूस हो।

(१२) कान पर तिल हो तो गहने, जवाहरात बहुत पहने।

(१३) गर्दन पर तिल हो तो उसको ऐश-आराम मिले और दीर्घायु हो।

(१४) दाहिनी छाती पर तिल हो तो उसको अच्छी स्त्री मिले और लाभ हो। बायीं छाती पर तिल हो तो लाभ कम होगा मगर तिल बिलकुल निष्फल न होगा।

(१५) दाहिने हाथ पर तिल हो तो अपने हाथ की कमाई भोगे। बायें हाथ पर हो तो कम फल देवे मगर बिलकुल ग़लत नहीं। यदि दाहिने कंधे पर तिल हो तो काफ़ी इल्म हो, बायें कंधे पर हो तो कम इल्म हो।

(१६) हाथ के पंजे पर तिल हो तो दिल का दिलेर हो।

(१७) जाँघ पर तिल हो तो उसको सवारी का सुख मिले और फ़ौज में फ़तह पावे।

(१८) पाँव पर तिल हो, वह पुरुष मुल्कों का सफ़र करे और फ़ायदा उठावे।

(१९) पुरुष के दाहिने अंग पर तिल, मस्सा या लहसन हो तो अच्छा फ़ायदा करे। अगर बायें अंग पर हो तो कम फल होता है।

स्त्री के बायें अंग पर तिल, मस्सा या लहसन हो उसका फल

(१) जिस स्त्री के मस्तक पर तिल हो वह राजा की रानी बने।

(२) ललाट पर तिल हो तो धनी पति मिले।

(३) आँखों पर तिल हो तो पति की अच्छी नज़र बनी रहे।

(४) गाल पर तिल हो तो ऐश-आराम भोगे।

(५) कान पर तिल हो तो गहने-ज़ेवर बहुत पहने ।
(६) गले पर तिल हो तो वह अपने घर में हुक्मत चलावे ।
(७) छाती पर तिल हो तो पुत्रवती हो ।
(८) हाथ पर तिल हो तो उसका पति प्रेम करे ।
(९) जाँघ पर तिल हो, उसके पास नौकर-चाकर बने रहें ।
(१०) पाँव पर तिल हो तो मुल्कों का सफ़र ज़्यादा करे ।
(११) स्त्री के बायें अंग पर तिल, मस्सा या लहसन हो तो ज्यादा फ़ायदा करता है । अगर दाहिने अंग पर हो तो कम फ़ायदा मगर बिलकुल निष्प्रभाव नहीं होता ।

पाश्चात्य मत

अब पाश्चात्य मतानुसार चेहरे के विविध भागों पर तिल का फल दिया जाता है । सर्वप्रथम ललाट के तिलों का शुभाशुभ निर्देश किया जाता है । (देखिये चित्र नं० १३४)

ललाट के तिल

तिल नं० १—ललाट में ऊपर दक्षिण भाग में यह तिल होता है । इसके फल की पुष्टि के लिये बायीं तरफ़ रीढ़ के नीचे तिल है या नहीं यह देखना चाहिये । यदि यह शहद की भाँति कुछ ललाई
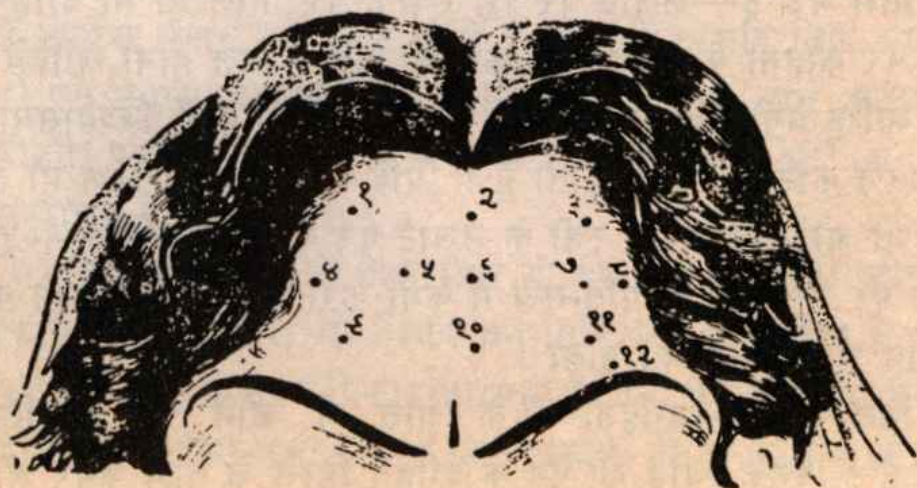
चित्र नं० १३४

लिये हो तो उसे विरासत में सम्पत्ति मिलती है और ज़मीन-जायदाद से लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। किन्तु उस का स्वभाव कलहप्रिय होता है। यदि यह तिल काले रंग का हो तो जीवन के अन्तिम बीस वर्षों में स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता। यदि स्त्री के ललाट पर—इस स्थान पर हो तो उसका स्वभाव अच्छा होगा परन्तु वह अधिक काल, विदेश (जन्मस्थान से दूर) रहेगी। यदि ऐसी स्त्री को संतान-कष्ट हो तो शुभ हीरा या नीलम धारण करना चाहिये।

तिल नं० २—ऐसे तिल के जोड़ का तिल दाहिने हाथ की कोहनी के ठीक नीचे होना चाहिये तभी निम्नलिखित फल की पुष्टि होगी। यदि शहद के रंग का तिल इस स्थान पर ललाट पर हो तो फ़ौजी नौकरी या ठेकों से तथा सोना, चाँदी और लोहे आदि धातुओं से तथा जानवरों एवं व्यापार आदि से लाभ होगा। यदि हाथ की रेखा से पुष्टि होती हो तो अकस्मात् धन-लाभ भी हो सकता है। किन्तु यदि काले रंग का तिल हो तो अशुभ है। यदि स्त्री के ललाट पर हो तो वह कलाकुशल किन्तु अप्रिय बात करने वाली होती है। 'पन्ना' धारण करने से यह दोष कम होगा।

तिल नं० ३—ललाट पर इस स्थान पर तिल हो तो दाहिनी भुजा पर कोहनी के ऊपर तथा कंधे के नीचे तिल होना चाहिये। ऐसा व्यक्ति धनी नहीं हो पाता और किसी मित्र के विश्वासघात के कारण कष्ट को प्राप्त होता है। यदि काले रंग का तिल हो तो और भी अशुभ है। यदि स्त्री के ललाट पर कैसे भी रंग का—इस स्थान पर तिल हो तो पति-सुख में कमी करता है। ऐसी स्त्री का स्वभाव भी अच्छा नहीं होता।

तिल नं० ४—दाहिनी भौं के अन्त में कोने पर यह तिल होता है। इसके जोड़ का पेट के दाहिने हिस्से के नीचे कमर और जाँघ के बीच में होता है। यदि यह तिल कुछ ललाई लिये हो तो

मनुष्य धनी तो नहीं होता किन्तु ज्ञानोपार्जन तथा पुस्तक-पठन में विशेष रुचि होती है। ऐसे पुरुष को कोई-न-कोई स्त्री धोखा देती है, इस कारण उसके चित्त में स्त्री-जाति से विराग हो जाता है। यदि तिल काले रंग का हो तो कोई विशेष प्रभाव नहीं होता।

यदि स्त्री के ललाट पर यहाँ तिल हो तो उसके विचार अच्छे नहीं होते। वह उचित-अनुचित सब मार्गों से धन संग्रह को उत्सुक रहती है। यदि जीवन-रेखा तथा हृदय-रेखा बलिष्ठ न हों तो अल्पायु होने का भी भय रहता है।

तिल नं० ५—ललाट के ५ नं० के तिल के जोड़ का तिल, दाहिने सीने के नीचे के भाग में होता है। ऐसा व्यक्ति बुद्धिमान तथा धन-उपार्जन में चतुर होता है। मधु-वर्ण (शहद के रंग का) होने से यह तिल शुभ होता है किन्तु यदि बिलकुल काला हो तो अच्छा नहीं। यदि स्त्री के ललाट पर ऐसा तिल हो तो वह धनवती तथा दीर्घायु होती है।

तिल नं० ६—ललाट पर इस स्थान पर तिल हो तो, छाती पर बायीं ओर भी तिल होना चाहिये तभी निम्नलिखित फल पूर्ण घटित होगा। यदि मधु-वर्ण का तिल हो तो ३५-४५ वर्ष की अवस्था में गहरी बीमारी का अन्देशा होगा। देखिये जीवन-रेखा से उपर्युक्त लक्षण की पुष्टि होती है या नहीं। यदि तिल काला हो तो ऐसे मनुष्य के जीवन का प्राथमिक तथा मध्य भाग अच्छा नहीं बीतता परन्तु वृद्धावस्था में अपने परिश्रम से अपनी आर्थिक स्थिति सम्हालने में सफल होता है।

यदि किसी स्त्री के ऐसा तिल हो तो वह धनवती होती है। किसी सम्बन्धी द्वारा भी विशेष धन-प्राप्ति का योग होता है। तीस वर्ष की आयु में उदर-विकार या अन्य दुर्घटना की आशंका होती है। यदि जीवन-रेखा तथा अन्य रेखाएँ अच्छी हों तो दीर्घायु होती है।

तिल नं० ७—इसका स्थान ललाट के मध्य भाग के बायों

श्रोर है। इसके जोड़ का तिल बायीं तरफ़ की पसली के नीचे होता है। यदि मधु-वर्ण का तिल हो तो मनुष्य दुराग्रही, अपनी इच्छा-पूर्ति के लिए अनुचित कार्य करने वाला, अपव्ययी तथा ऐयाश होता है। परन्तु अपनी मिलनसारी और तहज़ीब से सब पर अच्छा प्रभाव डालता है। यदि तिल का रंग काला हो तो चालीस वर्ष की अवस्था में कोई शिरो-रोग होने की आशंका होगी। पुष्टि के लिए देखिये जीवन-रेखा तथा शीर्ष-रेखा।

यदि स्त्री के ललाट पर, इस स्थान पर तिल हो तो वह अपव्ययी तथा स्वेच्छाचारिणी होती है। ऐसी स्त्री में तीस वर्ष की अवस्था के बाद दुष्प्रवृत्तियाँ और बढ़ेंगी तथा पति से द्वेष करेगी।

तिल नं० ८—इसके मुकाबिले का तिल बायें हाथ की कलाई के ऊपर होना चाहिये। यदि मधु की भाँति कुछ ललाई लिये यह तिल हो तो शुभ है। ऐसा मनुष्य धनी तथा ऐयाश होता है किन्तु उसका स्वभाव अच्छा नहीं होता। यदि तिल का रंग काला हो तो कोई विशेष फल नहीं।

यदि स्त्री के ललाट पर—बायें भौं के कोने के ऊपर (देखिये चित्र नं० १३४) ऐसा तिल हो तो वह दुष्टा तथा पति-द्वेषिणी होती है और उसे कोई छूत की भयंकर बीमारी होने का अन्देशा होता है।

तिल नं० ९—इस तिल की पुष्टि के लिए दाहिनी पसली के नीचे के भाग में तिल है या नहीं, यह देखना चाहिये। जिस पुरुष के ऐसा तिल ललाई लिये हो वह व्यापार से विशेष धन-उपार्जन करता है। करीब ३५ वर्ष की अवस्था में यात्रा द्वारा अपने व्यापार को विशेष तरक्की देने में सफल होगा। पुष्टि के लिये, देखिये यात्रा-रेखायें पृष्ठ ३१८-३२१। यदि तिल काले रंग का हो तो यात्रा में अनिष्ट परिणाम होता है। यदि स्त्री के ललाट पर हो तो उसकी कल्पना-शक्ति अधिक होगी, पति-सुख सामान्य तथा एक संतान को तीव्र रोग होगा। अन्य संतान स्वस्थ रहेंगी।

तिल नं० १०—यदि ललाट पर इस स्थान पर तिल हो तो इसके मुकाबिले का तिल वक्ष: स्थल के दाहिने भाग में होगा। यदि यह कुछ ललाई लिये हो तो अत्यंत शुभ होता है। ऐसा व्यक्ति कुलीन, धनी, मान-प्रतिष्ठायुक्त और उपकारी होता है। यदि तिल काले रंग का हो तो ऐसे मनुष्य में अपव्यय का दुर्गुण होने के कारण वृद्धावस्था में आर्थिक कष्ट पाता है, और लम्बी बीमारी से भी त्रास होता है।

यदि स्त्री के ललाट पर इस स्थान पर तिल हो तो स्नायु-पीड़ा से कष्ट होगा। ऐसी स्त्री को पति-सुख पूर्ण नहीं होता। स्त्री का स्वयं का स्वभाव भी कर्कश होता है।

तिल नं० ११—इसकी पुष्टि के लिये देखिये कि वक्ष:स्थल के वाम भाग के नीचे तिल है या नहीं। यदि वहाँ भी तिल हो तो यह फल होता है कि मनुष्य अपनी जल्दबाज़ी तथा लापरवाही से ऐसे कार्य करता है कि उसका परिणाम उसके लिये अच्छा नहीं होता। तीस और चालीस वर्ष के बीच कोई विशेष अनिष्ट परिणाम होता है। तिल यदि ललाई लिये हो तो यह फल है। यदि बिलकुल काला हो तो कोई विशेष फल नहीं होता।

यदि स्त्री के ललाट पर यहाँ तिल हो तो उसका कम उम्र में विवाह होता है और कई लड़के होते हैं। मोती और मूँगा पहिरना शुभ होता है।

तिल नं० १२—इस स्थान पर यदि शहद के रंग का ईषत् ललाई लिये तिल हो तो ऐसे व्यक्ति का पारिवारिक मनुष्यों से विवाद होता है। परन्तु विवाह के उपरान्त भाग्य में विशेष तबदीली होती है। यदि काले रंग का तिल हो तो तीस-चालीस वर्ष के बीच में उदर-विकार या रक्त-विकार होता है। इस तिल का फल तभी होता है जब इसके मुकाबिले का तिल वाम नितम्ब पर हो।

यदि स्त्री के ललाट पर यहाँ तिल हो (देखिये चित्र नं० १३४) तो उसे कण्ठरोग होने की आशंका होगी। शरीर-लक्षण तथा हस्त-

रेखाओं से पुष्टि होती है तो ऐसी स्त्री अत्यन्त चंचल वृत्ति की होती है ।

नेत्र-प्रदेश के तिल

अब नेत्रों के आसपास के तिलों का शुभाशुभ फल बताया जाता है । (देखिए चित्र नं० १३५ ।) इसमें कुल ९ तिलों के स्थान बताये गए हैं । प्रायः चेहरे के किसी भी भाग में तिल का फल तभी पूर्ण रूप से घटित होता है जब उसके मुकाबिले का तिल भी शरीर के स्थान-विशेष पर स्पष्ट रूप से हो । इसलिए नेत्र-प्रदेश के ९ तिलों के मुकाबिले के तिल, शरीर के किस-किस भाग में होते हैं यह बताया जाता है—

चित्र नं० १३५

नेत्रों के आसपास के तिल	मुकाबिले का तिल
तिल नं०	
१. दाहिनी आँख के कोने पर भौं के अन्त पर	पेट के वाम भाग में
२. दाहिनी आँख के नीचे	वक्षःस्थल के नीचे
३. दाहिनी आंख के बायें कोने पर	वाम ऊरु के नीचे
४. दोनों भौं के मध्य भाग में	बायें या दाहिने पैर पर
५. वाम नेत्र के कोने पर, नासिका के पास	बग़ल के नीचे, बाईं भुजा के अन्दर की तरफ़
६. वाम नेत्र के नीचे (देखिए चित्र)	दाहिने हाथ की कोहनी के नीचे
७. वाम नेत्र के नीचे (,, ,,)	दाहिनी कमर पर
८. वाम नेत्र के बायीं ओर, नेत्र-प्रान्त और कान के बीच में	सीने की हड्डी के नीचे
९. वाम नेत्र के कोने पर	बायें कन्धे पर

(नोट—इन १ से ६ तक तिलों के वहीं स्थान हैं जो चित्र नं० १३५ में दिखाये गए हैं।)

यदि उपर्युक्त नेत्र-प्रदेश पर कहीं तिल हो, और उसके मुकाबिले का तिल भी शरीर के निर्दिष्ट भाग पर हो तो निम्नलिखित फल होता है।

तिल नं० १—यदि पुरुष के चेहरे पर शहद की-सी ललाई लिए तिल हो तो उस पुरुष का स्वास्थ्य खराब रहता है। पेट की बीमारी तथा दिल की बीमारी होने की विशेष आशंका होती है। यदि काले रंग का तिल हो तो दूर की यात्रा करने से अनिष्ट परिणाम होता है।

यदि स्त्री के मुख पर यहाँ तिल हो तो उसका भी अनिष्ट परिणाम ही है। शारीरिक व्याधि तथा मानसिक दुःख दोनों से ही पीड़ा होती है।

तिल नं० २—यदि काले रंग का तिल हो तो कुछ विशेष फल नहीं होता किन्तु यदि मधु वर्ण का हो तो मनुष्य बुद्धिमान नहीं होता। उसकी प्रकृति तथा स्वभाव में भी उद्दण्डता होती है। पैर में भी कुछ विकार होता है।

यदि स्त्री के उपर्युक्त स्थान पर तिल हो तो वह मूर्ख, आलसी किन्तु पाक-विद्या में अभिरुचि वाली होती है। अपने माता-पिता में विशेष श्रद्धा रखती है। जन्म-स्थान से दूर—विदेश में उसकी मृत्यु होती है।

तिल नं० ३—यदि काले रंग का तिल पुरुष के चेहरे पर हो तो शुभ फल है। ऐसा व्यक्ति न्यायप्रिय होता है किन्तु यदि कुछ ललाई लिए हो तो मनुष्य झगड़ालू, मुकदमेबाज़ होता है और कष्ट पाता है।

यदि स्त्री के चेहरे पर हो तो भी अशुभ परिणाम है। वह दुःख और कष्ट पाती है। यदि शरीर-लक्षण और हस्तरेखाओं से पुष्टि

होती हो तो चौबीस व तीस वर्ष की अवस्था में गुप्त प्रेम होता है।

तिल नं० ४—यदि पुरुष का यह तिल शहद के रंग का हो तो बहुत शुभ है। ऐसा व्यक्ति भाग्यशाली होता है किन्तु यदि काले रंग का हो तो मनुष्य आपत्तियाँ झेलने वाला, भाग्यहीन, बुढ़ापे में अपस्मार आदि रोगों से विशेष कष्ट पाता है।

यदि स्त्री के इस स्थान पर तिल हो और हस्तरेखाओं तथा शरीर के अन्य लक्षणों से वह व्यभिचारिणी प्रतीत हो तो ऐसी स्त्री का किसी निम्न श्रेणी के व्यक्ति से गुप्त प्रेम होता है और उसका अनिष्ट परिणाम होता है।

तिल नं० ५—यदि शहद के रंग का तिल आँख के पास इस स्थान पर पुरुष के चेहरे पर हो तो उसे अकस्मात् धन-लाभ होता है। विदेश से माल मँगाने या विदेश को माल भेजने से ऐसे व्यक्ति को विशेष लाभ हो सकता है। यदि काले रंग का तिल हो तो अशुभ है। उपर्युक्त फल उलटा होता है। यदि स्त्री के चेहरे पर इस स्थान पर तिल हो तो उसे अपने पति तथा अन्य सम्बन्धियों से धन-लाभ होता है किन्तु स्वास्थ्य पर इसका प्रभाव अच्छा नहीं होता।

तिल नं० ६—यदि ललाई लिए, ऐसा तिल पुरुष के चेहरे पर हो तो वह खेल-कूद, घुड़दौड़ आदि का प्रेमी होता है और विशिष्ट पदाधिकारियों की सहायता से धन और मान प्राप्त करता है। यदि हस्तरेखा से पुष्टि होती हो तो सैंतीस-पैंतालीस वर्ष की अवस्था में नेत्र-विकार होता है। यदि काले रंग का तिल हो तो शेयर या अन्य सट्टे में हानि होती है।

यदि स्त्री के ऐसा तिल हो तो बचपन में अग्निभय या चोट की आशंका होती है और तीस वर्ष की उम्र के बाद विरासत से धन-प्राप्ति होती है।

तिल नं० ७—यदि पुरुष के चेहरे पर ऐसा तिल हो तो विदेशों

से माल मंगवाने या भेजने से विशेष लाभ होता है। यदि तिल काले रंग का हो तो ऐसे आदमियों को मुकदमे तथा धार्मिक संस्थाओं से हानि की आशंका रहती है।

यदि स्त्री के चेहरे पर यह तिल हो तो वह सुखी तथा दीर्घायु होती है।

तिल नं० ८—यदि शहद के रंग का तिल हो तो ऐसा पुरुष विलासी होता है। उसका अनेक स्त्रियों से सम्बन्ध होता है। यदि काले रंग का हो तो विशेष फल नहीं।

स्त्री के चेहरे पर यह तिल होने से वह भी विलासिनी होती है और पुरुषों की भाँति बाहरी कार्यों में दक्ष होती है।

तिल नं० ९—पुरुष के बाएँ भौं के अन्त के कोने पर यदि शहद के रंग का तिल हो तो उसे मित्रों और सम्बन्धियों से धोखा तथा हानि की आशंका होगी। यदि काले रंग का हो तो परस्त्री प्रेम के कारण अप्रतिष्ठा। यदि स्त्री के चेहरे पर हो तो स्वास्थ्य ख़राब होगा तथा बिजली या अग्नि से भी भय की संभावना है। यदि अन्य लक्षण अच्छे न हों तो चरित्र भी संदेहास्पद होगा।

नासिका-प्रदेश के तिल

अब नासिका प्रदेश के तिलों का शुभाशुभ फल बताया जाता है। (देखिये चित्र नं० १३६।) निम्नलिखित आठ तिलों का फल पढ़ते समय ध्यान से देखें कि कौन सा तिल किस स्थान पर है।

चित्र नं० १३६

तिल नं० १—इसके मुकाविले का तिल सीधे पुट्ठे पर होगा तब इसका निम्नलिखित फल सही बैठेगा। यदि पुरुष के चेहरे पर, नाक के ऊपर इस स्थान पर मधु

की-सी कान्ति का कुछ ललाई लिये हुए तिल पुरुष के चेहरे पर हो तो उसमें वाक्-चातुर्य तथा कला-चातुर्य विशेष मात्रा में होता है। परन्तु वह स्त्रियों के जाल में ऐसा फँसा रहता है कि वे उससे अपना अभिप्राय सिद्ध करती रहती हैं। यदि यह तिल काले रंग का हो तो कोई विशेष फल नहीं।

यदि स्त्री के चेहरे पर यहाँ तिल हो तो शुभ लक्षण है। वह भाग्यशाली, दीर्घायु तथा अति सौभाग्ययुक्त होती है।

तिल नं० २—नाक के दाहिने भाग पर यदि तिल हो तो उसी के मुकाबिले का तिल बाईं बग़ल के नीचे होना चाहिये। जिस पुरुष के नाक पर शहद के रंग का तिल हो उसको जीवन के प्रथम और मध्य भाग में सुख होता है, बुढ़ापे में कष्ट। तीस-पैंतीस वर्ष की अवस्था में शारीरिक कष्ट भी प्रकट होता है। यदि काले रंग का हो तो कोई विशेष फल नहीं।

यदि स्त्री की नाक पर इस स्थान पर तिल हो तो वह अच्छे स्वभाव की होती है परन्तु फिर भी उसके कारण उसके पति को कष्ट होता है।

तिल नं० ३—नाक की बायीं ओर तिल हो तो उसके मुकाबिले का तिल बायीं जाँघ पर होना चाहिये। यदि पुरुष की नाक पर शहद की-सी कांति का तिल हो तो अशुभ है। ऐसा मनुष्य अस्वस्थ, भाग्यहीन तथा जीवन में असफल रहता है। यदि काले रंग का हो तो बिजली से या अन्य दुर्घटना से मृत्यु की आशंका होगी।

यदि स्त्री की नाक पर यह तिल हो तो बुद्धिमती होती है किन्तु किसी परिचित व्यक्ति के विश्वासघात से आर्थिक या जायदाद-सम्बन्धी क्षति होती है।

तिल नं० ४—यदि नाक पर इस स्थान पर तिल हो (देखिये चित्र नं० १३६) तो इसके मुकाबिले का तिल दाहिनी जाँघ पर होगा। यदि पुरुष की नाक पर शहद के रंग का यह तिल हो तो

वह बुद्धिमान् तथा संग्रहशील होता है उसे विरासत में सम्पत्ति भी मिलती है। यदि काले रंग का तिल हो तो उदर-विकार, यकृत् रोग आदि सूचित होता है।

यदि स्त्री की नाक पर यह तिल हो तो उसके शरीर का ढांचा कमज़ोर होगा और प्रसव में विशेष कष्ट और भय होगा। यदि ऐसी स्त्री की नासिका का अग्र भाग कटा हुआ सा, या हड्डी से अलग प्रतीत हो तो उसका चरित्र अच्छा नहीं होता।

तिल नं० ५—यदि बायें नथुने पर इस स्थान पर तिल हो तो इसके मुकाबिले का तिल दाहिने घुटने के ऊपर दाहिनी जाँघ पर होता है। यदि पुरुष की नाक पर कुछ ललाई लिए यह तिल हो तो ज़मीन-जायदाद, कृषि तथा वृद्धजनों से लाभ होता है यदि तिल काला हो तो चालीस-पचास वर्ष के बीच में किसी दुर्घटना की आशंका होगी, किन्तु हाथ की रेखाओं से दीर्घायु प्रतीत होता हो तो प्राणरक्षा हो जावेगी।

यदि स्त्री के इस स्थान पर तिल हो तो अशुभ चिह्न है, वह सदैव दुःखित रहेगी है।

तिल नं० ६—यदि दाहिने नथुने के नीचे (देखिये चित्र नं० १३६) तिल हो तो इसकी जोड़ का तिल बायें सीने के नीचे होता है। यदि पुरुष के यह, कुछ ललाई लिये, तिल हो तो बहुत अशुभ परिणाम होता है। ऐसा व्यक्ति अपव्ययी तथा अन्य दोषों से युक्त होता है इस कारण ऐसे व्यक्ति पर फ़ौजदारी मुकदमा चलता है। ऐसे व्यक्तियों को घृणित कार्यों से बचने का उद्योग करना चाहिये नहीं तो दंडभागी होंगे। यदि काले रंग का तिल हो तो कोई विशेष फल नहीं होता।

यदि स्त्री के यह तिल हो तो उसके लिये भी घोर अशुभ है। वह अच्छे चरित्र की नहीं होती और अपनी स्थिति को स्वयं बिगाड़ लेती है। पुष्टि के लिये हाथ भी देखिये।

तिल नं० ७—नाक के नीचे और ऊपर के ओष्ठ के ऊपर मध्य स्थान में यदि तिल हो तो उसके मुकाबिले का तिल पेट के दाहिने भाग पर पसली के नीचे होगा। यदि पुरुष के यह तिल शहद के वर्ण का हो तो उसे सरकारी अफ़सरों से पीड़ा पहुँचती है। यदि ऐसे पुरुष की पत्नी या कन्या सुन्दरी हो तो उच्च स्थिति के लोगों की अनुचित इच्छाओं के कारण भी ऐसे व्यक्ति को कष्ट होता है। यदि तिल काला हो तो और भी विशेष कष्ट सूचित होता है।

यदि स्त्री के यह तिल हो तो अस्वास्थ्य तथा चित्तक्लेश सूचित होता है। मूंगा धारण करना चाहिये।

तिल नं० ८—यदि वाम नासापुट के नीचे तिल हो (देखिये चित्र नं० १३६) तो इसके मुकाबिले का तिल पीठ पर बायीं बग़ल के नीचे होता है। यदि शहद के रंग का तिल पुरुष के हो तो ऐसा व्यक्ति बाहर से बहादुर किन्तु भीतर से बुज़दिल होता है। स्त्रियों के कारण मुकदमे या अन्य कलह के कारण कष्ट होता है। यदि काले रंग का तिल हो और हाथ की रेखाओं से पुष्टि होती हो तो जल में डूबने का भय होता है।

यदि स्त्री के इस स्थान पर तिल हो तो भी अशुभ है। उसका चरित्र अच्छा नहीं होता। पुष्टि के लिये हस्तरेखा तथा शरीर-लक्षणों से मिलान करना चाहिये।

कान के पास के तिल

ललाट के, नेत्र-प्रदेश के तथा नासिका के ऊपर या उसके समीपवर्ती तिलों का फल बताया जा चुका है। अब कान के पास के तिलों का शुभाशुभ फल बताया जाता है। (देखिये चित्र नं० १३७।) इस में ३ तिल नं० १, २ तथा ३ दाहिने कान के पास हैं और दो

चित्र नं० १३७

तिल नं० ४ और ५ बायें कान के पास हैं। प्रायः इन तिलों के जोड़ के तिल शरीर के अन्य भाग पर भी होते हैं।

कान के पास के तिल	**मुकाबिले का तिल**
नं० १	दाहिने पाँव की पिंडली पर
२	पेड़ू के मध्य भाग में
३	दाहिने घुटने के ऊपर
४	बायें कंधे पर
५	बायीं जाँघ पर

यदि ये मुकाबिले के तिल शरीर पर हों तो कान के तिलों का निम्नलिखित फल पूर्ण रूप से घटित होता है—अन्यथा कम। अब ऊपर के पाँचों तिलों का क्रमशः फल बताया जाता है।

तिल नं० १—यदि यह तिल मधु की-सी कान्ति वाला, कुछ ललाई लिये हो तो ऐसे पुरुष को किसी धनिक कुटुम्बीजन से विरासत में धन तथा जायदाद की प्राप्ति होती है। किन्तु ऐसे पुरुष का स्वभाव तथा बर्ताव कुछ उद्दण्डता लिये होता है। पुत्र-सुख में भी कमी करता है। ज्येष्ठ पुत्र आज्ञाकारी नहीं होता। यदि काले रंग का तिल हो तो ऐसे पुरुष के साथ उसका कोई मित्र विश्वासघात कर हानि पहुँचाता है।

यदि स्त्री के चेहरे पर कान के पास यह तिल हो तो अशुभ है। जल-विचार या कफ़ से उत्पन्न रोग से उसकी मृत्यु होती है।

तिल नं० २—यदि पुरुष के दाहिने कान के पास इस स्थान पर शहद के रंग का तिल हो तो वह सदाचारी किन्तु निर्धन होता है। उसके चित्त में सदैव चिन्ता या उदासी रहती है। यदि तिल काले रंग का हो तो कोई विशेष फल नहीं होता।

यदि स्त्री के चेहरे पर कान के पास तिल हो तो वह अपने आचार तथा व्यवहार से बदनामी प्राप्त करती है। शरीर के अन्य लक्षणों से तथा हृदय-रेखा, सूर्य-रेखा और मस्तिष्क-रेखा से साम-

ञ्जस्य करना चाहिये कि उसकी अधोगति किस मात्रा तक होगी।

तिल नं० ३—यदि यह चिह्न कुछ ललाई लिये पुरुष के चेहरे पर चित्रांकित स्थान पर (देखिये चित्र नं० १३७) हो तो विवाहानन्तर उसके भाग्य में वृद्धि होती है। उसे अपने किसी कुटुम्बीजन से विरासत में धन-प्राप्ति भी होती है। यह शुभ तिल है। किन्तु यदि काले रंग का हो तो विशेष फल नहीं।

यदि स्त्री के चेहरे पर यह तिल हो तो वह बुद्धिमती तथा धनशालिनी होती है किन्तु अन्य स्त्रियों के साथ मेल-जोल से नहीं रह सकती। पन्ना पहनना शुभ है।

तिल नं० ४—यदि पुरुष के बायें कान के समीप इस स्थान पर मधु की-सी कान्ति वाला तिल हो तो वह अपने बुद्धि-चातुर्य से बहुत धन उपार्जन करता है। व्यापार द्वारा भी धन-लाभ होता है। यदि काले रंग का तिल हो तो घोर अशुभ है। पैर में चोट लगने का भय होगा और आर्थिक स्थिति में भी बहुत उथल-पुथल होगी।

स्त्री के चेहरे पर यदि यह तिल हो तो विवाह के पूर्व वह कुछ चंचल-चित्त की होती है। पुष्टि के लिये हस्त-रेखा तथा शरीर-लक्षणों से तुलना करनी चाहिये। उसे पति-सुख अच्छा होता है।

तिल नं० ५—यदि पुरुष के चित्रांकित स्थान पर यह तिल हो तो उसको, सम्बन्धी-रिश्तेदार लोगों से झगड़ा तथा मुकदमेबाज़ी के कारण परेशानी होगी। यदि काले रंग का हो तो भी अशुभ है। मनुष्य अपने अनुचित आचरणों के कारण कष्ट भोगता है।

यदि स्त्री के चेहरे पर उक्त स्थान पर तिल हो तो वह सदाचारिणी नहीं होती। यदि हाथ का अँगूठा छोटा, शुक्र-क्षेत्र अति उन्नत, जाल चिह्न से युक्त, हृदय-रेखा द्वीपयुक्त तथा मस्तिष्क-रेखा

कमज़ोर हो तो उसका अपने चित्त पर संयम नहीं रहता।

कपोल के तिल

अब कपोल-प्रदेश के शुभाशुभ फलों का निर्देश किया जाता है। (देखिये चित्र नं० १३८) इसमें सात स्थानों पर तिल-चिह्न दिखाये गये हैं। यदि ठीक इन स्थानों पर तिल न होकर कुछ थोड़ा-सा सरका हुआ तिल किसी के गाल पर हो तो, जिस चित्रांकित तिल के सब से समीप, वह समझा जावे उस जैसा फल करेगा।

तिल नं० १—यदि चित्रांकित स्थान पर पुरुष के दक्षिण कपोल पर तिल हो तो उसके मुकाबिले का तिल, बायीं पसली के नीचे कमर के आस-पास होता है। यह तिल यदि शहद के रंग का हो तो मनुष्य विदेश में साधारण नौकरी कर अपना समय व्यतीत करता है। यदि यह तिल काले रंग का हो तो करीब ३० वर्ष की अवस्था में किसी से घोर शत्रुता होगी।
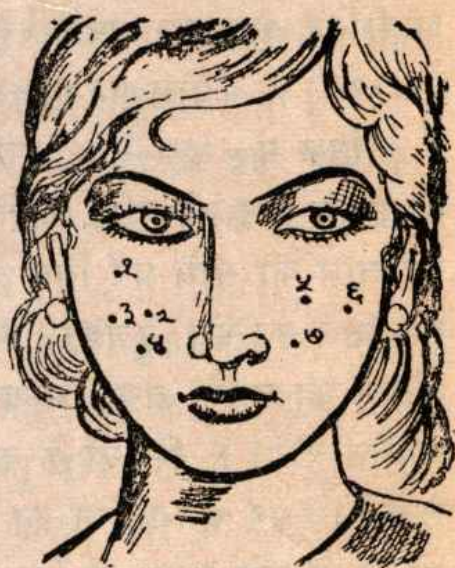
चित्र नं० १३८

यदि स्त्री के कपोल पर यह तिल हो तो वह सदाचारिणी तथा धार्मिक होती है और मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करती है।

तिल नं० २—दक्षिण कपोल के मध्य भाग में तिल हो तो उसके मुकाबिले का तिल पेट पर होता है। यदि काले रंग का तिल हो तो कोई विशेष फल नहीं होता किन्तु यदि शहद के रंग का हो तो ऐसा पुरुष अपनी वक्तृत्व-शक्ति तथा चतुरता से उच्च पद प्राप्त करता है। किसी उच्चाधिकारी की पत्नी का उसकी उन्नति में सहयोग भी होता है।

यदि स्त्री के चेहरे पर यह तिल हो तो बातचीत में चतुर किन्तु अपव्ययी और चंचल स्वभाव की होती है। अपने सम्बन्धित वर्ग को त्रास पहुँचाती है।

तिल नं० ३—यदि पुरुष के दाहिने कपोल पर यह तिल हो तो उसके मुकाबिले का तिल वक्ष:स्थल के वाम भाग के नीचे होगा। यदि कपोल का तिल शहद के रंग का हो तो वह अनियमित आहार-विहार के कारण व्याधिग्रस्त होता है और कष्ट पाता है। यदि यह तिल काले रंग का हो तो और भी अशुभ है। भयंकर शारीरिक कष्ट का द्योतक है।

स्त्री के कपोल पर भी प्राय: यही फल होता है।

तिल नं० ४—यदि दाहिने गाल पर इस स्थान पर तिल हो तो इसके फल की पुष्टि के लिए देखना चाहिये कि बायीं तरफ़ की जाँघ की संधि पर तिल है या नहीं। यदि पुरुष के कपोल पर इस तिल का रंग हलका श्याम, कुछ ललाई लिये हो तो इसके जीवन का प्रथम तथा मध्य भाग साधारण आर्थिक स्थिति में व्यतीत होगा। स्त्रियों के कारण धन-हानि भी होगी। अधिक उम्र होने पर धन-प्राप्ति का योग है। यदि काले रंग का तिल हो तो किसी ऊँचे स्थान से गिरने की आशंका होगी।

यदि स्त्री के कपोल पर यह तिल हो तो वह घूमने की बहुत शौकीन होती है। उसमें मुस्तकिल मिज़ाजी नहीं होती।

तिल नं० ५—यह तिल बायें कपोल पर चित्रांकित स्थान पर होता है। इस के मुकाबिले का तिल दाहिनी ओर छाती के नीचे होता है। जिस पुरुष के यह तिल मधु-वर्ण का हो उसका अपनी जन्मभूमि से बाहर (अर्थात् अन्य स्थान पर) विशेष भाग्योदय होता है।

यदि काले रंग का तिल हो तो अपनी चतुरता से—किन्तु अन्याय-मार्ग से धनोपार्जन करता है। पचास-पचपन वर्ष की आयु में

सट्टे आदि में अचानक धन-हानि होती है।

यदि स्त्री के वाम कपोल पर यह तिल हो तो वह विलासिनी होती है और उसे अनेक लोग चाहते हैं—विशेषकर उससे कम उम्र वाले।

तिल नं० ६—यदि पुरुष के कपोल पर इस स्थान पर तिल हो तो उसके मुकाबिले का तिल वक्षःस्थल पर होता है। यदि शहद के रंग का तिल पुरुष के चेहरे पर हो तो वह अस्थिरचित्त तथा स्त्रियों के प्रभाव में विशेष रहने के कारण नैतिक मार्ग से स्खलित हो जाता है। स्त्रियों के संसर्ग के कारण उसके सम्मान को भी क्षति पहुँचती है। यदि काले रंग का तिल हो तो कुछ फल नहीं होता।

यदि स्त्री के चेहरे पर इस स्थान पर तिल हो तो वह स्वतंत्र वृत्ति की तथा हठी (दुराग्रही) होती है। उसे कोई भयंकर व्याधि भी होगी परन्तु अन्त में स्वस्थ हो जाएगी।

तिल नं० ७—यदि यहाँ तिल हो तो इसके मुकाबिले का तिल दाहिने नितम्ब पर होता है। यदि मधु वर्ण का तिल हो तो विवाह के बाद भाग्योदय होता है। परन्तु यदि हाथ में दो विवाह की रेखा स्पष्ट और बलवान हों तो प्रथम स्त्री का देहान्त हो जाता है और जातक दूसरा विवाह करता है किंतु वैवाहिक सुख प्राप्त नहीं होता। यदि तिल का वर्ण काला हो तो विदेश में किसी जानवर या सवारी से टकराने की या अन्य दुर्घटना की आशंका होती है।

यदि स्त्री के कपोल पर इस स्थान पर तिल हो तो उसका धनिक पति से विवाह होता है किन्तु स्वयं का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता।

हनु-प्रदेश के तिल

अब हनु-प्रदेश के तिलों का शुभाशुभ फल बताया जाता है। साधारण तौर पर 'हनु' को भी 'ठोड़ी' तथा चिबुक को भी हिन्दी

में ठोड़ी ही कहते हैं। किन्तु वास्तव में हनु-प्रदेश तो गाल के नीचे वाला हिस्सा कहलाता है और चिबुक ओष्ठ या मुख के नीचे वाला हिस्सा। (देखिये चित्र नं० १३९।) इसमें जहाँ-जहाँ दाहिनी ओर या बायीं ओर तिल दिखाये गये हैं वह हनु-प्रदेश है।

चित्र नं० १३९

चित्र से स्पष्ट होगा कि तिल नं० १, २, ३, ४ तो हनु-प्रदेश में दाहिनी ओर हैं और तिल नं० ५, ६, ७, ८, ९ बायीं ओर। इन हनु-प्रदेश के तिलों के मुकाबिले के चिह्न शरीर के किस-किस भाग में होते हैं। यह नीचे बताया जाता है—

हनु-प्रदेश के तिल	उसके मुकाबिले के तिल
१	पेट के दक्षिण भाग में नीचे
२	बायीं पसली के नीचे
३	पेड़ू के पास
४	दाहिने घुटने पर
५	
६	दाहिनी जाँघ पर भीतर के भाग में
७	बायीं जाँघ के नीचे के भाग में
८	पीठ पर नीचे की ओर
९	दाहिनी जाँघ के नीचे

तिल नं० १—यदि पुरुष के चित्रांकित स्थान पर शहद के रंग का यह तिल हो (देखिये चित्र नं० १३९) तो ऐसा व्यक्ति झूठ बोलने वाला, दग़ाबाज़, इन्द्रियलोलुप तथा विश्वास के अयोग्य होता है। उस पर कोई फ़ौजदारी मुकदमा चलता है। यदि काले रंग का हो तो भी अशुभ ही है। मनुष्य निर्धन होता है तथा अनियमति

जीवन व्यतीत करने के कारण रोगग्रस्त होता है ।

यदि स्त्री के चेहरे पर यहाँ तिल हो तो उसके लिए भी घोर अशुभ लक्षण है । उसमें भी चरित्र-सम्बन्धी कमज़ोरियाँ होती हैं और सन्तान का सुख कम होता है; पुष्टि के लिये अन्य शरीर-लक्षण और हस्त-रेखा देखिये ।

तिल नं० २—यदि पुरुष के चेहरे पर हलके श्याम वर्ण का यह तिल हो तो उसकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होती और उसके हृदय के विचार भी शुद्ध तथा उदात्त नहीं होते । यदि तिल बिलकुल काले रंग का हो तो पशु-भय या किसी दुर्घटना का भय होता है ।

यदि स्त्री के चेहरे पर उपर्युक्त स्थान पर तिल हो तो उसका चरित्र संशयास्पद होता है और वह कलहप्रिया होती है । पैर के लक्षणों से इसकी पुष्टि करनी चाहिए ।

तिल नं० ३—यदि पुरुष के चेहरे पर यह तिल बिलकुल काला हो तो कोई विशेष फल नहीं होता किन्तु यदि कुछ ललाई लिये हो तो ऐसा पुरुष विद्या-प्रेमी, एकान्तप्रिय और भाग्यशाली होता है । यदि स्त्री के चेहरे पर इस स्थान पर तिल हो तो पतिव्रता तथा सौभाग्यवती होती है ।

तिल नं ४—यदि काले रंग का तिल पुरुष के मुख पर इस स्थान पर हो तो वह बहुत कामासक्त रहता है । यदि कुछ ललाई लिए हो तो भी विषय-भोग में लीन, दुर्बल चित्त का और कार्य में प्रवीण नहीं होता ।

यदि स्त्री के चेहरे पर यह तिल हो तो अस्वास्थ्य का द्योतक है ।

तिल नं० ५—यदि पुरुष के चेहरे पर इस स्थान पर काले रंग का तिल हो तो वह अपने अनुचित आचार-विचारों के कारण हानि उठायेगा । यदि तिल बिलकुल काला न होकर हलका श्याम, कुछ ललाई लिये हो तो भी शुभ नहीं है । ऐसे आदमी के अनेक शत्रु

होंगे और उसे हानि पहुँचावेंगे तथा उसकी भाग्यवृद्धि में बाधक होंगे।

यदि स्त्री के चेहरे पर हो तो वह कामासक्त किन्तु भाग्यशालिनी होती है।

तिल नं० ६—यदि पुरुष के चेहरे पर शहद के समान रंग का तिल इस स्थान पर सो तो वह भाग्यवान होता है। अट्ठाईस-बत्तीस वर्षों के मध्य में कुछ विशेष आपत्ति या कठिनता उठानी पड़ती है। यदि काले रंग का तिल हो तो वैवाहिक जीवन दुःखमय होता है। यदि स्त्री के चेहरे पर उपर्युक्त स्थान पर तिल हो तो वह धनी और सुखी होती है। जीवन के पहले भाग में पति-सुख कुछ कम होता है, बाद का जीवन अच्छा बीतता है।

तिल नं ७—यदि पुरुष के चेहरे पर यह तिल काले रंग का हो तो कोई विशेष प्रभाव उत्पन्न नहीं करता किन्तु यदि हलका श्याम, कुछ ललाई लिये हो तो ऊपर से गिरने, जल में डूबने या अन्य दुर्घटना की आशंका होती है।

यदि स्त्री के चेहरे पर उपर्युक्त तिल हो तो स्वास्थ्य-हानि, भाग्यहानि आदि अरिष्ट परिणाम सूचित होते हैं। तीस-इकतीस वर्षों के मध्य में शारीरिक रोग या मानसिक कष्ट होगा।

तिल नं० ८—यदि काले रंग का तिल पुरुष के चेहरे पर इस स्थान पर हो तो ऐसा पुरुष स्वयं अपने भाग्य का अपनी दुर्बुद्धि से नाश करता है।

यदि शहद के रंग का तिल हो तो ऐसा व्यक्ति विदेश-यात्रा का शौकीन होता है और वहाँ से तिजारत द्वारा धन-लाभ भी करता है।

यदि स्त्री के चेहरे पर उपर्युक्त तिल हो तो वह प्रायः अच्छे चरित्र की नहीं होती, उसका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता है।

तिल नं० ९—यदि काले रंग का तिल उपर्युक्त स्थान पर

पुरुष के चेहरे पर हो तो ऊपर से गिरने या अन्य दुर्घटना की आशंका होती है।

यदि शहद के रंग का तिल हो तो भी शुभ नहीं। ऐसा व्यक्ति लोभी तथा क्षुद्र हृदय होता है और उसका बुढ़ापा अच्छा नहीं बीतता।

यदि स्त्री के चेहरे पर इस स्थान पर तिल हो (देखिये चित्र नं० १३९) तो जवानी की अपेक्षा बुढ़ापे में उसकी आर्थिक स्थिति बदल जाती है अर्थात् जवानी में मालदार हो तो बुढ़ापे में आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होती और जवानी में ग़रीब हो तो बुढ़ापे में धनाढ्य हो जाती है।

चिबुक-प्रदेश क तिल

पहले हनु-प्रदेश तिलों का शुभाशुभ फल बताया गया है। अब चित्र नं० १४० देखिये। इसमें ५ तिल दिखाये गये हैं। इन तिलों के मुकाबिले के तिल शरीर के किस भाग में होते हैं यह नीचे बताया जाता है।
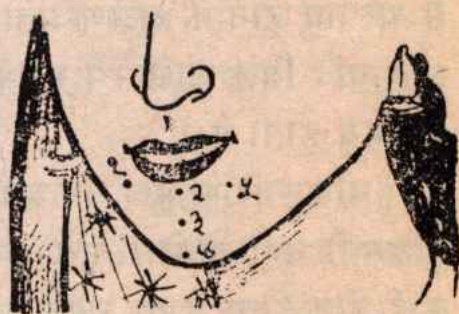
चित्र नं० १४०

चिबुक के तिल	इनके मुकाबिले का तिल
१	दाहिनी जाँघ पर
२	बाईं जाँघ पर
३	पीठ के बायें भाग में नीचे की ओर
४	बाईं जाँघ पर भीतर की ओर
५	वक्षःस्थल पर

यदि मुकाबिले का तिल शरीर पर उपर्युक्त स्थान पर हो तो चिबुक-प्रदेश के वर्णित शुभाशुभ फल पूर्ण रीति से मिलते हैं—

अन्यथा नहीं। अब इन तिलों का क्रमशः फल बताया गया है—

तिल नं० १—यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो शुभ है। ऐसा पुरुष गुणी और विद्वान् होता है और उच्चस्थिति के लोगों के सम्पर्क और सहायता से उसका भाग्योदय होता है।

यदि तिल काले रंग का हो तो पुरुष दीर्घायु और धनी होता है। यदि स्त्री की ठोड़ी पर इस स्थान पर तिल हो तो वह धनवती होगी; और बाहर से उसका आचरण भी अच्छा ही प्रतीत होगा। किन्तु हस्त-रेखाओं व शरीर-लक्षणों से चरित्रहीनता की पुष्टि होती हो तो चरित्र निर्मल न होगा।

तिल नं० २—यदि मधु-वर्ण तिल हो तो शुभ है। ऐसा पुरुष बुद्धिमान तथा धनोपार्जन में विशेष कुशल होता है। किन्तु वात-व्याधि से पीड़ित रहता है। यदि जीवन, शीर्ष तथा हृदय-रेखाओं से अल्पायु होने के लक्षण प्रतीत हों तो अल्पायु होता है।

यदि तिल काले रंग का हो तो ऊँचे से गिर कर चोट लगने का भय होता है।

यदि स्त्री के मुख पर इस स्थान पर तिल हो तो वह विशेष बुद्धिमती नहीं होती। उसे प्रसवमें विशेष कष्ट या प्रसव-सम्बन्धी कोई रोग होता है या ऊपर से गिरने का भय होता है।

तिल नं०३—यदि मधु वर्ण का तिल पुरुष के चेहरे पर हो तो शुभ है। ऐसा व्यक्ति बुद्धिमान, मित्रों से प्रेम-निर्वाह करने वाला तथा शत्रुओं से बदला लेने वाला होता है। किसी धनिक स्त्री की विरासत भी प्राप्त होती है। यदि तिल का रंग काला हो तो कोई विशेष फल नहीं होता।

यदि स्त्री के चेहरे पर इस स्थान पर तिल हो तो जीवन के मध्य भाग में किसी निकट सम्बन्धी की मृत्यु होती है। अनुचित औषधि-प्रयोग के कारण स्वयं उसके स्वास्थ्य को भी हानि पहुँचाती है।

तिल नं० ४—यदि पुरुष के चेहरे पर इस स्थान पर शहद के रंग का तिल हो तो उसका विवाह धनी कुटुम्ब में नहीं होता। यदि अन्य लक्षण अच्छे न हों तो व्यापार या सट्टे में गहरी हानि होती है। काले रंग का तिल और भी अशुभ है। धन-हानि के कारण गहरी विपत्ति उठानी पड़ती है। स्त्री के चेहरे पर भी ऐसे तिल का अनिष्ट प्रभाव होता है। वह मायाविनी, धूर्त तथा दुष्टा होती है।

तिल नं० ५—पुरुष के चेहरे पर यदि शहद के रंग का तिल हो तो शुभ है। ऐसा व्यक्ति भाग्यशाली तथा सभाचतुर होता है। स्त्रियों द्वारा (अपनी पत्नी तथा अन्य रिश्तेदार) उसकी भाग्यवृद्धि में सहायता होती है। यदि भाग्य-रेखा अच्छी हो तो धनी भी होता है। यदि तिल काले रंग का हो तो विशेष फल नहीं होता।

यदि स्त्री के चेहरे पर इस स्थान पर तिल हो तो वह अपने पति को बहुत कष्ट देती है। ऐसी स्त्री के नेत्र भी कमज़ोर होते हैं।

ऊपर जो तिलों का फल बताया गया है वही मस्से या लहसन का भी होता है। तिल के फलादेश का शरीर-लक्षण तथा हस्तरेखाओं से समन्वय और सामञ्जस्य करके देश, काल, पात्र का विचार कर किसी निर्णय पर पहुँचना उचित है। विरुद्ध लक्षणों का सन्तुलन कर किस प्रकार के लक्षण-विशेष घटित होते हैं, यह सम्यक् विचार अभ्यास-साध्य है।

स्वर्गीय स्वामी विवेकानन्द जी

माननीय पं० जवाहरलाल जी नेहरू

हिजहाइनेस महाराजा सर सवाई तेजसिंह जी K.C.S.I. अलवर नरेश

श्री जार्ज बर्नार्ड शॉ

हमारे महत्त्वपूर्ण ज्योतिष-प्रकाशन

मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड

मूल्य: रु० ९८